प्राकृत वाक्यरचना बोध

युवाचार्य महाप्रज्ञ

संपादक :
मुनि श्रीचन्द्र 'कमल'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत वाक्यरचना बोध

युवाचार्य महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट
(डीम्ड युनिवर्सिटी)
तुलसीग्राम, लाडनूं—३४१३०६ (जि० नागौर, राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादक :
मुनि श्रीचन्द 'कमल'

I. S. B. No. 81-7195-025 6

© जैन विश्व भारती
लाडनूं [राज०]

पहला संस्करण : दिसम्बर, १९९१

मूल्य : सौ रुपये/**प्रकाशक** : जैन विश्व भारती, लाडनूं, नागौर [राजस्थान]/ **मुद्रक** : मित्र परिषद्, कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित **जैन विश्व भारती प्रेस, लाडनूं**-३४१३०६ ।

PARKRIT VAKYARACHANA BODH

Yuvacharya Mahaprajna

Rs. 100.00

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुति

ज्ञान की परंपरा अथवा ज्ञान के प्रवाह का माध्यम है भाषा। यदि भाषा नहीं होती तो ज्ञान वैयक्तिक होता, वह सामुदायिक नहीं बनता। श्रुतज्ञान होता है—एक ज्ञान दूसरे में संक्रांत होता है। उसका हेतु भाषा ही है। विश्व में अनेक भाषाएं हैं। वे सब अपना दायित्व निभा रही हैं। भारतीय भाषाओं में तमिल, प्राकृत, संस्कृत—ये प्राचीन भाषाएं हैं। श्रमणपरंपरा में प्राकृत और पालि संस्कृत की अपेक्षा अधिक प्रचलित रही। वैदिकपरंपरा में संस्कृत का ही प्रयोग होता था। वैदिक संस्कृत और प्राकृत में कुछ समानताएं भी हैं। पाणिनिकालीन संस्कृत ने प्राकृत से भिन्न रूप ले लिया।

प्राकृत का साहित्य बहुत विशाल है। उसे पढने के लिए प्राकृत का अध्ययन आवश्यक है। प्राकृत का परिवार विशाल है। उसमें मागधी, पैशाची, शौरसेनी, चूलिकापिशाची, अपभ्रंश—ये सब प्राकृत से संबद्ध और विकास क्रम की रेखाएं हैं। प्रादेशिक भाषाएं और बोलियां भी प्राकृत से अनुप्राणित और प्रभावित हैं। भारतीय संस्कृति, सभ्यता, तत्त्वविद्या, दर्शन और शिल्प का अध्ययन करने के लिए प्राकृत को पढना अनिवार्य है।

आश्चर्य है—अनेक भाषाओं के उद्‌भव में हेतु बनने वाली प्राकृत भाषा का अध्ययन-अध्यापन बहुत सीमित है। संस्कृत की अपेक्षा वह अधिक उपेक्षित-सी प्रतीत हो रही है। इस स्थिति में परिवर्तन लाना आवश्यक है। वर्तमान के साथ अतीत का संपर्क स्थापित करने के लिए यह और अधिक आवश्यक है।

प्राकृत के अनेक व्याकरण ग्रन्थ हैं। प्राचीन ग्रन्थों में आचार्य हेमचंद्र का प्राकृत व्याकरण बहुत समृद्ध है। आधुनिक ग्रन्थों में डॉ० आर. पिशल का 'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण' व्याकरण और भाषाविज्ञान—दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। वे प्राकृत का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिए सहज सुगम नहीं बनते। इस वास्तविकता को ध्यान में रखकर प्रवेशिकाओं की परंपरा का सूत्रपात हुआ। प्राकृत मार्गोपदेशिका, प्राकृत प्रवेशिका, प्राकृत प्रबोध आदि-आदि ग्रंथ लिखे गए।

प्रस्तुत ग्रंथ उसी श्रृंखला की एक कडी है। जो उत्तरवर्ती हो, उसे अधिक विकसित होना चाहिए, इस नियम का इसमें निर्वाह हुआ है। मैंने पचास वर्ष पूर्व सन् १९४१ में हेमचंद्र के व्याकरण के आधार पर तुलसीमंजरी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम की प्रक्रिया लिखी थी। बहुत पहले ही चिंतन था—उसकी सहायक सामग्री के रूप में कोई प्रवेश ग्रंथ तैयार किया जाए। अब उसकी संपूर्ति हुई है। इसकी संपन्नता में मुनि श्रीचंद्र 'कमल' ने बहुत श्रम किया है। इसे सजाने-संवारने में उनकी धृति और मति—दोनों का योग है।

आचार्य श्री तुलसी के शासन काल में साहित्य की बहुमुखी प्रवृत्तियां चली हैं। फलस्वरूप संस्कृत और प्राकृत—दोनों हमारे संघ में आज भी जीवित भाषा हैं। वे बोली जाती हैं, उनमें गद्य और पद्य साहित्य रचा जाता है और विधिवत् उनका अध्ययन-अध्यापन चलता है। जैनविश्वभारती इंस्टीट्यूट 'मान्य विश्वविद्यालय' में प्राकृत का एक स्वतंत्र विभाग है। प्राकृत पढने वालों के लिए इस ग्रन्थ की उपयोगिता स्वतः सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है।

युवाचार्य महाप्रज्ञ

१ दिसम्बर ९१
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपादकीय

- तुलसीमंजरी युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ की कृति है। इसका रचना काल विक्रम संवत् १९९८ (सन् १९४१) है। इसका प्रणयन कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य विरचित प्राकृत व्याकरण के आधर पर बृहत् प्रक्रिया के रूप में हुआ है।
- प्राकृत वाक्यरचना बोध तुलसीमंजरी का ही विकसित रूप है। नवीन पद्धति से इसका संपादन किया गया है।
- प्राकृत वाक्यरचना बोध में ११८ पाठ हैं।
- इसमें प्राकृत व्याकरण के १११४ सूत्र नियम के नाम से दिए गए हैं। नियम मूलसूत्र, हिंदी अनुवाद तथा उदाहरण सहित हैं।
- कहीं-कहीं टिप्पण देकर सूत्र के उदाहरणों को स्पष्ट किया गया है।
- नियम के अन्तर्गत उदाहरणों की संस्कृत छाया दी है, जिससे अर्थ बोध सरलता से हो जाता है।
- शब्द संग्रह में शब्द दिए गए हैं। सातवें पाठ से लेकर निन्नानवें पाठ तक शब्दों को वर्ग के रूप में दिया गया है। उससे आगे उन्नीस पाठों में अनुवाद हेतु आवश्यक शब्दों को अर्थ रूप में दिया गया है।
- एक पाठ में एक ही वर्ग के शब्द दिए गए हैं, जिससे विद्यार्थियों को शब्दों को खोजने में सुविधा होगी। एक वर्ग में अधिक शब्द होने के कारण कहीं-कहीं उन्हें दो, तीन, चार और पांच पाठों तक भी दिए गए हैं। ५४ वर्ग के शब्द ८१ पाठों में हैं।
- बीच-बीच में स्फुट शब्दों का संकलन है।
- वर्ग के शब्दों के अतिरिक्त वाक्य बनाने में आवश्यक शब्दों को वर्ग के नीचे विभाजित कर दिया गया है।
- कुछ शब्द प्राकृत शब्दकोश (पाइअसद्दमहण्णव) में नहीं है। व्यवहार में उनकी आवश्यकता अनुभव होती है, उनको संस्कृत के शब्दकोश से लिया गया है।
- वृक्ष, फल, औषधि, शाक, धान्य, लता, सुगंधित पौधे आदि वर्ग निघंटु से लिए गए हैं।
- जो शब्द संस्कृत शब्द कोश से लिए हैं, उन शब्दों के आगे कोष्ठक में (सं) उल्लिखित है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

- यंत्र संबंधी आधुनिक शब्द जो संस्कृत में जोडे गए हैं, उनका प्राकृतीकरण किया गया है।
- परिशिष्ट पांच में प्रत्येक वर्ग के शब्दों तथा स्फुट शब्दों को हिन्दी के अकारादि क्रम से दिया गया है।
- शब्दों को प्रथमा विभक्ति के एक वचन के रूप में सूचित किया गया है, जिससे अकारान्त शब्दों के लिंग का ज्ञान प्रथम दर्शन मात्र से हो जाता है। अनुस्वार अंत वाले नपुंसकलिंगी, ओकार अंत वाले पुंलिंगी और आकार अंत वाले स्त्रीलिंगी होते हैं।
- इकारान्त, उकारान्त आदि शब्दों के लिंग की पहचान उनके आगे दिए गए लिंग के प्रथम अक्षर से हो जाती है—(न) नपुंसक, (पुं) पुंलिंग, (स्त्री) स्त्रीलिंग का सूचक है।
- देशीय शब्दों के लिए (दे०), त्रिलिंगी शब्दों के लिए (त्रि०) और विशेषणवाची शब्दों के लिए (वि) शब्द संकेत है।
- विशेषणवाची शब्द विशेष्य के अनुसार तीनों लिंगों में व्यवहृत होता है।
- एक पाठ में एक वर्ग के कम से कम दस शब्द हैं, कहीं कुछ अधिक भी हैं।
- प्रयोगवाक्य शीर्षक के अन्तर्गत वर्ग के शब्दों से वाक्य बनाकर दिखाया गया है और शब्दों का प्रयोग करो—इस शीर्षक के अन्तर्गत उन्हीं वर्ग के शब्दों से प्राकृत में वाक्य बनाए गए हैं।
- धातुसंग्रह में एक पाठ में प्रायः दस धातुएं दी गई हैं, प्रारंभ के पाठों में कुछ कम भी हैं।
- धातुसंग्रह पाठ ६ से प्रारंभ किया है, जो निन्नानवे पाठ तक चलता है। उससे आगे नियमों के अन्तर्गत जो धातुएं हैं उनकी आदेशधातुएं दी हैं।
- धातु प्रयोग शीर्षक के अन्तर्गत पाठ की धातुओं से वाक्य बनाकर दिखाए गए हैं। धातुओं का प्रयोग करो—शीर्षक के अन्तर्गत विद्यार्थियों से प्राकृत में वाक्य बनवाए गए हैं।
- पाठ ६ से अव्यय संग्रह चलता है, जो पाठ इकतीस तक पूरा होता है। अव्ययों से भी वाक्य बनाकर दिखाए गए हैं और उनके वाक्य बनवाए गए हैं।
- समास, तद्धित के प्रत्यय, धातुओं के कालरूप, प्रेरक तथा भाव कर्म के रूपों और कृदन्त के प्रत्ययों से भी वाक्य बनाए गए हैं तथा विद्यार्थियों से बनवाए गए हैं।
- एक पाठ में बीस से अधिक वाक्य बनाकर दिखाये गए हैं और उतने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ही विद्यार्थियों से प्राकृत में वाक्य बनवाए गए हैं, जिससे उनका अभ्यास पुष्ट होता चला जाए।

- प्रश्न शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आए सारे शब्दों व धातुओं आदि के अर्थ पूछे गए हैं। नियमों संबंधी अनेक जिज्ञासाएं की गई हैं। कहीं-कहीं उनका अपने वाक्य में प्रयोग करवाया गया है।
- इस प्रक्रिया से विद्यार्थी को न केवल शब्दों, धातुओं, अव्ययों तथा नियमों का ज्ञान बढता है अपितु वाक्यरचना का बोध भी सुगम हो जाता है, प्राकृत में वाक्य बनाना भी सरल हो जाता है।
- प्राकृत के अतिरिक्त उसकी उपभाषा शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश के नियम तथा वाक्य प्रयोग भी दिए गए हैं।
- वाक्य रचना के साथ-साथ प्राकृत व्याकरण का भी ज्ञान हो, इस दृष्टि से हेमचंद्राचार्य की प्राकृत व्याकरण के सूत्रों को हिन्दी के अर्थ सहित प्रस्तुत किया गया है।
- प्राकृत व्याकरण में (दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ १।४) के अतिरिक्त समास के लिए कोई सूत्र नहीं है। प्राकृत साहित्य में समासित पद मिलते हैं, उनको समझने के लिए (शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ४।४४८) सूत्र के अनुसार संस्कृत व्याकरण का आधार लेकर समास प्रकरण को विस्तार दिया गया है।
- संधि और तद्धित के प्रत्ययों में भी संस्कृत व्याकरण के सूत्रों का उपयोग किया गया है।
- पहले परिशिष्ट में प्राकृत की शब्द रूपावली है।
- दूसरे परिशिष्ट में प्राकृत की धातु रूपावली है।
- तीसरे परिशिष्ट में अपभ्रंश की शब्द रूपावली है।
- चौथे परिशिष्ट में अपभ्रंश की धातु रूपावली है।
- पांचवे परिशिष्ट में वर्गों के शब्द अर्थ सहित हिन्दी के अकारादि क्रम से हैं।
- छट्ठे परिशिष्ट में धातुएं हिन्दी के अर्थ सहित हिन्दी के अकारादि क्रम से हैं।
- सातवें परिशिष्ट में प्राकृत भाषा की समकालीन वैदिक संस्कृत के साथ समानता दिखाई गई है।
- ऐसा विश्वास है इस पुस्तक के माध्यम से विद्यार्थी प्राकृतभाषा में सरलता से प्रवेश कर सकेंगे।
- दो वर्ष पूर्व युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ विरचित वाक्यरचना (भाग १.२.३.) को नवीन विधा से संपादन किया था, जो संस्कृत वाक्यरचना बोध नाम से प्रकाशित हुई थी। उसके फलस्वरूप युवाचार्य श्री ने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत वाक्यरचना बोध के संपादन का आदेश दिया। यह पुस्तक उस आदेश की ही क्रियान्विति है।

- युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी और युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ की प्रेरणा से ही मैंने इसमें प्रवेश किया है। आचार्य का अनुग्रह ही शिष्य को ज्ञान की ओर प्रेरित करता है। मैं इन महापुरुषों को श्रद्धा से वंदना करता हुआ आशीर्वाद मांगता हूं कि मुझे बोधि, मार्ग और गति दें।
- मैं अपना सौभाग्य मानता हूं, युवाचार्य महाप्रज्ञ (मुनि श्री नथमलजी) की ५० वर्ष पूर्व की भावना को साकार करने का मुझे अवसर मिला।
- मुनिश्री दुलहराजजी का हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने आदि से अंत तक प्रूफों को देखा और आवश्यक सुझाव भी दिए।
- मुनि ऋषभकुमारजी ने पाली चतुर्मास में मेरे सारे कामों का भार अपने ऊपर ओढकर मुझे समय उपलब्ध कराया। परिशिष्ट बनाने में भी उनका सहयोग रहा है।
- मुनि विमल कुमारजी ने आदि से अंत तक पाण्डुलिपि को देखकर अनेक संशोधन सुझाए।
- मुनि दिनेश कुमारजी और जै. वि. भा. मा. वि. के प्राकृत लेक्चरार जगतराम भट्टाचार्य ने परिशिष्टों को तैयार करने में बहुत श्रम दिया है।
- मुनि प्रशांत कुमारजी का भी सहयोग रहा है।
- समणी और पा. शि. सं. की मुमुक्षु बहनों ने पाण्डुलिपि की सुन्दर अक्षरों में शुद्ध प्रतिलिपि तैयार की।
- पुस्तक को संवारने में मुनि धनंजय कुमारजी का विशेष सहयोग रहा है।
- अंत में उन सबका योगदान भी स्मरणीय है, जिनकी पुस्तकों का मैंने उपयोग किया है तथा जो प्रत्यक्ष व परोक्ष में मेरे सहयोगी रहे हैं।
- सभी के सहयोग की परिणति रूप यह प्राकृत वाक्यरचना बोध आपके हाथों में है।
- इसकी उपयोगिता विद्यार्थियों व पाठकों पर निर्भर है, वे कितने लाभान्वित होते हैं।
- दृष्टि दोष और प्रेस दोष से जो अशुद्धियां रह गई हैं, उनके लिए अंत में शुद्धि पत्र है।
- एक निवेदन—शुद्धिपत्र से अशुद्धियों को पहले शुद्ध कर पढना प्रारंभ करें। आपके अमूल्य सुझाव व अभिमत भी हमें दें, जिससे भविष्य में परिष्कृत रूप में आपके हाथों में आ सके।

११ दिसम्बर, ९१ **मुनि श्रीचन्द 'कमल'**
जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिमत

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रणीत एवं मुनिश्री श्रीचंद कमल द्वारा संपादित 'प्राकृत वाक्य-रचना बोध' प्राकृत भाषा के लिए एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इसकी लेखन शैली बहुत नवीन है। यह प्राकृत के छात्र-छात्राओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। वे इस ग्रंथ के माध्यम से प्राकृत भाषा की अच्छी जानकारी कर सकेंगे। इस पुस्तक में ११८ अध्याय हैं। साथ ही इसमें सात परिशिष्ट हैं—१. प्राकृत शब्द रूपावली, २. प्राकृत धातु रूपावली, ३. अपभ्रंश शब्द रूपावली, ४. अपभ्रंश धातु रूपावली, ५. हिन्दी के अकारादि क्रम से शब्द, ६. हिन्दी के अकारादि क्रम से एक अर्थ में होने वाली धातुएं, ७. वैदिक संस्कृत और प्राकृत की तुलना। लेखक ने कितनी दृष्टियों से विषय का प्रतिपादन किया है यह इसे देखने से स्पष्टतः ज्ञात होता है। यह अपने आप में एक प्रशंसनीय कार्य है।

भाषा सीखने के मुख्य चार उद्देश्य बताए गये हैं—

१. बोलना [to speak]

२. समझना [to understand]

३. पढना [to read]

४. लिखना [to write]

साधारणतः इन्हें बोलने-समझने एवं पढने-लिखने रूप दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। अधिकांशतः जो लोग भाषा सीखते हैं। उनका विशेष ध्यान भाषा बोलने और समझने की ओर रहता है। किन्तु कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो पढने और लिखने की दृष्टि से भाषा सीखते हैं। उनका मूल उद्देश्य है—उस भाषा-विशेष की पुस्तक पढना और लिखने की चेष्टा करना। ये लोग भाषा बोल एवं समझ नहीं सकते, ऐसा नहीं है, किन्तु वे लोग जो भाषा साधारणतः सीखते हैं, वह लिखित ग्रन्थ की भाषा होती है। जो लोग मात्र भाषा बोलना एवं समझना चाहते हैं, वे उस भाषा के लेखन एवं पढने की ओर दृष्टि कम देते हैं। उनका उद्देश्य सिर्फ लोगों के साथ बात करना एवं उनकी भाषा समझना होता है। आजकल भाषाशिक्षण की दृष्टि से जो व्याकरण लिखते हैं, वे बोलने एवं समझने की ओर विशेष ध्यान रखते हैं अर्थात् उनके व्याकरण लिखने का मूल उद्देश्य है भाषा का वर्णन करना। जिस प्रकार जनसामान्य बोलते हैं, वे उसी प्रकार व्याकरण में लिपिबद्ध

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करते हैं। इस प्रकार की भाषाशिक्षणपद्धति वर्णनात्मक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत आती है। जो भाषा पढने एवं लिखने के प्रति दृष्टि रखकर व्याकरण लिखते हैं, उनकी व्याकरण भी वर्णनात्मक होती है किन्तु उस वर्णनात्मक व्याकरण में ऐतिहासिक विज्ञान की पद्धति की छाप रहती है। भाषा की व्याकरण इन दो पद्धतियों से लिखना प्रचलित है। इन दो पद्धतियों के अतिरिक्त अन्य दो धाराओं से भी व्याकरण की चर्चा होती है। वे दो धाराएं हैं—तुलनात्मक भाषातत्त्व एवं दर्शनमूलक भाषातत्त्व। इन दो धाराओं से व्याकरण तभी पढना संभव है जब वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक धारा के अनुसार भाषा का शिक्षण होता है।

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ रचित प्राकृत वाक्यरचनाबोध व्याकरण की ऐसी रचना है, जिसमें वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक भाषा तत्त्व का समन्वय हुआ है। दो धाराओं को एक धारा में परिणत करना अत्यन्त कठिन है। व्याकरणशास्त्र में पांडित्य होने पर ही यह संभव है। इस पुस्तक का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार की सुतीक्ष्ण दृष्टि इस ग्रन्थ में सर्वत्र प्रतिफलित हुई है। उन्होंने प्रत्येक अध्याय में जिस विषय पर दृष्टि रखी है उस विषय के गहन में प्रवेश किया है। साथ ही विषय को किसी भी स्थिति में नीरस नहीं होने दिया है। किस प्रकार उन्होंने वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक व्याकरण का समन्वय किया है, उसके एक-दो उदाहरण प्रस्तुत करने पर समझा जा सकेगा। जैसे 'तुम् प्रत्यय' अध्याय में उन्होंने प्रथम में कुछ शब्द चयनित किए हैं और साथ-साथ में उस अध्याय में तुम् प्रत्ययान्त कुछ धातुएं भी दी हैं। यथा—काउं (कर्त्तुम्) घेत्तुं (ग्रहीतुम्], जोद्धं (योद्धुम्) इत्यादि। एवं इनका प्रयोग भी प्राकृत भाषा के माध्यम से दर्शाया है जैसे—इमं कज्जं तुए विणा को अण्णो काउं सक्कइ, सो सुमिणस्स अट्ठं घेत्तुं सुविणसत्थपाढयस्स घरं गओ। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

वास्तव में भाषा सीखने की यही सही पद्धति है। जिस प्रकार का व्याकरण का विषय साधारणतः वर्णन किया जाता है, यदि उसी प्रकार की वाक्य-रचना दी जाये तब भाषा सीखने में बहुत सुविधा होती है। ठीक इसी प्रकार कुछ अंश हिन्दी से प्राकृत अनुवाद हेतु दिए गए हैं। इससे जहां भाषा का प्रयोग सीखा जाता है ठीक उसी प्रकार भाषा में प्रयोग भी किया जाता है। सबसे प्रशंसनीय यह है कि बहुत छोटे-छोटे प्राकृत के वाक्यों का प्रयोग किया गया है। लेखक ने स्वयं इन वाक्यों की रचना कर प्रयोग बताया है। इसके परिणामस्वरूप भाषा सीखने वालों को विशेष सुविधा होगी, ऐसा मैं समझता हूं। एक और विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि इन वाक्यों की विषयवस्तु पूर्णतः सर्वसाधारण के कथोपकथन के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिए उपयोगी है अर्थात् बोलचाल की भाषा का प्राचीन अल्पपठित प्राकृत भाषा के माध्यम से व्यक्त किया है। इस प्राकृत का युवाचार्यश्री ने आदि से अन्त तक निर्वहन किया है । यही इस व्याकरण का महत्त्व है। इस दृष्टि से विचार करने पर इस व्याकरण को मैं प्राकृत भाषा बोलने एवं समझने के लिए उपयोगी मानता हूं। साधारणतः प्राकृत भाषा के व्याकरण में आजकल बहुत कम प्राकृत व्याकरण सूत्रों का उल्लेख रहता है किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में शब्द-सिद्धि को संक्षेप में बताने के बाद उदाहरण देकर उसकी गठन पद्धति को समझाया है। जिस प्रकार प्रारम्भ में सरलता से लिखा है—क्त्वा, तुम् एवं तव्य प्रत्यय के लिए ग्रह् धातु के स्थान पर घेत आदेश होता है। इसके साथ ही 'क्त्वा' तुम् तव्येषु घेत् (४।२१०) हेमचंद्र के सूत्र का उल्लेख किया है। इसी प्रकार वच् धातु के स्थान पर जो वोत् आदेश होता है—'वचोवोत् (४।२११) । यद्यपि उन्होंने व्याकरण के अनुसार ११०० से भी ज्यादा सूत्र उल्लेख पूर्वक नियम बनाएं हैं तथापि इन नियमों के द्वारा व्याकरण में कोई क्लिष्टता नहीं आई है। इनके ग्रन्थ में उल्लेखनीय बात समास एवं कारक के संबंध में आलोचना है। सामान्यतः प्राकृत व्याकरण में समास एवं कारक के संबंध में पृथक् आलोचना नहीं होती, कारण संस्कृत के समास और कारक की नियमावली ही मुख्यतः प्राकृत में प्रयुक्त होती है। इसलिए नवीन विधि एवं विशेष नियम की जरूरत नहीं है। किन्तु मुनि श्री ने हेमचंद्र व्याकरण के कारक संबंधी दो-चार नियम यथा चतुर्थ्याः षष्ठी [३।१३१) तादर्थ्ये ङे० र्वा [३।१३२] क्वचिद् द्वितीयादेः [३।१३४] प्रभृति नियम उल्लेखपूर्वक कारक प्रकरण अध्याय के संबंध में विशेष दृष्टि दी है। समास के विषय में भी यही बात है। यद्यपि हेमचन्द्र ने कारक की तरह समास के संबंध में उस प्रकार का कोई सूत्र नहीं दिया है तथापि हेमचन्द्र के कुछ सूत्र जो समास के क्षेत्र में प्रयोज्य है प्रसंगतः समास के प्रकरण में उसका उल्लेख किया है, जैसे—दीर्घह्रस्वौ मिथो वृत्तौ [१।४]। इस ग्रंथ में अवययी भाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि व द्वन्द्वसमास का वर्णन किया गया है। यद्यपि ये संस्कृत व्याकरण पर प्रतिष्ठित हैं तथापि युवाचार्य श्री की व्याख्या में नवीन पद्धति का परिचय है। अधिक उदाहरण देने की जरूरत नहीं समझता हूं।

उपर्युक्त विषय को छोडकर इसमें प्राकृत की उपभाषा का विवरण है। ये भाषायें-शौरसेनी, मागधी, चूलिका, पैशाची एवं अपभ्रंश। धात्वादेश के चतुर्थ अध्याय पर प्रतिष्ठित होने पर भी इसका क्रम निर्धारण बहुत ही सुचिन्तित एवं प्रशंसा के योग्य है।

संक्षेप में कहना हो तो मुझे कहना पडेगा कि यह व्याकरण प्रत्येक प्राकृत शिक्षार्थी के लिए अवश्य पाठ्यग्रन्थ होना उचित है। जहां-तहां प्राकृत का पठन-पाठन होता है वहां-वहां इस ग्रन्थ का प्रचार काम्य है। केवल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिक्षार्थी ही नहीं, अध्यापक भी इस व्याकरण को पढ़कर ज्ञानलाभ कर सकेंगे ऐसी मेरी धारणा है।

अन्त में मेरा वक्तव्य यह है कि प्राकृत व्याकरण रचना बोध में उन्होंने बहुत ही महत्त्व का परिचय दिया है। अत्यन्त नीरस व स्वल्प पठित प्राकृत व्याकरण को सुखपाठ्य एवं सरस बनाने के लिए ग्रन्थ संपादक मुनि श्री चंद 'कमल' भी धन्यवाद के पात्र हैं। इस प्रसंग में एक श्लोक उद्धृत करके युवाचार्य श्री एवं उनकी व्याकरण के महत्त्व को व्यक्त करना चाहता हूं। दरापखां ने अपने गंगास्तोत्र में गंगा का महत्त्व कहां निहित है, उसके प्रसंग में कहा था—

सुरधुनि मुनिकन्ये तारयेः पुण्यवन्तम्,
स तरति निजपुण्यैस्तत्र किं ते महत्त्वम्।
यदि तु गतिविहीनं तारयेः पापिनं मां।
तदिह तव महत्त्वं तन्महत्त्वं महत्त्वं॥

मैं भी कहता हूं दुरूह और कठिन प्राकृत भाषा को सहज व सरल करने में संपादक मुनि श्रीचंद्र 'कमल का महत्त्व प्रकट हुआ है।

सत्यरंजन बनर्जी
कलकत्ता विश्वविद्यालय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

पाठ	पृष्ठ	शब्द वर्ग
१. वर्ण बोध	१	
२. संयुक्त व्यंजन	३	
३. वाक्य	६	
४. विभक्ति बोध	९	
५, प्रथम पुरुष	११	
६. मध्यम पुरुष	१४	
७. उत्तम पुरुष	१६	महापुरुष
८. कर्म	१९	परिवार वर्ग (१)
९. साधन	२१	,, ,, (२)
१०. दान पात्र	२४	,, ,, (३)
११. अपादान	२७	,, ,, (४)
१२. संबंध	३०	,, ,, (५)
१३. आधार	३३	गोरस वर्ग
१४. देश्यशब्द	३७	देश्य
१५. स्वरसंधि	४०	रसोई-मसाला
१६. उद्वृत्त स्वरसंधि	४४	रसोई उपकरण
१७. प्रकृतिभाव संधि	४७	गृह सामग्री (१)
१८. अव्यय संधि	५१	गृह सामग्री (२)
१९. व्यंजन संधि	५५	न्यायालय वर्ग
२०. अव्यय	६०	×
२१. हेत्वर्थ कृदन्त	६६	स्फुट
२२. संबंधभूत कृदन्त	७०	पत्रालय वर्ग
२३. स्वरपरिवर्तन	७५	गुड, चीनी वर्ग
२४. स्वरादेश (अकार को आदेश)	७९	रोटी आदि वर्ग
२५. अकार को आदेश	८३	मिठाई वर्ग
२६. आकार को आदेश	८७	पात्र वर्ग
२७. इकार को आदेश	९२	जैन पारिभाषिक (१)
२८. ईकार को आदेश	९६	जैन पारिभाषिक (२)
२९. उकार को आदेश	९९	खाद्य वर्ग
३०. ऊकार को आदेश	१०३	गृह-अवयव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. ऋकार को आदेस	१०७	शरीर-विकार
३२. ऋकार को आदेश	१११	प्रसाधन सामग्री
३३. लृ, ए, ऐ को आदेश	११५	व्यापार वर्ग
३४. ओ, औ को आदेश	११९	विद्यालय वर्ग
३५. प्रारंभिक सरल व्यंजन परिवर्तन	१२३	जलाशय वर्ग
३६. मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (१)	१२८	वस्त्रवर्ग (१)
३७. मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (२)	१३३	वस्त्रवर्ग (२)
३८. मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (३)	१३७	आभूषण वर्ग
३९. मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (४)	१४२	स्फुट
४०. अंतिम व्यंजन परिवर्तन	१४६	स्फुट
४१. संख्या	१५०	×
५२. संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (१)	१५४	शाक वर्ग (१)
४३. ,, ,, ,, (२)	१५८	,, ,, (२)
४४. ,, ,, ,, (३)	१६३	औषधि वर्ग (१)
४५. ,, ,, ,, (४)	१६७	,, ,, (२)
४६. ,, ,, ,, (५)	१७१	धान्य वर्ग (१)
४७. ,, ,, ,, (६)	१७५	,, ,, (२)
४८. पूर्ण व्यंजन परिवर्तन	१७९	फल वर्ग (१)
४९. संयुक्त वर्णों का लोप	१८३	फल वर्ग (२)
५०. स्वरभक्ति	१८८	वृक्ष वर्ग
५१. द्वित्व	१९३	स्फुट
५२. स्वरसहित व्यंजनों का लोप	१९७	कालवर्ग (१)
५३. सस्वर व्यंजन आदेश	२००	कालवर्ग (२)
५४. व्यत्यय	२०४	पक्षी वर्ग (१)
५५. उपसर्ग	२०७	×
५६. शब्द रूप (१)	२१०	पक्षी वर्ग (२)
५७. ,, ,, (२)	२१४	,, ,, (३)
५८. ,, ,, (३)	२१७	पशु वर्ग (१)
५९. ,, ,, (४)	२२०	,, ,, (२)
६०. ,, ,, (५)	२२३	,, ,, (३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१. ,, ,, (६)	२२६	,, ,, (४)
६२. ,, ,, (७)	२२६	स्फुट
६३. ,, ,, (८)	२३२	स्फुट
६४. ,, ,, (९)	२३५	रत्न और मणि
६५. ,, ,, (१०)	२४०	स्फुट
६६. वर्तमानकालिक प्रत्यय	२४३	स्फुट
६७. विध्यर्थ प्रत्यय	२४८	सालावर्ग
६८. आज्ञार्थक प्रत्यय	२५२	शरीर के अंग-उपांग
६९. भूतकालिक प्रत्यय	२५६	,, ,, ,, (२)
७०. भविष्यत्कालिक प्रत्यय (१)	२६०	,, ,, ,, (३)
७१. ,, ,, ,, (२)	२६४	,, ,, ,, (४)
७२. क्रियातिपत्ति	२६८	,, ,, ,, (५)
७३. लिंग बोध	२७१	वृत्तिजीवी वर्ग (१)
७४. स्त्री प्रत्यय	२७५	,, ,, ,, (२)
७५. कारक	२७९	,, ,, ,, (३)
७६. समास	२८२	,, ,, ,, (४)
७७. तत्पुरुष समास	२८६	स्त्री वर्ग (१)
७८. कर्मधारय और द्विगुसमास	२९०	,, ,, (२)
७९ बहुव्रीहि समास	२९३	,, ,, (३)
८०. द्वन्द्वसमास	२९६	,, ,, (४)
८१. तद्धित	२९९	राजनीति वर्ग
८२. मत्वर्थ	३०२	धातु-उपधातु वर्ग
८३. भव अर्थ	३०५	स्पर्श वर्ग
८४. शीलादि प्रत्यय	३०७	रोगवर्ग (१)
८५. भाव	३१०	रोगवर्ग (२)
८६. विभक्त्यर्थ प्रत्यय	३१३	रोगीवर्ग
८७. इव, कृत्वस् प्रत्यय	३१७	वाद्य वर्ग
८८. परिमाणार्थ प्रत्यय	३२०	कीडा आदि क्षुद्र जन्तु
८९. स्वार्थिक प्रत्यय	३२३	रेंगने वाले, आदि प्राणी
९०. स्फुट प्रत्यय	३२७	शस्त्र वर्ग (१)
९१. तरतम प्रत्यय	३३०	शस्त्रवर्ग (२)
९२. प्रेरणार्थक प्रत्यय (१)	३३३	सुगंधित पत्र पुष्प वाले पौधे व लता
९३. ,, ,, (२)	३३७	सुगंधित द्रव्य
९४. ,, ,, (३)	३४१	वस्ति और मार्ग वर्ग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९५. भाव कर्म (१)	३४५
९६. ,, ,, (२)	३४९
९७. कृत्य प्रत्यय	३५३
९८. क्त प्रत्यय	३५७
९९. शतृ-शान प्रत्यय	३६१
१००. धात्वादेश (१)	३६६
१०१. ,, (२)	३७०
१०२. ,, (३)	३७४
१०३. ,, (४)	३७८
१०४. ,, (५)	३८२
१०५. ,, (६)	३८७
१०६. ,, (७)	३९२
१०७. ,, (८)	३९७
१०८. धातु वर्णादेश (१)	४०२
१०९. धातु वर्णादेश (२)	४०५
११०. शौरसेनी	४०८
१११. मागधी	४१३
११२. पैशाची-चूलिकापैशाची	४१८
११३. अपभ्रंश (१)	४२३
११४. ,, (२)	४२८
११५. ,, (३)	४३२
११६. ,, (४)	४३६
११७. ,, (५)	४४०
११८. ,, (६)	४४४
परिशिष्ट १ प्राकृत शब्दरूपावली	४५१
परिशिष्ट २ प्राकृत धातुरूपावली	४७७
परिशिष्ट ३ अपभ्रंश शब्दरूपावली	५१०
परिशिष्ट ४ अपभ्रंश धातुरूपावली	५२६
परिशिष्ट ५ अकार आदि क्रम से वर्ग व शब्द संग्रह	५४१
परिशिष्ट ६ एकार्थ धातुएं	५६८
परिशिष्ट ७ वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा	५८७
सहायक ग्रंथ सूचि	५९८
शुद्धि पत्र	६००

मास वर्ग
ग्रह-नक्षत्र वर्ग
यंत्र वर्ग
स्फुट
यान वर्ग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१ वर्णबोध

वर्ण—प्रत्येक पूर्ण ध्वनि को वर्ण कहते हैं। प्राकृत में वर्ण के दो भेद हैं—(१) स्वर (२) व्यञ्जन।

स्वर के दो भेद हैं—ह्रस्वस्वर और दीर्घस्वर। ह्रस्वस्वर की एक मात्रा होती है। दीर्घस्वर की दो मात्राएं होती हैं। संस्कृत में प्लुतस्वर होता है, जिसकी तीन मात्राएं होती हैं।

० प्राकृत में प्लुत स्वर नहीं होता।

० प्राकृत में ऋ, ॠ, लृ, ॡ स्वरों का प्रयोग नहीं होता।

ह्रस्वस्वर—अ, इ, उ, ए, ओ।

दीर्घस्वर—आ, ई, ऊ, ए, ओ।

ए और ओ दीर्घस्वर हैं, परन्तु प्राकृत में ए और ओ से परे संयुक्त व्यञ्जन होने पर ए और ओ को ह्रस्वस्वर माना गया है। जैसे—एक्केक्कं (एकैकम्), जोव्वणं (यौवनम्), आरोग्गं (आरोग्यम्)। प्राकृत में ऐ और औ का प्रयोग नहीं होता। केवल (सू. १।१६६) से अयि को ऐ आदेश होता है।

नियम १ (अथ प्राकृतम् १।१) प्राकृत में ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ऐ, औ, ङ, ञ, श, ष, विसर्ग, प्लुत—ये नहीं होते। ङ और ञ अपने वर्ग के व्यंजनों के साथ होते हैं।

प्राकृत में व्यंजन २९ हैं—

क, ख, ग, घ	त, थ, द, ध, न
च, छ, ज, झ	प, फ, ब, भ, म
ट, ठ, ड, ढ, ण	य, र, ल, व, स, ह

० प्राकृत में श, ष और विसर्ग नहीं होते।

० स्वर रहित ङ् तथा द्वित्व ङ् ङ् प्रयुक्त नहीं होता।

० प्राकृत में ङ और ञ का प्रयोग अपने वर्ग के व्यंजनों के साथ मिलता है, स्वतंत्र नहीं—

पङ्को,	पङ्खो,	खङ्गो,	जङ्घा
वञ्चु,	वाञ्छा,	पञ्जो,	विञ्झो

० स्वर रहित व्यंजन अंत में नहीं होते हैं।

० कोई भी व्यंजन स्वर के बिना क्, च्, ट्, त्, प् रूप में अकेला प्रयुक्त नहीं होता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्गीय व्यंजन—व्यंजन के पांच वर्ग हैं—(१) क, ख, ग, घ, ङ (२) च, छ, ज, झ, ञ (३) ट, ठ, ड, ढ, ण (४) त, थ, द, ध, न (५) प, फ, ब, भ, म।

य, र, ल, व—ये **अन्तस्थ** हैं। स, ह—ये **ऊष्म** हैं।

नियम २ (बहुलम् १।२) प्राकृत में नियमों का बहुल सब जगह होता है। बहुल का अर्थ है—कहीं पर प्रवृत्ति होती है, कहीं पर प्रवृत्ति नहीं होती, कहीं पर विकल्प से होती है और कहीं पर दूसरे अर्थ में। आवश्यकता-के अनुसार बहुल का प्रयोग आगे के नियमों में किया गया है।

अनुनासिक—ङ, ञ, ण, न, म, इनकी अनुनासिक संज्ञा है।

अघोष—प्रत्येक वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ) और स (श, ष, स) तथा विसर्ग को अघोष या परुष व्यंजन कहते हैं।

घोष—प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पञ्चम वर्ण (ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) तथा य, र, ल, व, ह को घोष या मृदु व्यंजन कहते हैं।

महाप्राण—जिन वर्णों में ह की ध्वनि का प्राण मिलता है, वे महाप्राण कहलाते हैं। जैसे क+ह=ख। च+ह=छ। इस प्रकार के व्यंजन महाप्राण कहलाते हैं। ये १० हैं—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ।

ऊष्मवर्ण स (श, ष, स,) और ह भी महाप्राण हैं।

अल्पप्राण—जिन वर्णों में ह की ध्वनि का प्राण नहीं मिलता वे सब अल्पप्राण कहे जाते हैं। वे ये हैं—क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व।

प्रश्न

१ प्राकृत में कौन-कौन से वर्ण होते हैं?
२ कौन से ऐसे वर्ण हैं जो संस्कृत में होते हैं परन्तु प्राकृत में नहीं होते?
३ ह्रस्वस्वर और दीर्घस्वर कौन-कौन से हैं?
४ कौन-सा दीर्घस्वर कहां ह्रस्वस्वर बन जाता है?
५ प्लुत संज्ञा कितनी मात्रा की होती है, प्राकृत में उसका क्या स्थान है?
६ अन्तस्थ और ऊष्मव्यंजन कौन-कौन से हैं?
७ अल्पप्राण और महाप्राण कौन-कौन से व्यंजन हैं। उन्हें याद रखने का सरल तरीका क्या है?
८ अघोष वर्णों को बताओ।
९ ऐसे कौन से वर्ण हैं जिनका प्राकृत में प्रयोग होता ही नहीं और कौन से वर्ण हैं जिनका प्रयोग कहीं-कहीं होता है, उदाहरण देकर बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयुक्त व्यंजन

संयुक्त व्यंजन—जिन दो या दो से अधिक व्यंजनों के बीच में स्वर न हो तो उसे संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

प्राकृत में शब्द के प्रारंभ में संयुक्त व्यंजन नहीं पाए जाते। संस्कृत में पाये जाते हैं उसके एक व्यंजन का लोप हो जाता है और अवशिष्ट व्यंजन द्वित्व नहीं होता। अपवाद के रूप में ण्ह, म्ह, ल्ह, द्र और य्ह मिलते हैं। ण्ह-ण्हाणं। म्हो। ल्ह-ल्हसइ। द्रहो। गुय्हं (गुह्य:), सय्हो (सह्य:)।

प्राकृत में भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग नहीं मिलता। समान-वर्गीय व्यंजनों के मेल से बने हुए संयुक्त व्यंजन ही मिलते हैं। भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यंजनों को समानवर्गीय व्यंजन के रूप में बदल दिया जाता है। उसके एक व्यंजन का लोप कर दूसरे को द्वित्व कर दिया जाता है। यदि द्वित्व व्यंजन हकारयुक्त (वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण) हो तो उसको द्वित्व कर उसके हकार को हटा दिया जाता है, वर्ग का पहला और तीसरा वर्ण कर दिया जाता है। जैसे—

संस्कृत	**प्राकृत**
दुग्ध—	दुध—दुध्ध—दुद्ध।
मूर्च्छा—	मुछा—मुछ्छा—मुच्छा।
मूर्ख—	मुख—मुख्ख—मुक्ख
भुक्त—	भुत, भुत्त
उत्पल—	उपल—उप्पल

संयुक्त व्यंजनों में एक व्यंजन य, र, ल, अनुस्वार या अनुनासिक हो तो उसे स्वरभक्ति के द्वारा अ, इ, ई और उ में से किसी स्वर के द्वारा विभक्त कर (आगम कर) सरल व्यंजन बना दिया जाता है।

रत्नं—रत् + अ + नं—रतनं—रयणं।

गर्हा—गर + इ + हा गरिहा।

स्नेह—स् + अ + नेह सनेह—सणेह।

समस्त (समास) पदों में दूसरे पद का आदि स्वर विकल्प से द्वित्व होता है, इसलिए समस्त पदों में संयुक्त व्यंजन विकल्प से पाए जाते हैं। जैसे—नइग्गामो नइगामो। देवत्थुई, देवथुई।

संयुक्त व्यंजनों में जो निर्बल व्यंजन होता है उसका लोप हो जाता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। बल की दृष्टि से व्यंजनों का क्रम इस प्रकार है—

(१) वर्ग के प्रथम चार वर्ण सर्वाधिक बलशाली होते हैं।

(२) ङ, ञ, ण, न, म—ये पांच वर्ण उनसे कम बलशाली हैं।

(३) ल, स, ब, य, र—ये पांच वर्ण सबसे निर्बल हैं। ये भी आपस में क्रमश: एक दूसरे से निर्बल हैं।

क, ग, च, छ आदि व्यंजन स्वर सहित होते हैं, तब इन्हें सरल व्यंजन कहते हैं। द्वित्व होने पर ये संयुक्त व्यंजन हैं। भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यंजन क के साथ ये बनते हैं— त्क, क्त, क्य, क्र, र्क, ल्क, क्व आदि। प्राकृत में इन सब के स्थान पर शब्द के अंदर 'क्क' का तथा आदि में 'क' का ही प्रयोग होता है जैसे—

संस्कृत	**प्राकृत**	**संस्कृत**	**प्राकृत**
उत्कण्ठा	उक्कण्ठा	मुक्त	मुक्क
वाक्य	वक्क	चक्र	चक्क
तर्क	तक्क	उल्का	उक्का
विक्लव	विक्कव	पक्व	पक्क
क्वचित्	कचि	क्वणति	कणति

इसी प्रकार ग के साथ भिन्नवर्गीय संयोग ये बनते हैं—ड्ग, ग्ण, द्ग, ग्न, ग्य, ग्र, र्ग, ल्ग। इनका समानवर्गीय संयुक्त रूप बनता है—ग्ग। आदि में होने से संयुक्त नहीं बनता केवल ग बनता है। जैसे—

संस्कृत	**प्राकृत**	**संस्कृत**	**प्राकृत**
खड्ग	खग्ग	रुग्ण	रुग्ग, लुग्ग
मुद्ग	मुग्ग	युग्म	जुग्ग
योग्य	जुग्ग	अग्र	अग्ग
ग्रास	गास	ग्रसते	गसते
वर्ग	वग्ग	वल्गा	वग्गा

इसी तरह सभी वर्णों के भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यंजनों का समानवर्गीय संयुक्त व्यंजन बनाया जाता है। समानवर्गीय संयुक्त व्यंजन ये हैं—क्क, क्ख, ग्ग, ग्घ, च्च, च्छ, ज्ज, ज्झ, ट्ट, ट्ठ, ड्ड, ड्ढ, ण्ण, त्त, त्थ, द्द, द्ध, न्न, प्प, प्फ, ब्ब, ब्भ, म्म, ल्ल, व्व, स्स।

प्रश्न

१. संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं?

२. संयुक्त व्यंजन कहां होते हैं और कहां नहीं होते? स्पष्ट करो।

३. संयुक्त व्यंजन में एक व्यंजन का लोप होने के बाद कौन-सा व्यंजन द्वित्व होता है और उसका अन्तिम रूप क्या रहता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. संयुक्त व्यंजन को सरलव्यंजन बनाने का साधन क्या है ?
५. वर्णों में अधिक बलशाली कौन-कौन से व्यंजन हैं तथा उनका निर्बल और निर्बलतर होने का क्या क्रम है ?
६. भिन्नवर्गीय संयुक्त व्यंजन क के साथ क्या-क्या बनते हैं ?
७. स्वरभक्ति का प्रयोग कहां किया जाता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३ वाच्य

वाच्य—जो हम कहना चाहते हैं उसे वाच्य कहा जाता है।

उसके तीन प्रकार हैं—(१) कर्तृवाच्य (२) कर्मवाच्य (३) भाव-वाच्य।

कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है, कर्म गौण रहता है।

कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है, कर्ता गौण रहता है।

भाववाच्य में क्रिया प्रधान होती है, कर्ता और कर्म गौण रहते हैं।

अपने भावों को कहने के लिए इन तीन वाच्यों में से एक वाच्य का माध्यम लेना होता है। किस वाच्य को हम महत्त्व दें यह हमारी विवक्षा या भावना पर निर्भर है। इस पाठ में कर्तृवाच्य पर विचार करते हैं। कर्मवाच्य और भाववाच्य पर आगे के पाठों में विचार करेंगे।

अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए हमें शब्दों का सहारा लेना होता है। शब्दों के समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य में कम से कम एक कर्ता और एक क्रिया होती है। केवल कर्त्ता से वाक्य नहीं बनता और केवल क्रिया से वाक्य नहीं बनता। कभी-कभी बातचीत के प्रसंग में केवल एक कर्ता या केवल एक क्रिया का प्रयोग भी होता है। जैसे—रमेश ने सुरेश से कहा—कौन पढता है? उसने उत्तर दिया—मैं। यहां केवल कर्ता का प्रयोग है, क्रिया का नहीं। पूरा वाक्य था—मैं पढता हूं।

संक्षेप में कहने से क्रिया का प्रयोग नहीं होता। कर्ता के साथ क्रिया का निश्चित सम्बन्ध होने के कारण 'मैं' कर्ता के साथ उत्तम पुरुष की क्रिया स्वयं आ जाती है। इसी प्रकार केवल क्रिया का भी बातचीत में व्यवहार होता है। विमल और रवीन्द्र दुकान पर जाने के लिए बातचीत कर रहे थे। विमल ने पूछा—गया नहीं। रवीन्द्र ने उत्तर दिया—जाता हूं। यहां प्रश्न और उत्तर दोनों में कर्ता नहीं है। पूरा वाक्य था—कोई गया नहीं। उत्तर था—मैं जाता हूं। यहां कोई और मैं का प्रयोग नहीं किया गया है। यहां कर्ता का अध्याहार किया जाएगा। सामान्यतया वाक्य में एक कर्ता और एक क्रिया होती है। विस्तार करें तो वाक्य में कर्ता के साथ कर्म, साधन, संप्रदान, अपादान, सम्बन्ध और आधार इनका भी प्रयोग किया जा सकता है। कर्ता आदि के विशेषणों का भी प्रयोग किया जा सकता है। और अधिक स्पष्टता के लिए निम्नलिखित वाक्य पढें।

१. राम जाता है। राम कर्ता है, जाता है क्रिया। २. मनीषा पुस्तक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढती है। पढती है क्रिया, मनीषा कर्ता और पुस्तक कर्म। ३. गोपाल पेन से लिखता है—लिखता है क्रिया, गोपाल कर्ता और पेन से साधन। ४. सुमन साधु को भिक्षा देती है—देती है क्रिया, सुमन कर्ता, भिक्षा कर्म और साधु को सम्प्रदान। ५. वह घोडे से गिरता है—गिरता है क्रिया, वह कर्ता और घोड़े से— अपादान। ६. मेरा सफेद घोडा तेज दौडता है—दौडता है क्रिया, तेज क्रिया का विशेषण, घोड़ा कर्ता, सफेद कर्ता का विशेषण, मेरा सम्बन्ध। ७. तुम्हारे घर में बालक पुस्तक पढते हैं। पढते हैं क्रिया, बालक कर्ता, पुस्तक कर्म, घर में आधार, तुम्हारे सम्बन्ध।

वाक्य में एक क्रिया के साथ अर्धक्रिया भी आ सकती है। क्त्वा और तुम प्रत्यय के रूप अर्धक्रिया के द्योतक हैं। क्रिया के आगे कर या करके तथा 'के लिए' लगाने पर अर्धक्रिया बनती है। खाने के लिए, पीने के लिए, बोलने के लिए, करने के लिए—ये रूप 'तुम्' प्रत्यय के अर्धक्रिया के हैं। खाकर, पीकर, बोलकर आदि क्त्वा प्रत्यय के रूप अर्धक्रिया के हैं।

(१) वह पाठ पढ़ने के लिए विद्यालय जाता है—जाता है क्रिया, वह कर्ता, विद्यालय कर्म, पढने के लिए अर्धक्रिया, पाठ अर्धक्रिया का कर्म। (२) सुशील खाना खाकर बाजार जाता है। यहां जाता है क्रिया, सुशील कर्ता, बाजार कर्म, खाकर अर्धक्रिया, खाना अर्धक्रिया का कर्म।

प्रश्न

१. नीचे लिखे वाक्यों में कर्ता आदि छांटो।

विमलेश किसका पुत्र है? घर में कौन बैठा है? धर्मेश अध्ययन करता है। सरला ज्योतिष पढती है। वह चाकू से क्या काटता है? रमा आचार से भ्रष्ट है। सफेद गाय पीली गाय की अपेक्षा गाढा और अधिक दूध देती है। काले कुत्ते को मत मारो। सूक्ष्म लेखनी से सुन्दर अक्षर कौन लिखता है? तुम्हारे भाग्य में क्या लिखा है? अपने भाग्य का निर्माता मैं स्वयं हूं। विकास का मार्ग सबके लिए खुला है। नेताओं के आश्वासनों पर अधिक विश्वास मत करो। दिन में खाना खाकर सोना क्या स्वास्थ्य के लिए अच्छा है? वह वाणी का संयम न कर बात को बिगाडता है। अनुशासन के लिए गुरु की आज्ञा का पालन करो। भागते हुए घोडे से शंकर गिर गया। मेरी पुस्तक पीले रंग की थी। समय का मूल्यांकन कौन करता है? धन से अधिक मूल्यवान धर्म है। गिरकर भी जो उठता है वह बुद्धिमान है। पूर्वभव के संस्कारों को जानने के लिए उसने भगवान से पूछा। इस जन्म के बाद मेरे कितने भव अवशेष हैं? सदा सत्य बोलो। जीवन को नियमित बनाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. वाच्य कितने होते हैं ? उनकी पहचान क्या है ?
३. वाच्य में कम से कम क्या होता है और अधिक में क्या ?
४. अर्धक्रिया और क्रिया में अन्तर क्या है ?
५. अर्धक्रिया किन प्रत्ययों के योग से बनती है ?
६. हिन्दी में पांच वाक्य ऐसे बनाओ जिनमें अर्धक्रिया के प्रयोग हों ?
७. हिन्दी में छह वाक्य ऐसे बनाओ जिनमें कर्ता, कर्म और साधन साथ में हों।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जो नाम या क्रियाएं हमारे व्यवहार में आती हैं उन सब के अंत में विभक्ति लगी हुई होती है। विभक्तिरहित कोई शब्द या क्रिया हमारे व्यवहार में नहीं आती। कहीं-कहीं पर विभक्ति के प्रत्यय आते हैं पर उनका लोप हो जाता है, शब्द ज्यों का त्यों रहता है, वह शब्द विभक्त्यन्त कहलाता है। विभक्ति का अर्थ है—विभाजन करने वाला प्रत्यय। जिसके द्वारा संख्या और कारक का बोध होता है उसे विभक्ति कहते हैं। विभक्तियां नाम और क्रिया की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को तथा भिन्न-भिन्न काल को सूचित करती हैं। संज्ञा या नाम के अंत में सात विभक्तियां होती हैं।

सि प्रत्यय आदि में होने के कारण उनकी संज्ञा स्यादि विभक्तियां है। कर्ता आदि छह कारक और संबंध में इन सात विभक्तियों का उपयोग होता है। सामान्यतया कर्ता आदि कारक उसके चिह्न और विभक्ति को इस रूप में याद कर सकते हैं।

कारक	**चिह्न**	**विभक्ति**
कर्ता	है, ने	प्रथमा
कर्म	को, (को रहित)	द्वितीया
साधन	से, द्वारा	तृतीया
संप्रदान	के लिए	चतुर्थी
अपादान	से	पंचमी
संबंध	का, के, की	षष्ठी
अधिकरण	में, पर	सप्तमी

प्रथमा विभक्ति

१. कर्तृवाच्य में संज्ञाएं जब कर्ता के रूप में व्यवहृत होती हैं तब उनमें प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—

शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
रुक्खो	वृक्ष	पव्वयो	पर्वत
आसो	अश्व	सुक्कं	शुक्ल
गुणो	गुण	पीअं	पीला
कंबलो	कंबल	सिरी	लक्ष्मी, शोभा

२. संबोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—हे सुरेस !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।
द्वितीया आदि विभक्तियां आगे के पाठों में पढें।

प्रश्न

१. नीचे लिखे वाक्यों में कौनसी विभक्ति किसमें है ?
समुद्र के पास भव्य मंदिर को देखने के लिए जनता उमड पडी। बादलों की सघनता को देखकर किसानों ने सोचा, आज मेघ बरसने वाला है। मेरा तुम्हारे पर विश्वास है, इसीलिए मैंने तुमको अपनी गुप्त बात कही है। तुम्हारी विनयशीलता मेरे मानस को प्रभावित करती है। दूसरों की शिकायत करने वाला पहले स्वयं को देखे। वह कुल्हाडी से वृक्ष को काटता है। काष्ठ पर खडा होकर वह बिजली को छूता है। रमेश पिता से डरता है, पर माता की अवमानना करता है। धर्म से सुख मिलता है और धन से वस्तु मिलती है। वह पेन से अक्षरों को लिखता है। मेज पर किताबें हैं। उनकी संख्या कितनी है ?
२. विभक्ति की उपयोगिता क्या है ?
३. विभक्तियां कितनी हैं ? प्रत्येक की पहचान क्या है ?
४. प्रथमा बिभक्ति कहां-कहां होती है ?

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

५ प्रथम पुरुष

कर्ता को तीन भागों में विभाजित किया जाता है—

	(१) प्रथम पुरुष	(२) मध्यम पुरुष	(३) उत्तम पुरुष
एकवचन	वह	तू	मैं
बहुवचन	वे/वे दोनों	तुम/तुम दोनों	हम/हम दोनों

प्रथम पुरुष को अन्य पुरुष भी कहते हैं। हाथी, घोडा, लक्ष्मी, पृथ्वी, वृक्ष आदि जितनी भी संज्ञाएं कर्ता होती हैं वे सब प्रथम पुरुष के कर्ता हैं। इसके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया आती है। कर्तृवाच्य में इनकी कर्ता संज्ञा है।

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं। संज्ञा का प्रयोग होने के बाद ही संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग होता है। संज्ञा में जो लिङ्ग और वचन होते हैं उसके स्थान पर आने वाले सर्वनाम में वही लिङ्ग और वचन होता है। सर्वनाम त्रिलिङ्गी होते हैं। इनके रूप परिशिष्ट १ में देखें। सर्वनाम ये हैं—

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
सव्व	सर्व	सब
वीस	विश्व	सब
उभय	उभय	दो
इक्क, एक्क, एग	एक	एक
एक्कतर	एकतर	कोई एक
अण्ण	अन्य	दूसरा
इयर	इतर	कोई अन्य
कयर	कतर	कौनसा
कयम	कतम	उनमें कौनसा
ज	यद्	जो
त, ण	तद्	वह
एअ, एय	एतद्	यह
क	किम्	कौन
पुव्व	पूर्व	पूर्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर	पर	दूसरा
दाहिण, दक्खिण	दक्षिण	दक्षिण, दक्षिण का
उत्तर	उत्तर	उत्तर, उत्तर का
अवर	अपर	अन्य, दूसरा
अहर	अधर	नीचा
स, सुव	स्व	अपना
इम	इदम्	यह
अमु	अदस्	वह
तुम्ह	युस्मद्	तू
अम्ह	अस्मद्	मैं
भव	भवत्	आप

तू, तुम, मैं और हम बोधक शब्दों के अतिरिक्त शेष सभी शब्द प्रथम पुरुष में प्रयुक्त होते हैं ।

पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए इम (इदम्), अधिक पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए एअ (एतद्), सामने के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के लिए अमु (अदस्), परोक्ष (जो वक्ता के सामने न हो) पदार्थ या व्यक्ति के लिए स (तद्) शब्द का प्रयोग किया जाता है ।

रमेश पढने में होशियार है परन्तु उसका भाई धनेश मंद बुद्धि वाला है । रमेश का इस अर्थ में 'उसका' शब्द का प्रयोग हुआ है । कई बार सर्वनामशब्द संज्ञा के विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं । यह लडका सुन्दर है । यह पुस्तक पाठनीय है । जिस प्रकार संज्ञा में सब विभक्तियां आती हैं, वैसे ही सर्वनाम में भी सब विभक्तियां आती हैं—उसने, उसको, उससे, उसके लिए, उससे, उसका, उसमें या उस पर आदि ।

प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष—ये तीनों पुरुष सर्वनाम के ही रूप हैं ।

प्रथम पुरुष

एकवचन	बहुवचन
सो—वह	ते—वे/वे दोनों
ता—वह (स्त्री)	ता—वे/वे दोनों (स्त्री)

धातु प्रत्यय (वर्तमान काल)

इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
हस्—हसइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे

हस् धातु की तरह अन्य व्यंजनान्त (अ विकरण वाली) धातुओं के रूप बनते हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रयोग वाक्य

सो नमइ—वह नमन करता है। ते नमंति—वे दोनों/वे सब नमन करते हैं।
सो पढइ—वह पढता है। ते पढन्ति—वे दोनों/वे सब पढते हैं।
सो लिहइ—वह लिखता है। ते लिहंति—वे सब/वे दोनों लिखते हैं।
सो भणइ—वह पढता है। ते भणंति—वे सब/वे दोनों पढते हैं।
सो हसइ—वह हंसता है। ते हसंति—वे सब/वे दोनों हंसते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह नमता है। वह पढता है। वह हंसता है। वह लिखता है। वह पढती है। वह नमती है। वह हंसती है। वह लिखती है। वे नमते हैं। वे पढते हैं। वे हंसते हैं। वे लिखते हैं। वे दोनों नमते हैं। वे दोनों पढते हैं। वे दोनों हंसते हैं। वे दोनों लिखते हैं। वे नमती हैं। वे हंसती हैं। वे पढती हैं। वे लिखती हैं। वे दोनों नमती हैं। वे दोनों पढती हैं। वे दोनों हंसती हैं। वे दोनों लिखती हैं।

प्रश्न

१. पुरुष कितने प्रकार के होते हैं? उनके कर्त्ता कौन हैं?
२. सर्वनाम किसे कहते हैं?
३. सर्वनाम कौन-कौन से शब्द हैं?
४. प्रथम पुरुष के वर्तमान काल के क्या-क्या प्रत्यय हैं?
५. सर्वनाम में कौनसी विभक्ति होती है? उदाहरण से स्पष्ट करो।
६. सर्वनाम में कौनसा लिंग व वचन होता है?
७. प्रथम पुरुष में कौन से सर्वनाम माने जाते हैं?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यम पुरुष

धातु संग्रह

सेव—सेवा करना	पास—देखना
गच्छ—जाना	धाव—दौडना
सुण—सुनना	भम—घूमना
भुंज—खाना	पिव—पीना
इच्छ—इच्छा करना	जाण—जानना

अव्यय संग्रह

कल्ल (कल्यं)—कल	अत्थ (अत्र)—यहां
सइ, सया (सदा)—सदा	तत्थ (तत्र)—वहां
सइ (सकृत्)—एक बार	ण, न (न)—नहीं
मुहु—बार-बार	झत्ति (झटिति)—शीघ्र
सणिअं (शनैः)—धीरे	अज्ज (अद्य)—आज

ऊपर बताए गए अव्यय इसी रूप में प्रयोग में आते हैं। न इसमें कुछ जुडता है और न कुछ कम होता है।

मध्यम पुरुष

एक वचन	बहुवचन
तुमं—तू	तुम्हे—तुम/तुम दोनों

धातु प्रत्यय (वर्तमान काल)

सि, से	इत्था, ह

सि, से और ह प्रत्यय धातु के आगे जुड जाते हैं। इत्था प्रत्यय धातु के अ का लोप होने के बाद जुडता है।

प्रयोग वाक्य

तुमं गच्छसि—तू जाता है/जाती है।
तुमं सेवसि—तू सेवा करता है/करती है।
तुमं सुणसि—तू सुनता है/सुनती है।
तुमं भुंजसि—तू खाता है/खाती है।
तुमं पाससि—तू देखता है/देखती है।
तुमं धावसि—तू दौडता है/दौडती है।
तुमं भमसि—तू घूमता है/घूमती है।
तुमं पिवसि—तू पीता है/पीती है।
तुमं इच्छसि—तू इच्छा करता है/करती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमं जाणसि—तू जानता है/जानती है ।
तुमं अज्ज गच्छसि—तू आज जाता है/जाती है ।
तुमं सइ भुंजसि—तू एक बार खाता है/खाती है ।
तुमं सणिअं भमसि—तू धीरे घूमता है/घूमती है ।
तुमं मुहु लिहसि—तू बार-बार लिखता है/लिखती है ।
तुमं सया सेवसि—तू सदा सेवा करता है/करती है ।
तुम्हे गच्छित्था—तुम/तुम दोनों जाते हो/जाती हो ।
तुम्हे सेवित्था—तुम/तुम दोनों सेवा करते हो/करती हो ।
तुम्हे सुणह—तुम/तुम दोनों सुनते हो/सुनती हो ।
तुम्हे भुंजह—तुम/तुम दोनों खाते हो/खाती हो ।
तुम्हे पासह—तुम/तुम दोनों देखते हो/देखती हो ।
तुम्हे धावित्था—तुम/तुम दोनों दौडते हो/दौडती हो ।
तुम्हे इच्छह—तुम/तुम दोनों इच्छा करते हो/करती हो ।
तुम्हे भमित्था—तुम/तुम दोनों घूमते हो/घूमती हो ।
तुम्हे जाणह—तुम/तुम दोनों जानते हो/जानती हो ।
तुम्हे पिवह—तुम/तुम दोनों पीते हो/पीती हो ।

प्राकृत में अनुवाद करो

तू बार-बार पढता है । तू आज दौडता है । तू सेवा करती है । तू घूमती है । तू धीरे सुनती है । तू बार-बार देखती है । तू सदा वहां जाती है । तू दौडती है । तू जानती है । तू इच्छा करता है । तू यहां खाता है । तू धीरे पीता है । तू शीघ्र जाता है । तू वहां बार-बार जाता है । तू आज नहीं लिखता है । तू नहीं हंसता है । तुम दोनों सेवा करते हो । तुम वहां खाते हो । तुम यहां घूमते हो । तुम नहीं देखती हो । तुम दोनों बार-बार खाती हो । तुम दोनों जल्दी जाते हो । तुम दौडते हो । तुम सदा इच्छा करते हो । तुम दोनों सुनती हो । तुम नहीं सुनते हो । तू खाता है । तुम दोनों नहीं खाते हो । तू पढता है । तुम सदा घूमते हो ।

प्रश्न

१. मध्यमपुरुष के कर्ता कौन-कौन हैं ?
२. नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ—
भम, भुंज, धाव, सेव, पास, पिव, जाण, गच्छ, सुण, इच्छ ।
३. नीचे लिखे अव्ययों के अर्थ बताओ—
झत्ति, सइ, अज्ज, तत्थ, सणिअं, कल्लं, अत्थ, सया
४. इत्था और ह प्रत्यय किस अर्थ में लगते हैं और इनको धातु के आगे लगाने की विधि क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७ उत्तम पुरुष

शब्द संग्रह (महापुरुष)

अरहंत—अरहंतो	सिद्ध—सिद्धो
पार्श्वनाथ—पासणाहो	धर्मगुरु—आयरियो
महावीर—महावीरो	साधु—साधू
महादेव, शिव—हरो	बुद्ध—बुद्धो
जिन—जिणो	उपाध्याय—उवज्झायो

धातु संग्रह

पड—गिरना	बीह—डरना
मुंच—छोडना	रूस—क्रोधित होना
दह—जलना	पविस—प्रवेश करना
जंप—बोलना	घाय—मारना
तव—तपना	

अव्यय संग्रह

प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी	प्राकृत	संस्कृत	हिन्दी
इयाणिं, दाणिं	(इदानीं)	इस समय	धुवं	(ध्रुवम्)	निश्चय
किं	(किं)	क्या	एगया	(एगदा)	एक बार
केरिसो	(कीदृशः)	कैसा	खिप्पं	(क्षिप्रं)	शीघ्र
पुणो	(पुनः)	फिर से	अवस्सं	(अवश्यं)	अवश्य

• पुल्लिंग अकारान्त देव शब्द के रूप याद करो। देखो परिशिष्ट १ संख्या १

उत्तम पुरुष

एक वचन	**बहु वचन**
अहं—मैं	अम्हे—हम/हम दोनों

धातु प्रत्यय (वर्तमान काल)

मि	मो, मु, म

अकारान्त धातु के अ को आ हो जाता है उसके आगे ये प्रत्यय जुड जाते हैं।

अहं पिबामि—मैं पीता हूं/पीती हूं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहं हसामि---मैं हंसता हूं/हंसती हूं ।
अहं लिहामि---मैं लिखता हूं/लिखती हूं ।
अहं भुंजामि---मैं खाता हूं/खाती हूं ।
अहं सेवामि---मैं सेवा करता हूं/करती हूं ।
अहं जाणामि---मैं जानता हूं/जानती हूं ।
अहं भणामि---मैं पढ़ता हूं/पढ़ती हूं ।
अहं इच्छामि---मैं इच्छा करता हूं/करती हूं ।
अहं गच्छामि---मैं जाता हूं/जाती हूं ।
अहं जंपामि---मैं बोलता हूं/बोलती हूं ।
अहं दाणिं भमामि---मैं इस समय घूमता हूं/घूमती हूं ।
अहं पविसामि---मैं प्रवेश करता हूं/करती हूं ।
अम्हे पिवामो---हम/हम दोनों पीते हैं/पीती हैं ।
अम्हे लिहामु---हम/हम दोनों लिखते हैं/लिखती हैं ।
अम्हे भुंजाम---हम/हम दोनों खाते हैं/खाती हैं ।
अम्हे सेवामो---हम/हम दोनों सेवा करते हैं/करती हैं ।
अम्हे जाणामु---हम/हम दोनों जानते हैं/जानती हैं ।
अम्हे इच्छाम---हम/हम दोनों इच्छा करते हैं/करती हैं ।
अम्हे हसामो---हम/हम दोनों हंसते हैं/हंसती हैं ।
अम्हे जंपाम---हम/हम दोनों बोलते हैं/बोलती हैं ।
अम्हे पासामो---हम/हम दोनों देखते हैं/देखती हैं ।
अम्हे गच्छामु---हम/हम दोनों जाते हैं/जाती हैं ।
अम्हे भणाम---हम/हम दोनों पढते हैं/पढती हैं ।
अम्हे तवामो---हम/हम दोनों तपते हैं/तपती हैं ।
अम्हे बीहमु---हम/हम दोनों डरते हैं/डरती हैं ।
अम्हे रूसाम---हम/हम दोनों क्रोधित होते हैं/होती हैं ।

अव्यय प्रयोग---दाणिं आयासत्तो जलबिंदुणो पडंति । रामो खिप्पं पढइ । सुरेसो केरिसो पुरिसो अत्थि ? हं अवस्सं लिहामि । एगया महावीरो अत्थ आगओ । सो पाढं पुणो पढइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मैं शीघ्र लिखता हूं । मैं धीरे लिखता हूं । मैं सेवा करता हूं । मैं बार-बार जाती हूं । मैं एक बार देखता हूं । मैं पीता हूं । मैं सदा हंसता हूं । मैं नहीं खाता हूं । मैं वहां नहीं जाती हूं । मैं आज पढ़ती हूं । मैं वहां खाती हूं । मैं अवश्य लिखता हूं । मैं अवश्य सेवा करता हूं । मैं आज पढता हूं । मैं इस समय वहां जाता हूं । मैं फिर से लिखता हूं । मैं कैसा हूं ? मैं नहीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंसता हूं। हम आज पढते हैं। हम दोनों लिखते हैं। हम नहीं हंसते हैं। हम फिर से देखते हैं। हम आज सेवा करते हैं। हम दोनों धीरे बोलते हैं। हम वहां अवश्य जाती हैं। हम दोनों क्रोधित होते हैं। हम दोनों इच्छा करते हैं। हम दोनों जानते हैं। हम दोनों एक बार खाती हैं। हम दोनों सदा पढती हैं। हम दोनों वहां खाती हैं। हम दोनों इच्छा करती हैं। हम वहां लिखते हैं। हम दोनों यहां खाते हैं। हम एक बार वहां अवश्य जाते हैं। हम दोनों इस समय वहां निश्चय जाती हैं। हम शीघ्र दौडती हैं। हम दोनों घूमते हैं। हम एक बार खाते हैं। हम एक बार हंसती हैं। हम पीते हैं। हम दोनों नहीं पढते हैं। हम दोनों जानते हैं। हम दोनों नहीं लिखती हैं। हम सदा हंसती हैं। वह जल्दी पढता है। तुम कैसे आदमी हो? मैं अवश्य पढता हूं। वह फिर से पढता है। एक बार तुम यहां आए थे।

प्रश्न

१. उत्तमपुरुष के बहुवचन के प्रत्यय कौन-कौन से हैं और उनके रूप बनाने का सरल उपाय क्या है?

२. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द क्या हैं?
अरहंत, आचार्य, सिद्ध, पार्श्वनाथ, जिन, साधु, बुद्ध, महादेव, उपाध्याय।

३. नीचे लिखे अर्थों में कौन-कौनसी धातु प्रयोग में आती है?
बोलना, प्रवेश करना, क्रोध करना, छोडना, तपना, डरना, मारना, जलना, गिरना।

४. नीचे लिखे अर्थों में किन अव्ययों का प्रयोग करना चाहिए?
अवश्य, एक बार, फिर से, कैसा, निश्चय, इस समय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग १)

पिता—जणओ, बप्पो, पिऊ माता—माआ, जणणी, अम्मो
दादा—अज्जयो, पिआमहो दादी—पिआमही, अज्जिआ
परदादा—पपिआमहो, पज्जओ परदादी—पज्जिआ
नाना—माआमहो नानी—माउम्मही
परनाना—पमायामहो परनानी—पमाआमही
मामा—माउलो मामी—मामी, मल्लाणी (दे०)
मामे का बेटा—माउलपुत्तो

० ० ० ० ०

आसिसा—आशीष: भिखारी, भीख मांगने वाला—भिक्खारी

धातु संग्रह

जिंघ—सूंघना
अरिह—पूजा करना, अर्चना करना सुमर—स्मरण करना
कह—कहना दा—देना
पीस—पीसना पतार—ठगना

अव्यय संग्रह

कहं—कैसे किमवि—कुछ भी
अइ (अति) अतिशय अईव (अतीव) विशेष

० **पुलिंग आकारान्त गोपा शब्द, इकारान्त मुणि और उकारान्त साहु शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट १, संख्या २,३,५।**

कर्म—कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जो वस्तु निष्पन्न करता है या जिस वस्तु पर क्रिया के व्यापार का फल पडता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म की यह विस्तृत परिभाषा है। संक्षेप में कर्ता जो कुछ करता है वह कर्म है। कर्म के तीन भेद हैं—

१. निर्वर्त्य—इसका अर्थ है उत्पाद्य। उत्पाद्य वस्तुएं दो श्रेणी की होती हैं। (क) जो जन्म से उत्पन्न हो। जैसे—माता पुत्र को पैदा करती है। (ख) जो अविद्यमान हो और उसका निर्माण किया जाए। जैसे—मिस्त्री मकान बनाता है।

२. विकार्य—वर्तमान वस्तु को अवस्थान्तरित करने से जो विकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होता है उसको विकार्य कहते हैं। जैसे—स्वर्णकार सोने का कुण्डल बनाता है।

३. प्राप्य—जिसमें क्रिया से कुछ भी विशेषता न होती हो उसे प्राप्य कहते हैं। जैसे—मैं चन्द्रमा को देखता हूं। इसमें न तो कुछ भी उत्पन्न होता है और न विकृत ही।

कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। कर्म-वाच्य में कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया में लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

प्रयोग वाक्य

पज्जओ महावीरं गच्छइ। बप्पो सीयं जलं पिबइ। मायामही बहु बीहइ। पिआमहो सव्वं जाणइ। माउलो सच्चं जंपित्था। मायामहो किं जिंघइ? पिआमही जिणं सुमरइ। मल्लाणी पासणाहं अरिहेइ। अज्जिआ कहं कहइ? अज्जओ सइ भुंजइ। पज्जिआ जणणिं आसिसं (आशीष) देइ। माआ किं इच्छइ? पिऊ उज्जाणम्मि अडइ। मामी भिक्खारिं किमवि ण देइ। जयमाला कुसुमं पतारइ। तस्स भज्जा चुण्णं (आटा) पीसइ। माउलो अइमहुरं जंपइ। अहं किमवि न इच्छामि। तुमं कहं हससि? तुज्झ अक्खराणि अईव सुंदरं संति। माउलपुत्तो किमवि न कहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

दादा ने पिता का पालन किया। दादी कहानी कहती है। परदादा मामा को देखता है। परदादी एक बार खाती है। नानी सदा डरती है। मामी महावीर की पूजा करती है। माता क्या सूंघती है? मामा क्या चाहता है? दादा कथा सुनता है। नाना सब जानता है। दादी सदा ठंडा पानी पीती है। नानी बार-बार नहीं खाती। पिता सत्य बोलता है। वह कुछ नहीं चाहता। तुम कैसे पढते हो? राम अतीव सुन्दर बोलता है। माया का पुत्र कथा कहता है।

प्रश्न

१. कर्म कितने प्रकार के होते हैं? प्राप्यकर्म किसे कहते हैं?
२. कर्म में कौनसी विभक्ति होती है?
३. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
   परदादा, मामी, पिता, नाना, मामा, मां, परदादी, नानी।
४. नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ—
   अरिह, सुमर, जिंघ, पीस, पतार, दा, कह।
५. देव शब्द के सारे रूप लिखो।
६. नीचे लिखे अव्यय किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं?
   अग्गे, विणा, अवि, अग्गओ, अईव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग २)

चाचा—पिइज्जो, चुल्लपिऊ — चाची—पिइज्जजाया, चुल्लपिउजाया
भाई—भायरो, भाऊ, भाई (पुं) — बहन—बहिणी, भगिणी, ससा
फुफेराभाई—पिउसियाणेयो — फुफेरी बहन—पिउसिआणिज्जा
मौसेराभाई—माउसिआणेयो — मौसेरी बहन—माउसिआणिज्जा
चचेराभाई—पिइज्जपुत्तो — चचेरी बहन—पिइज्जसुआ
बड़ाभाई—अग्गओ — छोटाभाई—अणुओ
बड़ी बहन का पति—भाओ (दे०)

० ० ० ०

प्रतिदिन—पइदिणं — अपना घर—णियगिहं
पूर्ण, पुण्य—पुण्णं — शत्रु—सत्तू (पु०)
सहायता—साहज्जं

धातु संग्रह

जव—जाप करना — ओणम्—नीचे नमना
ओग्गह—ग्रहण करना — जिण—जीतना
जुज्झ—लड़ाइ करना, युद्ध करना — णी, णे—ले जाना, पहुंचाना
वड्ढ—बढना — लह—प्राप्त करना
पडिभा—मालुम होना — सक्क—सकना

अव्यय संग्रह

विणा—बिना — अवि, पि—भी
अग्गे (अग्रे) आगे — अग्गओ (अग्रतस्) आगे से

हस धातु के कर्तृवाच्य के सब रूप याद करो (देखो—परिशिष्ट २ संख्या १) हसान्त धातुओं के रूप हस धातु की तरह चलते हैं।

ग्रामणी और खलपू शब्द के रूप याद करो (देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४,६) ग्रामणी के रूप मुणि की तरह और खलपू के रूप साधु की तरह चलते हैं।

साधन—जिसके द्वारा कार्य किया जाता है उसे साधन या करण कहते हैं। एक कार्य करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनेक वस्तुएं सहायक होती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हैं। कार्य की सिद्धि में जितने सहायक होते हैं, वे साधन नहीं कहला सकते। साधन तो वही है जो साधकतम हो यानि क्रिया की सिद्धि में सबसे अधिक निकट संपर्क रखता हो। जैसे—वह पेन से लिखता है। अध्यापक रमेश को डंडे से मारता है। इन दो वाक्यों में पेन और डंडा साधन है। कहीं-कहीं पर विवक्षा से साधन को कर्ता भी बनाया जाता है। जैसे, सुरेश तलवार से काटता है। यहां तलवार से साधन है। तलवार काटती है—इस वाक्य में तलवार जो साधन थी उसे कर्ता बना दिया गया है, यहां तलवार में प्रथमा विभक्ति होगी। संप्रदान को भी साधन बनाया जा सकता है। जैसे—श्रावक साधु के लिए भिक्षा देता है। यहां साधु के लिए सम्प्रदान है। इस वाक्य को साधन में इस प्रकार बदल सकते हैं—श्रावक भिक्षा से साधु का सत्कार करता है। साधन केवल वस्तु ही नहीं बनती, मन, वचन और शरीर भी साधन बनते हैं। साधन में तृतीया विभक्ति होती है।

तृतीया विभक्ति

१. सह, साअं, समं और सद्धं के योग में तृतीया विभक्ति होती है।
२. पिहं, बिना और नाना शब्दों के योग में तृतीया या द्वितीया या पंचमी विभक्ति होती है।
३. जिस विकृत अंग के द्वारा अंगी का विकार मालूम हो उस अंग में तृतीया विभक्ति होती है।
४. जो जिस विशेष लक्षण से जाना जाए उसके लक्षण में तृतीया विभक्ति होती है।
५. आर्ष प्रयोगों में सप्तमी के स्थान पर तृतीया विभक्ति होती है।
६. जिस कारण या प्रयोजन से कोई कार्य किया जाता है या होता है, उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

प्रयोग वाक्य

पिइज्जो जलं पिवइ। पिइज्जजाया पासणाहं जवइ। बप्पो सिद्धं सुमरइ। भाअरो किं जिघइ! ससा सइ मालाए महावीरं जवइ। पिउसियाणेयो सत्तुं जिणइ। चुल्लपिउजाया पिउसियाणिज्जं णियगेहं णेइ। माउसियाणेयो सया सच्चं ओग्गहइ। माउसिआणिज्जा माउलं सेवइ। पिज्जपुत्तो पइदिणं पिआमहीए सह भुंजइ। पिइज्जसुआए सरीरं वड्ढइ। अग्गओ किं जुज्झइ? अणुओ कहं सुमरइ? अणुओ खिप्पं गच्छइ। भाओ अज्ज धणं लहइ। घरिणी साहज्जं इच्छइ।

तृतीया विभक्ति के प्रयोग वाक्य

१. अग्गएण सह अणुओ गच्छइ। पिउसिआणिज्जाए समं पिउसिआणेयो भुंजइ। माउसिआणिज्जा भगिनीइ सद्धं जवइ। बहिणीए साअं अणुओ मुहु मुहु जुज्झइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. जलेण पिहं कमलं चिट्ठिउं न सक्कइ। जलेण विणा जीवणं नत्थि।
३. स नेत्तेण काणो अत्थि। माउलो पाएण खंजो अत्थि।
४. रयहरणेण मुणी पडिभाइ। सो मुहेण सुरेसं अणुहरइ।
५. तेणं कालेणं तेणं समएणं।
६. पुण्णेण गुरु दिट्ठो। धणवालो अज्झयणेण अत्थ वसइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. चाचा माला से जाप करता है। बहिन लडाई क्यों करती है ? फुफेरा भाई सदा सत्य बोलता है। मौसेराभाई नहीं डरता है। फुफेरी बहिन क्या चाहती है ? मौसेरी बहिन ने भाई की सेवा की। छोटा भाई क्या सूंघता है ? वह मां से क्या चाहता है ? पिता पानी के साथ क्या पीता है ? छोटा भाई बहन के साथ क्यों लडता है ? बड़ा भाई छोटे भाई के साथ दौडता है। भाई बहन के साथ खाता है। बडी बहन का पति पार्श्वनाथ का जाप करता है। चचेरा भाई चाची को धन देता है।

तृतीया विभक्ति का प्रयोग करो

२. मोहन के बिना उसका रहना सम्भव नहीं है। जल से पृथक् कमल नहीं रह सकता।

३. सीता पग से लंगडी है। रमा आंख से काणी है। मोहन कान से बहरा है।

४. मुंह से धर्मचंद श्रीचंद के समान है। वह रजोहरण से मुनि मालूम होता है। जटा से तापस जाना जाता है।

५. परीक्षा के प्रयोजन से वह यहां रहता है। पुण्य से भगवान के दर्शन होते हैं।

प्रश्न

१. साधन किसे कहते हैं और उसमें कौनसी विभक्ति होती है ?
२. प्रस्तुत पाठ के अनुसार तृतीया विभक्ति कहां-कहां होती है ?
३. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
चाचा, चाची, मौसेराभाई, फुफेराभाई, भाई, बहन, छोटाभाई, बडाभाई, मौसेरीबहन, चचेराभाई, फुफेरीबहन।
४. नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ—
ओग्गह, जुज्झ, जिण, ओणम, जव, वड्ढ।
५. एक वाक्य ऐसा बनाओ जिसमें इस पाठ में आए हुए दो शब्द, एक धातु, एक अव्यय और विभक्ति के छह नियमों में से एक नियम हो।
६. मुणि और साहु शब्द के रूप लिखो।
७. नीचे लिखे अर्थों में कौन से अव्यय प्रयोग में आते हैं ? आगे से, बिना, आगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दसंग्रह (परिवार वर्ग ३)

पति—भत्ता, सामी, पई (पुं)	पत्नी—भज्जा, भारिया, दारा
देवर—दिअरो, देअरो, अण्णओ (दे.)	साली—साली
देवरानी—अण्णी (दे.) अण्णिआ (दे.)	दुलहिन—अणरहू (स्त्री दे०) णवा
ससुर—ससुरो	सास—सस्सू, सासू, अत्ता (दे.)
साला—सालो	बड़ीसाली—कुली
बड़ासाला—अवलो (सं)	प्रेयसी—पीअसी, पेअसी
सासरा—ससुरालयो	

० ० ० ०

घूंघट—अंगुट्ठी, विरंगी (दे.) अवउंठणं, अवगुंठणं ।

धातु संग्रह

णिवेअ—निवेदन करना	हो—होना
पणम—प्रणाम करना	सिक्ख—शिक्षा देना
आरोहण—ऊपर चढना	संकुच—संकोच करना

अव्यय संग्रह

अण्णोण्णं, अण्णमणं (अन्योन्यं) परस्पर, आपस में

अणंतरं (अन्तरं) पश्चात्, इसके बाद

अन्तो (अन्तर) भीतर

अण्णहा (अन्यथा) नहीं तो

स्त्रीलिङ्ग आकारान्त माला शब्द के रूप याद करो (देखो परिशिष्ट १ संख्या २२) ।

दानपात्र

कर्म के द्वारा अथवा क्रिया के द्वारा श्रद्धा, उपकार या कीर्ति की इच्छा से जिसको कोई वस्तु दी जाए अथवा जिसके लिए कोई कार्य किया जाए, उसे दानपात्र कहते हैं । दानपात्र में चतुर्थी विभक्ति होती है । श्रमण के लिए भिक्षा देता है—इस वाक्य में श्रमण को श्रद्धा से भिक्षा दी जाती है । गुरु को कार्य निवेदन करता है—यहां निवेदन श्रद्धा से किया जाता है, इस लिए गुरु की दानपात्र संज्ञा है । धोबी को वस्त्र देता है, राजा को कर देता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है—इन दो वाक्यों में देने की क्रिया अवश्य है, पर श्रद्धा, उपकार या कीर्ति की भावना से नहीं है। पहले वाक्य से रुपयों के विनिमय से कार्य कराया जाता है। दूसरे वाक्य में व्यवस्था की दृष्टि से देता है। मन न होने पर भी देना होता है। इसलिए ऊपर के दोनों वाक्यों की दानपात्र संज्ञा नहीं है।

चतुर्थी विभक्ति

१. रोय (रुच्) अर्थ वाली धातुओं के योग में जिस व्यक्ति को जो पदार्थ रुचता हो, उस व्यक्ति में चतुर्थी विभक्ति होती है।

२. कुज्झ (क्रुध्) दोह (द्रुह्), ईस (ईर्ष्) तथा असूअ (असूय) धातुओं के योग में जिनके ऊपर क्रोधादि किया जाता हो उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

३. सिह (स्पृह्) धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है।

४. समत्थ (समर्थ) अर्थ वाले शब्द (अलं, खमो, पभू), नमो, सुत्थि, (स्वस्ति) सुहा, सुआहा आदि शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

५. हिअ (हित) और सुह (सुख) शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

६. जिस वस्तु से किसी वस्तु का निर्माण किया जाता हो उस निर्मित वस्तु में चतुर्थी होती है, उपादान वस्तु का साथ में प्रयोग हो तो।

७. कर्ज लेना धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

८. सलाह (श्लाघ) हुण, (ह्नु) चिट्ठ (स्था) सव (शप्) धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

प्रयोग वाक्य

पई धम्मं न करेइ। भज्जा पइणा सह पइदिणं उज्जाणो परिअडइ। अवलो णियभगिणिं किं कहइ? कुली अज्ज गिहे नत्थि। अणरहू ससुरालयं गच्छइ। देअरो महुवयणं जंपइ। अण्णिआ दिणे सइ भुंजइ। अवलो ससुरं पणमइ। सालो जामाउं सक्कारेइ। सासू अणरहुं किं पुच्छइ? साली अण्णअं हसइ। णवा ससुरालये अपरिचिआ होइ। पीअसी पइणा समं भमइ। तणयो जणअस्स सव्वं निवेअइ। मुणी संथारस्स गिरिं आरोहइ।

चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग

१. मज्झं मोअगा रोअन्ते। तुज्झवियारो मम रोयइ।

२. रमेसो रामाय कुज्झइ, दोहइ, ईसइ, असूअइ वा।

३. विमला पुप्फाण पुप्फाणि वा सिहइ। लोभी धणस्स धणं वा सिहइ।

४. दारा सासूए कहणं सहणस्स पभू। अहं जंपणाय समत्थो मि। मल्लो मल्लस्स अलं।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

५. बालअस्स हिअं सुहं वा लहुभोयणं ।

६. सो कुंडलाय हिरण्णं णेइ । रामो घटाय मत्तिआ इच्छइ ।

७. नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं । भत्ताणं सुत्थि । पिअराणं सुहा ।

८. विमलो मोहणाय सयं धरइ ।

९. विणयाय सलाहइ, विणयाय हुणइ, विमलाय चिट्ठइ, सुरेसाय सवइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पति घर में नहीं है । पत्नी अपने देवर को भिक्षा देती है। देवरानी सासू की सेवा करती है । साली साले को प्रतिदिन प्रणाम करती है। ससुर सास से क्या कहता है ? साला ससुर को नमस्कार करता है। पत्नी प्रेयसी से गुस्सा करती है । सासरे में दुलहन संकोच करती है । पत्नी पति के साथ कहां जाती है ? बडासाला अपनी बहन को शिक्षा देता है। बडीसाली सास को प्रतिदिन प्रणाम करती है ।

विभक्ति का प्रयोग करो

१. तुम्हें दूध प्रिय है । राम को ठण्डा पानी प्रिय है ।

२. सुशीला लता से ईर्ष्या करती है । सुलोचना रमा से क्रोध करती है । राम मोहन से द्रोह करता है । ललिता से पद्मावती असूया करती है ।

३. राजेन्द्र फूलों को चाहता है । सीता गर्म दूध चाहती है ।

४. मैं धन देने में समर्थ हूं । गुरु को नमस्कार है । प्रजा (पआ) का कल्याण हो (सुत्थि) । पितरों को समर्पित है (सुहा) ।

५. ग्राम के लिए स्कूल हितकर है । दूध तुम्हारे लिए सुखकर है ।

६. मकान के लिए यह काष्ठ है । सोना कुंडल के लिए है ।

७. श्याम रामू से सौ रुपये कर्ज लेता है।

८. अग्रगामी अनुगामी की श्लाघा करता है ।

प्रश्न

१. दानपात्र किसे कहते हैं ? उसमें कौनसी विभक्ति होती है ?

२. देना और दानपात्र का भेद बताओ ।

३. चतुर्थी विभक्ति कहां-कहां होती है ? इस पाठ के अनुसार एक-एक उदाहरण दो ।

४. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
सासू, दुलहिन, पत्नी, प्रेयसी, साली, सासरा, देवरानी, जंवाइ (दामाद), देवर, बड़ी साली और बड़ा साला ।

५. नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।
रूस, पणाम, सिक्ख, णिवेअ, संकुच ।

६. हस धातु के कर्तृवाच्य के सारे रूप लिखो ।

७. अण्णमण्णं, अणंतरं, अंतो—इन अव्ययों के अर्थ बताओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११ अपादान

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग ४)

दोहिता—पडिपोत्तयो	बेटी—पुत्ती, तणया, दुहिआ, धूया
बेटा—पुत्तो, तणयो, सुनू	भानजी—भाइणेज्जा, भाइणेया
भानजा—भाइणेज्जो, भाइणेयो	भतीजी—भाइसुआ
भतीजा—भाइसुओ	पोती—नत्तुणिया
पोता—नत्तुणियो, पोत्तो	प्रपोती—पपोत्ती
प्रपोता—पपोत्तो, पडिपुत्तो	अविवाहित—अकंडतलिम (दे०)
सखी, सहेली—अत्थयारिआ (दे०)	मालिक—सामी
घर—घरो (दे०)	पाप—पावं
पत्थर—पाहणो, पत्थरो	आधाकर्मदोष से युक्त—आहाकड (वि)

धातु संग्रह

अस—होना	आगच्छ—आना
पवह—निकलना	अहिजाअ—उत्पन्न होना
पराजय—हारना	दुगुञ्छ—घृणा करना
पमाय—प्रमाद करना	विरम—विराम लेना

अव्यय संग्रह

पगे (प्रगे)—प्रातःकाल	अहुणा—(अधुना) अभी
य, अ, च—और	अत्थ—(अत्र) यहां
अपरज्जु (अपराद्य)—दूसरे दिन	अहा (यथा)—जिस प्रकार

हो धातु के कर्तृवाच्य के सब रूप याद करो : (देखो परिशिष्ट २ संख्या २) आकारान्त, इकरान्त आदि सभी स्वरान्त धातुओं के रूप हो धातु की तरह चलते हैं।

अपादान

अपाय का अर्थ है—विश्लेष यानी अलग होना। एक का दूसरे से अलग होना अपाय कहलाता है। वह दो प्रकार का होता है (१) शरीर से और (२) बुद्धि से। सुरेश घोडे से गिरता है। पहले सुरेश घोडे के साथ चिपका हुआ था, गिरने से वह घोडे से अलग हो गया। अलग होने की जो अवधि है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। बुद्धिपूर्वक विभाग में शरीर से अलग होने की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई आवश्यकता नहीं होती, केवल बुद्धि से ही अलगाव होता है। जैसे—राम शत्रुओं से डरता है। मोहन धर्म से प्रमाद करता है। इन दो वाक्यों में शत्रुओं और धर्म से विभाग होता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। पूर्व के पाठों में कारकों के चिह्न बतलाए गए हैं, उनमें साधन और अपादान का एक ही चिह्न है—से। फिर भी दोनों का अन्तर स्पष्ट ज्ञात होता है।

पंचमी विभक्ति

१. दुगुञ्छा, विराम और पमाय तथा इनके समानार्थक शब्दों के योग में पंचमी विभक्ति होती है।

२. जिससे डरता हो उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

३. परा पूर्वक जय (जि) धातु के योग में जिससे हारता है उसकी अपादान संज्ञा होती है और उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

४. जिससे उत्पन्न होता है या निकलता है उसमें पंचमी विभक्ति होत ,है।

प्रयोग वाक्य

पुत्तो पिउं पणमइ पगे। भाइणेज्जो दुद्धं पिवइ। नत्तुणिया घरे खेलइ। माउलो भाइणेयेण सह किं चिंतइ? बप्पो गिहस्स सामी अत्थि। अज्जओ अहुणा संसारे नत्थि। पज्जओ पुअणीओ अत्थि सव्वाणं गिहवासिणं। पई णिसाए न भुंजइ। नत्तुणियो विणेयो सुसीलो य अत्थि। भाइणेज्जा लेहं लिहइ। पपोत्ती गिहागंणे खेलइ। धूया अहुणा अकंडतलिमा अत्थि। भाइणेया अत्थयारिआए समीवत्तो पोत्थयं नेंति। रामो पिउणो धणं गेण्हइ। सो कुसुमत्तो धणं मग्गइ। तुमं गिरिणो पडित्था। सो पव्वयत्तो पाहुणा नेंति।

विभक्ति का प्रयोग

१. सो सज्झायत्तो पमायइ। सोहणो भासणत्तो विरमइ। साहू पावत्तो दुगुञ्छइ।

२. कमला कलहत्तो बीहइ। गुणसिरी सप्पाओ बीहइ। गिहे सप्पाओ भयं णत्थि।

३. लोअणाहो अज्झयणत्तो पराजयइ।

४. कामत्तो कोहो अहिजाअइ। संकप्पत्तो कामो अहिजायइ। हिमवत्तो गंगा पवहइ।

अव्यय का प्रयोग

अहं पगे आयरियं पणमामि। अहुणा अत्थ को वि साहू नत्थि। सो अपरज्जु न आगमिहिइ। आहाकडं भिक्खं साहू न गेण्हइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत में अनुवाद करो

भतीजा दादा के साथ घूमता है। भानजा लड़ाई नहीं करता है। पोता दादा के साथ खाना खाता है। भानजी मौसी के साथ यहां कब आई है? पोती पाप से डरती है। प्रपोता सुंदर है। बेटा बाप को प्रणाम करता है। बेटी ससुराल जाती है। भतीजी अभी तक अविवाहित है। भानजी सहेली के साथ खेलती है। बेटी दादी की सेवा करती है। नानी पाप नहीं करती है।

विभक्ति का प्रयोग करो

१. हम मनुष्य से दुगुञ्छा करते हैं। वे लिखने से विराम लेते हैं। लालचन्द धर्म करने में प्रमाद करता है।

२. वह गाय से भी डरता है।

३. श्याम श्रम से हारता है। धर्मचन्द अध्ययन से हारता है।

४. परिग्रह से भय उत्पन्न होता है। भय से हिंसा उत्पन्न होती है। क्रोध से मोह उत्पन्न होता है।

अव्यय का प्रयोग करो

प्रातःकाल मैं जाप करता हूं। अभी यहां कोइ भी आदमी नहीं है। मैं दूसरे दिन यहां आऊंगा। जिस प्रकार सुख हो, वैसा करो।

प्रश्न

१. अपादान किसे कहते हैं? उसमें कौन-सी विभक्ति होती है?
२. अपादान कितने प्रकार का है? उदाहरण से स्पष्ट करो।
३. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
भानजा, भानजी, भतीजा, पोता, प्रपोती, बेटी, प्रपोता, पोती, भतीजी, बेटा।
४. नीचे लिखे धातुओं का प्रयोग करो—
पवह, अहिजाअ, दुगुञ्छ, पमाय, विरम
५. पंचमी विभक्ति किस-किस के योग में होती है?
६. माला शब्द के रूप लिखो।
७. नीचे लिखे अर्थों में कौन-सा अव्यय प्रयोग में जाता है?
दूसरे दिन, प्रातःकाल, अभी, जिस प्रकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (परिवार वर्ग ५)

साढू—सालीधवो (सं) बूआ—पिउस्सिआ, पिउच्छा पिउच्छा
जमाई—जामाया मौसी—माउसिआ, ताउसी, माउलिया (दे०)
मौसा—माउसिआपई भौजाई—भाउजाया, भाउज्जा, भाउज्जाइया
पौत्र की पत्नी—नत्तुइणी ननंद—णणंदा
पत्नी—पत्ती सिरीमई, घरिणी पुत्रवधू—णोहा, पुत्तबहू, सुण्हा
० ० ० ० ०
दहेज—अण्णाणं (दे०) समर्पण—समप्पणं
नाम—अभिहाणं वार्ता—वत्ता

धातु संग्रह

सिव्व—सीना याच—मांगना
वर—सगाइ करना विवह—विवाह करना
चुंब—चुम्बन लेना अल्लव—बोलना

अव्यय संग्रह

संपइ (सम्प्रति) इसी समय किर, किल (किल) निश्चय, संशय
पइ—प्रति, ईसिं (ईषत्) थोड़ा
अवरि, अवरिं, उवरिं (उपरि) ऊपर एगहा (एकधा) एक प्रकार

स्त्रीलिङ्ग इकारान्त मइ, ईकारान्त वाणी, उकारान्त धेणु और ऊकारान्त वधू शब्दों को याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या २३,२४,२५,२६। इनके रूप मइ शब्द की तरह ही चलते हैं।

संबंध

सम्बन्ध अनेक प्रकार का होता है—
(क) स्वस्वामि संबंध—घोड़े का मालिक
(ख) जन्यजनक संबंध—त्रिशला का पुत्र
(ग) अवयव-अवयवी संबंध—पशु का पैर
(घ) आधार-आधेय संबंध—वृक्ष की शाखा
(ङ) प्रकृतिविकारभाव संबंध—दूध का विकार दही
(च) समूहसमूहिभाव संबंध—गायों का समूह
(छ) समीपसमीपिभाव संबंध—घडे का स्वामी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ज) पाल्य-पालक भाव संबंध---पृथ्वी का स्वामी
संबंध में षष्ठी विभक्ति होती है।

षष्ठी विभक्ति

१. तुल्य अर्थ वाले शब्दों (तुल्य, सम, सरिस) के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है।

२. कृत्य प्रत्यय (तव्य, अनीय, य, क्यप् और घ्यण्) के योग में कर्ता में षष्ठी और तृतीया विभक्ति होती है।

३. विभाग किए बिना निर्धारण करने के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है।

४. स्मृति अर्थ की धातु के योग में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है।

प्रयोग वाक्य

सालीधवो अज्ज अत्थ आगमिस्सइ। माउसिआ वत्थं सिव्वइ। पिउस्सिआए ससुरालयो सग्गो (स्वर्ग) विज्जइ। घरणी घरम्मि किं करेइ? माउस्सिआपई अण्णाणस्स चिंताए किसो जाओ। भाउजाया णणंदाए वत्तं करेइ। सुण्हा केणं सह भुंजइ? सिरीमईइ पइं पइ कहं समप्पणं न विज्जइ? णोहा नत्तुइणीए सह सव्वेसिं परिचओ कारवेइ। पिउच्चा पुत्तं चुंबइ। अण्णिआ नत्तुणियं वरइ। पिउसिआणेयो रमेसं विवहइ। साहू सव्वाइं वत्थूइं याचइ। सालीधवो सणियं अल्लवइ।

अव्यय प्रयोग

संपइ अहं पाठसालं गच्छामि। पारसो तत्थ किल गमिहिइ। पोत्थए ईसिं भारो अत्थि। रुक्खस्स अवरिं किं अत्थि?

विभक्ति का प्रयोग

(क) रण्णो पहाणो णिउणो अत्थि।
(ख) दीवाए पुत्तो महापुरिसो आसि।
(ग) आयरिअतुलसीए नयणाइं दीहाइं संति।
(घ) कलंबस्स साहा केरिसी होइ?
(ङ) नवणीओ दहिणो विआरो हुवइ।
(च) आसाणं समूहो अज्ज अत्थ आगमिस्सइ।
(छ) अस्स घडस्स सामी को अत्थि?
(ज) रायगिहस्स राइणो किं अभिहाणं आसि?
१. जिणस्स तुल्लो कालुरामायरिओ आसि।
२. तस्स किं कअं? मह किमवि ण कहिअं।
३. मणुआणं खत्तिओ सूरो। धेणूणं कसिणा बहुखीरा।
४. सो माआए सुमरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत में अनुवाद करो

साढू का नाम क्या है ? बुआ भतीजी से बात करती है। मौसी अभी तक अविवाहित है। भौजाई ननंद के दहेज से डरती है। मौसा आज हमारे यहां आएंगे। पुत्रवधू बहुत सुशील है। पत्नी क्रोध बहुत करती है। पोते की पत्नी में समर्पण की भावना कम है। जमाई धन मांगता है। सासू दामाद से बात करती है। माता पुत्री की सगाई करती है। पिता पुत्र का विवाह करता है। सीता अपने पुत्र का चुंबन लेती है। वह कुछ नहीं मांगता है।

विभक्ति का प्रयोग करो

(क) गाय का मालिक धनराज है।

(ख) सुशीला का लडका नहीं पढता है।

(ग) गाय की आंख में पीडा है।

(घ) वृक्ष के फूल सुंदर हैं।

(ङ) तू बहुत थोडा खाता है।

(च) इसी समय वहां आओ। निश्चय ही वह तुम्हारे साथ जाएगा। धर्म के प्रति आस्था रखो। भैंस के दूध का दही अच्छा होता है।

(छ) गायों का समूह रात में यहां बैठता है।

(ज) चंदेरी का राजा कौन था ?

१. गौतमस्वामी महावीर के समान हो गए।

२. उसने क्या पढा ? राज ने भाषण में क्या कहा ? कुलदीप ने बहुत अच्छा लिखा है।

३. पढने वालों में विभा प्रवीण है। अध्यापकों में रामविलास प्रवीण है।

४. वह पिता का स्मरण करता है।

प्रश्न

१. सम्बन्ध कितने प्रकार का होता है ? उसमें कौन-सी विभक्ति होती है ?

२. षष्ठी विभक्ति कहां-कहां होती है ?

३. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
साढू, भौजाई, मौसी, बुआ, पुत्रवधू, ननंद, पौत्र की पत्नी, दहेज, पत्नी।

४. इन धातुओं के अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग करो—
सिव्व, याच, चुंब, अल्लव, विवह।

५. हो धातु के कर्तृवाच्य के सब रूप लिखो।

६. नीचे लिखे अर्थों में कौन से अव्यय प्रयोग में आते हैं ?
थोडा, इस समय, प्रति, निश्चय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३ आधार

शब्द संग्रह (गोरस वर्ग)

दूध —खीरं, पयो, दुद्धं, अलिआरं (दे०) दही—दहिं (न)
घी—घयं, सप्पि, अज्जं नवनीत—णवणीयं, दहिउप्फं (दे०)
खीर—पायसो मट्ठा—घोलं (दे०)
मावा, खोआ—किलाडो, कूचिआ छाछ—तक्कं
दही की मलाई—दहित्थारो (दे०) दूध की मलाई—करघायलो (दे०)
कढी—कढिआ (दे०) तीमणं खट्टीराब—अंबेली (दे०)
रायता—दाहिअं (सं) श्रीखंड—छिहंडओ (दे०)

० ० ० ० ०

संभव—संहवं आजकल—अज्जत्ता

धातु संग्रह

पज्जल—जलाना णिवस—निवास करना, रहना
उवदंस—दिखाना, पास जाकर बताना कील—क्रीडा करना, खेलना
खास—खांसना अहिलस—इच्छा करना

अव्यय संग्रह

एत्थ (अत्र) यहाँ कओ (कुतः) कहाँ से
अहवा, अहव (अथवा) या, अथवा असइं (असकृत्) अनेक बार
कहिआ कहिं, कहि (क्व, कुत्र) कहां, किस स्थान में। अहे (अधस्) नीचे

नपुंसक लिंग अकारान्त वण शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ३०।

आधार—जिसमें क्रिया हो रही है उसे आधार कहते हैं। वह छह प्रकार का है—

(१) औपश्लेषिक—जिस आधार से संलग्न पदार्थ का बोध हो उस आधार को औपश्लेषिक कहते हैं। जैसे—वह चटाइ पर सोता है। धर्मेन्द्र वृक्ष पर बैठता है।
सोने वाला चटाई से और बैठने वाला वृक्ष से संलग्न है।

(२) सामीप्यक—जिससे समीपता का बोध हो, उसे सामीप्य आधार कहते हैं। जैसे—गायें बरगद के नीचे खडी हैं। अशोक वृक्ष के नीचे सीता बैठी है।

(३) अभिव्यापक—व्याप्य का बोध कराने वाले शब्द को अभिव्याप्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आधार कहते है । जैसे—दूध में घी है । तिलों में तेल है ।

(४) वैषयिक—जिससे विषय (निवास करने के क्षेत्र) का बोध हो उसे वैषयिक आधार कहते हैं । अरण्य में सिंह गर्जता है । तपोवन में तपस्वी तप करता है ।

(५) नैमित्तिक—जिस शब्द से होने वाले कार्य के निमित्त की सूचना मिलती है उसे नैमित्तिक आधार कहते हैं। जैसे—वह युद्ध के लिए तैयार होता है।

(६) औपचारिक—उपचार यानि संकेत को मानकर जो कहा जाता है उसे औपचारिक आधार कहते हैं । जैसे—वृक्ष पर बिजली चमक रही है । अंगुली की नोक पर चन्द्रमा है ।

आधार में सप्तमी विभक्ति होती है ।

(क) एक प्रसिद्ध क्रिया से दूसरी अप्रसिद्ध क्रिया का काल जाना जाए तो पहली क्रिया में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—सूर्यास्त के समय वह घर आया ।

(ख) अनादर भाव से किसी की उपेक्षा कर क्रिया करने पर अनादर भाव वाले में सप्तमी विभक्त होती है । जैसे—रोती हुई माता को छोड पुत्र दीक्षित हो गया ।

(ग) सामी, ईसर, अहिवइ, दायाद, साखी, पडिहू और पसूअ—इन शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी विभक्ति विकल्प से होती है ।

(घ) निर्धारण—समुदाय में से एक की किसी विशेषण के द्वारा विशिष्टता दिखाई जाए तो समुदायवाची शब्द में सप्तमी विभक्ति विकल्प से होती है ।

प्रयोग वाक्य

जो संसारे आसत्तोऽत्थि सो मूढो । संसारम्मि रागा दोसा य अणादिकालाओ संति । मेहा सव्वत्थ परिओ वरिसंति । रामस्स गिहं आवणे (बाजार में) अत्थि । ते गिरिम्मि कत्थ णिवसंति । सरस्सईए गिहे अग्गी पज्जलइ । वाउम्मि गमणं संहवं नत्थि । छिहंडओ सुमेरस्स रोअइ । अहं पइदिणं दुद्धं पिबामि । रिसहो धयं वा अज्जं वा न अहिलसइ । नवणीयं अलिआरेण जाअइ । तक्कं भोयणेण सद्धिं हिमअरं हवइ । मज्झण्हस्स पच्छा दहिं न भोत्तव्वं किं अ कफकारअं होइ । घोलं सीअलं भवइ । जो दहि खाअइ सो खासइ । मज्झ करघायलो रोयइ । मए अज्ज दहित्थारो भुत्तो । अहं संझा भोयणे कढिअं भुंजामि । मेवाडदेसे जणा अंबेल्लिं खाअंति । सुद्धो अणरिक्को दुल्लहो अत्थि । किलाडो गिरिट्ठो भवइ । दाहिअं रुइकरं भवइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी विभक्ति

१. पक्खिणो रुक्खे चिट्ठंति ।
२. असोगरुक्खम्मि सीया उवविसइ ।
३. तिलेसुं तेल्लं विज्जइ ।
४. समेअसिहरे तवस्सिणो तवंति ।
५. जुज्झाय सज्जेंति ।
६. अंगुलीए अग्गे चंदिमा दिस्सइ ।
(क) अत्थंगयम्मि सो गिहं आगओ ।
(ख) रोअन्तीए माउए चइत्ता पुत्तो दीक्खिओ जाओ ।
(ग) गवाणं गोसु वा सामी, आसाणं आसेसु वा इसरो अहिवई वा गआणं गउएसु वा पसूओ ।
(घ) गवाणं गवासु वा कसिणा बहुक्खीरा । साहूणं साहूसु वा हेमरायो पडू । कईसु वा बलभद्दो सेट्ठो ।

प्राकृत में अनुवाद करो

गाय का दूध मीठा होता है । कल्याणश्री प्रतिदिन दही खाती है । घी सब लोगों को सुलभ नहीं है । छाछ स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है । आजकल शुद्ध नवनीत का दर्शन दुर्लभ है । हर घर में खोआ नहीं मिलता है । मैंने दूध की मलाई बहुत खाई है । दही की मलाई रोटी के समान मोटी है । कढी कौन नहीं खाता ? गरम खट्टी राब मुझे बहुत प्रिय है । गोरस हमारे घर में नहीं है । रमेश के लिए प्रतिदिन राइता खाना संभव नहीं है । माता अग्नि जलाती है । जंयती पालनपुर में निवास करता है । आज श्रीखंड खाने की किसकी इच्छा है ? बच्चा अपना प्रमाणपत्र पिता को दिखाता है । लडके घर में ही खेलते है । हमारे घर के नीचे तुम रहते हो । तुमने पुस्तक कहां रखी है ? दिन में अनेक बार वहां जाना अच्छा नहीं है । राम अथवा गोपाल उसके पास जाए । जीव कहां से आया है ? यहां पर वह कितने दिन ठहरेगा ?

विभक्ति का प्रयोग करो

१. वह प्रतिदिन जमीन पर सोता है ।
२. अशोकवृक्ष के नीचे बालक पढते हैं ।
३. मिट्टी में सोना है । अरणिलकडी में आग है ।
४. जैनविश्वभारती में पारमार्थिक शिक्षण संस्था है ।
५. गुरु दर्शन के लिए वह तैयार होकर जाता है ।
६. उस पर्वत पर चंद्रमा है । अंगुली के सामने राम का घर है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(क) गोधूलि के समय वह यहां से गया था ।

व्याख्यान के समय टमकोर का संघ गुरुदर्शन के लिए आया था ।

(ख) बच्चे को रोते हुए छोडकर माता साधु को भिक्षा देने लगी ।

(ग) इस पुस्तक का मालिक कौन है ? जोधपुर का अंतिम अधिपति कौन था ?

(घ) संस्कृत में कालिदास श्रेष्ठ विद्वान् हुआ है । सुषमा अपनी कक्षा में सबसे अधिक सुशील है । प्रभा अपनी कक्षा में याद करने में सबसे आगे है ।

प्रश्न

१. मइ और वधू शब्द के सारे रूप लिखो ।

२. आधार कितने प्रकार का होता है ? एक-एक उदाहरण देकर स्पष्ट करो ।

३. आधार में कौनसी विभिक्त होती है ?

४. नीचे लिखे शब्दों के योग में कौनसी विभक्त होती है ?
दायाद, पसूअ, अहिवइ ।

५. विभक्ति घ का दो उदाहरण प्राकृत में दो ।

६. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ—
दूध की मलाई, छाछ, राइता, संभव, मावा, आजकल, खट्टीराब, दही की मलाई, खीर, नवनीत, कढी, दही

७. नीचे लिखी धातुओं के अर्थ बताओ—
उवदंस, णिवस, पज्जल, कील, खास, अहिलस ।

८. किन्हीं दो अव्ययों का वाक्य में प्रयोग करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (देश्य)

दव्वरिया—छोटी रस्सी
दारद्धंता—पेटी, संदूक
दसु (पुं)—शोक, दिलगिरी
दिअहुत्तं—दुपहरका भोजन
पडिखद्धो (वि)—मारा हुआ
पडलगं—टोकरी
दाढिया—दाढी
दालिअं—नेत्र
दिअलिओ—मूर्ख
पडिच्छदो—मुख
पडिभेयो—उपालंभ, निंदा
पडाली—घर के ऊपर की कच्ची छत, चटाई आदि से छाया हुआ स्थान

धातु संग्रह (देश्य)

अंगोहल—स्नान करना
अल्ल—चिल्लाना
अक्कोस—आक्रोश करना
अच्छुर—बिछाना
अल्लव—समर्पण करना
अप्फोड—ताली बजाना

नपुंसक लिंग के इकारान्त दहि और उकारान्त मधु शब्द को याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ३१,३२

देश्य

प्राकृत भाषा में शब्द दो प्रकार के होते हैं—संस्कृतसम और देश्य। जो शब्द संस्कृत के शब्दों से पूर्ण अथवा कुछ समानता रखते हैं उन्हें संस्कृतसम कहते हैं। जो शब्द अति प्राचीन होने के कारण व्युत्पत्ति की दृष्टि से संस्कृत भाषा और प्राकृत भाषा से सिद्ध नहीं होते, उन्हें देश्य शब्द कहते हैं। प्राकृत भाषा में जो धातुओं के आदेश हैं वे देश्य नहीं है।

वेद आदि प्राचीन शास्त्रों में तथा संस्कृत भाषा के साहित्य में और कोषों में देश्य शब्दों का प्रयोग बहुलता से प्राप्त होता है। देश्य शब्दों में द्राविड भाषा के भी शब्द है। हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी भाषा से मिलते-जुलते अनेक शब्द मिलते हैं। देश्य शब्दों की तरह देश्य धातुएं (क्रियापद) भी होती हैं।

नियम ३ (गोणादयः २।१७४)—गौण आदि शब्द निपात हैं। प्रकृति (मूलशब्द) प्रत्यय, लोप, आगम, वर्णविकार आदि जिनमें नहीं होते उन्हें निपात कहते हैं। गोणो (गौः) बैल। गावी (गावः) गैया। बइल्लो (बलिवर्दः) बैल।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आऊ (आपः) पानी। पञ्चावण्णा (पञ्चपञ्चाशत्) पचपन। तेवण्णा (त्रिचत्वारिंशत्) तयालीस। विउसग्गो (व्युत्सर्गः) परित्याग। वोसिरणं (व्युत्सर्जनम्) परित्याग। बहिद्धा (बहिर्मैथुनं वा) बाहर और मैथुन। णामुक्कसिअं (कार्यम्) कार्य। कत्थइ (क्वचित्) कहीं। वम्हलो (अपस्मारः) केसर। कंदुट्टं (उत्पलम्) नीलकमल। छिछि, छिद्धि (धिक्धिक्) अनेक-धिक्कार। धिरत्थु (धिगस्तु) धिक्कार हो। पडिसिद्धी, (प्रतिस्पर्धा) प्रतिस्पर्धा। चच्चिक्कं (स्थासकः) चंदन आदि सुगन्धित वस्तु को शरीर पर मसलना। ऐसे अनेक शब्द हैं।

संस्कृतसम शब्द

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
संसार	संसार	दावानल	दावानल
नीर	नीर	काम	काम
जल	जल	दाह	दाह
मोह	मोह	नाग	नाग
गाढ	गाढ	धूलि	धूलि

संस्कृत के कुछ समान शब्द

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
सुवण्णा	सुवर्ण	तडाय	तडाग
कणग	कनक	रंभा	रम्भा
घड	घट	सण्ढ	षण्ढ
झज्झर	झर्झर	पडिमा	प्रतिमा
नयर	नगर	बंधव	बान्धव
महुर	मधुर	धम्म	धर्म
नाह	नाथ	रुक्ख	रूक्ष

संस्कृत के समान क्रिया पद

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
भवति	भवति	मरते	मरते
धाति	धाति	हन्ति	हनति

संस्कृत के कुछ समान क्रियापद

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
जुज्झते	युध्यते	नच्चति	नृत्यति
पुच्छति	पृच्छति	कुणति	कृणोति
वन्दित्ता	वन्दित्वा		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजस्थानी भाषा के समान प्राकृत शब्द

प्राकृत	राजस्थानी	प्राकृत	राजस्थानी
घर	घर	गोर	गोर
खड्डा	खड्डा	गडवड	गडवड-गोलमाल
गुड	गुड	काहार	कहार
कटार	कटार	पत्थर	पत्थर
वेरूण	वेरूण	कलस	कलस
घडो	घडो	सिंघ	सिंघ
बोर	बोर	उच्छह	उच्छाह

प्रयोग वाक्य

दसू न कायव्वो। सीयलणाहस्स दाढियाए लोमाइं न संति। तुमे दवरियाए किं कज्जं कीरइ। कस्स दालिअम्मि पीडा विज्जइ ? तुज्झ गामे को दिअलिओ अत्थि ? तस्स पडिच्छंदम्मि दुगंधं आआइ। थेरेण तस्स पडिभेयो कओ। राओ पडालीइ अम्हे सयामो। दारद्धंताए मम वत्थाइं संति। तुमे अज्ज दिअहुत्तं महगिहे कायव्वं। पडलगम्मि केवलाइं फलाइं संति। तेणं पडिखद्धो अयं पुरिसो अत्थि। सो संथारयं अच्छुरइ। कुसुमो जलेणं अंगोहलइ। बालो मुहा अल्लइ। तुमं कहं न अक्कोसेसि ? साहुणो आयरियं अल्लवइ। जणा सहाए अप्फोडंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम छोटी रस्सी से क्या बांधते हो ? स्त्री के भी दाढी में लोम हैं। संदूक में किसके वस्त्र हैं ? आचार्य तुलसी के नेत्र आकर्षक हैं। तुम शोक क्यों करते हो ? हमारे गांव में कोई मूर्ख नहीं है। दोपहर का भोजन आज मैं नहीं करूंगा। मुख से मीठे वचन बोलो। टोकरी में पत्ते किसने रखे हैं ? घर के ऊपर चटाई से छायी हुई छत पर मत सोओ। यह पशु सिंह का मारा हुआ है। गुरु शिष्य को उपालंभ देते हैं।

प्रश्न

१. प्राकृत में शब्द कितने प्रकार के होते हैं ? २. देश्य शब्द किसे कहते हैं ?
३. वण शब्द के रूप लिखो।
४. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ—
दवरिआ, दारद्धंता, पिअहुत्तं, पडिखद्धो, पडलगं, दिअलिओ, पडिभेयो, पडाली।
५. इन धातुओं के अर्थ क्या है—अंगोहल, अच्छुर, अप्फोड, अल्ल।
६. पांच शब्द ऐसे बताओ जो प्राकृत और संस्कृत में समान रूप हैं।
७. सात शब्द ऐसे बताओ जो प्राकृत और राजस्थानी भाषा में समानरूप हों।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वर संधि

शब्द संग्रह (रसोई मसाला)

मसाला—वेसवारो
जीरा—जीरयो
हल्दी—हलिद्दा, हलद्दी
धनिया—धाणा
तेजपता—तेजपत्तं
हींग—हिंगू
लवण—लोणं
मीर्च—मिरिअं
राई—राइगा

धातु संग्रह

चुण्ण—चूर्ण करना
ताव—तपाना
किण—खरीदना
पन्नव—प्रज्ञापित करना, बताना
लूह—पोंछना
झाम—जलाना, दग्ध करना
आढा—आदर करना, मानना
धर—पकडना

अव्यय संग्रह

आहच्च (दे)—कदाचित्, शीघ्र
उच्चअ (उच्चैः)—ऊंचे
कालओ (कालतः)—समय से
इह (इह)—यहीं
एवमेव (एवमेव)—इस तरह
काहे (कदा)—कब

पुल्लिग ज (यत्) त (तत्) क कि शब्द याद करो।

देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४४ क, ४५ क, ४६ क

स्वर संधि

संधि का अर्थ है परस्पर मिल जाना। प्राकृत में जो संधि की व्यवस्था है वह विकल्प से होती है। निम्नलिखित संधि के लिए प्राकृत में कोई सूत्र नहीं है। संस्कृत व्याकरण के आधार पर संधि की जाती है। प्राकृत में प्रयोग आता है इसलिए दी जा रही है।

प्रथम पद के अंतिम स्वर और आगे के पद के आदि स्वर के मिलने से जो संधि होती है उसे स्वर संधि कहते हैं। प्राकृत भाषा में वर्ण का लोप होने के बाद शेष स्वर रहने से एक शब्द में अनेक स्वर हो जाते हैं। उनमें संधि करने से अर्थ-भ्रम होना संभव है, इसलिए एक पद में संधि नहीं होती। जैसे—

पई (पति), नई (नदी), वच्छाओ (वत्सात्), महइ (महति)। कहीं-कहीं एक पद में भी संधि विकल्प से होती है। जैसे—काहिइ, काही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(करिष्यति), बिइओ, बीओ (द्वितीयः) थइरो, थेरो (स्थविरः), कुम्भ+आरो=कुम्भारो कुम्भआरो (कुम्भकारः), चक्क+आओ=चक्काओ, चक्कआओ (चक्रवाकः)।

नियम ४ (पदयोः संधिर्वा १।५)—संस्कृत में दो पदों की जो संधि होती है वह प्राकृत में विकल्प से होती है। विसम+आयवो=विसमायवो, विसम-आयवो। दहीसरो, दहि-ईसरो।

सवर्ण स्वर

(पिशल प्राकृत व्याकरण पैरा १४८ के अनुसार)

१. अवर्ण+अवर्ण=आ

(अ+अ=आ, अ+आ=आ, आ+अ=आ, आ+आ=आ)

देवाधिपाः—देव+अहिवा=देवाहिवा

जीवाजीव—जीव+अजीवो=जीवाजीवो

विषमातपः—विषम+आयवो=विसमायवो

यमुनाधिपतिः—जउणा+अहिवई=जउणाहिवई

गंगातपः—गंगा+आयवो=गंगायवो

२. इवर्ण+इवर्ण=ई

(इ+इ=ई, इ+ई=ई, ई+इ=ई, ई+ई=ई)

मुनीतरः—मुणि+इअरो=मुणीअरो

दहीश्वरः—दहि+ईसरो=दहीसरो

पृथ्वी ऋषिः—पुहवी+इसी=पुहवीसी

रजनीशः—रयणी+ईसो=रयणीसो

३. उवर्ण+उवर्ण=ऊ

(उ+उ=ऊ, उ+ऊ=ऊ, ऊ+उ=ऊ, ऊ+ऊ=ऊ)

स्वादूदकम्—साउ+उअयं=साऊअयं

भानूपाध्यायः—भाणु+उवज्झायो=भाणूवज्झायो

बधूदकम्—बहू+उअयं=बहूअयं

बहूच्छ्वासः—बहू+ऊसासो=बहूसासो

असवर्ण स्वर

(पिशल प्राकृत व्याकरण पैरा १४६)

अवर्ण+इवर्ण (असंयुक्त व्यंजन के पूर्व) ए

व्यासर्षिः—वास+इसी=वासेसी

दिनेशः—दिण+ईसो=दिणेसो

चन्दनेतरः—चंदणा+इअरो=चंदणेअरो

रमेशः—रमा+ईसो=रमेसो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(पिशल प्राकृत० पैरा १५०)

अवर्ण + इवर्ण (संयुक्त व्यंजन के पूर्व) इ (संयोग परे होने से ह्रस्व)

देवेन्द्रः—देव + इंदो = देविंदो

नरेन्द्रः—णर + इंदो = णरिंदो

अवर्ण + उवर्ण (असंयुक्त व्यंजन के पूर्व) = ओ

गूढोदरम्—गूढ + उअरं = गूढोअरं

एकोनं—एग + ऊणं = एगोणं

गंगोपरि—गंगा + उवरि = गंगोवरि

अवर्ण + उवर्ण (संयुक्त से पूर्व) उ

(ओ होने के बाद संयुक्त परे होने से उ होता है)

कर्णोत्पलम्—कण्ण + उप्पलं = कण्णुप्पलं

रत्नोज्ज्वलम्—रयण + उज्जलं = रयणुज्जलं

(पिशल प्राकृत० पैरा १५३)

अवर्ण + ए = ए

गाम + एणी = गामेणी (देशीशब्दः)

तथैव—तहा + एअ = तहेअ

अवर्ण + ओ = ओ

गुणौघः—गुण + ओहो = गुणोहो

मृत्तिकावलिप्तम्—मट्टिआ + ओलित्तं = मट्टिओलित्तं

संस्कृत के आधार पर

पूर्वपद के अन्त में स्वर हो और दूसरे पद के आदि में स्वर हो तो वहां कहीं-कहीं अगले पद के पहले स्वर का लोप हो जाता है।

फासे + अहियासए = फासे हियासए

बालो + अवरज्झइ = बालो वरज्झइ

एस्संति + अणंतसो = एस्संति णंतसो

नियम ५ (तुक् १।१०)—स्वर से परे स्वर होने पर पूर्व स्वर का प्रायः लोप हो जाता है।

तिदस + ईसो = तिदस् + ईसो = तिदसीसो, तिदसेसो (त्रिदशेशः)

नीसास + ऊसासो = नीसास् + ऊसासो + नीसासूसासो (निश्वासोच्छ्वासः)

नर + ईसरो = नर् + ईसरो = नरीसरो, नरेसरो (नरेश्वरः)

गच्छामि + अहं = गच्छम् + अहं = गच्छामहं (गच्छाम्यहम्)

तम्मि + अंसहरो = तम्मंसहरो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण+एव=ण्+एव=णेव (नैव)
देविंद+अभिवंदिअ=देविंदभिवंदिअ

प्रयोग वाक्य

वेसवारस्स महत्तं को न जाणइ ? जीरयम्मि लोहांसो अहियो होइ। पडणपीडाए घएण सह हलद्दीए पओगो कीरइ। हिंगू वाउणासणो अत्थि। लोणेण विणा तीमणस्स साओ न हवइ। आउव्वेयसत्थे गुणेणं मिरिअं उण्हअरं भवइ। महिला दालीए तेजपत्तं देइ। राइगाए संपुण्णा कढिआ महं बहु रोयइ। पिउसिआ थालिअं लूहइ। ससा घयं तावइ। अरिहंतो धम्मं पन्नवइ। णोहा सुक्कं कट्ठं झामइ। घरणी गोहूमं चुण्णइ। णवा सासुं आढाइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

जीरा और नमक दोनों का योग उपयोगी है। लालमीर्च अधिक नहीं खानी चाहिए। हींग की गंध दूर तक जाती है। हल्दी का रंग हल्का होता है। राई बहुत छोटी होती है। तेजपत्ता दाल के स्वाद को बढाता है। गुण से बहू ससुर का आदर करती है। मौसी वस्त्र से बर्तन पोंछती है। सुशीला चावलों का चूर्ण करती है। माता लकडी जलाती है पर उसमें धुंआ निकलता है। आचार्य तत्त्व को प्रज्ञापित करते हैं। बुआ धनिया खरीदती है।

प्रश्न

१. दहि और मधु शब्द के रूप लिखो।
२. मसाला, धनिया, राई, मीर्च, हल्दी, जीरा, तेजपत्ता, हींग और लवण शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ।
३ लूह, ताव, चुण्ण, झाम, किण, धर, पन्नव और आढा धातुओं के अर्थ बताओ।
४ आहच्च, उच्चअ, काहे अव्ययों को वाक्य में प्रयोग करो।
५. संधि करो—कंखा+अभावो, इंदिय+उवओगो, धम्म+इंदो, धण+ईसरो, सीया+ईसो, पीला+ओहो, बालो+अहियासए।
६. संधिविच्छेद करो—जीवाजीवा, भाणूअयं, निसेसो, गइंदो, मट्टिओलित्तं, जलोहो, गुणुज्जलं, रयणोवायो, सीओदगं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (रसोई उपकरण)

तवा—काहिल्लिआ (दे०)
तमेली—सुफणी (दे०)
चिमटा—संदंसो (सं)
चमची—कडुच्छयो (दे०)
डोयो, काष्ठ का हाथा—डोओ
कुर्छी—दव्वी
हांडी—हंडिआ, कंदू
चुल्हा—चुल्ली
ढकना—पिहाणं
छाज—चिल्लं (दे०)
संडासी—संडासं, संडासो
कडाही—कडाहो, कवल्लो
कठौती—चुण्णमद्दणी (सं)
प्याला, कटोरा—कट्टोरगो (दे).
थाली—थालिआ, थाली, थालं
रसोईघर—महाणसं
रसोइया—पाचओ, सूदो
चुल्हे का पिछलाभाग—अवचुल्लो
प्लेट—सरावो (सं)

० ० ० ० ०

परोसना—परीसणं, परिवेसणं
अंगारा—इंगारो, अंगारो
तरकारी—तीमणं
कलेवा—कल्लवत्तो, पायरासो

धातु संग्रह

णीसारय—निकालना
वट्ट—परोसना
मुण—जानना
विसमर—भूलना
उट्ठ—उठना
पिसुण—चुगली करना

अव्यय

सयं (स्वयं)—स्वयं
जत्थ (यत्र)—जहां
जा, जाव (यावत्)—जब तक
जहेव (यथेव)—जिसप्रकार से
ता, ताव (तावत्)—तब तक
जइ (यदि)—जो

पुलिंग एअ (एतत्), इम (इदं), अमु (अदस्) शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४८ क, ४७ क, ४९ क।

उद्वृत्त स्वर

नियम ६ [स्वरस्योद्वृत्ते १।८] स्वरसंयुक्त व्यंजन में व्यंजन का लोप होने पर जो स्वर शेष रहता है उसे उद्वृत्त स्वर कहते हैं। स्वर से आगे उद्वृत्त स्वर हो तो संधि नहीं होती।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निशाकरः निसा+अरो=निसाअरो
निशाचरः निसा+अरो=निसाअरो
रजनीकरः रयणी+अरो=रयणीअरो
गंधपुटी गंध+उडी+गंधउडी
रजनीचरः रयणी+अरो=रयणीअरो
वराकाः वरा+आ=वराआ
कृतोपकारः क+ओव+आरो+कओवआरो

(पिशल प्राकृत० पेरा १५७, १५६ के अनुसार)

अपवाद—

अवर्ण+अवर्ण (उद्वृत्त स्वर)=आ
कुम्भकारः—कुम्भ+आरो=कुंभारो
उद्घावतिः—उद्घा+अइ=उद्घाइ
शातवाहनः—साल+आहणो=सालाहणो
चक्रवाकः—चक्क+आओ=चक्काओ
इवर्ण+इवर्ण (उदवृत स्वर)=ई
द्वितीयः—बि+इओ=बीओ
शिविका—सि+इया=सीया
उवर्ण+उवर्ण (उद्वृत्त स्वर) ऊ
उदुम्बरः—उ+उम्बरो=उम्बरो (संयोग परे होने से उ ह्रस्व हो गया)
अवर्ण+इवर्ण (उद्वृत्त स्वर)=ए
स्थविरः—थ+इरो=थेरो
मतिधरः—म—इहरो=मेहरो
अवर्ण+उवर्ण (उद्वृत्त स्वर)=ओ
मयूरः—म+ऊरो=मोरो
चतुर्दशी—च+उद्दसी=चोद्दसी
अवर्ण (प्रथम पद का अंतिम उद्वृत्त स्वर)+असवर्ण स्वर (द्वितीय पद का पहला उद्वृत्त स्वर)=प्रथम पद के अंतिम उद्वृत्त स्वर का लोप

राजकुलम्—राअ+उलं=राउलं

प्रयोग वाक्य

पाचओ अन्नं पाचइ। महाणसे सीयं नत्थि। विमला सुफणीए दुद्धं उण्हं करेइ। मोहणो थालिआइ भोयणं भुंजइ। उवचुल्ले किं रक्खियं अत्थि। चुल्लीअ उण्हं जलं किणा रक्खिअं? दव्वीए सुफणीअ तीमणं वट्टइ। कडुच्छअस्स बहु उवओगो अत्थि परं कडाहस्स पद्दिणं न। अहं कट्टोरगम्मि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीरं पिवामि। सो दढहत्थेहिं संडासेणं सुफणिं धरइ। पउमा सीयकाले चुल्लीए नीरं उण्हं करेइ। अहं गयवरिसस्स विवायं विसमरीअ। काहिल्लिआ उण्हा अत्थि। चुण्णमद्दणीए चुण्णं कहं नत्थि? डोओ सयं किमवि न खाअइ। हंडिआइ कस्स तीमणं अत्थि? मीणक्खी संदंसेण इंगारं गिण्हइ। अज्जत्ता पुरिसा णयरे कल्लवत्तं सरावम्मि करेंति। सा चिल्लेण गोहूमं सोहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

रसोइया किस ग्राम का है? रसोइघर में बैठकर कौन खाता है? चूल्हे में लकडी किसने दी? पिछले चूल्हे में रखा हुआ दूध ठंडा नहीं होता। तमेली में आज क्या पकाया है? चमचियां कितनी हैं? हांडी का मूल्य क्या है? कटोरे में दही है। वह थाली में खाना नहीं खाता। कुर्छी स्वयं नहीं खाती। तमेली को ढकना मत भूलो। चिमटे से तवे को पकडो। हांडी पर कुर्छी क्यों रखी है? तरकारी कितनी शेष रही है? कटोरे में दही रखा हुआ है। तवा गरम हो गया है। वह उपकार को भूल जाता है। बहन तरकारी परोसती है। बहू कुर्छी से दाल परोसती है। सुरेश चुगली करता है। मैं सुबह जल्दी उठता हूं। तुम्हें स्वयं उठना चाहिए। जिस प्रकार से तुम कहते हो वह ठीक नहीं है। जब तक तुम स्वयं नहीं आओगे तब तक मैं तुम्हारे घर नहीं जाऊंगा। कठौती में पानी अधिक है। पहले डोया खाता है। हंडिया मिट्टी (मट्टिआ) की है। संडासी अच्छी तरह (सुट्ठु) पकडती है। प्लेट में सीता कलेवा नहीं करती है। विमला छाज से धान्य को साफ करती है।

प्रश्न

१ संधि विच्छेद करो और बताओ कि किस नियम से यह रूप बना—
लोहारो, कलालो (कलवारः), तइओ, कुंभआरो, सिरोविअणा, आउज्जं (आतोद्यं) वइआलिओ (वैतालिकः) चइत्तो (चैत्रः) दरिअ (दृप्तः) रिऊ (ऋतुः) पिउवणं, मयंको (मृगाङ्कः) गरुओ।

२ रसोईघर, कठौती, संडासी चूल्हा, तमेली, चमची, कटोरा, कुर्छी, हांडी, प्लेट, डोया, थाली, छाज, चिमटा और साग—इनके प्राकृत शब्द बताओ।

३ भूलना, परोसना, निकालना, चुगली करना, उठना—इन अर्थों में कौनसी धातु प्रयुक्त हुई है लिखो?

४ जहेव, ताव, सयं, जत्थ—इन अव्ययों को प्रयोग करो। प्रत्येक के दो-दो वाक्य बनाओ।

५ उद्‌वृत्तस्वर किसे कहते हैं? उसके लिए संधि का क्या विधान है?

६ उद्‌वृत्तस्वर के साथ संधि के नियम का अपवाद नियम क्या है? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।

७ पुल्लिंग के ज, त और क शब्द के रूप लिखो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकृतिभाव संधि

शब्द संग्रह (गृहसामग्री)

मूसल—मूसलं, कडंतं
ऊंखली—उऊहलं, अवअण्णो
लोढा—लोढो
शिला—सिला
स्टोव—उद्धमाणं (सं)
चलनी—चालणी
छाज—सुप्पो
पुराना छाज आदि—कडंतरं (दे.)
वर्त्तन—पत्तं, भायणं
मशहरी—मसहरी
बोरा—पसेवो
रस्सी—रज्जू (स्त्री)
लालटेन—कायदीविया (सं)
दीया—दीवओ, दीवगो
बत्ती—वत्तिआ,वत्ती
दियासलाई—दीवसलागा
खरल—खल्लं (सं)
छींका—सिक्कगो, सिक्कगं
टब—दोणी (सं)
चक्की—णीसा (दे०) घरट्टो (दे०)
झाडू—बोहारी, संमज्जणी, वद्धणिआ।

धातु संग्रह

कुट्ट—कूटना
संमज्ज—बुहारना
घरस—रगडना
मेलव—मिलाना
रोसाण—मार्जन करना, शुद्धकरना
पेस—भेजना
उवजुंज—उपयोग में लेना
अग्घ—अच्छे मूल्य में बेचना
छाय, छाअ—ढांकना
सास—हुकम करना

अव्यय संग्रह

इहरा (इतरथा)—अन्यथा नहीं तो
दर (दे.)—आधा, थोड़ा
तए (तदा)—तब
णवर (दे.)—केवल
तहिं (तत्र)—वहां
तहा, तह (तथा)—उस तरह

अम्ह (अस्मद्) शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ५०।

प्रकृतिभाव संधि

जहां दो पद मिलकर एक पद बन जाते हैं और वे यथावस्थित अवस्था में रह जाते हैं उन्हें प्रकृतिभाव संधि कहते हैं।

नियम ७ (न युवर्णस्यास्वे १।६) इवर्ण और उवर्ण से आगे कोई विजातीय स्वर हो तो संधि नहीं होती।

इवर्ण+स्वर (इवर्ण को छोड़कर)=प्रकृतिभाव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाइ+अंधो=जाइअंधो (जात्यन्धः)

पुढवी+आउ=पुढविआउ (पृथ्वी आपः)

जइ+एवं=जइएवं=(यद्येवं)

को वि+अवयासो=को वि अवयासो (कोप्यवकाशः)

उवर्ण+स्वर (उवर्ण को छोड़कर)=प्रकृतिभाव

बहु+अट्ठिओ=बहुअट्ठिओ (बह्वस्थिकः)

सु+अलंकियं=सुअलंकियं (स्वलङ्कृतम्)

वहु+अवअवऊढो (वध्वपगूढः)

नियम ८ (एदोतोः स्वरे १।७) ए और ओ के आगे स्वर हो तो संधि नहीं होती।

ए+स्वर=प्रकृतिभाव

एगे+आया=एगेआया (एक=आत्मा)

गामे+अडइ=गामेअडइ (ग्रामे उटति)

नईए+अत्थ=नईएअत्थ (नद्याः अत्र)

एगे+एवं=एगे एवं (एकः एवम्)

ओ+स्वर=प्रकृतिभाव

गोयमो+आघवइ+गोयमो आघवइ (गौतमः आख्याति)

अहो+अच्छरिअं=अहो अच्छरिअं (अहो आश्चर्यम्)

रामो+आगच्छइ=रामो आगच्छइ (रामः आगच्छति)

एओ+अत्थ=एओअत्थ (एकोऽत्र)

नियम ९ (त्यादेः १।९) क्रियापद के अंतिम स्वर के बाद स्वर आए तो उनमें संधि नहीं होती।

क्रियापद स्वर+स्वर=प्रकृतिभाव

होइ+इह=होइ इह (भवतीह)

हसइ+एत्थ=हसइएत्थ (हसत्यत्र)

आलक्खिमो+एण्हिं=आलक्खिमो एण्हिं (आलक्षयामहे इदानीम्)

प्रयोग वाक्य

मूसलो कट्ठस्स अत्थि। उऊहलम्मि सिरं दिण्णं अहुणा मूसलस्स को भयो? सुसीला लोढेण अवलेहं (चटनी) पीसइ। तुमए तुज्झ सिला कस्स दिण्णा? चालणीए नीरं न ठाअइ। मीणा णीसाइ अन्नं पीसइ। माआ सूप्पेण गोहूमा (गेहूं) रोसाणइ। रत्तीए मसहरिं अन्तरेण सो कहं सुवइ। कडंतरस्य को मुल्लो अत्थि? सा पगे णियघरं संमज्जइ। पसेवे किं वत्थु अत्थि? भायणं रित्तं केण कयं? दीवगस्सा वि महत्तं (महत्व) अत्थि घोरंधयारे। तुज्झ गिहे केत्तिलाओ कायदीवियाओ संति? दीवसलागं विणा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीवअस्स को उवओगो ? दीवगम्मि वत्ती कहं नत्थि ? तुमं खल्ले किं पीससि ? उद्धमाणे दुद्धं खिप्पं उण्हं भवइ । किं सा दोणीए पइदिणं ण्हाइ ?

धातु प्रयोग

सा मूसलेण किं कुट्टइ ? माआ किमट्ठं सुंठी (सूंठ) घरसइ ? मोहणो णियपुत्ताण अंबा (आम) पेसइ । सो घडं छाअइ । साहू णियट्ठाणं सयं संमज्जइ । किं तुमं कंबलं उवजुंजसि ? सोहणो दुद्धम्मि नीरं मेलवइ । सासू वहुं सासइ—दुद्धं उण्हं कर ।

अव्यय प्रयोग

तुमं तहिं गच्छ इहरा अहं गच्छामि । जया तुमं तहिं गमिहिसि तए अहमवि गमिस्सामि । झाणे तस्स दर उग्घाडियाइं नयणाइं अत्थि । णवरं अहं गच्छामि

प्राकृत में अनुवाद करो

गांवों में बहिनें आजकल भी मूसल से बाजरी (बज्जरी) कूटती है। खाली ऊंखली क्या काम आती है ? कुछ वर्ष पहले घर-घर में चक्की चलती थी । हीरा लोढी से मीर्च पीसती है । घर में सिला कहां है ? चालनी में पानी क्यों नहीं ठहरता है ? झाडू के बिना घर की सफाई नहीं होती । वह छाज से चावल साफ करती है । अपना पुराना छाज किसके पास है ? मशहरी के बिना भी मैं सुख से सोता हूं । बोरा में गेहूं कितने हैं ? रस्सी का उपयोग घर में कितना है ? खरल में औषधि (ओसहि) कौन पीसता है ? लालटेन सब के घर में नहीं है । दीपावली में दीए घर-घर में जलते हैं । बत्ती के बिना दीया दीया नहीं है । वर्तन में गर्म पानी है । छींका पर क्या वस्तु है ? आजकल घर-घर में स्टोव है। गांव में टब किसके पास है ।

धातु का प्रयोग करो

रमिला प्रतिदिन क्या कूटती है ? वह सिला पर क्या रगडती है ? सुसीला घर में हर वस्तु को शुद्ध करती है । तुम गर्म पानी को क्यों नहीं ढांकते हो ? तुम्हारे घर को कौन बुहारता है ? वह पुराने छाज को भी काम में लेता है । वह अपने सोने (सुवण्णं) को अच्छे मूल्य में बेचता है । आजकल छोटा आदमी बडों को हुक्म देता है ।

अव्यय का योग करा प्र

तुम स्कूल जाओ नहीं तो अध्ययन नहीं होगा । मैं खाना खा रहा था तब तुम कहां थे ? मैं वहां कभी नहीं जाऊंगा । कमल थोडा खिला हुआ है । वह केवल पानी पीता है । जैसा गुरु कहे उस तरह (वैसा) करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. प्रकृतिभाव संधि किसे कहते हैं ?

२. किन-किन स्वरों से परे कौन-कौन से स्वर होने पर संधि नहीं होती। नियम का उल्लेख करो।

३. दो उदाहरण दो जहां संधि नहीं हुई है।

४. मूसल, ऊंखली, लोढा, शिला, चक्की, चलनी, छाज, झाड़ू, मशहरी, बोरा, रस्सी, लालटेन, दीया, बत्ती, दियासलाई, खरल, छींका, बर्तन, स्टोव और टब के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. कुट्ट, घरस, रोसाण, उवजुंज, छाय, संमज्ज, मेलव, पेस, अग्घ, सास—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

६. इहरा, तए, तहिं, णवर, तहा, दर—इन अव्ययों को वाक्य में प्रयुक्त करो।

७. पुंलिंग में एअ, इम और अमु शब्द के रूप लिखो।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (गृहसामग्री)

चारपाई—पलियंको	पीढा—पीढं
चौकी—चउपाइया, आसणं	सौफा—सुहोववेसिया (सं)
बेंच—कट्ठासणं	कुर्सी—वेत्तासणं, आसंदी (सं)
मेज—पायफलगं (सं)	काष्ठ का तख्ता—फलगो
काठशय्या—कट्ठसेज्जा	टूथपाउडर—दंतचुण्णं (सं)
एनक—उवनेत्तं (सं)	दांत का ब्रुश—दंतधावणं (सं)
झूला—ढोला	टूथ पेष्ट—दंतपिट्ठअं (सं)
ईंट—इट्टा	सीमेंट—पत्थर चुण्णं
साजी—सज्जिआ	साबुन—सव्वक्खारो (सं)
फिटकरी—सोरट्ठिया	मोम—सीअं (दे.)
गोंद—णिय्यासो	पंखा—विजणं

धातु संग्रह

आभोय—ध्यानपूर्वक देखना	परिणिव्वा—शांत होना
मल—धारण करना	आरोव—आरोपित करना
आराह्—आराधना करना	उप्फिड—उछलना
साव—शपथखाना, सुनाना	अइवत्त—उल्लंघन करना
णिव्विस—वहन करना	सीअ—खेद करना

अव्यय संग्रह

पच्छा (पश्चात्)—बाद में	चिअ, चेअ (चैव)—ही
जओ (यत:)—क्योंकि	झत्ति (झटिति)—शीघ्र
तंजहा (तद्यथा)—जैसे	तप्पभिइ (तत्प्रभृति)—इसको आदि करना

युम्ह (युष्मद्) शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ५१)

अव्ययसंधि

स्वरान्त या अनुस्वारान्त पद से परे अव्यय हो तो उस संधि को अव्यय संधि कहते हैं। अनुस्वार से परे व्यंजन द्वित्व नहीं होता है।

नियम १० (पदादपेर्वा १।४१) पद से परे अपि अव्यय के आदि अ का लोप विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केण+अपि=केणवि, केणावि (केन+अपि)
जणा+अपि=जणावि (जनाः अपि)
किं+अपि=किं पि, किमवि (किमपि)
कहं+अपि=कहंपि कहमवि (कथमपि)

नियम ११ (इतेः स्वरात् तश्च द्विः १।४२) पद से परे इति अव्यय के आदि इ का लुक् होता है। स्वर से परे त द्वित्व हो जाता है, अनुस्वार से परे हो तो त द्वित्व नहीं होता।

तहा+इति=तहत्ति (तथा+इति)
पुरिसो+इति=पुरिसोत्ति (पुरुषः+इति)
पिओ+इति=पिओत्ति (प्रियः+इति)
किं+इति=किंति (किमिति)
दिट्ठं+इति=दिट्ठंति=दृष्टमिति

नियम १२ (त्यदाद्यव्ययात् तत्स्वरस्य लुक् १।४०) सर्वनाम संबंधी स्वर या अव्यय के स्वर से परे सर्वनाम और अव्यय का स्वर हो तो आगे वाले पद के आदि स्वर का लुक् हो जाता है।

अम्हे+एत्थ=अम्हेत्थ (वयमत्र) जे इमे=जेमे (ये इमे)
जइ+अहं=जइहं (यद्यहम्) जइ+इमा=जइमा (यदीयम्)
जे+एत्थ=जेत्थ (ये अत्र) तुज्झे+इत्थ=तुब्भित्थ (यूयमत्र)

(पिशल प्राकृत० पैरा ९२, १३५ के अनुसार)—स्वर से परे इव अव्यय हो तो इव का व्व हो जाता है। अनुस्वार से परे इव हो तो व ही होता है, द्वित्व व (व्व) नहीं।

स्वर+इव=स्वर+व्व
चंदो+इव=चंदोव्व (चन्द्र इव)
धम्मो+इव=धम्मोव्व (धर्म इव)
अनुस्वार+इव=अनुस्वार+व
गेहं+इव=गेहं व। धणं+इव=धणं व
पुत्तं+इव=पुत्तं व। रिणं+इव=रिणं व।

संस्कृत के अनुसार—उपसर्ग का अंतिम स्वर इवर्ण या उवर्ण हो आगे स्वर हो तो संधि हो जाती है। उसके बाद संयुक्त व्यंजन का नियमानुसार परिवर्तन हो जाता है।

इवर्ण+असवर्ण स्वर=य्+असवर्ण स्वर
अति+अन्तं=अत्यन्तं=अच्चन्तं
अभि+आगओ=अभ्यागओ=अब्भागओ (अभ्यागतः)
उवर्ण+असवर्ण स्वर=व्+असवर्ण स्वर
अणु+एसइ=अण्वेसइ=अण्णेसइ (अन्वेषति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रयोग वाक्य

सो वरिसपेरंतं पलियंकम्मि न सुविहिइ। किं तुमं आसणम्मि ठिओ भासणं करेसि ? बंभयारिणा सया कट्ठसेज्जाए सोअव्वं। मज्झ गिहे पीढो नत्थि। निग्गंथाण संथारगो कप्पइ सोइउं। मुणी सावगाण गिहत्तो फलगं आणेइ। गुरु आसंदीइ आसइ। छत्ता कट्ठासणम्मि ठिआ पढंति। मुणी वरिसावासम्मि फलगे सुवंति। पायफलगं कस्स कट्ठस्स अत्थि ? अज्जत्ता घरम्मि पाओ सुहोववेसिआ उवलभइ। मज्झ पासे उवनेत्तं अत्थि। इट्टाहिं पत्थरचुण्णेहिं य भवणस्स णिम्माणं भवइ। सोरट्ठियाइ नीरं सच्छं (स्वच्छ) भवइ। सा सव्वक्खारेण वत्थाइं सच्छाइं करेइ। विमला ढोलाइ ठिआ अत्थि। सज्जिआए पप्पडा (पापड) भवंति। अत्थ विजणं कहं नत्थि ? सा दंत पिट्टएण सह दंतधावणेण दंता सोहइ। गुरुणो पासे तुमं किं सावसि ?

धातुप्रयोग

सो किमट्ठं रामं आभोयइ ? महावीरो भारहवासे परिणिव्वाइंसु। सेहो पइदिणं दस सिलोगा मलइ। सामाइअ चरित्तस्स पच्छा छेओवट्ठावणचरित्तं आरोवइ। विमलो सुयणाणं आराहइ। मुणी सावगेहिं सद्धिं कंतारं अइवत्तइ। आयरिअस्स सुवगामम्मि आगमणं सुणिऊण सावगा उप्फिडंति। सो पायच्छित्तरूवेण तवं णिव्विसइ। तुज्झ पसंसं सुणिऊण सो कहं सीअइ ?

अव्यय प्रयोग

भोयणस्स पच्छा सो सोअइ। ते च्चिय धण्णा जे रागरहिया। सो अत्थ झत्ति आगओ। अहं तस्स पासे न गमिस्सामि जओ सो झाणेण पढइ। अज्जपभिइ दसदिणपेरंतं पारसो अणसणतवं करिस्सइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मेरी मौसी चारपाई पर बैठी है और उसने आने वाली बुआ को पीढे पर बैठाया। बडा साधु चौकी पर बैठकर भाषण देता है। काठ की शय्या कोमल नहीं होती है। काठ के तख्ते पर वह बैठना नहीं चाहता है। एक बेंच पर कितने छात्र बैठते हैं ? मेज पर पुस्तक किसकी है ? सौफा पर बैठकर वह नींद लेता है। कुर्सी कौन नहीं चाहता ? वह एनक से साफ देखता है। मैं साजी खाना नहीं चाहता। इंटें कहां से आती हैं। फिटकरी का उपयोग अनेक कामों में होता है। गोंद से वस्त्र साफ होते हैं। सीमेंट घर में नहीं है। मेरी साबुन किसके पास है ? उसके घर में झूला नहीं है। पंखे से हवा आती है। दांत के ब्रुश के बिना वह टूथपाउडर से दांत साफ करता है। वह बार-बार शपथ क्यों खाता है ?

धातु प्रयोग करो

लडका उसकी ओर ध्यान से देख रहा है। तुझे प्रतिदिन पांच नए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्लोक धारण करना चाहिए। जंबूस्वामी का कब निर्वाण हुआ? जो धर्म की आराधना करता है उसका वह समय मूल्यवान है। दूसरों का सुख देखकर वह मन में क्यों दुख पाता है? वह बात-बात में क्यों उछलता है? हम लोग कल उस गांव का उल्लंघन करेंगे। जगदीश अपने घर का भार अकेला वहन करता है। वे खेद क्यों करते हैं?

अव्यय का प्रयोग करो

उसके बाद गीतिका गानी है। वह तुम्हारे पास आएगा क्योंकि वह कुछ पूछना चाहता है। इस घटना के तुम ही एक मात्र दर्शक हो। जल्दी पानी लाओ। तुम शीघ्र इस पाठ को याद करो। कषाय चार प्रकार के होते हैं, जैसे—क्रोध, मान, माया और लोभ

प्रश्न

१. अम्ह शब्द के रूप लिखो।
२. अव्यय संधि किसे कहते हैं?
३. पद से परे अपि और इति अव्यय हो तो कौन-सा नियम क्या विधान करता है? दो-दो उदाहरण देकर स्पष्ट करो।
४. सर्वनाम और अव्यय के स्वर से परे सर्वनाम या अव्यय का स्वर हो तो क्या कार्य होता है? दो उदाहरण दो।
५. चारपाई, चौकी, बेंच, मेज, काठशय्या, पीढा, सौफा, झूला, कुर्सी, ईंट, साजी, गोंद, काष्ठ का तख्ता, एनक, फिटकरी, साबुन, पंखा, टूथपेष्ट, दांत का ब्रुश, टूथपाउडर शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।
६. आभोय, परिणिव्वा, मल, आरोव, आराह, उप्फिड, साव, णिव्विस, सीअ और अइवत्त धातु के अर्थ लिखो।
७. पच्छा, जओ, तंजहा, चिअ, झत्ति और तप्पभिइ अव्ययों का वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यंजन संधि (अनुस्वार)

शब्द संग्रह (न्यायालय वर्ग)

कचहरी—नायालयो
जज—नायगरो
वादी—वाई (वि)
साक्षी, गवाह—सक्खि (वि)
जामिनदार—पडिभू (वि)
पाडुहुओ (वि)
अर्जी—आवेयणपत्तं
सजा—दण्डो
बयान—उवसत्ती (सं)
अनुवाद—अणुवायो
न्याय—नायो
अपील—पुणरावेयणं
इकरारनामा—पइण्णापत्तं (सं)
वकील—वायकीलो (वाक्कील:)
दफ्तर—अक्खपडलो (सं)
प्रतिवादी—पडिवाई (वि)
गवाही—सक्खं, सक्खिज्जं
जमानत—णासो
घूंस—उक्कोडा (दे.)—उक्कोया
मुकदमा—अभिओगो (सं)
जिस पर दावा किया गया हो—पडिवक्खियो
घूंस लेकर कार्य करने वाला—उक्कोडिय (वि)
फैसला—णिण्णयो

धातु संग्रह

निवज्ज—बैठना
निवज्ज—लेट जाना, सोना
उक्कुद्द—कूदना, उछलना
निवेस—बैठना
निवज्ज—नीपजना, निष्पन्न होना
अवसीय—दुःखपाना
छिंद—छेदना
किलिस्स—क्लेशपाना

अव्यय संग्रह

दिवारत्तं (दिवारात्र)—दिनरात
परंमुहं (पराङ्मुखं)—विमुख
पुरत्था (पुरस्तात्)—आगे, सम्मुख
पडिरूवं (प्रतिरूपं)—समान
पायो, पाओ, (प्रायः)—प्रायः
पुहं, पिहं (पृथक्)—अलग

स्त्रीलिंग के जा, सा, का, अमु, इमा, एआ शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४४ ख, ४५ ख, ४६ ख, ४६ ख, ४७ ख, ४८ ख,

व्यंजन संधि—पद के अंत में होने वाले व्यंजन अथवा मध्यवर्ती व्यंजन में होने वाले परिवर्तन को व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम १३ (मोनुस्वारः १।२३) अंत में होने वाले मकार को अनुस्वार हो जाता है।

पद का अंतिम म् 7 अनुस्वार जलम्—जलं, फलम्—फलं, वच्छम्—वच्छं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहीं पर अंत में मकार न हो उसको भी अनुस्वार हो जाता है—
वणम्मि—वणंमि । मुणिम्मि—मुणिंमि ।

नियम १४ (**वा स्वरे मश्च १।२४**] अंत में होने वाले मकार से परे स्वर हो तो अनुस्वार विकल्प से होता है । पक्ष में लुक् न होकर मकार को मकार हो जाता है ।

वन्दे उसभं अजिअं=वन्दे उसभमजिअं
नयरं आगच्छइ=नयर मागच्छइ
(बहुलाधिकारात् अन्य शब्दों के अंतिम व्यंजन का भी अनुस्वार हो जाता है ।

अंतिम व्यंजन 7 अनुस्वार साक्षात्—सक्खं पृथक्—पिहं
यत्—(जं) तत्—तं विष्वक्—वीसुं
सम्यक्—सम्मं ऋधक्—इहं ऋधकक्—इहयं

१ नोट—शब्द-सिद्धि की दृष्टि से ऋधक् शब्द का इहं बना है । जिसका अर्थ है—अलग । इहयं—इहं शब्द से स्वार्थ में क प्रत्यय हुआ है ।
पिशल पैरा ५६८ के अनुसार जैन महाराष्ट्री और अर्धमागधी में इह का ही इहं रूप मिलता है ।
इहमेगेसिं नो सण्णा भवइ (आयारो १।१।१)—आयारो में अनेक स्थानों पर इहं रूप मिलता है । जाइं इमाइं इहं माणुस्सलोए हवेति (जीवाभिगम ३।११६) । महाराष्ट्री में अज्ज अव्यय का रूप अज्जं मिलता है ।

नियम १५ [ङ ञ ण नो व्यञ्जने १।२५] ङ, ञ, ण और न के बाद व्यंजन हो तो इनको अनुस्वार हो जाता है ।

पङ्क्ति—पंती षण्मुखः—छंमुहो
पराङ्मुखः—परंमुहो उत्कण्ठा—उक्कंठा
कञ्चुकः—कंचुओ सन्ध्या—संझा
लाञ्छनम्—लंछणं विन्ध्यः—विंझो

नियम १६ [विंशत्यादे लुक् १।२८] विंशति आदि शब्दों में होने वाले अनुस्वार का लुक् हो जाता है ।

अनुस्वार 7 लुक् विंशतिः—वीसा त्रिंशत्—तीसा
संस्कृतम्—सक्कयं संस्कारः—सक्कारो

नियम १७ [मांसादेर्वा १।२९] मांस आदि शब्दों में होने वाला अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है ।

अनुस्वार 7 लुक् मांसम्—मासं, मंसं, मांसलम्—मासलं, मंसलं
कांस्यम्—कासं, कंसं पांसुः—पासू, पंसू
कथम्—कह, कहं एवम्—एव, एवं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नूनम्—नूण, नूणं　　इदानीम्—इआणिं, दाणि, दाणिं
किम्—कि, किं　　संमुखः—समुहो, संमुहो
किंशुकः—केसुओ, किंसुओ सिंहः—सीहो, सिंहो

नियम १८ [वर्गेन्त्यो वा १।३०] अनुस्वार के बाद वर्ग का कोई व्यंजन परे हो तो उसी वर्ग का पांचवां व्यंजन विकल्प से हो जाता है।

पंकः—पङ्को, पंको　　कंडम्—कण्डं, कंडं
शंखः—सङ्खो, संखो　　षंढः—सण्ढो, संढो
अंगनम्—अङ्गणं, अंगणं　　अन्तरम्—अन्तरं, अंतरं
लंघनम्—लङ्घणं, लंघणं　　पन्थः—पन्थो, पंथो
कञ्चुकः—कञ्चुओ, कंचुओ　　चंदो—चन्दो, चंदो
लंछनम्—लञ्छणं, लंछणं　　बंधवः—बन्धवो, बंधवो
अंजनम्—अञ्जणं, अंजणं　　कंपति—कम्पइ, कंपइ
संज्ञा—सञ्ज्ञा, संज्ञा　　वंफति—वम्फइ, वंफइ
कंटकः—कण्टओ, कंटओ　　कलंबः—कलम्बो, कलंबो
कंठः—कण्ठो, कंठो　　आरंभः—आरम्भो, आरंभो।

नियम १९ [वक्रादावन्तः १।२६] वक्र आदि शब्दों में कहीं पहले स्वर के बाद, कहीं दूसरे स्वर के बाद, कहीं तीसरे स्वर के बाद अनुस्वार का आगम होता है। वक्रं—वंकं। त्र्यस्त्रं—तंसं। अश्रु—अंसु। श्मश्रुः—मंसू। पुच्छं—पुंछं। गुच्छं—गुंछं। मूर्द्धन्—मुंढा। पर्शुः—पंसू। बुध्न—बुंधं। कर्कोटः—कंकोडो। कुड्मलं—कुंपलं। दर्शनं—दंसणं। वृश्चिकः—विंछिओ। गृष्टिः—गिंठी। मार्जारः—मंजारो। **इनमें पहले स्वर के बाद आगम हुआ है।** वयस्यः—वयंसो। मनस्विन्—मणंसी। मनस्विनी—मणंसिणी। मनःशिला—मणंसिला। प्रतिश्रुत्—पडंसुआ। **इनमें दूसरे स्वर के बाद आगम हुआ है।** उवरि—अवरिं। अतिमुक्तकः—अइमुंतयं, अणिउंतयं—**इनमें तीसरे स्वर के बाद आगम हुआ है।**

नियम २० [अतो डो विसर्गस्य १।३७] अकार से परे विसर्ग को डो (ओ) आदेश होता है। सर्वतः—सव्वओ। पुरतः—पुरओ। अग्रतः—अग्गओ। भवतः—भवओ। भवन्तः—भवन्तो। सन्तः—संतो।

नियम २१ [वीप्स्यात्स्यादेर्वीप्स्ये स्वरे मो वा ३।१] वीप्सार्थक पद से परे स्यादि प्रत्यय के स्थान पर स्वरादि वीप्सार्थक पद परे रहने पर म् विकल्प से होता है। एकैकम्—एक्कमेक्कं। अङ्गेअङ्गे—अङ्गमङ्गम्मि।

कुछ शब्दों में दो पदों के बीच 'म' का आगम हो जाता है।

चित्त+आणंदियं=चित्तमाणंदियं।　　जहा+इसि=जहामिसि
इह+आगओ=इहमागओ।　　हट्ठतुट्ठ+अलंकिअं=हट्ठतुट्ठमलंकिअं

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

अणेगच्छंदा+इह=अणगच्छंदामिह
आगम की टीकाओं में ऐसे म् को लाक्षणिक माना है।

प्रयोग वाक्य

सो नायालयम्मि किमट्ठं गओ ? नायगरो गंगारामो पक्खवाइल्लो (पक्षपाती) नत्थि। तुमं दंडासणे पइमासं आगच्छसि। वाई रामलालो सच्चं जंपइ। पडिवाई धणवालो सच्चं न वयइ। तुज्झ सक्खी को अत्थि ? सक्खं अंतरेण सच्चो वि असच्चो भवइ। तस्स पडिभू अमुम्मि गामम्मि को वि नत्थि। णासेण सो काराए (जेल) सइ मुत्तो भवइ। तुज्झ आवेयणपत्तं को लिहिस्सइ ? अभिओगम्मि किमवि सारं नत्थि। अक्कोयाए कज्जं सुलहं खिप्पं य भवइ। तस्स उवसत्ती मज्झ पडिकूला अत्थि। पडिवक्खियो वि पडू अत्थि। मए अणुभूयं नायगरो उक्कोडियो अत्थि। पुनरावेयणं कया भविस्सइ ? सो णिण्णयेण संतुट्ठो अत्थि।

धातु प्रयोग

सो रत्तीए वि न णिवज्जइ। तुमं मज्झ पासे कहं णिवज्जसि ? अमुम्मि गामे किं अण्णं निवज्जइ ? रामो पइदिवहं दसखणा किमट्ठं उक्कुट्टइ ? तस्स पासे तुमए न निवेसिअव्वो। तस्स कहणं (पत्थणं) मए न अंगीकयं अओ सो किलिस्सइ। सासूए उवालंभं सुणिऊणं पुत्तबहू मणेसु अवसीयइ। अम्ह कहणं तुज्झ कहणं छिंदइ।

अव्यय प्रयोग

साहू दिवारत्तं झाअइ। तुज्झ भाअरो मइत्तो परंमुहो किमट्ठं अत्थि ? पीई पाओ पइदिणं पयो पिवइ। इमे साहूणो अम्हाहिंतो पिहं नत्थि। तुज्झ पुरत्था मह पोत्थाइं संति। मज्झ भइणीए मुहं चंदपडिरूवं विज्जइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

न्याय के लिए लोग कचहरी में जाते हैं। क्या न्यायधीश घूस लेना चाहता है ? वादी अपनी बात वकील को सुनाता है। वकील अपनी बुद्धि से प्रतिवादी की रक्षा करता है। रुपयों से झूठे गवाह भी मिलते हैं। घटना को आंखों से देखकर भी जज गवाही के अभाव में अपराधी को दंड नहीं दे सकता। तुम्हारा जामिनदार कौन होगा ? उसका भाई जमानत से छूट गया। मुकदमे में सच्चा व्यक्ति भी हार जाता है। न्यायालय में भी घूस से न्याय बिकता है। तुम्हारे पक्ष में झूठे बयान कौन देगा ? उसकी अर्जी स्वीकृत नहीं हुई। जिस पर दावा किया गया है, उसके पास रुपयों का बल है। घूस लेकर कार्य करने वाला एक जगह घूंस लेता है और उसे अनेक जगह घूंस देनी पडती है। दफ्तर में कौन बैठा है ? फैसला सुनने कितने लोग आए हैं ? मनुष्य को मारने वाला भी वकील की बुद्धि से बच जाता है। उसको जीवन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भर कैद में रहने की सजा मिली है। उसने कल अपने मुकदमे की अपील की है। इकरारनामा पढकर मन प्रसन्न हुआ। अदालत में जाने से समय और धन की हानि होती है। न्यायालय का फैसला किसके पक्ष में हुआ ?

धातु का प्रयोग करो

वह यहां बैठना नहीं चाहता है। जो अधिक सोता है वह समय को खोता है। वर्षा अधिक होने से इस वर्ष अधिक नीपजेगा। यह लडका वृक्ष से कूदता है। दूसरों का सुख देखकर वह मन में क्यों दुःख पाता है ? वह आकाश को भी छेदता है। बिना विचारे काम करने वाला अंत में क्लेश पाता है। वह परीक्षा में कहां बैठेगा ?

अव्यय का प्रयोग करो

सोहन दिन रात परिश्रम करता है। गुरु से विमुख नहीं होना चाहिए। यहां से आगे एक कुंआ है। आपका चेहरा मेरे भाई के समान है। वह प्रायः दिन में सोता है। इसका विद्यालय मेरे विद्यालय से भिन्न है।

प्रश्न

१. व्यंजन संधि किसे कहते हैं ?
२. अंतिम व्यंजन को अनुस्वार करने वाला कौन-सा नियम है ? उसके तीन उदाहरण दो।
३. पद के अंत में म् को अनुस्वार करने वाला कौन-सा नियम है ? आगे स्वर हो तो उसका क्या रूप बनता है ? दो-दो उदाहरण दो।
४. न, ङ, य और ण इनके आगे व्यंजन हो तो इन को क्या आदेश होता है ?
५. नीचे लिखे शब्दों का प्राकृत रूप बताओ—
संस्कारः, किंशुकः, त्रिंशत्, संस्कृतं, विष्वक्, कांस्यम्, ।
६. किस नियम से अनुस्वार का आगम होता है ? और किस स्वर के बाद होता है ? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।
७. वह कौन-सा नियम है जिसके कारण अनुस्वार का व्यंजन हो जाता है और बताओ कहां कौन-सा व्यंजन होता है ?
८. नीचे लिखे शब्दों के प्राकृत शब्द लिखो—
कचहरी, जज, वकील, दफ्तर, वादी, प्रतिबादी, गवाही, अपील, जामिनदार, जमानत, अर्जी, मुकदमा, घूस, सजा, बयान, अदालत, इकरारनामा, अनुवाद, जिस पर दावा किया गया हो, घूस लेकर कार्य करने वाला।
९. निवज्ज, अवसीय, उक्कुद्द, छिंद, निवेस और किलिस्स, धातु के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिस शब्द के रूप में कुछ भी व्यय न होता हो उसे अव्यय कहते हैं। अव्यय का प्रयोग उसी रूप में होता है जैसा वह शब्द है। उसमें न कुछ घटता है और न कुछ बढता है। अव्यय में किसी भी विभक्ति और किसी भी वचन का प्रभाव नहीं रहता। वह सब स्थिति में एकरूप रहता है। स्फुट अव्यय पूर्व के पाठों में दिये गए हैं और आगे भी। फिर भी नियमपूर्वक कुछ अव्यय यहां दिए जा रहे हैं।

नियम २२ (तं वाक्योपन्यासे २।१७६) तं अव्यय वाक्य के उपन्यास के अर्थ में। तं तिअसवन्दिमोक्खं (तं त्रिदशबन्दिमोक्षं)।

नियम २३ [आम अभ्युपगमे २.१७७] आम अव्यय स्वीकार करने के अर्थ में। आम वहला वणोली (सत्यं बहला वनोली)।

नियम २४ [णवि वैपरीत्ये २।१७८] णवि अव्यय वैपरीत्य (......) के अर्थ में। णवि हा वणे (न हा वने)।

नियम २५ [पुनरुत्तं कृतकरणे २।१७८] पुनरुत्तं अव्यय बारम्बार या, फिर-फिर के अर्थ में। अइ सुप्पइ पंसुलि णीसहेहिं अंगेहि पुणरुत्तं (अयि स्वपिति पांसुली निस्सहैः अङ्गैः पुनरुक्तम्)

नियम २६ [हन्दि विषाद विकल्प पश्चात्ताप निश्चय सत्ये २।१८०] हन्दि अव्यय विषाद, (खेद) विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय, सत्य—इन अर्थों में।

हन्दि चलणे णओ सो (हन्दि चरणे नतः सः)। ण माणिओ हंदि हुज्ज एताहे (न मानितः हन्दि भवेत् इदानीम्)। हन्दि न होही भणिरी (हन्दि न भविष्यति भणिका)। सा सिज्जइ हन्दि तुह कज्जे (सा खिद्यति हन्दि तव कार्ये)।

नियम २७ [हन्द च गृहणार्थे २।१८१] हन्द अव्यय, लो या 'ग्रहण करो' के अर्थ में। हन्द पलोएसु इमं (हन्द प्रलोकस्व इमाम्)।

नियम २८ [मिव पिव विव व्व व विअ इवार्थे वा २।१८२] इव अर्थ में प्राकृत में मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ और इव अव्यय हैं।

कुमुअं मिव (कुमुदं इव), हंसो विव (हंसो इव), चंदणं पिव (चन्दन इव), सायरो व्व (सागरो इव), खीरोओ व (क्षीरोदो इव), कमलं विअ (कमलं इव)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम २९ [जेण तेण लक्षणे २।१८३] जेण और तेण ये दो अव्यय लक्षण (अवस्था) अर्थ में।
भमर रुअं जेण कमलवणं (भ्रमररुतं येन कमलवनम्), भमर रुअं तेण कमलवणं (भ्रमररुतं तेन कमलवनम्)।

नियम ३० [णइ चेअ चिअ च्च अवधारणे २।१८४] निश्चय अर्थ में णइ, चेअ, चिअ और च्च अव्यय हैं। गइए णइ (गत्या एव), जं चेअ मउलणं लोअणाणं (यत् एव मुकुलनं लोचनानाम्), अणुवद्धां तं चिअ कामिणी (अनुबद्धां तदेव कामिनीनाम्), ते च्चिअ धन्ना (ते एव धन्याः), ते च्चेअ सप्पुरिसा (ते एव सत्पुरुषाः), स च्चेअ सीलेण (सः एव शीलेन)।

नियम ३१ [बले निर्धारण निश्चययोः २।१८५] बले अव्यय निर्धारण और निश्चय अर्थ में।

निर्धारण—बले पुरिसो धणंजओ खत्तिआणं (क्षत्रियाणां मध्ये धनञ्जय एव पुरुषः)

निश्चय—बले सीहो (सिंह एव)

नियम ३२ [किरेर हिर किलार्थे वा २।१८६] किर, इर, हिर, किल ये चार अव्यय किल अर्थ में। कल्लं किर खरहिअओ (कल्यं किल खरहृदयः), तस्स इर (तस्य किल), पिअ-वयसो हिर (प्रियवयस्य किल), एवं किल तेण सिविणए भणिआ (एवं किल तेन स्वप्नके भणिता)।

नियम ३३ [णवर केवले २।१८७] णवर अव्यय केवल सिर्फ अर्थ में। णवर पिआइं चिअ णिव्वडन्ति (केवलं प्रियाणि एव निष्पतन्ति)।

नियम ३४ [आनन्तर्ये णवरि २।१८८] णवरि अव्यय अनन्तर (बाद में) अर्थ में। णवरि अ से रहुवइणा (पश्चात् च तस्य रघुपतिना)।

नियम ३५ [अलाहि निवारणे २।१८९] अलाहि अव्यय प्रतिषेध, (बस) अर्थ में। अलाहि किं वाइएण लेहेण (अलं किं वाचितेन लेखेन)।

नियम ३६ [अण णाइं नञर्थे २।१९०) अण और णाइं निषेधार्थक (नहीं, मत) अर्थ में। अण चिन्तिअ ममुणन्ती (अचिन्तितं अजानतो), णाइं करेमि रोसं (न करोमि रोषम्)।

नियम ३७ [माइं मार्थे २।१९१] माइं अव्यय निषेध (मत) अर्थ में। माइं काहीअ रोसं (मा कार्षिद् रोषम्)

नियम ३८ [हद्धी निर्वेदे २।१९२] हद्धी अव्यय खेद, अनुताप अर्थ में। हद्धी इद्धी। (हाधिक् ऋद्धिः)।

नियम ३९ [वेव्वे भयवारणविषादे २।१९३] वेव्वे अव्यय भय वारण और विषाद अर्थ में।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ४० [वेव्व च आमन्त्रणे २।१९४] वेव्व और वेव्वे अव्यय आमंत्रण अर्थ में। वेव्व गोले (हे गोल !), वेव्वे मुरन्दले वहसि पाणिअं (हे मुरन्दले (त्वं) वहसि पानीयम्)।

नियम ४१ [मामि हला हले सख्यावा २।१९५] मामि, हला, हले, सहि—ये चार अव्यय सखि के आमंत्रण अर्थ में। मामि सरिसक्खाणं वि (सखि ! सदृशाक्षराणामपि), पणवह माणस्स हला (प्रणमत मानस्य सखि !)। हले हयासस्स (सखि ! हताशास्य) सहि एरिसिच्चिय गइ (हेसखि ! ईदृशी एव गतिः)।

नियम ४२ [दे संमुखी करणे च २।१९६] दे अव्यय सम्मुखीकरण और सखि के आमन्त्रण अर्थ में। दे पसिअ ताव सुन्दरि (हे सुन्दरि ! प्रसीद तावत्), दे आपसिय निअत्तसु (हे सखि ! आप्रसद्य निवर्तस्व)।

नियम ४३ [हुं दानपृच्छानिवारणे २।१९७] हुं अव्यय दान, पृच्छा और निवारण अर्थ में। हुं गेण्ह अप्पणो च्चिअ (हुं गृहाण आत्मन एव)

पृच्छा—हुं साहसु सब्भावं (हुं कथय सद्भावम्)।

निवारणे—हुं निल्लज्ज समोसर (हुं निर्लज्ज समपसर)।

नियम ४४ [हु खु निश्चय-वितर्क-संभावन-विस्मये २।१९८] हु और खु अव्यय निश्चय, वितर्क, संभावन तथा विस्मय अर्थ में। निश्चय—तं पि हु अच्छिन्नसिरी (त्वमपि हु अच्छिन्नश्रीः), तं खु सिरीए रहस्सं (तत् खु श्रिया रहस्यम्)।

बितर्क—न हु णवरं संगहिआ (न हु णवरं संगृहीता), एअं खु हसइ (सम्भावयामि एतां हसति)।

संशय—जलहरो खु धूमवडलो खु (जलधरो वा धूमपटले वा)।

संभावन—तरीउं ण हु णवर इमं (केवल मिमं तरीतुं न संभावयामि)।

विस्मय—को खु एसो सहस्ससिरो (आश्चर्यं, क एषः सहस्रशिराः)।

नियम ४५ [ऊ गर्हाक्षेप विस्मय-सूचने २।१९९] ऊ अव्यय गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थ में।

गर्हा—ऊ णिल्लज्ज (ऊ निर्लज्ज)।

आक्षेप—ऊ किं मए भणिअं (ऊ किं मया भणितम्)।

विस्मय—ऊ कह मुणिआ अहयं (ऊ कथं ज्ञाता अहं)।

सूचन—ऊ केण न विण्णायं (ऊ केन न विज्ञातम्)।

नियम ४६ [थू कुत्सायाम् २।२००] थू अव्यय कुत्सा के अर्थ में। थू निल्लज्जो लोओ (थू निर्लज्जः लोकः)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ४७ [रे अरे संभाषण-रतिकलहे २।२०१] रे अव्यय संभाषण और अरे अव्यय रतिकलह अर्थ में। रे हिअय मडह सरिआ (हे हृदय, लघ्वी सरिता) अरे म समं मा करेसु उवहासं (अरे! मया सम मा कुरु उपहासं)

नियम ४८ [हरे क्षेपे च २।२०२] हरे अव्यय क्षेप, संभाषण और रतिकलह के अर्थ में।

क्षेप—हरे णिल्लज्ज (अरे निर्लज्जः)।

संभाषण—हरे पुरिसा (अरे पुरुषाः)।

रतिकलह—हरे वहुवल्लह (अरे बहुवल्लभ)।

नियम ४९ [ओ सूचना पश्चात्तापे २।२०३] ओ अव्यय सूचना और पश्चात्ताप अर्थ में।

सूचना—ओ अविणय-तत्तिल्ले (ओ अविनयपरायणे)।

पश्चात्ताप—ओ न मए छाया इत्तिआए (ओ न मम छाया एतावत्याः)।

नियम ५० [अव्वो सूचना दुःख संभाषणा पराध विस्मयानन्दादर भय खेद विषाद पश्चात्तापे २।२०४] अव्वो अव्यय सूचना आदि अर्थों में।

सूचना—अव्वो दुक्करकारय (अव्वो दुष्करकारकः)।

दुःखे—अव्वो दलंति हिययं (अव्वो दलन्ति हृदयम्)।

संभाषणे—अव्वो किमिणं किमिणं (अव्वो किमिदं किमिदं)।

खेद—अव्वो न जामि छेत्तं (अव्वो न यामि क्षेत्रम्)।

अपराध—अव्वो हरन्ति हिअयं तह वि न वेसा-हवन्ति जुवईण
(अव्वो हरन्ति हृदयं तथापि न द्वेष्याः भवन्ति युवतीनाम्

विस्मय—अव्वो किंपि रहस्सं मुणन्ति धुत्ता-जणब्भहिआ
(अव्वो किमपि रहस्यं जानन्ति धूर्त्ताः जनाभ्यधिकाः)

आनंद—अव्वो सुपहायमिणं (अव्वो सुप्रभातमिदम्)

आदर—अव्वो अज्ज म्ह सप्फलं जीअं (अद्य अस्माकं सत्फलं जीवितम्)

भय—अव्वो अइअम्मि तुमे नवरं जइ सा न जूरिहिइ
(अव्वो अतीते त्वयि नवरं यदि सा न जूरिष्यते)।

विषाद—अव्वो नासेन्ति दिहिं (अव्वो नाशयन्ति धृतिम्)

पश्चात्ताप—एण्हि तस्सेअगुणा ते च्चिय अव्वो कह णु एअं
(इदानीं तस्येति गुणाः ते एव अव्वो कथं नु एतत्)

नियम ५१ [अइ संभावने २।२०५] अइ अव्यय संभावन अर्थ में। अइ दिअर किं न पेच्छसि (अयि देवर! किं न प्रेक्षसे)।

नियम ५२ [वणे निश्चय विकल्पानुकम्प्ये च २।२०६] वणे अव्यय निश्चय, विकल्प, अनुकम्प्य और संभावन अर्थ में।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निश्चय—वणे देमि (निश्चयं ददामि)।

विकल्प—होइ वणे न होइ (भवति वा न भवति)।

अनुकम्प्य—दासो वणे न मुच्चइ (दासोनुकम्प्यो न त्यज्यते)।

संभावन—नत्थि वणे जं न देइ विहिपरिणामो (यद् नास्ति वणे यद् न दाति विधिपरिणामः)।

नियम ५३ [मणे विमर्शे २।२०७] मणे अव्यय विमर्श अर्थ में। मणे सूरो (मन्ये सूर्यः)।

नियम ५४ [अम्मो आश्चर्ये २।२०८] अम्मो अव्यय आश्चर्य अर्थ में। अम्मो कह पारिज्जइ (अम्मो कथं पार्यते)।

नियम ५५ [स्वयमोर्थे अप्पणो न वा २।२०९] अप्पणो अव्यय स्वयं अर्थ में विकल्प से। विसयं विअसंति अप्पणो कमलसरा (विशदं विकसन्ति स्वयमेव कमलसरांसि) पक्षे—सयं चेअ मुणसि करणिज्जं (स्वयमेव जानासि करणीयम्)।

नियम ५६ [प्रत्येकमः पाडिक्कं पाडिएक्कं २।२१०] प्रत्येक अर्थ में पाडिक्कं, पाडिएक्कं और पत्तेयं अव्यय है।

नियम ५७ (उअ पश्य २।२११) उअ अव्यय पश्येत् (देखो) अर्थ में विकल्प से। उअ लोआ गच्छंति (पश्य लोकाः गच्छंति)।

नियम ५८ [इहरा इतरथा २।२१२] इहरा अव्यय इतरथा अन्यथा के अर्थ में। इहरा नीसामन्नेहिं (इतरथा निःसामान्यैः)।

नियम ५९ [एक्कसरिअं झगिति संप्रति २।२१३] झगिति (शीघ्र) संप्रति (अभी) इन दो अर्थों में एक्कसरिअं अव्यय।

नियम ६० [मोरउल्ला मुधा २।२१४] मोरउल्ला अव्यय मुधा (व्यर्थ) अर्थ में। मोरउल्ला जंपसि (मुधा जल्पसि)।

नियम ६१ [दरार्धाल्पे २।२१५] दर अव्यय अर्ध और अल्प अर्थ में। दर विअसिअं (अर्धेन विकसितं, ईषत् विकसितं)।

नियम ६२ [किणो प्रश्ने २।२१६] किणो अव्यय प्रश्न अर्थ में। किणो धुवसि (किं धुवसि)।

नियम ६३ [इजेराः पादपूरणे २।२१७] इ, जे, र ये तीन अव्यय पाद पूरण में। न उणा इ अच्छीइं (न पुनः अक्षीणि), अणुकूलं वोत्तुं जे (अनुकूलं वक्तुम्), गेण्हइ र कमल गोवी (गृह्णाति रे कमलगोपी)।

नियम ६४ [प्याद्यः २।२१८] पि वि, अपि समुच्चय अर्थ में। सायरो वि (सागरो अपि) जम्मो पि (जन्म अपि)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. अव्यय किसे कहते हैं ? उसका प्रयोग कैसे होता है ?

२. नीचे लिखे अव्ययों के अर्थ बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो—
आम, हन्द, णइ, च्च, बले, णवरि, णाइं, माइं, मामि, वेव्व, दे, हरे, औ, वणे, मणे, अम्मो, उअ, एक्कसरिअं, दर, मोरउल्ला और किणो।

३. पसेवो, कायदीविया, सीअं, फलिहा, ढोला, उक्कोडा णाओ—इन शब्दों के हिन्दी अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१ हेत्वर्थ कृदन्त

(तुम् प्रत्यय)

शब्द संग्रह

परस्पर—परोप्परं
कल्याण—कल्लाणं
शास्त्र—सत्थं
पाठक—पाढयो
कार्य—कज्जं
प्रयत्न—पयण्णो
स्पष्ट—पट्ठं
स्वप्न—सुविणो
शक्ति—सत्ती
सभा—सहा
श्रेयांस—सिज्जंसो

धातु संग्रह

गमित्तए—जाने के लिए
रोविउं—रोने के लिए
विवदित्तए—विवाद करने के लिए
पयासिउं—प्रकट करने के लिए
खादिउं=खाने के लिए
गाउं=गाने के लिए,
लद्धुं=पाने के लिए
जोद्धुं=युद्ध करने के लिए
अणुणेउं—अनुनय करने के लिए
विहरित्तए, विहरेत्तए—विहार के लिए
घेत्तुं—लेने के लिए
पासित्तए, पासेत्तए—देखने के लिए
जग्गिउं—जागने के लिए
काउं, कट्टुं—करने के लिए
रोद्धुं—रोकने के लिए

अव्यय संग्रह

मग्गतो (मार्गतः)—पीछे से
सिय (स्यात्)—कथंचित्
मणा, मणयं (मनाक्)—थोडा
मुहुं, मुहु—बार-बार
सज्जं (सद्यः)—शीघ्र
पेच्च (प्रेत्य)—परलोक
मोरउल्ला—व्यर्थ

सर्व शब्द तीनों लिंगों में याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४३ क, ४६ ख, ४३ ग।

तुम् प्रत्यय

धातु में तुं और त्तए प्रत्यय लगाने पर हेत्वर्थकृदन्त (तुम् प्रत्यय) के रूप बनते हैं। त्तए प्रत्यय के रूप जैन आगमों में विशेष रूप मिलते हैं। तुं (उं) और त्तए प्रत्यय का अर्थ होता है—के लिए।

नियम ६५ [एच्चाक्त्वा तुम् तव्यभविष्यत्सु ३।१५७] क्त्वा, तुम्,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तव्य प्रत्यय एवं भविष्यत्कालीन प्रत्यय परे होने पर पूर्व धातु में होने वाले अ को इ तथा ए हो जाता है। व्यंजनान्त धातु के अंत में अ नित्य आता है तथा स्वरान्त धातुओं के अंत में अ विकल्प से होता है।

त्तए—हस्+अ=हसित्तए, हसेत्तए (हसितुं) हंसने के लिए
हो+अ=होइत्तए, होएत्तए, होत्तए (भवितुं) होने के लिए

तुं (उं)—हस्+अ=हसितुं, हसेतुं, हसिउं, हसेउं।
हो+अ=होइतुं, होएतुं, होतुं। होइउं, होएउं, होउं।

नियम ६६ [क्त्वा-तुम्-तव्येषु घेत् ४।२१०] क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर ग्रह धातु को घेत् आदेश होता है। घेत्तुं (ग्रहीतुं) ग्रहण करने के लिए।

नियम ६७ [वचो वोत् ४।२११] क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर वच् धातु को वोत् आदेश होता है। वोत्तुं (वक्तुं) बोलने के लिए।

नियम ६८ [रुदभुजमुचां तोन्त्यस्य ४।२१२] क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे होने पर रुद्, भुज् तथा मुच् धातुओं के अन्त्य को त आदेश होता है।

रुद्—रोत्तुं (रोने के लिए)। भुज्—भोत्तुं (खाने के लिए)
मुच्—मोत्तुं (छोडने के लिए)

नियम ६९ [दृशस्तेन ट्ठः ४।२१३] दृश् धातु के अन्त्य को तु के तकार सहित ट्ठ आदेश होता है। दृश्—दट्ठुं (देखने के लिए)

नियम ७० [आ कृगो भूत भविष्यतोश्च ४।२१४] कृ धातु के अंत को आ आदेश होता है, भूत और भविष्य काल में तथा क्त्वा, तुम् और तव्य प्रत्यय परे हो तो। काउं (करने के लिए)

प्रेरक [णिजन्त] हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनाने का नियम—णिजन्त की धातु के जो रूप बनते हैं (देखो—पाठ ९२, ९३, ९४)। उनके आगे तुं (उं) या त्तए प्रत्यय लगाने से हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं।

भणावितुं, भणाविउं, भणावित्तए—पढाने के लिए।

प्रयोग वाक्य

परोप्परं पेम्मेण ठाअव्वं। सव्वेसिं जणाण कल्लाणं होउ। सत्थचक्खु अन्तरेण मणुओ अंधो अत्थि। सो जोइसिअस्स पासे पण्हं पुच्छिउं गच्छइ। तुज्झ कज्जं अज्ज को काउं इच्छइ? जो पट्ठुं जंपइ सो जीवणववहारे पियो न लग्गइ। तुमए एगंते भासणाय पयण्णो कायव्वो। अहं सुविणम्मि एगं सिघं पासिसु। सव्वेहिं णियसत्तीए कज्जं कायव्वं। सिज्जंसेण एगवरिस-पेरंतो एगंतरोववासो कओ। धम्मसहाए सव्वजाइजणा आगच्छंति।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

तुम्हाणं गिहे खादिउं अन्नमवि नत्थि । एगं पदमवि गमित्तए नत्थि मे सत्ती । मंगलकाले को रोविउं लग्गो । इमो कालो जग्गिउं अत्थि । नायं समयो परोप्परं विवदित्तए । अहुणा तुमं किं काउं इच्छसि त्ति पट्टं कह ? मुणिणा जणाणं कल्लाणं काउं पयण्णो कयो । साहू आयरियं अणुणेउं गओ । सो सुमिणस्स अट्ठं घेत्तुं सुविणसत्थपाढयस्स घरं गओ । अवसरो अत्थि अप्पाणं पयासिउं । सो अवमाणं अवलोइउं न सक्कइ । इमं कज्जं तुए विणा को अण्णो काउं सक्कइ ।

अव्यय प्रयोग

सो मग्गतो कहं गच्छइ ? सा सज्जं जंपइ । अप्पा पेच्च गच्छइ । सो सिय महुरो सिय रुक्खो य अत्थि । मणयं भोयणं न हाणिअरं भवइ । सो अत्थ मुहु कहं आगच्छइ ? तुज्झ तत्थ गमणं मोरउल्ला अत्थि ।

प्राकृत में अनुवाद करो

यह समय विवाद करने के लिए नहीं है । आचार्य तुलसी ने महिलाओं को जगाने के लिए प्रयत्न किया । मंगलसेन की एक शब्द भी बोलने की शक्ति नहीं है । यह समय काम करने के लिए है । इस समय आप क्या खाना चाहते हैं ? श्रेयांस गुरु को प्रार्थना करने के लिए गया है । प्रभा प्रथम आने के लिए पढने का प्रयत्न करती है । उनको लेकर श्रेयांस गाने के लिए सभा में गया । दूसरे गांव जाने के समय रोना उचित नहीं है । अरुणा ने जगाने के लिए प्रयास किया । शास्त्र को जानने वाला कल्याण का कार्य करता है । तुम्हारे बिना लिखने का कार्य कोई दूसरा नहीं कर सकता । कुसुम अपमान को सह नहीं सकता । वह विवाद के लिए दूसरे गांव जाता है । परस्पर प्रेम पूर्वक रहना चाहिए । तुम्हारा कल्याण हो । हमारे धर्मशास्त्र जिनप्रणीत हैं । इस प्रश्न का उत्तर जैन विद्या जानने वालों से मांगो । अपना कार्य स्वयं करो । राष्ट्र भाषा किसको प्रिय नहीं लगती है । उसको बोध देने के लिए तुझे प्रयत्न करना चाहिए । उसे स्वप्न में बुरे विचार आते हैं । सबके पास स्मरण शक्ति है । प्रेमलता स्पष्ट बोलती है । उसकी सभा में पांच सौ तियासी आदमी थे ।

अव्यय का प्रयोग करो

थोडा पढा लिखा भयंकर होता है । व्यर्थ में किसी के साथ विवाद मत करो । पीछे से वह तुम्हारी निंदा करता है । परलोक में जीव कर्म सहित जाता है । उसको पढने के लिए बार-बार मत कहो । कथंचित् आत्मा नित्य है । प्रश्न का उत्तर शीघ्र दो । अवधान में प्रश्न का उत्तर शीघ्र कौन देता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. स्त्रीलिंग में जा, सा, अमु, इमा, और एआ शब्द के रूप लिखो।
२. तुम् प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में कौन से प्रत्यय आते हैं ?
३. तुम् प्रत्यय के रूप बनाने के लिए किस नियम का ध्यान रखना चाहिए ?
४. तुम् प्रत्यय किस अर्थ में प्रयोग होता है ?
५. तुम् प्रत्यय परे होने पर किन धातुओं को क्या-क्या आदेश होता है ?
६. प्रेरक (ञिन्नन्त) धातुओं के तुम् प्रत्यय के रूप कैसे बनाए जाते हैं ? किन्हीं चार धातुओं के रूप बनाओ।
७. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ लिखो—परोप्परं, कल्लाणं, सत्ती, पयण्णो, पट्टं, सत्थं, पाढयो, सुविणो।
८. पीछे से, कथंचित्, थोडा, व्यर्थ, शीघ्र, बार बार और परलोक में—इन अर्थों में कौन से अव्यय हैं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्बन्धभूत कृदन्त
(क्त्वा प्रत्यय)

शब्द संग्रह (पत्रालय वर्ग)

पत्र—पत्तं
पत्रपेटी, लेटरबक्स—पत्ताही (पुं) (सं)
पोस्टआफिस—पत्तालयो (सं)
प्रमुख डाकघर—पमुहपत्तालयो (सं)
पोस्टमास्टर—पत्तालयाहिअक्खो (सं)
जनरलपोस्टमास्टर—पत्तालयाहीसो (सं)
डाकिया—पत्तवाहओ
मनीआर्डर—धणाएसो (सं)
पार्शल—पासलो (सं)
रजिष्ट्री—पंजिआ (सं)
तार—तुरिअसूअओ (सं)
तारघर—तुरिअसूअणालयो (सं)
लिफाफा—आवेट्ठणं (सं)

धातु संग्रह

पासिऊण—देखकर
इच्छिऊण—इच्छाकर
पुच्छिऊण—पूछकर
झाऊण—ध्यानकर
जाणिऊण—जानकर
हसिऊण—हंसकर
दाऊण—देकर
णमिऊण—नमनकर
पाऊण—पाकर
गच्छिऊण—जाकर
सुणिऊण—सुनकर
भुंजिऊण—भोजनकर
सयिऊण—सोकर
सेविऊण—सेवाकर
ठाऊण—ठहरकर
गिण्हिऊण—ग्रहणकर
कहिऊण—कहकर
लिहिऊण—लिखकर

अव्यय संग्रह

वीसुं (विष्वक्)—सब ओर से
तहा, तह (तथा)—वैसे, उस प्रकार से
अत्थं (अस्तं)—अस्त होना, छिपना
णिच्चं, निच्चं (नित्यं)—नित्य
णोचेअ (नो एव)—नहीं तो
अत्थु (अस्तु)—हो

ज, त, क, एअ, इम, अमु शब्द नपुंसक लिंग में याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ४४ ग, ४५ ग, ४६ ग, ४८ ग, ४७ ग, ४६ ग)

क्त्वा प्रत्यय

जब कर्ता एक कार्य पूर्ण करके दूसरा कार्य करता है तो पहले किए गए कार्य के लिए संबंधभूत कृदन्त (क्त्वा प्रत्यय) का प्रयोग किया जाता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। क्त्वा प्रत्यय प्रत्येक धातु से होता है। यह पूर्वकालिक अर्ध क्रिया है। इसके साथ दूसरी क्रिया का होना आवश्यक है। वाक्य में क्रिया के साथ कर्म आता है वैसे ही इस अर्धक्रिया का भी कर्म आता है।

नियम ७१ (**क्त्वस्तुम तूण तुआणाः २।१४६**) संस्कृत के क्त्वा प्रत्यय और क्त्वा के स्थान पर यप् (ल्यप्) प्रत्यय को प्राकृत में तुं, अत् (अ), तूण और तुआण ये चार प्रत्यय होते हैं। पूर्ववर्ती नियम के अनुसार तुं, तूण, और तुआण प्रत्ययों के योग में पूर्ववर्ती अ को ए तथा इ विकल्प से होता है। इत्ता, इत्ताण, आय तथा आए—ये चार प्रत्यय क्त्वा के स्थान पर अर्धमागधी में और मिलते हैं। तुआण प्रत्यय भी अर्धमागधी में मिलता है।

नियम ७२ (**क्त्वा स्यादेर्ण स्वोर्वा १।२७**) तूण, तुआण और इत्ताण प्रत्ययों के 'ण' शब्द के ऊपर अनुस्वार विकल्प से होता है।

तुं [उं] प्रत्यय—हस्—हसितुं, हसेतुं, हसिउं, हसेउं (हसित्वा) हंसकर
हो—होतुं, होइतुं, होएतुं, होउं, होइउं, होएउं (भूत्वा) होकर

तूण [ऊण] प्रत्यय—हस्—हसितूण, हसेतूण। हसिऊण हसेऊण। हसितूणं हसेतूणं। हसिऊणं, हसेऊणं।
हो—होइतूण, होइतूणं। होएतूण, होएतूणं। होतूण, होतूणं। होइऊण, होइऊणं। होएऊण, होएऊणं। होऊण, होऊणं।

तुआण [उआण] प्रत्यय—हसितुआण, हसितुआणं। हसेतुआण, हसेतुआणं। हसिउआण, हसिउआणं। हसेउआण, हसेउआणं।
हो—होतुआण, होतुआणं। होउआण, होउआणं। होइतुआण, होइतुआणं। होइउआण, होइउआणं। होएतुआण, होएतुआणं। होएउआण, होएउआणं।

अ प्रत्यय—हसिअ, हसेउ। **हो**—होइअ, होएअ, होअ।
इत्ता प्रत्यय—हसित्ता, हसेत्ता। **कृ**—करित्ता, करेत्ता, (कृत्वा) करकर।
इत्ताण प्रत्यय—हसित्ताण, हसेत्ताण, हसित्ताणं, हसेत्ताणं। करित्ताण, करेत्ताण, करित्ताणं, करेत्ताणं, (कृत्वा) करकर।
आय प्रत्यय—गह्—गहाय (गृहीत्वा) ग्रहणकर।
आए प्रत्यय—आया—आयाए (आदाय) लेकरके। संपेहाए (संप्रेक्ष्य) अच्छी तरह देखकर।

ऊपर हस् धातु और हो धातु के क्त्वा प्रत्यय के रूप दिए गए हैं। व्यंजनान्त धातुओं के हस् धातु की तरह और स्वरान्त धातुओं के हो धातु की तरह रूप चलते हैं।

पिछले पाठ में तुम् प्रत्यय के लिए जो नियम दिए गए हैं, वे क्त्वा प्रत्यय के लिए भी हैं, इसलिए उनके नियमों को न दुहराकर कुछेक धातुओं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के केवल रूप दिए जा रहे हैं।

काउं, कातूण, काऊण, कातूणं, काऊणं, कातुआण, काउआण, कातु-आणं, काउआणं, कट्टु (कृत्वा) करके।
घेत्तुं, घेत्तूण, घेत्तूणं, घेत्तुआण, घेत्तुआणं (गृहीत्वा) ग्रहणकर।
दट्ठु, दट्ठुं, दट्ठूण, दट्ठूणं, दट्ठुआण, दट्ठुआणं, (दृष्ट्वा) देखकर।
भोत्तुं, भोत्तूण, भोत्तूणं, भोत्तुआण, भोत्तुआणं, (भुक्त्वा) खाकर।
मोत्तुं, मोत्तूण, मोत्तूणं, मोत्तुआण, मोत्तुआणं, (मुक्त्वा) छोडकर।
रोत्तुं, रोत्तूण, रोत्तूणं, रोत्तुआण, रोत्तुआणं (रुदित्वा) रोकर।
वोत्तुं, वोत्तूण, वोत्तूणं, वोत्तुआण, वोत्तुआणं (उक्त्वा) बोलकर।

संस्कृत रूपों के आधार पर प्राकृत में उपलब्ध क्त्वा प्रत्यय के रूप—

आयाय (आदाय) ग्रहण करके।
किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) करके।
नच्चा, नच्चाण (ज्ञात्वा) जानकर,
बुज्झा (बुद्ध्वा) जानकर,
मत्ता, मच्चा (मत्वा) मानकर,
विप्पजहाय (विप्रजहाय) त्यागकर,
सुत्ता (सुप्त्वा) सोकर
साहट्टु (संहृत्य) संहारकर
आहट्टु (आहृत्य) आहारकर
चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) छोडकर
पिहाय (पिधाय) ढांककर
अभिभूय (अभिभूय) अभिभवकर,
गच्चा, गत्ता (गत्वा) जा करके।
नत्ता (नत्वा) नमकर।
भोच्चा (भुक्त्वा) खाकर।
वंदित्ता (वन्दित्वा) वंदनकर।
सोच्चा (श्रुत्वा) सुनकर।
आहच्च (आहत्य) आघातकर।
हंता (हत्वा) मारकर
परिण्णाय (परिज्ञाय) जानकर
निहाय (निधाय) स्थापितकर
परिच्चज्ज (परित्यज्य) परित्याग कर
पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) प्रतिबोध कर

प्रेरक [णिन्नत] धातु के क्त्वा प्रत्यय के रूप बनाने का नियम
धातु के आगे प्रेरक प्रत्यय जोडने के बाद क्त्वा को आदेश होने वाले प्रत्यय जोडे जाते हैं। जैसे—

हस्+आवि+तुं (उं)=हसाविउं, हसावेउं।
हस्+आवि+अ=हसाविअ, हसावेअ।
हस्+आवि+तूण (ऊण)=हसाविऊण, हसावेऊण।
हस्+आवि+तुआण (उआण)=हसाविउआण, हसाविउआणं हसावेउआण, हसावेउआणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरक धातु से प्रत्यय—

हास+अ=हासिअ, हासेअ। हास+तूण (ऊण)=हासिऊण, हासिऊणं। हास+तुआण=हासिउआण, हासिउआणं। हास+इत्ता=हासित्ता, हासेत्ता हास+तुं (उं)=हासिउं, हासेउं।

प्रयोग वाक्य

मज्झ भाअरस्स पत्तं अज्ज आगमिस्सइ। पत्तालयं गच्छिऊण पास मज्झ पत्तं अत्थि न वा। पमुहपत्तालयं जाऊणं पत्तालयाहीसं कह मज्झ पासलो कत्थ लुत्तो (खोगया)। पत्तवाहओ पत्ताइं दाउं गामे गामे गच्छइ। पत्तालयाहिअक्खो पाओ पत्तालयम्मि समय चिअ आगच्छइ। आवेट्ठुणे किं लिहिअमत्थि को वि न जाणइ? तस्स माआए पासे पइमासं धणाएसेण रोवगा (रुपया) आ यान्ति। तुमं पासले किं पेसिस्ससि? पंजिआइ चे रोवगा पेसेज्ज तया वरं। तुरिअसूअओ कओ आगओ? तुमं तुरिअसूअणालयं गच्छिऊण सव्वत्थ तुरिअसूअणं देहि जं आयरिएण अम्हाणं णयरे चउमासो कहिओ।

धातु प्रयोग

अहं तुमं पासिऊण अइपसन्नो मि। तुमं पुराणपाढं सुमरिऊण अग्गं पाढं पढसु। सो उवएसं दाऊण विरमीअ। तुलसीसाहणासिहरं ठाऊण अम्हे बहुसुंदरं दिस्सं पेच्छामो। ते बारवइं दट्ठूण महाविज्जालयं उवागया। लाडनूं गच्छिऊण, सुहम्माए सहाए साहुणो आयरियं वंदिऊणं णियतठाणेसु उवविसंति। तुमं पत्तं लिहिऊण कं दास्ससि? पण्हं पुच्छिऊण सो संतुट्ठो जाओ। तुमं मज्झ गिहे भोयणं भुंजिऊण सगामं गच्छसु।

अव्यय प्रयोग

सो वीसुं दुही अत्थि। किं तुमं णिच्चं पाढं पढसि? जहा सुहं तहा कर। तुमं गच्छ णो चेअ सो गमिस्सइ। आइच्चो णिच्चं अत्थं भवइ। तुज्झ कल्लाणं अत्थु।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम्हारा पत्र बहुत समय से नहीं आया है। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में लेटर वक्स नहीं है। मेरा भाई प्रतिदिन पत्र लाने पोस्ट आफिस जाता है। पोस्ट मास्टर आज कहां गया है? डाकघर में पत्र आते हैं। महानगरों में बडा डाकघर भी होता है। सुधांशु बडे डाकघर में काम करता है। डाकिया घर-घर में जाकर उनका पत्र आदि देता है। आज रमेश का मनीआर्डर कहां से आया है? पार्सल से आंख की दवा सीता को भेज दो। रजिष्ट्री से वस्तु भेजने पर उसकी सुरक्षा का भार भेजने वाले पर नहीं रहता। तार देकर मोहन को बुलाओ कि तुम्हारी माता बीमार है। तारघर में इतने आदमी क्यों आए हैं?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु का प्रयोग करो

भाई को देखकर वह घर में भाग गया। वह पुस्तक देकर अपने गांव चला गया। घर जाकर वह भोजन करेगा। वह ओं शब्द कहकर भाषण प्रारंभ करता है। वह हंसकर बोलता है। गुरु को नमन कर वह घर जाता है। शिक्षा ग्रहण कर वह जीवन में आचरण करता है। क्या तुम ध्यान कर सो जाते हो? बहू सासू की सेवा कर सोने जाती है। वह आम खाने की इच्छा करके भी नहीं खाता है। वह दिन में सोकर आलस्य (आलस्सं) बढाता है। तुम्हारा परिचय (परिययो) जानकर मैं खुश हूं। पिता का नाम पूछकर वह यहां से चला गया। लेख लिखकर उसने किसको दिया? पत्र लिखकर फिर तुमको कथा कहकर ही मैं यहां से बाहर जाऊंगा। साधु सेवा कर निर्जरा का लाभ लेता है। ध्यान कर और स्तुति गाकर तुम कहां गए थे?

अव्यय का प्रयोग करो

किसको सब ओर से भय है? वह हमेशा खाना नहीं खाता है। जैसा तुम चाहते हो वैसा अपना कार्य करो। तुम नहीं दोगे तो वह देगा। आज सूर्य कब अस्त होगा? सब का कल्याण हो।

प्रश्न

१. क्त्वा प्रत्यय को प्राकृत में कितने प्रत्यय आदेश होते हैं? अर्धमागधी में कितने प्रत्यय मिलते हैं?
२. क्रिया और अर्धक्रिया में क्या अंतर है? कर्म किसके साथ आता है?
३. नीचे लिखे रूपों को वाक्य में प्रयोग करो—
साहट्टु, चेच्चा, परिच्चज्ज, विप्पजहाय, किच्चा, मत्ता।
४. नीचे लिखे रूपों का हिन्दी में अर्थ बताओ—
परिण्णाय, आहच्च, पडिबुज्झ, बुज्झा, हंता, निहाय।
५. लेटर बक्स (पत्रपेटी), पोस्टऑफिस, डाकघर, पोस्ट मास्टर, जनरल पोस्ट मास्टर, डाकिया, मनीआर्डर, पार्शल, रजिष्ट्री, तार और तारघर के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. वीसुं, णोचेअ, अत्थं, तह—इन अव्ययों का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग करो।
७. सर्व शब्द के तीनों लिंगों के रूप लिखो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३ स्वर परिवर्तन

शब्द संग्रह (गुड-चीनी वर्ग)

चीनी—सिता, सिया
गुड—गुडो, गुलो
खांड—खण्डा
शक्कर—मच्छंडी
आर्द्र गुड—फाणिअं, फाणिओ
शरबत—सक्करोदयं
गुड से पहले की अवस्था—कक्कवो
चासनी—सियालेहो
बतासा—वातासो (सं)
सालम मिसरी—छुहामूली (सं)

० ० ० ० ०

स्वास्थ्य, स्वस्थता—सत्थं
रोगी—लुक्को
बजे—वायणसमयो (सं)

धातु संग्रह

नीहर—निकलना
पक्खाल—प्रक्षालन करना
पट्ठव—प्रस्थान करना
विण्णव—विनती करना
सार—ठीक करना
कत्त—कतरना
सूअ—सूचना करना
सुस्सूस—सेवा करना

अव्यय संग्रह

अन्तरेण—बिना
अओ, अतो (अतः)—इसलिए
अद्धा—समय
अण, णाइं (नञ्)—निषेध, विपरीत
अदुवा, अदुव—अथवा
अप्पेव (अप्येव)—संशय
अभितो—चारों ओर
अलं—बस, पर्याप्त
अम्मो—आश्चर्य
चे (चेत्) यदि
अहत्ता (अधस्तात्)—नीचे

• **पितृ और भर्तृ शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ८,१०**

स्वर परिवर्तन

प्राकृत में सामान्य रूप से स्वर परिवर्तन की व्यवस्था इस प्रकार है—

(१) ह्रस्व स्वरों का दीर्घीकरण
(२) दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरण
(३) स्वरों को स्वर का आदेश
(४) अव्यय के स्वरों का लोप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्रस्व स्वरों का दीर्घीकरण

नियम ७३ लुप्त य र व श ष सां श ष सां दीर्घः १।४३)

शकार, षकार और सकार के पूर्ववर्ती या उत्तरवर्ती संयुक्त वर्ण य, र, व, श, ष और स हो तो इनका लोप हो जाता है, लोप होने के बाद शकार, षकार और सकार के आदि (पूर्ववर्ती) स्वर दीर्घ हो जाता है।

श के साथ य लोप—पश्यति—पासइ। कश्यपः—कासवो। आवश्यकं —आवासयं।

श के साथ र लोप—विश्रम्यति—वीसमइ। विश्रामः—वीसामो। मिश्रं—मीसं। संस्पर्शः—संफासो।

श के साथ व लोप—अश्वः—आसो। विश्वसिति—वीससइ। विश्वासः—वीसासो।

श के साथ श का लोप—दुश्शासनः—दूसासणो मनःशिला मणासिला।

ष के साथ य लोप—शिष्यः—सीसो। पुष्यः—पूसो। मनुष्यः—मणूसो

ष के साथ र लोप—कर्षकः—कासओ। वर्षा—वासा। वर्षः—वासो।

ष के साथ व लोप—विष्वाणः (वीसाणो) विष्वक्—वीसुं

ष के साथ ष लोप—निष्षिक्तः—नीसित्तो।

स के साथ य लोप—सस्यम्—सासं। कस्यचित्—कासइ।

स के साथ र लोप—उस्रः—ऊसो। विस्रम्भः—वीसम्भो।

स के साथ व लोप—विकस्वरः—विकासरो। निःस्वः—नीसो।

स के साथ स लोप—निस्सहः—नीसहो।

नोट—दीर्घ स्वर का विधान करने से 'न दीर्घानुस्वारात्' नियम से दीर्घ स्वर से परे "अनादौशेषादेशयो द्वित्वं" से होने वाला शेषवर्ण द्वित्व नहीं हुआ है।

दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरण

नियम ७४ (ह्रस्वः संयोगे १।८४) दीर्घ स्वर से परे यदि संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है।

आ—आम्रम्—अम्बं। ताम्रम्—तम्बं। विहराग्निः—विरहग्गी। आस्यम्—अस्सं।

ई—मुनीन्द्रः—मुणिन्दो। तीर्थम्—तित्थं।

ऊ—गुरूल्लापः—गुरुल्लावा। चूर्णः—चुण्णो।

ए—नरेन्द्रः—नरिन्दो। म्लेच्छः—मिलिच्छो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओ—अधरोष्ठः—अहरुट्टं । नीलोत्पलम्—नीलुप्पलं ।

• **स्वरों को स्वर का आदेश आगे के पाठों में देखो ।**

प्रयोग वाक्य

सितं अन्तरेण दुद्धं पायव्वं । गुडम्मि मच्छिआओ (मक्खियां) आयान्ति । पायसे अप्पा सिया अत्थि । मज्झ खण्डा रोअइ । तुमे सियालेहो किमट्ठं कओ ? गिम्हकाले सक्करोदयस्स पओगो पउरो भवइ । महुस्स अहियो पओगो ण कायव्वो । गुलस्स पओगो सत्थाय लाहअरो भवइ । जत्ताए अणेग हुत्तो (अनेकबार) अम्हे फाणिअं खादीअ । तुमं अज्ज घयमच्छंडिअसंपुन्नं महंतं रोट्टगं लभिहिसि । सो वातासम्मि ओसहिं गिण्हइ । नीरेण सह छुहामूली सत्थस्स हिअं भवइ ।

धातु प्रयोग

मणुआ जं भुंजंति तं चे न नीहरेज्ज तया लुक्को भविस्सइ । जे वत्थाइं सयं पक्खालंति तेसिं सारीरियो परिस्समो भवइ । सुसीला नव्वाइं वत्थाइं कहं कत्तइ ? रायहाणीए सावगा आयरियं विण्णवेंति तत्थ आगमणाय । पाडलिपुत्तं गत्ता तुमं कया मज्झ पोत्थयाइं पट्ठविहिसि ? सा केसा सारइ । तुमं मुहु मुहु किं सुअसि ? सा पुत्तवहू घरे रोगिणो सुस्सूसइ ।

अव्यय प्रयोग

तं अन्तरेण अहं तत्थ न गमिस्सामि । तुमए सव्वद्धा न भोत्तव्वं । तिणा दोसो कओ अओ सो पायच्छित्तस्स भागी अत्थि । अहं णाइं दोसं करेमि । अणअहंकारं को जंपइ ? गामं अभितो पव्वया संति । सो सीसो अप्पेव अत्थि । तुज्झ जंपणेण अलं । अम्मो तुमए सव्वं दुद्धं पीअं । रुक्खस्स अहत्ता तुमए कहं सुत्तं ? तुमं चे अत्थ आगमिस्ससि अहं तुं पोत्थयं दास्सामि (देहामि) ।

प्राकृत में अनुवाद करो

प्राकृतिचिकित्सक (पागइयचिइच्छओ) चीनी को सफेद जहर मानते हैं । मधु का प्रयोग दवा में होता है । गुड-घी सहित रोटी लोग शीतकाल में खाते हैं । आयुर्वेद में खांड को उपयोगी माना है । क्या तुम चासनी से मिठाई बनाना चाहते हो ? लोग गर्मी में शरबत पीते हैं । आर्द्रगुड भी लोग खाते हैं । देवालय में रमेश बतासा बांटता (विअर) है । सालममिश्री यहां कहां मिलती है ?

धातु का प्रयोग करो

गुरु के पैरों को कौन प्रक्षालन करता है ? जो आहार करता है वह नीहार भी करता है । स्वास्थ्य के लिए क्या नहीं खाना आवश्यक है ? भक्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान से प्रार्थना करता है कि मेरे अवगुण पर ध्यान न दें। पिता पुत्र को प्रदेश प्रस्थान कराता है। वह अपने वस्त्रों को ठीक करता है। रमा पुराने वस्त्रों को कतरती है। वह तुम्हारी तन मन से सेवा करता है। मुनिसुव्रत रात को जगने के लिए जोर से बोलकर ४ बजे की सूचना देता है।

अव्यय का प्रयोग करो

१. गुरु के बिना ज्ञान अपूर्ण है। तुम यहां आए हो इसलिए मैं तुम्हें यह पुस्तक देता हूं। सब समय सजग रहो। बिना विचारे मत बोलो। तुम हंसते हो अथवा बोलते हो। क्या वह मूर्ख है? शहर के चारों ओर खेत हैं। आश्चर्य! आप यह कार्य न कर सके। मकान के नीचे मकान है। यदि तुम मुझे ज्ञान दोगे तो मैं तुम्हारा उपकार मानूंगा। तुम्हारी परीक्षा हो गई।

प्रश्न

१. ज, त, क, ए, अ, इम और अमु शब्द के नपुंसक लिंग के रूप बताओ?
२. संफासो, आरुग्गं, तीसो, सुत्तागमो, पक्खिअं, पासुपाणी, पमज्जणी, पच्चक्खामि, मित्ती, वासं, सज्झाओ, हासो, वीसामो, अप्पाणं—किस नियम से इनको ह्रस्व या दीर्घ हुआ है।
३. चीनी, खांड, गुड, शक्कर, चासनी, शरबत, आर्द्रगुड, सालमिश्री के लिए प्राकृत शब्द बताओ?
४. अम्मो, अहत्ता, णाइं, अण, अभितो, चे, अलं—इन अव्ययों का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग करो।
५. विनती करना, प्रक्षालन करना, भेजना, निकालना—इन अर्थ में कौनसी धातु इस पाठ में आई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश १

अकार को आ, इ, ई, उ, आदेश

शब्द संग्रह (रोटी आदि वर्ग)

रोटी—रुट्टिआ (दे)
रोट—रोट्टगो (दे०)
वाटी—अंगारपरिपाचिआ (सं)
चपाती, फुलका—छप्पत्तिआ (दे०)
पूरी—पोलिआ
मोठ की रोटी—मकुट्ठ रुट्टिआ (सं)
मक्की की रोटी—मकाय रुट्टिआ (सं)
बाजरी की रोटी—बज्जरी रुट्टिआ
परोठा—घयचोरी (सं)
बिस्कुट—पिट्ठगो (सं)

चने का आटा—वेसणं
गेहूं का आटा (मैदा)—समिआ
आटा—चुण्णं, अट्टगं (दे०)
गूंदा हुआ वासी आटा—अवसामिआ (दे०)
चने की रोटी—चणरुट्टिआ (सं)
उड़द की रोटी—मासरुट्टिआ (सं)
डबलरोटी—अब्भूसो (सं)
जौ की रोटी—जवरुट्टिआ

० ० ० ०

प्रकृति—पगई (स्त्री)
खट्टा—खट्टं

सत्तू—सत्तू (पुं)
व्यवहार—ववहारो

धातु संग्रह

चिण—चुनना
निमील—बंद होना
कुप्प—क्रोध करना
उम्मिल्ल—खुलना

फुड—फोडना, फटना
अट्ट—घूमना
संपज्ज—सम्पन्न होना
अहिलस—अभिलाषा करना

अव्यय संग्रह

इओ, इतो (इतः)—इस तरफ, इधर से
एगंततो (एकान्ततः)—एकान्त रूप से
केवच्चिरं (कियच्चिरं)—कितने लम्बे काल तक
आम (आम)—हां

णाणा (नाना)—नाना प्रकार
बहिद्धा (दे०)—बाहर
तहिं (तत्र)—वहां
जहिं (यत्र)—जहां

• **आत्मन् शब्द के रूप याद करो। देखो— परिशिष्ट १ संख्या १५**

नियम ७५ (अतः समृद्ध्यादौ वा १।४४) समृद्धि आदि शब्दों के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदि अकार को आकार विकल्प से होता है।

अकार 7 आ सामिद्धी, समिद्धी (समृद्धिः) सारिच्छो, सरिच्छो (सदृक्षः)
पासिद्धी, पसिद्धी (प्रसिद्धिः) माणंसी, मणंसी (मनस्विन्)
पायडं, पयडं (प्रकटम्) माणंसिणी, मणंसिणी (मनस्विनी)
पाडिवआ, पडिवआ (प्रतिपत्) आहिआई, अहिआइ (अभियाति)
पासुत्तो, पसुत्तो (प्रसुप्तः) पारोहो, परोहो (प्ररोहः)
पाडिसिद्धी, पडिसिद्धी (प्रतिसिद्धिः) पावासू पवासू (प्रवासिन्)
पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्द्धिन्)

नियम ७६ (दक्षिणे हे १।४५) दक्षिण शब्द के आदि अ को आ हो जाता है ह परे हो तो।

अकार 7 आ दाहिणो (दक्षिणः)।

नियम ७७ (इः स्वप्नादौ १।४६) स्वप्न आदि शब्दों के आदि अ को इ होता है।

अकार 7 इ सिविणो सिमिणो (स्वप्नः) मुइङ्गो (मृदङ्गः)
ईसि (ईषत्) किविणो (कृपणः)
वेडिसो (वेतसः) उत्तिमो (उत्तमः)
विलिअं (व्यलीकं) मिरिअं (मरिचम्)
विअणं (व्यजनम्) दिण्णं (दत्तम्)

नियम ७८ (पक्वाङ्गार ललाटे वा १।४७) पक्व, अंगार और ललाट शब्दों के आदि अ को इ विकल्प से होता है। पिक्कं, पक्कं (पक्वम्)। इङ्गालो, अंगारो (अङ्गारः)। णिडालं णडालं (ललाटम्)।

नियम ७९ (मध्यम कतमे द्वितीयस्य १।४८) मध्यम और कतम शब्द के दूसरे अ को इ होता है।

अकार 7 इ मज्झिमो (मध्यमः) कइमो (कतमः)

नियम ८० (सप्तपर्णे वा १।४९) सप्तपर्ण शब्द के दूसरे अ को इ विकल्प से होता है। छत्तिवण्णो, छत्तवण्णो (सप्तपर्णः)।

नियम ८१ (मयट्यइर्वा १।५०) मयट् प्रत्यय के आदि अ के स्थान पर अइ आदेश विकल्प से होता है।

अकार 7 इ विसमइओ, विसमओ (विषमयः)

नियम ८२ (ईर्हरे वा १।५१) हर शब्द के आदि अ को ई विकल्प से होता है।

अकार 7 ई हीरो, हरो (हरः)

नियम ८३ (ध्वनि विष्वचो उः १।५२) ध्वनि और विष्वग् शब्दों के आदि अ को उ होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकार 7 **उ** झुणी (ध्वनिः) वीसुं (विष्वग्) ।

नियम ८४ (वन्द्र खण्डिते णा वा १।५३) वन्द्र और खण्डित शब्द के आदि अ को ण सहित उ विकल्प से होता है ।

अकार 7 **उ** वुद्रं, वन्द्रं (वन्द्रः) खुडिओ, खण्डिओ, (खण्डितः)

नियम ८५ (गवये वः १।५४) गवय शब्द में व के अ को उ होता है । गउओ (गवयः) गउआ (स्त्री) ।

प्रयोग वाक्य

भिक्खायरियाए अज्ज मए घयपुण्णो रोट्टगो पत्तो । मेवाडदेसस्स अंगारपरिपाचिआ पसिद्धा अत्थि । चुण्णं अट्टगं वा अन्तरेण रुट्टिआ न भवइ । हरियाणावासिणो घयचोरिं पउरं खाअंति । सामिआ सत्थस्स हियाय नत्थि । णिद्धणा सत्तू एव भुंजंति । अस्स गिहे अवसामिआ कहं अत्थि ? सो सागरहियं केवलं छप्पत्तिअं चव्वइ । पव्वदिणे घरे-घरे पोलिआओ भवंति । इमम्मि देसे वेसणस्स कढिआ करेंति जणा ।

अहं भोयणे मकुट्ठरुट्टिअं अहिलसामि । घयपुण्णा मकायरुट्टिआ कस्स न रोअइ । वेसणरुट्टिआ दहिणा सह रुइअरा भवइ । अमुम्मि गामम्मि मासरुट्टिआ कास घरे लहिस्सइ । णयरे लोआ दुद्धेण सह पिट्ठगा अब्भूसा वा खाअंति ।

धातु प्रयोग

सा पुप्फाइं चिणइ । पज्जिआए सव्वंगसंधीओ फुडंति । णिद्दाए नेत्ताइं निमीलंति । कित्ती णयरस्स पसिद्ध उज्जाणे रविवारे अट्टइ । सो महं मोरउल्ला कुप्पइ । रायकुमारी सकज्जं सोमवारे संपज्जिहिइ । तस्स चक्खूइं कहं न उम्मिल्लंति ।

अव्यय प्रयोग

किं इओ साहुणो गआ ? णाणा दव्वाइं सो भुंजइ भोयणे । किं आणेउं सो गामाओ बहिद्धा गओ ? किमवि वत्थु एगंततो न निच्चं न अणिच्चं अत्थि । तुमं अत्थ केवच्चिरं ठाहिसि ? तहिं को साहू अत्थि ? तुमं तहिं विहर जहिं जिणसासणस्स पभावणा भवेज्ज । एअं कज्जं किं तुमए कअं ? आम, कअं ।

प्राकृत में अनुवाद करो

साग के साथ रोटी खाने से अन्न का स्वाद नहीं आता है । रोटी को दहि के साथ मैंने अनेक बार खाया है । घी से पूर्ण बाटी हर व्यक्ति नहीं पचा सकता । गूंदा हुआ वासी आटा भी समय पर काम आता है । घी और चीनी से युक्त सत्तू मिठाई बन जाता है । पांच आदमियों के लिए यह आटा पर्याप्त नहीं है । परोठा सदा नहीं खाना चाहिए । वह आज फुलका क्यों नहीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खाएगा ? घी रहित फुलका जल्दी पचता है। यात्रा में लोग पूरी अधिकांशतया खाते हैं। मोठ की रोटी गुण से शीतल होती है। मक्की की रोटी मेवाडवासी अधिक खाते हैं। चने की रोटी पंजाब में बहुत लोग खाते हैं। उड़द की रोटी आजकल कम लोग खाते हैं। आजकल बिस्कुट घर-घर में मिलता है। डबल रोटी समय के बाद खट्टी भी हो जाती है।

धातु का प्रयोग करो

अच्छे आदमी दूसरों का अवगुण नहीं चुनते। वह कभी आंखें खोलता है, कभी बंद करता है। तुम्हारा सिर क्यों फटता है ? मुझे तुम्हारे व्यवहार पर क्रोध आता है। दोनों मित्र प्रातः प्रतिदिन घूमते हैं। क्या कारण है आपका समारोह अच्छी तरह संपन्न होता है ?

अव्यय का प्रयोग करो

आप अपने घर में कितने समय तक ठहरेंगे ? आदमियों की प्रकृति नाना प्रकार की होती है। जहां तुम रहते हो वहां और कौन रहता है ? तुम्हारा कथन सत्य है यह एकांत रूप से मैं नहीं कह सकता। उसकी गाय गांव के बाहर गई है। क्या तुम्हारा भाई इधर से नहीं जाएगा ? हां, मैं वहां गया था।

प्रश्न

१. अकार को इस पाठ में क्या-क्या आदेश हुआ है ? प्रत्येक आदेश के एक-एक उदाहरण दो।
२. मिरिअं, विसमइओ, उत्तिमो, हीरो, छत्तिवण्णो, मज्झिमो—इन शब्दों में किस नियम से क्या आदेश हुआ है ?
३. रोटी, रोट, बाटी, फुलका, पूरी, मोठ की रोटी, मक्की की रोटी परोठा, बिस्कुट, चने की रोटी, उडद की रोटी, डबल रोटी, मैदा, चने का आटा, सत्तू, गूंदा हुआ बासी आटा—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
४. पितृ और भर्तृ शब्द के रूप लिखो।
५. चिण, निमील, कुप्प, उम्मिल्ल, फुड, अट्ट, संपज्ज, अहिलस धातु के अर्थ लिखो।
६. केवच्चिरं, बहिद्धा, एगंततो, आम—इन अव्ययों का वाक्य में प्रयोग करो।
७. पट्टं, आवेट्ठणं, पंजिआ, धणाएसो, छुहामूली, मच्छंडी कक्कवो—इन शब्दों का हिन्दी में अर्थ बताओ और प्राकृत में वाक्य बनाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (२)

अकार को आदेश

शब्द संग्रह (मिठाई वर्ग)

इमरती (अमिया) (सं) — पेडा—पिण्डो

वर्फी—हेमी (सं) — रबडी—कुच्चिया (सं)

गुलाबजामुन—दुद्धपूअलिया (सं) — कलाकंद—कलाकंदो (सं)

रसगुल्ला—रसगोलो (सं) — घेवर—घयपुन्नो, घेउरो

गजक—गजओ (सं) — पपडी—पप्पडी

खाजा—महुसीसो (सं) — मोहनभोग—मोहणभोगो (सं)

लड्डू—लड्डूओ, मोदओ (सं) — जलेबी—कुंडलिणी (सं)

मालपुआ—अपूयो — कसार—कसारो

गुज्झिया—संयावो, गोझिया — बालूशाही—महुमंठो

शक्करपारा—सक्करावालो — पेठे की मिठाई—कोहंडी

o o o o o

हलवाई—कन्दवियो — मिठाई—मिट्ठन्नं

होटल—पण्णभोयणालयो (सं)

धातु संग्रह

विहर—विहार करना, घूमना — डस (दंस)—डसना

पगब्भ—शेखी मारना. — अमराय—अपने को अमर समझना

कत्थ—कहना — फुट्ट—स्फुट होना

विचिंत—चिंतन करना — विंध—बींधना, छेद करना

अइवाअ—अतिपात करना, हिंसा करना — विसीअ—खेद करना, खिन्न होना

अव्यय संग्रह

केवलं (केवलं)—सिर्फ, केवल, — सव्वत्थ (सर्वत्र)—सब स्थानों से

मज्झे (मध्य)—बीच में — सक्खं (साक्षात्)—प्रत्यक्ष

सययं (सततं)—निरन्तर — चिरं (चिरं)—चिरकाल तक

कत्थइ (कुत्रचिद्)—कहीं, किसी जगह

राजन् शब्द के रूप याद करो देखो—परिशिष्ट १ संख्या १४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकार को उ, ए, ओ, आ, आइ, लुक् आदेश

नियम ८६ (प्रथमे पथो र्वा १।५५) प्रथम शब्द में प और थ के अकार को एक साथ और क्रम से उकार विकल्प से होता है।

अ > उ—पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं (प्रथमम्)

नियम ८७ (ज्ञो णत्वेभिज्ञादौ १।५६) अभिज्ञ आदि शब्दों के ज्ञ को ण करने पर ज्ञ के अ को उ होता है।

अ > उ—अहिण्णू (अभिज्ञः) कयण्णू (कृतज्ञः)
सव्वण्णू (सर्वज्ञः) आगमण्णू (आगमज्ञः)
जहां ज्ञ का ण्ण रूप देखें उन्हें अभिज्ञ आदि शब्द समझें।

नियम ८८ [एच्छय्यादौ १।५७] शय्या आदि शब्दों के आदि अ को ए होता है।

अ > ए—सेज्जा (शय्या) सुन्देरं (सौन्दर्यम्) गेन्दुअं (कन्दुकम्) एत्थ (अत्र)

नियम ८९ [ब्रह्मचर्ये चः १।५९] ब्रह्मचर्य शब्द में च के अ को ए होता है।

अ > ए—बम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्)।

नियम ९० [तोन्तरि १।६०] अन्तर् शब्द के त के अ को ए होता है।

अ > ए—अन्तेउरं (अन्तःपुरम्) अन्तेआरी (अन्तश्चारी)

नियम ९१ [वल्ल्युत्कर—पर्यन्ताश्चर्ये वा १।५८] वल्ली, उत्कर, पर्यन्त और आश्चर्य शब्दों के आदि अ को ए विकल्प से होता है।

अ > ए—वेल्ली, वल्ली (वल्ली) पेरंतो, पज्जन्तो (पर्यन्तः)
उक्केरो, उक्करो (उत्करः) अच्छेरं, अच्छरिअं, अच्छअरं
अच्छरिज्जं, अच्छरीअं (आश्चर्यम्)

नियम ९२ (ओत्पद्मे १।६१) पद्मशब्द के आदि अ को ओ होता है।

अ > ओ—पोम्मं (पद्मम्)।

नियम ९३ (नमस्कार-परस्परे द्वितीयस्य १।६२) नमस्कार और परस्पर शब्दों के दूसरे अ को ओ होता है।

अ > ओ—नमोक्कारो (नमस्कारः) परोप्परं (परस्परम्)

नियम ९४ (वार्पौ १।६३) अर्पयति धातु के इस रूप के आदि अ को ओ विकल्प से होता है।

अ > ओ—ओप्पेइ, अप्पेइ (अर्पयति)

नियम ९५ (स्वपावुच्च १।६४) स्वपिति धातु के इस रूप के आदि अ को ओ और उ आदेश होता है।

अ > ओ, उ—सोवइ, सुवइ (स्वपिति)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ९६ (नात् पुन र्यादा ई वा १।६५) न शब्द से परे पुनः शब्द के आदि अ को आ और आइ आदेश विकल्प से होता है।

अ∠आ, आइ—न उणा, न उणाइ न उण, (न पुनः)

नियम ९७ (वालाब्वरण्ये लुक् १।६६) अलाबु और अरण्य शब्द के आदि अ का लुक् विकल्प से होता है।

अ ∕ लुक्—लाउं, अलाउं लाऊ, अलाऊ (अलाबुम्)। रण्णं, अरण्णं (अरण्यम्)

प्रयोग वाक्य

कुंडलिणी पायसेणं सह रत्तवड्ढआ हवइ। अमिया कुंडलिणी इव भवइ। हेमी जेपुरणयरस्स पसिद्धा अत्थि। अपूयो सया न भोत्तव्वो। मोदगो मज्झ अहियो रोयइ। दुद्धपूअलिया उवरि रत्ता अंतराले सिया भवइ। रसगोलो अज्जत्ता अमुम्मि पएसम्मि वि मिलइ। धयपूरो जेपुरणयरस्स लच्छीपण्णाभोयणालयस्स पसिद्धो अत्थि। गजओ वावरणयरस्स आवणे मिलइ। महुसीसो दीवालीए पव्वम्मि घरे घरे मिलइ। सक्करावालो सुद्धमिट्ठन्नं अत्थि। संयावो कत्थ मिलिस्सइ? दुद्धेण पिण्डा भवंति। कुच्चिआ साऊ भवइ। मए जेपुरे कलाकंदो बहु भक्खिओ। पप्पडी कस्स कांदवियस्स पासे मिलिस्सइ। महुमंठो जोधपुरस्स णयरस्स पसिद्धो अत्थि। अज्ज मए मोहणभोओ भुत्तो। एगया कसारस्स ववहारो अहियो आसि परं संपइ अप्पो।

धातु प्रयोग

साहुणो चउमासाइरित्तं सेसकाले गामाणुग्गामं विहरंति। सप्पो एगं नरं डसीअ। सुरेसो पगब्भइ एअं किमवि कज्जं नत्थि जं अहं काउं न समत्थो। गंभीरविसये सव्वे चिंतआ संमीलिय विचिंतंति। अमुम्मि संसारम्मि को अमरायइ? मूढो अण्णाणेण पाणा अइवाअइ। सूरिय विआसिल्लपउमं पगे आइच्चं पासिऊण फुट्टइ। अप्पपरिस्समेण एव विमला विसीअइ। मालाआरो रत्तपुप्फाइं विंधइ। महावीरो जहा धणवन्तं कत्थइ तहा णिद्धणं कत्थइ।

अव्यय प्रयोग

अम्हाणं मज्झे को विउसो अत्थि? राइभोयणं साहूण कए सव्वत्थ णिसिद्धं भवइ। मए सक्खं दिट्ठं तुमए एअं कज्जं कयं। सययं अब्भासेण कज्जस्स सिद्धी भवइ। पाणाइवायो धम्मो एअं वण्णणं सत्थेसु कत्थइ नत्थि। भवन्तो जेणधम्मस्स पभावणं चिरं करेंतु।

प्राकृत में अनुवाद करो

लोग प्रातःकाल नाशता में जलेबी खाते हैं। शुद्ध घी का लड्डू पुराना होने पर भी दवा के काम आता है। आज हमारे यहां मालपुआ और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खीर का भोजन है। स्कूल में अध्यापक ने १० लडकों को पांच घेवर दिए। कसार को खाना कौन पसंद करता है? गुज्झिआ इस प्रदेश में कहां बनता है? इमरती से जलेबी अच्छी लगती है। बर्फी हर शहर में नहीं मिलती है। आज किसके घर में गुलाबजामुन बनेगा? रसगुलों को खाने के विवाद में मैं हार गया। गजक प्रकृति से वायु का नाश करती है। तू खाजा को जल्दी खा जा। सुलोचना गुज्झिआ बनाना नहीं जानती है। शक्करपारा बहुत दिनों से मैंने खाया है। पेडा में दूध का भाग अधिक है। रबडी को देखकर उसके मुंह में पानी आ गया। क्या तुम्हारी कलाकंद खाने की इच्छा होती है? उसके विवाह में पपडी किसी ने नहीं खाई। मोहनभोग आजकल विवाह की प्रमुख (पमुह) मिठाई है। लोकेश बालुशाही को खाना पसंद करता है। पेठे की मिठाई फल की मिठाई है।

धातु का प्रयोग करो

साधु सूर्योदय के बाद शीतकाल में भी विहार करते हैं। रमेश शेखी मारता है कि मैं पांच घंटा भाषण दे सकता हूं। लोगों को मरते देखकर भी वह अपने को अमर मानता है। वह मुझे सांप की तरह डसता है। वह जानकर अतिपात करता है इसलिए उसके कर्मबंधन सघन होते हैं। उपालंभ मिलने पर वह खिन्न हो जाता है। काम करने से पहले वह चिंतन करता है। साधु सब लोगों के लिए धर्म कहते हैं।

अव्यय का प्रयोग करो

वह लकडी में छेद करता है। साधु की पूजा सर्वत्र होती है। आत्मा साक्षात् नहीं है। आप चिरकाल तक जीवित रहें। ग्राम के बीच में साधुओं का स्थान है। निरंतर अप्रमाद रहना चाहिए। सब पढते हैं केवल तुम नहीं पढते हो। किसी जगह भी मूर्ख का सम्मान नहीं होता है।

प्रश्न

१. इस पाठ में अकार को क्या आदेश हुए हैं? एक-एक उदाहरण दो।
२. परोप्परं, सव्वण्णू, पेरंतो, सोवइ, अन्तेआरी, लाउ—इन शब्दों में अ को क्या-क्या आदेश हुए हैं, नियम सहित बताओ।
३. इमरती, वर्फी, गुलाबजामुन, रसगुल्ला, गजक, खाजा, लड्डू, मालपुआ, गुज्झिया, शक्करपारा, पेडा, रबडी, कलाकंद, घेवर, पपडी, मोहनभोग, जलेबी, कसार, बालुशाही, पेठे की मिठाई—इन शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।
४. विंध, पगब्भ, कत्थ, अइवाअ, डस, फुट्ट और अमराय धातु के अर्थ लिखो।
५. सक्खं, कत्थइ, चिरं, मज्झे, केवलं—इन अव्ययों को वाक्य में प्रयोग करो।
६. आत्मन् शब्द के रूप बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (३)

आ को आदेश

शब्द संग्रह (पात्रवर्ग)

घडा—घडो
तांबे का घडा—कलसो
मटका—कयलं (दे०)
तुम्बीपात्र, तुंबो—कुउआ (दे०)
लोटा—करगो
गिलास, सुराही—कंसो
झारी—भिंगो
दही रखने का मिट्टीपात्र—गग्गरी
कुंडी—करंडी
कुलडी—कुल्लडं
सकोरा—कोडिअं (दे०)
काच की गिलास—कायकंसो
पानी भरने का मशक—चिरिक्का (दे०)

धातु संग्रह

उक्कुद्द—ऊंचा कूदना
भज्ज—भांगना, तोडना
अवसीअ—अवसाद पाना, खिन्न होना
लिप्प—लेप करना
संजम—संयम करना
पडिकूल—विपरीत होना
सर—स्मरण करना
पमुच्च—प्रमुक्त होना
हिंस—हिंसा करना
उवे—पास जाना

अव्यय संग्रह

तेण (तेन)—उस तरफ से
जेण (येन)—जिस तरफ से
एव (एवं)—इस प्रकार
सुट्ठु (सुष्ठु)—अच्छा
इहेव (इहैव)—यहीं, यहीं पर
नमो, णमो (नमः)—नमस्कार

विस्स, उभय, अन्न, कयर, अवर आदि शब्दों को याद करो। इनके रूप सर्व शब्द की तरह चलते हैं।

आ को अ, इ, उ, ऊ, ए आदेश

नियम ६८ (वाव्ययोत्खातादावदातः १।६७) अव्यय और उत्खात आदि शब्दों में पहले आकार को अकार विकल्प से होता है।

आ > अ अव्यय—जह, जहा। तह तहा। अहव, अहवा। व वा। ह हा।

शब्द—उक्खयं, उक्खायं (उत्खातम्) कलओ, कालओ (कालकः)
चमरो, चामरो (चामरः) ठविओ, ठाविओ (स्थापितः)
परिट्ठविओ, परिट्ठाविओ (परिस्थापितः)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठविओ, संठाविओ (संस्थापितः) नराओ, नाराओ (नाराचः)
पययं, पाययं (प्राकृतम्) बलया, बलाया (बलाका)
तलवेण्टं, तालवेण्टं, तलवोण्टं तालवोण्टं } (तालवृन्तम्) कुमरो, कुमारो (कुमारः)
खइरं, खाइरं (खादिरम्)
हलिओ, हालिओ (हालिकः)

नियम ९९ (घञ् वृद्धेर्वा १।६८) घञ् प्रत्यय से वृद्धि होकर आकार बना है उसके पहले आ को अ विकल्प से होता है।

आ>अ—पवहो, पवाहो (प्रवाहः)। पयरो, पयारो (प्रकारः, प्रचारः)
पहरो, पहारो (प्रहारः) पत्थवो, पत्थावो (प्रस्तावः)

नियम १०० (मांसादिष्वनुस्वारे १।७०) मांस आदि शब्दों के आदि आ को अ हो जाता है।

आ>अ—मंसं (मांसम्) कंसिओ (कांसिकः)
पंसू (पांसुः) वंसिओ (वांशिकः)
पंसणो (पांसनः) पंडवो (पाण्डवः)
कंसं (कांस्यम्) संसिद्धिओ (सांसिद्धिकः)
संजत्तिओ (सांयन्त्रिकः)

नियम १०१ (महाराष्ट्रे १।६९) महाराष्ट्र शब्द में आदि आ को अ होता है।

आ>अ—मरहट्ठं, मरहट्ठो।

नियम १०२ (श्यामाके मः १।७१) श्यामाक शब्द में मा के आ को अ होता है।

आ>अ—सामओ।

नियम १०३ (इः सदादौ वा १।७२) सदा आदि शब्दों के आ को इकार विकल्प से होता है।

आ>इ—सइ, सया (सदा) निसिअरो, निसाअरो (निशाचरः) कुप्पिसो, कुप्पासो (कूर्पासः)

नियम १०४ (आचार्येचोच्च १।७३) आचार्य शब्द में चा के आ को इ और अ होता है।

आ>इ, अ—आइरिओ, आयरिओ (आचार्यः)

नियम १०५ (ईः स्त्यान-खल्वाटे १।७४) स्त्यान और खल्वाट शब्दों के आ को इ हो जाता है।

आ>इ—ठीणं, थीणं, थिण्णं (स्त्यानम्) खल्लीडो (खल्वाटः)।

नियम १०६ (उः सास्ना—स्तावके १।७५) सास्ना और स्तावक शब्दों के आदि आ को उ हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ 7 उ—सुण्हा (सास्ना) थुवओ (स्तावकः)

नियम १०७ (ऊद्वासारे १।७६) आसार शब्द के आदि आ को ऊ विकल्प से होता है। ऊसारो, आसारो (आसारः)

नियम १०८ [आर्यायां र्यः श्वश्र्वाम् १।७७] आर्या शब्द श्वश्रु के अर्थ में हो तो र्या के आ को ऊ होता है।

आ 7 ऊ—अज्जू (आर्या) सास

नियम १०९ [एद् ग्राह्ये १।७८] ग्राह्य शब्द के आ को ए होता है।

आ 7 ए—गेज्झं (ग्राह्यम्)

नियम ११० [द्वारे वा १।७९] द्वार शब्द के आ को ए विकल्प से होता है।

आ 7 ए—देरं। पक्षे दुआरं, दारं, वारं।

नियम १११ [पारापते रो वा १।८०] पारापत शब्द के रा के आ को एकार विकल्प से होता है।

आ 7 ए—पारेवओ, पारावओ (पारापतः)

(मात्रटि वा १।८१) मात्रट् प्रत्यय के आ को ए विकल्प से होता

आ 7 ए—एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं (इयन्मात्रम्)

नियम ११२ [उदोद्वार्द्रे १।८२] आर्द्र शब्द के आ को उ और ओ विकल्प से होता है।

आ 7 उ, ओ—उल्लं, ओल्लं, अल्लं, अद्दं (आर्द्रम्)।

नियम ११३ [ओदाल्यां पङ्क्तौ १।८३] आली शब्द पंक्ति अर्थ में हो तो उसके आ को ओ होता है।

आ 7 ओ—ओलो (आली) पंक्ति।

प्रयोग वाक्य

मट्टिआए घडो सव्वदेसम्मि मिलइ। तुज्झ गिहे कयलाइं संति न वा? सा करगेण नीरं पिबइ, भिंगम्मि वारि सीयलं ठाअइ। सुवण्णआरो (स्वर्णकार) वि करंडीए सलिलं पासे रक्खइ। जणा विवाहे कोडिआण पओगं करेंति। सीयकाले पुरिसा कलसस्स वारि पिबंति। साहूण पासे कुउआ संति। कंसे दुद्धं अत्थि। किं गग्गरीए ठिअं दहिं खट्टं (खट्टा) न भवइ। जयंती कुल्लडेण घडस्स नीरं निक्कसइ (निकालती है)। सो कायकंसं नीरेण बले (एव) सोहइ (शुद्धि करता है)। अहं चिरिक्काए पाणिअं न इच्छामि।

धातु प्रयोग

उत्तिण्णं सुणिऊण ललिया उक्कुद्दइ। अविणीयो सीसो गुरुकज्जकरणकाले अवसीअइ। अहं भोयणे संजमामि। तुमं किं निसाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचसयसिलोगा सरसि ? अणिलो अणेगहुत्तं पत्तं भज्जइ । साहुणी पत्ताइं सम्मं लिप्पइ । सा कहं आयरियं पडिकूलइ ? मज्झ पासे सो पढिउं पइदिणं उवेइ । तित्थअरस्स जम्मदिवसे सव्वे पाणा पमुच्चिहिंति । कालसोअरियो पइदिणं पंचसयमहिसा हिंसइ ।

अव्यय प्रयोग

नमो सिद्धाणं । सुसमाहियिंदियाणं इहेव मोक्खो । तेणं कालेणं तुज्झ जंपगं सुट्ठु आसि । तुमए एअं कज्जं न काअव्वं । पक्खिणो उड्डिंति तेण तत्थ तडागं अत्थि । तडागं जेण पक्खिणो उड्डिंति । भमररुअं जेण कमलवणं । कमलवणं तेण भमररुअं ।

प्राकृत में अनुवाद करो

घडे का ठंडा पानी ग्रीष्म ऋतु में गर्मी मिटाता है । वह लोटा लेकर शौच के लिए गांव के बाहर जाता है । गिलास पानी पीने के लिए होती है । साधु तुम्बीपात्र में पानी लाते हैं । कुलडी में किसका साग है ? मटके में कितना पानी है ? झारी सोहन के पास नहीं है । कुंडी का पानी पक्षी पीते हैं । तुम्हारे पास सकोरे कितने हैं ? काच की गिलास में पानी किसने रखा है ? दही रखने का मिट्टी का पात्र तुम भी लाओ । तांबे का घडा किसके पास से लाए हो ? आजकल मशक का पानी लोग पीना नहीं चाहते ।

धातु का प्रयोग करो

भारत की विजय सुन वह उछलने लगा । गर्मी में पदयात्रा से वह खिन्न हो जाता है । साधु प्रत्येक कार्य संयम से करता है । मैं प्रतिदिन तुम्हारा स्मरण करता हूं । अर्जुनमाली प्रतिदिन सात व्यक्तियों को मारता था । शैक्ष साधु ने अपने पात्र को तोड दिया । वह सरकार से प्रतिकूल आचरण करता है । आज दस कैदी मुक्त हुए । वह प्रतिदिन पात्र के लेप करता है । संभव है कुछ दिनों में उत्तीर्ण हो जाए । बच्चा अपनी माता के पास जाता है ।

अव्यय का प्रयोग करो

लोक के सब साधुओं को नमस्कार है । उसके प्रश्न के लिए तुम्हारा उत्तर ठीक था । तुम आज यहीं ठहरो क्योंकि तुम्हारा भाई आने वाला है । इस प्रकार का व्यवहार तुम्हें शोभा नहीं देता । भ्रमर की आवाज है इसलिए कमल वन है । कमलवन है इसलिए भ्रमर की आवाज है ।

प्रश्न

१. अ को इस पाठ में क्या आदेश हुए हैं । दोनों पाठों में अ को क्या क्या आदेश हुए हैं । प्रत्येक आदेश के एक-एक शब्द बताओ ?

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

२. हलिओ, पयरो, मंसं, मरहट्ठं, निसिअरो, थीणं देरं, पारेवओ, ओली—इन शब्दों में किस नियम से क्या आदेश हुआ है ?

३. घडा, लोटा, गिलास, तुम्बीपात्र, मटका, सकोरा, मशक, कुलडी, झारी, दही रखने का मिट्टी का पात्र, तांबे का घडा—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द क्या-क्या हैं।

४. उक्कुद्द, भज्ज, अवसीअ, लिप्प, संजम, पमुच्च पडिकूल और सर धातुओं के अर्थ बताओ ?

५. इहेव, सुट्ठु, नमो, एव, तेण, जेण—इन अव्ययों का अर्थ बताते हुए अपने वाक्य में प्रयोग करो ?

६. राजन् शब्द के रूप बताओ ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७

स्वरादेश (४)

इ को आदेश

शब्द संग्रह (जैनपारिभाषिक १)

सर्वज्ञ—सव्वण्णू	वीतराग—वीयराओ, वीयरागो,
साधु,श्रमण—समणो, साहू	साध्वी—समणी,
आचार्य—आयरिओ	श्रावक—सावगो, समणोवासगो
श्राविका—साविया	कर्म—कम्म
राग—रागो	द्वेष—दोसो
मृत्यु—मच्चु	आत्मा—अप्पा
चतुर्मास—चाउमासो	संथारा—अणसणं

धातु संग्रह

उवास—उपासना करना	जुंज—जोडना, संयुक्त करना
सोह—शुद्ध करना, सोधना	हण—मारना
मन्न—मानना, स्वीकारना	पवस—प्रवास करना
ओप्प—पालिश करना, चमक देना	उवचिट्ठ—सेवा में उपस्थित रहना
विक्के—बेचना, विक्रय करना	पील, पीड—पीडना, पीलना

अव्यय संग्रह

मा (मा) नहीं, मत,	तओ, तत्तो (ततः) उससे, उसके बाद
मुआ, मुसं, मूसा, मोसा (मृषा)	मिथ्या, झूठ, असत्य
हु, खु, खो (खलु) निश्चय	मुहा—व्यर्थ

अस धातु के रूप याद करो। देखो—परिशिष्ट २ संख्या ३,

स्वरादेश

इ को ए, अ, ई, उ, ओ आदेश—

नियम ११४ [इत एद् वा १।८५] इकार से परे संयोग हो तो इकार को एकार विकल्प से होता है।

इ / ए—पेण्डं, पिण्डं (पिण्डम्)	धम्मेल्लं, धम्मिल्लं (धम्मिल्लम्)
वेल्लं, बिल्लं (विल्वम्)	सेन्दूरं, सिन्दूरं (सिन्दूरम्)
वेण्हू, विण्हू (विष्णुः)	पेट्ठं, पिट्ठं (पिष्टम्)

नियम ११५ [किंशुके वा १।८६] किंशुक शब्द के इकार को एकार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकल्प से होता है। केसुअं, किंसुअं (किंशुकम्)

नियम ११६ [मिरायाम् १।८७] मिरा शब्द के इकार को एकार होता है।

इ 7 ए—मेरा (मिरा)

नियम ११७ [पथि पृथिवी प्रतिश्रुन्मूषिक हरिद्राबिभीतकेष्वत् १।८८] पथिन्, पृथिवी, प्रतिश्रुत्, मूषिक, हरिद्रा और बिभीतक—इन शब्दों के आदि इकार को अकार होता है।

इ 7 अ—पहो (पन्थाः), पुहई, पुढवी (पृथिवी), पडंसुआ (प्रतिश्रुत्) मूसओ (मूषिकः) हलद्दा (हरिद्रा), बहेडओ (बिभीतकः)

नियम ११८ [शिथिलेङ्गुदे वा १।८९] शिथिल और इङ्गुद शब्द के आदि इकार को अकार विकल्प से होता है।

इ 7 अ—सढिलं सिढिलं (शिथिलम्)। अङ्गुअं, इङ्गुअं (इङ्गुदम्)

नियम ११९ [तित्तिरौ रः १।९०] तित्तिरि शब्द में रि के इकार को अकार होता है।

इ 7 अ—तित्तिरो (तित्तिरिः)

नियम १२० [इतौ तो वाक्यादौ १।९१] वाक्य के आदि में इति शब्द के ति के इकार को अकार हो जाता है। इअ जम्पिआवसाणे

नियम १२१ (ई जिह्वा सिंह त्रिंशद् विंशतौ त्या १।९२] जिह्वा और सिंह शब्द के इकार तथा त्रिंशद् और विंशति के ति को ईकार होता है। जीहो (जिह्वा) सीहो (सिंहः) तीसा (त्रिंशत्)। वीसा (विंशतिः)

नियम १२२ [लुंकि निरः १।९३] निर् उपसर्ग के र् का लोप होने के बाद नि के इकार को ईकार हो जाता है।

इ 7 ई—नीसरइ (निःसरति) नीसासो (निःश्वासः)

नियम १२३ (द्विन्योरुत् १।९४] द्विशब्द और नि उपसर्ग के इकार को उकार होता है।

इ 7 उ—दुविहो (द्विविधः) णुमज्जइ (निमज्जति)

नियम १२४ [प्रवासीक्षौ १।९५] प्रवासिन् और इक्षु शब्द के इकार को उकार होता है। पावासुओ (प्रवासी) उच्छू (इक्षुः)

नियम १२५ [युधिष्ठिरे वा १।९६] युधिष्ठर शब्द के इकार को उकार विकल्प से होता है।

इ 7 उ—जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो (युधिष्ठरः)

नियम १२६ [ओच्च द्विधा कृगः १।९७] द्विधा शब्द के साथ कृन् धातु का प्रयोग हो तो द्विधा के इकार को ओकार और उकार हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इ 7 **ओ, उ**—दोहा किज्जइ, दुहा किज्जइ (द्विधा क्रियते)। दोहा कअं, दुहा कअं (द्विधा कृतम्)।

नियम १२७ [वा निर्झरे ना १।९८] निर्झर शब्द में नि को ओ विकल्प से हो जाता है।

नि 7 **ओ**—ओज्झरो, निज्झरो, (निर्झरः)

प्रयोग वाक्य

अमुम्मि समये सव्वण्णू को अत्थि? वीयराओ पावं ण करेइ। सावगो समणं उवासइ। साविया समाहिमच्चुं अहिलसइ। दोसस्स चयो कढिणो परं रागस्स य अइकढिणो विज्जइ। रागो सुवण्णस्स संखला अत्थि। कम्मस्स बंधणं अफलं न भवइ। समणस्स महावीरस्स सासणे समणीण मुक्खा चंदणबाला आसि। आणंदो पढमो सावगो दस मुक्खसावगेसु अहेसि। अणासत्त भावेण कम्मस्स बंधणं सिढिलं भवइ। आयरियं अन्तरेण संपइ गणस्स आणाणिद्देसअरो को वि नत्थि। वीयरागो अम्हाणं आयंसो विज्जइ। अस्स वरिसस्स तुज्झ चाउमासो कत्थ अत्थि? वट्टमाणकाले अम्हाण गामे अणसणं चलइ।

धातु प्रयोग

तवस्सी तवेण अप्पाणं सोहइ। अज्ज मए पुण्णदिवहो उवासिओ, किं भवंतो मन्नइ जं अप्पा परभवं न गच्छइ। गोकुलो भायराणं हियं जुंजइ। सो मूढो मुहा मच्छिअं हणइ। मज्झ पिआ पंचवरिसपेरंतो तत्थ पवसिहिइ। चम्मआरो कमणियं (जूता) ओप्पइ। मोहणो पइदिणं साहुणो उवचिट्ठइ। कसणो पोत्थाइं विक्केइ। किसाणो खेत्ते इक्खुं पीलइ।

अव्यय प्रयोग

जो मुसावायं जंपइ तस्स वीसासो न हवइ। तस्स गिहे तेण सद्धिं मा गच्छ। सो आयरियं वंदइ तओ सामाइयं करेइ। सो तत्थ मुहा गच्छइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

सर्वज्ञ शब्द का अर्थ है सबको जानने वाला। वीतराग किसी के प्रति राग नहीं करते। इस गांव में साधुओं का चतुर्मास है। साध्वियां धर्म के प्रचार के लिए दूर तक जाती हैं। तेरापंथ में एक आचार्य होते हैं। श्रावक प्रतिदिन सामायिक करता है। श्राविका चतुर्मास में तपस्या अधिक करती है। कर्म का फल मिलता है, कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता। द्वेष करना किसी की दृष्टि में अच्छा नहीं है। राग के कारण संसार में ममत्व बढता है। मृत्यु को देखकर मनुष्य में धर्म भावना बढती है। जैन लोग संथारा-युक्त मृत्यु चाहते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु का प्रयोग करो

हम लोग गुरु की उपासना करते हैं। सुनार सोने को शुद्ध करता है। मैं मानता हूं आप होशियार हैं। सरोज लकडी पर पालिश करती है। मुलतान कपडा बेचता है। विमला पात्रों को जोडती है। वह दिन में मक्खी मारता है। तुम कितने समय से यहां प्रवास करते हो ? धनंजय गुरु की सेवा में उपस्थित रहता है। लोकेश चलाकर किसी को पीडा नहीं देता है।

अव्यय का प्रयोग करो

तुम यहां मत रहो। झूठ का फल अंततः बुरा होता है। व्यर्थ में किसी के साथ विवाद मत करो। उसने पुस्तक पढी, उसके बाद कभी गलती नहीं की। वह व्यर्थ ही दूसरों की निंदा करता है।

प्रश्न

१. विस्स, उभय, अण्ण, कयर, अवर, इयर आदि शब्दों के रूप बताओ।
२. इ को क्या-क्या आदेश होता है ? प्रत्येक आदेश के एक-एक उदाहरण बताओ।
३. पुहई, मूसओ, वीसा, दुविहो, सढिलं, पावासुओ, जहुट्ठिलो शब्दों में किस नियम से क्या हुआ है ?
४. द्वेष, सर्वज्ञ, श्रावक, मृत्यु, संथारा, श्राविका और आत्मा के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।
५. जुंज, उव्वास, ओप्प, विक्के, पवस, सोह और पील धातु के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
६. तत्तो, मुहा, मुसा, अव्ययों को वाक्य में प्रयोग करो।
७. अवसामिआ, पिट्ठगो, अब्भूसो, कुच्चिआ, महुसीसो, हेमी, भिगो, कुल्लडं, चिरिक्का शब्दों का हिन्दी में अर्थ बताओ और प्राकृत में वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (५)

ईकार को अ आ, इ, उ, ऊ, ए,

शब्द संग्रह (जैनपारिभाषिकर)

पुण्य—पुण्णं	पाप—पावो, अणो
प्रमाद—पमायो, पमत्तो	आसक्ति—आसत्ती
ध्यान—झाणं	समाधि—समाही (पुं)
तप—तवो, तवं ।	स्वाध्याय—सज्झायो
अपध्यान—अवज्झाणं	मन—मणं, मणो

धातु संग्रह

करिस—खींचना	फल—फलना
चिंत—चिन्ता करना	वीसर—विस्मरण करना, भूलना
संहर—संहार करना	खण—खोदना
पाव—प्राप्त करना	वक्खाण—व्याख्यान करना

अव्यय संग्रह

इइ, इअ, त्ति (इति) समाप्ति सूचक

कत्तो, कुत्तो, कुओ, कओ (कुतः) क्यों, कहां से, किस ओर से

सव्वत्तो, सव्वतो, सव्वओ (सर्वतः) सब प्रकार से, चारों ओर से

गो और नौ शब्द के रूप याद करो देखो—परिशिष्ट १ संख्या २८, २९

ई को अ, आ, इ, उ, ऊ, ए आदेश—

नियम १२८ [हरीतक्यामीतोत् १।९९] हरीतकी शब्द के आदि ई को अ होता है।

ई > अ—हरडई (हरीतकी)

नियम १२९ [आत्कश्मीरे १।१००] कश्मीर शब्द में ई को आ होता है।

ई > आ—कम्हारो (कश्मीरः)

नियम १३० [पानीयादिष्वित् १।१०१] पानीय आदि शब्दों के ईकार को इ होता है।

ई > इ—पाणिअं (पानीयम्)   गहिरं (गभीरम्)

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अलिअं (अलीकम्) उवणिअं (उपनीतम्)
जिअइ (जीवति) आणिअं (आनीतम्)
जिअउ (जीवतु) पलिविअं (प्रदीपितम्)
विलिअं (व्रीडितम्) ओसिअन्तं (अवसीदत्)
करिसो (करीषः) पसिअ (प्रसीद)
सिरिसो (शिरीषः) गहिअं (गृहीतम्)
दुइअं (द्वितीयम्) वम्मिओ (वल्मीकः)
तइअं (तृतीयम्) तयाणिं (तदानीम्)

नियम १३१ (उर्जीर्णे १।१०२) जीर्ण शब्द के ई को उ होता है।
ई 7 उ—जुण्णं (जीर्णम्)। कहीं पर नहीं होता—जिण्णं (जीर्णम्)।

नियम १३२ [ऊर्हीनविहीने वा १।१०३] हीन और विहीन शब्दों के ई को उ विकल्प से होता है।
ई 7 उ—हूणो, हीणो (हीनः) विहूणो, विहीणो (विहीनः)

नियम १३३ (तीर्थे हे १।१०४) तीर्थ शब्द के ईकार को उकार होता है, ईकार से परे ह हो तो।
ई 7 उ—तूहं (तीर्थम्) अन्यत्र तित्थं।

नियम १३४ (एत्पीयूषापीड बिभीतक कीदृशेदृशे १।१०५) पीयूष, आपीड, बिभीतक, कीदृश, ईदृश शब्दों के ईकार को एकार होता है।
ई 7 ए—पेऊसं (पीयूषम्) आमेलो (आपीडः) बहेडओ (बिभीतकः) केरिसो (कीदृशः) एरिसो (ईदृशः)

नियम १३५ (नीड पीठे वा १।१०६) नीड और पीठ शब्द के ईकार को एकार विकल्प से होता है।
ई 7 ए—नेडं, नीडं (नीडम्) पेढं, पीढं (पीठम्)

वाक्य प्रयोग

आसत्तीए कम्मस्स बंधणं सघणं होइ। समाहीअ को उवाओ? आसत्तो पत्तेयकज्जम्मि आसत्तिजुत्तो भवइ। पइक्खणं अप्पमायो भविअव्वो। पमायो पावं करिसइ। सुहजोगेण सह पुण्णं हवइ। पुण्णस्स फलं लोगा अहिलसंति। मणुसा पावं करेंति परं तस्स फलं नेच्छंति। पमायो सव्वतो महो अणो अत्थि। झाणेण अहियो कम्मक्खयो भवइ। सरीरसत्तीए अणुसारेण तवं काअव्वं। सज्झायो साहूणं आभूसणं अत्थि। मणं पवणवेगाओ अहियं गइमंतं अत्थि। अवज्झाणेण जम्ममरणं वड्ढइ। अहं समाहिमच्चं अहिलसामि।

धातु प्रयोग

अयं रुक्खो गिम्हकाले फलइ। तुमए सह जं किमवि जाअं तं वीसर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कज्जकरणस्स पुव्वं जो चिंतइ सो अवसाणे न विसीअइ। सा पुहविं खणइ। आयरिओ धम्मसहाए पइदिणं वक्खाणइ। जो धम्मं करेइ सो फलं पावेइ। आयंकवाई मोरउल्ला नरा संहरइ।

अव्यय प्रयोग

किं तुमं जाणसि ? अप्पा कुओ आगओ ? पमत्तस्स सव्वओ भय अत्थि। अहं कओ आगओ त्ति हं न जाणामि।

प्राकृत में अनुवाद करो

धन से न धर्म होता है और न पुण्य होता है। किसी को दुःख देना पाप है। भोजन और वस्त्रों में आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। प्रेक्षाध्यान ध्यान की आज तक की अंतिम पद्धति है। समाधि पूर्वक जीवन जीना चाहिए। स्वाध्याय तप का ही एक भेद है। जैन धर्म में तप की परंपरा आज तक चलती है। मन घोड़ा है। यह पवन वेग से भी तेज दौड़ता है। अपध्यान से कर्म का बंधन होता है।

धातु का प्रयोग करो

विनय से विद्या फल देती है। जो अधिक चिंतन करता है वह कार्य कम करता है। अपने द्वारा किए गए उपकार को भूल जाओ। तुम्हारा स्नेह मुझे खींचता है। क्या शिव सृष्टि का संहार करता है ? वह कठोर श्रम से पर्वत को खोदता है। जो सेवा करता है वह फल पाता है। जो व्याख्यान देता है वह भूखा नहीं रहता।

अव्यय का प्रयोग करो

तुम आज कहां से आए हो ? जो परिग्रह रखता है उसे चारों ओर से भय है।

प्रश्न

१. अस धातु के सारे रूप लिखो।
२. ईकार को क्या-क्या आदेश होता है ? एक-एक उदाहरण लिखो।
३. पेढ, केरिसो, हूणो, आणिअं, विलिअं, गहिरं—ये शब्द किस नियम से बने हैं, सिद्ध करो।
४. आसक्ति, प्रमाद, स्वाध्याय, ध्यान, पाप, मन, समाधि, अपध्यान और पुण्य—इन शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।
५. खोदना, संहार करना, खींचना, फलना, प्राप्त करना, चिंता करना, विस्मरण करना और व्याख्यान देना—इन अर्थों के लिए इस पाठ में कौन-कौन-सी धातुएं हैं ?
६. सव्वत्तो, इअ और कओ—इन अव्ययों का वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (६)

उकार को अ, इ, ई, ऊ, ओ आदेश

शब्द संग्रह (खाद्यवर्ग)

बडा—बडगं
पकोडी—पक्कवडिया (सं)
कचोरी—पिट्ठिया (सं)
समोसा—समोसो (सं)
बड़ी—वडी (दे०)
कुलफी—कूलपी (सं)
चाट—अवदंसो (सं)
चाय—चविया, चायं (सं)
कॉफी—कफग्घी (सं)
अचार—संहाणं
मुरब्बा—मिट्ठपागो

धातु संग्रह

रक्ख—रक्षा करना, संभालना
निमंत—निमंत्रण देना
ताल—पीटना, ताडन करना
चय—त्यागना, छोडना
विराअ—विराजमान होना
उड्डी—उडना
जागर—जागना
विचर—विचरना, घूमना
पूअ, पूज—पूजा करना
तक्ख—छिलना

अव्यय संग्रह

सह (सह)—साथ
जहासत्ति (यथाशक्ति)—यथाशक्ति
अलं (अलं)—पूर्ण, पर्याप्त
सद्धि (सार्धम्)—साथ
तहवि (तथापि)—तो भी
केणइ (केनचित्)—कोई

एग, दि, ति आदि शब्दों के रूप याद करो। देखो—परिशिष्ट १ संख्या ५२, ५३, ५४।

नियम १३६ (उतो मुकुलादिष्वत् १।१०७) मुकुल आदि शब्दों के आदि उकार को अकार होता है।

उ7अ—मउलं (मुकुलम्)
मउलो (मुकुल)
मउरं (मुकुरम्)
मउडं (मुकुटम्)
अगरुं (अगुरुम्)
गरुई (गुर्वी)
जहुट्ठिलो (युधिष्ठिरः)
सउमल्लं (सौकुमार्यम्)
गलोई (गुडूची)

नियम १३७ (वोपरौ १।१०८) उपरि शब्द के उ को अ विकल्प होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उ 7 अ—अवरिं, उवरिं (उपरि) ।

नियम १३८ (गुरौ के वा १।१०९) गुरुशब्द से स्वार्थ में क करने पर आदि उ को अ विकल्प से होता है ।

उ 7 अ—गरुओ, गुरुओ (गुरुकः)

नियम १३९ (ई भ्रुकुटौ १।११०) भ्रुकुटिशब्द के आदि उ को इ होता है । भिउडी (भ्रुकुटि)

नियम १४० (पुरुषे रोः १।१११) पुरुष शब्द के रु के उ को इ होता है ।

उ 7 इ--पुरिसो (पुरुषः)

नियम १४१ (ईः क्षुते १।११२) क्षुतशब्द के उकार को ईकार होता है ।

उ 7 इ—छीअं (क्षुतम्)

नियम १४२ (अनुत्साहोत्सन्ने त्सच्छे १।११४) उत्साह और उत्सन्न को छोडकर जिस शब्द में त्स और च्छ हों उसके आदि उ को ऊ होता है ।

उ 7 ऊ—ऊसुओ (उत्सुकः) ऊसवो (उत्सवः)
ऊसित्तो (उत्सिक्तः) ऊसरइ (उत्सरति)
ऊसुओ (उत्सुकः) ऊससइ (उच्छ्वसिति)

नियम १४३ (ऊत्सुभगमुसले वा १।११३) सुभग और मुसल शब्द के उकार को ऊकार विकल्प से होता है ।

उ 7 ऊ—सूहवो, सुहओ (सुभगः) मूसलं, मुसलं (मुसलम्)

नियम १४४ (लुंकि दुरो वा १।११५) दुर् उपसर्ग के र् का लोप होने पर उकार को ऊकार विकल्प से होता है ।

उ 7 ऊ—दूसहो, दुसहो (दुःसहः) दूहवो, दुहवो (दुर्भगः)

नियम १४५ (ओत्संयोगे १।११६) संयोग आगे होने पर पूर्व के उकार को ओकार हो जाता है ।

उ 7 ओ—तोण्डं (तुण्डम्) पोत्थओ (पुस्तकः)
मोण्डं (मुण्डम्) लोद्धओ (लुब्धकः)
पोक्खरं (पुष्करम्) मोत्था (मुस्ता)
कोट्टिमं (कुट्टिमम्) मोग्गरो (मुद्गरः)
कोण्ढो (कुण्ठः) पोग्गलं (पुद्गलम्)
कोन्तो (कुन्तः) वोक्कन्तं (व्युत्क्रान्तम्)

नियम १४६ (कुतूहले वा ह्रस्वश्च १।११७) कुतूहल शब्द के उकार को ओकार विकल्प से होता है । उसके योग में ह्रस्व विकल्प से होगा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओ उ—कोऊहलं, कुऊहलं, कोउल्लं (कुतूहलम्)

प्रयोग वाक्य

वडगं दहिणा सह साउ भवइ। पक्कवडिया उण्हा चेअ रुइअरा भवइ। चिंचाए (इमली) सह पिट्ठियाए सायो विसिट्ठो होइ। अहं समोसं न खाआमि किं य तस्स अंतराले उण्हावेसवारा (गर्ममसाला) संति। वडिं को भुंजइ? कूलपी भक्खणे सीयला परिणामे उण्हअरा हवइ। अवदंसम्मि चिंचाए पहाणत्तं (प्रधानता) विज्जइ। अज्जत्ता चायेण दुद्धस्स ट्ठाणं गहिअं। जणा कफगिंघ दक्खिणभारहे अहियं पिबंति। समये समये संहाणस्स उवओगो भवइ। महिलाउ घरे मिट्ठपागो रक्खइ।

धातु प्रयोग

सेणा देसं रक्खइ। जो आयरियभिक्खुस्स नामं समरइ तं देवो रक्खइ। जो साहुं निमंतेइ तस्स गिहे साहू भिक्खट्ठं न गच्छइ। गुरू सीसं तालेइ। पक्खिणो आयासं उड्डींति। हं पगे पुव्वं जागरामि। आयरिओ अयम्मि वरिसम्मि इअम्मि पदेसे चिअ विचरिहिइ। तित्थयरो भारहवासे न विराअइ। विउसो सव्वत्थ पूअइ। जो अबंभचेरं चयइ सो महाचाई भवइ।

अव्यय का प्रयोग

तेण सह सो गओ। तुमए सद्धिं को विज्जालये गमिहिइ? जहासत्ति तुमं दाणं देहि। सो तत्थ गओ तहपि तुमं गच्छ।

प्राकृत में अनुवाद करो

अति परिश्रम से बडा बनता है। मिठाई के साथ पकौडी भी रुचिकर लगती है। जगमोहन भोजन में चार कचोरियां खा सकता है। क्या तुम समोसे का आकार जानते हो? वडी बनाना कठिन नहीं है। लोकेश कुलफी खाना बहुत पसन्द करता है। चाट खाना जीभ का स्वाद है। चाय हर जाति के लोग पीते हैं। कॉफी का स्वाद चाय से भिन्न होता है। अचार साग के स्थान पर काम आता है। मुरब्बा औषधि में भी काम आता है।

धातु का प्रयोग करो

माता पुत्र की रक्षा करती है। पक्षी दिन में उडते हैं। केवलचंद भोजन के लिए अपने घर उसे निमंत्रण देता है। वह सुबह जल्दी क्यों नहीं जागता है? माता क्रोध से अपने पुत्र को ताडती है। वह आज से अपना सारा धन छोडता है। धनपाल प्रतिदिन भगवान की पूजा करता है।

अव्यय का प्रयोग करो

वह सम्मान के साथ धन भी मांगता है। पिता के साथ पुत्र भी यहां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आएगा। यथाशक्ति परिश्रम करना चाहिए। वह प्रतिदिन ध्यान करता है तो भी क्रोध अधिक करता है। तुम्हारे बोलने से क्या ?

प्रश्न

१. गो और नौ शब्द के रूप बताओ।
२. उकार को इस पाठ में क्या-क्या आदेश हुआ है ? प्रत्येक का एक-एक उदाहरण दो।
३. उकार को अकार और ऊकार आदेश के तीन-तीन उदाहरण दो और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।
४. रक्ख, तक्ख, उड्डी, निमंत, ताल, चय, जागर और विराअ धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हे वाक्य में प्रयोग करो।
५. आसक्त, त्यागी, तपस्वी और महर्षि के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. वडगं, पक्कवडिया, पिट्ठिया, समोसो, वडी, कुलपी, अवदंसो, चायं, कफग्घी, संहाणं, मिट्ठपागो—इन शब्दों के हिन्दी अर्थ बताओ और इन्हें वाक्य में प्रयुक्त करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश

ऊ कार को अ, इ, उ, ओ आदेश

शब्द संग्रह (गृह अवयव)

घर का भीतरी आंगन—अंतोवगडा (दे) किंवाड—कवाडं
छत—छायणं दहलीज—देहली, अंबेसी (पुं) (दे०)
खिडकी—खडक्की, वायायणं दरवाजा—दारं
बरामदा—वरंडिया (दे०) खूंटी—णागदंतो
घर का पिछला आंगन—पडोहरं छोटा दरवाजा—मूसा (दे०)
ओसारा—उवसालं अट्टारी—अट्टं
तीखी खूंटी—अलीपट्ट (दे०)
घर के बाहर की कोठरी—घरकुडी दीवाल—भित्ति

धातु संग्रह

जाय—याचना करना पवय—वाद विवाद करना
अक्खा—बोलना, कहना अवमन्न—अपमान करना
भास—भाषण करना पमय—प्रमाद करना, आलस्य करना
जूर—झुरना तिप्प—देना, रोना
पिट्ट—पीटना, मारना परितप्प—परिताप करना, दुःखी होना

अव्यय

अन्नहि (अन्यत्र)—अन्यत्र, दूसरे में तारिस (तादृश)—उसके समान
बाहिं, बाहिर (बहिः)—बाहर अभिक्खणं (अभीक्ष्णं)—बार-बार
न उणा (न पुनः)—फिर नहीं कए, कएण (कृते)—लिए, निमित्त

नियम १४७ (अदूतः सूक्ष्मे वा १।११८) सूक्ष्म शब्द के ऊकार को अकार विकल्प से होता है।

ऊ 7 अ—सण्हं, सुण्हं (सूक्ष्मम्)

नियम १४८ (दुकूले वा लश्च द्विः १।११९) दुकूल शब्द के ऊकार को अकार विकल्प से होता है। उसके संयोग में लकार द्वित्व होता है।

ऊ 7 अ—दुअल्लं, दुऊलं (दुकूलम्)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम १४९ (ई र्वोद्व्यूढ १।१२०) उद्व्यूढ शब्द के ऊकार को ईकार विकल्प से होता है ।

ऊ 7 ई—उव्वीढं, उव्वूढं (उद्व्यूढम्) ।

नियम १५० (उर्भ्रू हनूमत्कण्डूय-वातूले १।१२१) भ्रू, हनूमत्, कण्डूय और वातूल शब्दों के ऊकार को उकार होता है ।

ऊ 7 उ—भुमया (भ्रूः) । हणुमंतो (हनूमत्) । कण्डुअइ (कण्डूयति) । वाउलो (वातूलः) ।

नियम १५१ (मधूके वा १।१२२) मधूक शब्द के ऊकार को उकार विकल्प से होता है ।

ऊ 7 उ—महुअं, महूअं (मधूकम्) ।

नियम १५२ (इदेतौ नूपुरे वा १।१२३) नूपुर शब्द के ऊकार को इकार और एकार विकल्प से होता है ।

ऊ 7 इ, ए—निउरं, नेउरं, नूअरं (नूपुरम्) ।

नियम १५३ (ओत्कूष्माण्डी-तूणीर-कूर्पर-स्थूल-ताम्बूल-गुडूची-मूल्ये १।१२४) कूष्माण्डी, तूणीर, कूर्पर, स्थूल, ताम्बूल, गुडूची और मूल्य शब्दों के ऊकार को ओकार होता है ।

ऊ 7 ओ—कोहण्डी, कोहली (कूष्माण्डी) । तोणीरं (तूणीरम्) । कोप्परं (कूर्परम्) थोरं (स्थूलम्) । तम्बोलं (ताम्बूलम्) । गलोई (गुडूची) । मोल्लं (मूल्यम्) ।

नियम १५४ (स्थूणा तूणे वा १।१२५) स्थूण और तूण शब्द के ऊकार को ओ विकल्प से होता है ।

ऊ 7 ओ—थोणा, थूणा (स्थूणा) तोणं, तूणं (तूणम्)

प्रयोग वाक्य

अंतोवगडाए थीउ गीयं गाअन्ति । दारस्स कवाडं उग्घाडियं अत्थि । सो निसाए छायणे सुवइ । देहलीइ उववेसणं सुहं नत्थि । खडक्कीअ सीयलो वातो आयाइ । घरस्स केत्तिलाइं दाराइं संति । वरंडियाए बालो खेलइ । णागदंते भाउज्जाइ साडी अत्थि । भित्तीए अक्खराणि मा लिहह । मूसाए सारमेयो आयाइ । गिम्हकाले अम्हे पडोहरम्मि सुवामु । सीयकाले उवसालम्मि पंचजणा सोअंति । अट्टम्मि कवोओ चिट्ठइ । अलीपट्टम्मि कस्स वत्थाइं संति ? घरकुडीए पिआमहो वेसइ ।

धातु प्रयोग

साहुणो सव्वाइं वत्थाइं जायंति । ते मोरउल्ला पवयंति । उवज्झायो जिणपवयणं अक्खाइ । सो अप्पसन्नो भूय पए पए तं अवमन्नइ । किं तुमं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रविवारे भासिस्ससि ? जो पमायइ सो पावकम्मं बंधइ। पइविओगेण तस्स भारिया जूरइ। पई पत्तिं कहं पिट्टइ ? तुमए पुव्वं अकअं कअं संपइ कहं परितप्पइ ? सो कहं तिप्पइ ?

अव्यय प्रयोग

तुमए अत्थ न ठाअव्वं अन्तहि ठाणं दट्ठव्वं। गामओ बाहिं विज्जालयं अत्थि। तस्स कए एअं न सोहइ। इह काले अमुम्मि भूमीए तारिसो विउसो को अत्थि ? सो एगं थि अभिक्खणं दंसइ, तं पइ राओ अत्थि इअ जाणिज्जइ। जं हं पुव्वमकासी पमाएण तं न उणा करिहामि इअ मे संकप्पो।

प्राकृत में अनुवाद करो

घर के भीतर आंगन में बच्चे खेल रहे हैं। किंवाड को बंद मत करो। वह छत पर बैठकर पुस्तक क्यों पढता है ? दहलीज पर खडा मोहन किसको देख रहा है ? खिडकी से समुद्र की चंचलता का दृश्य देखो। चिंतन का दरवाजा सदा खुला रहता है। बरामदे में धूप में कौन बैठा है ? खूंटी पर अधिक वस्त्र मत रखो। छोटे दरवाजे से कुत्ता भीतर आता है। घर के पिछले आंगन में वह क्या कर रहा है ? शीतकाल में हम ओसारा में सोते हैं। घर के बाहर की कोठरी में तुम किसका स्वागत करते हो ? तुम तीखी खूंटी कहां से लाए हो ? दीवाल पर अक्षर कौन लिखता है ? अट्टारी पर कौन चढता है ?

धातु का प्रयोग करो

वह पीने के लिए पानी की याचना करता है। असत्य बात के लिए वह वाद विवाद क्यों करता है ? मैं जैसा बोलता हूं वैसा करता हूं। जो दूसरे का अपमान करता है उसका फल अच्छा नहीं होता। तुम भाषण करते हो उसमें सत्य कितना है ? एक क्षण भी प्रमाद मत करो। जो झुरता है वह कर्म का बंधन करता है। वह देवता को पितृदान देता है। दु:ख आने पर तुम क्यों रोते हो ? क्रोध में माता बच्चे को पीटती है। उसने भयंकर गलती की फिर भी परिताप नहीं करता।

अव्यय का प्रयोग करो

माता बच्चे को कहती है घर के बाहर मत जाओ। तुम्हें सेवा के लिए वहां जाना है। तुमने जो गलती की है वैसी पुनः नहीं करनी चाहिए। बार-बार खाना स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है। यह पुस्तक मैं तुम्हारे लिए लाया हूं। तुम्हारे जैसा तपस्वी मैंने नहीं देखा। निर्जरा को छोडकर यश और कीर्ति के लिए तप नहीं करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. एग, दु, ति आदि शब्दों के सभी रूप बताओ।
२. अकार को इस पाठ में क्या-क्या आदेश हुआ है ?
३. भुमया, सण्हं, दुअल्लं, महुअं, निउरं, थोरं, तोणं गलोई, मोल्लं—इन शब्दों में किस नियम से क्या आदेश हुआ है ?
४. बरामदा, देहली, घर का भीतरी आंगन, खूंटी, खिडकी, छत, कवाड, छोटा दरवाजा, ओसारा, अट्टारी, घर का पिछला आंगन, घर के बाहर की कोठरी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. देना, वाद विवाद करना, जूरना, याचना करना, परिताप करना प्रमाद करना, अपमान करना, भाषण करना—इन अर्थों में इस पाठ में कौनसी धातुएं आई हैं ?
६. अन्यत्र, बाहर, बारम्बार, उसके समान, लिए और फिर नहीं—इन अर्थों में कौन से अव्यय होते हैं ?
७. दोसो, अणसणं, समाही, आसत्ती, पक्कवडिया, कफग्घी अवदंसो—इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो और हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (८)

शब्द संग्रह (शरीर विकार)

छींक—छीअं	दांत का मैल—पिप्पिया (दे०)
जंभाई—जिंभा, जिंभिआ	आंख का मैल—दूसिआ
खुजली—खज्जू (स्त्री)	शरीर का मैल—जल्लं (दे०)
पसीना—सेओ, घम्मो	डकार—आज्झमाणं, उड्डुओ
चक्कर—भमली	हिचकी—हिक्का, मुट्ठिक्का
उच्छ्वास—ऊससिअं	थूक—थुक्को
मल—गूहं, मलं	खांसी—खासिअं, कासितं
आंसू—अंसुं (न)	अधोवायु (पादना)—वायणिसग्गो
नाक का मैल—सिंघाणं	निःश्वास—नीससिअं
कान का मैल—किट्टं	मूत्र—मुत्तं
जीभ का मैल—कुलुअं (सं)	श्लेष्म—खेलो

धातु संग्रह

समायर—आचरण करना	कप्प—उचित होना
वज्ज—वर्जन करना	चर—चबाना
संजल—जलना, आक्रोश करना	अणुतप्प—अनुताप करना
पयय—प्रयत्न करना	तच्छ—छीलना, पतला करना
परिहर—छोडना	अभिनिक्खम—संन्यास लेना, सदा के लिए घर से निकलना

अव्यय संग्रह

सुवे (श्वस्) आगामी काल	परसुवे (परश्वः) परसों
ह्यो (ह्यस्) बीता हुआ कल	उत्तरसुवे (उत्तरश्वः) परसों

ऋकार को अ, आ, इ, उ आदेश

नियम १५५ (ऋतोत् १।१२६) आदि (पहले) ऋकार को अकार होता है।

ऋ 7 अ—घयं (घृतम्) कयं (कृतम्) मओ (मृगः)
तणं (तृणम्) वसहो (वृषभः) घट्ठो (घृष्टः)

नियम १५६ (आत् कृशा-मृदुक-मृदुत्वे १।१।१२७) कृशा, मृदुक और मृदुत्व के ऋ को आ विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋ7आ—कासा, किसा (कृशा) माउक्कं, मउअं (मृदुकम्) माउक्कं, मउत्तणं (मृदुत्वम्)

नियम १५७ (इत्कृपादौ १।१२८) कृपा आदि शब्दों के ऋ को इ होता है।

ऋ7इ—किवा (कृपा) हिययं (हृदयम्) रस अर्थ में मिट्ठं (मृष्टम्)
दिट्ठं (दृष्टम्) दिट्ठी (दृष्टिः) सिट्ठं (सृष्टम्)
सिट्ठी (सृष्टिः) गिण्ठी (गृष्टिः) पिच्छी (पृथ्वी)
भिऊ (भृगुः) भिंगो (भृङ्गः) भिङ्गारो (भृङ्गारः)
सिङ्गारो (शृङ्गारः) सिआलो (शृगालः) घिणा (घृणा)
घुसिणं (घुसृणम्) विद्धकई (वृद्धकविः) समिद्धी (समृद्धिः)
इद्धी (ऋद्धिः) गिद्धी (गृद्धिः) किसो (कृशः)
किसाणू (कृशानुः) किसरा (कृसरा) किच्छं (कृच्छ्रम्)
तिप्पं (तृप्तम्)[१] किसिओ (कृषितः) निवो (नृपः)
किच्चा (कृत्या) किई (कृतिः) धिई (धृतिः)
किवो (कृपः) किविणो (कृपणः) किवाणं (कृपाणम्)
विञ्चुओ (वृश्चिकः) वित्तं (वृत्तम्) वित्ती (वृत्तिः)
हिअं (हृतम्) वाहित्तं (व्याहृतम्) बिंहिओ (बृंहितः)
विसी (वृषी) इसी (ऋषिः) विइण्हो (वितृष्णः)
छिहा (स्पृहा) सइ (सकृत्) उक्किट्ठं (उत्कृष्टम्)
निसंसो (नृशंसः)

१. **नोट**—कगटडतदपशषस॒कपामूर्ध्वंलुक् २।७७ का अपवाद है।

नियम १५८ (पृष्ठे वानुत्तरपदे १।१२९) पृष्ठ शब्द उत्तर पद में न हो तो उसके ऋ को इ विकल्प से होता है।

ऋ7अ—पिट्ठी, पट्ठी (पृष्ठम्)। पिट्ठिपरिट्ठविअं

नियम १५९ (मसृण-मृगाङ्क-मृत्यु-शृङ्ग-धृष्टे वा १।१३०) मसृण, मृगाङ्क, मृत्यु, शृङ्ग और धृष्ट शब्दों के ऋकार को इकार विकल्प से होता है।

ऋ7इ—मसिणं, मसणं (मसृणम्) मिअङ्को, मयङ्को (मृगाङ्कः) मिच्चु, मच्चु (मृत्युः) सिंगं, संगं (शृङ्गम्) धिट्ठो, धट्ठो (धृष्टः)

नियम १६० (उदृत्वादौ १।१३१) ऋतु आदि शब्दों के आदि ऋ को उ होता है।

ऋ7उ—उऊ (ऋतुः) परामुट्ठो (परामृष्टः) पुट्ठो (स्पृष्टः)
पउट्ठो (प्रवृष्टः) पुहई (पृथिवी) पउत्ती (प्रवृत्तिः)
पाउसो (प्रावृट्) पाउओ (प्रावृतः) भुई (भृतिः)
पहुडि (प्रभृतिः) पाहुडं (प्राभृतम्) परहुओ (परभृतः)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निहुअं (निभृतम्)	निउअं (निवृतम्)	विउअं (विवृतम्)
संवुअं (संवृतम्)	वुत्तन्तो (वृत्तान्तः)	निव्वुअं (निर्वृतम्)
निव्वुई (निर्वृतिः)	वुन्दं (वृन्दम्)	वुन्दावणो (वृन्दावनः)
वुड्ढो (वृद्धः)	वुड्ढी (वृद्धिः)	उसहो (ऋषभः)
मुणालं (मृणालम्)	उज्जू (ऋजुः)	जामाउओ (जामातृकः)
माउओ (मातृकः)	माउआ (मातृका)	भाउओ (भ्रातृकः)
पिउओ (पितृकः)	पुहुवी (पृथ्वी)	

प्रयोग वाक्य

एगं छीअं सुहं न हवइ। परियासियथुक्कस्स ओसहिरूवेण पओगो होइ। उड्डुओ भोयणस्स पुण्णस्स सूअगो (सूचकः) अत्थि। जिंभिआ णिद्दाए पुव्वं आयाइ। सेओ गिम्हकाले बहुं आयाइ। को वि मं समरइ अस्स सूअआ हिक्का अत्थि। सो खज्जुं करेइ। खेलो अपक्कवीरियरूवो अत्थि। वायणिसग्गस्स झुणिं (ध्वनि) सुणिऊण बाला हसंति। उससिएण सुद्धवाऊ अंतो पविसइ। नीससिएण असुद्धवाऊ बाहिं णिक्कसेइ। अप्पसत्तीए भमली आयाइ। मुत्तावरोहो भयंकरो भवइ। तस्स सरीरे जल्लं नत्थि। चिइच्छओ गूहं परिक्खिऊण रोगस्स नाणं करेइ। तस्स अंसूइं कहं पडंति? वेज्जो कुलुअं पासिऊण कहइ तुमं लुक्को सि। गरिमा अंगुलीए णासाइ सिंघाणं णिक्कसइ। तुमं दंतपिट्टएण पिप्पियं णासइ। कयाइ किट्टस्सावि आवस्सगत्तणं विज्जइ। नेत्तोसहीए दूसिआ दूरं गच्छइ।

धातु प्रयोग

सावगो पइदिणं सामाइयं समायरइ। नो कप्पइ निग्गंथाण गिहिभायणम्मि भोयणं भुंजित्तए। सो पुण्णं दिवहं चरइ। अहं न जाणामि जं तुमं कहं अणुतप्पसि? पिआ पययइ जं तस्स पुत्तो परिक्खाए पढमो भवे। नलिणो कल्लं अभिनिक्खमिहिइ। अज्ज सो सव्वं खाइमं परिहरइ। सो कोहेण संजलइ। आयरिओ सीसं वज्जइ जं अज्ज तुमए तत्थ न गंतव्वं। तक्खो कट्ठं तच्छइ। बालो रोट्टगं चरइ।

अव्यय प्रयोग

अहं सुवे तुमए सह नयरं गमिहिमि।

तेण किं कहिअं य्हो? सव्वे सावगा परसुवे उत्तरसुवे वा उववासं करिहिंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम्हें छींक क्यों आती है? अजीर्ण में खट्टी (खट्टं) डकार आती है। उसके सोने का समय आ गया है, क्योंकि वह जंभाई लेता है। तुम्हें हिचकी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आती है, कौन याद कर रहा है ? खुजली में खट्टे पदार्थ मत खाओ। वह यहां क्यों थूकता है ? शीतकाल में कफ अधिक आता है। उसने दही खाया है, इसलिए खांसता है। पसीने के द्वारा शरीर का विकार बाहर निकलता है। अधोवायु निकलने से मन शांत होता है। तीर्थकरों के उच्छ्वास में सुगंध आती है। कल उसको उच्छ्वास आया पर निःश्वास नहीं आया। प्रतिदिन जीभ का मैल हाथ से साफ करो। तुम बार-बार नाक का मैल निकालते हो। कान का मैल समय पर नहीं मिलता है। आंख का मैल सफेद रंग (सित) का होता है। दांत का मैल उपवास से बढता है। पानी से शरीर का मैल उतरता है। मल का बाहर आना स्वास्थ्य का लक्षण है। वह पानी कम पीता है, इसलिए मूत्र पूरा नहीं आता। दुःख की बात में उसके आंसू पडने लगे।

धातु का प्रयोग करो

गाय घास को चबाती है। जिस समय मनुष्य धर्म का आचरण करता है वह समय उसका मूल्यवान् है। साधु को कच्चे फल लेना कल्पता (उचित) नहीं है। आचार्य शिष्य को कच्चे फल के स्पर्श का निषेध (वर्जन) करते हैं। जो बिना विचारे काम करता है, वह पीछे अनुताप करता है। बिना प्रयोजन वह क्यों जलता है ? वह धनवान बनने के लिए प्रयत्न करता है। प्रचुर धन को छोडकर नीलेश संन्यास लेता है। तुम अविवेकी गुरु को क्यों नहीं छोडते हो ? जो कर्म को पतला करता है वह बंधन से मुक्त होता है।

अव्यय का प्रयोग करो

कल मेरा भाई यहां आएगा। परसों तुम्हारा भाग्योदय होने वाला है। आचार्य ने कल क्या घोषणा की थी ?

प्रश्न

१. ऋकार को क्या-क्या आदेश हुए हैं ? एक-एक उदाहरण दो।
२. गिण्ठी, पिच्छी, माउक्कं, तिप्पं, विञ्चुओ, पिट्ठी, सिंगं, निव्वुअं, पहुडि, घट्ठो, छिहा——इन शब्दों को नियम का उल्लेखपूर्वक्र सिद्ध करो।
३. छींक, डकार, जंभाई, हिचकी, खुजली, थूक, कफ, पसीना, शरीर का मैल, आंसू, खांसी, अधोवायु, चक्कर, उच्छ्वास, निःश्वास, जीभ का मैल, नाक का मैल, कान का मैल, आंख का मैल और दांत का मैल—— इन शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ।
४. समायर, कप्प, संजल, वज्ज, अणुतप्प, पयय, अभिनिक्खम, वच्छ, परिहर और चर धातु को एक-एक वाक्य में प्रयोग करो।
५. आजकल (बीता हुआ) कल (आगामी) और परसों के अर्थ में कौन-कौन अव्यय हैं ? एक-एक वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (६)

शब्द संग्रह (प्रसाधन सामग्री)

लिपष्टिक—ओट्ठरंजणं (सं)
नेलपालिश—णहरंजणं (सं)
स्नो—हैमं (सं)
क्रीम—सरो (सं)
इत्र—पुष्फसारो
तेल—तेल्लं, तेल
मेंहदी—मेंहदी
अंजन—अंजणो
चोटी, चूडा—छेंडो (दे०)
पुष्पमाला—आमेलिओ
पान—तंबोलं
कंघी—फणिहो (दे०), कंकसी (दे०)
दर्पण—दप्पणो, आयंसो
सिंदूर—सिंदूरो
केशों का जूडा—आमेलो
पाउडर—चुण्णअं (सं)
रूज—कवोलरंजणं

स्वेद, पसीना—सेअं
चिकना—चिक्कण (वि)
चिन्ह—चिंधं
उत्सव—महो, महं

धातु संग्रह

अभिपत्थ—प्रार्थना करना
परिच्चय—परित्याग करना
रम—खेलना
पमत्थ—मंथन करना
दह, डह—दग्ध होना
णम, नम—नमस्कार करना
परिअट्ट—घूमना
सह—सहना, सहन करना
अभिजाण—पहचानना
आइक्ख—कहना

स्वरादेश

ऋकार को उ, इ, ऊ, ओ, ए, रि, ढि आदेश—

नियम १६१ (निवृत्त-वृन्दारके वा १।१३२) निवृत्त, वृन्दारक शब्दों के ऋ को उ विकल्प से होता है।

ऋ > उ—निवुत्तं, निअत्तं (निवृत्तम्) वुन्दरया, वन्दारया (वृन्दारकाः)

नियम १६२ (वृषभे वा वा १।१३३) वृषभ शब्द के वृ को उ विकल्प से होता है।

वृ > उ—उसहो, वसहो (वृषभः)

नियम १६३ (गौणान्त्यस्य १।१३४) गौण शब्द (समस्त पदों में पूर्व पद) के अंत में होने वाले ऋकार को उकार होता है

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऋ7उ—माउमण्डलं (मातृमण्डलम्) माउहरं (मातृगृहम्)
पिहरं (पितृगृहम्) माउसिआ (मातृष्वसा)
पिउसिआ (पितृष्वसा) पिउवणं (पितृवनम्)
पिउवई (पितृपतिः)

नियम १६४ (मातुरिद् वा १।१३५) मातृ शब्द (गौण हो) तो उसके ऋकार को इकार विकल्प से होता है।

ऋ7इ—माइहरं, माउहरं (मातृगृहम्)

नियम १६५ (उदूदोन्मृषि १।१३६) मृषा शब्द के ऋ को उ, ऊ और ओ होता है।

ऋ7उ, ऊ, ओ—मुसा, मूसा, मोसा (मृषा) मुसावाओ, मूसावाओ, मोसा-वाओ (मृषावादः)

नियम १६६ (इदुतौ वृष्ट-वृष्टि-पृथङ्-मृदङ्ग-नप्तृके १।१३७) वृष्ट, वृष्टि, पृथक्, मृदङ्ग और नप्तृक शब्दों के ऋकार को इकार और उकार होता है।

ऋ7इ, उ—विट्ठो, वुट्ठो (वृष्टः)। विट्ठी, वुट्ठी (वृष्टिः) पिहं, पुहं (पृथक्) मिइंगो, मुइंगो (मृदङ्गः)। नत्तिओ, नत्तुओ (नप्तृकः)।

नियम १६७ (वा बृहस्पतौ १।१३८) बृहस्पति शब्द के ऋ को इ और उ विकल्प से होता है।

ऋ7इ, उ—बिहप्फई, बुहप्फई, बहप्फई (बृहस्पतिः)

नियम १६८ (इदेदोद्वृन्ते १।१३९) वृन्त शब्द के ऋकार को इकार, एकार और ओकार होता है।

ऋ7इ, ए, ओ—विण्टं, वेण्टं, वोण्टं (वृन्तम्)

नियम १६९ (रिः केवलस्य १।१४०) व्यंजन रहित केवल ऋ को रि होता है।

ऋ7रि—रिद्धी (ऋद्धिः)। रिच्छो (ऋक्षः)

नियम १७० (ऋणर्ज्वृषभर्त्वृषौ वा १।१४१) ऋण, ऋजु, ऋषभ, ऋतु और ऋषि शब्दो के ऋ को रि विकल्प से होता है।

ऋ7रि—रिणं, अणं (ऋणम्) रिज्जु, उज्जु (ऋजुः) रिसहो, उसहो (ऋषभः) रिऊ, उऊ (ऋतुः) रिसी, इसी (ऋषिः)।

नियम १७१ (दृशः क्विप्-टक्सकः १।१४२) क्विप्, टक् और सक् प्रत्ययान्त दृश् धातु के ऋ को रि आदेश होता है।

ऋ7रि—सरिवण्णो (सदृक्वर्णः) सरिरूवो (सदृक्रूपः) सरिसो (सदृशः) एआरिसो (एतादृशः) जारिसो (यादृशः) सरिच्छो (सदृक्षः)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम १७२ (आवृते ढिः १।१४३) आदृत शब्द के ऋ को ढि आदेश होता हैं।

ऋ > ढि—आढिओ (आदृतः)

नियम १७३ (अरिर्दृप्ते १।१४४) दृप्त शब्द के ऋ को रि आदेश होता है।

ऋ > रि—दरिओ (दृप्तः)

प्रयोग वाक्य

विमला ओट्ठरंजणेण ओट्ठा रंजइ। हैमं सितवण्णं भवइ सीयलं य देइ। पुप्फसारेण संपुण्णं ठाणं सुगंधमयं जाअं। मेंहदी थीण पिआ अत्थि। छेंडेण थीणं सिरी भवइ। मोहणो दिवहे पंच तंबोलाइं चरइ। दप्पणे (आयंसम्मि) णियवयणं फुडं दिस्सइ। जयमाला आमेलम्मि आमेलिअं लगावेइ। किं कवोल-रंजणं अग्घं (मूल्यवान्) अत्थि? पाओ (प्रायः) कुमारीओ णहरंजणं करेंति। जणा चम्मस्स लुक्खयाए (रूक्षता) सरस्स पओगं करेंति। तेलम्मि सुगंधो आयाइ अस्स किं अभिहाणं अत्थि? पूरणो नयणेसु अंजणं देइ। सुलोअणा फणिहेण केसा सारइ (संवारना)। सिंदूरो सधवाए चिंधं अत्थि। चुण्णअं सेअं रुंधइ।

धातु प्रयोग

सावगा सावियाओ य टमकोरम्मि गामम्मि आगमणस्स आयरिअं अभिपत्थंति। जो धम्मं परिच्चयइ सो दुही होइ। अहं सव्वं जाणामि तहवि तुं न जाणामि। बाला गिहे रमइ। पुरिसा पगे परिअट्टंति उज्जाणे। अहं तुमं सव्वं अभिजाणामि। देवा असुरा य समुद्दं पमत्थीअ। सीसो गुरुं नमइ। जो सहइ परा सो सुही भवइ। अणिच्चवाई एवं आइक्खइ संसारे सव्वं अणिच्चं।

प्राकृत में अनुवाद करो

होठों पर लिपष्टिक लगाना स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। स्नो से चिकना नहीं होता है। सरला इत्र का प्रयोग कभी-कभी करती है। सुमन आज मेंहदी क्यों नहीं लगाएगी? जूडा से स्त्री को प्रसन्नता होती है। रमेश भोजन के बाद प्रतिदिन पान खाता है। छोटे दर्पण में भी चेहरा साफ दिखता है। किस प्रदेश में स्त्रियां केशों का जूडा बनाती हैं? तुम रूज को किस प्रदेश से लाए हो? नेलपालिश से नखों को लाल करना व्यर्थ है। क्रीम शीतकाल में विशेष बिकता है। तेल से केश चिकने होते हैं। अंजन से आंखें ठीक रहती हैं। आज तुम पुष्पमाला किसलिए लाए हो? माता कंघी से लडकी के केश संवारती है। विधवा की ललाट में सिंदूर क्यों है? पाउडर प्रत्येक आदमी को नहीं मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय का प्रयोग करो

वह सूत्र पढने के लिए गुरु से प्रार्थना करता है। क्या तुम हेमचंद्राचार्य को जानते हो? बच्चे रात को क्यों खेलते हैं? क्या अग्नि से सर्व वस्तु जल जाती है? वह अपने पति के साथ घूमने जाती है। क्या तुम मुझे पहचानते हो? एक बार खाने के बाद उसने उस वस्तु का परित्याग कर दिया। लीला सुबह दही का मन्थन करती है। मैं गौतम स्वामी (गोयमसामि) को नमस्कार करता हूं। जो जितना (जेत्तिओ) बडा होता है उसे उतना (तेत्तिओ) अधिक सहन करना होता है। गुरु शिष्य को धर्म का रहस्य कहते हैं।

प्रश्न

१. ऋकार को इस पाठ में क्या-क्या आदेश हुआ है?
२. किस शब्द के ऋकार को उ, ऊ और ओ होता है तथा किस शब्द के ऋकार को इकार, एकार और ओकार हुआ है तथा किस नियम से?
३. पिउसिआ, सरिरूवो, रिच्छो, उसहो, पिउहरं, सरिच्छो, दरिओ—इन शब्दों की सिद्धि करो।
५. लिपष्टिक, स्नो, इत्र, मेंहदी, चूडा, पान, दर्पण, केशों का जूडा, रूज, नेलपॉलिश, क्रीम, तेल, अंजन, पुष्पमाला, कंघी, सिंदूर, पाउडर, शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. अभिपत्थ, अभिजाण, खण, परिच्चय, पमत्थ, डह, परिअट्ट धातु का क्या अर्थ है? वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३ स्वरादेश (१०)

शब्द संग्रह (व्यापार वर्ग)

बाजार—विवणि (पु. स्त्री) वणिअमग्गो
दुकान—आवणो, हट्टो, अट्टयो
व्यापार—ववहारो, वावारो, वाणिज्जं
व्यापारी—वावारी (पुं)
लेनदेन—परियाणं
खर्चा—परिव्वयो
आयात—आअअ (वि)
ऋण—उल्लं
कारखाना—कम्मसाला
व्याज—कलंतरं
ग्राहक—गाहगो
खरीदना—कयो
बेचना—विक्कओ
नगद—टंको
बेचनेवाला—विक्कइ (वि)
धन—धणं
निर्यात—णिज्जायो
वस्तु—वत्थुं
रुपया—रूवगो, रूवगं
आफिस—कज्जालयो

धातु संग्रह

खिज्ज—खिन्न होना
वरिस—वरसना
सर—सरकना
मर—मरना
अज्ज—अर्जन करना
तर—तैरना
रुव—रोना
अइ—उल्लंघन करना
पाउण—प्राप्त करना

स्वरादेश

लृ को इलि आदेश। ए को इ, ऊ आदेश। ऐ को ए, इ, अइ, अअ, ई आदेश

नियम १७४ (लृत इलिः क्लृप्त-क्लृन्ने १।१४५) क्लृप्त, क्लृन्न शब्दों के लृ को इलि आदेश होता है।

लृ 7 **इलि**—किलित्त (क्लृप्तः) किलिन्न (क्लृन्नः)

नियम १७५ (एत इद् वा वेदना-चपेटा-देवर-केसरे १।१४६) वेदना, चपेटा, देवर और केसर शब्दों के ए को इ विकल्प से होता है।

ए 7 **इ**—विअणा, वेअणा (वेदना) चविडा, चवेडा (चपेटा) दिअरो, देवरो (देवरः) किसरं, केसरं (केसरम्)

नियम १७६ (ऊः स्तेने वा १।१४७) स्तेन शब्द के ए को ऊ विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए 7 ऊ—थूणो, थेणो (स्तेनः)

नियम १७७ (ऐत एत् १।१४८) आदि के ऐकार को एकार होता है।

ऐ 7 ए—सेला (शैलाः) तेलोक्कं (त्रैलोक्यम्) एरावणो (ऐरावतः) केलासो (कैलासः) वेज्जो (वैद्यः) केढवो (कैटभः) वेहव्वं (वैधव्यम्)

नियम १७८ (इत्सैन्धव-शनैश्चरे १।१४९) सैन्धव और शनैश्चर शब्दों के ऐ को इकार होता है।

ऐ 7 इ—सिन्धवं (सैन्धवम्) सणिच्छरो (शनैश्चरः)

नियम १७९ (सैन्ये वा १।१५०) सैन्य शब्द के ऐ को इ विकल्प से होता है।

ऐ 7 इ—सिन्नं, सेन्नं (सैन्यम्)

नियम १८० (अइ दैत्यादौ च १।१५१) सैन्य शब्द और दैत्य आदि शब्दों के ऐ को अइ आदेश होता है।

ऐ 7 अइ—सइन्नं (सैन्यम्) दइच्चो (दैत्यः) दइन्नं (दैन्यम्) अइसरिअं (ऐश्वर्यम्) भइरवो (भैरवः) वइजवणो (वैजवनः) दइवअं (दैवतम्) वइआलिअं (वैतालीयः) वइएसो (वैदेशः) वइएहो (वैदेहः) वइदब्भो (वैदर्भः) वइस्साणरो (वैश्वानरः) कइअवं (कैतवम्) वइसाहो (वैशाखः) वइसालो (वैशालः) सइरं (स्वैरम्) चइत्तं (चैत्यम्)। विश्लेषे अइ न भवति चेइअं (चैत्यम्)

नियम १८१ [वैरादौ वा १।१५२] वैर आदि शब्दों के ऐ को अइ आदेश विकल्प से होता है।

ऐ 7 अइ—वइरं, वेरं (वैरम्)। कइलासो केलासो (कैलासः) कइरवं केरवं (कैरवम्) वइसवणो, वेसवणो (वैश्रवणः) वइसम्पायणो वेसम्पायणो (वैशम्पायनः) वइआलिओ, वेआलियो (वैतालिकः) वइसिअं, वेसिअं (वैशिकम्) चइत्तो, चेत्तो (चैत्रः)।

नियम १८२ [एच्च दैवे १।१५३] दैव शब्द के ऐ को ए और अइ आदेश विकल्प से होता है।

ऐ 7 ए, अइ—देव्वं, दइव्वं, दइवं (दैवम्)।

नियम १८३ [उच्चैर्नीचैस्यअः १।१५४] उच्चै और नीचै शब्दों के ऐ को अअ आदेश होता है।

ऐ—अअ—उच्चअं (उच्चैः) नीचअं (नीचैः)

नियम १८४ [ईद् धैर्ये १।१५५] धैर्य शब्द के ऐ को ईकार होता है।

ऐ—ई—धीरं (धैर्यम्)

प्रयोग वाक्य

विवणिम्मि अणेगे आवणा संति। सो हट्टत्तो निसाए विलंबेण आयाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणंजयो वावारकुसलो अत्थि। वावारी वाणिज्जेण धणं अज्जइ। जस्स वावारिणो परियाणं सुद्धं भवे सो कित्ती धणं य लभइ। अज्जत्ता जणा परिव्वयं अहियं करेंति। विजयो वत्थूइं कयट्ठं दक्खो (दक्ष) अत्थि। रामगोवालो आसा विक्कयट्ठं णयरं गओ। कम्मसालाइ केत्तिआ जणा कज्जं कुणंति। वत्थ-वावारिणो अल्लं देंति। कलंतरे तुज्झ केत्तिला रुवगा संति। भारहे सुवण्णस्स आअओ भवइ। सो वाणिज्यो निउणो (निपुण) जो गाहगा रित्तहत्था न पेसइ (भेजता है)। अमुम्मि अट्टयम्मि टंकेण परियाणं भवइ। सागविक्कई अमुम्मि गामम्मि को अत्थि? भारहवासत्तो केसिं वत्थूण णिज्जायो भवइ।

धातु प्रयोग

तुज्झवयणं सुणिऊणं सो खिज्जइ। अज्ज किं मेहो वरसइ? वीयराओ संसारसायरं तरिहिइ। एसो सप्पो किं जीवइ? संसारी पाणी पइक्खणं (प्रतिक्षण) मरइ। पंचवरिसो केलासो कहं रुवइ? सप्पो सणिअं सरइ। सो साहू णियमं जाणिऊण कहं अइइ? सो रत्तिदिवहं धणं अज्जइ। किं सुरेसो धणेण पइट्ठं (प्रतिष्ठा) पाउणइ?

प्राकृत में प्रयोग करो

इस शहर के मुख्य बाजार में सब प्रकार की वस्तुएं मिलती हैं। व्यापार से धन बढता है। मेरा भाई कपडा खरीदने शहर में गया है। तुम कपडा बेचने यहां से कब जाओगे? उसके तीन दुकाने हैं। बनिया लोग प्रायः व्यापार करते थे। सब जाति के लोग व्यापारी हो सकते हैं। उसके पास खर्च करने का धन नहीं है। तुम सौ रुपये का कितना ब्याज लेते हो? भारत बंदरों का (वाणरा) निर्यात करता है। व्यापारी सोने का आयात करते हैं। तुम आज कर्ज से मुक्त (मुत्त) हो जाओगे। जो दूसरों से ऋण लेता है उसे ब्याज देना होता है। मेरे पास नगद रुपया नहीं है। क्या तुम कारखाने में काम करना चाहते हो? आज घी बेचने वाला कहां गया है?

धातु का प्रयोग करो

वह वाद-विवाद से खिन्न हो जाता है। आज दूध की वर्षा हुई है। वह अपने विचारों से थोडा भी नहीं सरकता है। जो मरता है वह वापस नहीं आता है। जो तैरता है वह पार जाता है। माता पुत्र की मृत्यु पर रोती है। जो प्रामाणिक होता है वह नियम का उल्लंघन नहीं करता। वह यश कमाता है। नीलम पुत्र को प्राप्त करती है।

प्रश्न

१. लृ, ए और ऐ को क्या-क्या स्वर नित्य आदेश होते हैं? एक-एक उदाहरण दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. ए और ऐ को कौन से स्वर विकल्प से आदेश होते हैं ? उनके भी एक-एक उदाहरण दो ।

३. "अइ दैत्यादौ च"—यह नियम क्या कहता है ? कोई पांच उदाहरण दो।

४. बाजार, दुकान, कारखाना, व्यापार, व्यापारी, लेनदेन, खरीदना, बेचना, बेचने वाला, ऋण, नकद, आयात, निर्यात, ग्राहक, खर्च, रुपया और कारखाना—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

५. खिज्ज, वरिस, सर, तर, मर, रुव, अइ और पाउण—इन धातुओं के अर्थ बताओ और उनका वाक्य में प्रयोग करो ।

६. उवसालं, छायणं, मूसा, किट्टं, दूसिआ, भमली, आमेलो, सरो—इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो और हिन्दी में अर्थ बताओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरादेश (११)

शब्द संग्रह (विद्यालय)

विद्या—विज्जा
कालेज—महाविज्जालयो
कक्षा—कक्खा
कालांश—समयविभागो
प्रिंसिपल—पहाणसिक्खवओ
कुलपति—कुलवई (पुं)
स्नातक—ण्हाओ
उत्तीर्ण—उत्तिण्णं
प्रश्नपत्र—पण्हपत्तं
कलम—लेहणी
स्याही—मसी (स्त्री)
गुरु, अध्यापक—उवज्झायो
सिक्खवओ

विद्यालय—विज्जालय (पु. न.) पाढसाला
विश्वविद्यालय—विस्सविज्जालयो (सं)
छात्र—छत्तो, विज्जट्ठि (पुं)
वस्ता—वेट्ठणं (सं)
विभागाध्यक्ष—विभागाज्झक्खो (सं)
पुस्तक—पोत्थयं
वेतन—वेयणं
प्रश्न—पण्हो,पण्हा
छुट्टीपत्र—अवगासपत्तं
परीक्षा—परिक्खा
बोर्ड—फलगं
इन्सपेक्टर—णिरिक्खओ (सं)
उत्तर पत्र—उत्तरपत्तं

धातु संग्रह

उत्तर—उत्तर देना
अणुकर—नकल करना
मुस—चुराना
अइगच्छ—गमन करना
अंच, अच्च—पूजा करना

निक्कस—बाहर निकलना
पहुच्च—पहुंचना
अइक्कम—अतिक्रमण करना
अंगीकर—स्वीकार करना
अक्कम—आक्रमण करना

ओ को अ, ऊ, अउ, आअ आदेश

औ को ओ, उ,आ, अउ, आव आदेश

नियम १८५ (ओतोद् वान्योन्य-प्रकोष्ठातोद्य-शिरोवेदना-मनोहर-सरोरुहे क्तोश्च वः १।१५६) अन्योन्य, प्रकोष्ठ, आतोद्य, शिरोवेदना, मनोहर, सरोरुह—इन शब्दों के ओकार को अ विकल्प से होता है।

ओ 7 अ—अन्नन्नं, अन्नुन्नं (अन्योन्यं) पवट्ठो, पउट्ठो (प्रकोष्ठः) आवज्जं आउज्जं (आतोद्यं) सिरविअणा, सिरोविअणा (शिरोवेदना) मणहरं मणोहरं (मनोहरं) सररुहं, सरोरुहं (सरोरुहं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम १८६ (ऊत्सोच्छ्वासे १।१५७) सोच्छ्वास के ओ को ऊ होता है।

ओ 7 ऊ—सूसासो (सोच्छ्वासः)

नियम १८७ (गव्यउ आअः १।१५८) गो शब्द के ओ को अउ और आअ आदेश होता है।

ओ 7 अउ, आअ—गउओ, गाओ (गौः) स्त्रीलिंग में गउआ

नियम १८८ (औत ओत् १।१५९) शब्द के पहले (आदि) औकार को ओकार हो जाता है।

औ 7 ओ—कोमुई (कौमुदी) जोव्वणं (यौवनं) कोत्थुहो (कौस्तुभः) कोसंबी (कौशाम्बी) कोञ्चो (क्रौञ्चः) कोसिओ (कौशिकः)

नियम १८९ (उत्सौन्दर्यादौ १।१६०) सौन्दर्य आदि शब्दों के औ को उ होता है।

औ 7 उ—सुंदेरं, सुन्दरिअं (सौन्दर्यं) मुञ्जायणो (मौञ्जायनः) सुण्ढो (शौण्डः) सुद्धोअणी (शौद्धोदनी) दुवारिओ (दौवारिकः) सुगंधत्तणं (सौगन्ध्यं) पुलोमी (पौलोमी) सुवण्णिओ (सौर्वणिकः)

नियम १९० (कौक्षेयके वा १।१६१) कौक्षेयक शब्द के औ को उद् विकल्प से होता है।

औ 7 उ—कुच्छेअयं, कोच्छेअयं (कौक्षेयकम्)

नियम १९१ (अउः पौरादौ च १।१६२) कौक्षेयक और पौर आदि शब्दों के औ को अउ आदेश होता है।

औ 7 अउ—कउच्छेअयं (कौक्षेयकं) पउरो (पौरः) कउरवो (कौरवः) कउसलं (कौशलम्) पउरिसं [पौरुषम्] गउडो [गौडः] मउली [मौलिः] मउणं [मौनम्] सउहं [सौधम्] सउरा [सौराः] कउला [कौलाः]

नियम १९२ (आच्च गौरवे १।१६३) गौरव शब्द के औ को आ और अउ आदेश होते है।

औ 7 आ—गारवं, गउरवं [गौरवम्]

नियम १९३ (नाव्यावः १।१६४) नौ शब्द के औ को आव आदेश होता है।

औ 7 आव—नावा [नौः]

प्रयोग वाक्य

सो विज्जं पढिउं णिच्चं विज्जालयं गच्छइ। अभयो कया महाविज्जालयं पविस्सइ ? किं विभा कक्खाए पढमा भविस्सइ ? एगम्मि दिणे कक्खाइ केत्तिआ समयविभागा भवंति। विमला जेणविस्सभारइए विस्सविज्जालयस्स छत्ता अत्थि। संपइ अस्स विस्सविज्जालयस्स महाकुलवई सिरीसिरीचंदो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रामउरिआ अत्थि। तुज्झ महाविज्जालयस्स पहाणसिक्खवओ को अत्थि ? ण्हायअछत्तो विजयो अइविचक्खणो अत्थि। पण्हपत्ताइं कया पुण्णाइं भविहिंति ? उत्तरपत्ताइं को को निरिक्खिस्संति ? गुरु विज्जट्ठिणो अणुसासइ। आणंदो लेहणीए धणी अत्थि। आवणे अणेगेसु रंगेसु मसी लभइ। अज्जत्ता सत्तवरिसस्स बालअस्स पासे वेट्ठगे पोत्थयाण भारो बहू भवइ। कल्लं पाढसालाए णिरिक्खओ आगमिहिइ। अमुम्मि महाविज्जालयम्मि वागरणस्स विभागाज्झक्खो को अत्थि ? परिक्खाए भूओ छत्ताण सिरे णच्चइ। तुमं अवगासपत्तं लिह। उवज्झायेण फलगे किं लिहिअं ? अत्थि पण्हो विज्जालये छत्ताण अणुसासणस्स सव्वेसिं समक्खे।

धातु का प्रयोग

णोहा सासूए एगमवि वक्कं न सहइ तक्खणं उत्तरइ। रमेसो बालो अत्थि तहवि पाढसालाए पोत्थयं लेहणिं वा अवस्सं मुसइ। असोगो मोहणं धारइ। धणवालो पइदिणं अइगच्छइ। सुसीला गुरुं अंचइ अच्चइ वा। अग्गित्तो फुल्लिगा निक्कसंति। तुमं कल्लं वाराणसिं पहुच्चिहिसि। तुज्झ सव्वं आणं हं अंगीकरेमि। भारहो कस्स देसस्स अवरिं न अक्कमइ। गुरुणो आएसं अहं न अइक्कमामि। छत्ता परिक्खाए अणुकरेंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

हमारा विद्यालय गांव के बाहर है। कक्षा में आज अध्यापक नहीं है। विद्या के बिना सम्मान नहीं मिलता ! पुस्तक को अच्छी तरह पढो। कालेज के छात्र आज कहां गए हैं ? आज किसी ने छुट्टीपत्र नहीं दिया। वह कलम से पत्र लिखता है। इस वेतन से घर का खर्च भी नहीं चलता। परीक्षा में उत्तीर्ण होना सरल नहीं है। मेरा भाई कॉलेज में पढता है। कक्षा में बुद्धिमान् (बुद्धिमंत) लडका कौन है ? अध्यापक विद्यार्थियों को क्यों मारता है ? प्रिंसिपल का अनुशासन लडके मानते हैं। तुम कौन से कालांश में पढाते हो। मैं स्नातक की परीक्षा में उत्तीर्ण हूं। हमारे प्रश्नपत्र स्कूल से बाहर के अध्यापकों ने बनाये हैं। हमारे उत्तरपत्रों को मैं नहीं देखूंगा। विश्वविद्यालय का महत्त्व [महत्तणं] तुम नहीं जानते हो। मेरे बस्ते में तुम्हारी पुस्तकें कहां से आई ? इन्सपेक्टर ने मुझे एक प्रश्न पूछा। विभागाध्यक्ष होना सरल कार्य नहीं है। एक दिन तुम भी कुलपति बनोगे। छुट्टीपत्र के बिना स्कूल में न जाना अच्छा नहीं है। अध्यापक बोर्ड पर लिखकर अपने विषय को सरलता से समझाता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम्हारे प्रश्न का मैं उत्तर नहीं दूंगा। घडे से पानी निकलता है। वह परसों यहां पहुंचेगा। दिनेश आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता है। बच्चे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक क्यों चुराते हैं ? तुम परीक्षा में नकल क्यों करते हो ? ऋषभ गुरु की पूजा करता है। तुम अपने घर कल कब जाओगे ? पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था। पति पत्नी की सब बात स्वीकार करता है।

प्रश्न

१. इस पाठ में अउ और आउ आदेश किस स्वर को हुआ है ?

२. ओकार और औकार स्वर को आदेश होने वाले स्वरों में कहां समानता है और कहां भिन्नता है ? उदाहरण दो।

३. गउडो, मउली, पुलोमी, सुद्धोअणी, सउहं शब्द किस स्वर के आदेश से बने हैं।

४. विद्या, विद्यालय, कालेज, विश्वविद्यालय, कालांश, प्रिंसिपल, कुलपति, स्नातक, उत्तीर्ण, प्रश्नपत्र, उत्तरपत्र, छात्र, वस्ता, इन्स्पेक्टर, विभागाध्यक्ष, पुस्तक, छुट्टीपत्र, छात्र, बोर्ड, प्रश्न और परीक्षा——इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. उत्तर, निक्कस, मुस, अइगच्छ, अक्कम, पहुच्च और अइक्कम——इन धातुओं के अर्थ बताओ।

६. एक विषय से सम्बन्धित पांच वाक्य अपनी इच्छानुसार बनाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५ प्रारम्भिक सरल व्यंजन परिवर्तन

शब्द संग्रह (जलाशय वर्ग)

समुद्र—समुद्दो, सायरो
तालाब—तडाओ, तलायो, सरं
नहर—कुल्ला
निर्झर—अवज्झरो, ओज्झरो
प्याऊ—पवा
वावडी—वावी
कुंड—कुंडं
नल—णलं
नदी—नई
कुंआ—कूवो, अगडो, अवडो
छोटा कुंआ—कूविया
छोटा प्रवाह—ओग्गलो
पुष्करणी—पोक्खरिणी
टंकी—जलसंगहालयो (सं)
बांध—बंधो (सं)

धातु संग्रह

वह—बहना
अक्कोस—गाली देना
अक्खिव—फेंकना
आलिह—चित्र बनाना
अच्चीकर—प्रशंसा करना खुशामद करना
पमज्ज—साफ सुथरा करना
पमा—सत्य-सत्य ज्ञान करना
पत्थ—प्रार्थना करना
थक्क—थकना
अणुकंप—दया करना

प्रारंभिक सरल व्यंजन परिवर्तन

असंयुक्त व्यंजन या स्वर सहित व्यंजन को सरल व्यंजन कहते हैं। शब्द के आदि में होने वाले व्यंजनों में सामान्य रूप से न, य श और ष व्यंजनों में परिवर्तन होता है। कहीं-कहीं क और प व्यंजन में भी परिवर्तन मिलता है। विशेष व्यंजन (शब्द विशेष) में क को ग और च, ज को झ, त को च और ह, द को ड, ल को ण, व को भ, य को ल और त, श को छ परिवर्तन होता है।

नियम १९४ (वादौ १।२२९) शब्द के आदि में होने वाले न को ण विकल्प से होता है।

न > ण - णरो, नरो (नरः) णई, नई (नदी) णिसण्णो, निसण्णो (निषण्णः) णुमण्णो, नुमण्णो (निमग्नः)।

नियम १९५ (आदेर्यो जः १।२४५) शब्द के आदि में होने वाले य को ज हो जाता है।

य > ज—जसो (यशस्) जई (यतिः) जमो (यमः) जाई (जातिः)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(बहुलाधिकारात् सोपसर्गस्यानादेरपि १।२४५ वृत्ति)

उपसर्ग सहित पद के अनादि य को कहीं प्रारंभिक और कहीं मध्यवर्ती माना जाता है। जैसे—संजमो (संयमो) अवजसो (अपयशः)।

नियम १९६ (शषोः सः १।२६०) श और ष को स हो जाता है।

श 7 ष—सद्दो (शब्दः) सामा (श्यामा) सुद्धं (शुद्धम्) सोहइ (शोभते)

ष 7 स—सण्ढो (षण्ढः) सण्डो (षण्डः) सज्जो (षड्जः)

नियम १९७ (कुब्ज-कर्पर-कीले कः खोपुष्पे १।१८१) कुब्ज, कर्पर और कील के क को ख होता है। कुब्ज शब्द पुष्प के अर्थ में न हो तो।

क 7 ख—खुज्जो (कुब्जः) खप्परं (कर्परम्) खीलओ (कीलकः)

नियम १९८ (पाटि-परुष-परिघ-परिखा-पनस-पारिभद्रे फः १।२३२) पाटि (पट धातु णिजन्त) परुष, परिघ, परिखा, पनस, पारिभद्र शब्दों के प को फ हो जाता है।

प 7 फ—फरुसो (परुषः) फलिहो (परिघः) फलिहा (परिखा) फणसो (पनसः) फालिहद्दो (पारिभद्रः)।

नियम १९९ (मरकत-मदकले गः कन्दुके त्वादेः १।१८२) मरकत मदकल और कन्दुक के पहले क को ग होता है।

क 7 ग—मरगयं (मरकतं) मयगलो (मदकलः) गेन्दुअं (कन्दुकम्)।

नियम २०० किराते च (१।१८३) किरात शब्द के क को च होता है।

क 7 च—चिलाओ (किरातः)

नियम २०१ (जटिले जो झो वा १।१९४) जटिल शब्द के ज को झ विकल्प से होता है।

ज 7 झ—झडिलो, जडिलो (जटिलः)

नियम २०२ (तुच्छे तश्च-छौ वा १।२०४) तुच्छ शब्द के त को च और छ विकल्प से होता है।

त 7 च, छ—चुच्छं, छुच्छं (तुच्छम्)

नियम २०३ (तगर-त्रसर-तूवरे वा १।२०५) तगर, त्रसर और तूवर के त को ट होता है।

त 7 ट—टगरो (तगरः) टसरो (त्रसरः) टूवरो (तूवरः)

नियम २०४ (दशन-दष्ट-दग्ध-दोला-दण्ड-दर-दाह-दम्भ-दर्भ-कदन-दोहदे दो वा डः १।२१७) इन शब्दों के द को ड विकल्प से होता है।

द 7 ड—डसणं, दसणं (दशनम्) डट्ठो, दट्ठो (दष्टः) डड्ढो, दड्ढो (दग्धः) डोला, दोला (दोला) डण्डो, दण्डो (दण्डः) डरो, दरो (दरः) डाहो, दाहो (दाहः) डम्भो, दम्भो (दम्भः) डब्भो, दब्भो (दर्भः) डोहलो, दोहलो (दोहदः)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम २०५ (दंश-दहोः १।२१८) दंश और दह् धातु के द को ड होता है।

द 7 ड—डसइ (दशति) डहइ (दहति)

नियम २०६ (निम्ब-नापिते ल-ण्हं वा १।२३०) निम्ब के न को ल और नापित के न को ण्ह आदेश विकल्प से होता है।

न 7 ल, ण्ह—लिम्बो, निम्बो (निम्बः) ण्हाविओ, नाविओ (नापितः)।

नियम २०७ (बिसिन्यां भः १।२३८) बिसिनी के ब को भ होता है।

ब 7 भ—भिसिणी (बिसिनी)

नियम २०८ (प्रभूते वः १।२३३) प्रभूत शब्द के प को व होता है।

प 7 व—वहुत्तं (प्रभूतम्)।

नियम २०६ (मन्मथे वः १।२४२) मन्मथ शब्द के आदि म को व होता है।

म 7 व—वम्महो (मन्मथः)

नियम २१० (यष्ट्यां लः १।२४७) यष्टि शब्द के य को ल होता है।

य 7 ल—लट्ठी (यष्टिः)।

नियम २११ (युष्मदर्थपरे तः १।२४६) युष्मद् शब्द युष्मद् अर्थ में हो तो य को त हो जाता है।

य 7 त—तुम्हारिसो (युष्मादृशः) तुम्हकेरो (युष्मदीयः)।

नियम २१२ (लाहल-लाङ्गल-लाङ्गूले वादेर्णः १।२५६) लाहल, लाङ्गल, लाङ्गूल शब्दों के आदि ल को ण विकल्प से होता है।

ल 7 ण—णाहलो, लाहलो (लाहलः) णङ्गलं, लङ्गलं (लाङ्गलम्) णङ्गूलं, लङ्गूलं (लाङ्गूलम्)

नियम २१३ (ललाटे च १।२५७) ललाट शब्द के आदि ल को ण आदेश होता है।

ल 7 ण—णडालं, णिडालं (ललाटम्)।

नियम २१४ (षट्-शमी-शाव-सुधा-सप्तपर्णेष्वादेश्छः १।२६५) इन शब्दों के आदि वर्ण ष, श और स को छ आदेश होता है।

श, ष, स 7 छ—छट्ठो (षष्ठः) छप्पओ (षट्पदः) छम्मुहो (षण्मुखः) छमी (शमी) छावो (शावः) छुहा (क्षुधा) छत्तिवण्णो (सप्तपर्णः)।

नियम २१५ (शिरायां वा १।२६६) शिरा शब्द के आदि श को छ विकल्प से होता है।

श 7 छ—छिरा, सिरा (शिरा)।

वाक्य प्रयोग

समुद्दस्स नीरं महुरं नत्थि। अस्स गामस्स बाहिं नई वहइ। मेहं विणा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तलायो सुक्को जाओ। कूवस्स अस्स सलिलं अइमहुरं अत्थि। इंदिराकुल्ला इमम्मि गामम्मि कया आगमिस्सइ? मरुभूमिवासिणो किंचिवरिसपुव्वं तडाअस्स नीरं पिविंसु। गिम्हकाले ठाणे-ठाणे पवा भवइ। अवज्झरं दट्ठुं मज्झ मणो उच्छुओ अत्थि। इमम्मि णयरे पुव्वं फलिहा आसि। मज्झ गिहे कूविया नत्थि। णेण वाउलिया पूरिया। गामस्स बाहिं ओग्गलो वहइ। कुंडस्स जलं परिमिअं भवइ। मरुभूमीए णलस्स उवओगो अहियो होइ। गामे गामे जलसंगहालयो विज्जइ। बंधस्स उवओगो वि अत्थि, परं कयाइ तेणं हाणी वि भवइ।

धातु प्रयोग

कंती विमलं अक्कोसइ। सो मज्झ पोत्थयं अक्खिवइ। मोहणो सेट्ठिं अच्चीकरेइ। जयंती संमज्जणीए गिहं पमज्जइ। लोआ बालमुणिं पत्थंति आयरियस्स सेवट्ठं। अप्पेण परिस्समेण महेसो थक्कइ। साहू पाणेसुं अणुकंपइ। अहं पमामि तुमं तया अत्थ आसि। अम्हे आयरियं अच्चीकरेमु। सो महावीरं आलिहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

समुद्र अपनी सीमा (सीमा) में रहता है इसलिए लोग उस पर विश्वास करते हैं। नदी सब के हित के लिए बहती है। इस गांव में एक छोटा तालाब है। गांव के बाहर जो कुंआ है उसका पानी पीने योग्य है। हमारे शहर के चारों ओर न तो नदी है और न नहर है। तुम्हारे छोटे कुंए का पानी जल्दी सूख जाता है। हमारे क्षेत्र में अब वापी की आवश्यकता नहीं है। पुष्करिणी यहां से कितनी दूर है। प्याऊ की उपयोगिता मरूभूमि में होती है। निर्झर को देखने कौन-कौन जाएंगे? खाई को लांघना सरल कार्य नहीं है। छोटी खाई में कितना पानी है? वर्षा के अभाव में मरुभूमि के लोग कुंड का पानी पीते हैं। नल का पानी सीधा जमीन से आता है। बांध टूटने से गांव के गांव (अणेगे गामा) डूब जाते हैं। टंकी का पानी स्वच्छ किया हुआ होता है।

धातु का प्रयोग करो

तुमने उसको गाली दी इसलिए वह तुम्हारे पास नहीं आता है। राजस्थान में कितनी नदियां बहती है? बालक ने वृक्ष पर पत्थर फेंका। जो खुशामद करता है वह अपना कार्य बना लेता है। उसने वस्तुस्थिति का सही ज्ञान किया। क्या तुम पदयात्रा से थकते हो? गुरु शिष्य पर दया करता है। साधु अपने स्थान का प्रमार्जन करता है। तुम किसका चित्र बनाते हो?

प्रश्न

१. सरल व्यंजनों का प्रारम्भ में क्या परिवर्तन होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. उपसर्ग सहित सरल व्यंजन को प्रारम्भिक मानते हैं या नहीं ? उदाहरण सहित इसे स्पष्ट करो।

३. खुज्जो, चिलाओ, सामा, गेन्दुअं, टसरो, झडिलो, डब्भो, बहुत्तं, वम्महो, तुम्हकेरो—इन शब्दों को सिद्ध करो और बताओ किस नियम से किस शब्द को क्या आदेश हुआ है।

४. नहर, प्याऊ, निर्झर, समुद्र, नदी, तालाब, छोटा कुंआ, छोटी खाई, कुंड, कुंआ, खाई, बांध, नल, टंकी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

५. अक्कोस, अक्खिव, अच्चीकर, पमज्ज, पमा, थक्क, आलिह और पत्थ धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयुक्त करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (१)

शब्द संग्रह (वस्त्रवर्ग १)

वस्त्र— वत्थं, वसणं
ऊनी वस्त्र—रोमजं, ओण्णेयं
मोटा वस्त्र—पत्थीणं
धोया वस्त्र—धोअवत्थं
जोड़े हुए वस्त्र—डंडी
पेटीकोट—अंतरिज्जं
ओढनी—ओयड्ढी (दे.)
लहंगा—चलणी, चंडातकं
सलवार—सूअवरो (सं)
सूती वस्त्र—कप्पासं
रेशमी वस्त्र—कोसेयं
बूंटेदार कौसुंभ वस्त्र—घट्टंसुओ
बारीक वस्त्र—पम्हयो
कोरा वस्त्र—अणाहयवत्थं
साडी—साडी
घाघरा—घग्घरं
चोली, ब्लाउज—कंचुलिया
अण्डरवीयर, चड्डी—अद्धोरुगो अड्ढोरुगो

जनता—जणया
मूल्य—मुल्लो
सेवा—परिच्चरणा

धातु संग्रह

अणुकड्ढ—खींचना
अणुग्ग—कृपा करना
अच्छ—बैठना
परिहा—पहरना
बुक्क—भूंकना (कुत्ते का)
अणुगिल—भक्षण करना
अणुचर—सेवा करना
बंध—बांधना
बिह—पौषण करना

मध्यवर्ती व्यंजन

शब्द के मध्य में होने वाले यानी दो स्वरों के बीच में होने वाले सरल व्यंजनों का परिवर्तन मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन कहलाता है। उनके नियम इस प्रकार हैं—

नियम २१६ (क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् १।१७७) स्वर से परे अनादिभूत तथा असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व—इन व्यंजनों का प्राय लोप हो जाता है।

क 7 लोप—लोओ (लोकः) तित्थयरो (तीर्थंकरः) सयढो (शकटः)।
ग 7 लोप—नयरं (नगरम्) भइणी (भगिनी) नओ (नगः)।
च 7 लोप—कयग्गहो (कचग्रहः) वयणं (वचनम्) कायमणी (काचमणिः)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज 7 **लोप**—रययं (रजतम्) पयावई (प्रजापतिः) गओ (गजः) ।
त > **लोप**—लया (लता) विआणं (वितानम्) रसायलं (रसातलम्) ।
द 7 **लोप**—गया (गदा) मयणो (मदनः) जइ (यदि) ।
प 7 **लोप**—रिऊ (रिपुः) सुउरिसो (सुपुरुषः) ।
य 7 **लोप**—विओओ (वियोगः) वाउणा (वायुना) ।
व 7 **लोप**—लायण्णं (लावण्यम्) विउहो (विबुधः) ।

नियम २१७ (अवर्णो य श्रुतिः १।१८०) अ तथा आ से परे व्यंजन के लोप होने के बाद शेष अ या आ रहे तो उसे अ के स्थान पर य और आ के स्थान पर या हो जाता है। उसे यश्रुति कहते हैं।

अ 7 **य**—तित्थयरो, नयरं, कायमणी, रययं, पयावई, रसायलं, मयणो, गया, दयालू, लायण्णं।

नियम २१८ (नावर्णात् पः १।१७६) अवर्ण से परे अनादि प का लोप नहीं होता है।

नियम २१६ (पो वः १।२३१) स्वर से परे असंयुक्त और अनादि प को व होता है।

प 7 **व**—सवहो (शपथः) सावो (श्रापः)। उवसग्गो (उपसर्गः) पईवो (प्रदीपः) पावं (पापम्) उवमा (उपमा) ।

नियम २२० (ख-घ-थ-ध-भाम् १।१८७) स्वर से परे असंयुक्त और अनादि ख, घ, थ, ध और भ को ह हो जाता है।

ख 7 **ह**—साहा (शाखा) मुह (मुखम्) मेहला (मेखला) ।
घ 7 **ह**—मेहो (मेघः) जहणं (जघनम्) माहो (माघः) ।
थ 7 **ह**—नाहो (नाथः) आवसहो (आवसथः) मिहुणं (मिथुनम्) ।
ध 7 **ह**—साहू (साधुः) बहिरो (बधिरः) इन्दहणू (इन्द्रधनुः) ।
भ 7 **ह**—सहा (सभा) सहावो (स्वभावः) नहं (नभः) ।

नियम २२१ (टो डः १।१६५) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ट को ड होता है।

ट 7 **ड**—नडो (नटः) भडो (भटः) घडो (घटः) घडइ (घटते) ।

नियम २२२ (ठो ढः १।१६६) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ठ को ढ होता है।

ठ 7 **ढ**—मढो (मठः) सढो (शठः) पढइ (पठति) कमढो (कमठः) ।

नियम २२३ (डो लः १।२०२) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ड को ल होता है।

ड 7 **ल**—तलायं = (तडागम्) गरुलो (गरुडो) ।

नियम २२४ (नो णः १।२२८) स्वर से परे असंयुक्त अनादि न को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण होता है।

न > ण—मयणो (मदनः) वयणं (वदनम्) नयणं (नयनम्) वणं (वनम्)।

नियम २२५ (फो भ-हौ १।२३६) स्वर से परे असंयुक्त अनादि फ को भ और ह हो जाता है।

फ > भ, ह—रेभो (रेफः) सिभा (शिफा), मुत्ताहलं (मुक्ताफलम्) सभलं, सहलं (सफलम्)।

नियम २२६ (बो वः १।२३७) स्वर से परे असंयुक्त अनादि ब को व होता है। अलावू (अलाबू) सवलो (शबलः), कवरी (कबरी) सिविया (शिबिका)।

नियम २२७ (यमुना-चामुण्डा-कामुकातिमुक्तके-मोनुनासिकश्च १।१७८) यमुना, चामुण्डा, कामुक और अतिमुक्तक के म का लुक् होता है और म के स्थान पर अनुनासिक होता है।

म > अनुनासिक—जँउणा (यमुना) चँाउण्डा (चामुण्डा) काँउओ (कामुकः) अणिँउंतयं (अतिमुक्तकं)। कहीं पर नहीं भी होता—अइमुंतयं, अइमुत्तयं।

(शषो सः १।२६०) नियम १९६ के अनुसार—

श > स—निसंसो (नृशंसः) कुसो (कुशः) वंसो (वंशः) दस (दशन्) देसो (देशः)।

ष > स—निहसो (निकषः) कसाओ (कषायः)।

कभी-कभी अव्ययों के प्रारंभिक व्यंजनों के साथ मध्यवर्ती व्यंजनों की तरह व्यवहार किया जाता है।

अवि अ (अपि च) सो अ (स च) स उण (स पुनः)।

समस्त पद में द्वितीय पद के आदि व्यंजन को आदि एवं मध्यवर्ती दोनों माना जाता है—

सुहयरो, सुहकरो (सुखकरः) जलयरो, जलचरो (जलचरः)।

प्रयोग वाक्य

संसारे को वत्थाइं न परिहाइ ? ओण्णेयं संपइ मलिणं जाअं तं तुमं कया पक्खालिहिसि ? कोसेयं हिंसाजण्णं भवइ अओ अस्स उवओगो अहिंसगस्स न सोहइ। अहं पत्थीणं परिहाउं अहिलसामि। किं तुमं पइदिणं धोअवत्थं परिहासि ? डंडीए वत्थाण वयो वड्ढइ। सुसीला पत्थीणं चंडातकं परिहाइ। विमला गिहे सूअवरो वि परिहाइ। कप्पासवत्थं गिम्हकाले सत्थस्स हिअं भवइ। संपइ साहुणो घट्टंसुअं न परिहांति। गिम्हकाले पम्हयं अहिलसंति जणा। अणाहयवत्थं नव्वमवि मलिणं व्व भाइ। अंतरिज्जं अंतरेण साडी न सोहइ। महिलाओ घग्घरस्स उवरि ओयड्ढि धरइ। थीणं कंचुलिया आवस्सग वत्थं अत्थि। विमलो अद्धोरुगं परिहाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

बालो जणणीए हत्थं अणुकड्ढइ। आयरिओ सीसं अणुग्गइ जं अक्खर-बोहं देइ। साहू लुक्कसाहुं अणुचरइ। लुक्का साहुणी परिचरणट्ठं आयरियाण निवेअइ। सो पगे दुद्धं अणुगिलइ। बहिणीआ पण्हं पुच्छिउं गुरूण समीवं अच्छंति। तित्थअरस्स भासणं जणयं बंधइ। कुक्कुरो अपरिचियं जणं दट्ठूण बुक्कइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

शुद्ध वस्त्र को किसने मलिन किया? कोरे वस्त्र का रंग कैसे बदलता है (परिअट्टइ)? धोया वस्त्र रमेश को प्रिय लगता है। सूती वस्त्र शीतकाल में गर्म रहता है। साधु और साध्वी ऊनी वस्त्र रखते हैं। रेशमी वस्त्र सब लोगों के लिए सुलभ नहीं है। गांधीजी मोटा कपडा पहनते थे। स्त्रियां डंडी वस्त्र को रुचि से पहनती हैं। बूंटेदार कौसुंभ वस्त्र कौन पहनना चाहता है? बारीक वस्त्र से शरीर स्पष्ट दीखता है। धोया हुआ वस्त्र पहनने से आदमी का रूप अच्छा लगता है। मैं कोरा वस्त्र पहनना नहीं चाहता। तुम्हारी माता ने धोती (अहोवत्थं) में डंडी देकर पहनने योग्य बना दिया। तुम्हारी साडी कितने रुपयों की है? माता घाघरा ही पहनना चाहती है। तुम्हारी चाची की चोली किसने धोयी है? भाभी की ओढनी का रंग क्या है? तुम्हारी बहन अण्डरवीयर पहनती है। लहंगे का मूल्य कितने रुपए हैं? तुम यह पेटीकोट किसके लिए लाए हो?

धातु का प्रयोग करो

ललिता कुंए से पानी खींचती है। वह द्रव पदार्थ को खाता है। गुरु ने शिष्य पर कृपा की और उसे निकट वंदना करने की आज्ञा दी। जो सेवा करता है वह बहुत बडा लाभ कमाता है (अर्जन करता है)। माता बच्चे का पोषण करती है। प्रतिक्रमण में वह बैठता है और उठता है। जो अशुभ कर्म बांधता है वह भोगकाल में परिताप करता है। सुशील छुट्टीपत्र लिखकर अध्यापक से प्रार्थना करता है कि मेरी छुट्टी स्वीकार करें। कुत्ता कुत्ते को देखकर भूंकता है।

प्रश्न

१. स्वर से परे मध्यवर्ती शब्द क, ग, त, द, प आदि व्यंजन हो तो किस स्थिति में उनका लोप होता है और किस स्थिति में नहीं? तीन उदाहरण दो।
२. प का लोप कहां होता है? और कहां उसको व आदेश होता है?
३. किस शब्द के अनादि वर्ण ख को ह होता है? उदाहरण दो।
४. मध्यवर्ती व्यंजन असंयुक्त हो तो किस वर्ण को क्या आदेश होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस पाठ से एक-एक उदाहरण दो।

५. वस्त्र, ऊनी वस्त्र, सूती वस्त्र, रेशमी वस्त्र, बूंटेदार कौसुंभ वस्त्र, मोटा वस्त्र, बारीक वस्त्र, धोया वस्त्र, कोरा वस्त्र, साडी, लहंगा, पेटीकोट, घाघरा, ओढनी, चोली, सलवार, अण्डरवीयर—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द क्या है ?

६. अणुकड्ढ, अणुग्ग, अच्छ, परिहा, बुक्क, अणुगिल, अणुचर, बंध, बिह धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

७. परिव्वयो, रूवगं, परियाणं, फलगं, ण्हाओ, कुल्ला, ओग्गलो जलसंगहालयो—इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो और हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (२)

शब्द संग्रह (वस्त्र वर्ग २)

टोपी—सिरक्कं
टोप—सिरत्ताणं
दुपट्टा—उत्तरीयं, उत्तरिज्जं
चादर—पच्छयो
पेंट—अप्पईणं (सं)
पतलून—पतलूणो (सं)
वासकट—वासकडी (सं)
शेरवानी—पावारओ
रजाई—नीसारो (सं)
तकिया—उवहाणं
पगडी—उण्हीसं
धोती—अहोवत्थं, कडिवत्थं
पायजामा—पायजामो
कुर्त्ता—कंचुओ
रूमाल—पडपुत्तिया
तोलिया, अंगोछा—अंगपुच्छणं
कौपीन—अवअच्छं (दे.)
ओवरकोट—बुहइया (सं)
रात्रिपौशाक—नत्तवेसो (सं)

० ० ०

रक्षा—ताणं
चिकना—सण्ह (वि)
घर्षण—घसणं, घंसणं

धातु का प्रयोग

बाह—पीडा करना
पोस—पुष्ट होना
फेल्लुस—फिसलना
पिंज—रुई धुनना
फरिस—छूना
पाल—पालन करना
फट्ट—फटना, फूटना
आरंभ—आरम्भ करना
पागड—प्रकट करना

क 7 ग—एगो (एकः) अमुगो (अमुकः) असुगो (असुकः) सावगो (श्रावकः) आगारो (आकारः) तित्थगरो (तीर्थंकरः) आगरिसो (आकर्षः) एगत्तं (एकत्वं)। **इत्यादिषु व्यत्ययश्च (४.४४७) इत्येव कस्य गत्वम् (१।१७७ की वृत्ति)**

नियम २२८ (शीकरे भहौ वा १।१८४) शीकर शब्द के क को भ और ह विकल्प से होता है।

क 7 भ, ह—सीभरो, सीहरो, सीअरो (शीकरः)

नियम २२९ (चन्द्रिकायां मः १।१८५) चन्द्रिका शब्द के क को म होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क 7 **म**—चन्दिमा (चन्द्रिका)

नियम २३० (निकष-स्फटिक-चिकुरे हः १।१८६) निकष, स्फटिक और चिकुर शब्दों के क को ह होता है।

क 7 **ह**—निहसो (निकषः) फलिहो (स्फटिकः) चिहुरो (चिकुरः)।

नियम २३१ (शृङ्खले खः कः १।१८९) शृङ्खल शब्द के ख को क होता है।

ख 7 **क**—सङ्कलं (शृङ्खलम्)

नियम २३२ (पुन्नाग-भागिन्योर्गो मः १।१९०) पुन्नाग और भागिनी शब्दों के ग को म होता है।

ग 7 **म**—पुन्नामाइँ (पुन्नागानि) भामिणी (भागिनी)

नियम २३३ (छागे लः १।१९१) छाग शब्द के ग को ल होता है।

ग 7 **ल**—छालो (छागः) छाली (छागी) स्त्री।

नियम २३४ (ऊत्वे दुर्भग-सुभगे वः १।१९२) दुर्भग और सुभग शब्दों में ऊ होने पर ग को व होता है।

ग 7 **व**—दूहवो (दुर्भगः) सूहवो (सुभगः)।

(क्वचिच्चस्य जः १।१७७ की वृत्ति) कहीं च को ज होता है।

च 7 **ज**—पिसाजी (पिशाची)

(आर्षे अन्यदपि दृश्यते १।१७७ की वृत्ति) आउण्टणं (आकुञ्चनम्) यहां च को ट हुआ है।

नियम २३५ (खचित-पिशाचयोश्च स-ल्लौ वा १।१९३) खचित के च को स और पिशाच के च को ल्ल आदेश विकल्प से होता है।

च 7 **ल्ल, स**—खसिओ खइओ (खचितः) पिसल्लो, पिसाओ (पिशाचः)

नियम २३६ (सटा-शकट-कैटभे ढः १।१९६) सटा, शकट, कैटभ शब्दों के ट को ढ होता है।

ट 7 **ढ**—सढा (सटा) सयढो (शकटः) केढवो (कैटभः)।

नियम २३७ (स्फटिके लः १।१९७) स्फटिक शब्द के य को ल होता है।

ट 7 **ल**—फलिहो (स्फटिकः)।

नियम २३८ (चपेटा-पाटौ वा १।१९८) चपेटा शब्द और पट् धातु (ञिन्नन्त) के ट को ल विकल्प से होता है।

ट 7 **ल**—चविला, चविडा (चपेटा) फालेइ, फाडेइ (पाटयति)।

नियम २३९ (अङ्कोठे ल्लः १।२००) अंकोठ शब्द के ठ को ल्ल आदेश होता है।

ठ 7 **ल्ल**—अङ्कोल्लो (अङ्कोठः)।

नियम २४० (पिठरे हो वा रश्च डः १।२०१) पिठर शब्द के ठ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को ह् विकल्प से होता है, उसके योग में र को ड होता है।

ठ 7 ह—पिहडो, पिढरो (पिठरः)।

नियम २४१ (वेणौ णो वा १।२०३) वेणु शब्द के ण को ल विकल्प से होता है।

ण 7 ल—वेलू, वेणू (वेणुः)।

नियम २४२ (प्रत्यादौ डः १।२०६) प्रति आदि शब्दों के त को ड होता है।

त 7 ड—पडिवन्नं (प्रतिपन्नम्) पडिहासो (प्रतिहासः) पडिहारो (प्रतिहारः) पाडिप्फद्धी (प्रतिस्पर्धा), पडिसारो (प्रतिसारः) पडिनिअत्तं (प्रतिनिवृत्तम्) पडिमा (प्रतिमा) पडिवया (प्रतिपत्) पडंसुआ (प्रतिश्रुत्) पडिकरइ (प्रतिकरोति) पहुडि (प्रभृतिः) पाहुडं (प्राभृतम्) वावडो (व्यापृतः) पडाया (पताका) बहेडओ (बिभीतकः) हरडइ (हरीतकी) मडयं (मृतकम्)। दुक्कडं (दुष्कृतम्) सुकडं (सुकृतम्) आहडं (आहृतम्) अवहडं (अवहृतम्)।

प्रयोग वाक्य

धणवालो सिरक्कं न परिहाइ। उत्तरिज्जेण अणुमिज्जइ अयं विउसो अत्थि। अप्पईणस्स मुल्लो दाउं अहं न समत्थो मि। तुज्झ वासकडी सुद्धकप्पासेण णिम्मिआ अत्थि। सिसिरे निसाए नीसारेणावि सीयं संतावेइ। किं तुज्झ पिआमहो उण्हीसं इच्छइ? पत्तआरो रायिंदो सितं पायजामं कंचुअं य पउंजइ। किं तुज्झ पासे पडपुत्तिया नत्थि। बंभचारिणो पइसमयं अवअच्छं रक्खंति। सो नत्तवेसम्मि सुअइ। णयरे सिरत्ताणस्स आवस्सगया भवइ। सामाइयम्मि सावगा पच्छयं धरइ। पुरिसाण सरीरे अज्जत्ता पावरओ न दिस्सइ। अहं उवहाणं अंतरेणावि सुहेण सुआमि। बाला अहोवत्थमवि न परिहांति। तुज्झ पिअस्स पासे केत्तिलाओ बुहइयाओ संति। सो ण्हाणस्स पच्छा अंगपुंछणेण सरीरं सुस्सावेइ (सुखाता है।)

धातु प्रयोग

तुज्झ कहणमिमं बाहइ। धणेण लोआ धम्माओ फेल्लुसंति। पुरिसा साहुणीओ न करिस्संति। अज्ज तुज्झ सिरं कहं फट्टइ? सामी सुणयं पोसइ। तुमं परिसाए सभावा पागडहि। अज्ज को कप्पासं पिंजिहिइ? माअरा अजोग्गमवि पुत्तं पालइ। सुवे अहं अज्झयणं आरंभिहिमि।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम धोती क्यों नहीं पहनते हो? कुरता शरीर के लिए लाभकर है। तुम्हारी कमीज का रंग क्या है? आजकल पगडी बहुत कम लोग रखते हैं। टोपी धूप से सुरक्षा करती है। टोप सिर की सुरक्षा करता है। मेरा तोलिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हारे पास है। एक महिने में तीन रूमाल गिर जाते हैं। तुमने पायजामा कब पहना था ? पंडित लोग दुपट्टा रखते थे। क्या तुम पेंट को सीना जानते हो ? यह वासकट तुम अपने भाई को दे दो। रजाई ठंड से सुरक्षा करती है। रजाई में रूई (कप्पास) कितनी है ? क्या वह कौपीन पहनना चाहता है ? वह रूमाल से मुंह पूंछता है। मेरे पास रात की पौशाक दो है। टोप किस शहर में मिलता है ? मैं चादर अपने साथ ही रखता हूं। पतलून सीने वाला कहां गया है ? मेरी शेरवानी कहां रखी हुई है ? तकिया के बिना उसको नींद नहीं आती है। तुम्हारी धोती धूप में सूख रही है। कुर्ता का रंग कैसा था ? वह तोलिया पहनकर स्नान करता है। ओवरकोट पहनने के बाद ठंड नहीं लगती है।

धातु का प्रयोग करो

तुम्हारे शरीर का भार मुझे पीडा नहीं देता लेकिन तुम्हारा धातु का अशुद्ध प्रयोग पीडा देता है। चिकने आंगन में उसका पैर फिसल गया। क्या बादल आकाश को छूते हैं ? कोई-कोई फल पकने पर फट जाता है। दूध से शरीर पुष्ट होता है। वह रूई धुनता है इसलिए सुख से रोटी खाता है। जो अपने आश्रित का पालन नहीं करता वह कर्तव्य से दूर हो जाता है। तुम उसके पास पढना प्रारम्भ करो। तुम्हें अपने विचार प्रकट करना चाहिए।

प्रश्न

१. नीचे लिखे शब्दों में किस व्यंजन को क्या आदेश हुआ है ? नियम सहित स्पष्ट करो—
   चंदिमा, आगरिसो, पिसाजी, एगत्तं, चिहुरो, भामिणी, पिसल्लो, खसिओ, सयढो, पिहडो, फलिहो, चविडा, पिढरो, वेणु, हरडइ।
२. टोपी, टोप, दुपट्टा, पेंट, वासकट, रजाई, पगडी, पायजामा, रूमाल, कौपीन, चादर, पतलून, शेरवानी, तकिया, धोती, कुर्त्ता, तोलिया, ओवरकोट, रात्रिपौशाक के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
३. बाह, फेल्लुस, फट्ट, पिंज, पागड और पोस धातुओं के अर्थ बताओ।
४. "प्रत्यादौ डः"—इस नियम के तीन उदाहरण दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (३)

शब्द संग्रह (आभूषण वर्ग)

मोती की माला—हारो, पलम्बं
कान की बाली—कुंडलं, कण्णाआसं (दे०)
टिकुली—णडालाभूसणं
कंठा—कंठमुरयो, कंठमुही
नथ—णासाभरणं
मंगलसूत्र—कंठसुत्तं
हाथ का कडा—कडगो (सं)
हंसुली—गेविज्जं
मुकुट, सिरपेंच—मउडो
मणियों से ग्रथित हार—एगावली
रत्नों का हार—रयणावली
भुजबंद, बाजूबंद—केउरं
लच्छा—पायाभरणं
घुंघुरु—घंटिया
अंगूठी—अंगुलीयं, अंगुलिज्जगं
बंगडी—कंकणं, कंकणी
चूडी—वलयं, चूडो (दे०)
कंदोरो—कडिसुत्तं

धातु संग्रह

पलाय—भागना
थु—स्तुति करना
परिआल—लपेटना
थिम—गीला करना
पमिलाय—मुरझाना
पम्हुअ—भूल जाना
पत्थर—बिछाना
पडिहण—प्रतिघात करना

नियम २४३ (इत्वे वेतसे १।२०७) वेतस के त को ड होता है, इ होने पर।

त7ड—वेडिसो (वेतसः)।

नियम २४४ (गर्भितातिमुक्तके णः १।२०८) गर्भित और अतिमुक्तक शब्द के त को ण होता है।

त7ण—गब्भिणो (गर्भितः) अणिउंतयं (अतिमुक्तकम्)।

नियम २४५ (सप्ततौ रः १।२१०) सप्तति शब्द के त को र होता है।

त7र—सत्तरी (सप्ततिः)।

नियम २४६ (अतसी-सातवाहने लः १।२११) अतसी और सातवाहन शब्द के त को ल होता है।

त7ल—अलसी (अतसी) सालवाहणो (सातवाहनः)।

नियम २४७ (पलिते वा १।२१२) पलित शब्द के त को ल विकल्प

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से होता है।

त>ल--पलिलं, पलिअं (पलितम्)।

नियम २४८ (पीते वो ले वा १।२१३) पीत शब्द के त को व विकल्प से होता है, स्वार्थ में होने वाला ल प्रत्यय परे हो तो।

त>व—पीवलं पीअलं (पीतलम्)।

नियम २४९ वितस्ति-वसति-भरत-कातर-मातुलिंगे हः १।२१४) वितस्ति, वसति, भरत, कातर, मातुलिंग—इन शब्दों के त को ह होता है।

त>ह—विहत्थी (वितस्तिः) वसही (वसतिः) भरहो (भरतः) काहलो (कातरः) माहुलिंगं (मातुलिंगम्)।

नियम २५० (मेथि-शिथिर-शिथिल-प्रथमे थस्य ढः १।२१५) मेथि, शिथिर, शिथिल, प्रथम इन शब्दों के थ को ढ होता है।

थ>ढ—मेढी (मेथिः) सिढिलो (शिथिरः) सिढिलो (शिथिलः) पढमो (प्रथमः)।

नियम २५१ (निशीथ-पृथिव्योर्वा १।२१६) निशीथ और पृथिवी शब्दों के थ को ढ विकल्प से होता है।

थ>ढ—निसीढो, निसीहो (निशीथः) पुढवी, पुहवी (पृथिवी)।

नियम २५२ (पृथकि धो वा १।१८८) पृथक् शब्द के थ को ध विकल्प से होता है।

थ>ध—पिधं, पुधं पिहं, पुहं (पृथक्)।

नियम २५३ (रुदिते दिना ण्णः १।२०९) रुदित शब्द के दित को ण्ण आदेश होता है।

दित>ण्ण—रुण्णं (रुदितम्)।

नियम २५४ (संख्या-गद्गदे रः १।२१९) संख्यावाची शब्द और गद्गद शब्द के द को र होता है।

द>र—एआरह (एकादश) बारह (द्वादश) तेरह (त्रयोदश) गग्गरं (गद्गदम्)।

नियम २५५ (कदल्यामद्रुमे १।२२०) कदली शब्द के द को र होता है यदि द्रुमवाची न हो तो।

द>र—करली (कदली) केला।

नियम २५६ (प्रदीपि-दोहदे लः १।२२१) प्रपूर्वक दीप् धातु और दोहद के द को ल होता है।

द>ल—पलीवइ (प्रदीप्यते) दोहलो (दोहदः)।

नियम २५७ (कदम्बे वा १।२२२) कदम्ब शब्द के द को ल विकल्प से होता है।

कलम्बो, कयम्बो (कदम्बः)।

नियम २५८ (दीपौ धो वा १।२२३) दीप् धातु के द को ध विकल्प

से होता है।

द>ध—धिप्पइ, दिप्पइ (दीप्यते)।

नियम २५६ (कदर्थिते वः १।२२४) कदर्थित शब्द के द को व होता है।

द>व—कवट्टिओ (कदर्थितः)।

नियम २६० (ककुदे हः १।२२५) ककुद् शब्द के द को ह होता है।

द>ह—कउहं (ककुदम्)।

नियम २६१ (निषधे धो ढः १।२२६) निषध शब्द के ध को ढ होता है।

ध>ढ—निसढो (निषधः)।

नियम २६२ (वौषधे १।२२७) औषध के ध को ढ होता है विकल्प से।

ध>ढ—ओसढं, ओसहं (औषधम्)।

नियम २६३ (नीपापीडे मो वा १।२३४) नीप और आपीड शब्द के प को म विकल्प से होता है।

प>म—नीमो, नीवो (नीपः) आमेलो, आमेडो (आपीडः)।

नियम २६४ (पापर्द्धौ रः १।२३५) पापर्द्धि शब्द के प को र होता है।

प>र—पारद्धी (पापर्द्धिः)।

नियम २६५ (कबन्धे म-यौ १।२३९) कबन्ध शब्द के ब को म और य होता है।

ब>म—कमन्धो, कयन्धो (कबन्धः)।

नियम २६६ (शबरे बो मः १।२५८) शबर शब्द के ब को म होता है।

ब>म—समरो (शबरः)।

नियम २६७ (कैटभे भो वः १।२४०) कैटभ शब्द के भ को व होता है।

भ>व—केढवो (कैटभः)।

प्रयोग वाक्य

सरलाए पासे पलंबं अत्थि। रामस्स कण्णेसु कुंडलाइं सोहंति। सरोजा णडालाभूसणं कहं न धारइ? विमलाए कंठम्मि कंठमुरयो विभाइ। सुमणाए पासे तिण्णि णासाभरणाइं संति। महिंदस्स कंठसुत्तं माआ कं दास्सइ? पुरिसो वि कडगं धारइ। पभाए गेविज्जं दट्ठुं सुलोअणा तस्स घरे गआ। सुरिंदस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मउडो पारकेरं अत्थि। एगावलिं बंधिउं कास मणो उक्कंठेइ (उत्सुक है)? अज्जत्ता रयणावलिं पासिउं को वि न गच्छइ। रामस्स भुआए केउरं आसि। चंदणबाला अवि पायाभरणं इच्छइ। घंटियाए सद्दो कण्णपिओ भवइ। पत्ती पइणामंकियं अंगुलीयं अंगुलीए धारइ। रायिंदस्स पत्तीइ पासे चत्तारि कंकणाइं संति। अरुणा सुवण्णचूडा कहं न धारइ? कुसुमस्स माआ णियं कडिसुत्तं दंसइ (दिखलाती है)।

धातु प्रयोग

विरत्तो संसाराओ पलायइ। पुप्फाइं राओ कहं पमिलायंति। अहं तुज्झ अभिहाणं पम्हअहीअ। सीसो आयरियस्स संथारं पत्थरइ। सव्वे साहुणो जिणं थुन्ति। न जाणामि रामो अज्ज कहं ओण्णियं थिमइ? रिसभो पोत्थयस्स उवरिं पत्तं परिआलइ। रमेसो धणं पडिहणइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मेरी दादी के घर में मोतियों की कई मालाएं हैं। पुरुष भी कान की बाली पहनते हैं। प्रभा ने विवाह में टिकुली पहनी थी। संपतराज ने अपने चारों पुत्रों को चार कंठे दिए। विमला नथ पहनना क्यों नहीं चाहती है? माता ने अपनी पुत्री को मंगलसूत्र दिया। हाथ का कडा किसके पास है? गले में हंसुली शोभा देती है। मुकुट पहनने के बाद वह राजा जैसा लगता है। मणियों का हार जयपुर में मिलता है। रत्नों का हार कौन पहनेगा? हडमान का भुजाबंध किसके पास है? लच्छा को देखने उसके घर कौन-कौन गए? तुम्हारे घुंघुरू का शब्द आकाश में फैल गया। अंगुठी पर तुम्हारा नाम है या पति का? बंगडी पहनने वाली आजकल कौन है? चूडी सुहाग का चिह्न है। मेरी भाभी कंदोरे को बहुत चाहती है।

धातु का प्रयोग करो

जो संयम में कमजोर होते हैं, वे ही साधुत्व से पलायन करते हैं। उपालंभ सुनकर उसका मुखकमल मुरझा गया। मैं आपकी सारी गलतियों को भूलता हूं। मेरे लिए बिछौना कौन बिछाएगा? वह भगवान् पार्श्वनाथ की स्तुति करता है। तुम बार-बार आंखों को क्यों गीला करते हो? वह कंबल पर सूती वस्त्र लपेटता है। गांव के लोगों ने उग्रवादियों पर प्रतिघात किया।

प्रश्न

१. त व्यंजन का परिवर्तन किन-किन व्यजनों में होता है? एक-एक उदाहरण सहित नियम का उल्लेख करो।
२. द को र, ल, ध, व, ह करने वाले कौन-से नियम हैं?
३. प और ब का किन-किन व्यंजनों में परिवर्तन होता है?

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

४. सिढिलो, पुढवी, पिधं, मेढी—इन शब्दों में किस व्यंजन का परिवर्तन होकर क्या बना है ?

५. मोती की माला, कान की बाली, टिकुली, मुकुट, मणियों से ग्रथित हार, भुजबंद, कंठा, नथ, मंगलसूत्र, हाथ का कडा, बंगडी, चूडी, कंदोरा, अंगूठी, हंसुली, लच्छा, घुंघरू—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६. पलाय, थु, परिआल, थिम, पमिलाय, पम्हुअ, पत्थर और पडिहण धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयुक्त करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९ मध्यवर्ती सरल व्यंजन परिवर्तन (४)

शब्द संग्रह (स्फुट)

उद्यम—उज्जमो

स्वभाव—सहावो

पथ्य—पच्छ (वि)

मर्यादा—मज्जाया

संगति—संगो

मनोरथ—मणोरहो

स्वागत—सागयं

राख—भस्सं

क्षेत्र—खेत्तं, छेत्तं

श्रवण—सवणं

शिकारी—लुद्धगो

शासक—सासओ।

धातु संग्रह

दरिस—दिखलाना, बतलाना

दिक्ख—देखना

दम—निग्रह करना

तस—त्रास पाना, डरना

ताड—ताडना करना

संफुस—स्पर्श करना

वच्च—जाना

ताव—गर्म करना

नियम २६८ (विषमे मो ढो वा १।२४१) विषम शब्द के म को ढ विकल्प से होता है।

म>ढ—विसढो, विसमो (विषमः)।

नियम २६९ (वाभिमन्यौ १।२४३) अभिमन्यु शब्द के म को व विकल्प से होता है।

म>व—अहिवन्नू, अहिमन्नू (अभिमन्युः)।

नियम २७० (भ्रमरे सो वा १।२४४) भ्रमर शब्द के म को स विकल्प से होता है।

म>स—भसलो, भमरो (भ्रमरः)।

नियम २७१ (डाह-वौ कतिपये १।२५०) कतिपय शब्द के य को डाह (आह) और व क्रमशः होता है।

य>डाह—कइवाहं, कइअवं (कतिपयम्)।

नियम २७२ (वोत्तरीयानीय-तीय-कृद्ये ज्जः १।२४८) उत्तरीय शब्द और अनीय, तीय तथा कृदन्त के य प्रत्यय का य हो उसको ज्ज विकल्प से होता है।

य>ज्ज—उत्तरिज्जं, उत्तरीअं (उत्तरीयम्) करणिज्जं, करणीअं (करणीयम्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जवणिज्जं, जवणीअं (यवनीयम्) बिइज्जो, बीओ (द्वितीयः) पेज्जा, पेआ (पेया)।

य>र—ण्हारु (स्नायुः) ठाणांग, पण्हावागरण, विवाहपण्णत्ति आदि आगमों में मिलता है।

नियम २७३ (छायायां होऽकान्तौ वा १।२४९) छाया शब्द अकान्ति अर्थ में हो तो छाया के य को ह विकल्प से होता है।

य>ह—छाही (छाया) धूप का अभाव। सच्छाहं, सच्छायं।

नियम २७४ (किरि-भेरे रो डः १।२५१) किरि और भेर शब्द के र को ड होता है।

र>ड—किडी (किरिः) भेडो (भेरः) पिहडो (पिठरः)—(पिठरे हो वा रश्च डः) **नियम २४० से ठ को ह होने पर र को ड हुआ है।**

नियम २७५ (पर्याणे डा वा १।२५२) पर्याण शब्द के र को डा विकल्प से होता है।

र>डा—पडायाणं, पल्लाणं (पर्याणम्)।

नियम २७६ (करवीरे णः १।२५३) करवीर शब्द के प्रथम र को ण होता है।

र>ण—कणवीरो (करवीरः)।

नियम २७७ (हरिद्रादौ लः १।२५४) हरिद्रा आदि शब्दों में असंयुक्त र को ल होता है।

र>ल—हलिद्दी (हरिद्रा) दलिद्दाइ (दरिद्राति) दलिद्दो (दरिद्रः) दालिद्दं (दारिद्र्यम्) हलिद्दो (हरिद्रः) जहुट्ठिलो (युधिष्ठिरः) सिढिलो (शिथिरः) मुहलो (मुखरः) चलणो (चरणः) वलुणो (वरुणः) कलुणो (करुणः) इङ्गालो (अङ्गारः) सक्कालो (सत्कारः) सोमालो (सुकुमारः) चिलाओ (किरातः) फलिहा (परिखा) फलिहो (परिघः) फालिहद्दो (पारिभद्रः) काहलो (कातरः) लुक्को (रुग्णः) अवद्दालो (अपद्वारः) भसलो (भ्रमरः) जढलो (जठरः) बढलो (बठरः) निट्ठुलो (निष्ठुरः)।

नियम २७८ (स्थूले लो रः १।२५५) स्थूल शब्द के ल को र होता है।

ल>र—थोरं (स्थूलम्)।

नियम २७९ (स्वप्न-नीव्यो र्वा १।२५६) स्वप्न और नीवी शब्द के व को म विकल्प से होता है।

व>म—सिमिणो, सिविणो (स्वप्नः) नीमी, नीवी (नीवी)।

नियम २८० (दश-पाषाणे हः १।२६२) दशन् और पाषाण शब्द के श और ष को ह विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श>ह्—दह्, दस (दश) दह्बलो, दसबलो (दश बलः)।
ष>ह्—पाहाणो, पासाणो (पाषाणः)

नियम २८१ (स्नुषायां ण्हो न वा १।२६१) स्नुषा शब्द के ष को ण्ह आदेश विकल्प से होता है।

ष>ण्ह—सुण्हा, सुसा (स्नुषा)।

नियम २८२ (दिवसे सः १।२६३) दिवस शब्द के स को ह विकल्प से होता है।

स>ह—दिवहो, दिवसो (दिवसः)।

नियम २८३ (हो घोनुस्वारात् १।२६४) अनुस्वार से परे ह को घ विकल्प से होता है।

ह>घ—सिंघो, सीहो (सिंहः) संघारो, संहारो (संहारः) दाघो (दाहः)।

नियम २८४ (वोत्साहे थो हश्च रः २।४८) उत्साह शब्द के संयुक्त को थ विकल्प से आदेश होता है। उसके योग में ह को र होता है।

ह>र—उत्थारो, उच्छाहो (उत्साहः)।

प्रयोग वाक्य

उज्जमेण सव्वाइं कज्जाइं सिज्झंति। झाणेण सहावस्स परिवट्टणं जायइ। पच्छेण विणा ओसहीए को लाहो। तुज्झ मणोरहो सहलीभविस्सइ। खणमवि साहुसंगो कोडिपावणासणो भवइ। मज्जायाइ सुण्णं जीवणं जीवणं नत्थि। आयरियवराणं सागयं कया भविहिइ? साहूणं केसलुंचणं भस्सेण सरलीभवइ। इअं खेत्तं सद्धालूणं अत्थि। जो सद्दो सवणे पडइ तं चिअ हं जाणामि।

धातु प्रयोग

आयरिओ सीसं धम्मस्स मग्गं दरिसइ। अहं तुह उत्तरपत्ताइं दिक्खामि। साहू इंदियाणि दमइ। कामभोगा णरं तावंति। पिआ पुत्तं ताडइ। सो मज्झ सरीरं संफुसइ। तुमं गिहं कहं वच्चसि? कूरसासएण लोआ तसंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

कार्य की सिद्धि में उद्यम सबल साधन है। श्रावक के तीन मनोरथ होते हैं। अग्नि का स्वभाव जलाना है। साधु का स्वागत व्यक्ति का नहीं त्याग का होता है। औषधि के साथ पथ्य ज्यादा फल देता है। मनुष्य का शरीर जलने के बाद राख हो जाता है। मर्यादा हमारा प्राण है। इस क्षेत्र में धनी लोग बहुत हैं। संगति का फल अवश्य मिलता है। उसके श्रवण बहुत पटु हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु का प्रयोग करो

विमल कलागृह देखता है। वह सूर्य की रश्मि में सात रंग देखता है। साधक स्वयं अपना निग्रह करता है। सास बहू को ताडती है। जल से भीगे शरीर का साधु संस्पर्श न करे। वह अपने नए घर में जाता है। वह घी को गर्म करती है। पक्षी शिकारी (लुद्धगो) से त्रास पाते हैं।

प्रश्न

१. म व्यंजन को कौन-कौन सा व्यंजन आदेश होता है ?

२. नीचे लिखे शब्दों में बताओ इस पाठ के अनुसार किस व्यंजन को क्या आदेश हुआ है ?
बिइज्जो, कणवीरो, उत्तरिज्जं, सच्छाहं, पिहडो, भेडो, वलुणो।

३. उद्यम, राख, स्वागत, मर्यादा, मनोरथ, स्वभाव, संगति, पथ्य, क्षेत्र, श्रवण—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

४. दरिस, दम, ताव, ताड, वच्च, संफुस, दिक्ख धातुओं के अर्थ बताओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

५. डंडी, अंतरिज्जं, अद्धोरुगो, वासकडी, पडपुत्तिया, कंचुओ, गेविज्जं, घंटिया, कडिसुत्तं—इनका वाक्य में प्रयोग करो और हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४० सरल व्यंजन परिवर्तन (३)

अन्तिम व्यंजन परिवर्तन

शब्दसंग्रह (स्फुट)

सहयोग—साउज्जं, साहज्जं, साहिज्जं
श्मसान—मसाणं
बातचीत—वत्ता, परिकहा
चुम्बन—गुलं (दे०)
तरंग—तरंगो
गोष्ठी—गोट्ठी
प्रीति—पीई (स्त्री)
कांति—कंती (स्त्री)
आकृति—आकिई, आगिई

धातु संग्रह

वेढ—वेष्टित करना, लपेटना
नव—नमना
ओमील—मुद्रित होना, बंद होना
ओयत्त—उलटाना, खाली करने के लिए नमाना
पिअरंज—भांगना, तोडना
कण—आवाज करना
कम—उल्लंघन करना
उम्मुंच—परित्याग करना
पिंड—एकत्रित करना

अन्तिम व्यंजन

प्राकृत में व्यञ्जनान्त शब्द नहीं होते हैं। संस्कृत में जो शब्द व्यंजन अन्त वाले होते हैं उनका या तो लोप हो जाता है या उन्हे स्वर में तथा स्वर सहित व्यंजन में परिवर्तित कर दिया जाता है। कहीं अन्तिम व्यंजन को अनुस्वार में बदल दिया जाता है। इनमे कुछ नियम अन्यत्र भी आए हैं फिर भी अन्तिम व्यंजन से संबंधित होने के कारण यहां दिए गए हैं।

नियम २८५ (अन्त्य व्यंजनस्य १।११) शब्दों के अन्त में जो व्यंजन होता है उसका लोप हो जाता है।

अन्तिम व्यंजन>लोप—जाव (यावत्) ताव (तावत्) जसो (यशस्) तमो (तमस्) जम्मो (जन्मन्) पुण (पुनर्)

(**बहुलाधिकारात् अन्यस्यापि व्यंजनस्य मकारः १।२४ की वृत्ति**) अन्तिम व्यंजन को म आदेश होता है। स्क्खं (साक्षात्) जं (यत्) तं (तत्) वीसुं (विष्वक्) पिहं (पृथक्) सम्मं (सम्यक्)

(**समासे तु वाक्यविभक्त्यपेक्षायां अन्त्यत्वं अनन्त्यत्वं च तेनोभयमपि भवति**) समस्त पदों में सब पद मिलकर एक शब्द बन जाता है। इस दृष्टि से अन्तिम पद को छोडकर पूर्व के पदों की एक अपेक्षा से पद-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञा है भी और एक अपेक्षा से नहीं भी है। प्रत्येक पद में विभक्ति आई हुई है, इसलिए पदसंज्ञा है। समास होने से विभक्ति का लुक् हो जाता है, इसलिए पदसंज्ञा नहीं है। प्रत्येक पद के अंतिम शब्द को अन्त्य कह सकते हैं और समस्त पद एक शब्द बन जाता है इस दृष्टि से पूर्व के पद के अन्तिम शब्द को अन्त्य नहीं भी कह सकते। इसलिए समास में अन्त्यत्व और न अन्त्यत्व दोनों होते हैं। अन्त्य मानने पर लोप हो जाता है। अन्त्य न मानने पर लोप नहीं होता। सभिक्खू (सद्भिक्षुः) सज्जणो (सज्जनः) एअगुणा (एतद्गुणाः) तग्गुणा (तद्गुणाः)

नियम २८६ (शरदादेरत् १।१८) शरद्, आदि शब्दों के अन्तिम व्यंजन को अ आदेश हो जाता है।

>**अ**—सरओ (शरद्) भिसओ (भिषक्)

नियम २८७ (दिक्-प्रावृषोः सः १।१९) दिश् और प्रावृष् शब्दों के अन्तिम व्यंजन को स आदेश होता है।

>**स**—दिसा (दिश्) पाउसो (प्रावृट्)

नियम २८८ (आयुरप्सरसो र्वा १।२०) आयुष् और अप्सरस् शब्दों के अंतिम व्यंजन को विकल्प से स आदेश होता है।

>**स**—दीहाउसो, दीहाऊ (दीर्घायुः) अच्छरसा, अच्छरा (अप्सराः)

नियम २८९ (ककुभो हः १।२१) ककुभ् शब्द के अन्त्य व्यंजन को ह आदेश होता है।

>**ह**—कउहा (ककुभ्)

नियम २९० (धनुषो वा १।२२) धनुष् शब्द के अन्तिम व्यंजन को विकल्प से ह आदेश होता है। पक्ष में लोप हो जाता है।

>**ह, लोप**—धणुहं, धणू (धनुः)

नियम २९१ (रो रा १।१६) अन्त्य व्यंजन र् यदि स्त्रीलिंग में हो तो उसे रा आदेश हो जाता है।

>**रा**—गिरा (गिर्) धुरा (धुर्) पुरा (पुर्)

नियम २९२ (क्षुधो हा १।१७) क्षुध् शब्द के अन्त्य व्यंजन को हा आदेश होता है।

>**हा**—छुहा (क्षुध्)

नियम २९३ (न श्रदुदोः १।१२) श्रद् और उद् के अन्त्य व्यंजन का लुक् नहीं होता। सद्धा (श्रद्धा) उग्गयं (उद्गतम्) उन्नयं (उन्नतम्)

नियम २९४ (निर्दुरो र्वा १।१३) निर् और दुर् के अन्त्य व्यंजन का लुक् विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7 **लुक्**—निस्सहं, नीसहं (निःसहम्) दुस्सहो, दूसहो (दुःसहः) दुक्खिओ, दुहिओ (दुःखितः)

नियम २९५ (स्वरेन्तरश्च १।१४) अन्तर्, निर् और दुर् के अन्त्य व्यंजन का लुक् नहीं होता स्वर परे हो तो। अन्तरप्पा (अन्तरात्मा) निरवसेसं (निरवशेषम्) निरन्तरं (निरन्तरम्) दुरवगाहं (दुरवगाहम्) दुरुत्तरं (दुरुत्तरम्)।

नियम २९६ (स्त्रियामादविद्युतः १।१५) विद्युत् शब्द को छोडकर अन्त्य व्यंजन यदि स्त्रीलिंग में हो तो उसे आ आदेश होता है, लुक् नहीं।
7 **आ**—सरिआ (सरित्) पाडिवआ (प्रतिपद्) संपआ (संपद्)

वाक्य प्रयोग

सो अमुम्मि कज्जम्मि भवंताण साउज्जं अवेक्खइ। सो मसाणे साहणं करेइ। वत्ताए तेणं अहं कहिओ जं साहुत्तं गहिहामि। पुत्तस्स गुले माअरा आणंदं अणुभवइ। समुद्दस्स तरंगा गगणे उच्छलंति। साहूणं गोट्ठीए का वत्ता णिच्छिया? महावीरं पइ गोयमस्स पीई आसि। तुज्झ मुहस्स कंती कहं मलिणा जाआ। अमुम्मि विसये मज्झ को वि पण्हो नत्थि। तुज्झ आकिई मं अणुहरइ।

धातु प्रयोग

सो रयणं कोसेयम्मि वेढइ। पिउस्स पायम्मि विणीया पुत्ता पगे नवंति। कमलविआसि पुप्फं निसाए ओमीलइ। सो घडम्मि जलपत्तं ओयत्तइ। जो णियमं पिअरंजइ सो पावस्स भागी भवइ। तीसे नेउरं कणइ। सो मणेणावि साहुणियमा न क्कमइ। पट्ठाणकाले मुणिणो आयरिअस्स समीवं उम्मुंचंति। मुणिणो आयरिअस्स समीवे भिक्खं पिंडंति।

प्राकृत में अनुवाद करो

आपके सहयोग से मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाऊंगा। श्मसान में कौन साधना करता है? बातचीत कैसे भंग हुई? चुम्बन लेना स्नेह या ममता का रूप है। मन की तरंगें प्रतिक्षण उठती हैं। उसने गोष्ठी का निर्णय स्वीकार नहीं किया। प्रीति से कार्य सरलता से बन जाता है। ब्रह्मचर्य से मुख की कांति बढती है। गौतम के प्रश्नों का उत्तर भगवान महावीर ने दिया था। तुम्हारी आकृति आकर्षक है।

धातु का प्रयोग करो

इस पुस्तक पर वस्त्र किसने लपेटा है? वह अपने से बडों के प्रति नमन करता है। तुम कभी आंखें बंद करते हो कभी खोलते हो। वह घडे में घी का वर्तन उलटाता है। तुम गुस्से में कलम को तोडते हो। हार कभी भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवाज नहीं करता। रमेश नदी को उल्लंघन करता है। वह चतुर्दशी को रात को भोजन करने का परित्याग करता है। सीता कमरे में कचरा एकत्रित करती है।

प्रश्न

१. प्राकृत में व्यंजनांत शब्द होते हैं या नहीं ?
२. शब्द के अंतिम व्यंजन का प्राकृत में क्या होता है ? प्रत्येक विधि का दो-दो उदाहरण दो।
३. अन्तिम व्यंजन स्त्रीलिंग में हो तो उसको क्या आदेश होता है ? दो उदाहरण से स्पष्ट करो।
४. सहयोग, आकृति, चुम्बन, श्मसान, बातचीत, तरंग, प्रीति, प्रश्न और गोष्ठी के लिए प्राकृत में क्या शब्द हैं ?
५. ओयत्त, ओमील, वेढ, पिअरंज, पिंड, कण और उम्मुंच धातुओं के अर्थ बताओ तथा वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१ संख्या

जिन शब्दों के द्वारा संख्या का बोध होता है, वे संख्यावाची शब्द कहलाते हैं। संख्यावाची शब्द विशेषण होते हैं। विशेष्य के अनुसार लिंग होने के कारण ये तीनों लिंगों में चलते हैं। एग और पंच से लेकर अट्ठारस तक शब्द अकारान्त हैं। एगूणवीसा से लेकर अट्ठावन्ना तक शब्द आकारान्त हैं। ति और एगूणसट्ठि से लेकर णवणवइ तक शब्द इकारान्त हैं। दु और चउ शब्द उकारान्त हैं। सय, सहस्स, अयुत, लक्ख, पउअ आदि शब्द अकारान्त हैं। कोडि, कोडाकोडि शब्द इकारान्त हैं। संख्यावाची शब्द ये हैं—

एग, एअ, एक्क, इक्क (एक) एक। **दु** (द्वि) दो। **ति** (त्रि) तीन। **चउ** (चतुर्) चार। **पंच** (पञ्चन्) पांच। **छ** (षट्) छ। **सत्त** (सप्तन्) सात। **अट्ठ** (अष्टन्) आठ। **नव** (नवन्) नौ। **दह, दस** (दशन्) दस। **एआरह, एगारह, एआरस** (एकादशन्) ग्यारह। **दुवालस, बारस, बारह** (द्वादशन्) बारह। **तेरस, तेरह** (त्रयोदशन्) तेरह। **चोद्दस, चोद्दह, चउद्दस, चउद्दह** (चतुर्दशन्) चौदह। **पण्णरस, पण्णरह** (पञ्चदशन्) पन्द्रह। **सोलस, सोलह** (षोडश) सोलह। **सत्तरस, सत्तरह** (सप्तदशन्) सत्रह। **अट्ठारस, अट्ठारह** (अष्टादशन्) अठारह। **एगूणवीसा** (एकोनविंशति) उन्नीस। **वीसा** (विंशति) बीस। **एगवीसा इक्कवीसा, एक्कवीसा** (एकविंशति) इक्कीस। **बावीसा** (द्वाविंशति) बाईस। **तेवीसा** (त्रयोविंशति) तेईस। **चउवीसा, चोवीसा** (चतुर्विंशति) चौबीस। **पणवीसा** (पञ्चविंशति) पच्चीस। **छव्वीसा** (षड्विंशति) छब्बीस। **सत्तावीसा** (सप्तविंशति) सत्ताईस। **अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा** (अष्टविंशति) अट्ठाईस। **एगूणतीसा** (एकोनत्रिंशत्) उनतीस। **तीसा** (त्रिंशत्) तीस। **एक्कतीसा एगतीसा, इक्कतीसा** (एकत्रिंशत्) इकतीस। **बत्तीसा** (द्वात्रिंशत्) बत्तीस। **तेतीसा, तित्तीसा** (त्रयस्त्रिंशत्) तेतीस। **चउत्तीसा, चोत्तीसा** (चतुस्त्रिंशत्) चौतीस। **पणतीसा** (पञ्चत्रिंशत्) पेंतीस। **छत्तीसा** (षट्त्रिंशत्) छत्तीस। **सत्ततीसा** (सप्तत्रिंशत्) सैंतीस। **अट्ठतीसा, अडतीसा** (अष्टत्रिंशत्) अडतीस। **एगूणचत्तालिस** (एकोनचत्वारिंशत्) उनचालीस। **चत्तालिसा, चत्ताला** (चत्वारिंशत्) चालीस। **एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला** (एक चत्वारिंशत्) इकतालीस। **बेआलिसा, बेआला दुचत्तालिसा** (द्विचत्वारिंशत्) बेयालीस। **तिचत्तालिसा, तेआलिसा, तेआला** (त्रिचत्वारिंशत्) तैंतालीस। **चउचत्तालिसा,**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोआलिसा, चोआला, चउआला (चतुश्चत्वारिंशत्) चौवालीस। **पणचत्तालिसा, पणयाला** (पञ्चचत्वारिंशत्) पैंतालीस। **छचत्तालिसा, छायाला** (षट्चत्वारिंशत्) छियालीस। **सत्तचत्तालिसा, सगयाला** (सप्तचत्वारिंशत्) सैंतालीस। **अट्ठचत्तालिसा, अडयाला** (अष्टचत्वारिंशत्) अडतालीस। **एगूणपण्णासा** (एकोन पञ्चाशत्) उनपचास। पण्णासा (पञ्चाशत्) पचास। **एगपण्णासा, इक्कपण्णासा, एक्कपण्णासा एगावण्णा** (एकपञ्चाशत्) इक्यावन। **बावण्णा, दुवण्णासा** (द्विपञ्चाशत्) बावन। **तेवण्णा, तिपण्णासा** (त्रिपञ्चाशत्) त्रेपन। **चोवण्णा, चउपण्णासा** (चतुष्पञ्चाशत्) चौपन। **पणपण्णा, पणपण्णासा, पञ्चावण्णा** (पञ्चपञ्चाशत्) पचपन। **छप्पण्णा, छप्पण्णासा** (षट्पञ्चाशत्) छप्पन। **सत्तावण्णा, सत्तपण्णासा** (सप्तपञ्चाशत्) सत्तावन। **अट्ठावन्ना, अट्ठपण्णासा** (अष्टपञ्चाशत्) अट्ठावन। **एगूणसट्ठि** (एकोनषष्टि) उनसठ। **सट्ठि** (षष्टि) साठ। **एगसट्ठि** (एकषष्टि) इकसठ। **बासट्ठि, बिसट्ठि** (द्विषष्टि) बासठ। **तेसट्ठि** (त्रिषष्टि) त्रेसठ। **चउसट्ठि, चोसट्ठि** (चतुष्षष्टि) चौसठ। **पणसट्ठि** (पञ्चषष्टि) पैंसठ। **छासट्ठि** (षट्षष्टि) छिआसठ। **सत्तसट्ठि** (सप्तषष्टि) सडसठ। **अडसट्ठि, अट्ठसट्ठि** (अष्टषष्टि) अडसठ। **एगूणसत्तरि** (एकोनसप्तति) उनहत्तर। **सत्तरि** (सप्तति) सत्तर। **इक्कसत्तरि इक्कहत्तरि** (एकसप्तति) इकहत्तर। **बासत्तरि, बिसत्तरि, बाहत्तरि, बिहत्तरि, बावत्तरि** (द्विसप्तति) बहत्तर। **तिसत्तरि** (त्रिसप्तति) तिहत्तर। **चोसत्तरि, चउसत्तरि** (चतुस्सप्तति) चोहत्तर। **पण्णसत्तरि, पणसत्तरि** (पञ्चसप्तति) पचहत्तर। **छसत्तरि** (षट्सप्तति) छिहत्तर। **सत्तसत्तरि** (सप्तसप्तति) सतहत्तर। **अट्ठसत्तरि, अडहत्तरि** (अष्टसप्तति) अठहत्तर। **एगूणासीइ** (एकोनाशीति) उन्नासी। **असीइ** (अशीति) अस्सी। **एगासीइ** (एकाशीति) इक्यासी। **बासीइ** (द्व्यशीति) बयासी। **तेसीइ, तेरासीइ** (त्र्यशीति) तिरासी। **चउरासीइ, चोरासीइ** (चतुरशीति) चौरासी। **पणसीइ, पञ्चासीइ** (पञ्चाशीति) पचासी। **छासीइ** (षडशीति) छियासी। **सत्तासीइ** (सप्ताशीति) सत्तासी। **अट्ठासीइ** (अष्टाशीति) अट्ठासी। **नवासीइ, एगूणणवइ** (नवाशीति) नवासी। **णवइ, नवइ** (नवति) नब्बे। **एगणवइ, इगणवइ** (एकनवति) इक्यानवे। **बाणवइ** (द्विनवति) बानवे। **तेणवइ** (त्रिनवति) तिरानवे। **चउणवइ, चोणवइ** (चतुर्नवति) चौरानवे। **पंचणवइ, पण्णणवइ** (पञ्चनवति) पंचानवे। **छण्णवइ** (षण्णवति) छियानवे। **सत्तणवइ, सत्ताणवइ** (सप्तनवति) सित्तानवे। **अट्ठणवइ, अडणवइ** (अष्टनवति) अट्ठानवे। **एगूणसय, णवणवइ, नवणवइ** (नवनवति) निन्यानवे। **सय** (शत) सौ। **दुसय** (द्विशत) दौ सौ। **तिसय** (त्रिशत) तीन सौ। **बेसयाइं** (द्वेशते) दो सौ। **तिण्णिसयाइं** (त्रीणिशतानि) तीन सौ। **सहस्स** (सहस्र) हजार। **बेसहस्साइं** (द्वेसहस्रे) दो हजार। **दस-**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्साइं (दशसहस्राणि) दस हजार। **अउअ, अयुअ, अयुत** (अयुत) दस हजार। **लक्खो, लक्खं** (लक्ष) लाख। **दसलक्ख, दहलक्ख, पउअ, पउत, पयुअ** (प्रयुत) दस लाख। **कोडि** (कोटि) करोड। **कोडाकोडि** (कोटिकोटि) करोड से करोड गुणा करने पर जो संख्या आए वह। **असंख, असंखिज्ज (वि)** (असंख्येय) असंख्येय। **अणंत** (अनन्त) अनन्त।

सामान्यत: संख्यावाची शब्द एकवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, वीसा मणुस्सा। इसको दूसरे प्रकार से भी प्रयुक्त कर सकते हैं—मणुस्साणं वीसा। मनुष्यों की बीस संख्या है। संख्यावाचक शब्द जब अपनी-अपनी संख्या सूचित करते हैं तब वे एक वचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—बीस, तीस, चालीस। जब वे बहुत बीस, बहुत तीस आदि बहुतता बताते हैं तब वे बहुवचन में आते हैं।

वाक्य प्रयोग

एगोहं नत्थि मे कोवि। चत्तारि कसाया दुक्खाइं देंति। तीसे तिण्णि पुत्ता छ बाला य संति। रमेसस्स गिहे अठारह धेणुओ पणवीसा महिसा पणपण्णा उट्टा आसि। अमुम्मि गामे असीई गेहा संति। धणस्स कोडीए वि संतोसो न होइ। तस्स आवणे वत्थाण सत्तरी दीसइ। तास परिवारे सट्ठी लोआ संति। सो अउअं धारेइ। अमुम्मि नयरे वीसा महापहा सत्तरी वीहिओ य संति। कम्मि णयरे कोडिपुरिसा संति?

जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जये जये।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ॥

प्राकृत में अनुवाद करो

एक वर्ष में बारह महीने होते हैं। एक मास में तीस दिन होते हैं। आचार्य तुलसी की आज्ञा में सात सौ से अधिक साधु-साध्वियां हैं। प्राचीनकाल में पुरुष ७२ कलाएं और स्त्री चौसठ कलाएं सीखती थीं। तुमने गुरु से तेतीस प्रश्न पूछे थे। पाली चतुर्मास में ३१ साधु और ३० साध्वियां थीं। इस शहर में १ लाख १० हजार आदमी रहते हैं। कलकत्ता की जनसंख्या प्राय: एक करोड है। इस सरकार में ३५ मंत्री हैं। इस परिवार में ४० सदस्य हैं। नक्षत्र २७ होते हैं। राशियों की संख्या १२ है। सात वार सात ग्रहों पर आधारित हैं। मैं दिन में एक वार शौच जाता हूं। तेरापंथ का प्रारंभ दो सौ तीस वर्ष पहले हुआ था। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकर हैं। भगवान महावीर के ग्यारह गणधर थे। चौवालीस वर्ष पूर्व मेरी दीक्षा हुई थी।

प्रश्न

१. संख्यावाची शब्द किसे कहते हैं?
२. संख्यावाची शब्दों का प्रयोग किस लिंग में होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. संख्यावाची शब्दों में कौन से अकारान्त हैं और कौन से आकारान्त, इकारान्त और उकारान्त हैं ?

४. संख्यावाची शब्द कहां एकवचन में प्रयुक्त होते हैं और कहां बहुवचन में ?

५. नीचे लिखी संख्याओं के प्राकृत में संख्यावाची शब्द बताएं—
तीन, चार, पन्द्रह, बीस, पैंतीस, उनचालीस, चौतालीस, एक्यावन, पचपन, बासठ, इकहत्तर, उन्नासी निन्यानवे, दस हजार, तीन सौ, असंख्येय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (१)

शब्द संग्रह (शाक वर्ग १)

करेला—कारेल्लयं, कारिल्ली (दे.)
परवल—पडोलो, पडोला
बैंगन—वितागी, वायंगणं (दे.)
खीरा, काकडी—कक्कडी
मूली—मूलगं
आलु—आलू (पुं, न)
पपीते का शाक—महुकक्कडीसागो
चने का शाक—चणगसागो
मक्का—मकाय सागो, महाकाय सागो (सं)
पालक—पालक्का
अदरख—सिंगबेरं
प्याज—पलंडू (पुं)
लहसुन—लसुणं
वत्थुआ—वत्थुलो
लौकी—अलाउं
केले का शाक—केली
ग्वारफली—गोराणी, दढ बीया, वाउइया (वाकुचिया)
टमाटर—रत्तंगो (सं)

धातु संग्रह

आ (या)—जाना
आउंछ—खींचना, जोतना
आअक्ख—कहना
आअर (आदृ)—आदर करना
आइ (आ दा)—लेना
आइंच—सींचना, छिडकना
आयंव—कांपना, हिलना
आयम—आचमन करना
आयर—आचरण करना
आयल्ल—लटकना

संयुक्त व्यंजन—संयुक्त व्यंजनों को होने वाले आदेश क, ख आदि क्रम से दिए जा रहे हैं। आदेश के बाद व्यंजन द्वित्व हो जाते हैं।

क, ख, ग, घ, च आदेश—

नियम २९७ (शक्त-मुक्त-दष्ट-रुग्ण-मृदुत्वे को वा २।२) शक्त, मुक्त, दष्ट, रुग्ण और मृदुत्व शब्द के संयुक्त को क आदेश विकल्प से होता है।

क्त > क—शक्तः (सक्को, सत्तो)। मुक्तः (मुक्को, मुत्तो)।
ग्ण > क—रुग्णः (लुक्को, लुग्गो)।
त्व > क—मृदुत्वं (माउक्कं, माउत्तणं)।
ष्ट > क—दष्टः (डक्को, दट्ठो)।

नोट १—सक्को और मुक्को ये दो शब्द नियम २१६ क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् १।१७७) के अपवाद रूप हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम २६८ (क्षः खः क्वचित्तु छ-झौ २।३) क्ष को ख होता है। कहीं-कहीं पर छ और झ होता है।

क्ष > ख—क्षयः (खओ) क्षमा (खमा) क्षीणं (खीणं) क्षीरं (खीरं) इक्षुः (इक्खू) ऋक्षः (रिक्खो) मक्षिका (मक्खिआ) लक्षणं (लक्खणं)।

नियम २६६ (ष्क-स्कयो र्नाम्नि २।४) ष्क और स्क को ख आदेश होता है संज्ञा अर्थ में।

ष्क > ख—पुष्करं (पोक्खरं) पुष्करिणी (पोक्खरिणी) निष्कं (निक्खं)।

स्क > ख—अवस्कन्दो (अवक्खरो) अवस्करः (अवक्खरो) उपस्करः (उवक्खरो) उपस्कृतं (उवक्खडं) स्कन्धः (खंधो) स्कन्धावारः (खंधावारो)।

क्ष्ण > ख—तीक्ष्णं (तिक्खं) (नियम ३६६ से)।

नियम ३०० (शुष्क-स्कन्दे वा २।५) शुष्क और स्कन्ध शब्द के संयुक्त को ख विकल्प से होता है।

ष्क > ख—शुष्कं (सुक्खं, सुक्कं)।

स्क > ख—स्कन्दः (खन्दो, कन्दो)।

नियम ३०१ (स्तम्भे स्तो वा २।८) स्तम्भ शब्द के स्त को ख विकल्प से होता है।

स्त > ख—स्तम्भो (खम्भो, थम्भो)।

नियम ३०२ (स्थाणावहरे २।७) स्थाणु शब्द के स्थ को ख आदेश होता है, वह महादेव का वाचक न हो तो।

स्थ > ख—स्थाणुः (खाणू) ठूठा वृक्ष।

नियम ३०३ (क्ष्वेटकादौ २।६) क्ष्वेटक आदि शब्दों के संयुक्त को ख होता है।

क्ष्व > ख—क्ष्वेटकः (खेडओ) विष। क्ष्वोटकः (खोडओ)।

स्फ > ख—स्फोटकः (खोडओ)। स्फेटकः (खेडओ)। स्फेटिकः (खेडिओ)।

नियम ३०४ (रक्ते गो वा २।१०) रक्त शब्द के संयुक्त को ग विकल्प से होता है।

क्त > ग—रक्तः (रग्गो, रत्तो)।

नियम ३०५ (शुल्के ङ्गो वा २।११) शुल्क शब्द के ल्क को ङ्ग आदेश विकल्प से होता है।

ल्क > ङ्ग—शुल्कं (सुङ्गं, सुक्कं)।

नियम ३०६ (त्यो चैत्ये २।१३) चैत्य शब्द को छोडकर त्य को च होता है।

त्य > च—सत्यं (सच्चं) प्रत्ययः (पच्चओ) त्यागी (चाई) त्यजति (चयइ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ३०७ (प्रत्यूषे षश्च हो वा २।१४) प्रत्यूष शब्द के त्य को च होता है।

त्य 7 च—प्रत्यूषः (पच्चूहो, पच्चूओ)।

नियम ३०८ (कृत्ति-चत्वरे चः २।१२) कृत्ति और चत्वर के संयुक्त को च होता है।

त्त 7 च—कृत्तिः (किच्ची)।

त्व 7 च—चत्वरं (चच्चरं)।

नियम ३०९ (त्व-थ्व-द्व-ध्वां च-छ-ज-झाः क्वचित् २।१५) त्व को च, थ्व को छ, द्व को ज, ध्व को झ होता है।

त्व 7 च—भुक्त्वा (भोच्चा) ज्ञात्वा (णच्चा) कृत्वा (किच्चा) श्रुत्वा (सोच्चा) दत्वा (दच्चा)।

प्रयोग वाक्य

सक्करारोगे कारेल्लयं उवओगि अत्थि। सागेसु पडोलो मुल्लवं (मूल्यवान्) भवइ। जइणा वायंगणं न खाअंति। कक्कडी गुणेण सीयला अत्थि। मूलयं वाउणासणं होइ। आलू बारहमासम्मि चेअ आवणे लभइ। पालक्का सत्थाय लाहअरा अत्थि। दालीए सिंगबेरं केण दिण्णं? गिम्हकाले पलंडुस्स पओओ अहियो भवइ। लसुणस्स अवलेहो भवइ, सागो वि भवइ। वत्थुलो कत्थ उप्पज्जइ? अलाउं महुरं हवइ। केलीए सागं अहं रुइणा भक्खामि। पुरिसा तंडुलेण सह चणगसागं भुंजंति। मेवाडदेसवासिणो मकाय-सागं पमोएण खाअंति। गोराणीए सागो बज्जरीरुट्टिआइ सह पाओ रुइअरो लग्गइ। रत्तंगस्स सागो वि रत्तं वड्ढइ।

धातु प्रयोग

बालो पढिउं विज्जालयं आइ। किसीवलो (किसान) खेत्तं आउंछइ। सोहणो णियवत्तं आअक्खइ। सुगिहिणो अतिहिं आअरइ। सो तुवाणं सिक्खं आइइ। सेट्ठी णियं उज्जाणं आइंचइ। वरिसाए अद्दीभूयो तस्स कायो आयंवइ। तुमं साहुणियमा सम्मं (अच्छी तरह) आयरसि। तिस्स केसकलावो खंधम्मि आयल्लइ। मोहणो हडमाणदेवालये आयमइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

कल मैंने करेला का शाक खाया था। परवल का शाक मेरे पिताजी खाते थे। मेरी बहन ने बेंगन का शाक कभी नहीं खाया। मूली मौसी के गांव में पैदा होती है। आलू जमीन के भीतर फलता है। बुआ पालक का शाक शाम को नहीं खाती है। तुम्हारी भाभी प्रतिदिन अदरख खाती है। गर्मी में प्याज और दही मेरे दादा बहुत खाते थे। मेरा मामा प्याज कभी नहीं खाएगा। मामी ने लहसुन का शाक किसके लिए बनाया है? वत्थुए का शाक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसकी भतीजी नहीं खाती है। लौकी पेट के लिए हितकर है। चने का शाक प्रशांत भी खाता है। मक्की का शाक मेरे स्वास्थ्य के अनुकूल है। ग्वारफली का शाक तेल में बनाया जाता है। टमाटर में बीज बहुत होते हैं इसलिए कुछ लोग नहीं खाते हैं। केले का शाक कौन नहीं खाना चाहता है? क्या तुम्हारे लिए लौकी का शाक बनेगा?

धातु का प्रयोग करो

मैं कल कालेज नहीं जाऊंगा। वर्षा होने पर भी किसान खेत को क्यों नहीं जोतता है? प्रिंसिपल अध्यापक से क्या कहता है? कुलपति का सदा आदर करना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थी से धन लेता है। नाना अपने बाग को सींचता है। सभा में भाषण देने वाला मोहन आज बोलते समय क्यों कांपता है? वह पांच महाव्रतों का आचरण करता है। वृक्ष पर क्या लटकता है? शिष्य गुरु के पाद प्रक्षालन का आचमन करता है।

प्रश्न

१. ख आदेश किन संयुक्त वर्णों को होता है? उदाहरण दो।
२. मुक्तः का मुक्को रूप शुद्ध है या मुत्तो? और किस नियम से?
३. नीचे लिखे शब्दों को इस पाठ के नियमों से सिद्ध करो—किच्ची, चाई, सुक्कं, पच्चओ, उवक्खडं, रग्गो, खंदो, लुक्को।
४. करेला, परवल, बैंगन, खीरा (काकडी) मूली, आलु, पालक, अदरख, प्याज, लहसुन, वत्थुआ, लौकी, केले का शाक, ग्वारफली, टमाटर—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. आ, आअंछ, आअक्ख, आअर, आइ, आइंच, आयंव, आयम, आयर और आयल्ल धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (२)

शब्द संग्रह (शाक वर्ग २)

पोदिना—पुदिणो, रुइस्सो (सं)
चौलाई—तंदुलेज्जगो
गोभी—गोजीहा (सं)
तोरई—घोसाडइ, घोसालइ (सं)
कोहला—कुम्हडी
शकरकंदी—रत्तालु (सं)
मकोय—कागमाई (सं)
फली—सिंबा
सांगरी—समीफलं
धनिया—कुत्थुंभरी
भिंडी—भिण्डा (सं)
टिंडा—डिंडिसो (सं)
गाजर—गाजरं, गिंजणं (सं)
हल्दी—हलद्दा, हलद्दी
मटर—कलायो
चोपतियासाग—सोत्थिओ
सूरनकंद—सूरणं
केर—करीरफलं

चटनी—अवलेहो
घाव—वणो
शाक—सागो
अपक्व—आमो

धातु संग्रह

आया—आना
आया (आ+दा) ग्रहण करना, लेना
आयाम—शौच करना, शुद्धि करना
आयाम—देना, दान करना
आयार (आ+कारय्)—बुलाना आह्वान करना
आयास—तकलीफ देना, खिन्न करना
आरज्झ—आराधना करना
आरड—चिल्लाना, बूम मारना
आरस—चिल्लाना, बूम मारना
आयाव—आतापना लेना, सूर्य के ताप में शरीर को थोडा तपाना

छ, ज, झ, ञ आदेश—

नियम ३१० (छोक्ष्यादौ २।१७) अक्षि आदि शब्दों के संयुक्त को छ आदेश होता है।

क्ष>छ—अक्षि (अच्छिं) इक्षुः (उच्छू) लक्ष्मी (लच्छी) कक्षः (कच्छो) क्षुतं (छीअं) क्षीरं (छीरं) सदृक्षः (सरिच्छो) वृक्षः (वच्छो) मक्षिका (मच्छिआ) क्षेत्रं (छेत्तं) क्षुध् (छुहा) दक्षः (दच्छो) कुक्षिः (कुच्छी) वक्षस् (वच्छं) क्षुण्णः (छुण्णो) कक्षा (कच्छा) क्षारः (छारो) कौक्षेयकं (कुच्छेअयं) क्षुरः (छुरो) उक्षा (उच्छा) क्षतं (छयं) सादृश्यं (सारिच्छं)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ३११ (क्षमायां कौ २।१८) क्षमा शब्द पृथिवीवाचक हो तो उसके क्ष को छ आदेश होता है।

क्ष>छ—क्षमा (छमा) पृथिवी। क्ष्मा (छमा)।

नियम ३१२ (क्षण उत्सवे २।२०) क्षण शब्द उत्सववाचक हो तो क्ष को छ आदेश होता है।

क्ष>छ—क्षणः (छणो) उत्सव।

नियम ३१३ (रुक्षे वा २।१९) रुक्ष शब्द के क्ष को छ आदेश विकल्प से होता है।

क्ष>छ—रुक्षं (रिच्छं) रिक्खं (**नियम २९८ से**)।

थ्व>छ—पृथ्वी (पिच्छी)। (**नियम ३०९ से**)।

नियम ३१४ (स्पृहायाम् २।२३) स्पृहा शब्द के स्प को छ आदेश होता है।

स्प>छ—स्पृहा (छिहा)।

नियम ३१५ (ह्रस्वात् थ्य-श्च-त्स-प्सामनिश्चले २।२१) ह्रस्व स्वर से परे थ्य, श्च, त्स, प्स को छ आदेश होता है।

थ्य>छ—पथ्यं (पच्छं) पथ्या (पच्छा) मिथ्या (मिच्छा)।

श्च>छ—पश्चिमं (पच्छिमं) आश्चर्यं (अच्छेरं) पश्चात् (पच्छा) वृश्चिकः (विंछिओ)।

त्स>छ—उत्साहः (उच्छाहो) उत्सन्नः (उच्छन्नो) चिकित्सति (चिइच्छइ) मत्सरः (मच्छरो) मत्सरः (मच्छलो) संवत्सरः (संवच्छरो) संवत्सरः (संवच्छलो)।

प्स>छ—लिप्सति (लिच्छइ) जुगुप्सति (जुगुच्छइ)। अप्सरा (अच्छरा)।

नियम ३१६ (सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा २।२२) सामर्थ्य, उत्सुक, उत्सव—इन शब्दों के संयुक्त को छ आदेश विकल्प से होता है।

र्थ्य>छ—सामर्थ्यम् (सामच्छं, सामत्थं)।

त्स>छ—उत्सुकः (उच्छुओ, ऊसुओ)। उत्सवः (उच्छवो, ऊसवो)।

नियम ३१७ (द्य-य्य-र्यां जः २।२४) द्य, य्य और र्य को ज आदेश होता है।

द्य>ज—मद्यम् (मज्जं) अवद्यम् (अवज्जं) वेद्यो (वेज्जो) द्युतिः (जुई) द्योतः (जोओ) अद्य (अज्ज)।

य्य>ज—जय्यो (जज्जः) शय्या (सेज्जा)।

र्य>ज—भार्या (भज्जा) कार्यम् (कज्जं) वर्ज्यम् (वज्जं) आर्यः (अज्जो) पर्यायः (पज्जाओ) पर्याप्तम् (पज्जत्तं) मर्यादा (मज्जाया) आर्यपुत्रः (अज्जपुत्तो)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ३१८ (अभिमन्यौ जञ्जौ वा २।२५) अभिमन्यु शब्द के न्य को ज और ञ्ज आदेश विकल्प से होता है।

न्य>ज, ञ्ज—अभिमन्युः (अहिमज्जू, अहिमञ्जू)

द्व>ज—विद्वान् (विज्जं) । **(नियम ३०९ से)**

ज्ञ>ज—ज्ञानं—जाणं, **(नियम ३९८ से)** ।

नियम ३१९ (साध्वस-ध्य-ह्यां झः २।२६) साध्वस शब्द के ध्व तथा ध्य और ह्य को झ आदेश होता है।

ध्व>झ—साध्वसम् (सज्झसं) ।

ध्य>झ—बध्यते (बज्झए) ध्यानं (झाणं) ध्यायति (झायइ) स्वाध्यायः (सज्झाओ) साध्यं (सज्झं) विन्ध्यः (विञ्झो) उपाध्यायः (उवज्झाओ) ।

ह्य>झ सह्यः (सज्झो) मह्यम् (मज्झं) गुह्यम् (गुज्झं) नह्यति (णज्झइ) ।

(नियम २९८ क्वचित् छझौ) से।

क्ष>झ—क्षीणं (झीणं) क्षीयते (झिज्जइ) प्रक्षीणं (पज्झीणं) ।

ध्व>झ—बुद्ध्वा (बुज्झा) **(नियम ३०९ से)**।

नियम ३२० (ध्वजे वा २।२७) ध्वज शब्द के ध्व को झ विकल्प से होता है।

ध्व>झ—ध्वजः (झओ, धओ) ।

नियम ३२१ (इन्धौ झा २।२८) इन्धि धातु के न्ध को झा आदेश होता है।

न्ध>झ—इन्धे (इज्झाइ) समिन्धे (समिज्झाइ) विइन्धे (विज्झाइ) ।

नियम ३२२ (वृश्चिके श्चेञ्चुर्वा २।१६) वृश्चिक शब्द के श्चि को ञ्चु आदेश होता है।

श्चि>ञ्चु—वृश्चिकः (विञ्चुओ) ।

प्रयोग वाक्य

पुदिणस्स अवलेहं भक्खिउं इच्छामि। तंदुलेज्जगसागो केण कओ तम्मि लोणं नत्थि ? गोजीहाए कयाइ जीवा भवंति। मज्झगिहे घोसाडई विज्जइ। तुमं कुम्हंडि कत्थ पाउणिस्ससि ? अंगारपक्करत्तालू अहियो साऊ भवइ। कागमईसागो अंतरवणे उवओगी भवइ। कलायसिंबाए वि सागो भवइ। समीफलसागो मलावरोहं भंजइ। कुत्थुंभरीए अवलेहं को न इच्छइ ? आमभिंडासागो मज्झं रोयइ। डिंडिसो मरुभूमीए भवइ। गाजरसागो णियवण्णस्स सरिक्खं भुंजमाणस्स सरीरं करेइ। हलद्दाए सागो मए सइ (एक बार) भुत्तो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलायम्मि रत्तमिरिअं अहियं अत्थि। सोवत्थिअसागो भगवया महावीरेणावि भुत्तो। सूरणो रुक्खो भवइ। गिम्हकाले जणा खट्टकरीरफलाण सागं रुइए (रुचि से) भक्खंति।

धातु प्रयोग

तुमं अत्थ कया आयाहिसि? तुज्झ पोत्थयं अहं आयाहिमि। पच्चूहे सव्वे जणा आयामंति। दाणवीरो सोहणो धणं आयामइ। गुरू केण कारणेण सीसा आयारइ? मुणी सुहलालो गिम्हकाले सिलापट्टम्मि आयाविसु। सासू धणलोभत्तो पुत्तवहूं आयासइ। सो णाणं आरज्झइ। पिउस्स मच्चुम्मि पुत्तो आरडइ आरसइ वा।

प्राकृत में अनुवाद करो

पुदिना की चटनी किसने बनाई है? वह दाल में धनिए की चटनी मिलाकर खाता है। चौलाई के शाक से कब्ज मिटती है। गोभी के पत्तों का शाक मैं खा सकता हूं। बाजार में आज तोरई का शाक अधिक है। कोहला तुम किस स्थान से लाए हो? शकरकंदी के शाक में उतनी मधुरता नहीं है। मकोय शाक त्रिदोष को नाश करता है। आज मैं मटर की फली का शाक नहीं खाऊंगा। सांगरी का शाक स्वास्थ्य के लिए हितकर है। कच्ची भिंडी का शाक पेट की शुद्धि करता है। टिंडा के भीतर लाल मीर्च देकर बना हुआ शाक कौन नहीं खाता है? गाजर रक्त को बढाती है। हल्दी का शाक वायु को नाश करता है। मटर का शाक आजकल सब जगह मिलता है। चोपतिया साग को बंगाल के लोग अधिक खाते हैं। सूरनकंद तुम कल कहां से लाओगे? केर का शाक बहुत लाभकारी होता है।

धातु का प्रयोग करो

वह अपने घर से आता है। तुम मुझे शिक्षा दो मैं सम्यक् ग्रहण करूंगा। प्रतिदिन मैं समय पर शौच जाता हूं। जो दूसरों को देता है वह अधिक पाता है। भगवान महावीर ने अपने शिष्यों को आह्वान किया। भिक्षु स्वामी ने नदी में आतापना ली। किसी को तकलीफ मत दो। मैं अपने आराध्य की आराधना करता हूं। वह अपनी माता की मृत्यु सुनकर खूब रोया।

प्रश्न

१ नीचे लिखे शब्दों में बताओ इस पाठ के किस नियम से क्या आदेश हुआ है?

अहिमज्जू, सज्झसं, कुच्छी, छणो, रिच्छं, विछिओ, सामच्छं, सावज्जो, जुई, मज्झं, झओ, इज्झाइ, अज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. पोदीना, चौलाई, गोभी, तोरई, कोहला, शकरकंदी, मकोय, फली का शाक, सांगरी, धनिया, भिंडी, टिंडा, गाजर, हल्दी, मटर, चोपातिया, सूरनकंद, केर—इन शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

३. आया, आया, आयाम, आयाम, आयर, आयास, आरज्झ, आरड, आरस, आयाव धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

४. पच्छं, भस्सं, सहावो, गुलं, साउज्जं, कंती, सिंगबेरं, गोराणी, पडोल शब्द को वाक्य में प्रयोग करो और हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (३)

शब्द संग्रह (औषधि वर्ग १)

पीपर—पिप्पली
लौंग—लवंगो, पउमा
पीपरामूल—पिप्पलीमूलं
अश्वगंध—अस्सगंधा
वंशलोचन—वंसरोअणा
अडूसा—वासओ
चूना—चुण्णं
कालीमिर्च—कण्हमिरिअं
सोंठ—सुंठी
गिलोय—गलोई, वच्छादणी
गोखरु—गोक्खुरो
फिटकडी—सोरट्ठिया
जमालगोटा—सारओ
खदिरसार (कत्था)—सिअखइरो (सं)

० ० ० ० ०

जुकाम—पडिसायो
स्मृति—सई (स्त्री)
स्वच्छ—अच्छं
उदर—उअरं
कृमि—किमी
चामर—सीतं

धातु संग्रह

आराह्—भक्ति करना
आरूस—क्रोध करना, रोष करना
आलंब—आश्रय लेना, सहार लेना
आलक्ख—चिह्न से पहचानना
आलव—बातचीत करना
आलिंग—गले लगाना आलिंगन करना
आलिप—पोतना, लेप करना
आली—आसक्त होना
वीअ—हवा डालना
उज्जाल—जलाना

ट, ठ, ड, ढ आदेश

नियम ३२३ (वृत्त-प्रवृत्त-मृत्तिका-पत्तन-कदर्थिते टः २।२९) इन शब्दों के संयुक्त को ट आदेश होता है।

त्त > **ट**—वृत्तः (वट्टो) प्रवृत्तः (पयट्टो) मृत्तिका (मट्टिआ) पत्तनं (पट्टणं)
र्थ > **ट**—कदर्थितः (कवट्टिओ)

नियम ३२४ (र्तस्याधूर्त्तादौ २।३०) र्त को ट आदेश होता है। धूर्त्त आदि शब्दों को छोडकर।

र्त > **ट**—कैवर्तः (केवट्टो) वर्ती (वट्टी) नर्तकी (नट्टइ) वर्तुलः (वट्टुलो) जर्तः (जट्टो) वर्तुलं (वट्टुलं) राजवर्तकं (रायवट्टयं)।

नियम ३२५ (पर्यस्ते थ-टौ २।४७) पर्यस्त शब्द के स्त को क्रमशः थ और ट आदेश होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त > **ट** — पर्यस्त: (पल्लट्टो)

नियम ३२६ (थठावस्पन्दे २।९) स्तम्भ के स्त को थ और ठ आदेश होता है, स्पन्द का अभाव (गतिहीन) अर्थ हो तो।

स्त > ठ—स्तम्भ: (ठम्भो) स्तम्भ्यते (ठम्भिज्जइ)

नियम ३२७ (ठोस्थि-विसंस्थुले २।३२) अस्थि और विसंस्थुल शब्दों के स्थ को ठ आदेश होता है।

स्थ > ठ—अस्थि (अट्ठी), विसंस्थुलं (विसठुलं)

नियम ३२८ (स्त्यान-चतुर्थार्थे वा २।३३) स्त्यान, चतुर्थ और अर्थ शब्द के संयुक्त को ठ आदेश विकल्प से होता है।

त्य > **ठ**—स्त्यानं (ठीणं, थीणं)

र्थ > **ठ**—चतुर्थ: (चउट्ठो, चउत्थो) अर्थ: (अट्ठो) प्रयोजन

नियम ३२९ (ष्टस्यानुष्ट्रेष्टा-संदष्टे २।३४) उष्ट्र आदि शब्दों को छोडकर ष्ट को ठ आदेश होता है।

ष्ट > **ठ**—यष्टि: (लट्ठी) मुष्टि: (मुट्ठी) दृष्टि: (दिट्ठी) सृष्टि: (सिट्ठी) पुष्ट: (पुट्ठो) कष्टं (कट्ठं) सुराष्ट्रा (सुरट्ठा) इष्ट: (इट्ठो) अनिष्टं (अणिट्ठं)।

ष का लोप शेष वर्ण द्वित्व

ष्ठ > **ठ**—कोष्ठागार: (कोट्ठागारो) सुष्ठु (सुट्ठु) इष्टा (इट्टा)। उष्ट्र: (उट्टो)। संदष्ट: (संदट्टो)।

नियम ३३० (स्तब्धे ठ-ढौ २।३९) स्तब्ध के स्त को ठ और ब्ध को ढ आदेश होता है।

स्त > **ठ**—स्तब्ध: (ठड्ढो)

नियम ३३१ (गर्ते डः २।३५) गर्त शब्द के र्त को ड आदेश होता है।

र्त > **ड**—गर्त: (गड्डो) (ट का अपवाद)

नियम ३३२ (संमर्द-वितर्दि-विच्छर्द-च्छर्दि-कपर्द-मर्दिते र्दस्य २।३६) इन शब्दों के संयुक्त र्द को ड आदेश होता है।

र्द > **ड**—संमर्द: (संमड्डो) वितर्दि: (विअड्डी) विच्छर्द: (विच्छड्डो) छर्दि: (छड्डी) कपर्द: (कवड्डो) मर्दित: (मड्डिओ) संमर्दित: (संमड्डियो)।

नियम ३३३ (गर्दभे वा २।३७) गर्दभ शब्द के र्द को ड आदेश विकल्प से होता है।

र्द > **ड**—गर्दभ: (गड्डहो, गद्दहो)

नियम ३३४ (दग्ध-विदग्ध-वृद्धि-वृद्धे ढः २।४०) दग्ध, विदग्ध, वृद्धि, वृद्ध शब्दों के संयुक्त को ढ आदेश होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्ध > ढ—दग्धः (दड्ढो) विदग्धः (विअड्ढो)
द्ध > ढ—वृद्धिः (वुड्ढी) वृद्धः (वुड्ढो)
ब्ध > ढ—स्तब्धः (ठड्ढो) (**नियम ३३० के अनुसार**)

नियम ३३५ (श्रद्धर्द्धि-मूर्धार्धेन्ते वा २।४१) श्रद्धा, ऋद्धि, मूर्धन् और अर्ध शब्दों के अंतिम संयुक्त र्ध को ढ आदेश विकल्प से होता है।

र्ध > ढ—श्रद्धा (सड्ढा, सद्धा) ऋद्धिः (इड्ढी, रिद्धी) मूर्ध (मुण्ढा, मुद्धा)। अर्धं (अड्ढं, अद्धं)

प्रयोग वाक्य

पिप्पलीए सह दुद्धं पाअव्वं। बारहमुहुत्तपेरन्तं पाणिअम्मि दिण्णे लवंगं ठाऊण सलिलेण सह पाअव्वं। अस्सगंधा भक्खणेण अस्ससमो बलो भवइ। पिप्पलीमूलं सइवड्ढयं हवइ। बालो वंसरोअणं खाअइ। कण्हमिरिअं घयेण सह भोयणे बहुलाभअरं भवइ। सुंठीए पओगो अणेगहा होइ। वच्छादणीइ उअरस्स सुद्धी भवइ। गोक्खुरेण अच्छं मुत्तं आयाइ। वासओ कफणासओ भवइ। सोरट्ठियाए उवओगो अणेगेसु कज्जेसु भवइ। वणे चुण्णस्स उवओगो होइ। सिअखइरेण दंता दढा भवंति। सारएण उअरस्स किमिणो णस्संति।

धातु प्रयोग

किं तुमं पासणाहं आराहसि? पिआ पुत्तं आरूसइ। सो रुक्खं आरोहइ। संघं आलंबिऊणं मुणी साहणं करेइ। तुमं परुप्परं किं आलवसि? पिआ पुत्ति आलिंगइ। रामो भरहं आलिंगइ। उच्छवे दक्खिणपएसवासिणो गिहं आलिंपति। तुमं कहं रूवम्मि आलीसि? अहं तुमं आलक्खामि। मुणी सीतेण न सयं वीअइ। सीया अग्गिं उज्जालइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पीपल मंदाग्नि को दूर कर भूख बढाती है। फुनसी पर लौंग लगाने से पीडा कम होती है। अश्वगंध बल देनेवाली औषधि है। पीपरामूल दिमाग की शून्यता को मिटाती है। वंशलोचन हृदय को दृढ करता है। कालीमिर्च भूख को जगाती है। सूंठ अनेक रोगों में उपयोगी है। गिलोय पेट की शुद्धि करता है और वातरोग को दूर करता है। गोखरु से मूत्र का अवरोध मिटता है। अडूसा कफनाशक है और श्वास रोग में काम आता है। फिटकडी से जुकाम (पडिसायो) मिटता है। चूना हड्डी को मजबूत (दढ) बनाता है। जमालगोटा से मल पतला होकर अनेक वार निकलता है। कत्था गुण से गरम होता है।

धातु का प्रयोग करो

वह प्रतिदिन शिव की आराधना करता है। मन के प्रतिकूल बात

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनकर वह शीघ्र रोष करता है। जो ऊपर चढता है वही नीचे गिरता है। महापुरुष का आलम्बन लेकर छोटा व्यक्ति भी ऊपर चढ जाता है। आपकी आवाज सुनकर मैंने आपको पहचान लिया। उसके साथ बातचीत मत करो। माता बच्चे को गले लगाती है। निर्धन व्यक्ति अपने घर को बार-बार पोतता है। वह भींत पर गौतम स्वामी का चित्र बनाता है। राम अपने पिता को हवा डालता है। विमला अग्नि क्यों नहीं जलाती है ?

प्रश्न

१. इस पाठ में किन-किन संयुक्त वर्णों को ट आदेश होता है ?

२. नीचे लिखे शब्दों को इस पाठ के नियमों से सिद्ध करो—
विसंठुलं, ठीणं, इट्टो, सुरट्ठा, ठड्ढो, गड्डो, चउट्ठो, मड्डिओ, विअड्ढो वुड्ढो।

३. पीपर, लौंग, पीपरामूल, अश्वगंध, वंशलोचन, अडूसा, चूना, काली मीर्च, सोंठ, गिलोय, गोखरु, फिटकडी, जमालगोटा, कत्था—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

४. आराह, आरूस, आलंब, आलक्ख, आलव, आलिंग, आलिप, वीअ, उज्जाल और आली धातुओं के अर्थ बताओ तथा उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (४)

शब्द संग्रह (औषधि वर्ग २)

आमला—धत्ती
बहेडा—बहेडओ
मेथी—मेथी (सं)
ईसबगोल—ईसिगोलो (सं)
णिद्धवीयं (सं)
जायफल—जाइफलं
जावित्री—जाइवत्तिआ
छोटी इलायची—सुहुमेला
नागकेसर—णागकेसरो
हर्र—हरडई, अभया
त्रिफला—तिफला
अजवायन—अंजम (वि) दे.
ईसबगोलभुसी—ईसिगोलवुसं (सं)
दालचीनी—चोअं (दे.) चोचं (सं)
इलायची—एला, थूलेला, तिपुडा (सं)
सौंफ—सयपुप्फा
गोरोचन—गोलोअणो (सं)

० ० ० ०

भुना हुआ—भज्जिअ (वि)

धातु संग्रह

कंख—चाहना, बांछना
कंप—कांपना
कज्जलाव—डूबना
कडक्ख—कटाक्ष करना
कढ (क्वथ्)—उबालना, क्वाथ करना
कत्थ—श्लाघा करना, प्रशंसा करना
कप्प (कृप्)—काम में आना, कल्पना
कयत्थ—हैरान करना
कर—करना
कराल—फाडना, छेद करना

ण,त,थ,ध,न आदेश

नियम ३३६ (म्न-ज्ञोर्णः १।४१) म्न और ज्ञ को ण आदेश होता है।
म्न>ण—निम्नं (निण्णं)। प्रद्युम्नः (पज्जुण्णो)
ज्ञ>ण—आज्ञा (आणा)। ज्ञानं (णाणं)। संज्ञा (सण्णा)
विज्ञानं (विण्णाणं)। प्रज्ञा (पण्णा)

नियम ३३७ (पञ्चाशत्-पञ्चदश-दत्ते २।४३) पञ्चाशत्, पञ्चदश और दत्त शब्द के संयुक्त को ण आदेश विकल्प से होता है।
ञ्च>ण—पञ्चाशत् (पण्णासा) पञ्चदश (पण्णरह)
त्त>ण—दत्तं (दिण्णं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ३३८ (वृन्ते ण्टः २।३१) वृन्त शब्द के न्त को ण्ट आदेश होता है।

न्त>ण्ट—वृन्तं (वेण्टं) तालवृन्तं (तालवेण्टं)

नियम ३३९ (कन्दरिका-भिन्दिपाले ण्डः २।३८) कन्दरिका और भिन्दिपाल के न्द को ण्ड आदेश होता है।

न्द>ण्ड—कन्दरिका (कण्डलिआ)। भिन्दिपालः (भिण्डिवालो)।

नियम ३४० (सूक्ष्म-श्न-ष्ण-स्न-ह्न-ह्ण-क्ष्णां ण्हः २।७५) सूक्ष्म शब्द तथा श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण और क्ष्ण को ण्ह आदेश होता है।

श्न>ण्ह—प्रश्नः (पण्हो)। शिश्नः (सिण्हो)

ष्ण>ण्ह—विष्णुः (विण्हू)। जिष्णुः (जिण्हू)। कृष्णः (कण्हू)। उष्णीषं (उण्हीसं)

स्न>ण्ह—ज्योत्स्ना (जोण्हा) स्नातः (ण्हाओ) प्रस्नुतः (पण्हुओ)

ह्न>ण्ह—वह्निः (वण्ही) जह्नुः (जण्हू)

ह्ण>ण्ह—पूर्वाह्णः (पुव्वाण्हो) अपराह्णः (अवरण्हो)

क्ष्ण>ण्ह—तीक्ष्णं (तिण्हं) श्लक्ष्णं (सण्हं)

क्ष्म>ण्ह—सूक्ष्मं (सण्हं)

नियम ३४१ (धात्र्याम् २।८१) धात्री शब्द में र का लुक् विकल्प से होता है।

त्र>त—धात्री (धत्ती)। ह्रस्व करने से पहले र का लोप करने से धाई बनेगा।

नियम ३४२ (स्तस्य थो समस्त-स्तम्बे २।४५) समस्त और स्तम्ब को छोडकर स्त को थ आदेश होता है।

स्त>थ—हस्तः (हत्थो) स्तुतिः (थुई) स्तोत्रं (थोत्तं) स्तोकं (थोअं) प्रस्तरः (पत्थरो) प्रशस्तः (पसत्थो) अस्ति (अत्थि) स्वस्तिः (सत्थि)

स्त>थ—स्तम्भः (थंभो)। **(नियम ३२६ से)**

नियम ३४३ (स्तवे वा २।४६) स्तव शब्द के स्त को थ आदेश विकल्प से होता है।

स्त>थ—स्तवः (थओ, तवो)

स्त>थ—पर्यस्तः (पल्लत्थो) **(नियम ३२५ से)**

त्स>थ—उत्साहः (उत्थारो, उच्छाहो) **(नियम २८४ से)**

नियम ३४४ (आश्लिष्टे ल-धौ २।४९) आश्लिष्ट शब्द के श्ल को ल तथा ष्ट को ध आदेश होता है।

ष्ट>ध—आश्लिष्टः (आलद्धो)

नियम ३४५ (मन्यौ न्तो वा २।४४) मन्यु शब्द के न्य को न्त आदेश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकल्प से होता है।
न्य 7 न्त—मन्युः (मन्तू, मन्नू)

नियम ३४६ (चिन्हे न्धो वा २।५०) चिन्ह शब्द के न्ह को न्ध आदेश विकल्प से होता है।
न्ह 7 न्ध—चिन्हं (चिन्धं, इन्धं, चिण्हं)

नियम ३४७ (मध्याह्ने हः २।८४) मध्याह्न शब्द के ह का लुक् विकल्प से होता है।
ह्न 7 न—मध्याह्नः (मज्झन्नो, मज्झण्हो)

प्रयोग वाक्य

दंतेहिं चव्विऊण (चबाकर) हरडईए भक्खणे उअराग्गी वड्ढइ। जं जाइफलं णिद्धं, गुरुं, सद्दं य करेइ तं उत्तमं भवइ। जाइवत्तिआ जाइफलस्स तया (त्वचा) चिअ भवइ। अजमो अरसं (बवासीर) णासइ। ईसिगोलवुसं नीरेण सह भुंजिअव्वं, सीयलं भवइ। चोअं सुगंधमयं सुसाउं य भवइ। ईसिगोलो महुरो मलरोहगो य भवइ। एला रत्तपित्तणासिया भवइ। सुहुमेला सीयला होइ। धत्ती केसेसु नेत्तेसु य हियअरा अत्थि। बहेडओ अरस-पडिसायाइरोगेसु उवओगी होइ। मेथीबीयाण उवओगो चम्मस्स मिउत्तणट्ठं (मृदुता) भवइ। सुहुमेला सीयला भवइ। गोलोअणो अवमारं (पागलपन) नस्सइ। सयपुप्फा भक्खणे सुक्ककासे (सूखी खांसी में) लाभअरा भवइ। तिफलाए नीरेण नेत्तजोई वड्ढइ। णागकेसरो कोढं णासइ।

धातु प्रयोग

अहं किमवि न कंखामि। तस्स नाममत्तेण सो कंपइ। तुमं नईइ कहं कज्जलावीअ। पत्ती पइं कडक्खइ। माआ कं कढइ? सो अप्पाणं कत्थइ। इणं वत्थुं मं कप्पइ। तुमं मित्तं कहं कयत्थसि? सो कट्ठं करालेइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आमला के खट्टेपन (खट्टत्तणेण) से वायु का नाश होता है। बहेडा मस्तिष्क के लिए हितकारी है। मेथी शोथ (सूणिओ) को दूर करती है। ईसबगोल मल को बांधता है। जायफल तृषा (तण्हा) और शूल (सूलो) को दूर करती है। जावित्री खांसी और जडता को दूर करती है। छोटी ईलायची केलों के भारीपन को मिटाती है। भुनी हुई हर्र त्रिदोष का नाश करती है। त्रिफला कफ, पित्त को नाश करने वाली तथा प्रमेह (महुमेहणी) को दूर करनेवाली है। अजवायन वमन (वमण) को दूर करती है। ईसबगोल की भुसी शीतल होती है। दालचीनी शरीर को सुंदर करनेवाली है। इलायची पथरी (अस्सरी) को दूर करती है। सौंफ को पीसकर पीने से पेशाब की जलन मिटती है। गोरोचन उन्माद (उम्मायो) को दूर करता है। नागकेशर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुधिररोग (रक्तरोगों) में काम आता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम मुझसे क्या सहयोग चाहते हो? आवेग आने पर मनुष्य कांपता है। जो तैरता है वही डूबता है। यह लडकी किसकी ओर कटाक्ष करती है? वह औषधियों का क्वाथ करता है पर जानता नहीं। अपनी प्रशंसा मत करो। आपको क्या कल्पता है कृपाकर हमें बताओ। जो दूसरों को हैरान करता है वह स्वयं दुःख पाता है। आकाश में किस कारण से छेद होता है।

प्रश्न

१. ज्ञ को ण करनेवाला कौनसा नियम है? उदाहरण देकर स्पष्ट करो।
२. ण्ह आदेश किन संयुक्त वर्णों को होता है? नियम बताओ।
३. न्द, न्त, स्त, त्र और न्य संयुक्तवर्णों को क्या-क्या आदेश होता है?
४. नीचे लिखे शब्दों में इस पाठ के नियमों से क्या आदेश हुआ है?
चिन्धं, मज्झन्नो, आलद्धो, पल्लत्थो, ण्हाओ, धत्ती, वेण्टं, भिण्डिवालो।
५. आमला, हर्र, बहेडा, त्रिफला, मेथी, अजवायन, ईसबगोल, जायफल, जावित्री, दालचीनी, ईसबगोलभुसी, इलायची, सौंफ, गोरोचन, छोटी इलायची—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. कंख, कंप, कज्जलाव, कडक्ख, कढ, कत्थ, कप्प, कयत्थ और कराल धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (५)

शब्द संग्रह (धान्य वर्ग १)

मूंग—मुग्गो
उडद—मासो
जौ—जवो
मोठ—वणमुग्गो, मकुट्ठो (सं)
मक्का—मकायो, महाकायो (सं)
मटर—कलायो
खेंसारी—तिपुडो (सं)
चना—चणओ, चणो
बाजरा—बज्जरी (सं)
कुलथी—कुलत्थो, कुलमासो
साठीधान—साली
चवला—आलिसंदो
सावां—सामयो (सं)
शरबीज—चारुगो (सं)

० ० ०

पापड—पप्पडो
पोला—पोलं (दे०)
पदार्थ—पयत्थो

धातु संग्रह

कल—संख्या करना, गिनना
कव (कु) आवाज करना
कह (क्वथ्) उबालना
कास—कासना, खांसी की आवाज करना
कुच्छ—धिक्कारना, निंदा करना
किड्ड (क्रीड्) खेलना, क्रीडा करना
किर—फेंकना, बिखेरना
किलिस—थक जाना
कीण—खरीदना

प, फ, ब, भ, म आदेश—

नियम ३४८ (ड्म-क्मो २।५२) ड्म और क्म को प आदेश होता है।

ड्म>प—कुड्मलं (कुम्पलं)

क्म>प—रुक्मिणी (रुप्पिणी)। रुक्मी (रुप्पी)।

क्म>प—(क्वचित् च्मोपि) रुक्मी (रुच्मी, रुप्पी)

नियम ३४९ (भस्मात्मनोः पो वा २।५१) भस्मन् और आत्मन् शब्दों के संयुक्त को प आदेश विकल्प से होता है।

स्म>प—भस्म (भप्पो, भस्सो)।

त्म>प—आत्मा (अप्पा, अत्ता)

(क्वचिन्न भवति)

ष्प>प—निष्प्रभः (निप्पहो)। निष्पुंसनं (निप्पुंसणं)

स्प>प—परस्परं (परोप्परं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(**बहुलाधिकारात् क्वचिद् विकल्पः**)

स्प > प—बृहस्पतिः (बुहप्पई, बिहप्पई)

(**बहुलाधिकारात् क्वचिदन्यदपि**)

स्व > प—निस्पृहः (निप्पिहो)

नियम ३५० (ष्पस्पयोः फः २।५३) ष्प और स्प को फ आदेश होता है।

ष्प > फ—पुष्पं (पुप्फं)। शष्पम् (सप्फं)। निष्पेषः (निप्फेसो)। निष्पावः (निप्फावो)।

स्प > फ—स्पन्दनम् (फन्दणं)। प्रतिस्पर्धी (पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी) प्रतिस्पर्धा (पडिप्फद्धा)। स्पन्दते (फंदए)। वनस्पतिः (वणप्फई) स्पर्धते (फदए)। बृहस्पतिः (बुहप्फइ, बिहप्फई)।

नियम ३५१ (भीष्मे ष्मः २।५४) भीष्म शब्द के ष्म को फ आदेश होता है।

ष्म > फ—भीष्मः (भिप्फो)

नियम ३५२ (श्लेष्मणि वा २।५५) श्लेष्म शब्द के ष्म को फ आदेश विकल्प से होता है।

ष्म > फ—श्लेष्मा (सेफो, सिलिम्हो)

नियम ३५३ (ह्वो भो वा २।५७) ह्व को भ आदेश विकल्प से होता है।

ह्व 7 भ—जिह्वा (जिब्भा, जीहा)

नियम ३५४ (वा विह्वले वौ वश्च २।५८) विह्वल शब्द के ह्व को भ आदेश विकल्प से होता है। उसके योग में वि शब्द के व को भ आदेश विकल्प से होता है।

ह्व 7 व, भ—विह्वलः (भिब्भलो, विब्भलो, विहलो)

नियम ३५५ (वोर्ध्वे २।५९) ऊर्ध्व शब्द के ध्व को भ आदेश विकल्प से होता है।

ध्व 7 भ—ऊर्ध्वं (उब्भं, उद्धं)

नियम ३५६ (ग्मो वा २।६२) ग्म को म आदेश विकल्प से होता है।

ग्म 7 म—युग्मं (जुम्मं, जुग्गं)। तिग्मं (तिम्मं, तिग्गं)

नियम ३५७ (न्मो मः २।६१) न्म को म आदेश होता है। (अधः म के लोप का अपवाद है)

न्म 7 म—जन्म (जम्मो)। मन्मथः (वम्महो)। मन्मनं (मम्मणं)

नियम ३५८ (ताम्राम्रे म्बः २।५६) ताम्र और आम्र के म्र को म्ब आदेश होता है।

म्र 7 म्ब—ताम्रं (तम्बं) आम्रं (अम्बं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ३५९ (कश्मीरे म्भो वा २।६०) कश्मीर शब्द के श्म को म्भ आदेश विकल्प से होता है।

श्म 7 म्भ—कश्मीरा (कम्भारा, कम्हारा)

नियम ३६० (पक्ष्म श्म-ष्म-स्म-ह्मां-म्हः २।७४) श्म, ष्म, स्म, ह्म तथा पक्ष्म शब्द के क्ष्म को म्ह आदेश होता है।

श्म 7 म्ह—कुश्मानः (कुम्हाणो)। कश्मीराः (कम्हारा)

ष्म 7 म्ह—ग्रीष्मः (गिम्हो)। ऊष्मा (उम्हा)

स्म 7 म्ह—अस्मादृशः (अम्हारिसो)। विस्मयः (विम्हओ)

ह्म 7 म्ह—ब्रह्मा (बम्हा)। सुह्माः (सुम्हा)। ब्राह्मणः (बम्हणो)

क्ष्म 7 म्ह—पक्ष्म (पम्हाइं)

(क्वचित् म्भो पि)

ह्म 7 म्भ—ब्राह्मणः (बम्भणो)। ब्रह्मचर्यं (बम्भचेरं)

ष्म 7 म्भ—श्लेष्मा (सिम्भो)

प्रयोग वाक्य

मुग्गस्स पप्पडो भवइ। मासस्स दालीए वडगाइं पोल्लाइं भवंति। चणस्स रुट्टिअं दहिणा सह भुंजंति पुरिसा। घयसक्करासंजुत्तं बज्जरिं को न अहिलसइ सीयकाले? जवस्स तिण्णि भेया संति। मकुट्ठो मलरोहगो भवइ। कलायो मलावरोहगं णस्सइ। कुलत्थो भारहवासे पाओ सव्वत्थ मिलइ। बंगदेसे दक्खिणदेसे य साली पहाणं भोयणं भवइ। आलिसंदस्स संयावो अज्ज मए भुत्तो। सामयधण्णं निद्धणा चिअ खाअंति। तिपुडबीयेसु विसपयत्थो भवइ। चारुगो महुरो सीयलो य भवइ।

धातु संग्रह

अहं पायवा कलामि। गिहे को कवइ? माआ अज्ज निंबपत्ताइं कहिस्सइ। जो दहिं भुंजइ सो अहियं कासइ। जो नरा मारइ तं सव्वे कुच्छंति। अत्थ बाला सया किड्डंति। पयजत्तं विणा सो कहं किलिसिसु। उवालंभं सुणिऊणं वि सो न किलेसइ। तुमं कस्स उट्टं कीणसि? लवणरहिय-सागस्स एगं कवलं भक्खिऊण सो कोवेण थालं किरिसु।

प्राकृत में अनुवाद करो

मूंग की दाल रोगी के लिए लाभदायक होती है। मेवाडवासी बाटी के साथ उडद की दाल खाते हैं। हम लोग प्रायः चने के आटे (वेसण) की कढी (कढिआ) खाते हैं। बाजरा मरुभूमि का प्रमुख भोजन है। मक्का की रोटी घी सहित खाने से गर्मी दूर होती है। साठी धान्य धनवान् खाते हैं। हैं। मैंने कभी चवला की रोटी नहीं खाई। मोठ शीतल, कृमिजनक (किमी-जणयो) और ज्वर नाशक होता है। कुलथी धान्य का प्रयोग समय-समय पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होता है। सावो धान्य वर्षा के प्रारंभ में बोते (वपइ) हैं। जौ रूखा, शीतल और मलरोधक होता है। खेंसारी की दाल खाने से लकवा (पक्खाघायो) जैसा रोग होता है। शरबीज रक्त पित्त और कफ को नाश करता हैं।

धातु का प्रयोग करो

वह बालकों को गिनता है। घर के बाहर कौन आवाज करता है? तुम जो कुछ कहते हो वह सत्य है। मेरा दादा खांसता है। राजा ने चोर को बहुत धिक्कारा। बच्चे घर के आंगन में खेलते हैं। बच्चे ने क्रोध में मिठाई को बिखेर दिया। आज वह पदयात्रा में थक गया। तुम व्यर्थ में क्लेश क्यों पाते हो? तुम बाजार में वस्त्र खरीदते थे।

प्रश्न

१. ड्म, न्म, ग्म, ह्व, स्प—इन संयुक्तवर्णों को किस नियम से क्या आदेश होता है? उदाहरण सहित बताओ।

२. नीचे लिखे शब्दों में किस संयुक्त वर्ण को क्या आदेश हुआ है? बिम्हओ, सुम्हा, सिम्भो, वम्महो, जिब्भा भिप्फो, सप्फं, भप्पो।

३. श्म, स्म और ष्म—इन संयुक्तवर्णों को किस नियम से सामान्य रूप में क्या आदेश होता है और शब्द विशेष में क्या आदेश होता है?

४. मूंग, उडद, जौ, मोठ, मक्का, मटर, चना, बाजरा, कुलथी, साठीधान, चवला, सावां, खेंसरी, शरबीज धान्य के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. कल, कव, कह, कास, कुच्छ, किड्ड, किर, किलिस, किलेस और कीण धातुओं के अर्थ लिखो और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

६. रत्तालु, गिंजणं, सोत्थिओ, वासओ, सुंठी, पउमा, अजमो, अभया और सयपुप्फा—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७ संयुक्त व्यंजन परिवर्तन (६)

शब्द संग्रह (धान्य वर्ग २)

चावल—तण्डुलो
अरहर—आढकी
ज्वार—जुआरी (दे.)
सरसों—सस्सपो
कोंदो—कुद्दवो
राई—राई (स्त्री) राइगा
बांस के बीज—वंसजवो (सं)

गेहूं—गोहूमो
मसूर—मसूरो
तीसी—अलसी
कांगन—कंगू (स्त्री)
कुसुंभ—लट्टा
तीनी—णीवारो
गरहेडुआ—गवेधुआ (सं)

चर्बी—मेओ
अस्थि—अत्थि (न)

धातु का प्रयोग

उप्फाले—उठाना, उखाड़ना
उप्फिड—मेंढक की तरह कूदना
उप्फुस—सींचना, छिडकना
किलेस—हैरान होना
कूण—संकुचित होना

कुल्ल—कूदना
खअ—नष्ट होना
कूड—झूठा ठहरना, अन्यथा करना
खउर—डर से विह्वल होना
खअर—संपत्ति युक्त होना

र, ल, स, ह आदेश—

नियम ३६१ (ब्रह्मचर्य-तूर्य-सौन्दर्य-शौण्डीर्ये र्यो रः २।६३) ब्रह्मचर्य, तूर्य, सौन्दर्य और शौण्डीर्य शब्दों के र्य को र आदेश होता है।

र्य > र—बम्हचेरं (ब्रह्मचर्यम्) तूरं (तूर्यम्) सुंदेरं (सौन्दर्यम्) सोण्डीरं (शौण्डीर्यम्)।

नियम ३६२ (धैर्ये वा २।६४) धैर्य शब्द के र्य को र विकल्प से होता है।

र्य > र—धीरं (धैर्यम्) धिज्जं।

नियम ३६३ (एतः पर्यन्ते २।६५) पर्यन्त शब्द के एकार से परे र्य को र होता है।

र्य > र—पेरंतो (पर्यन्तः)।

नियम ३६४ (आश्चर्ये २।६६) आश्चर्य शब्द के एकार से परे र्य को र होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

र्य>र—अच्छेरं (आश्चर्यम्)।
त्र>र—धारी (धात्री) नियम ३४१ से)
ह>र—उत्थारो (उत्साहः) (नियम २८४ से)
र्ह>र—दसारो (दशार्हः) (नियम ४०१ से)

(नियम ३७० २।७३) की वृत्ति—ण्ड इत्यस्य तु वा लो भवति।

ण्ड>ल—कोहली (कूष्माण्डी)।

नियम ३६५ (पर्यस्त-पर्याण-सौकुमार्ये ल्लः २।६८) पर्यस्त पर्याण, सौकुमार्य शब्दों के र्य को ल्ल होता है।

र्य>ल्ल—पल्लट्टं, पल्लत्थं (पर्यस्तम्)। पल्लाणं (पर्याणाम्)। सोअमल्लं (सौकुमार्यम्)।

नियम ३६६ (दीर्घे वा २।६१) दीर्घ शब्द के शेष घ को ग विकल्प से होता है।

र्घ>ग—दिग्घो, दीहो (दीर्घः)।

नियम ३६७ (ह्लो ल्हः २।७६) ह्ल के स्थान पर ल्ह होता है।

ह्ल>ल्ह—कल्हारं (कह्लारम्) पल्हाओ (प्रह्लादः)।

नियम ३६८ (बृहस्पति-वनस्पत्योः सो वा २।६९) बृहस्पति और वनस्पति शब्दों के स्व को स विकल्प होता है।

स्प>स—बहस्सई (बृहस्पतिः) वणस्सई (वनस्पतिः)।

नियम ३६९ दुःख-दक्षिण-तीर्थे वा २।७२) दुःख, दक्षिण और तीर्थ शब्द के संयुक्त को ह होता है।

क्ष>ह—दाहिणो (दक्षिणः) दक्खिणो।
ख>ह—दुहं (दुःखम्) दुक्खं।
र्थ>ह—तूहं (तीर्थम्) तित्थम्।

नियम ३७० (बाष्पे होऽश्रुणि २।७०) बाष्प शब्द के ष्प को ह होता है अश्रुवाची हो तो।

ष्प>ह—बाहो (बाष्पः) नेत्रजल।

नियम ३७१ (कूष्माण्ड्यां ष्मो लस्तु ण्डो वा २।७३) कूष्माण्डी शब्द के ष्मा को ह होता है। ण्ड को ल विकल्प से होता है।

ष्मा>ह—कोहली, कोहण्डी (कूष्माण्डी)।

नियम ३७२ (कार्षापणे २।७१) कार्षापण शब्द के र्ष को ह होता है।

र्ष>ह—काहावणो (कार्षापणः)।

प्रयोग वाक्य

आढकीदालीहिं सह तण्डुला सव्वे लोआ खाअंति। तंडुला सिग्घं पयंति (पचता है)। अमुम्मि वरिसम्मि सस्सपा अहिया भविहिंति। कुद्दवं

कयाइ चेअ जणा भुंजंति । अज्जत्ता गोहूमो किं सव्वसुलहो अत्थि ? मसूराण दाली भवइ । लट्टाधण्णं कत्थ उप्पज्जइ ? अलसीए तेल्लं जाअइ । कंगू तुडियत्थीण जुंजिउं समत्था अत्थि । राई वि धण्णाणं एगो भेयो अत्थि । णीवारधण्णं णिद्धणा चिअ खाअंति । वंसजवो रुक्खो सीयलो य होइ । गवेधुआए रुट्टिआओ भक्खणेण मेओ (चर्वी) अप्पो भवइ । अलसीए तेल्लं जाअइ । लट्टाए पत्ताण सागो पडिसाये रोगे लाभअरो होइ ।

धातु प्रयोग

सो अक्कमूलं उप्फालेइ । तस्स पुत्तो उप्फिडंतो गच्छइ । मालागारो उज्जाणं उप्फुसइ । तस्स कज्जं किमवि न सिज्झिसु । केवलं नयरे भमणेण सो किलेसइ । तुमं सयणत्तो तलायम्मि कुल्लीअ । अहं धम्मज्झाणेण कम्माइं खआमि । काओ कारणाओ तुमं कूडेसि ? पुत्तबहू ससुरं पासिऊण कूणइ । आयरिअस्स उवालंभेण सो खउरइ । अमुम्मि वरिसम्मि अन्नस्स पउरेण सो खअरइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

चावल बंगाल में अधिक पैदा होता है । चावल सफेद रंग का धान है उसके साथ अरहर की दाल का मेल करने से वायु कम बनती है । ६० वर्ष पहले मरुस्थल में गेहूं का फुलका केवल पुरुषों के लिए बनता था । मसूर बहुत कम लोग खाते हैं । सरसों का तेल निकाला जाता है । कुसुंभ के बीजों में तैल पाया जाता है । ज्वार शीतल, रूक्ष और पित्त को नष्ट करता है । कांगन (कंगुनी) बारह ही मासों में सब जगह मिलता है । कोंदो तृण जाति का धान्य है । तीनी तालाब या जलीय भूमि पर फैला हुआ मिलता है । बांस का बीज वातपित्तकारक, कफनाशक और मूत्ररोधक होता है । गरहेडुवा बंगाल में चावल के खेतों में होता है । बहिनें कढी में राई का संस्कार देती हैं ।

धातु का प्रयोग करो

गाय घास को जड से नहीं उखाडती है । स्कूल के बच्चे मेंढक की तरह क्यों कूदते हैं ? राष्ट्रपति (रट्ठवई) अपने बाग को प्रतिदिन स्वयं सींचता है । वह पैदल चलने से हैरान हो गया । जो अपनी प्रशंसा सुनकर संकुचित होता है वह महान् है । वह वृक्ष से कूदता है । उसने गलत बात कही इसलिए वह झूठा हो गया । वीतरागी के चार घनघाती कर्म नष्ट हो जाते हैं । पिशाच (पिसायो) का नाम सुनकर वह डर से विह्वल हो गया । इस वर्ष लोह के व्यापार ने व्यापारियों को धन से समृद्ध बना दिया ।

प्रश्न

१. र्य को क्या आदेश होता है । प्रत्येक नियम का एक-एक उदाहरण दो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. ह् आदेश किन-किन संयुक्त वर्णों को होता है। उदाहरण सहित बताओ।

३. इस पाठ में किस शब्द से किस वर्ण का लुक् हुआ है ?

४. चावल, गेहूं, अरहर, मसूर, सरसों, तीसी, ज्वार, कुसुंभ बीज, कोंदो, कांगन (कंगुनी), राई, तीनी, बांस के बीज, गरहेडुवा—इन धान्यों के प्राकृत शब्द बताओ।

५. उप्फाले, उप्फिड, उप्फुस, किलेस, कूण, कुल्ल, कूड, खअ, खउर, खअर धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (फल वर्ग १)

आम—अंबं, सहआरफलं
अमरूद—पेरुओ (सं)
केला—कयलो
नारंगी—णारंगो
कमरख—कम्मरंगो (सं)
कपित्थ—कविट्ठो
सहतूत—तूओ, तूलो (सं)
पीलु—पीलु (पुं)
बडहर—लउचो, एरावयो
बेल—वेलयो
तरबूज—कालिंगो
खरबूजा—खब्बूयं, दसंगुलं (सं)
कटहल—पणसो
अनार—दाडिमं
सेव—सेवं (सं)
अनानास—अणंणासं
जामुन—जंबूओ, जंबूगो, जंबू (स्त्री)
नाशपती—अमियफलं (सं)

पुष्टिवाला—पुट्ठिम (वि०)
कब्ज—मलावरोहो
खट्टा—खट्टं (दे०)
तंत्र—तंतं
पुराना—पुराअणं

धातु संग्रह

खच—पवित्र होना
खर—झरना, टपकना
खरड—लीपना, पोतना
खल—पडना, भूलना, रुकना
खुब्भ—क्षुब्ध होना
खिस—निंदा करना
खुम्म—भूख लगना
गल—गलना, सडना

नियम ३७३ (स्तोकस्य थोक्क-थोव-थेवाः २।१२५) स्तोक शब्द को थोक्क, थोव, थेव—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। स्तोकं (थोक्कं, थोवं, थेवं, थोअं)।

नियम ३७४ (दुहितृ-भगिन्यो धूआ-बहिण्यौ २।१२६) दुहितृ को धूआ और भगिनी को बहिणी आदेश विकल्प से होता है। दुहितृ (धूआ, दुहिआ)। भगिनी (बहिणी, भइणी)।

नियम ३७५ (वृक्ष-क्षिप्तयो रुक्ख-छूढौ २।१२७) वृक्ष और क्षिप्त शब्द को क्रमशः रुक्ख और छूढ आदेश विकल्प से होता है। वृक्षः (रुक्खो, वच्छो)। क्षिप्तं (छूढं, खित्तं)।

नियम ३७६ (वनिताया विलया २।१२८) वनिता शब्द को विलया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदेश विकल्प से होता है। वनिता (विलया, वणिआ)

नियम ३७७ (गौणस्येषत कूरः २।१२९) ईषत् शब्द गौण हो तो कूर आदेश विकल्प से होता है। चिंच व्व कूर पिक्का (चिंचा इव ईषत् पक्वा)। पक्ष में ईसिं।

नियम ३७८ (स्त्रिया इत्थी २।१३०) स्त्री शब्द को इत्थी आदेश विकल्प से होता है। स्त्री (इत्थी, थी)।

नियम ३७९ (धृते र्दिहिः २।१३१) धृति शब्द को दिहि आदेश विकल्प से होता है। धृतिः (दिही, धिई)।

नियम ३८० (मार्जारस्य मञ्जर-वञ्जरौ २।१३२) मार्जार शब्द को मञ्जर और वञ्जर आदेश विकल्प से होता है। मार्जारः (मञ्जरो, वञ्जरो, मज्जारो)।

नियम ३८१ (वैडूर्यस्य वेरुलिअं २।१३३) वैडूर्य शब्द को वेरुलिअ आदेश विकल्प से होता है। वैडूर्यं (वेरुलिअं, वेडुज्जं)।

नियम ३८२ (एण्हिं एत्ताहे-इदानीमः २।१३४) इदानीम् शब्द को एत्ताहे और एण्हिं आदेश विकल्प से होता है। इदानीम् (एण्हिं, एत्ताहे इआणिं)।

नियम ३८३ (पूर्वस्य पुरिमः २।१३५) पूर्व शब्द के स्थान पर पुरिम आदेश विकल्प से होता है। पूर्वं (पुरिमं, पुव्वं)।

नियम ३८४ (त्रस्तस्य हित्थ-तुट्ठौ २।१३६) त्रस्त शब्द को हित्थ और तुट्ठ आदेश विकल्प से होता है। त्रस्तं (हित्थं, तट्ठं, तत्थं)।

नियम ३८५ (बृहस्पतौ बहो भयः २।१३७) बृहस्पति शब्द के बह शब्द को भय आदेश विकल्प से होता है। बृहस्पतिः (भयस्सई, भयप्फई, भयप्पई, बहस्सई, बहप्फई, बहप्पई)। (वा बृहस्पतौ १।१३८) नियम १६७ से इकार और उकार होता है। बिहस्सई, बिहप्फई, बिहप्पई। बुहस्सई, बुहप्फई, बुहप्पई।

नियम ३८६ (मलिनोभय-शुक्ति-छुप्तारब्ध-पदाते मइलावह-सिप्पि-छिक्काढत्त-पाइक्कं २।१३८) मलिन को मइल, उभय को अवह, शुक्ति को सिप्पी, छुप्त को छिक्क, आरब्ध को आढत्त और पदाति को पाइक्क आदेश विकल्प से होता है। मलिनं (मइलं, मलिणं)। उभयं (अवहं)। कई उवहं भी मानते हैं। आर्ष में उभयो भी मिलता है, उभयो कालं। शुक्तिः (सिप्पी, सुत्ती। छुप्तः (छिक्को, छुत्तो)। आरब्धः (आढत्तो, आरद्धो)। पदातिः (पाइक्को, पयाई)।

नियम ३८७ (दंष्ट्राया दाढा २।१३९) दंष्ट्रा शब्द को दाढा आदेश होता है। दंष्ट्रा (दाढा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ३८८ (बहिसो बाहिं-बाहिरौ २।१४०) बहिस् शब्द को बाहिं और बाहिर आदेश होता है। बहिः (बाहिं, बाहिरं)।

नियम ३८९ (अधसो हेट्ठं २।१४१) अधस् शब्द को हेट्ठ आदेश होता है। अधः (हेट्ठं)।

नियम ३९० (मातृ-पितुः स्वसुः सिआ-छौ २।१४२) मातृ और पितृ शब्द के आगे स्वसृ शब्द को सिआ और छा आदेश होता है। मातृस्वसा (माउसिआ, माउच्छा)। पितृस्वसा (पिउसिआ, पिउच्छा)।

नियम ३९१ (तिर्यचस्तिरिच्छि: २।१४३) तिर्यच् शब्द को तिरिच्छि आदेश होता है। तिर्यक् (तिरिच्छि)। तिरिच्छि पेक्खइ। आर्ष में तिरिआ भी होती है।

नियम ३९२ (गृहस्य घरोपतौ २।१४४) गृह शब्द को घर आदेश होता है, यदि पति शब्द परे न हो तो। गृहः (घरो)। घरसामी (गृहस्वामी) रायहरं (राजगृहम्)।

नियम ३९३ (अतो रिआर-रिज्ज-रीअं २।६७) आश्चर्य शब्द में अकार से परे र्य को रिअ, अर, रिज्ज और रीअ ये चार आदेश होते हैं। आश्चर्यम् (अच्छरिअं, अच्छअरं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं)।

प्रयोग वाक्य

फलेसु अंबो निवो भवइ। पेरुओ मलावरोहस्स णासणाय पढमं ओसहं विज्जइ। कयलो महुरो पुट्ठिमो भवइ। नारंगस्स रसो गरिट्ठो भवइ। कम्मरंगस्स रुक्खो अइसुंदरो होइ। कविट्ठफलं खट्टं हुवइ। तूअस्स कलं सिंब (फली) व्व भवइ। मए अणेगहा पीलू भुत्तो। लउचस्स रुक्खा उड्ढगामिणो भवंति। वेलस्स पत्तरसस्स पओगो सुवण्णणिम्माणे होइ। कालिंगी किण्हबीया भवइ। खब्बूयं गुणेण सीयलं मलसुद्धिकारयं होइ। पणसो गरिट्ठो विज्जइ। दाडिमस्स तिण्णि भेया संति। सेवं पुराअणं नत्थि। अणंणासं पुरा भारहवासे नासि। जंबूए पत्ताणि अंब सरिक्खाणि भवंति। अमियफलं खट्टं रुइयरं य भवइ।

धातु प्रयोग

सो दंडं गहिऊण अप्पाणं खचइ। तस्स णासाहिंतो नीरं खरइ। सुवेणयणा घरंगणं खरडिहिइ। जो आसं आरुहइ सो खलइ। समुद्दम्मि पत्थर खेवणेण नीरं खुब्भइ। जो दहिं भुंजइ सो खासइ। जो अप्पाणं खिसइ सो अण्णे न खिसइ। अज्ज अहं खुम्मीअ। रायसंगहालये अण्णं गलइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आम हमारे देश से बाहर भी जाता है। अमरूद कच्चा भी मीठा होता है। पक्का केला प्रकृति के घर का हलुआ है। नारंगी नागपुर की प्रसिद्ध है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमरख के फल पर चार या पांच धार (रेखा) होती हैं। कपित्थ के फल बेल से छोटे होते हैं। सहतूत खाने में बहुत मीठा होता है। पीलु हमारे गांव में बहुत होता है। बडहर के वृक्ष प्रायः बागों में देखे जाते हैं। बेल के पत्ते शिव मंदिर में शिव को चढाते हैं। तरबूज भीतर से लाल रंग का होता है। कटहल बंगाल और दक्षिण प्रदेशों में बहुत मिलती है। अनार का फल वायु-नाशक होता है। सेव कश्मीर का बहुत मीठा होता है। अनानास के फल को काटकर खाना भी एक कला है। जामुन का रस दवा में काम आता है। नाशपाती के वृक्ष इस प्रदेश में कहां होते हैं?

धातु का प्रयोग करो

पाप का प्रायश्चित्त करने वाला पवित्र होता है। छत से वर्षा का पानी टपकता है। पर्व के दिनों में दक्षिण प्रदेशों में घर के आंगन को पोतते हैं। अभ्यास करने वाला गिरता भी है। उसके एक शब्द ने सारे घर को क्षुब्ध कर दिया। सज्जन पुरुष किसी की निंदा नहीं करते हैं। बुढापे में आदमी अधिक खांसता है। शारीरिक श्रम से भूख अधिक लगती है। कई दिनों तक फल खुले रहने से सडने लगते हैं।

प्रश्न

१. नीचे लिखे शब्दों को किस नियम से क्या आदेश होता है?
स्तोकं, त्रस्तं, बृहस्पतिः, छुप्तः, स्त्री और मार्जारः।

२. नीचे लिखे शब्दों में किस नियम से क्या आदेश हुआ है?
धूआ, कूर, दिहि, बहिणी, वेरुलिअं, पुरिमं, बाहिं, हेट्ठं, माउच्छा, अवहं, सिप्पी, तिरिच्छि।

३. आम, नाशपाती, अमरूद, केला, नारंगी, कमरख, कपित्थ, सहतूत, पीलु, बडहर, बेल, तरबूज, खरबूजा, कटहल, अनार, सेब, अनानास, जामुन—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

४. खच, खण, खर, खरड, खल, क्षुभ, खिस, खास, खुम्म और गल धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (फल वर्ग २)

पतीता—महुकक्कडी (सं)
इमली—चिंचा, कुट्टा
खज्जूर—खज्जूरो
अंगूर—दक्खा
बिजौरा—माहुलिंगो
फालसा—अप्पट्ठि (सं)
सुपारी—पोप्फलं
खुमानी—खुमाणी (सं)
सिंघाडा—सिंघाडयो, सिंघाडगं
अखरोट—अक्खोडबीयं
मुनक्का—गोत्थणी (सं)
बेर—बोरं
आलुबुखारा—आरुयं (सं)
बदाम—वायायो नेत्तोवमफलं
नारियल—णारिएलो
नींब का फल—णिंबोलिया
मौसंबी (मौसंबी) मौसंबी
अजीर—काउंबरी
काजू—काजूअगो (सं)
पिस्ता—णिकायगो (सं)
तालमखाना—कोइलक्खी (त्रि.)
किसमिस—अबीया, ईसिबीया (सं)

ग्रास—गासो
व्याकरण—वागरणं
गलना—गलणं
स्वाद—साओ

धातु संग्रह

विअक्क—विमर्श करना
विअक्ख—देखना
गस—खाना, निगलना
गाअ—गाना
गाल—छानना
गुड—नियंत्रण करना
गिज्झ—आसक्त होना
गुंठ—धूसरित होना, धूलि के रंग का होना
गुण—गुनना, याद करना
गुड—हाथी के कवच आदि से सजाना
गुड—नियंत्रण करना

संयुक्तवर्णों का लोप—

संयुक्त व्यंजनों में पहले वर्ण को ऊर्ध्व और दूसरे को अधो कहते हैं। दूसरे शब्दों में पहले वर्ण को पूर्ववर्ती और दूसरे को उत्तरवर्ती भी कह सकते हैं।

नियम ३९४ (क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स क‿पा मूर्ध्वं लुक् २।७७) संयुक्त वर्णों में क, ग, ट, ड आदि ऊर्ध्व हों तो उनका लुक् होता है।

क— भुक्तं (भुत्तं)। मुक्तं (मुत्तं)। सिक्थं (सित्थं)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग— दुग्धं—दुधं—दुध्धं—दुद्धं। मुग्धं—मुधं—मुध्धं—मुद्धं।
ट— कट्फलं—कफलं—कफ्फलं—कप्फलं।
ड— खड्गः—खगो—खग्गो। षड्जः—सजो—सज्जो।
त— उत्पलं—उपलं—उप्पलं। उत्पादः—उपादो—उप्पाओ।
द— मद्गुः—मगू—मग्गू। मुद्गरः—मुगरो—मोग्गरो।
प— गुप्त—गुतो—गुत्तो। सुप्तः—सुतो—सुत्तो।
श— निश्चलः—निचलो—निच्चलो। श्लण्हं—लण्हं।
ष— निष्ठुरः—निठुरो। निठ्ठुरो—निट्ठुरो।
गोष्ठी—गोठी—गोठ्ठी—गोट्ठी। षष्ठः—छठो—छठ्ठो—छट्ठो।
स— निष्पृहः—निपहो—निप्पहो। स्नेहः—नेहो। स्खलितः—खलिओ।

नियम ३६५ (अधो म-न-याम् २।७८) संयुक्त व्यंजनों में म, न और य अधो हों तो इनका लोप हो जाता है।

म— युग्मं—जुग्गं। स्मरः—सरो। रश्मिः—रस्सी।
न— नग्नः—नग्गो। लग्नः—लग्गो।
य— कुड्यं—कुड्डं। व्याधः—वाहो। श्यामा—सामा।

नियम ३६६ (सर्वत्र ल-ब-रा मवन्द्रे २।७९) ल, ब (व) और र का लोप हो जाता है, चाहे ये ऊर्ध्व हों या अधो हों, वन्द्र शब्द को छोडकर। शेष रहा व्यंजन आदि में न हो तो वह द्वित्व हो जाता है।

ऊर्ध्व ल— उल्का—उका—उक्का। वल्कलम्—वकलं—वक्कलं।
अधो ल— विक्लवः—विकवो—विक्कवो। श्लक्ष्णं—सण्हं।
ऊर्ध्व ब— अब्दः—अदो—अद्दो। शब्दः—सदो—सद्दो।
लुब्धकः—लुधको—लुध्धको—लुद्धको।
अधो व— ध्वस्तः—धत्थो। पक्कं—पक्कं। ध्वजो—धजो—धओ।
ऊर्ध्व र— अर्कः—अको—अक्को। वर्गः—वगो—वग्गो।
वार्ता—वाता—वत्ता।
अधो र—क्रिया—किया। चक्रं—चक्कं। ग्रहः—गहो। रात्रिः—रत्ती।

जहां ऊर्ध्व और अधो दोनों व्यंजनों का एक साथ लोप करने का प्रसंग आए वहां प्रचलित प्रयोगों को ध्यान में रखकर ही लोप करना चाहिए। उद्विग्नः, द्विगुणः, द्वितीयः इत्यादि शब्दों में द्व संयोग में द् ऊर्ध्व है और व अधो है। इसलिए द का लोप करना चाहिए व का नहीं। उद्विग्न शब्द में न का लोप करने पर 'उद्विग्' फिर उद्विग्गा रूप बनता है। उद्विग्ग का उव्विग्ग और उद्दिग्ग ये दो रूप बन सकते हैं। उव्विग्ग रूप आता है, उद्दिग्न नहीं इसलिए व का लोप न कर द का ही लोप करना संगत लगता है। कहीं पर ऊर्ध्व और अधो दोनों वर्णों का लोप क्रमशः होता है। जैसे—उद्विग्न में ऊर्ध्व का लोप करने पर उव्विण्ण और अधो का लोप करने पर उव्विग्ग,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वार का वार और दार दोनों रूप मिलते हैं।

नियम ३९७ (द्रे रो न वा २।८०) द्र शब्द के र का लुक् विकल्प से होता है।

द्र > द—चन्द्रः (चन्दो, चन्द्रो)। समुद्रः (समुद्दो, समुद्रो)। रुद्रः (रुद्दो, रुद्रो। भद्रः (भद्दो, भद्रो)।

नियम ३९८ (ज्ञो ञः २।८३) ज्ञ शब्द में ञ का लुक् विकल्प से होता है। ज्ञ शब्द ज और ञ के संयोग से बना है। ञ का लोप होने के बाद ज शेष रहता है।

ज्ञ > ज—ज्ञानं (जाणं, णाणं)। सर्वज्ञः (सव्वज्जो, सव्वण्णो)। अल्पज्ञः (अप्पज्जो, अप्पण्णू)। दैवज्ञः (दइवज्जो, दइवण्णू)। इंगितज्ञः (इङ्गिअज्जो, इङ्गिअण्णू)। मनोज्ञः (मणोज्जं, मणोण्णं)। अभिज्ञः (अहिज्जो, अहिण्णू)। प्रज्ञा (पज्जा, पण्णा)। आज्ञा (अज्जा, आणा)। संज्ञा (संज्जा, सण्णा)।

(**नोणः १।२२८ और वादौ १।२२९**) से न का ण हुआ है।

त्र > त—(**नियम ३४१ से**) धात्री—धत्ती (र का लुक् विकल्प से)

नियम ३९९ (तीक्ष्णे णः २।८२) तीक्ष्ण शब्द में ण का लुक् विकल्प से होता है।

क्ष्ण > ख—तीक्ष्णं (तिक्खं, तिण्हं)।

(**नियम ३४७ से** ह का लुक् विकल्प से) मध्याह्नः (मज्झण्णो, मज्झण्हो)।

नियम ४०० (रात्रौ वा २।८८) रात्रि शब्द में संयुक्त का लुक् विकल्प से होता है।

त्रि > इ—रात्रिः (राई, रत्ती)।

नियम ४०१ (दशार्हे २।८५) दशार्ह शब्द में ह का लुक् होता है।

र्ह > र—दशार्हः (दसारो)।

नियम ४०२ (श्चो हरिश्चन्द्रे २।८७) हरिश्चन्द्र शब्द में श्च का लुक् होता है।

श्च > लुक्—हरिश्चन्द्रः (हरिअन्दो)।

नियम ४०३ (आदेः श्मश्रु-श्मसाने २।८६) श्मश्रु और श्मसान शब्दों के आदि श् का लुक् होता है।

श्म > म—श्मश्रुः (मासू, मंसु, मस्सु)। श्मसानं (मसाणं)।

प्रयोग वाक्य

महुंकक्कडी मेवाडदेसम्मि वि भवइ। अज्ज मए चिब्भाए पाणिअं पीअं। खज्जूरो अइमहुरो भवइ। ओरंगावायस्स दक्खा रत्ता सुसाऊ य

भवंति । माहुलिंगस्स रुक्खा सया हरिअपुण्णा (हरे भरे) चिट्ठंति । अप्पट्ठिणो साओ खट्टो महुरो य भवइ । आयरियतुलसीहिं पोप्फलस्स साओ न चक्खिओ । मज्झ खुमाणी रोअइ । अक्खोडबीयं केइ लोआ कहं न खाअंति । दक्खिणपएसवासिणो अबीया बहु भुंजंति । रोगे गोत्थणी बहु लाभअरा भवइ । णिकायगस्स वण्णो हरियचणव्व हरिओ भवइ । काजूअगा साअम्मि महुरा एव भवंति । काउंबरीए बहुबीयाणि भवंति । सिंघाडया तलायम्मि भवंति । धणिपरिवारे विवाहम्मि वायायाण मिट्ठान्नं भवइ । बालत्तम्मि बोरं मए बहु भुत्तं । नारिएलस्स नीरं ओसहरूवेण पिज्जइ । णिंबोलिया फग्गुणमासे चित्तमासे य हवइ । धणंजयस्स आरुयं रोयइ । मद्दास (मद्रास) णयरस्स मोसंबी पीअवण्णा महुरा य भवइ । विहारपएसवासिणो कोइलक्खि बहु खाअंति ।

धातु प्रयोग

वट्टमाणकाले साहुणो पयजत्तं विअक्कंति । तुमं अत्थ किं विअक्खसि ? भगवंतस्स महावीरस्स णिव्वाणदिवसे साहुणीओ गीइयं गाअंति । गिहत्थस्स घरे सलिलं गिण्हंता नीरं गालंति । सो रूवे गिज्झइ । मरुम्मि बालो धूलिम्मि खेलंतो गुंठइ । सो आसं गुडेइ । तुमं इंदियाइं गुडेसि । सो वागरणं गुणइ । सो वसंतस्स हत्थत्तो एगं गासं गसइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पपीता अतिमात्रा में खाने से मूत्र का अवरोध होता है । रात भर भींगी इमली और गुड का पानी पीने से रक्त शुद्धि होती है । खज्जूर पर मक्खियां क्यों बैठती हैं ? दौलताबाद के अंगूर विदेश भेजे जाते हैं । किसमिस अंगूर का सूखा फल है । खांसी और पेशाब की जलन में मुनक्का का उपयोग करते हैं । अखरोट गुण में बादाम के सदृश होता है । काजू विदेशों में बहुत जाता है । पिस्ता सब लोग नहीं खा सकते । अंजीर से पेट की शुद्धि होती है, इसमें अनेक बीज होते हैं । बादाम खाने से बुद्धि बढती है । बिजौरा के छिलके (छोओ) में सुगंधित तेल होता है जिसे सिट्रोन तेल कहते हैं । फालसा हुलासी बहन को बहुत प्रिय है । तुम दिन भर सुपारी क्यों खाते हो ? हम सब खुमानी खाना चाहते हैं । सिंघाडा बाजार में अभी नहीं है । बेर के तीन प्रकार हैं । आलुबुखारा हमारे गांव में नहीं मिलता है । किस प्रसन्नता में तुम नारियल बांट रहे हो ? अच्छा बादाम बहुत महंगा है । नींब का फल हर कोई नहीं खा सकता । मैं मौसंबी का रस दोपहर में प्रतिदिन पीता हूं । मेरे भाई ने मेरे लिए तालमखाना भेजे हैं ।

धातु का प्रयोग करो

बडा काम करने से पहले बडों से विमर्श करना चाहिए । भगवान सबको देखता है । पुरुष ३२ ग्रास खाता है । उसने मधुर गीत गाया । अहिंसक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गलने से पानी छानकर काम में लेता है। क्या तुम दूध में आसक्त हो? तुम्हारा लडका धूसरित क्यों होता है? कवच आदि से सजे हुए हाथी पर राजा आरूढ हुआ। वह घोडे को नियंत्रित करता है। वह कौन सा पाठ याद करता है?

प्रश्न

१. किन वर्णों का ऊर्ध्व होने से लोप होता हैं? उदाहरण दो?

२. किन वर्णों का अधो होने पर लोप होता है?

३. जहां दो व्यंजनों का एक साथ लोप करने का प्रसंग आए वहां क्या करना चाहिए।

४. किस संयुक्त शब्द में किस वर्ण का लोप हुआ है। उदाहरण सहित बताओ?

५. पपीता, इमली, खज्जूर, अंगूर, बिजौरा, फालसा, सुपारी, सिंघाडा, बेर, नारियल, आलुबुखारा, मौसंबी, तालमखाना, अंजीर, बादाम, काजू, पिस्ता, किसमिस, मुनक्का, अखरोट, खुमानी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६. विअक्क, विअक्ख, गत्त, गाअ, गाल, गिज्झ, गुंठ, गुण, गुड इनके अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

७. अलिसंदो, वणमुग्गो, कलायो, गोधूमो, जुआरी, आढकी, पणसो, णारंगो, पेरुओ शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वरभक्ति (स्वरागम)

शब्द संग्रह (वृक्ष वर्ग)

पीपल—अस्सत्थो
वरगद—वडो
अशोक—असोयो
बबूल—बब्बूलो
मौलसिरी—बउलो
चंदन—चंदणो
नीम—णिंबो
पीलु—पीलू (पुं)
वांस—वंसो
चिरौंजी—पिआलो

टहनी—डाली
वंशलोचन—वंसरोयणा
अपराधी—अवराहिल्लो

धातु संग्रह

गुमगुम—मधुर अव्यक्त ध्वनि करना।
गुभ—गूंथना
गोव—छिपाना
घत्त—ग्रहण करना
घुरुक्क—घुडकना, गरजना
घस—रगडना, घिसना
विअंभ—जंभाई खाना
विअड—प्रकट होना
विअप्प—संशय करना

स्वरभक्ति—

संयुक्त व्यंजन में एक व्यंजन य, र, ल, व और ह हो या अनुनासिक हो उन्हें अ, इ, ई और उ में से किसी एक स्वर का आगम कर संयुक्त व्यंजन को सरल बना दिया जाता है, उसे स्वरभक्ति, विप्रकर्ष, विश्लेष या स्वरविक्षेप कहते हैं।

अ का आगम—

नियम ४०४ (स्नेहाग्न्यो र्वा २।१०२) स्नेह और अग्नि शब्द में अन्त्य व्यंजन से पूर्व अकार का आगम विकल्प से होता है।

स्न > सण—स्नेहः (सणेहो, नेहो)।
ग्न > गण—अग्निः (अग्गी)।

नियम ४०५ (शार्ङ्गे ङात् पूर्वोत् २।१००) शार्ङ्ग शब्द में ङ से पूर्व अकार का आगम होता है।

र्ङ्ग > रङ्‌ग—शार्ङ्गः (सारङ्गो)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ४०६ (**क्ष्मा-श्लाघा-रत्नेन्त्यव्यञ्जनात् २।१०१**) क्ष्मा श्लाघा और रत्न इन तीन शब्दों में अन्त्य व्यंजन से पूर्व अकार का आगम होता है।

क्ष्म > छम—क्ष्मा (छमा)।
श्ला > सला—श्लाघा (सलाहा)।
त्न > तन—रत्नं (रयणं)।

नियम ४०७ (**प्लक्षे लात् २।१०३**) प्लक्ष शब्द में अन्त्य व्यंजन से पूर्व अकार का आगम होता है।

प्ल > पल—प्लक्ष: (पलक्खो)।

अ और इ का आगम—

नियम ४०८ (**स्निग्धे वादितौ २।१०६**) स्निग्ध शब्द में नकार से पहले अकार और इकार का आगम विकल्प से होता है।

स्न > सणि, सिणि—स्निग्धं (सणिद्धं, सिणिद्धं, निद्धं)।

नियम ४०९ (**कृष्णवर्णे वा २।११०**) कृष्ण शब्द वर्ण अर्थ में हो तो न से पहले अकार और इकार का आगम विकल्प से होता है।

ष्ण > सण, सिण—कृष्ण: (कसणो, कसिणो, कण्हो)।

नियम ४१० (**उच्चार्हति २।१११**) अर्हत् शब्द में संयुक्त के अन्त्य व्यंजन से पहले अकार, इकार और उकार का आगम विकल्प से होता है।

र्ह > रह, रिह, रुह—अर्हत् (अरहो, अरिहो, अरुहो)।

इकार का आगम—

नियम ४११ (**र्ह-श्री-ह्री-कृत्स्न-क्रिया-दिष्ट्यास्वित् २।१०४**) इन शब्दों में संयुक्त व्यंजन के अन्त्य व्यंजन से पूर्व इकार का आगम होता है।

र्ह > रिह—अर्हति (अरिहइ)। अर्हा (अरिहा)। गर्हा (गरिहा)। बर्ह:—(बरिहो)।

श्र > सिर—श्री: (सिरी)।
ह्र > हिर—ह्री: (हिरी)। ह्रीत: (हिरिओ)। अह्रीक: (अहिरिओ)।
स्न > सिण—कृत्स्न: (कसिणो)।
क्र > किर—क्रिया (किरिआ)।

नियम ४१२ (**लात् २।१०६**) संयुक्त शब्द में अन्त्य व्यंजन ल से पहले इ का आगम होता है। क्लिन्नं (किलिन्नं) क्लिष्टं (किलिट्ठं) श्लिष्टं (सिलिट्ठं) प्लुष्टं (पिलुट्ठं) प्लोष: (पिलोसो) श्लेष्मा (सिलिम्हो) श्लेष: (सिलेसो) शुक्लं (सुक्किलं) श्लोक: (सिलोओ) क्लेश: (किलेसो) अम्लं (अम्बिलं) ग्लानं (गिलाणं) म्लानं (मिलाणं) क्लान्तं (किलन्तं)।

नियम ४१३ (**स्याद् भव्य-चैत्य-चौर्य-समेषु यात् २।१०७**) भव्य,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्य और चौर्य के समान र्य वाले शब्दों में य से पहले इकार का आगम होता है।

र्य 7 रिय—चौर्यं (चोरिअं)। स्थैर्यं (थेरिअं)। भार्या (भारिआ)। गाम्भीर्यम् (गम्भीरिअं)। गाम्भीर्यम् (गहीरिअं)। आचार्यः (आयरिओ)। सौन्दर्यं (सुन्दरिअं)। शौर्यं (सोरिअं)। वीर्यं (वीरिअं)। वर्यं वरिअं। सूर्यः (सूरिओ)। धैर्यं (धीरिअं)। ब्रह्मचर्यं (बम्हचरिअं)।

स्या 7 सिआ—स्याद् (सिआ)।

व्य 7 विअ—भव्यः (भविओ)।

त्य 7 इअ—चैत्यं (चेइअं)।

नियम ४१४ (र्श-र्ष-तप्त-वज्रे वा २।१०५) र्श और र्ष संयोग वाले शब्दों तथा तप्त और वज्र शब्दों में संयोग के अन्त्य व्यंजन से पहले इकार का आगम विकल्प से होता है।

र्श 7 रिस—आदर्शः (आयरिसो, आयंसो)। सुदर्शनः (सुदरिसणो, सुदंसणो)। दर्शनं (दरिसणं, दंसणं)।

र्ष 7 रिस—वर्षं (वरिसं, वासं)। वर्षा (वरिसा, वासा)।

प्त 7 विअ—तप्तः (तविओ, तत्तो)।

ज्र 7 इर—वज्रं (वइरं, वज्जं)।

निम्नलिखित शब्दों को नित्य इकार आगम—

परामर्शः—परामरिसो। हर्षः (हरिसो)। अमर्षः (अमरिसो)।

नियम ४१५ (स्वप्ने नात् २।१०८) स्वप्न शब्द में न से पहले इकार का आगम होता है।

स्व > सिवि—स्वप्नः (सिविणो, सिमिणो, सुमिणो)।

ईकार का आगम—

नियम ४१६ (ज्यायामीत् २।११५) ज्या शब्द में य से पहले ईकार आगम होता है। ज्या (जीआ)

उकार का आगम—

नियम ४१७ (पद्म-छद्म-मूर्ख-द्वारे वा २।११२) पद्म, छद्म, मूर्ख और द्वार शब्दों में संयोग के अन्त्य व्यंजन से पूर्व उकार का आगम विकल्प से होता है।

द्म 7 उम—पद्मं (पउमं, पोम्मं)। छद्मं (छउमं, छम्मं)।

र्ख > रुख—मूर्खः (मुरुक्खो, मुक्खो)।

द्व > दुव—द्वारं (दुवारं, वारं, देरं, दारं)।

नियम ४१८ (तन्वी-तुल्येषु २।११३) उकारान्त शब्द स्त्रीलिंग में ईप प्रत्यय आने से तन्वी जैसे शब्द बन जाए उनसे उकार का आगम होता है। तन्वी (तणुवी)। लघ्वी (लहुवी)। गुर्वी (गरुवी)। बह्वी (बहुवी)।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

पृथ्वी (पुहुवी)। मृद्वी (मउवी)। स्रघ्नं (सुरुग्घं)। सूक्ष्मं (सुहुमं)।

नियम ४१६ (एक स्वरे श्वः स्वे २।११४) एक पद में श्व और स्व शब्द हो तो उनसे उकार का आगम होता है। श्वः (सुवे)। स्व (सुव)।

(वक्रादावन्तः १।२६) नियम १६ से वक्र आदि शब्दों में कहीं पहले स्वर के बाद, कहीं दूसरे स्वर के बाद, कहीं तीसरे स्वर के बाद अनुस्वार का आगम होता है।

प्रयोग वाक्य

अस्सत्थो अज्जाण (आर्य) पूयणीओ रुक्खो अत्थि। जत्थ कत्थइ चंदणो अत्थि सव्वं राइक्कं (राजा का) धणं अत्थि। पीलू सघणो भवइ। असोयस्स छायं ठिच्चा जणा संति अणुभवंति। बब्बूलस्स डाली दंतधावणाय होइ। वडस्स साहाए अणेगवडा उप्पज्जइ। णिंबस्स डाली दंतधावणस्स सिट्ठा मणिज्जइ। वंसेसु पाओ अग्गी उप्पज्जइ। अमुम्मि पएसे बउलो न मिलइ।

धातु प्रयोग

पणवज्झुणीहिं वाउमंडलं गुमगुमीअ। सा केसे गुभइ। एगदेसम्मि दंडरूवेण विअंगइ। जो खलणं करेइ सो सम्माणभयेण गोवइ। अहं भवयाण सिक्खं घत्तिस्सं। सूंठि घसिऊणं सो पायेसु लिंपइ। पास, वक्खाणे को विअंभइ। एगो साहू आयरिअस्स समीवे णियभावा विअडइ। वाणरा केवलं घुरुक्कंति। जिणवयणे मा विअप्पउ।

प्राकृत में अनुवाद करो

श्रद्धालु लोग पीपल की पूजा करते हैं। चंदन का सेवन उष्णता को शांत करता है। मरुवासी पीलू का फल शौक से खाते हैं। अशोक वृक्ष ध्यान साधना में सहायक होता है। बबूल के पेड तुम्हारे गांव में कितने हैं? बरगद का दूध कामोत्तेजक होता है। नीम की छाया स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। वंशलोचन दवा में काम आता है। मौलसिरी वृक्ष कितने प्रकार के होते हैं?

धातु का प्रयोग करो

भ्रमर मधुर ध्वनि करता है। माली माला को गूंथता है। राजा ने अपराधी (अवराहिल्ल) के हाथ-पांव आदि कटवाए। गुप्त बात को छिपाना चाहिए। अपने दोष को छिपाना नहीं चाहिए। तुम जो दोगे मैं उसे ग्रहण करूंगा। वह लोंग को घिसकर लगाता है। दो बादाम को घिस कर दूध के साथ पीना चाहिए। रात के ६ बजे के बाद वह जंभाइ लेने लगा। एक पत्र में उसने अपने विचार प्रकट किए। बंदर घुडकते हैं, उनसे डरना नहीं चाहिए। वह बात-बात में संशय करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. स्वरभक्ति किसे कहते हैं ?

२. अकार और इकार के आगम के कितने नियम हैं ? प्रत्येक नियम का एक-एक उदाहरण दो ।

३. अनुस्वार का आगम किस स्वर के बाद होता है ?

४. नीचे लिखे शब्दों में किस स्वर का आगम हुआ है ? आयरिसो, वरिसा, जीआ, छउमं, सुवे, गरुवी, विंछिओ ।

५. पीपल, चंदन, पीलु, अशोक, बबूल, वरगद, नीम, बांस और मौलसिरी के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

६. गुमगुम, गुभ, गोव, घत्त, घस, घुरुक्क, विअंभ, विअड और विअप्प धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वित्व

शब्द संग्रह (स्फुट)

तमाचा, थप्पड—चविडा
कटाक्ष—काणच्छि (स्त्री)
मदिरा—मइरा, सुरा
कीमती—महग्घ (वि)
दुर्लभ, महंगा—महग्घविओ
स्वच्छंदी—सच्छंदो (वि)
अणोहट्टयो (वि)
जेल—कारा
जुआखाना—टेंटा
चिता—चियगा
प्रशंसनीय—सग्घ (वि)
जूठा, उच्छिष्ट—णवोद्धरणं (दे०)
व्यक्ति—वत्ति (स्त्री)

धातु संग्रह

घोट्ट—पीना
चक्ख—चखना, स्वाद लेना
तूस—संतुष्ट होना
धुव्व—कंपना, हिलाना
चंकम—बार-बार चलना
इधर उधर घूमना
चंप (दे०) दबाना, चांपना
चंप—चर्चा करना
चंप—चढना
जम्म—खाना
जेम—जीमना
चिण—इकट्ठा करना

द्वित्व

संयुक्त वर्णों को होने वाला आदेश या शेष रहा वर्ण द्वित्व होता है। द्वित्व होने वाला वर्ण वर्ग का दूसरा वर्ण हो तो पहला और चौथा वर्ण हो तो तीसरा हो जाता है। असंयुक्त वर्ण का शेष रहा वर्ण द्वित्व नहीं होता, उसकी यश्रुति हो जाती हैं।

नियम ४२० (**अनादौ शेषादेशयोर्द्वित्वम्** २।८९) लोप होने के बाद शेष रहा वर्ण और आदेश किया हुआ वर्ण पद के आदि में न हो तो वह द्वित्व हो जाता है।

शेष—कल्पतरुः (कप्पतरू)। भुक्तं (भुत्तं)। दुग्धम् (दुद्धं)। नग्नः (नग्गो)। उल्का (उक्का)। मूर्खः (मुक्खो)।

आदेश—दष्टः (डक्को)। यक्षः (जक्खो)। रक्तः (रग्गो)। कृत्तिः (किच्ची)। रुक्मी (रुप्पी)

शेषवर्ण आदि में होने के कारण द्वित्व नहीं—

स्खलितम् (खलिअं)। स्थविरः (थेरो)। स्तम्भः (खम्भो)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ४२१ (तैलादौ वा २।६८) तैल आदि शब्दों में अनादि यथादर्शन (जैसा देखा जाता है) अन्त्य और अनन्त्य व्यंजन द्वित्व हो जाता है।

अन्त्यवर्ण— तैलं (तेल्लं)। मण्डूकः (मण्डुक्को)। विचकिलः (वेइल्लं)। ऋजुः (उज्जू)। व्रीडा (विड्डा)। प्रभूतं (वहुत्तं)।

अनन्त्यवर्ण—स्रोतस् (सोत्तं)। प्रेमन् (पेम्मं)। यौवनं (जुव्वणं)

आर्ष में—प्रतिस्रोतस् (पडिसोओ)। विस्रोतसिका (विस्सोअसिआ)।

नियम ४२२ (द्वितीय-तुर्ययोरुपरिपूर्वः २।९०) द्वित्व होने वाला वर्ण वर्ग का दूसरा वर्ण हो तो पहला और चौथा वर्ण हो तो तीसरा वर्ण हो जाता है।

शेष—व्याख्यानं (वक्खाणं)। व्याघ्रः (वग्घो)। मूर्च्छा (मुच्छा)। निर्झरः (निज्झरो)। काष्ठं (कट्ठं)। तीर्थं (तित्थं)। निर्धनः (णिद्धणो)। निर्भरः (निब्भरो)। गुल्फं (गुप्फं)।

आदेश—यक्षः (जक्खो)। अक्षि (अच्छी)। मध्यं (मज्झं) पृष्ठम् (पट्ठी)। वृद्धः (वुड्ढो)। हस्तः (हत्थो)। आश्लिष्टः (आलिद्धो)। पुष्पम् (पुप्फं)। विह्वलः (भिब्भलो)।

(दीर्घे वा २।९१) नियम ३७१ से दीर्घ शब्द में शेष घ को ग विकल्प से होता है। दीर्घः (दिग्घो, दीहो)।

नियम ४२३ (समासे वा २।९७) शेष और आदेश वर्ण समास में द्वित्व विकल्प से होते हैं। नदीग्रामः (नइग्गामो, नइगामो)। देवस्तुतिः (देवत्थुई, देवथुई)। बहुलाधिकार से शेष और आदेश के बिना भी होता है—सपिपासः (सपिवासो, सप्पिवासो)। प्रतिकूलं (पडिक्कूलं, पडिकूलं)। अदर्शनम् (अद्दंसणं, अदंसणं)।

नियम ४२४ (सेवादौ वा २।९९) सेवा आदि शब्दों में अनादि—यथादर्शन अन्त्य और अनन्त्य वर्ण द्वित्व विकल्प से होता है।

अन्त्यस्य—सेवा (सेव्वा, सेवा)। नीडम् (नेड्डं, नीडं)। नखाः (नक्खा, नहा)। निहितः (निहित्तो, निहिओ)। व्याहृतः (वाहित्तो, वाहिओ)। मृदुकं (माउक्कं, माउअं)। एकः (एक्को, एओ)। कुतूहलं (कोउहल्लं, कोउहलं)। व्याकुलः (वाउल्लो, वाउलो)। स्थूलः (थुल्लो, थोरो)। हूतं, भूतं (हुत्तं, हूअं)। दैवम् (दइव्वं, दइवं)। तूष्णीकः (तुण्हिक्को, तुण्हिओ)। मूकः (मुक्को, मूओ)। स्थाणुः (खण्णू, खाणु)। स्त्यानं (थिण्णं, थीणं)।

अनन्त्यस्य—अस्मदीयम् (अम्हक्केरं, अम्हकेरं)। चेअ (तं च्चेअ, तं चेअ) चिअ (सो च्चिअ, सो चिअ)।

नियम ४२५ (न दीर्घानुस्वारात् २।९२) लाक्षणिक (कृत) अलाक्षणिक (अकृत) दीर्घस्वर और अनुस्वार से परे शेष और आदेश वर्ण द्वित्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नहीं होता।

कृत दीर्घ—निःश्वासः (नीसासो)। स्पर्शः (फासो)।

अकृत दीर्घ—पार्श्वम् (पासं)। शीर्षम् (सीसं)। ईश्वरः (ईसरो)। द्वेष्यः (वेसो)।

कृत अनुस्वार—त्र्यस्रम् (तंसं)।

अकृत अनुस्वार—सन्ध्या (संझा)। विन्ध्यः (विंझो)।

नियम ४२६ (र-होः २।९३) रकार और हकार द्वित्व नहीं होते। रकार शेष नहीं रहता।

आदेश र—सौन्दर्यम् (सुन्देरं)। ब्रह्मचर्यम् (बम्हचेरं)।

शेष—ह—विह्वलः (विहलो)

आदेश ह—कार्षापणः (कहावणो)।

नियम ४२७ (धृष्टद्युम्ने णः २।९४) धृष्टद्युम्न शब्द में आदेश ण को द्वित्व नहीं होता। धृष्टद्युम्नः (धट्ठज्जुणो)

नियम ४२८ (कर्णिकारे वा २।९५) कर्णिकार शब्द में शेष ण द्वित्व विकल्प से होता है। कर्णिकारः (कणिआरो, कण्णिआरो)।

नियम ४२९ (दृप्ते २।९६) दृप्त शब्द में शेष वर्ण द्वित्व नहीं होता। दृप्तः (दरिओ)। दरिअ सीहेण (दृप्तसिंहेन)

प्रयोग वाक्य

माअरा पुत्तस्स चविडं देइ। सो काणच्छीअ इत्थिं पासइ। जो मइरं (सुरं) पिवइ तस्स पडणं धुवं। साहूण सागयं चरित्तस्स भवइ न उ वत्तीए (व्यक्ति)। एअं कोसेयं महग्घं अत्थि। माणुसजम्मो आगमे महग्घविओ कहिओ। काराए को गच्छइ? कितवो टेंटाए जूअं खेलइ। राजीवेण इंदिराचियगाए अग्गी दिण्णो। तुज्झ कज्जं सग्घं अत्थि। भोयणस्स पच्छा णवोद्धरणं न मोत्तव्वं। जो सच्छंदो (अणहट्टयो) होइ सो अणुसासणस्स महत्तं न जाणइ।

धातु प्रयोग

सेहो साहू संतसुहारसं घोट्टइ। चंकमतस्स महावीरस्स दंसणट्ठं जणा आगआ। जो सइ सुरं चक्खइ सो तस्स वसीभूओ भवइ। महावीरस्स दंसणं करित्ताण सो तूसइ। तवेण तवस्सी कम्मरयाइं धुव्वइ। सेवओ सामिं पइदिवसं चंपइ। अमुणा सद्धिं को चंपइ? साहू खवअसेणिं चंपइ। सा साविया दिणे सइ जेमइ। माली पुप्फाइं चिणइ। सो निसाए न जम्मइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत में अनुवाद करो

वाद-विवाद में एक लडके ने दूसरे को थप्पड मारा। सीता ने कटाक्ष दृष्टि से अपने पति को देखा। मदिरा के कारण उसका घर नष्ट हो गया। नगरवासी आपका स्वागत करते हैं। संसार में बहुमूल्य वस्तु क्या है ? धर्म-ग्रन्थों में दुर्लभ वस्तु किसको कहा है ? जुआखाने में वह कौन जा रहा है ? जेल भर गया है, उसमें अब स्थान नहीं है। उसकी चिता में किसने आग लगाई ? प्रेक्षाध्यान का कार्य देशभर में प्रशंसनीय है। भोजन को जूठा कभी मत छोडो। यह लडका बचपन से ही स्वच्छंद रहा है।

धातु प्रयोग करो

विनोद अध्यात्मोपनिषद् को पीना चाहता है। भगवान महावीर राजगृह के पास के गांवों में घूम रहे हैं। वह इक्षुरस का स्वाद लेना चाहता है। भगवान की वाणी सुनकर सब संतुष्ट हो गए। तुम्हारी प्रचंड ध्वनि ने वायुमंडल को कंपित कर दिया। सुदर्शन पैर दबाना नहीं चाहता है। राजकरण चर्चा करने के लिए हर समय तैयार रहता है। वह पहाड पर चढता है। आज कौन नहीं जीमेगा ? हीरालाल सूत्रों के प्रमाण इकट्ठा कर रहा है। सरला रात को नहीं जीमती है।

प्रश्न

१. शेष और आदेश किसे कहते हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।
२. कौनसा वर्ण द्वित्व होता है ? नियम सहित बताओ।
३. कौन से नियम विकल्प से द्वित्व करते हैं और कौन से निषेध करते हैं ? प्रत्येक नियम का एक-एक उदाहरण दो।
४. समास में वर्ण द्वित्व होता है या नहीं ? होता है तो कौनसा पद ?
५. तमाचा, कटाक्ष, मदिरा, स्वागत, बहुमूल्य, दुर्लभ, जेल, चिता, जूठा, स्वच्छंदी और प्रशंसनीय अर्थ के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. घोट्ट, चक्ख, धुव्व, चंप, चिण, चंकम और जम्म धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५२ स्वर सहित व्यंजनों का लोप

शब्द संग्रह (काल वर्ग १)

मुहूर्त—मुहुत्तं	काल का सूक्ष्म भाग—समयो
दिन—दिवसो, दिवहो	रात्रि—रत्ती, राई, निसा
मास—मासो	पक्ष—पक्खो
प्रातःकाल—पगे, उसावेला	मध्यदिन—मज्झण्हो
संध्या—संझा	पूर्व दिन—पुव्वण्हो
घटी—घडी	ऋतु—उउ (त्रि)

० ० ०

रूपया—रूवगं, रूवगो।

धातु संग्रह

धरिस—क्षुब्ध करना, विचलित करना	कुह—सडना
विज्ज—विद्यमान होना	बाह—बाधा करना, रोकना
सिज्ज—स्वेद का आना, पसीजना	सव—शाप देना, गाली देना
विज्झ—बींधना	मज्ज—मद्य करना, अभिमान करना

नियम ४३० (**व्याकरण-प्राकारागते कगोः १।२६८**) व्याकरण और प्राकार शब्दों में क का और आगत शब्द में ग का लुक् विकल्प से होता है।

क>लोप—व्याकरणम् (वारणं, वायरणं)

का 7 लोप—प्राकारः (पारो, पायारो)

ग 7 लोप—आगतः (आओ, आगओ)

नियम ४३१ (**लुग् भाजन-दनुज-राजकुले जः सस्वरस्य न वा १।२६७**) भाजन, दनुज, राजकुल शब्दों के स्वर सहित ज का लोप विकल्प से होता है।

ज 7 लोप—भाजनम् (भाणं, भायणं)। दनुजः (दणु, दणुअ)। राजकुलम् (राउलं, रायउलं)।

नियम ४३२ (**दुर्गादेव्युदुम्बर-पादपतन-पादपीठन्तर्दः १।२७०**) दुर्गादेवी, उदुम्बर, पादपतन और पादपीठ शब्दों के मध्य में होने वाले सस्वर द का लुक् विकल्प से होता है।

द 7 लोप—पादपतनम् (पावडणं, पायवडणं)

द 7 लोप—पादपीठम् (पावीढं, पायवीढं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दु 7 **लोप**—उदुम्बरः (उम्बरो, उउम्बरो)
दे 7 **लोप**—दुर्गादेवी (दुग्गा-वी, दुग्गाएवी)

नियम ४३३ (किसलय-कालायस-हृदये यः १।२६९) किसलय कालायस और हृदय शब्दों के सस्वर यकार का लुक् विकल्प से होता है।

य 7 **लोप**—किसलयम् (किसलं, किसलयं) कालायसम् (कालासं, कालायसं) हृदयम् (हिअं, हिअयं)

नियम ४३४ (यावत्तावज्जीवितावर्तमानावट-प्रावारक देवकुलैवमेवे वः १।२७१) यावत् आदि शब्दों में सस्वर वकार का लुक् विकल्प से होता है।

व 7 **लोप**—अवटः (अडो, अवडो) आवर्तमानः (अत्तमाणो, आवत्तमाणो) एवमेव (एमेव, एवमेव) तावत् (ता, ताव) देवकुलम् (देउलं, देवउलं) प्रावारकः (पारओ, पावरओ) यावत् (जा, जाव)
वि 7 **लोप**—जीवितम् (जीअं, जीविअं)

प्रयोग वाक्य

सामाइयस्स समयो एगो मुहुत्तो भवइ। समयो कालस्स सुहुमो भागो अत्थि, तस्स विभागो न भवइ। आयरिआ अत्थ पंचदिवसा ठास्संति। अज्ज दिवहस्स अवेक्खा रत्ती पलंबा अत्थि। णक्खत्तमासे सत्तवीसा णक्खत्ता होंति। मज्झ जम्मो सुक्कपक्खे जाओ। उसावेलाइ न सोअणिज्जं। मज्झण्हे सुत्तस्स सज्झायं भवइ। संझा पडिक्कमणं काअव्वं। किं सोमवारे तुमं पुव्वण्हे मोणं भजसि ?

धातु प्रयोग

दमिइंदियाणं रागसत्तू चित्तं न धरिसेइ। तुज्झ पासे मइनाणं विज्जइ। गिम्हउउम्मि मुणी विहारसमये सिज्जइ। सूई सरीरं विज्झइ। घरे फलाइं को वि न खाअइ अओ ठिआइं फलाइं कुहेंति। तुज्झ असुद्धं उच्चारणं ममं बाधइ। संजमी साहू कयाइ न सवइ। सो सुवरूवे मज्जइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वह एक मुहूर्त के लिए सामायिक करता है। एक शब्द बोलने में काल का सूक्ष्म भाग कितना लगता है? वह दिन में नहीं सोता है। क्या तुम रात्रि में प्रतिदिन स्वाध्याय करते हो? चैत्र का महिना सबसे अच्छा लगता है। कृष्ण पक्ष में भी चंद्रमा का प्रकाश रहता है। प्रातःकाल वह गुरुदर्शन को जाता है। क्या तुम मध्याह्न में भोजन करते हो? संध्या के समय स्वाध्याय करनी चाहिए। दिन के पूर्वभाग में वह भोजन करता है।

धातु का प्रयोग करो

राग से हर आदमी विचलित हो जाता है। रूपयों के प्रलोभन से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बड़े-बड़े विचलित हो जाते हैं। इस गांव में तीन सौ आदमी रहते हैं। जिसके शरीर में बल होता है उसको पसीना बहुत आता है। तुम्हारा कटु व्यवहार हृदय को बींधता है। सरकार के संग्रहालय (संगहालयं) में पडा अनाज सड रहा है। तुम्हारे कथन में मुझे कोई बाधा नहीं है। असाधु शाप देता है वह फलित नहीं होता। धन और रूप पर अभिमान नहीं करना चाहिए।

प्रश्न

१. किन-किन व्यंजनों का स्वर सहित लोप होता है ?

२. नीचे लिखे शब्दों में बताओ किस व्यंजन का स्वर सहित लोप होकर क्या रूप बनता है और किस नियम से ?
व्याकरणं, राजकुलं, दुर्गादेवी, पादपीठं, हृदयं, कालायसं, जीवितं, प्रावारकः।

३. मुहूर्त, दिवस, मध्यदिन, संध्या, घटी, रात्रि, पूर्व दिन, ऋतु और प्रातःकाल के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

४. धरिस, सिज्ज, विज्झ, कुह, बाह, सव और मज्ज धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

५. पोप्फलं, णारिएलो, णिकायगो, पिआलो, णिंबो, बब्बूलो, टेंटा, काणच्छि, सच्छंदो शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३ सस्वर व्यंजन आदेश

शब्द संग्रह (काल वर्ग २)

वर्तमानकाल—पडिपुन्नं
अतीतकाल—अईओ
भविष्यकाल—अणागयं
युग—जुगो
वर्ष—वरिसो, संवच्छरो
वसंत—वसंतो
ग्रीष्म—गिम्हो
वर्षा—वरिसा
शरद्—सरयो
हेमंत—हेमंतो
शिशिर—सिसिरो

० ० ०

कल्पना—कप्पणा
लहर—उम्मि (स्त्री)

धातु संग्रह

णिज्झ स्नेह करना
तणुअ—पतला होना
तडप्फड—तडफडाना
तज्ज—डांटना
ताड—ताडना, पीटना
तण—विस्तार करना
तुड—टूटना, अलग होना
तोल—तोलना
पकर—कार्य का प्रारंभ करना
तक्क—तर्क करना

स्वर + सस्वरव्यंजन आदेश—

स्वर + व्यंजन युक्त स्वर=स्वर और उससे आगे स्वर सहित व्यंजन। इन तीनों को जो एक आदेश होता है उसे स्वर और सस्वर व्यंजन आदेश कहते हैं।

नियम ४३५ (एत्त्रयोदशादौ स्वरस्य सस्वरव्यञ्जनेन १।१६५) त्रयोदश इस प्रकार के संख्या शब्दों में आदि स्वर और उसके आगे व्यंजन सहित स्वर को एकार आदेश होता है। त्रयोदश (तेरह) त्रिविंशतिः (तेवीसा) त्रिंत्रिशत् (तेत्तीसा)।

नियम ४३६ (स्थविर-विचकिलायस्कारे १।१६६) स्थविर, विचकिल और अयस्कार शब्दों के आदि स्वर और उसके आगे स्वर सहित व्यंजन को एकार आदेश होता है। स्थविरः (थेरो) विचकिलम् (वेइल्लं) अयस्कारः (एक्कारो)।

नियम ४३७ (वा कदले १।१६७) कदल शब्द के आदि स्वर और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसके आगे स्वर सहित व्यञ्जन को एकार विकल्प से होता है। कदलम् (केलं, कयलं)। कदली (केली, कयली)।

नियम ४३८ (वेतः कर्णिकारे १।१६८) कर्णिकार शब्द में आदि स्वर और उससे आगे स्वर सहित व्यञ्जन को ए विकल्प से होता है। कर्णिकारः (कण्णेरो, कण्णिआरो)।

नियम ४३६ (अयौ वैत् १।१६६) अयि शब्द के आदि स्वर और उससे आगे के स्वर सहित व्यंजन को ए आदेश होता है। अयि (ऐ)।

नियम ४४० (ओत्पूतर-बदर-नवमालिका-नवफालिका-पूगफले १।१७०) पूतर, बदर, नवमालिका, नवफालिका और पूगफल शब्दों के आदि स्वर और उससे आगे के स्वर सहित व्यंजन को ओ आदेश होता है। पूतरः (पोरो) बदरम् (बोरं) बदरी (बोरी) नवमालिका (नोमालिआ) नवफालिका (नोहलिआ) पूगफलम् (पोप्फलं)।

नियम ४४१ (न वा मयूख-लवण-चतुर्गुण-चतुर्थ-चतुर्दश-चतुर्वार-सुकुमार-कुतूहलोदूखलोलूखले १।१७१) मयूख, लवण, चतुर्गुण, चतुर्थ, चतुर्दश, चतुर्वार, सुकुमार, कुतूहल, उदूखल और उलूखल शब्दों के आदि स्वर और उसके आगे सस्वर व्यञ्जन को ओकार आदेश विकल्प से होता है। मयूखः (मोहो, मऊहो) लवणम् (लोणं) चतुर्गुणः (चोग्गुणो चउग्गुणो) चतुर्थः (चोत्थो, चउत्थो) चतुर्दश (चोद्दह, चउद्दह) चतुर्दशी (चोद्दसी, चउद्दसी)। चतुर्वारः (चोव्वारो, चउव्वारो) सुकुमारः (सोमालो, सुकुमालो) कुतूहलम् (कोहलं, कोउहल्लं) उदूखलः (ओहलो, उऊहलो) उलूखलम् (ओक्खलं, उलूहलं)।

नियम ४४२ (अवापोते १।१७२) अव और अप उपसर्ग तथा विकल्प अर्थ में निपात उत शब्द के आदि स्वर और उससे आगे स्वर सहित व्यञ्जन को ओ विकल्प से होता है।

अव—अवतरति (ओअरइ, अवयरइ)। अवकाशः (ओआसो, अवयासो)।

अप—अपसरति (ओसरइ, अवसरइ)।

उत—उत वनम् (ओ वणं, उअवणं)। उत घनः (ओ घणो, उअ घणो)।

नियम ४४३ (ऊच्चोपे १।१७३) उप शब्द के आदि स्वर तथा उससे आगे सस्वर व्यंजन को ऊ और ओ आदेश विकल्प से होता है। उपहसितम् (ऊहसिअं, ओहसिअं, उवहसिअं) उपाध्यायः (ऊज्झाओ, ओज्झाओ, उवज्झाओ) उपवासः (ऊआसो, ओआसो, उववासो)।

नियम ४४४ (उमो-निषण्णे १।१७४) निषण्ण शब्द के आदि स्वर तथा उससे आगे स्वर सहित व्यञ्जन को उम आदेश विकल्प से होता है। निषण्णः (णुमण्णो, णिसण्णो)।

नियम ४४५ (प्रावरणे अङ्ग्वाऊ १।१७५) प्रावरण शब्द के आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वर तथा उससे आगे सस्वर व्यञ्जन को अङ्ग् और आउ विकल्प से आदेश होते हैं। प्रावरणम् (पङ्गुरणं, पाउरणं, पावरणं)।

प्रयोग वाक्य

पडिपुन्नं अहं अप्पाणं संवरेमि। सो अईयस्स समरणं न करेइ। झाणे अणागयस्स कप्पणा न काअव्वा। पंचवरिसेहिं एगो जुगो भवइ। वसंतम्मि रुक्खस्स नव्वपत्ताइं पुप्फाइं य णिक्कसंति। अहं गिम्हकाले आयवं अहियं अणुभवामि। अत्थ पएसे वरिसस्स फलं वरिसाए अवरिं निब्भरं अत्थि। सरयम्मि आयवस्स सीयस्स य संगमो भवइ। हेमंतम्मि जणा ओण्णियाइं वत्थाइं परिहांति। सिसिरे सीउम्मीआ सरीरो धुणइ। सो वक्खाणस्स अब्भासं पकरइ।

धातु प्रयोग

पिआ पोत्तं णिज्झइ। सम्मज्जओ सूअरं तडप्फडइ। गुरू सीसं ताडेइ। कडुवयणेण संबंधो तुडइ। उवसमेण कोहो तणुअइ। सासू पुत्तवहुं तज्जइ। निवो सुवरज्जं तणिउं इच्छइ। सोवण्णिओ सुवण्णं तोलइ। जो परिवारे ववहारे तक्कइ तस्स संबंधो खिप्पं तुडइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वर्तमान काल को सफल करो। केवल अतीत के गुण मत गाओ। भविष्य के लिए विकास की योजना बनाओ। युग परिवर्तनशील होता है। इस वर्ष में तुम्हें कितना लाभ हुआ? वसंत ऋतु मन को प्रिय लगती है। ग्रीष्म में प्यास अधिक लगती है। वर्षा ऋतु में साधु एक स्थान पर रहते हैं। शरद पूर्णिमा की रात्रि में हम सूक्ष्म अक्षर पढते हैं। हेमंत ऋतु में मरुभूमि की पदयात्रा कष्टप्रद होती है। वह अपने विभाग का कार्य कब प्रारम्भ करेगा?

धातु का प्रयोग करो

तुम किससे स्नेह करते हो? किसी प्राणी को तडफडाना बहुत बुरा है। राजपुरुष चोर को पीटते हैं। वृक्ष की डाली हवा से टूट गई। अधिक कम खाने से शरीर पतला होता है। सेठ नौकर को डांटता है। धर्म का विस्तार करना चाहिए। वह अपने को तोलता है। तुम बात-बात में तर्क करते हो।

प्रश्न

१. स्वर और सस्वर व्यंजन किसे कहते हैं और उसको क्या आदेश होता है?
२. किन-किन नियमों से स्वर और सस्वर व्यञ्जनों को एकार आदेश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होता है ?

३. ओकार, उकार और उम आदेश किन नियम से होता है ?

४. नीचे लिखे शब्द किस आदेश से बने हैं ? वेइल्लं, एक्कारो, पोप्फलं, पोरो, ओहलो, उअवणं, उज्झाओ, णुमण्णो, पाउरणं ।

५. ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, वसंत, हेमंत, वर्ष, युग, वर्तमानकाल, अतीतकाल और भविष्यकाल के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

६. णिज्झ, तडप्फड, तणुअ, तज्ज, ताड, तुड, तण और तोल धातुओं के अर्थ बताओ और उन्हें अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (पक्षी वर्ग १)

कौआ—काओ, वायसो
चील—चिल्ला
कबूतर—कवोओ
सुआ—सुओ, कीरो
चकोर—चकोरो
आडी—आडी (स्त्री)
कोयल—कोइलो, परहुतो कोइला
गीध—गिद्धो
बगुला—बयो, बगो
बगुली—बगी
मैना—सारिआ

चोंच—चंचू (स्त्री)
पिंजडा—पंजरं, पिंजरं

धातु संग्रह

तलहट्ट—सींचना
तुर—जल्दी करना
थंग—उन्नत करना, ऊंचा करना
थंभ—स्थिर होना, रुकना
विकिर—फेंकना, विखेरना
थक्कव—रखना, स्थापना करना
थण—गर्जना
थब्भ—अहंकार करना
थय—आच्छादन करना
थरथर—थरथर कांपना

वर्ण परिवर्तन (व्यत्यय)

शब्द में एक वर्ण का परस्पर स्थान परिवर्तन होता है उसे विपर्यास या व्यत्यय कहते हैं।

नियम ४४६ (करेणु-वाराणस्योः र-णो व्यत्ययः २।११६) स्त्रीलिंगी करेणु और वाराणसी शब्दों में र और ण का परस्पर व्यत्यय हो जाता है। करेणु—कणेरू। वाराणसी—वाणारसी।

नियम ४४७ (अचलपुरे च-लोः २।११८) अचलपुर शब्द में च और ल का व्यत्यय होता है। अचलपुरं(अलचपुरं)

नियम ४४८ (ह्रदे हदोः २।१२०) ह्रद शब्द के हकार और दकार का व्यत्यय होता है। ह्रदः (द्रहो)। आर्ष—हरए। धम्मेहरए।

नियम ४४६ (हरिताले रलोर्न वा २।१२१) हरिताल शब्द में र और ल का व्यत्यय विकल्प से होता है। हरितालः (हलिआरो, हरिआलो)।

नियम ४५० (लघुके ल-होः २।१२२) लघुक शब्द में घ को ह करने के बाद ल और ह का व्यत्यय विकल्प से होता है। लघुकम् (हलुअं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लहुअं)।

नियम ४५१ (ह्ये ह्योः २।१२४) ह्य शब्द में ह् और य का व्यत्यय विकल्प से होता है। सह्यः (सय्हो, सज्झो)।

नियम ४५२ (आलाने लनोः २।११७) आलान शब्द में ल और न का व्यत्यय होता है। आलानः (आणालो)।

नियम ४५३ (महाराष्ट्रे ह-रो. २।११९) महाराष्ट्र शब्द में ह् और र का व्यत्यय होता है। महाराष्ट्रम् (मरहट्ठं)।

नियम ४५४ (ललाटे ल-डोः २।१२३) ललाट शब्द में ल और ड का व्यत्यय होता है। ललाटम् (णडालं, णलाडं)।

प्रयोग वाक्य

पक्खीसु वायसो धुत्तो अत्थि। चिल्ला आयासम्मि उड्डेइ। कवोओ उज्जू पक्खी अत्थि। कीरो हरिअकायो रत्तचंचू य भवइ। कोइलाए सद्दो महुरो कण्णपिओ लग्गइ। गिद्धस्स दिट्ठी दूरगामिणी भवइ। बगाणं झाणं पसिद्धं अत्थि। अमुम्मि गामम्मि सारिआ नत्थि। चकोरो जोण्हापिओ भवइ। आडी रत्तिदिवा जले वसइ।

धातु प्रयोग

पंजरम्मि पक्खी सच्छंदो न भवइ। रट्ठपई सुवउज्जाणं सहत्थेहिं पइदिवहं तलहट्टइ। अत्थंगयस्स सूरियस्स पुव्वं गामे गमिउं मुणी तुरइ। चंडालं थंगिउं को चेट्ठइ? मंतपओगेण सो तस्स गइं थंभइ। रामो अवक्खरं बाहिं विकिरइ। जयायरिओ सरूवससिमुणि अत्थ थक्कविऊण विहारं अकरिंसु। अज्ज मेहो गगणे थणइ किं वरिसा होस्सइ? तस्स पासे धणं नत्थि तहवि थब्भइ। सो वरिसाए अद्दकायो थरथरइ। तुमं वत्थेण ठाणं थयसि।

प्राकृत में अनुवाद करो

कौआ वृक्ष पर बैठा हुआ है। चील रोटी को लेकर आकाश में उड गई। कबूतर रात को यहां बैठते हैं। सुआ क्या खाता है? कोयल और कौए का भेद उसकी बोली (वाणी) से लगता है। गीध पशु के कलेवर (सवं) को खाने दूर से उडकर आया है। बगुला और बगुली दोनों साथ-साथ उड गए। मैना क्या खाती है, क्या तुम जानते हो? चांदनी में चकोर प्रसन्न होता है। आडी राजसमंद झील में बहुत हैं। पिंजडा आखिर पिंजडा है चाहे वह सोने का क्यों न हो?

धातु का प्रयोग करो

उसने अपना बगीचा कल क्यों नहीं सींचा? आग लगने पर लोग घर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से निकलने की जल्दी करते हैं। आचार्य तुलसी ने नारी समाज को ऊंचा उठाया है। वह चलते-चलते स्तंभित हो गया, न जाने किसने क्या कर दिया ? समाज में परिवर्तन लाने वाले को पहले अपने क्रांतिकारी (कंतिगरो) विचार सभा या भाषण में बिखेर देना चाहिए। उसने अपने घर में भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की। जो मेघ गर्जता है वह बरसता नहीं। अपने भाषण या गीत पर अहंकार नहीं करना चाहिए। वह सभा के लिए स्थान को आच्छादित करता है। आचार्य श्री की उपस्थिति में प्रवचन सभा में भाषण देने वाला मुनि थरथर कांपता है।

प्रश्न

१ व्यत्यय किसे कहते हैं ?

२. नीचे लिखे शब्दों में बताओ किस नियम से किस शब्द में किस वर्ण का व्यत्यय हुआ है ? कणेरु, वाणारसी, अचलपुरं, हलिआरो, हलुअं, सय्हो, आणालो, मरहट्ठं, णडालं।

३. कौआ, चील, कोयल, गीध, कबूतर, सुआ, बगुला, मैना, चकोर, आडी और चोंच के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

४. तलहट्ट, तुर, थंग, थंभ, विकिर, थक्कव, थण, थब्भ, थय और थरथर धातुओं के अर्थ बताओ तथा उन्हें अपने वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५ उवसग्ग (उपसर्ग)

प (प्र) आदि अव्यय २२ हैं। जब ये धातु के रूप के साथ प्रयुक्त होते हैं तब इनकी संज्ञा उपसर्ग होती है। दो उपसर्गों की या धातु के रूप के साथ उपसर्ग की संधि होती है। धातु से पहले उपसर्ग लगाने से कहीं पर धातु का अर्थ बदल जाता है, कहीं पर विपरीत अर्थ हो जाता है और कहीं पर धातु के अर्थ में ही विशेषता लाता है। प (प्र) आदि उपसर्ग सभी धातुओं के साथ नहीं लगते। एक धातु के साथ एक, दो उपसर्ग लगते हैं तो किसी के साथ दो से अधिक भी लगते हैं। एक धातु के साथ एक, दो, तीन और चार उपसर्ग एक साथ देखने को मिलते हैं।

प (प्र)—पजाइ (आगे जाता है)। पजोतते (विशेष प्रकाशित होता है)। पहरइ (प्रहार करता है)।

परा (परा)—पराजिणइ (पराजय करता है)।

ओ, अव, अप (अप)—ओसरइ, अवसरइ, अपसरइ (सरकता है, दूर हटता है)।

सं (सम्)—संगच्छइ (साथ जाता है)। संचिणइ (संचय करता है, इकट्ठा करता है)।

अणु (अनु)—अणुजाइ (पीछे जाता है)। अणुकरइ (अनुकरण करता है।

ओ (अव)—ओतरइ (अवतार लेता है)।

अव (अव)—अवतरइ (नीचे जाता है, उतरता है)।

निर् (निर्)—निरिक्खइ (निरीक्षण करता है, देखता है।)

नि (निर्)—निज्झरइ (झरता है)।

नी (निर्)—नीसरइ (निकलता है)।

दुर् (दुर्)—दुग्गच्छइ (दुर्गति में जाता है)।

दू—दूहवइ (दुःखी करता है)।

अभि (अभि)—अभिगच्छइ (सामने जाता है)।

अहि (अभि)—अहिलसइ (इच्छा करता है)।

वि—विजाणइ (विशेष जानता है)। विजुंजइ (अलग करता है)। विकुव्वइ (विकृत करता है)।

अधि (अधि)—अधिगइ (जानता है, प्राप्त करता है)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहि (अधि)—अहिगमो (अधिगम, ज्ञान)।
सु (सु)—सुभासए (अच्छा बोलता है)।
सू (सु)—सूहवो (भाग्यवान्)।
उ (उत्)—उग्गच्छते (ऊंचा जाता है, उगता है)।
अइ (अति)—अइसेइ (अतिशय करता है, अति प्रशंसा करता है)।
अति (अति)—अतिगच्छइ (सीमा से बाहर जाता है)।
णि (नि) णिपडइ (निरंतर गिरता है, नीचे गिरता है)।
पडि (प्रति)—पडिभासए (सामने बोलता है)।
पति (प्रति)—पतिठाइ (प्रतिष्ठित होता है)।
परि (प्रति)—परिट्ठा (प्रतिष्ठा)। पडिमा (प्रतिमा)। पडिकूलं (प्रतिकूल)।
परि (परि)—परिवुडो (परिवृत, चारों ओर से घिरा हुआ)।
पलि (परि)—पलिघो (परिघ, घन)।
उव (उप) उवागच्छइ (पास जाता है)।
ओ (उप)—ओज्झायो (उपाध्याय)।
उव (उप)—उवज्झायो (उपाध्याय)।
ऊ (उप)—ऊज्झायो (उपाध्याय)।
आ (आ)—आवसइ (मर्यादा में रहता है)। आगच्छइ (आता है)।

नियम ४५५ (निष्प्रती ओत्परी माल्यस्थो र्वा १।३८) निर् से परे माल्य शब्द हो तो निर् को ओत् और प्रति से परे स्था धातु हो तो प्रति को परि आदेश विकल्प से होता है।

ओमालं, निम्मलं (निर्माल्यं)। परिट्ठा, पइट्टा (प्रतिष्ठा)। परिट्ठिअं, पइट्ठिअं (प्रतिष्ठितं)।

प्राकृत में अनुवाद करो

सूर्य पूर्व दिशा में उगता है। दो मुनि विहार कर आने वाले मुनि के सामने जाते हैं। क्या भगवान पुनः संसार में अवतार लेता है? बच्चा दूसरों का अनुसरण करता है। जो दूसरों को अधिक सताता है वह दुर्गति में जाता है। रमेश धर्मेश पर प्रहार करता है। एक आदमी दूसरे को पराजित करता है। लडका पिता के सामने बोलता है। यह गांव पहाड से चारों ओर से घिरा हुआ है। वह तुम्हारे पास आता है। तुम पानी के वर्तन को ढांकते हो। वृक्ष से पत्ते नीचे गिरते हैं। अध्यापक विद्यार्थियों का निरीक्षण करता है। लडके व्यर्थ में परस्पर लडते हैं। धनपाल प्रतिदिन धन का संचय करता है।

प्रश्न

१. अव्यय और उपसर्ग में क्या अन्तर है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. उपसर्ग कितने हैं और उनके नाम बताओ ?

३. एक धातु के साथ कम से कम कितने उपसर्ग लगते हैं और अधिक से अधिक कितने लगते हैं ?

४. धातु के पहले उपसर्ग लगने से उसके अर्थ में परिवर्तन आता है या नहीं ? आता है तो कैसा ?

५. नीचे लिखे संस्कृत के उपसर्गों का प्राकृत में क्या-क्या रूप बनता है ?
उप, परि, अभि, अधि, निर्, अप

६. चार उदाहरण ऐसे दो जहां उपसर्ग के योग से धातु के अर्थ में परिवर्तन आता हो ?

७. संझा, मज्झण्हो, घडी, वरिसा, सरयो, सिसिरो, चिल्ला, कोइला, वायस शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दरूप (१)

(पुंलिंग अकारान्त शब्द)

शब्द संग्रह (पक्षी वर्ग २)

तीतर—तित्तिरो
वटेर—लावओ, लावगो
सारस—सारसो
गरुड—गरुडो, गरुलो
हंस—हंसो
कंक—कंको

खंजन—खंजणो
पपीहा—चायवो, चायगो
चकवा—चक्कवाओ, चक्कआओ
मोर—मोर, अल्लल्लो (दे०)
कुरर—कुररो

० ० ० ० ०

घोंसला—णीडं, णेड्डुं
शाखा—डाली

धातु संग्रह

थव—स्तुति करना
थिप—तृप्त होना
थुअ—स्तुति करना
थुक्क—थूकना
थुक्कार—तिरस्कार करना

थुण—स्तुति करना
थेप्प—तृप्त होना, संतुष्ट होना
दंस—दांत से काटना
दंसाव—दिखलाना
दक्ख—देखना, अवलोकन करना

शब्दों के विषय में—

० किसी भी लोक व्यापक भाषा में द्विवचन सूचक प्रत्यय अलग उपलब्ध नहीं होते। इसी प्रकार लोक व्यापक भाषा प्राकृत में भी द्विवचन दर्शक अलग प्रत्यय नहीं है। द्विवचन का अर्थ सूचित करने के लिए शब्द के पीछे दो शब्द जोडकर बहुवचन के प्राकृत रूपों का प्रयोग करना होता है।

० चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। नमो देवाय—नमो देवस्स।

० अधिकांशतया लिंग का निर्णय शब्द के अंतिम वर्ण के आधार पर किया जाता है।

नियम ४२८ (द्विवचनस्य बहुवचनम् ३।१३०) स्यादि तथा त्यादि की सब विभक्तियों के द्विवचन को बहुवचन होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विभक्ति प्रत्यय

विभक्ति	एकवचन		बहुवचन	
	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
प्रथमा	सि	डो	जस्	लोप
द्वितीया	अम्	म्	शस्	लोप
तृतीया	टा	ण, णं	भिस्	हि, हिं, हिँ
चतुर्थी	×	×	×	×
पंचमी	ङसि	त्तो, दो (ओ) दु (उ) हि, हिंतो, लुक्	भ्यस्	त्तो, दो (ओ) दु (उ) हि, हिंतो, सुंतो
षष्ठी	ङस्	स्स	आम्	ण, णं
सप्तमी	ङि	डे (ए) म्मि	सुप्	सु, सुं
संबोधन	सि	ओ, लोप	जस्	लोप

नियम ४५६ (अतः सेर्डोः ३।२) अकारान्त नाम से परे स्यादि के सि को डो होता है। वच्छो।

नियम ४५७ (जस्-शस्-ङसि-त्तो-दो-द्वामि दीर्घः ३।१२) जस्, शस् और ङसि इन प्रत्ययों के परे होने पर अकार दीर्घ होता है। वच्छा।

नियम ४५८ (जस्-शसो र्लुक् ३।४) अकारान्त शब्द से परे जस् एवं शस् का लोप हो जाता है। वच्छा, वच्छे।

नियम ४५९ (अमोस्य ३।५) अकार से परे अम् के अकार का लोप हो जाता है। वच्छं।

नियम ४६० (टा आमोर्णः ३।६) अकारान्त शब्द से परे टा तथा षष्ठी के बहुवचन आम् को ण होता है।

नियम ४६१ (टाण शस्येत् ३।१४) टा के आदेश ण तथा शस् प्रत्यय परे हो तो अकार को एकार होता है।

(क्त्वा-स्यादेर्ण-स्वोर्वा १।२७) नियम ७२ से क्त्वा और स्यादि प्रत्ययों के ण तथा सु के आगे अनुस्वार का आगम विकल्प से होता है। वच्छेणं, वच्छेण। वच्छेसुं, वच्छेसु।

नियम ४६२ (भिसो हि हिँ हिं ३।७) अकार से परे भिस् के स्थान पर हि, हिँ (सानुनासिक) और हिं (सानुस्वार) आदेश होता है।

नियम ४६३ (भिस्भ्यस्सुपि ३।१५) भिस्, भ्यस् और सुप् परे हो तो अ को ए हो जाता है। वच्छेहि, वच्छेहिँ, वच्छेहिं। वच्छेहि, वच्छेहिंतो, वच्छेसुंतो। वच्छेसु, वच्छेसुं।

नियम ४६४ (ङसेस् त्तो-दो-दु-हि-हिंतो-लुक् ३।८) अकार से परे ङसि को त्तो, दो (ओ) दु (उ), हि, हिंतो, लोप—ये छह आदेश होते हैं। वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छाहि। वच्छाहिंतो, वच्छा। दो और दु में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दकार भाषान्तर (शौरसेनी, मागधी) के उपयोग के लिए किया गया है।

नियम ४६५ (भ्यसस् त्तो-दो-दु-हि-हिंतो-सुंतो ३।९) अकार से परे भ्यस् को त्तो, दो, दु, हि, हिंतो और सुंतो आदेश होता है।

नियम ४६६ (भ्यसि वा ३।१३) भ्यस् को होने वाले आदेश परे होने पर अ को दीर्घ विकल्प से होता है। वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छाहि, वच्छेहि, वच्छाहितो वच्छेहितो, वच्छासुंतो, वच्छेसुंतो।

नियम ४६७ (ङसः स्सः ३।१०) अकार से परे ङस् को स्स होता है। वच्छस्स।

नियम ४६८ (डे म्मि ङेः ३।११) अकार से परे ङि को डे तथा म्मि होता है। वच्छे, वच्छम्मि।

नियम ४६९ (डो दीर्घो वा ३।३८) अकारान्त शब्दों से आमंत्रण अर्थ को होने वाला डो प्रत्यय तथा इकारान्त और उकारान्त शब्दों को होनेवाला दीर्घ विकल्प से होता है। हे वच्छ, हे वच्छो।

प्रयोग वाक्य

जणा तित्तिरा पालेंति। लावगाण मंसं यवना खाअंति। सारसाण चंचू पलंबा भवइ। हंसो खीरणीराइं विवेचिउं समत्थो अत्थि। खंजणो कस्सि पएसम्मि भवइ? चायगो मुहं उग्घाडिऊण मेहं पेक्खइ। मोरो भारहवासस्स रट्ठपक्खी अत्थि। कंको दीहपाओ भवइ। कुररो मच्छणासणं करेइ। गरुडो पक्खिणो राया होइ।

धातु प्रयोग

सेवगो सामिं थवइ। सो आयरिअमुहेण जिणवयणं सुणिऊण थिपइ। ते पासणाहं थुअंति। सो मुहु मुहु कहं थुक्कइ? तिणा तुमं थुक्कारिओ। सावगा जिणे थुणंति। सो मिट्ठान्नं भुंजिऊण थेप्पइ। सप्पो सव्वे दंसइ। रमेसो सुवसंगहालयं दंसावेइ। बालो ससिं दक्खइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

तीतर यहां से कब उड गया? यह बटेर कहां से आ रहा है? सारस का रंग सफेद होता है। हंस में दूध और पानी को अलग-अलग करने की जो शक्ति है वह दूसरों में नहीं है। खंजन पक्षी के विषय में तुम क्या जानते हो? पपीहा तालाब का पानी नहीं पीता है। चकवा के प्रेम का उदाहरण लगता है। मोर राजस्थान में अधिक पाए जाते हैं। कंक की पृष्ठ लोह के समान होती है। कुरर मच्छलियों को मारता है। गरुड सबसे ऊंचा उडता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम भगवान महावीर की स्तुति करते हो। शांत-सुधारस का पान कर वह तृप्त हो गया। गुणवान् व्यक्तियों की स्तुति करने से अपना लाभ होता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। यहां दीवार पर थूकना निषेध है। किसी का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वह पार्श्वनाथ की स्तुति किस प्रयोजन से करता है ? तुम्हारे दर्शन मात्र से मैं संतुष्ट हो गया। मार्ग में चलने वाला सांप बिना सताए किसी को नहीं काटता है। उसने अपनी विद्यापीठ विनयकुमार को दिखलाई। जो अपना अवगुण देखता है वह साधक है।

प्रश्न

१. प्राकृत में द्विवचन का क्या स्थान है ? उसको बताने के लिए क्या प्रयोग करना चाहिए ?
२. लिंग का निर्धारण करने के लिए प्राकृत में सामान्य नियम क्या है ?
३. प्राकृत में कितनी विभक्तियां होती हैं ?
४. सभी विभक्तियों के एकवचन और बहुवचन के प्रत्यय बताओ ?
५. पुंलिंग के अकारान्त शब्द के लिए टा, सुप्, आम्, और भ्यस् प्रत्ययों के लिए क्या-क्या नियम हैं ? बताओ ?
६. तीतर, वटेर, खंजन, पपीहा, सारस, चकवा, हंस, मोर, कंक, कुरर, घोंसला और डाली के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. थव, थिप, थुक्क, थुक्कार, थुण, थेप्प, दंस, दंसाव और दक्ख धातु के अर्थ बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५७ शब्दरूप (२)

शब्द संग्रह (पक्षी वर्ग ३)

चमगादड—जउआ
बत्तक—बत्तओ
भृंग—भिंगो
मुर्गा—कुक्कुडो
चाष—चासो
उल्लू—उलूओ, उलूगो
बाज—सेणो
गौरैया—चडयो
क्रौञ्च—कोंचो
टिटिहिरी—टिट्टिभो

———०———०———०———०———

आकाश—आयासं

धातु संग्रह

दम—दमन करना, निग्रह करना
दय—कृपा करना, चाहना
दलय—देना
दलाव—दिलाना
दवाव—दिलाना
दव—गति करना
अइंच—अभिषेक करना
दार—विदारना, चूर्ण करना, तोडना
दाव—दान करवाना, दिलाना

पुंलिग अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त शब्द

नियम ४७० (अक्लीबे सौ ३।१९) नपुंसक को छोडकर सि परे रहने पर इकार और उकार दीर्घ हो जाता है। मुणी, साहू।

नियम ४७१ (पुंसि जसो डउ डओ वा ३।२०) पुंलिग में इकार और उकार से परे जस् को डउ (अउ) और डओ (अओ) आदेश होते हैं। मुणउ, मुणओ। साहउ, साहओ।

नियम ४७२ (जस्-शसो र्णो वा ३।२२) पुंलिग में इकार और उकार से परे जस् तथा शस् को णो आदेण विकल्प से होता है। मुणिणो, मुणी। साहुणो, साहू।

नियम ४७३ (लुप्ते शसि ३।१८) शस् का लोप होने पर इकार और उकार दीर्घ हो जाता है। मुणी, बुद्धी, तरू, धेणू।

नियम ४७४ (इदुतो दीर्घः ३।१६) भिस्, भ्यस्, सुप् परे रहने पर इकार और उकार दीर्घ हो जाता है। मुणीहिं, बुद्धीहिं, दहीहिं। साहूहिं, धेणूहिं, महूहि। मुणीओ, बुद्धीओ, दहीओ। साहूओ, धेणूओ, महूओ। मुणीसु, बुद्धीसु, दहीसु। साहूसु, धेणूसु, महूसु।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ४७५ (टो णा ३।२४) पुंलिंग तथा नपुंसक लिंग में इकार और उकार से परे टा को णा होता है। मुणिणा, गामणिणा। साहुणा, खलपुणा। दहिणा, महुणा।

नियम ४७६ (ङसि-ङसोः-पुं-क्लीबे वा ३।२३) पुंलिग तथा नपुंसक लिंग में वर्तमान इकार और उकार से परे ङसि तथा ङस् को विकल्प से णो होता है। मुणिणो, साहुणो। दहिणो, महुणो। मुणीओ, मुणीउ, मुणीहिंतो। साहूओ, साहूउ, साहूहिंतो। मुणिस्स, साहुस्स।

नियम ४७७ (ईदूतो ह्रस्वः ३।४२) संबोधन में ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द को ह्रस्व होता है। हे गामणि, हे वहु। हे खलपु।

नियम ४७८ (वो तो डवो ३।२१) पुंलिग में उकार से परे जस् को डवो (अवो) आदेश विकल्प से होता है। साहवो, साहओ, साहउ।

नियम ४७९ (क्विपः ३।४३) क्विप् प्रत्यान्त ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द हों तो वे ह्रस्व हो जाते हैं। गामणिणा, खलपुणा। गामणिणो, खलपुणो।

प्रयोग वाक्य

जउआ निसाए उड्डेइ। बत्तओ पाओ जले वसइ। उलूओ दिणे पासिउ न सक्कइ। सेणो पक्खिणो हणइ। चडयो नीडं णिम्माइ। कुक्कुडो सूरियोदयस्स पुव्वमेव णियतसमये जंपइ। टिट्टिभस्स जंपणं को जाणइ? चासो पक्खी कम्मि पएसे वसइ? कोंचस्स विसये किं तुमं जाणसि? भिंगो एगस्स पक्खिणो अभिहाणं विज्जइ।

धातु प्रयोग

साहगो इंदियाइं दमेइ। साहू सावगं दयइ। धणी णिद्धणाय वत्थं दलयइ। रमेसो सोहणत्तो धणं दलावेइ, दवावेइ वा। मुणी गामाणुगामं दवइ। निवो नियपुत्तं अइंचइ। साहू जणा णाणं देइ। तुज्झ कडुवयणं मज्झ हिययं दारइ। तावसो धणिं दावइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

बत्तख जल में अधिक रहती है। उल्लू की आंखें मोटी होती हैं। बाज से पक्षी डरते हैं। गौरैया उछल-उछल कर चलती है। मुर्गे का शब्द सुनकर लोग समय का अनुमान लगाते हैं। क्रौंच पति पत्नी साथ रहते हैं। टिटिहिरी क्या बोलती है? चाष क्या खाना पसंद करता है? भृंग उडने वाला एक पक्षी है। चमगादड आकाश में उडते समय अपने पंखों को अधिक हिलाता है।

धातु का प्रयोग करो

साधू के उपालंभ देने पर बहू अपने मन का दमन करती है। श्रावक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ने साधु से प्रार्थना की कि मेरे घर पधारने की कृपा करो। साधु निस्वार्थ उपदेश देते हैं। आचार्य शिष्य को उसकी त्रुटि पर ध्यान दिलाते हैं। जो गति करता है वह अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाता है (पहुच्चइ)। आज कौन राजा का अभिषेक करेगा? जीवन का दान देना बहुत कठिन कार्य है। तुम्हारा व्यवहार मेरे हृदय को तोडता है। अध्यापक सेठ से गरीब लडके को पुस्तकें दिलाता है।

प्रश्न

१. पुंलिग इकारान्त शब्द से परे ङसि और ङस् को क्या आदेश किस नियम से होता है? उसका क्या रूप बनता है? लिखो।

२. शस्, भिस्, भ्यस् और सुप् प्रत्यय परे होने पर अकारान्त पुंलिग शब्द के उकार को दीर्घ किस-किस नियम से होता है? उसके रूप भी लिखो।

३. सि प्रत्यय परे होने पर इकारान्त शब्द के इकार को दीर्घ करने वाला कौन सा नियम है?

४. पुंलिग उकारान्त शब्द से परे जस् और शस् प्रत्यय को किस नियम से क्या-क्या होता है? उसका रूप भी लिखो।

५. चमगादड, उल्लू, बत्तक, बाज, गौरैया, मुर्गा, क्रौंच, टिटिहिरी, भृंग और चाष पक्षियों के लिए प्राकृत के शब्द लिखो।

६. दम, दय, दव, दार दाव, अइंच, दलय, दवाव और दलाव धातुओं के अर्थ बताओ तथा उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (पशु वर्ग १)

सिंह—सीहो, सिंघो, केसरी
बाघ—साद्दुलो, वग्घो
हाथी—हत्थी, करी, गयो
भैंसा—महिसो
खच्चर—वेसरो
०
सींग—विसाणं
घोडे के मुख को बांधने का वस्त्र—कडाली

चीता—चित्तो
भालू, रीछ—भल्लू, रिच्छो
घोडा—घोडओ, आसो
गेंडा—गंडयो खग्गी (पुं)
चितकबरा—चित्तो
०
पूंछ—पुच्छं
शोभा—सोहा

धातु संग्रह

दिक्ख—दीक्षा देना
दिप्प—चमकना
दिप्प—तृप्त होना
दियाव—देना
तिरोहा—अन्तर्हित होना, अदृश्य होना, लोप करना

दिस—कहना
दुक्ख—दर्द होना
दुम्मण—उद्विग्न होना, उदास होना
दुरुह—आरूढ होना, चढना
दुस्स—द्वेष करना
दिव—क्रीडा करना

ऋकारान्त पितृ शब्द

ऋकारान्त शब्द दो तरह के माने जाते हैं—(१) संबंधसूचक विशेष्य और (२) संबंध सूचक विशेषण। जो शब्द मूलतः ऋकारान्त हैं वे संबंधसूचक विशेष्य हैं। जैसे—जामातृ, पितृ, मातृ, भ्रातृ आदि। जो शब्द तृच् या तृन् प्रत्ययान्त हैं वे संबंधसूचक विशेषण हैं। जैसे—कर्तृ, दातृ, भर्तृ आदि। प्रथमा तथा द्वितीया के एक वचन को छोडकर शब्द के अंतिम ऋकार को विकल्प से उ हो जाता है। तब वह उकारान्त शब्द बन जाता है। उसके रूप साहु की तरह चलते हैं। विकल्प के दूसरे पक्ष में शब्द के अंतिम ऋकार को अर तथा आर हो जाता है। शब्द अकारान्त होने से उसके रूप वच्छ की तरह चलते हैं। संस्कृत का पितृ शब्द प्राकृत में पितु, पिउ, पितर और पिअर के रूप में प्रयोग में आता है। पितु का रूप पिउ और पितर का रूप पिअर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की तरह चलता है। पिआ और पिअर आदि रूपों के स्थान पर पिया और पियर रूप भी उपलब्ध होता है।

भाउ, भायर (भ्रातृ) भाई
जामाउ, जामायर (जामातृ) जमाई
दाउ, दायर (दातृ) दाता
कत्तु, कत्तार (कर्तृ) कर्त्ता
भत्तु, भत्तार (भर्तृ) भरण पोषण करने वाला।

इस प्रकार पुंलिंग ऋकारान्त शब्द के रूप पितृ की तरह चलते हैं।

नियम ४८० (ऋतामुदस्यमौसु वा ३।४४) सि, अम्, औ को छोडकर स्यादि प्रत्यय परे हों तो ऋकारान्त शब्दों को विकल्प से उकार हो जाता है। जस्—भत्तू, भत्तुणो, भत्तउ, भत्तओ। टा – भत्तुणा।

नियम ४८१ (आरः स्यादौ ३।४५) सि आदि परे रहने पर ऋकार को आर आदेश होता है। भत्तारो, भत्तारा, भत्तारं भत्तारे, भत्तारेण।

नियम ४८२ (नाम्न्यरः ३।४७) संज्ञावाची ऋदन्त शब्दों के ऋ को सि आदि परे रहने पर अर आदेश होता है। पिअरा, पिअरं, पिअरे, पिअरेण, पिअरेहिं। भायरा, भायरं, भायरे, भायरेण, भायरेहिं।

नियम ४८३ (आ सौ न वा ३।४८) ऋदन्त शब्द को सि परे रहने पर आ विकल्प से होता है। पिआ, जामाया, भाया।

नियम ४८४ (ऋतोद् वा ३।३९) संबोधन में सि परे रहने पर ऋकारान्त शब्द के अंतिम स्वर को अ विकल्प से होता है। हे पिअ। हे भाय।

नियम ४८५ (नाम्न्यरं वा ३।४०) संज्ञावाचक ऋकारान्त शब्द से परे संबोधन का सि परे हो तो ऋकार को अर आदेश विकल्प से होता है। हे पिअरं, हे पिअ (हे पितः)। जहां संज्ञा न हो वहां हे कत्तार (हे कर्तः)।

प्रयोग वाक्य

सीहस्स सिरे केसो भवइ। वग्घो धुत्तो होइ सो रुक्खम्मि तिरोधाऊणं पहारइ। चित्तस्स सरीरो चित्तो भवइ। भल्लू पायवम्मि आरोहइ। राया हत्थिसि आरोहिसु। सुरेसस्स गिहे अज्जावि आसो अत्थि। महिसो बहुभारं वहइ। जणा खग्गिस्स चम्मस्स फलगं (ढाल) करेइ। कडालीइ घोडअस्स सोहा भवइ। वेसरो गद्दभत्तो आसत्तो य भिन्नो भवइ। पसूणं विसाणाइं परा मारिउं णियरक्खणट्ठं य सत्थं भवइ।

धातु प्रयोग

आयरिएण दसविरत्ताप्पाणो दिक्खिआ। भवयाणं मुहो अइ दिप्पइ। तुज्झ गीइयं सुणिऊणं अहं दिप्पामि। देवा देवीओ यावि दिवंति। महावीरेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणहियस्स उवएसो दिसिओ। उवालंभं सुणिऊणं सो दुक्खइ। तुमं केणं कारणेणं दुम्मणसि ? रमेसो आसं दुरुहइ। केणावि सह न दुस्सिअव्वं। चंदो जलदेसु तिरोहाइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

सिंह वन का राजा होता है। बाघ हिंसक प्राणी है। चीता आक्रामक (अक्कामओ) होता है। भालू काले रंग का होता है और वृक्ष पर उल्टा चढता है। हाथी का शरीर स्थूल होता है फिर भी वह अंकुश से वश में होता है। घोडा तेज क्यों दौडता है ? भैंसे में प्रतिशोध (पडिसोह) की भावना होती है। गेंडे के सींग का क्या उपयोग होता है ? खच्चर भारवाही पशु होता है। जिसके सींग और पूंछ होता है वह पशु होता है।

धातु का प्रयोग करो

तुम किसके पास और कब दीक्षा लोगे ? आकाश में तारे चमकते हैं। वस्तु के मिलने और न मिलने पर भी वह तृप्त रहता है। बच्चे आंगण में क्रीडा करते हैं। उसने सत्य कहा है। वह किसलिए दुःखित होता है। कौनसा कार्य तुम्हारा न होने से तुम उदास हो गए ? जो चढता है वही गिरता है। किसी के प्रति द्वेष करना सज्जन व्यक्ति का कार्य नहीं है। कभी-कभी सूर्य भी अदृश्य होता है।

प्रश्न

१. ऋकारान्त शब्द कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक प्रकार के उदाहरण देकर समझाओ।
२. संस्कृत का ऋकारान्त शब्द प्राकृत में किस रूप में बदल जाता है ? और उसके रूप किस शब्द की तरह चलते हैं ?
३. ऋकारान्त शब्द को उकार और आर आदेश किस स्थिति में होता है और किस नियम से ?
४. सि प्रत्यय परे रहने पर ऋकारान्त शब्द को किस नियम से क्या आदेश होता है ?
५. सिंह, चीता, बाघ, रीछ, हाथी, घोडा, भैंसा, गेंडा और खच्चर के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?
६. दिक्ख, दिप्प, दिव, तिरोहा, दिस, दुक्ख, दुम्मण, दुरुह और दुस्स धातुओं के अर्थ बताओ तथा उन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५९ शब्दरूप (४)

शब्द संग्रह (पशु वर्ग २)

सूअर—सूअरो, वराहो
गीदड—सियारो
नीलगाय—गवयो
ऊंट—कमेलयो
बैल—वसहो, बइल्लो, बच्छाणो
दुष्ट बैल—अलमलो
हरिण—हरिणो
भेड—भेसो
गधा—गद्दभो, रासहो

धातु संग्रह

दुह—दुहना
दुह—द्रोह करना
दू—उपताप करना, काटना
दूइज्ज—गमन करना, जाना
दूभ—दुःखित होना
दोह—द्रोह करना
दूराय—दूरवर्ती मालूम होना
अइया—जाना, गुजरना
देव—चाहना, आज्ञा करना, जीतने की इच्छा करना
देह—देखना

नकारान्त राजन् और आत्मन् शब्द—

नियम ४८६ (राज्ञः ३।४९) राजन् शब्द के न् का लोप होने पर अंतिम वर्ण को विकल्प से आ होता है। राया।

नियम ४८७ (जस्शस्ङसि, ङसां णो ३।५०) राजन् शब्द से परे, जस्, शस्, ङसि और ङस् प्रत्ययों को विकल्प से णो आदेश होता है। रायाणो, राया। रायाणो, राया। राइणो, रण्णे। राइणो, रण्णो (राया)।

नियम ४८८ (इर्जस्य णो णा ङौ ३।५२) राजन् शब्द से संबंधित जकार के स्थान पर णो, णा और ङि परे रहने पर इकार विकल्प से होता है। राइणो, राइणा, राइम्मि। पक्षे रायाणो, रण्णो। रायणा, राएण। रायम्मि।

नियम ४८९ (इणममामा ३।५३) राजन् शब्द से संबंधित जकार को अम् और आम् के सहित इण आदेश विकल्प से होता है। राइणं। पक्षे रायं, राईणं।

नियम ४९० (टा णा ३।५१) राजन् शब्द से परे टा को णा आदेश होता है। राइणा, रण्णा। पक्षे राएण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ४६१ (ईद्भिस्भ्यसाम्सुपि ३।५४) राजन् शब्द से संबंधित जकार को भिस्, भ्यस्, आम् और सुप् परे रहने पर विकल्प से इकार होता है। भिस्—राईहि। भ्यस्—राईहि। आम्– राईणं। सुप्—राईसु।

नियम ४६२ (आजस्य-टा-ङसि-ङस्सु सणाणोष्वण् ३।५५) राजन् शब्द से संबंधित आज को विकल्प से अण् आदेश होता है, टा, ङसि, ङस् को आदेश होने वाले णा तथा णो परे हो तो। रण्णा, राइणो। रण्णो राइणो। रण्णो राइणो। पक्षे राएण, रायाओ, रायस्स।

नियम ४६३ (पुंस्य न आणो राजवच्च ३।५६) पुंलिंग अन्नन्त शब्द के अन् को विकल्प से आण आदेश होता है। पक्ष में यथादर्शन राजन् शब्द की तरह रूप चलते हैं। अप्पाणो, अप्पाणा। अप्पाणं, अप्पाणे। अप्पाणेण, अप्पाणेहि। अप्पाणाओ, अप्पाणासुंतो। अप्पाणस्स, अप्पाणाण। अप्पाणम्मि, अप्पाणेसु। पक्षे राजन्वत्।

नियम ४६४ (आत्मनष्टो णिआ णइआ ३।५७) आत्मन् शब्द से परे टा को विकल्प से णिआ तथा णइआ आदेश होते हैं। अप्पणिआ, अप्पणइआ। अप्पाणेण।

- आत्मन् शब्द अत्त, अप्प, अप्पाण शब्दों में परिवर्तित हो जाता है। अप्पाण शब्द के रूप देव शब्द की तरह चलते हैं। अत्त और अप्प के लिए देखें परिशिष्ट १ संख्या १५।
- राजन् शब्द के सारे रूप परिशिष्ट १ संख्या १४ में देखें।

प्रयोग वाक्य

सूअरो पुरीसं चिअ भक्खइ। सियारो माणुसस्सिसुमवि खाअइ। छाउरनयरस्स बाहिं वणे किण्हो हरिणो वि अत्थि। लाडणुणयरस्स सुआणगढ-णयरस्स य अंतरा मए गवयो दिट्ठो। मेसस्स दुद्धं पिवंति केइ जणा। कमेलयो मरुभूमीए जाणं अत्थि। कमेलयो उरम्मि नीराणं संगहो करेइ। गद्दभो रच्छाए भमइ। बइल्लो भारं वहइ। अलमलो सरलवसहा कुबुद्धि देइ।

धातु प्रयोग

तस्स माआ धेणुओ दुहइ। सुशीला सीयाइ दुहइ (द्रोह करती है) कज्जं काऊणं सो कहं दूअइ? गामाणुगामं दूइज्जमाणा मुणिणो अत्थ कया आगमिस्संति? तस्स पुत्तो पहसियो व्व (उपहास किए हुए की तरह) दूमइ। पेम्माभावे पुत्तो वि दूरायइ। तिणा पिट्ठं, किं हरिणो अइयाइंसु? सो इंदियाइं देवइ। किं कोइ सूरियं देहइ? तुमं मज्झ कहं दोहसि?

प्राकृत में अनुवाद करो

सूअर गांवों में अधिक मिलते हैं। गीदड जंगल में रहते हैं और छल से आक्रमण करते हैं। हरिण छलांग लगाकर बहुत तेज दौडता है। भेड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मरुस्थल में अधिक पाए जाते हैं। नील गाय कम देखने को मिलती है। ऊंट मरुभूमि में सबसे तेज और लम्बी दूरी तक चलने वाला पशु है। गधा आजकल मूल्यवान बन गया है। सिवानंची देश के बैल प्रसिद्ध होते हैं। दुष्ट बैल अपनी धूर्तता से मार खाता है।

धातु का प्रयोग करो

मेरी छोटी बहन गाय को दुहती है। पिता पुत्र के साथ क्यों द्रोह करता है? तुम व्यर्थ ही उपताप करते हो। संत लोग गांव-गांव में जाते हैं। दृष्टि दोष से पास की वस्तु भी दूर मालूम पडती है। साधुओं का संघ अभी यहां से गुजरा (गया) है। क्या तुम मन को जीतने की इच्छा नहीं करते? वह अपने दोषों को देखता है। वह समाज के साथ द्रोह करता है।

प्रश्न

१. राया, राइणं, राईसु, अप्पाणो, राइणो, अप्पणिआ—इन शब्द रूपों को सिद्ध करो और बताओ किस-किस नियम से क्या हुआ है?
२. आत्मन् शब्द प्राकृत में किस शब्द के रूप में परिवर्तित हो जाता है और उनके रूप कैसे चलते हैं?
३. सूअर, गीदड, हरिण, नीलगाय, भेड, ऊंट, गधा, बैल, दुष्ट बैल—इन शब्दों के लिए प्राकृत में क्या-क्या शब्द हैं?
४. दुह, दुह, दू, दूइज्ज, दूम, दूराय, अइया, देव, देह और दोह धातुओं के अर्थ बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो।
५. चक्कवाओ, लावगो, तित्तिरो, चडयो, बत्तओ, रिच्छो, वग्घो, गंडयो शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दरूप (५)

शब्द संग्रह (पशु वर्ग ३)

भेडिया—विओ, कोओ
लंगूर—गोलांगूलो (सं)
बिल्ली—मज्जारो, बिडालो
चूहा—मूसियो
बकरा—अजो
बंदर—वाणरो
कुत्ता—कुक्कुरो, सारमेयो
उदविडाल—उदविडालो
खरगोश—ससो
सांड—गोपती (पुं)

धातु संग्रह

पत्तिअ—विश्वास करना
पत्था—प्रस्थान करना
पदूस—द्वेष करना
पप्फुर—फरकना
पप्फुल्ल—विकसना
पबंध—विस्तार से कहना
पम्हुस—चोरी करना
पम्हुस—भूलना
पय—पकाना
पया—प्रयाण करना

स्त्रीलिंग आकारान्त, इवर्णान्त, उवर्णान्त, ऋकारान्त शब्द

नियम ४९५ (स्त्रियामुदोतौ वा ३।२७) स्त्रीलिंग में वर्तमान संज्ञा शब्दों से परे जस् एवं शस् प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से उ, ओ तथा पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है। जस्—मालाओ, मालाउ, माला। शस्—मालाओ, मालाउ, माला। जस्—मईओ, मईउ, मई। शस्—मईओ, मईउ, मई। वाणीओ, वाणीउ, वाणी। वाणीओ, वाणीउ, वाणी। धेणुओ, धेणउ, धेणू। धेणुओ, धेणुउ, धेणू। वहूओ, वहूउ, वहू। वहूओ, वहूउ, वहू।

नियम ४९६ (ह्रस्वोमि ३।३६) स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द के अंतिम स्वर को ह्रस्व हो जाता है, अम् प्रत्यय परे होने पर। मालं। वाणिं। वहुं।

नियम ४९७ (टा-ङस्-ङेरदादिदेद्वा तु ङसेः ३।२९) स्त्रीलिंग शब्द से परे टा, ङस् और ङि के स्थान पर अ, आ, इ तथा ए होते हैं। ङसि को ये आदेश होने के साथ पूर्वस्वर दीर्घ विकल्प से होता है। मईअ, मईआ, मईइ, मईए। वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए। धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए। वहूअ वहूआ, वहूइ, वहूए।

नियम ४९८ (नात आत् ३।३०) स्त्रीलिंग में वर्तमान आकारान्त शब्द से परे टा, ङस्, ङि और ङसि को पूर्वनियम के अनुसार होने वाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकार नहीं होता। मालाअ, मालाइ, मालाए।

नियम ४९९ (वाप ए ३।४१) स्त्रीलिंग में संबोधन में सि परे होने पर आप् को ए विकल्प से होता है। हे माले, हे माला।

नियम ५०० (ईतः सेश्चा वा ३।२८) स्त्रीलिंग ईकारान्त शब्द से परे सि, जस् और शस् को विकल्प से आ आदेश होता है। इत्थीआ, गौरीआ, हसन्तीआ।

नियम ५०१ (आ अरा मातुः ३।४६) मातृ शब्द के ऋकार को आ और अरा आदेश होता है, सि आदि परे हो तो। माआ, माअरा, माआउ। माआओ, माअराउ, माअराओ, माअं, माअरं।

प्रयोग वाक्य

विओ पसू मारइ। मज्जारो मूसिया हंति। ससस्स केसा कोमला भवइ। कुक्कुरो माणावमाणेसु समो भवइ। वाणरो माणुसा भाएइ। उद-विडालो बिडालत्तो भिण्णो भवइ। माउस्सिया मूसिअत्तो बहु भीअइ। अमरअजो गामम्मि अणहट्टयो भमइ। गोपती सच्छंदो खेत्ते गामे य अडइ।

धातु प्रयोग

अहं तुमे पत्तिआमि। जो सरं (स्वर) चलेज्ज तस्स भागस्स पयं पुव्वं ठविऊण पत्थाअव्वं। केणावि सह न पदूसियव्वं। तुज्झ वामणेत्तं पप्फुरइ अओ सुहं नत्थि। सूरमुहि पुप्फं सूरिअं पासिऊणं पप्फुल्लइ। तुमं णियपबंधम्मि कं विसयं पबंधीअ। एसो णिद्धणो तहवि न पम्हुसइ। मित्तेण सहकयोवयारो पम्हुसियव्वो। सीया अज्ज दालिं पयीअ। आयरियभिक्खू सुहरीगामत्तो (सुधरीग्राम) पयाइंसु।

प्राकृत में अनुवाद करो

भेडिया गांव में आकर पशुओं को ले जाता है। बिल्ली चोरी से दूध की मलाई खाती है। खरगोश रात को घूमता है। कुत्ता मार्ग के बीच में सोता है। बंदर एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदकर जाता है। उदबिलाव जंगल में रहता है। चूहा गणेश का वाहन (वाहणं) है। बकरा सरल पशु होता है। इस गांव का सांड कमजोर है। गोशाला में दो सांड हैं।

धातु का प्रयोग करो

मैं जैन धर्म में विश्वास करता हूं। वह अपने घर से कल प्रस्थान करेगा। शत्रु से भी द्वेष नहीं करना चाहिए। आज मेरी दाहिनी आंख फुरकती है। वसंत में वृक्ष विकसित होते हैं। वह अपने विषय को विस्तार से कहता है। तुम चोरी क्यों करते हो? तुमने जो वचन दिए थे उसे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्यों भूलते हो ? वह खीर पकाता है। तुम आत्म साधना के लिए प्रयाण करते हो।

प्रश्न

१. स्त्रीलिंग में शब्द से परे जस् और शस् के स्थान पर क्या आदेश होता है ?
२. स्त्रीलिंग में टा, ङसि और ङि के स्थान पर क्या आदेश होता है ? और कहां नहीं होता।
३. स्त्रीलिंग में आकारान्त, इवर्णान्त और उवर्णान्त शब्दों की सिद्धि में क्या समानता है ? और कहां अंतर है ?
४. भेडिया, बिल्ली, लंगूर, खरगोश, कुत्ता, चूहा, बंदर, सांड, उदविडाल, बकरा—इन शब्दों के प्राकृत में क्या शब्द है ?
५. पत्तिअ, पत्था, पदूस, पप्फुर, पप्फुल्ल, पबंध, पम्हुस, पय और पया धातुओं के अर्थ बताओ तथा उनको अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१ शब्दरूप (६)

शब्द संग्रह (पशु वर्ग ४)

हथिनी—करेणुआ, करिणी, हत्थिणी
लोमडी—खिखिरो
खच्चरी—वेसरी
कुत्ती—सुणई, सुणिआ
सोनचीडी—सउणचडया
गौरेयी, चीडिया—चडया
बकरी—छाली
गाय—धेणू, गो
ऊंटनी (सांड)—उट्टी
सियाली—सिआली
बछिया, पाडी—पड्डिया
बहुत दूध देने वाली—पडत्थी

० ० ० ०

अंकुर—अंकुरो

धातु संग्रह

फंफ—उछलना
फंस—छूना
फाड—फाडना
फिट्ट—टूटना
फुट—विकसना, फूटना, फटना
फुंस—पोंछना
फुर—फरकना, हिलना
फेणाय—झाग निकलना
फुम—फूंक मारना
विलिह—विलेखन करना, रेखा करना

नपुंसक शब्द

नियम ५०२ (क्लीबे स्वरान्म् से: ३।२५) नपुंसक स्वरान्त शब्द से परे सि को म् होता है। वणं। दहिं। महुं।

नियम ५०३ (जस्-शस् इँ इं णयः सप्राग्दीर्घाः ३।२६) नपुंसक शब्द से परे जस् तथा शस् को इँ, इं तथा णि आदेश होते हैं तथा उससे पूर्व में स्थित स्वर को दीर्घ होता है। वणाइँ, वणाइं, वणाणि। दहीइँ, दहीइं, दहीणि। महूइँ, महूइं, महूणि।

नियम ५०४ (नामन्त्र्यात् सौ मः ३।३७) नपुंसक में सम्बोधन अर्थ में सि को म् नहीं होता। हे वण। हे दहि। हे महु। आदि।

सर्व शब्द

नियम ५०५ (अतः सर्वादे र्डे र्जसः ३।५८) अकारान्त सर्व आदि शब्द से परे जस् को डे (ए) आदेश होता है। सव्वे, अन्ने, जे, ते, के, एक्के, कयरे, एए।

नियम ५०६ (आमो डेसिं ३।६१) सर्व आदि अकारान्त शब्दों से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परे आम् को विकल्प से डेसिं (एसिं) आदेश होता है। सव्वेसिं, अन्नेसिं, जेसिं, तेसिं, केसिं, इमेसिं।

नियम ५०७ (**ङे स्सि म्मि त्थाः ३।५६**) सर्व आदि अकारान्त शब्दों से परे ङि को स्सि, म्मि और त्थ आदेश होते हैं। सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ। अन्नसिं, अन्नम्मि, अन्नत्थ।

नियम ५०८ (**न वानिदमेतदो हिं ३।६०**) इदम् (इम) और एतद् (एअ) को छोडकर शेष अकारान्त सर्व आदि शब्दों से परे ङि को विकल्प से हिं आदेश होता है। सव्वहिं, अन्नहिं, कहिं, जहिं, तहिं।

प्रयोग वाक्य

हत्थिणिं दट्ठुं जणा संगहिआ। पाडी बहुरम्मा लग्गइ। छालीइ दुद्धं खिप्पं पयइ। सउणचडया दाहिणपासे ठिआ सुहा भवइ। वेसरिं दट्ठुं सो कत्थ गओ? सियाली गामम्मि न वसइ। गावीए पयं महुरं भवइ। पडत्थीइ मुल्लो बहु भवइ। सुणई जुगवं पंच वा छ वा जणइ। चडया बहु जंपइ। इमी उट्टी बहुवेगेण धावइ। सुसीला हत्थेण भित्तिं विलिहइ।

धातु प्रयोग

फलस्स बीयो कहं फंफइ? सो पंच महव्वयाइं फासइ। सो कट्ठं फाडइ। उसिणेण पाणिएण तण्हा वि न फिट्टइ। तुमं णियसरीरं फुंसइ। मज्झ दाहिणभुआ फुरइ। सीयकाले कमेलयस्स मुहम्मि फेणायइ। भिक्खू तालियंटेण अप्पणो कायं न फुमेज्जा। पुव्वं बीयं फुटइ पच्छा पत्ताइं।

धातु का प्रयोग करो

इस गांव में हाथी नहीं हथिनी है। जो सोता है उसके पाडी पैदा नहीं होती। बकरी गांव के बाहर चरने के लिए गई है। चिडिया तिनके लाकर क्या बनाती है? सोनचिडी हरे वृक्ष पर बैठी है। खच्चरी का क्या मूल्य है? मैंने कल रात सियाली की आवाज सुनी। बहुत दूध देने वाली भैंस को वह खरीदना चाहता है। गायों में काली गाय सबसे उत्तम होती है। मेरी सांड (ऊंटनी) आज टमकोर जाएगी। तुम कागज पर हाथ से किस चित्र की रेखा करते हो?

धातु का प्रयोग करो

वह बात-बात में उछलता है। साधु स्त्रियों का स्पर्श नहीं करते। वह कपडे को फाडता है। तेरे व्यवहार से मेरा मन फट गया। गर्मी में वह बार-बार पसीने को पोंछता है। यदि पुरुष का दाहिना अंग फरकता है तो वह शुभ है। दूध के झाग बहुत रुचिकर लगते हैं। सुशीला अग्नि को जलाने के लिए फूंक मारती है। पुष्प से पहले अंकुर (अंकुरे) फूटते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. नपुंसक शब्द से परे जस् और शस् प्रत्यय परे हो तो क्या आदेश होता है ?
२. सर्व आदि शब्दों की सिद्धि के लिए इस पाठ में कितने नियम हैं और वे क्या कार्य करते हैं ?
३. हथिनी, बकरी, पाडी, चिडिया, खच्चरी, सोनचिडी, सियाली, कुत्ती और बहुत दूध देने वाली के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
४. फंफ, फंस, फाड, फिट्ट, फुंस, फुर, फेणाय, फुम और फुट धातु के अर्थ बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (स्फुट)

पडिल्ली—परदा, यवनिका
पडिवेसिओ—पडौसी
सुण्णं—खाली, रिक्त
पणो—शर्त, होड
पयारणं—ठगाई
तुमुलो—शोरगुल
पत्थयणं—पाथेय
पमइलो (वि)—अतिमलिन
परिवेसणं—परोसना
पडिजायणा—प्रतिबिंब, परछाई
परिजुसियं—वासी
अट्टणं—व्यायाम

पात्र—पत्तं

धातु संग्रह

बंध—बांधना
बाह—विरोध करना
बिह—डरना
बुब्बुअ—बकरे का बोलना
बोध—समझना, ज्ञान करना
बुव—बोलना
बहू—पुष्ट करना
वेस—बैठना
बू—बोलना
आमुस—आमर्श करना, एक बार स्पर्श करना, छूना

इम, एअ, क, त, ज, शब्द

नियम ५०६ (इदमेतत् किं यत्तदभ्यष्टो डिणा ३।६९) अकारान्त (इम, एअ, क, त, ज) शब्दों से परे टा को डिणा (इणा) आदेश विकल्प से होता है। इमिणा, इमेण। एदिणा, एदेण। किणा, केण। जिणा, जेण। तिणा, तेण।

नियम ५१० (किं यत्तद्भ्यो ङसः ३।६३) क, त, ज शब्दों से परे ङस् को डास (आस) आदेश विकल्प से होता है। कास, कस्स। जास, जस्स। तास, तस्स।

नियम ५११ (ङे र्डाहे डाला इआ काले ३।६५) काल अर्थ में वर्तमान क, त, ज शब्दों से परे ङि को डाहे (आहे) डाला (आला) तथा इआ आदेश विकल्प से होता है। काहे, काला, कइआ (किस समय में)। जाहे, जाला, जइआ (जिस समय में)। ताहे, ताला, तइआ (उस समय में)।

नियम ५१२ (ङसेर्म्हा ३।६६) किं, यत् और तत् शब्दों से परे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ङस् के स्थान पर म्हा आदेश विकल्प से होता है। कम्हा, काओ (किससे)। जम्हा, जाओ (जिससे)। तम्हा, ताओ (उससे)।

नियम ५१३ (ईद्भ्यः स्सा से ३।६४) ईकारान्त की (किम्), जी (यत्), ती (तत्) आदि शब्दों से परे ङस् को स्सा तथा से आदेश विकल्प से होता है। किस्सा, कीसे, कीअ, कीआ, कीइ, कीए। (किसका) जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जीइ, जीए। (जिसका) तिस्सा, तीसे, तीअ, तीआ, तीइ, तीए। (उसका)।

नियम ५१४ (तदश्च तः सोक्लीबे ३।८६) तद् और एतद् के तकार को सि (नपुंसक छोडकर) परे होने पर स हो जाता है।

नियम ५१५ (वैतत्तदः ३।३) एतद् और तद् शब्द के अकार से परे सि को डो विकल्प से होता है। एसो, एस (एषः) सो णरो, स णरो (स नरः)।

नियम ५१६ (तदो णः स्यादौ क्वचित् ३।७०) तद् शब्द को कहीं-कहीं ण आदेश होता है स्यादि विभक्ति परे हो तो। णं पेच्छ (तं पश्येत्) स्त्रीलिंग में भी—हत्थुन्नामिअ-मुही णं तिअडा (हस्तोन्नामितमुखी तां त्रिजटा)।

नियम ५१७ (तदो डोः ३।६७) तद् शब्द से परे ङसि को डो (ओ) आदेश विकल्प से होता है। तो, तम्हा (तस्मात्)।

नियम ५१८ (वेदं तदेतदो ङसाम्भ्यां से-सिमौ ३।८१) इदम्, तद् तथा एतद् शब्द से परे ङस् और आम् हो तो शब्द सहित ङस् को से और आम् को सिं आदेश विकल्प से होता है। इदं+ङस्=से, तद्+ङस्=से, एतद्+ङस् =से, इदं+आम्=सिं, तद्+आम्=सिं, एतद्+आम्=सिं।

नियम ५१९ (किंतद्भ्यां डासः ३।६२) किं तथा तद् शब्दों से परे आम् को डास (आस) आदेश विकल्प से होता है। कास, केसिं। तास, तेसिं।

नियम ५२० (किमः कस्त्र-तसोश्च ३।७१) किं शब्द को क होता है, सि आदि विभक्ति, त्र और तस् प्रत्यय परे हो तो। को, के, कं, केण। त्र—कत्थ। तस्—कओ, कत्तो, कदो।

नियम ५२१ (किमो डिणो-डीसौ ३।६८) किं शब्द से परे ङसि को डिणो (इणो) तथा डीस (ईस) आदेश विकल्प से होता है। किणो, कीस, कम्हा (कस्मात्)।

नियम ५२२ (किमः किं ३।८०) नपुंसक लिंग में किं शब्द से परे सि और अम् प्रत्यय हो तो विभक्ति प्रत्यय सहित शब्द को किं आदेश होता है। किं, किं।

प्रयोग वाक्य

तस्स दारम्मि पडिल्ली किमट्ठं अत्थि ? मज्झ पडिवेसिओ मए सह सव्ववहारं करेइ। सुण्णगिहम्मि भूओ भमइ। तुज्झ पणो देसस्स हियाय नत्थि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स पयारणजालम्मि तुमं कहं आगओ ? पत्थयणं विणा जत्ताए आणंदो नत्थि । पमइलं वत्थं पासिऊण सो खिण्णो जाओ । तस्स परिवेसणे भेदभावो अत्थि । बालो पत्तसलिलं णियपडिजायणं पासइ । परिजुसियं अण्णं न भुंजेयव्वं ।

धातु प्रयोग

मुणी तुडियाणि पत्ताणि बंधइ । तस्स पतेयवत्तं तुमं बाहसि । सो मूसिअत्तो वि बिहइ । अपरिचियं माणुसं पेहिऊणं कुक्कुरो बुक्कइ । अजासिसू माअरं पासिऊण बुब्बुअइ । जो सया सच्चं बुवइ तस्स विस्सासो (वीसासो) भवइ । पयो सरीरं बूहइ । तुमं अत्थ कहं बेसइ ? गुरू सीसं धम्मं बोहइ । साहू विहारे थक्किओ अओ मग्गम्मि बेसइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

द्वार पर यवनिका देखकर वह भीतर नहीं गया । तुम्हारा पडौसी कौन है ? इस कमरे में खाली स्थान नहीं है । युद्ध समाप्त करने के लिए उसकी शर्त क्या है ? वह ठगाई करना नहीं जानता । परभव का पाथेय क्या है ? भावना की दृष्टि से वह अति मलिन है । विवाह में परोसना भी एक कला है । दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब दिखाई देता है । साग बासी हो सकता है पर मिष्टान्न नहीं ।

धातु का प्रयोग करो

वह अपना बिस्तर बांधता है । मेरे कथन का वह विरोध क्यों करता है ? बालक पिता से डरता है । बकरी किस कारण से बोलती है ? तुम क्या बोलते हो ? शोरगुल के कारण मैं सुन नहीं पाता हूं । वह पिता के सामने झूठ क्यों बोला ? क्या तुम व्यायाम से शरीर को पुष्ट करते हो ? तुम थक गए हो तो बैठ जाओ । उसको श्रम का महत्त्व समझना चाहिए ।

प्रश्न

१. प्राकृत के क (किं) ज (यत्) और त (तत्) शब्द से परे ङस् और ङि प्रत्यय को किस नियम से क्या आदेश होता है ? उनके रूप बताओ ।
२. तद्, एतद् और किं शब्दों के सारे रूप सिद्ध करो ।
३. परदा, पडौसी, खाली, शर्त, ठगाई, पाथेय, अतिमलिन, परोसना, प्रतिबिम्ब, वासी, शोरगुल और व्यायाम के लिए प्राकृत शब्द बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो ।
४. बंध, बाह, बिह, बुब्बुअ, बुव, बू, बूह, वेस और बोध धातु का अर्थ बताओ ।
५. कमेलयो, अलमलो, रासहो, गोपती, गोलांगुलो, विओ, उट्टी, वेसरी, खिखिरो शब्द को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दरूप (८)

शब्द संग्रह (स्फुट)

परस्पर—परोप्परं, परुप्परं
खेत, क्षेत्र—खेत्तं, पल्लवायं (दे.)
खेत में सोने वाला पुरुष—परिवासो
वाचाल—मुहरो
अधिक चर्बी वाला—पमेइलो
झूला—डोला
सेवा—णिवेसणा
छावनी—छायणिआ
छिलका—छोइया
दुर्दशा—दुद्दसा

धातु संग्रह

भंज—भांगना, तोडना
भंड—भाण्डना, भर्त्सना करना
भंस—नीचे गिरना, नष्ट होना
भक्ख—खाना
भज्ज—भुनना
भद—सुख करना, कल्याण करना
भम—भ्रमण करना
भय—सेवा करना
भर—धारण करना, पोषण करना
भव—होना

इदं, अदस् और एतद्

नियम ५२३ (इदम इमः ३।७२) इदं शब्द को इम आदेश होता है। सि आदि विभक्ति परे हो तो। इमो, इमे। इमं, इमे। इमेण।

नियम ५२४ (पुंस्त्रियो नं वायमिमिआ सौ ३।७३) इदं शब्द को सि परे होने पर पुंलिग में अयं तथा स्त्रीलिंग में इमिआ आदेश विकल्प से होता है। अयं, इमो। इमिआ, इमा।

नियम ५२५ (णोम् शस्टा भिसि ३।७७) अम्, शस्, टा तथा भिस् परे हो तो इदं शब्द को ण आदेश विकल्प से होता है। णं, इमं। णे, इमे। णेण इमेण। णेहि, इमेहि।

नियम ५२६ (अमेणम् ३।७८) इदं शब्द को अम् विभक्ति सहित इणं आदेश विकल्प से होता है। इणं, इमं।

नियम ५२७ (स्सि-स्सयोरत् ३।७४) स्सि तथा स्स परे रहने पर इदं शब्द को 'अ' आदेश विकल्प से होता है। अस्सि, अस्स। इमस्सि, इमस्स।

नियम ५२८ (ङो मेंन हः ३।७५) इदं शब्द को म आदेश होने पर ङि परे हो तो म सहित ङि को ह आदेश विकल्प से होता है। इह, इमस्सि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमम्मि।

नियम ५२९ (न त्थः ३।७६) इदं शब्द को ङि प्रत्यय से होने वाले आदेश स्सि, म्मि और त्थ में से त्थ आदेश नहीं होता। इमस्सि, इमम्मि (इह)।

नियम ५३० (क्लीबे स्यमेदमिणमो च ३।७९) नपुंसक लिंग में वर्तमान इदं शब्द को सि और अम् सहित इदं, इणमो और इण आदेश नित्य होते हैं। सि—इदं, इणमो, इणं। अम्—इदं, इणमो, इणं।

नियम ५३१ (मुः स्यादौ ३।८८) अदस् शब्द के द को मु आदेश होता है, सि आदि विभक्ति परे हो तो। अमू पुरिसो। अमूणो पुरिसा। अमुं वणं। अमूइं वणाइं। अमू माला। अमूउ, अमूओ, मालाओ।

नियम ५३२ (वादसो दस्य होनोदाम् ३।८७) अदस् शब्द के दकार को सि परे रहने पर ह आदेश विकल्प से होता है। अहं।

नियम ५३३ (म्मावयेऔ वा ३।८९) अदस् शब्द के अंतिम व्यंजन लुप्त होने पर दकारान्त शब्द को म्मि परे रहने पर अय तथा इअ आदेश विकल्प से होता है। अयम्मि, इअम्मि, अमुम्मि।

नियम ५३४ (वैसेणमिणमो सिना ३।८५) एतद् शब्द से परे सि होने पर विभक्ति सहित एस, इणं और इणमो आदेश विकल्प से होता है। एस, इणं, इणमो, एअं।

नियम ५३५ (वैतदो ङसेस्त्तो त्ताहे ३।८२) एतद् शब्द से परे ङसि को त्तो और त्ताहे आदेश विकल्प से होता है। एत्तो, एत्ताहे, पक्षे एआओ, एआउ, एआहि, एआहिंतो, एआ।

नियम ५३६ (त्थे च तस्य लुक् ३।८३) त्थ, त्तो, एवं त्ताहे परे रहने पर एतद् शब्द के तकार का लोप होता है। एत्थ, एत्तो, एत्ताहे।

नियम ५३७ (एरदीतौ म्मौ वा ३।८४) एतद् के एकार को म्मि परे रहने पर अ एवं ई आदेश विकल्प से होता है। अयम्मि, ईयम्मि, एअम्मि।

प्रयोग वाक्य

परुप्परं विवाओ न कायव्वो। पल्लवायम्मि किं अन्नं होहिइ? परिवासो किं जाणइ निसाए नयरम्मि किं जाअं? मुहरस्स सुसीलस्स कत्थ वि सम्माणो न भवइ। तुमं पमेइलो कया जाओ? अहं मसाणम्मि साहणं करेमि। मज्झ गिहम्मि वि डोला विज्जइ। णिवेसणाए मणुओ पिओ भवइ। भारहवासस्स छायणिआओ कत्थ-कत्थ संति? छोइया फलस्स सुरक्खं करेइ तं विणा फलस्स दुद्दसा होइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

तिणा मज्झपत्तं भंजिअं। गुरुणा अविणीयसीसो भंडिओ। जो साहुणियमा न पालेइ सो भंसइ। धेणू तणाइं भक्खइ। चणा को भज्जइ? तुमं कत्थ भमसि? भदंतो विणोदो अजत्ता कत्थ विहरइ? किं तुमं सुहं भयसि? मोहणो णियगिहेण सह भगिणिमवि भरइ। किं तुमं जाणसि, कल्लं किं भविस्सइ?

प्राकृत में अनुवाद करो

समाज का आधार परस्पर सहयोग है। इस खेत में एक कुआं है। खेत में सोने वाला पुरुष खेत की सुरक्षा करता है। वाचाल आदमी का विश्वास नहीं होता। अधिक चर्बी वाला आदमी भीतर में कमजोर होता है। श्मशान की राख का तंत्र में प्रयोग होता है। श्रावण (सावण) मास में मेरी बहन झूला ढूंढ रही है। सेवा का फल बहुत मधुर होता है। छावनी शहर से कितनी दूर है? फल के साथ छिलके का भी मूल्य है।

धातु का प्रयोग करो

उसने अपने व्रतों को तोड दिया। समाज में बुरे आदमी की भर्त्सना करनी चाहिए। मनुष्य अपने आचरण से ही नीचे गिरता है। जो दिन में खाना खाता है उसको स्वास्थ्य लाभ मिलता है। वह गर्म रेत से चना भुनता है। साधु सबका कल्याण करते हैं। तुम रात में क्यों भ्रमण करते हो? वह धर्म की सेवा करता है। तुम किसका पोषण करते हो? जो धर्म करता है वह सुखी होता है।

प्रश्न

१. इदं शब्द के लिए इस पाठ में कितने नियम हैं और वे क्या कार्य करते हैं?
२. अदस् शब्द को अय तथा इअ आदेश कहां होता है?
३. अदस् शब्द के द को ह करने वाला कौनसा नियम है?
४. एतद् शब्द के तकार का लोप कहां होता है?
५. परस्पर, खेत, वाचाल, अधिक चर्बी वाला, श्मशान, झूला, सेवा, छावनी, छिलका के लिए प्राकृत शब्द बताओ?
६. भंज, भंड, भंस, भक्ख, भज्ज, भद, भम, भय और भर धातु के अर्थ बताओ तथा अपने वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दरूप (६)

युष्मद् अस्मद् शब्द

शब्द संग्रह (रत्न और मणि)

मूंगा—पवालो, पवालं
पन्ना—मरगयो, मरगयं, मरअदो
पुखराज—पुप्फरागो, पुप्फरायो
हीरा—वइरो, वइरं
सूर्यकान्तमणि—सूरकंतो
स्फटिकमणि—फलिहो
माणिक—माणिक्कं
गोमेद—गोमेयो गोमेयं
नीलम—इंदनीलो, नीलमणि (पु. स्त्री)
लहसुनिया—वेडुरिओ, वेरुलियं, वेडुज्जो
चंद्रकान्तमणि—चंदकंतो
सर्पमणि—सप्पमणि (पु. स्त्री)
मोती—मुत्ता

० ० ० ०

गीला, आर्द्र—अद्द (वि)
श्वासरोग—सासो
ज्वर—जरो
आयुर्वेद—आउव्वेयो

धातु संग्रह

संवेल्ल—लपेटना
संवस—साथ में रहना
संविभाव—पर्यालोचन करना
संमुज्झ—मुग्ध होना
आवील—पीडना, आपीडन करना
संवर—रोकना
संविद—जानना
संमिल्ल—संकोच करना
संलव—बातचीत करना
पवील—प्रपीडन करना

नियम ५३८ (युष्मदस्तं तुं तुवं तुह तुमं सिना ३।६०) युष्मद् शब्द को सि सहित तं आदि पांच आदेश होते हैं। तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं (त्वम्)

नियम ५३९ (भे तुब्भे तुज्झ तुम्ह तुय्हे उय्हे जसा ३।९१) युष्मद् शब्द को जस् सहित भे आदि छ आदेश होते हैं। भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे (यूयम्)

नियम ५४० (ब्भो म्ह ज्झौ वा ३।१०४) युष्मद शब्द को आदेश ब्भ को म्ह और ज्झ आदेश विकल्प से होते हैं। तुम्हे, तुज्झे।

नियम ५४१ (तं तुं तुमं तुवं तुह तुमे तुए अमा ३।९२) युष्मद् शब्द को अम् सहित तं आदि सात आदेश होते हैं। तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह, तुमे, तुए (त्वाम्)

नियम ५४२ (वो तुज्झ तुब्भे तुय्हे उय्हे भे शसा ३।९३) युष्मद्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द को शस् सहित वो आदि छ आदेश होते हैं। वो, तुज्झ, तुब्भ, तुय्हे, उय्हे, भे (युष्मान्)

नियम ५४३ (भे दि दे ते तइ तए तुमं तुमइ तुमए तुमे तुमाइ टा ३।६४) युष्मद् शब्द को टा सहित भे आदि ग्यारह आदेश होते हैं। भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ (त्वया)

नियम ५४४ (भे तुब्भेहिं उज्झेहिं उम्हेहिं तुय्हेहिं उय्हेहिं भिसा ३।६३) युष्मद् शब्द को भिस् सहित छ आदेश होते हैं। भे, तुब्भेहिं, उज्झेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं (युष्माभिः)

नियम ५४५ (तइ तुव तुम तुह तुब्भा ङसौ ३।६६) युष्मद् शब्द को ङसि (पंचमी के एक वचन) सहित पांच आदेश होते हैं। ङसि प्रत्यय को होने वाले त्तो, दो, दु, हि, हिन्तो, लुक् भी होते हैं। तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो तुब्भत्तो। जहां जहां ब्भ रूप आए वहां सू. ५४० से म्ह और ज्झ भी होगा। तुम्हत्तो, तुज्झत्तो। त्तो की तरह दो, दु, हि, हिन्तो और लुक् के भी रूप बनते हैं।

नियम ५४६ (तुय्ह, तुब्भ तहिन्तो ङसिना ३।६७) युष्मद् शब्द को ङसि सहित तीन आदेश होते हैं। तुय्ह, तुब्भ, तहिन्तो (त्वद्) सूत्र ५४० से तुम्ह और तुज्झ रूप और बनते हैं।

नियम ५४७ (तुब्भ तुय्होय्होम्हा भ्यसि ३।६८) युष्मद् शब्द को भ्यस् परे हो तो तुब्भ, तुय्ह आदि चार आदेश होते हैं। तुब्भत्तो, तुय्हत्तो, उय्हत्तो, उम्हत्तो, तुम्हत्तो, तुज्झत्तो (युष्मद)। इसी प्रकार त्तो की तरह दो, दु, हि, हिन्तो, सुन्तो के भी रूप बनते हैं।

नियम ५४८ (तइ तु ते तुम्हं तुह तुहं तुव तुम तुमे तुमो तुमाइ दि दे इ ए तुब्भोब्भोय्हा ङसा ३।६६) युष्मद् शब्द को ङस् (षष्ठी के एक वचन) सहित तइ आदि अठारह आदेश होते हैं। तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह, तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ (तव)

नियम ५४६ (तु वो भे तुब्भ तुब्भं तुब्भाण, तुवाण तुमाण तुहाण उम्हाण आमा ३।१००) युष्मद् शब्द को आम् सहित दस आदेश होते हैं। तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण (युष्माकम्)

नियम ५५० (तुमे तुमए तुमाइ तइ तए ङिना ३।१०१) युष्मद् शब्द को ङि (सप्तमी एक वचन) सहित पांच आदेश होते हैं। तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए (त्वयि)

नियम ५५१ (तु तुव तुम तुह तुब्भा ङौ ३।१०२) युष्मद् शब्द को ङि परे हो तो पांच आदेश होते हैं। ङि प्रत्यय को होने वाले आदेश भी होते हैं। तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि, तुम्हम्मि, तुज्झम्मि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ५५२ (सुपि ३।१०३) युष्मद् शब्द को सुप् प्रत्यय परे हो तो तु, तुव, तुम, तुह, तुब्भ ये पांच आदेश होते हैं। तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु। सू ५४० से तुम्हेसु, तुज्झेसु भी बनते हैं। (युष्मासु)

नियम ५५३ (अस्मदो म्मि अम्मि अम्हि हं अहं अहयं सिना ३।१०५) अस्मद् शब्द को सि सहित छ आदेश होते हैं। म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं (अहं)

नियम ५५४ (अम्ह अम्हे अम्हो मो वयं भे जसा ३।१०६) अस्मद् शब्द को जस् सहित छ आदेश होते हैं। अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे (वयम्)

नियम ५५५ (णे णं मि अम्मि अम्ह मम्ह मं ममं मिमं अहं अमा ३।१०७) अस्मद् शब्द को अम् (द्वितीया का एक वचन) सहित दश आदेश होते हैं। णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं (माम्)

नियम ५५६ (अम्हे अम्हो अम्ह णे शसा ३।१०८) अस्मद् शब्द को शस् सहित चार आदेश होते हैं। अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे (अस्मान्)

नियम ५५७ (मि मे ममं ममए ममाइ मइ मए मयाइ णे टा ३।१०९) अस्मद् शब्द को टा सहित नव आदेश होते हैं। मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ. णे (मया)

नियम ५५८ (अम्हेहि अम्हाहि अम्ह अम्हे णे भिसा ३।११०) अस्मद् शब्द को भिस् सहित पांच आदेश होते हैं। अम्हेहि अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभिः)

नियम ५५९ (मइ मम मह मज्झ ङसौ ३।१११) अस्मद् शब्द को ङसि परे हो तो चार आदेश होते हैं। ङसि को आदेश त्तो आदि होते हैं। मइत्तो, ममत्तो, महत्तो, मज्झत्तो। त्तो की तरह दो दु, हि, हिन्तो और लुक् भी जोडकर रूप बनाए जाते हैं। (मद्)

नियम ५६० (ममाम्हौ भ्यसि ३।११२) अस्मद् शब्द से परे भ्यस् हो तो मम और अम्ह आदेश होते हैं। भ्यस् को आदेश त्तो आदि होते हैं। ममत्तो, अम्हत्तो (अस्मद्)। इसी प्रकार हिन्तो, सुन्तो के भी रूप बनते हैं।

नियम ५६१ (मे मइ मम मह महं मज्झ मज्झं अम्ह अम्हं ङसा ३।११३) अस्मद् शब्द को ङस् सहित नव आदेश होते हैं। मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं (माम्)

नियम ५६२ (णे णो मज्झ अम्ह अम्हं अम्हे अम्हो अम्हाण ममाण महाण मज्झाण आमा ३।११४) अस्मद् शब्द को आम सहित ग्यारह आदेश होते हैं। णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण (अस्माकम्)

नियम ५६३ (मि मइ ममाइ मए मे ङिना (३।११५) अस्मद् शब्द को ङि सहित पांच आदेश होते हैं। मि, मइ, ममाइ, मए, मे (मयि)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ५६४ (अम्ह मम मह मज्झा ङौ ३।११६) अस्मद शब्द को ङि परे हो तो चार आदेश होते हैं। ङि का आदेश म्मि होता है। अम्हम्मि ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि (मयि)

नियम ५६५ (सुपि ३।११७) अस्मद् शब्द को सुप् परे हो तो अम्ह, मम, मह और मज्झ चार आदेश होते हैं। अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु। (अस्मासु)

प्रयोग वाक्य

पवालो आउव्वेयस्स दिट्ठीए अइसत्तिसंपण्णो रयणो अत्थि। मरगयो हरियवण्णो खणिजो य विज्जइ। पुप्फरायो अणेगेसु वण्णेसु मिलइ। वइरो सुक्कगहस्स पियरयणो अत्थि। नीलमणी सणिवारे गहिअव्वो। गोमेयो आउव्वेयस्स दिट्ठीए अइलाभदो अत्थि। वेडुरिओ मज्जारस्स णयणाइं पिव विभाइ। अमुम्मि णयरे सूरकंतो कस्स पासे अत्थि? फलिहो पारदंसी भवइ। चंदकंतो सोमवारे अंगुलीए गहिअव्वो। सप्पमणी सुलहा नत्थि। जेउर (जयपुर) णयरे माणिक्कस्स वावारो अत्थि न वा? मुत्तावलिं दट्ठुं अहं अत्थ आगओ।

धातु प्रयोग

सो अंगुलीए अद्दवत्थखंडं कहं संवेल्लइ? तुमए सह अहं न संवसामि। अहं अवररत्तीए संविभावेमि। किं तुमं तम्मि संमुज्झसि? संवरो कम्माइं संवरइ। सा नवतत्ताइं संविदइ। सो मुहु मुहु कहं नेत्ताइं संमिल्लइ? गोयरग्गगओ मुणि न संलवे।

प्राकृत में अनुवाद करो

मूंगा मूल्यवान् होता है। पन्ने में गर्मी सहने की शक्ति अधिक है। पुखराज विश्व विख्यात रत्न है। हीरा अनेक देशों में प्राप्त होता है पर भारत का हीरा प्रसिद्ध है। नीलम श्वासरोग और ज्वर में लाभदायक है। गोमेद के प्रभाव को ज्योतिषी और तांत्रिक दोनों स्वीकार करते हैं। लहसुनिया केतु ग्रह के दुष्प्रभाव को दूर करता है। सूर्यकांतमणि रविवार को पहनना चाहिए। चंद्रकान्तमणि का क्या मूल्य है? माणिक नवरत्नों में एक है। मोती सफेद और चमकदार होता है।

धातु का प्रयोग करो

वह बात को लपेट कर कहता है। जो तुम्हारे साथ में रहता है वह तुम्हें जानता है। क्या तुम एकान्त में पर्यालोचन करते हो? वह अन्य पुरुष पर मुग्ध नहीं होती है। तुम त्याग से अपने पापों को रोकते हो। मैं तुम्हारा ज्ञान जानता हूं। जो संकोच करता है, वह कौन है? तुम किसके साथ बातचीत करते हो?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. युष्मद् शब्द के ङसि प्रत्यय के क्या-क्या रूप बनते हैं ?

२. अस्मद शब्द के ङि प्रत्यय के क्या-क्या रूप बनते हैं ?

३. मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, सूर्यकान्तमणि, स्फटिकमणि, गोमेद, नीलम, लहसुनिया, चंद्रकान्तमणि, सर्पमणि, माणिक और मोती के प्राकृत शब्द बताओ।

४. संवेल्ल, संवस, संविभाव, संमुज्झ, संवर, संविद, संमिल्ल, आवील, पवील और संलव धातुओं के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दरूप (१०)

शब्द संग्रह (स्फुट)

पानी की तरंग—उल्लोलो
आग्रह—अभिणिवेसो
कपट—कइअवं
कठोर—कक्कसो
मनोरथ—मणोरहो
भक्ति—भत्ती
लावण्य—लावण्णं
अग्नि—हव्ववाहो
सैन्यरचना—वूहं
ईर्ष्या—इस्सा

धातु संग्रह

भाव—चिंतन करना
भिंद—भेदना, तोडना
भिक्ख—भीख मांगना
भिड—भिडना, मुठभेड करना
भुंज—भोजन करना
मद्द—मालिश करना
भुक्क—भूंकना
मंत—मंत्रणा करना
मक्ख—चुपडना, (घी, तेल आदि से)
मज्ज—स्नान करना

संख्या शब्द—

एक शब्द को छोडकर सभी संख्यावाची शब्द प्राकृत में तीनों लिंगों में एक समान चलते हैं।

नियम ५६६ (दुवे दोण्णि वेण्णि च जस्-शसा ३।१२०) जस् तथा शस् सहित द्वि शब्द को दुवे, दोण्णि, वेण्णि, तथा दो ये चार आदेश होते हैं। दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो ठिआ पेच्छ वा।

नियम ५६७ (द्वेर्दो वे ३।११९) तृतीया आदि विभक्तियों में द्वि शब्द को दो और वे ये दो आदेश होते हैं। दोहि, वेहि। दोण्हं, वेण्हं। दोसु, वेसु।

नियम ५६८ (त्रेस्तिण्णिः ३।१२१) जस् तथा शस् सहित त्रि शब्द को तिण्णि आदेश होता है। तिण्णि।

नियम ५६९ (त्रेस्ती तृतीयादौ ३।११८) तृतीया आदि विभक्तियों में त्रि शब्द को ती आदेश होता है। तीहिं।

नियम ५७० (चतुर श्चत्तारो चउरो चत्तारि ३।१२२) जस् तथा शस् के सहित चतुर् शब्द को चत्तारो, चउरो और चत्तारि आदेश होते हैं। चत्तारो, चउरो, चत्तारि चिट्ठंति पेच्छ वा

नियम ५७१ (चतुरो वा ३।१७) उकारान्त चउ शब्द को भिस्,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्यस् और सुप् परे होने पर दीर्घ विकल्प से होता है। चऊहि, चउहि। चऊओ, चउओ। चऊसु, चउसु।

नियम ५७२ (संख्याया आमो ण्ह ण्हं ३।१२३) संख्या शब्दों से परे आम् को ण्ह तथा ण्हं आदेश होते हैं। दोण्ह, दोण्हं। तिण्ह, तिण्हं। चउण्ह, चउण्हं। इसी प्रकार पंच, छ, सत्त, अट्ठ, णव और दस शब्दों के रूप बनते हैं।

नियम ५७३ (शेषेदन्तवत् ३।१२४) शब्द सिद्धि के लिए ऊपर नियम बताए गए हैं। आकार आदि शब्दों के लिए जो नियम नहीं बताए गए हैं उनके लिए आकार आदि सारे शब्द अदन्तवत् हो जाते हैं यानि अकारान्त शब्द के नियम ही उन शब्दों में लगते हैं। जैसे **(जस् शसो र्लुक् ३।४)** यह नियम अकारान्त शब्द के लिए कार्य करता है। अदन्तवत् होने के कारण आकार आदि शब्दों में भी यह नियम कार्य करेगा। माला, गिरी, गुरू, सही, वहू रेहंति पेच्छ वा। इसी प्रकार अन्य स्यादि प्रत्ययों के लिए है।

० आकारादि शब्दों के लिए अदन्तवत् प्राप्त नियमों में निषेध—

नियम ५७४ (न दीर्घो णो ३।१२५) जस्, शस् और ङि प्रत्यय को आदेश णो प्रत्यय परे हो तो इदन्त और उदन्त शब्द दीर्घ नहीं होता है। अग्गिणो, वाउणो।

नियम ५७५ (ङसे र्लुक् ३।१२६) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर प्राप्त ङसि का लुक् नहीं होता है। मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो एवं अग्गीओ, वाऊओ इत्यादि।

नियम ५७६ (भ्यसश्च हिः ३।१२७) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर प्राप्त भ्यस् और ङस् को हि नहीं होता है। मालाहिंतो, मालासुंतो। एवं अग्गीहिंतो इत्यादि।

नियम ५७७ (ङे र्डेः ३।१२८) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर प्राप्त ङि को डे नहीं होता है। अग्गिम्मि, वाउम्मि।

नियम ५७८ (एत् ३।१२९) आकारान्त आदि शब्द अदन्तवत् होने पर टा, शस्, भिस् और सुप् प्रत्यय परे होने पर एकार नहीं होता है।

प्रयोग वाक्य

समुद्दस्स उल्लोला कत्थ गमिस्संति? अभिणिवेसेण सच्चं दूरं गच्छइ। कइअवजुत्तववहारो केसिमवि पिओ न लग्गइ। कक्कसवयणं परस्स हिअयं भंजइ। सावगाणं तिण्णि मणोरहा पसिद्धा संति। उज्जमेण पक्खिणो वि णियउअरं भरंति। पेक्खाझाणेण सहावो परियट्टइ। भत्तीए भगवंतो वि पसीयइ। थीणं लावण्णं आभूसणं विव भाइ। हव्ववाहो सव्वाणि वत्थूणि भस्सीकुणइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

सुहभावणं भावेज्ज । तुमं कहं भित्तिं भिंदसि ? सो सरीरबलेण समत्थो अत्थि तहवि भिक्खइ । मोहणो सोहणेण सह भिडिसु । सुणयो परसुणयं पासिऊणं च्चिअ भुक्कइ । सो तुमाइ सह कस्सि पण्हे मंतइ । भगिणी रुट्टिआओ घयेण मक्खइ । अज्जत्त बहिणीओ दिणे बले (एव) सइ मज्जंति । रामो णियसामिं मद्दइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

पानी की तरंगों की तरह मनुष्य का जीवन अस्थिर है । उसके आग्रह के कारण संधि नहीं हो सकी । कपट से स्त्री की योनि मिलती है । किसी के साथ कठोर व्यवहार मत करो । क्या किसी भी व्यक्ति के सब मनोरथ फलित हुए हैं ? संयम में उद्यम करना चाहिए । यदि स्वभाव-परिवर्तन नहीं होता हो तो साधना का क्या प्रयोजन है ? भक्तिरस का प्रमुख (पमुह) कवि कौन है ? तुम्हारा लावण्य ईर्ष्या का कारण बनता है । अग्नि सबके साथ समान व्यवहार करती है ।

धातु का प्रयोग करो

वह अनित्य भावना का चिंतन करता है । उसकी सैन्य रचना को तोडना चाहिए । जो भीख मांगता है वह कौन है ? तुम्हारी प्रकृति कैसी है, सबके साथ भिड जाते हो ? सदा गरिष्ठ (गरिट्ठ) भोजन नहीं करना चाहिए । कुत्ता रात में भौंकता है और दिन में भी । छह कानों से मंत्रणा नहीं करनी चाहिए । पुत्रवधू फुलका चुपडती है । वह शीतकाल में भी ठंडे पानी से नहाता है । नौकर (भिच्चो) वेतन लेकर मालिश करता है ।

प्रश्न

१. संख्यावाची शब्दों से परे आम् को क्या आदेश होता है ?
२. पंचमी विभक्ति में द्वि शब्द को क्या आदेश होता है ?
३. चत्तारि आदेश कहां होता है ?
४. पानी की तरंग, आग्रह, कपट, कठोर, मनोरथ, ईर्ष्या, उद्यम, स्वभाव, भक्ति, लावण्य, अग्नि, सैन्यरचना आदि शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
५. भाव, भिंद, भिक्ख, भिड, भुंज, भुक्क, मंत, मक्ख, मज्ज और मद्द— इन धातुओं के अर्थ बताओ तथा वाक्य में प्रयोग करो ।
६. पत्थयणं, पणो, अट्टणं, णिवेसणा, छायणिआ, परिवासो, वइरं गोमेयं, वेरुलियं शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकालिक प्रत्यय

शब्द संग्रह

तंबू—पडवा	लक्षण—लक्खणं
कुशल—कुसलो	विघटन—विहडणं
युद्ध—जुज्झं	खंडन—विसारणं
जीर्ण—जुन्नं, जुण्णं	पवित्र, निर्दोष—अणहो
फोटु—पडिच्छाया	पाप—अणो
नास्तिक—णत्थिओ (वि)	पडोसी—पाडोसिओ

धातु संग्रह

धर—धारण करना	धंस—नष्ट होना
धरिस—प्रगल्भता, ढीठाइ करना	धिप्प—चमकना
धीरव—सान्त्वना देना	धुण—कंपाना
धस—धसना, नीचे जाना	धुव—धोना
धा—धारण करना	धा—दौडना
धा—ध्यान करना, चिंतन करना	

धातु रूप

१. शब्दों की तरह धातु के रूपों में भी द्विवचन नहीं होता।

२. प्राकृत में आत्मनेपद और परस्मैपद का भेद नहीं होता। आत्मनेपद और परस्मैपद के प्रत्यय प्राकृत में प्रत्येक धातु के साथ जुडते हैं।

३. भाव कर्म में भी आत्मनेपद नहीं होता है।

४. प्राकृत में व्यंजनान्त धातुएं नहीं होती हैं। संस्कृत की व्यंजनान्त धातु में 'अ' विकरण जोडकर उसे अकारान्त बनाया जाता है। हस्+अ=हस। भण्+अ=भण। लिह्+अ=लिह।

५. अकारान्त को छोड शेष स्वरान्त धातुओं में अ विकरण विकल्प से जुडता है। होइ, होअइ। ठाइ, ठाअइ।

६. प्राकृत में धातु द्वित्व नहीं होती। जैसे संस्कृत में णबादि, सन्नन्त, यङन्त और यङ्लुगन्त आदि में होती है।

७. प्राकृत में १० लकार नहीं होते।

८. धातु के उपसर्ग जुडने से वह धातु का अंग बन जाता है। जैसे—प+इक्ख पेक्ख। उव+इक्ख उवेक्ख।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. प्राकृत में धातुओं का एक ही गण होता है । संस्कृत की तरह दस गण नहीं होते हैं । अन्य गणों की धातुएं भ्वादि गण की तरह ही चलती हैं । गणों के रूपों से सीधा प्राकृत करने से कहीं-कही पर रूप मिलते भी हैं । जैसे—शृणोति—सुणोइ ।

वर्तमान काल के धातु के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	इ, ए	न्ति, न्ते, इरे
मध्यमपुरुष	सि, से	इत्था, ह
उत्तमपुरुष	मि, ए	मो, मु, म

उत्तमपुरुष के ए प्रत्यय का प्रयोग बहुत कम मिलता है, केवल आर्ष प्राकृत में होता है । प्रत्ययों से होने वाले धातु के रूप नीचे नियमों में स्पष्ट हैं इसलिए अलग से नहीं दिए जा रहे हैं ।

नियम ५७९ (**व्यञ्जनाददन्ते ४।२३९**) व्यञ्जनान्त धातु के अंत में अकार का आगम होता है । वसइ, पढइ, भमइ ।

नियम ५८० (**स्वरादनतो वा ४।२४०**) अकारान्त धातु को छोड शेष स्वरान्त धातुओं के अंत में अकार का आगम विकल्प से होता है । पाइ, पाअइ । होइ, होअइ ।

नियम ५८१ (**त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ ३।१३९**) परस्मैपद और आत्मनेपद के त्यादि विभक्तियों के प्रथमपुरुष के एकवचन (तिप्, ते) प्रत्ययों को इच् (इ) और एच् (ए) आदेश होते हैं । हसइ, हसए (हसति) वह हसता है ।

नियम ५८२ (**बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे ३।१४२**) प्रथमपुरुष के बहुवचन (अन्ति, अन्ते) प्रत्ययों को न्ति, न्ते, इरे आदेश होते हैं । हसंति, हसंते, हसिरे (हसतः, हसंति) वे दोनों या वे हंसते हैं ।

नियम ५८३ (**द्वितीयस्य सि से ३।१४०**) मध्यमपुरुष के एकवचन (सिप्, से) प्रत्ययों को सि और से आदेश होते हैं । हससि, हससे (हससि) तू हंसता है ।

नियम ५८४ (**अत एवैच् से ३।१४५**) त्यादि प्रत्ययों के प्रथमपुरुष के एकवचन में ए और से प्रत्यय कहा है वह अकारान्त धातुओं से ही होता है, अन्य स्वरान्त धातुओं से नहीं । हसए, हससे । करए, करसे ।

नियम ५८५ (**मध्यमस्येत्था हचौ ३।१४३**) मध्यमपुरुष के बहुवचन (थ, ध्वे) प्रत्ययों को इत्था और हच् (ह) आदेश होते हैं । हसित्था, हसह (हसथः, हसथ) तुम दोनों या तुम हंसते हो ।

नियम ५८६ (**तृतीयस्य मिः ३।१४१**) उत्तमपुरुष के एकवचन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(मिप्, ए) प्रत्ययों को मि आदेश होता है।

नियम ५८७ (मौ वा ३।१५४) अदन्त धातु के अ को आ विकल्प से हो जाता है मि परे होने पर। हसमि, हसामि (हसामि) मैं हंसता हूं।

नियम ५८८ (तृतीयस्य मो मु माः ३।१४४) उत्तम पुरुष के बहुवचन (मस्, महे) प्रत्ययों को मो, मु और म आदेश होते हैं। हसमो, हसमु, हसम (हसावः, हसामः) हम दोनों या हम हंसते हैं।

नियम ५८९ (इच्च मो मु मे वा ३।१५५) अदन्त धातु के अ को इ और आ हो जाता है, मो, मु और म प्रत्यय परे हो तो। हसिमो, हसामो। हसिमु, हसामु। हसिम, हसाम (हसामः)। हम हंसते हैं।

नियम ५९० (वर्तमाना पञ्चमी शतृषु वा ३।१५८) वर्तमानकाल, पंचमीविभक्ति तथा शतृप्रत्यय परे रहने पर अ को ए विकल्प से होता है। हसइ, हसेइ। हससि, हसेसि। हसमो, हसेमो। हसमु, हसेमु। हसम, हसेम।

नियम ५९१ (वर्तमाना भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा ३।१७७) वर्तमान, भविष्यत् तथा विधि आदि धातु प्रत्ययों के स्थान पर ज्ज और ज्जा आदेश विकल्प से होते हैं। **वर्तमान**—हसेज्ज, हसेज्जा, हसइ (हसति)। **भविष्यत्**—हसेज्ज, हसेज्जा, हसिहिइ (हसिष्यति) **विधि**—हसेज्ज, हसेज्जा, हसउ (हसतु, हसेद् वा)।

नियम ५९२ (मध्ये च स्वरान्ताद् वा ३।१७८) स्वरान्त धातु से वर्तमान, भविष्यत् तथा विधि आदि प्रत्ययों के स्थान पर तथा धातु और प्रत्यय के बीच में ज्ज और ज्जा विकल्प से हो जाते हैं। होज्जइ, होज्जाइ, होज्ज, होज्जा, होइ (भवति)। होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होज्ज, होज्जा होहिइ (भविष्यति)। होज्जउ, होज्जाउ, होज्ज, होज्जा, होउ। (भवतु, भवेद् वा) एवं होज्जसि, होज्जासि, होज्ज, होज्जा, होसि (भवसि)।

नियम ५९३ (ज्जात् सप्तम्या इर्वा ३।१६५) ज्ज से परे इ का प्रयोग विकल्प से होता है। होज्ज, होज्जइ (भवेत्)।

नियम ५९४ (ज्जा ज्जे ३।१५९) प्रत्ययों के स्थान पर आदेश होने वाले ज्ज और ज्जा परे हों तो धातु के अकार को एकार हो जाता है। हसेज्ज, हसेज्जा।

नियम ५९५ (अत्थि स्त्यादिना ३।१४८) त्यादि प्रत्ययों के साथ अस् धातु को अत्थि आदेश होता है। अत्थि (अस्ति, संति, असि, स्थ, अस्मि, स्मः)।

नियम ५९६ (सिना स्ते सिः ३।१४६) सि प्रत्यय के साथ अस् धातु को सि आदेश होता है। सि (असि)। पूर्व नियम से अत्थि भी।

नियम ५९७ (मि मो मैं म्हि म्हो म्हा वा ३।१४७) मि, मो और म

प्रत्यय के साथ अस् धातु को क्रमशः म्हि, म्हो और म्ह आदेश विकल्प से होता है। म्हि, (अस्मि) म्हो, म्ह (स्मः)।

प्रयोग वाक्य

पडवाए केत्तिला जणा उववसिंति ? ववहारकुसलो सव्वत्थ (सब जगह) सम्माणं लभइ। देसाणं जुज्झं जया भवइ तया बहुनरसंहारो होइ। कालप्पभावेण पत्तेयं वत्थुं जुन्नं हुवइ। किं तुज्झ पासे आयरिअभिक्खुणो पडिच्छाया विज्जइ ? जीवस्स किं लक्खणं अत्थि ? जो संघस्स विहडणं कुणइ सो कूरकम्माइं बंधइ। अत्थिवायस्स को विसारणं करेइ ? अज्जत्ता अणहो सरलो नरो दंडं लहइ। जणा अणं कुणंति परं फलं न इच्छंति। मज्झ पाडोसिओ भद्दो सुसीलो य अत्थि।

धातु प्रयोग

किं तुमं धरसि ? कालप्पभावेण पव्वयो धंसइ। मोहणेण कहिअं अत्थ न आगंतव्वं तहवि सोहणो धरिसइ। आयासे तारा धिप्पंति। गिहे कस्सइ मच्चुस्स पच्छा सावगा गुरुं पासंति तया आयरिया ता धीरवंति। तवो कम्माइं धुणइ। भूकंपे भूमी धसइ। जोगी एगे पोग्गले धाइ। विजयो वत्थाइं धाइ। तुमेसुं को वेगेण धाइ ? तुमं पइदिणं वत्थाइं कहं धुवसि ?

प्राकृत में अनुवाद करो

भीषण गर्मी में तंबू की छाया में लोग बैठना चाहते हैं। वह कुशल कलाकार है। युद्ध में जीत हमारी होगी। जीर्ण वस्त्र शीघ्र फटता है। प्रधानमंत्री (पहाणमंती) के साथ वह अपनी फोटु चाहता है। अजीव का लक्षण क्या है ? जिसका योग (जोग) होता है उसका विघटन होता है। नास्तिक लोग आत्मा का खंडन करते हैं। वह अपने आपको निर्दोष कहता है। पापी से घृणा मत करो, पाप से करो। पडौसी के साथ अच्छा व्यवहार करो।

धातु का प्रयोग करो

वह तप को धारण करता है। इस गांव का पर्वत कब नष्ट हो गया ? जो ढीठाइ करता है उसकी संगत मत करो। उसका भाग्य चमकता है। मुनि ने दुःखी परिवार को सान्त्वना दी। उसका मकान जमीन में धंस गया। मंगलवार को तुम नया सफेद वस्त्र क्यों धारण करते हो ? मुनि शुभकरण साधना शिखर पर ध्यान करते हैं। ऊंट मरुभूमि में सबसे तेज दौडता है तपस्या से अपनी आत्मा को धोओ।

प्रश्न

१. प्राकृत में आत्मनेपद कहां होता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. धातुओं के रूप बनाने के लिए प्राकृत में कहां कौनसा विकरण जोडा जाता है?
३. प्राकृत में धातुओं के कितने गण होते हैं ?
४. संस्कृत के समान प्राकृत में धातु कहां द्वित्व होती है ?
५. क्या संस्कृत की तरह प्राकृत में भी दस लकार होते हैं ? कौन-कौन से होते हैं ?
६. वर्तमानकाल में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय कौन-कौन से हैं ?
७. अदन्त धातु के अ को क्या-क्या आदेश होता है और किस नियम से ?
८. पथ्य, कुशल, युद्ध, जीर्ण, राख, नास्तिक, लक्षण, विघटन, खण्डन, पाप और निर्दोष शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?
९. धर, धंस, धरिस, धिप्प, धीरव, धुण, धस, धा, धा, धा और धुव धातुओं के अर्थ बताओ तथा वाक्य में प्रयोग करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विध्यर्थ प्रत्यय

शब्द संग्रह (साला वर्ग)

अट्टणसाला—व्यायामशाला
उदगसाला—उदकगृह
उट्टसाला—रसाला
उवट्ठाणसाला—सभास्थान
करणसाला—न्यायमंदिर
कूडागारसाला—षड्यंत्रवाला घर
गंधव्वसाला—संगीतगृह
गद्दभसाला—गधा रखने का स्थान
गोणसाला—गोशाला
घोडसाला—घुडसाल, अस्तबल
कम्मसाला—कारखाना
फरुससाला—कुंभारगृह
गंधिअसाला—दारु आदि गंध वाली चीज बेचने की दूकान
घंघसाला—अनाथमंडप, भिक्षुओं का आश्रय स्थान

• ० ० ०

चापलूस—चाडुयारो (वि)

धातु संग्रह

पइहा—परित्याग करना
पइसार—प्रवेश करना
पउंज—जोडना, युक्त करना
पओस—प्रद्वेष करना
पकत्थ—श्लाघा करना
पकप्प—काम में आना, उपयोग में आना
पइट्ठव—मूर्ति आदि की विधिपूर्वक स्थापना करना
पकुण—करने का प्रारंभ करना
पंस—मलिन करना
पकुप्प—क्रोध करना

विध्यर्थ—

विध्यर्थ का प्रयोग कर्तव्य का उपदेश, क्रिया की प्रेरणा और संभावना के अर्थ में होता है।

विध्यर्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	ज्जए, ए, एय, ज्ज, ज्जा	ज्ज, ज्जा
मध्यमपुरुष	ज्जसि, ज्जासि	ज्जाह
उत्तमपुरुष	ज्जामि	ज्जामो

हस धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हसिज्जए, हसे, हसेय	हसिज्ज, हसेज्ज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	हसिज्ज, हसेज्ज, हसिज्जा, हसेज्जा हसिज्जइ, हसेज्जइ	हसिज्जा, हसेज्जा
मध्यमपुरुष	हसिज्जासि, हसेज्जासि हसिज्जसि, हसेज्जसि	हसिज्जाह, हसेज्जाह
उत्तमपुरुष	हसिज्जामि, हसेज्जामि	हसिज्जामो, हसेज्जामो

हो धातु के रूप

प्रथमपुरुष	होज्जए, होए, होएय होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा
मध्यमपुरुष	होज्जसि, होज्जासि	होज्जाह
उत्तमपुरुष	होज्जामि	होज्जामो

(विकरण वाली हो धातु के रूप हस धातु की तरह चलते हैं)

प्रथमपुरुष	होइज्जए, होए, होएय होइज्ज, होएज्ज होइज्जा, होएज्जा	होइज्ज, होएज्ज होइज्जा, होएज्जा
मध्यमपुरुष	होइज्जासि, होएज्जासि होइज्जसि, होएज्जसि	होइज्जाह, होएज्जाह
उत्तमपुरुष	होइज्जामि, होएज्जामि	होइज्जामो, होएज्जामो

० ० ० ०

(१) यदि क्रियापद के साथ उअ और अवि अव्ययों का संबंध हो तो इस पाठ में बताए गए विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग हो सकता है। उअ कुज्जा (चाहता हूं वह करे) अवि भुंजिज्ज (खाए भी)।

(२) श्रद्धा अथवा संभावना अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग के साथ इन प्रत्ययों का प्रयोग हो सकता है। सद्दहामि लोएसो लेहं लेहिज्ज। श्रद्धा (विश्वास) करता हूं लोकेश लेख लिखे। संभावेमि तुमं न जुज्झिज्जसि (संभावना करता हूं तुम नहीं लडो)।

(३) जं के साथ कालवाचक कोई भी शब्द हो तो वहां विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग होता है। कालो जं भणिज्जामि (समय है मैं पढूं)। वेला जं गाएज्जासि (समय है तू गा)।

(४) जहां एक क्रिया दूसरी क्रिया का निमित्त बने वहां विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। जइ हं गुरुं उवासेय सत्थन्तं गच्छेय (यदि गुरु की उपासना करे तो शास्त्र का अंत पावे)।

आर्ष प्राकृत में उपलब्ध कुछ अन्य रूप—

कुज्जा (कुर्यात्) अभिभासे (अभिभाषेत)
निहे (निदध्यात्) सिया, सिआ (स्यात्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभितावे (अभितापयेत्) अच्छे (आच्छिन्द्यात्)
हणिया (हन्यात्) अब्भे (आभिन्द्यात्)
लहे (लभेत)

प्रयोग वाक्य

उवट्ठाणसालाइ कस्सि विसये उवट्ठाणं भविस्सइ ? करणसालाए चे नायो न मिलेज्ज तया कत्थ मिलिहिइ ? कूडागारसालाए कित्तिआ जणा संति ? अहं अट्टणसालं पइदिणं गच्छामि। गामस्स बाहिं गोणसाला विज्जइ। रमेसस्स भाया घोडगसालाए कज्जं करे। अत्थ गद्दभसाला नत्थि। उदगसालाइ नीरं को पिवावेज्ज ? अट्टणसालाअ सामी अज्ज अत्थ आगमिस्सइ ? गंधव्व-सालाए णट्टई वि णट्टिस्सइ। गंधिअसालाअ को गओ ?

धातु प्रयोग

अमुम्मि नयरे अज्ज पासणाहस्स पडिमं पइट्ठविस्सइ। परिवारं धणं य पइहाऊण पभा साहुणी भविस्सइ। पइणो बहूए य मणो अरुणाइ पउंजिओ। विज्जालये कल्लं विज्जट्ठिणो पइसारहिंति। बालो धूलीए किड्डइ वत्थाइं पंसइ य। अजइणा अवि आयरिअभिक्खुं पकत्थइ। आहम्मियभोयणं साहूणं न पकप्पइ। सो सिलोगाणं अब्भासं पकुणइ। तुमं मोरउल्ला कज्जं पकुणसि।

विध्यर्थक प्रत्यय प्रयोग

जिणेसो पाढं पढेज्जा। तुमं कम्मसत्तुणा सह जुज्झिज्जसि। दिणेसो पइदिवहं सज्झायं करेज्जइ। सो पासणाहस्स देवालयस्स पडिमं पइट्ठवेज्जा। रिसभो अवि लेहं लेहिज्ज। धम्मेसो कज्जं उअ कुज्जा। पत्तियामि पसंतो कहं लिहेज्ज। संभावेमि वयं वइसाहमासे जेणविस्सभारहिं गच्छेज्जामो। अणुव्वयवरिसो जं तुमं पयरेज्जासि। कालो जं हं गोयरिं गच्छिज्जामि। जइ वागरणं पढेय णाणं लहेय। जइ अणुसासणं चिट्ठे सच्छंदो भवेय।

प्राकृत में अनुवाद करो

सभा स्थान में आज किसका भाषण हुआ ? न्याय पाने के लिए अंतिम स्थान न्याय मंदिर है। मंदिर में मूर्ति की स्थापना कब होगी ? उस शहर में षड्यंत्र घर नहीं है। व्यायामशाला में पन्द्रह आदमी प्रतिदिन आते हैं। कविता गोशाला का शुद्ध दूध पीए। घुडसाल में सबसे अच्छा घोडा कौनसा है ? गर्दभशाला में एक भी गधा नहीं है। उदकगृह में कितने घडे ठंडे पानी के हैं ? रसाला को देखने के लिए तुम कब गए थे ? संगीतगृह में किसने संगीत गाया ? दारु की दुकान पर कौन-कौन बैठे थे ?

धातु का प्रयोग करो

मंदिर में मूर्ति की स्थापना विधिवत् कब होगी ? परित्याग करके

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वापस उसे ग्रहण मत करो। वस्त्रों को जोडना सरल है, मनों को जोडना दुष्कर (दुक्करं) है। वह अपने पुत्रों को आज अच्छी स्कूल में प्रवेश कराएगा। जो प्रद्वेष करता है उसका मानस कलुष होता है। कुशलता के अभाव में तुम अपने वस्त्रों को मलिन करते हो। जो अधिक श्लाघा करता है वह चापलूस (चाडुयार) होता है। यह वस्त्र मेरे काम में आता है। उसने शांतसुधारस पढना प्रारंभ कर दिया है। माता बच्चे पर बार-बार क्रोध करती है।

विध्यर्थक प्रत्ययों का प्रयोग करो

मैं चाहता हूं वह नमस्कार मंत्र (णमुक्कार मंतं) का जप करे। वह तप भी करे। मैं विश्वास करता हूं वह ध्यान से पढे। संभावना करता हूं तुम विद्वान् बनो। समय है मैं ध्यान करूं। समय है स्वाध्याय करूं। चतुर्मास है मैं सूत्र पढूं। यदि वह ध्यान से पढे तो पास हो जाए। यदि वर्षा हो तो अन्न अधिक हो जाए। यदि आपकी उपासना मिले तो व्याकरण का ज्ञान हो जाए। यदि वेतन मिल जाए तो घर में वस्त्र ले आऊं।

प्रश्न

१. एकवचन और बहुवचन के विध्यर्थक प्रत्यय प्राकृत में कौन-कौन से हैं ?

२. इस पाठ में विध्यर्थक प्रत्ययों के अतिरिक्त आर्ष प्राकृत के रूप कौन-कौन से हैं ?

३. विध्यर्थक प्रत्ययों का प्रयोग कहां-कहां किया जाता है ?

४. दो वाक्य ऐसे बनाओ जहां एक क्रिया दूसरी क्रिया का निमित्त बनती हो और वहां विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग होता हो ?

५. सभास्थान, न्यायमंदिर, षड्यंत्रवाला घर, व्यायामशाला, गोशाला, घुडसाला, गदहा रखने का स्थान, उदकगृह और रसाला के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६. पइट्ठव, पइहा, पउंज, पइसार, पओस, पंस, पकत्थ, पकप्प, पकुण और पकुप्प धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आज्ञार्थक प्रत्यय

शब्द संग्रह (शरीर के अंग उपांग १)

सिर—मत्थओ, सिरं
केस—केसो, बालो, कयो
मस्तकहीन शरीर, धड—कमंधो
कपाल—कवालं, भालो, कप्परो
खोपडी—पणिआ
झांपण—झंपणी, पम्हाइं
भौं—भुमया, भमुहा
आंख की पुतली—अक्खरा
आंख—णयणं, नेत्तं, चक्खु
नाक—णासिआ, णासा
कान—कण्णो, सोत्तं, सवणो
मूंछ—आसरोमो
दाढी—दाढिआ
दाढी मूंछ—समस्सू

कचरा—कयवरो
व्यायाम—वायामो
पानी से गीला—उदओल्लं

धातु संग्रह

पकुव्व—करना
पक्खिव—फेंक देना, त्यागना
पक्कम—चला जाना, प्रयत्न होना
पक्खोड (प्र+छादय्)—ढकना, आच्छादन करना
पक्किर—फेंकना
पक्खर—अश्व को कवच से सज्जित करना, सन्नद्ध करना
पक्खुब्भ—क्षोभ पाना, बढना, वृद्ध होना
पक्खल—पडना, गिरना
पक्खोभ—क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना
पक्खोड (प्र+स्फोटय्)—बार-बार झाडना

आज्ञार्थक—

इसका प्रयोग किसी को आशीर्वाद देने, विधि और सम्भावना अर्थ में होता है।

जानने योग्य—

- प्रत्यय लगाने से पूर्व अ विकरणवाली (हसान्त) धातु के अन्त्य अ को ए विकल्प से होता है। हसउ, हसेउ।
- प्रथम पुरुष के एकवचन उ अथवा तु प्रत्यय लगाने से पूर्व अ विकरण वाली धातु के अन्त्य अ का आ भी उपलब्ध होता है। सुणाउ, सुणउ, सुणेउ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

० उत्तम पुरुष के प्रत्यय लगाने से पूर्व अ विकरण वाली धातु के अन्त्य अ को आ तथा इ विकल्प से होता है। हसामु, हसिमु, हसमु।

नियम ५९८ (दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम् ३।१७३) विधि आदि अर्थ में तीनों पुरुषों के एकवचन के प्रत्ययों को क्रमशः दु, सु और मु आदेश होते हैं। हसउ (हसतु), हससु (हस), हसमु (हसानि)।

नियम ५९९ (बहुषु न्तु ह मो ३।१७६) विधि आदि अर्थ में तीनों पुरुषों के बहुवचन के प्रत्ययों को क्रमशः न्तु, ह और मो आदेश होता है। हसन्तु (हसन्तु), हसह (हसत), हसमो (हसाम)।

नियम ६०० (अत इज्जस्विज्जहीज्जे लुको वा ३।१७५) अ से परे 'सु' को इज्जसु, इज्जहि, इज्जे तथा लुक् ये चार आदेश विकल्प से होते हैं— हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस, हससु। अन्य स्वरान्त धातुओं (आकारान्त, इवर्णान्त, उवर्णान्त, एकारान्त और ओकारान्त को ये आदेश नहीं होते हैं।

नियम ६०१ (सो हिं वा ३।१७४) पूर्व सूत्र विहित (दु, सु, मु) में सु प्रत्यय को हि विकल्प से होता है। हससु, हसहि। देहि, देसु।

आज्ञार्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	उ, तु	न्तु
मध्यमपुरुष	सु, हि, इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, लुक्	ह
उत्तमपुरुष	मु	मो

हस धातु के आज्ञार्थक रूप

प्रथमपुरुष	हसउ, हसेउ, हसतु, हसेतु	हसन्तु, हसितु, हसेंतु
मध्यमपुरुष	हससु, हसेसु, हसेज्जसु हसेज्जहि, हसेज्जे, हस हसहि, हसाहि	हसह, हसेह
उत्तमपुरुष	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो

(सर्व पुरुष सर्व वचन में—हसेज्ज, हसेज्जा और होते हैं)

हो धातु के आज्ञार्थक रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	होउ, होअउ, होएउ होज्जउ, होज्जाउ, होतु, होएतु होज्जतु, होज्जातु	होन्तु, होइन्तु, होएन्तु होज्जन्तु, होज्जान्तु
मध्यमपुरुष	होसु, होअसु, होएसु	होअह, होएह, होह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	होअहि, होआहि, होएज्जाहि, होएज्जे	होज्जह, होज्जाह
	होअ, होहि, होज्जहि, होज्जाहि होज्जसु, होज्जासु	
उत्तम पुरुष	होमु, होअमु, होआमु होइमु, होएमु	होमो, होअमो, होआमो होइमो, होएमो, होज्जमो, होज्जामो

(तीनों पुरुष और दोनों वचनों में होज्ज, होज्जा और होते हैं)

प्रयोग वाक्य

अहं गुरुं मत्थएण वंदामि। आयवेण मज्झ सिरं तवइ। सो पणिआए किं पयइ? सिया केसा किं जराए लक्खणं भवइ? तस्स भालम्मि पंचरेहा (रेखा) संति। भुमया मज्झे एग्गचित्तझाणेण तइयनेत्तं उग्घाडियं भवइ। तुमं झंपणीओ खिप्पं कहं निमीलंति? णयणाइं अन्तरेण संसारं तमोमयं लग्गइ। अक्खराओ किण्हा चिअ सोहंति। कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेम्मं नाभिनिवेसए। णासिआओ सासोसासस्स मग्गा संति। एसो नरो समस्सुरहियो कहं अत्थि? आसंरोमो पुरिसस्स लक्खणं अत्थि।

धातु प्रयोग

सो पच्चूसे झाणं पकुव्वइ। जायपक्खा हंसा पक्कमंति दिसोदिसिं। सा कयवरं गिहस्स बाहिं पक्किरइ। किं तुमं जुज्झाय आसं पक्खरसि? सो घडं कट्ठेण पक्खोडइ। मुणी हिमेण उदओल्लं कायं न पक्खोडेज्जा। को मुक्खो (मूर्ख) खारं धूलिं य मग्गे गच्छंतस्स गच्छमाणस्स वा उवरिं पक्किरइ? एगवरिसो बालो चलंतो मुहु मुहु पक्खलइ। सुसीलो पमाएण पत्थरं पक्खिविऊण तलायसलिलं पक्खोभइ। मुणिस्स उवएसं सुणिऊण सो सुरं (सुरा को) पक्खिवइ।

प्रत्यय प्रयोग

सो गुरुं पण्हं पुच्छउ। तुमं पोत्थयं अत्थ आणेसु। तुमं तं गिहं णेसु। रमेसो तं चविडं मारउ। णिद्धणा पेम्मं कुणउ। सया सच्चं जंपउ। धम्मं आयरउ। गुरुं उवासउ। णाणं आराहउ। सव्वेहिं सह सव्ववहारं कुणउ। अंधयारे मा पढउ।

प्राकृत में अनुवाद करो

शिर शरीर का उत्तम अंग है। वह केशों में तेल डाले। कपाल (ज्योतिर्केंद्र) पर सफेद रंग का ध्यान करो। मनुष्य की खोपडी तंत्र में काम आती है। क्या बुढापे में भौं भी सफेद हो जाती है। वह कौन है जो झांपण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को स्थिर रखता है ? व्यायाम से आंख की ज्योति बढती है। देखने की शक्ति आंख की पुतली में है। अपने कान में स्वयं स्पंदन करना कठिन है। नासा के अग्रभाग पर ध्यान का अभ्यास करो। दाढी और मूंछ होना पुरुषत्व का लक्षण है। बहादूर सिंह मूंछ पर नींबू रख सकता है।

धातु का प्रयोग करो

जो पाप करता है वही उसका फल भोगता है। पक्षी सबेरे भोजन की खोज में पूर्व दिशा में चला गया। वह धूलि को बाहर फेंकता है। तुम घोडे को किसलिए सज्जित करते हो ? जो चढने का अभ्यास करता है वही गिरता है। सीता अपने घर से गंदे (मलिण) पानी को बाहर फेंकती है। तुम्हारे व्यवहार से मैं क्षुब्ध होता हूं। गर्म दूध के वर्तन को तत्काल ढको। वस्त्र को बार-बार मत झाडो। किसी की आस्था को हिला देना अच्छा कार्य नहीं है।

आज्ञार्थक प्रत्ययों का प्रयोग करो

तुम गांव के बाहर मत जाओ। हम लोग स्वाध्याय करें। चतुर्मास में सभी भाई बहन यथाशक्ति तप करे। तुम व्याख्यान दो, लोग आएंगे। तुम लाग घर जाओ, किसी की प्रतीक्षा मत करो। वे सब नदी में क्यों उतरे ? सबेरे जल्दी उठो और जल्दी सोओ। सब लोग अपना-अपना काम करो। तुम व्यर्थ ही उसकी चिंता मत करो। तुम पढने में ध्यान दो। किसी को शिक्षा मत दो। दिन में शरीर का श्रम भी करो। दूसरों की बात मत करो। प्रतिदिन नमस्कार महामन्त्र का जाप अवश्य करो। बुरे व्यक्तियों की संगत मत करो।

प्रश्न

१. आज्ञार्थक प्रथम और उत्तम पुरुष के एकवचन और बहुवचन के प्रत्ययों को क्या आदेश होता है ?
२. आज्ञार्थक मध्यमपुरुष के एकवचन को सु प्रत्यय को क्या-क्या आदेश होता है ?
३. हस धातु के आज्ञार्थक प्रत्ययों के रूप लिखो।
४. सिर, खोपडी, कपाल, केश, भौं, भांपण, आंख, आंख की पुतली, कान, नाक और दाढीमूंछ के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. पकुव्व, पक्कम, पक्किर, पक्खर, पक्खल, पक्खिव, पक्खुब्भ, पक्खोड, और पक्खोभ धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
६. हव्ववाहो, अभिणिवेसो, इस्सा, अणहो, विहडणं, फरुससाला, घंघसाला, उवट्ठाणसाला शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९ भूतकालिक प्रत्यय

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग २)

मुँह—वयणं, मुहं
दांत—दसणो, दंतो
ठोडी—चिबुअं
कंठमणि—अवडू, किआडिआ
कंधा—अंसो
जीभ—जीहा, रसणा
ओठ—अहरो, ओट्ठो
कंठ—कंठो
गाल—कवोलो, गल्लो
कांख—कक्खो, भुअमूलं

दतवन—दंतसोहणं
फुनसी—फुडिया
जूं—जूआ
गले का—गलिच्च (वि)
केंद्र—किंदियं
तिल—तिलो
स्वर—सरो

धातु संग्रह

पगड्ढ—खींचना
पगल—झरना, टपकना
पगिण्ह—ग्रहण करना
पच्चक्खीकर—साक्षात् करना
पगिज्झ—आसक्ति का प्रारंभ करना
पघंस—फिर-फिर घसना
पघोल—मिलना, संगत करना
पचाल—खूब चलाना
पच्चक्ख—त्याग करना
ईर—गमन करना

भूतकाल

प्राकृत में भूतकाल का कोई भेद नहीं है। अनद्यतन, भूतमात्र और परोक्ष इन तीनों भूतकालिक अर्थों में एक समान प्रत्यय होते हैं।

नियम ६०२ (सी ही हीअ भूतार्थस्य ३।१६२) स्वरान्त धातुओं से भूतार्थ में विहित प्रत्ययों को सी, ही और हीअ आदेश होते हैं।

भूतकालिक प्रत्यय

	एकवचन, बहुवचन		
प्रथम पुरुष	सी, ही, हीअ	होसी, होअसी	
मध्यम पुरुष	सी, ही, हीअ	होही, होअही	=(अभवत्, अभूत,
उत्तम पुरुष	सी, ही, हीअ	होहीअ, होअहीअ	बभूव

नियम ६०३ (व्यंजनादीअः ३।१६३) व्यंजनांत (अविकरण वाली) धातुओं से भूतार्थ में विहित प्रत्ययों को ईअ आदेश होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	एकवचन, बहुवचन	
प्रथम पुरुष	ईअ	हसीअ (अहसत्, अहासीत्, जहास)
मध्यम पुरुष	ईअ	
उत्तम पुरुष	ईअ	

नियम ६०४ (तेनास्तेरास्यहेसि ३।१६४) अस् धातु को भूतार्थ प्रत्ययों के साथ आसि और अहेसि आदेश होता है। सब पुरुष और सबवचनों में रूप बनेंगे—आसि, अहेसि।

आर्ष प्राकृत में भूतकाल के उपलब्ध रूप—

कर—अकरिस्सं (अकार्षम्) उत्तम पुरुष एकवचन

अकासी (अकार्षीत्) प्रथम पुरुष एकवचन

ब्रू—अब्बवी (अब्रवीत्) प्रथम पुरुष एक वचन

वच—अवोच (अवोचत्) प्रथम पुरुष एकवचन

ब्रू—आह (आह) प्रथम पुरुष एकवचन

ब्रू—आहु (आहुः) प्रथम पुरुष बहु वचन

दृश्—अदक्खू (अद्राक्षुः) प्रथम पुरुष एकवचन

आर्ष प्राकृत में उत्तम पुरुष अस् धातु के लिए आसिमो और आसिमु (आस्मः) रूप मिलते हैं। वद धातु का वदीअ रूप होना चाहिए पर वदासी और वयासी रूप मिलते हैं। सी प्रत्यय स्वरान्त धातुओं के लगता है परन्तु आर्ष प्राकृत में प्रायः प्रथम पुरुष के एकवचन के लिए त्था, इत्था और इत्थ प्रत्यय तथा बहुवचन के लिए इत्थ, इंसु और अंसु प्रत्यय भी मिलते हैं।

त्था—हो—होत्था।

इत्था—री—रीइत्था। भुंज—भुंजित्था। पहार—पहारित्था, पहारेत्था।

विहर—विहरित्था। सेव—सेवित्था।

इंसु—गच्छ—गच्छिसु। कर—करिंसु। नच्च—नच्चिसु।

अंसु—आह—आहंसु।

कर धातु भूतकाल में (नियम ७० से) का के रूप में बदल जाने से रूप बनते हैं—कासी, काही, काहीअ।

प्रयोग वाक्य

मुहेण मिउवयणं वदेज्जा। जीहा रसस्स गहणं करेइ। सो दंतसोहणेण दसणा सोहइ। ओट्ठम्मि फुडिआ जाआ। माया पुत्तस्स कवोलं चुंबइ। सुमेरो महुरकंठेण गीअं गाअइ। विसुद्धकिंदियस्स ठाणे अवडू अत्थि। पुरिसस्स चिबुअस्स दक्खिणभागे तिलस्स वरं फलं भवइ। आयरिअस्स कंधे जिणसासणस्स भारो अत्थि। अस्स कक्खे जूआओ कहं उप्पज्जंति?

धातु प्रयोग

केवली समुग्घाएण कम्माइं पगड्ढईअ। भवणस्स छईअ नीरं कहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पगलइ ? केत्तिआ जणा सम्मत्तदिक्खं पगिण्हीअ। को अप्पाणं पच्चक्खी करिस्सइ ? सो रूवं गिज्झइ। सोवण्णिओ (सुनार) सुवण्णं पघंसइ। सरम्मि सरो पघोलेज्ज। थलीदेसे जणा उट्टा पचालंति। अहं पच्चक्खामि कल्लं न ण्हास्सामि। साहुणो विहिपुव्वयं ईरंति।

भूतकाल के प्रत्यय प्रयोग

सो निसाए चंदं पासीअ। हिमवपव्वयं को आरोहीअ ? सो विज्जालयं कहं न गच्छीअ ? तुमं पोत्थयं कं दासी ? अहं सुमिणे गुरुं दिक्खीअ। सो णियमित्तेण सह विवादीअ। तुज्झ मुहदंसणं पावं त्ति को कहीअ ? साहू कं सवीअ ? मुणी जणहियाय उवदिसीअ (उपदेश दिया)। आइच्चो ण्हो अहियं तवीअ। वरिसा कया होअहीअ ? सो सिग्घं तत्थ कहं जाही ? तुमं असच्चं कहं जंपीअ ? सो मज्झ साउज्जं (सहयोग) कासी। तुं पासिऊण सो कहं हसीअ ? सो किणा सुत्तेण तकारं लोवीअ (लोप किया) ? समणोवासगा गुरुं विण्णवीअ साहूणं चउमासट्ठं। रयणी दहिं पम्मत्थीअ। धणंजयो वि अज्ज विहारे थक्कीअ।

प्राकृत में अनुवाद करो

तुम्हारा मुंह देखने के लिए मैं बहुत दूर से आया हूं। जीभ में हड्डी (अट्ठि) नहीं होती इसीलिए तुम अपने विचारों में स्थिर नहीं हो। बन्दर किसको दांत दिखलाता है ? ओठ, दांत और जीभ के लिए कपाट है। तुम्हारे गाल लाल कैसे हो गए ? कंठ की मधुरता सबको अपनी ओर खींचती है। कंठमणि को दबाने से आदमी तत्काल मर जाता है। तुम्हारे भाई की ठोडी लंबी है या वर्तुलाकार ? कंधे में भार को सहने की क्षमता होती है। काख के केशों को मत काटो।

धातु का प्रयोग करो

प्रत्येक पदार्थ एक दूसरे को खींचता है। पहाड से पानी झरता है। वह पुरस्कार (पुरक्कार) को ग्रहण करता है। मैं उससे साक्षात् करूंगा। उसकी धन के प्रति आसक्ति बढ रही है। मजदूर मकान की छत (छई) को बार-बार घिसता है। जिसका स्वर मिले वह गाना गाए। वह घोडे को दिनरात चलाता है। उसने तीस दिन तक भोजन का त्याग किया। तुम आज गांव से बाहर क्यों गए ?

भूतकालिक प्रत्ययों का प्रयोग करो

तुम्हारा भाग्य किसने लिखा ? परीक्षा में प्रथम कौन आया ? तुमने संकल्प कब किया था ? तुम्हारा मंत्र-जाप सफल हुआ। अध्यापक ने तुमको पढाना कब छोडा ? वह अमेरिका कब गया ? विदेश में जाकर किस साधु ने धन बटोरा ? राजेन्द्र ने इस शहर को छोड दिया। उसने विवाह कब किया ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृक्ष से मधुर फल आम गिरा। उसने तीस वर्ष तक संयम की साधना की। तुम्हारा मन साधुत्व से विचलित क्यों हुआ? गाय ने उसको सींग (सिगं) से मारा। आकाश से तारा कब टूटा? तुम्हारे भाई ने उसके घर से चोरी क्यों की? उसकी प्रगति को देखकर चेतना ने विमला पर झूठा आरोप लगाया।

प्रश्न

१. प्राकृत में भूतकाल के कितने भेद हैं? उनके प्रत्ययों में क्या अन्तर है?
२. प्राकृत में भूतकाल के प्रत्ययों को किस नियम से क्या आदेश होता है? एकवचन और बहुवचन के आदेश में क्या अंतर है?
३. आर्ष प्राकृत में भूतकाल के अर्थ में नियमों के अतिरिक्त कौन-कौन से रूप और प्रत्यय मिलते हैं?
४. इत्था, इंसु और अंसु प्रत्यय के रूप बताओ।
५. मुँह, जीभ, दांत, ओठ, ठोडी, गाल, कंठ, कंठमणि, कंधा और कांख के लिए प्राकृत शब्द बताओ?
६. पगड्ढ, पगल, पगिण्ह, पच्चक्खीकर, पगिज्झ, पघंस, पघोल, पचाल, पच्चक्ख और ईर धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्कालिक प्रत्यय (१)

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग ३)

भुजा—भुआ, बाहू
कोहनी—कुहुणी
हाथ—करो, पाणी, हत्थो
उंगली—अंगुली
हथेली—करयलं
अंगूठा—अंगुट्ठो
स्तन—थणो
नाखून—नहो
नाखून के नीचे का भाग—पडिसेणे
मुट्ठी—मुट्ठिआ, मुट्ठी
छाती=उरो, वच्छं
पेट—उयरं, कुच्छि (पुं, स्त्री)
मसूडा—दंतवेट्ठो (सं)

० ० ० ०

पतला—पत्तल (वि)

धातु संग्रह

पच्चणुभव—अनुभव करना
पच्चभिजाण—पहचानना
पच्चाचक्ख—परित्याग करना
पच्चप्पिण—वापस देना, सौंप हुए कार्य को करके निवेदन करना
पच्चापड—लौटकर आ पडना
पच्चाय—प्रतीति करना
पच्चाया—उत्पन्न होना
पच्चाहर—उपदेश देना
पच्चुण्णम—थोडा ऊंचा होना
पच्चाणी—वापस ले आना

भविष्यत्कालिक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हिइ, हिति, हिए, हिते	हिन्ति, हिन्ते हिइरे
	स्सइ, स्सति, (स्यति)	स्संति, (स्यन्ति)
	स्सए, स्सते (स्यते)	स्संते (स्यन्ते)
मध्यमपुरुष	हिसि, हिसे	हित्था, हिह
	स्ससि (ष्यसि)	स्सह, स्सथ (ष्यथ)
	स्ससे (ष्यसे)	
उत्तमपुरुष	हिमि, हामि	स्सामो (ष्यामः) स्सामु, स्साम
	स्सामि (ष्यामि)	हामो, हामु, हाम, हिमो, हिमु, हिम
	स्सं	हिस्सा, हित्था

(कोष्ठक में दिए गए प्रत्यय नहीं हैं। संस्कृत के रूप के साथ समानता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिखाई गई है।

नियम ६०५ (भविष्यति हिरादिः ३।१६६) भविष्यत् अर्थ में विहित प्रत्ययों के पूर्व 'हि' का प्रयोग होता है। होहिइ, होहिन्ति, होहिइरे, होहिसि, होहित्था।

नियम ६०६ (मेः स्सं ३।१६९) भविष्यत्काल में धातु से परे मि प्रत्यय के स्थान पर 'स्सं' का प्रयोग विकल्प से होता है। होस्सं (भविष्यामि)

नियम ६०७ (मि मो मु मे स्सा हा न वा ३।१६७) भविष्यत् अर्थ में मि, मो, मु, म परे रहने पर उनके पूर्व स्सा और हा विकल्प से प्रयोग होता है। होस्सामि, होहामि, होहिमि। होस्सामो, होहामो। होस्सामु, होहामु। होस्साम, होहाम। कहीं हा नहीं होता। हसिस्सामो, हसिहिमो।

नियम ६०८ (मो-मु-मानां हिस्सा हित्था ३।१६८) भविष्यत् अर्थ में धातु से परे मो, मु और म प्रत्ययों के स्थान पर हिस्सा और हित्था आदेश विकल्प से होता है। होहिस्सा, होहित्था। पक्ष में होहिमो, होहिमु होहिम।

(एच्चक्त्वातुम्तव्यभविष्यत्सु ३।१५७)

नियम ६५ से क्त्वा, तुम्, तव्य भविष्यत्काल में विहित प्रत्यय परे रहने पर अ को इ तथा ए होते हैं। हसेहिइ, हसिहिइ।

हस् धातु के रूप

	एक वचन	बहुवचन
प्रथमपुरुष	हसिस्सइ, हसेस्सइ	हसिस्संति, हसेस्संति
	हसिस्सति, हसेस्सति	हसिस्संते, हसेस्संते
	हसिस्सए, हसेस्सए	हसिहिंति हसेहिंति
	हसिस्सते, हसेस्सते	हसिहिंते हसेहिंते
	हसिहिइ, हसेहिइ	हसिहिइरे, हसेहिइरे
	हसिहिति, हसेहिति	
	हसिहिए, हसेहिए	
	हसिहिते, हसेहिते	
मध्यमपुरुष	हसिस्ससि, हसेस्ससि	हसिस्सह, हसेस्सह
	हसिस्ससे, हसेस्ससे	हसिस्सथ, हसेस्सथ
	हसिहिसि, हसेहिसि	हसिहित्था, हसेहित्था
	हसिहिसे, हसेहिसि	हसिहिह, हसेहिह
उत्तमपुरुष	हसिस्सामि, हसेस्सामि	हसिस्सामो, हसेस्सामो
	हसिहामि, हसेहामि	हसिस्सामु, हसेस्सामु
	हसिहिमि, हसेहिमि	हसिस्साम, हसेस्साम
	हसिस्स, हसेस्सं	हसिहामो, हसेहामो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वपुरुष सर्ववचन में
हसिज्ज, हसिज्जा
हसेज्ज, हसेज्जा

हसिहामु, हसेहामु
हसिहाम, हसेहाम
हसिहिमो, हसेहिमो
हसिहिमु, हसेहिमु
हसिहिम, हसेहिम

प्रयोग वाक्य

तस्स बाहुए सोरियं विज्जइ। सेणिगो अब्भासकाले कुहिणीइ बलेण चलइ। नरस्स करेसु लच्छी विज्जइ। तस्स लद्धिजोगेण अंगुली फासमत्तेण रोगीण रोगो नस्सइ। मज्झ कहुणं करयलआमलकं इव फुडं अत्थि। बालो भाआए थणाइं पिवइ। नहा पलम्बा कहं कया? आमनहकत्तणेण पडिसेगम्मि पीडा जाया। तेण अहंकारेण कहियं मज्झ मुट्ठीए सव्वा सत्ती अत्थि। तस्स वच्छं वइरं विव दढं अत्थि। तुज्झ उअरस्स किरिआ सुद्धा नत्थि।

धातु प्रयोग

राया अप्पाणं पच्चणुभवइ। पोत्थयं पढिऊणं सो पच्चप्पिणइ। सत्त-दिवसे सुत्तं लिहिऊण सीसो गुरुं पच्चप्पिणइ। अहं तुमं पचचभिजाणामि। सो एगमुहुत्तपेरंतं सावज्जं जोगं पच्चाचक्खइ। तवस्सिणा भत्तस्स भोयणं न गिण्हिअं। सो पच्चाणीअइ (पच्चाणेइ)। बालेण रुक्खम्मि पत्थरं खित्तं सो पच्चापडइ। वयं पच्चाएमो तं कज्जं पूरयिस्सामो। सूरियो पुव्वि पच्चायाइ। आयरिआ अत्थ पच्चाहरइ परं तस्स सरो गामत्तो बाहिं गच्छइ। पिअरं पणमिऊण पुत्तो जया पच्चुण्णमइ तया देवदंसणं जाअं।

भविष्यत् प्रयोग

तुमं किं कज्जं करिहिसे? तस्स पुत्तो कत्थ गमिस्सइ? सीसो गुरूणं समीवे उत्तरज्झयणं सुत्तं पढिहिइ। वसंते अमुम्मि रुक्खम्मि नव्वाइं पत्ताइं निक्कसिस्संति। वरिसा कया होहिइ? तुज्झ परिक्खाए परिणामो कया बाहिं आगमिहिइ? अहं सद्दा संचिणिस्सामि। साहुणो सव्वा भदिस्संति। पक्खिणो आगासे निसाए न उड्डीस्संति। अम्हे का वि न अवमन्निस्साम। सुसीला घयं ताविस्सइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

उसकी भुजा पतली है। वह एक हाथ की कोहनी को दूसरे हाथ की हथेली पर रखकर क्यों बैठा है? मैं अपने हाथ से अपना भाग्य लिखूंगा। वह अंगुली से मधुर वीणा बजाएगा। हथेली की रेखाएं क्या बोलती हैं? स्तन में दूध कम है। नाखून का निचला भाग फट जाता है। तुम मुट्ठी से युद्ध करते हो। उसकी छाती चौडी है। पेट में चूहे कूदते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु का प्रयोग करो

मैं आत्मा को शरीर से भिन्न अनुभव करता हूं। विद्यार्थी स्कूल में दिया हुआ घर का कार्य करके अध्यापक को निवेदन करता है। मैंने तुमको पहचान लिया हम दोनों पूर्वभव में भाई-भाई थे। उसने अपनी स्त्री का परित्याग कर दिया। वह अपने पुत्र को स्कूल से वापस ले आया। जो आकाश में पत्थर फेंकता है वह उसी पर पडता है। उसने अपने कार्य से प्रतीति कराई। क्या नक्षत्र पूर्व दिशा में पैदा होते (उगते) हैं? वह मनोयोग से उपदेश देता है। पौधा थोडा ऊंचा हुआ है।

भविष्यत् प्रत्यय का प्रयोग करो

वह आज वृक्षों को नहीं सींचेगा। मैं तुम्हारे घर आज के बाद कभी नहीं आऊंगा। तुम्हारा भविष्य कौन बताएगा? देश में किसकी सरकार बनेगी? आज तुम क्या खाओगे? तुम्हारी सेवा कौन करेगा? शुक्र का तारा आकाश में कब उदित होगा? रमेश कल स्कूल नहीं जाएगा। साधुओं की उपासना कल कौन करेगा? हमारी कक्षा का गणित का प्रश्नपत्र कौन बनाएगा? तुम्हारे साथ परीक्षा देने कौन जाएगा? सूर्य कब अस्त होगा? पत्रिका में लेख कौन लिखेगा? मैं तुम्हारे साथ खाना नहीं खाऊंगा।

प्रश्न

१. भविष्य के अर्थ में होने वाले प्रत्ययों से पहले किस का प्रयोग होता है और किस नियम से?
२. भविष्य काल के विहित प्रत्यय से परे अ को किस नियम से क्या आदेश होता है?
३. भविष्य अर्थ में मि प्रत्यय के स्थान पर किसका प्रयोग होता है और किस नियम से?
४. मध्यम पुरुष के एकवचन में कौन-कौन से प्रत्यथ होते हैं?
६. भुजा, कोहनी, हाथ, उंगली, हथेली, स्तन, नाखून, मुट्ठी, छाती, पेट और नाखून के नीचे का भाग, इनके लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. पच्चणुभव, पच्चप्पिण, पच्चभिजाण, पच्चाचक्ख, पच्चाणी, पच्चापड, पच्चाया, पच्चाहर, पच्चाय और पच्चुण्णम धातुओं के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१ भविष्यत्कालिक प्रत्यय (२)

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग ४)

पीठ—पिट्ठं	कमर—कडी
पसली—पासो	जांघ—जंघा, टंका
कलेजा—हियय	घुटना—जाणु (न), जण्हुआ
नाभि—णाही	टांग—टंगो
नितंब—नियंबो, ढेल्लिका	पैर—चरणो, पाओ
लिंग—सिण्हो, सिण्हं	ऐडी—पण्हिया

धातु संग्रह

पच्चुत्तर—नीचे आना	पच्चोरुह—पीछे उतरना
पच्चुवगच्छ—सामने जाना	पच्चोसक्क—पीछे हटना
पच्चुवेक्ख—निरीक्षण करना	पच्छ—प्रार्थना करना
पच्चोगिल—स्वाद लेना	पच्छाअ—ढकना
पच्चोणिवय—उछलकर नीचे गिरना	पजंप—बोलना

भविष्यत्काल

(**आ कृगो भूत-भविष्यतोश्च ४।२१४**) **नियम ७० से** कृ धातु के अंतिम वर्ण को आ आदेश होता है, भूतकाल, भविष्यत्काल, क्त्वा, तुम्, और तव्य प्रत्यय परे हो तो। काहिइ (करिष्यति, कर्ता वा)

नियम ६०६ (कृ दो हं ३।१७०) करोति और ददाति धातु से परे भविष्यत्काल के मि प्रत्यय के स्थान पर 'हं' आदेश विकल्प से होता है। काहं, काहिमि (करिष्यामि) दाहं, दाहिमि (दास्यामि)

नियम ६१० (श्रु गमि रुदि विदि दृशि मुचि वचि छिदि भिदि भुजां सोच्छं गच्छं रोच्छं वेच्छं दच्छं मोच्छं वोच्छं छेच्छं भेच्छं भोच्छं ३।१७१) श्रु आदि १० धातुओं के भविष्यत् अर्थ में होने वाला मि प्रत्यय के स्थान पर सोच्छं आदि रूप निपात हैं।

सोच्छं (श्रोष्यामि)	गच्छं (गमिष्यामि)
रोच्छं (रोदिष्यामि)	वेच्छं (वेदिस्यामि)
दच्छं (द्रक्ष्यामि)	मोच्छं (मोक्ष्यामि)
वोच्छं (वक्ष्यामि)	छेच्छं (छेत्स्यामि)
भेच्छं (भेत्स्यामि)	भोच्छं (भोक्ष्ये)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ६११ (सोच्छादय इजादिषु हि लुक् च वा ३।१७२) भविष्य अर्थ में होने वाले इच् आदि (इ,ए,न्ति,न्ते,इरे,सि,से,इत्था,ह,ए) प्रत्यय परे होने पर पूर्व नियम ६१० से होने वाले सोच्छं आदि रूप में अंतिम स्वर और अगला अवयव (अं) का वर्जन होता है और पूर्व नियम से होने वाला हि का लुक् विकल्प से होता है।

सोच्छ+हिमि=सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि आदि।

—एकवचन

प्रथमपुरुष— सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ
सोच्छिए, सोच्छेए, सोच्छिहिए, सोच्छेहिए।

मध्यमपुरुष— सोच्छिसि, सोच्छेसि सोच्छिहिसि, सोच्छेहिसि
सोच्छिसे, सोच्छेसे, सोच्छिहिसे, सोच्छेहिसे

उत्तमपुरुष— सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिस्सं, सोच्छेस्सं, सोच्छेमि सोच्छेस्सामि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छेस्सामि, सोच्छिहामि, सोच्छेहामि।

आर्ष प्राकृत में प्राप्त कुछ अन्य रूप

मोक्खामो (मोक्ष्यामः) भविस्सइ (भविष्यति)
करिस्सइ (करिष्यति) चरिस्सइ (चरिष्यति)
भविस्सामि (भविष्यामि) होक्खामि (भविष्यामि)

प्रयोग वाक्य

पिउणो पिट्ठम्मि पुत्तो आरुहइ। सीहस्स कडी पत्तली भवइ। तस्स टंका थूला अत्थि। जराए पाओ जाणुम्मि पीला भवइ। चाइणो पाएसु सव्वे नमंति। णाही सरीरस्स मज्झभागे अत्थि। सत्थकिंदियस्स (स्वास्थ्य केंद्र) ठाणं नियंबो विज्जइ। पासम्मि केवलाइं अत्थीइं संति। सिण्हं मुत्तस्स दारं अत्थि। हियय विणा मणुअस्स किं महत्तणं? पण्हियाए कंटगो लग्गिओ।

धातु प्रयोग

राया पासायत्तो पच्चुत्तरइ। सीसा आयरिअस्स पच्चुवगच्छंति। विज्जालयस्स निरिक्खिओ सत्तदिवसे सइं विज्जालयं पच्चुवेक्खइ। अण्णाणी वत्थूइं पच्चोगिलिऊण खाअइ। सयणत्तो पच्चोणियवंतं बालं पासिऊण सव्वे रक्खिउं पयत्तंति। सो आसत्तो पच्चोरुहइ। अहं कहिऊण न कया वि पच्चोसक्कामि। अहं पच्छामि भयंतं। सो णिग्गंट्ठाणं पच्छाअइ। अज्ज पेरंत सो बालो कहं न पजंपइ?

भविष्यत्कालिक प्रत्यय प्रयोग

रुक्खो कंसि मासे फलिस्सइ? सो गीइयं गाइहिइ। मज्झण्हे सूरिओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तविस्सइ अहुणा समयो सीओ अओ सिग्घं चल । तुज्झ साउज्जं को करिस्सइ ? अमुम्मि वरिसम्मि तुमं किं अण्णं ववस्ससि ? अहं सोमवारे लुंचिहिमि । सो तुं णियघरं दरिसिस्सइ । अहं तुमए सह न आलविस्सामि । सुरेसो सुवे दिक्खिहिइ । सा धेणुं न दुहिस्सइ । अम्हे कम्मसत्तुं जिणिस्साम ।

प्राकृत में अनुवाद करो

उसकी पसली साफ दिखाई देती है । मेरा कलेजा चुराकर कौन ले गया ? मूत्र न आने से उसके लिंग में पीडा है । उसने तुझे एडी से मारा । इस शहर में एक विद्यापीठ है । नीचे का वस्त्र कमर के आधार पर टिकता है । जंघा मोटी नहीं होनी चाहिए क्योंकि उससे चलने में कठिनाई होती है । भगवान के चरणों में देवता भी नमस्कार करते हैं । घुटने का व्यायाम करना चाहिए । उसकी नाभि का आकार सुंदर नहीं है । नितंब को बढाना नहीं चाहिए ।

धातु का प्रयोग करो

वह पर्वत से नीचे आता है । गांव के लोग अतिथि नेता के सामने जाते हैं । प्रतिदिन अपनी गलतियों का निरीक्षण करना चाहिए । वह भोजन को स्वाद लेकर खाता है । पहाड से उतरती हुई गाडी से वह उछल नीचे गिर गया । नीचे उतरना कोई नहीं चाहता । वीर योद्धा युद्ध से पीछे नहीं हटता है । तुम्हें मेरे लिए प्रार्थना करनी चाहिए । खुले स्थान को मत ढको । वह पूछने पर भी बहुत कम बोलता है ।

भविष्यत्कालिक प्रत्ययों का प्रयोग करो

मेरे स्थान पर कौन आएगा ? हमारे साथ तीर्थयात्रा में कौन जाएगा । भारत का प्रधान मंत्री कौन बनेगा ? उसका विवाह कब होगा ? उसकी बीमारी की चिकित्सा कौन करेगा । वह विदेश कब जाएग ? प्रेक्षाध्यान की कक्षा कौन लेगा ? क्या उसके पुत्र होगा ? तुम्हारे भाग्य का उदय कब होगा ? वह गरीब क्या कभी धनवान बनेगा ? तुम सभा को कब उद्बोधन करोगे ? क्या वह आज कथा कहेगा ?

प्रश्न

१. धातु के अन्त्य को आ आदेश कहां होता है ?
२. काहं और दाहं रूप किस नियम से और किस प्रत्यय के स्थान पर बना है ?
३. भविष्यत् अर्थ में होने वाले मि प्रत्यय के स्थान पर किन धातुओं को क्या आदेश होता है ?
४. पीठ, कमर, जांघ, घुटना, पैर, नाभि, नितंब, लिंग, टांग, पसली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलेजा, एडी शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. पच्चुत्तर, पच्चुवगच्छ, पच्चुवेक्ख, पच्चोगिल, पच्चोणिवय, पच्चोरुह, पच्चोसक्क, पच्छ, पच्छाअ और पजंप धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

६. आसरोमो, पम्हाइं, भुमया, अवडू, कवोलो, अंसो, वच्छं, करयलं, कुहुणी शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (शरीर के अंग-उपांग ५)

मांस—मंसं	चर्बी—मेदो, मेदं, वसा
मज्जा—मज्जा	खून—रत्तं, अहिरं
पीव—किलेओ, पूयं	नस—सिरा
तिल्ली, प्लीहा—पिलिहा	झिल्ली—झिल्लिआ
फेफडा—फुप्फुसं (दे.)	आंत—अंतं
मसा—मसो	हड्डी—अत्थि (न)
वीर्य (शुक्र)—वीरिओ	तिल—तिलो।

० ० ० ०

उपासना—उवासणं	अभाव—अहावो, अभावो
तो—ता	गड्ढा—खड्डं
पाचन—पायणं	

धातु संग्रह

पजल— विशेष जलना	पज्जुवट्ठा—उपस्थित होना
पजह—त्याग करना	पज्जुवास—सेवा करना, भक्ति करना
पज्ज—पिलाना, पान करना	पज्जोय—प्रकाशित करना
पज्जाल—जलाना, सुलगाना	पज्जोसव—वास करना, रहना
आयण्ण—सुनना	पज्झंझ—शब्द करना

क्रियातिपत्ति

क्रिया की अतिपत्ति (असंभवता)। जहां एक काम के न होने में भविष्य में होने वाले दूसरे कार्य का अभाव दिखाना हो वहां क्रियातिपत्ति का प्रयोग किया जाता है।

क्रियातिपत्ति का अर्थ है—एक क्रिया के हुए बिना दूसरी क्रिया का न होना। जैसे—यदि अच्छी वर्षा होती तो सुकाल होता। यदि तुम पढते तो उत्तीर्ण हो जाते। यदि तुम मुनि दुलहराज के पास रहते तो पढ जाते।

नियम ६१३ (क्रियातिपत्तेः ३।१७९) क्रियातिपत्ति में प्रत्ययों को ज्ज और ज्जा आदेश होता है।

नियम ६१२ (न्त-माणौ ३।१८०) क्रियातिपत्ति में प्रत्ययों को न्त और माण आदेश होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस धातु के रूप सभी पुरुष सभी वचनों में—हसेज्ज, हसेज्जा, हसंतो, हसमाणो।

हो धातु के रूप सभी पुरुष सभी वचनों में—होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा। होंतो, होमाणो, होअंतो, होअमाणो।

प्रयोग वाक्य

तस्स अत्थि सुदढं अत्थि। राइभोयणं मंसेण समं विज्जइ। अस्स मेदेण थूल्लत्तं अओ बलाभावो दिस्सइ। तस्स रत्तं कण्हं कहं जाअं? किलेएण सह को मोहो? धम्मस्स रंगेण मज्झ मज्जा रंगिआ अत्थि। सिराए रत्तस्स पवाहो चलइ। भोयणं पुरा कंसि अंतम्मि गच्छइ? तुज्झ फुप्फुसं सुद्धं नत्थि अओ सासग्गहणे पीडा भवइ। रत्ततिलो सुहो भवइ। वीरियस्स पडणं मच्चुसमं भवइ। बालस्स उप्पत्तिकाले तस्स सरीरस्स उवरि झिल्लिआ भवइ। सुद्धं पिलिहं अंतरेण पायणकिरिया सम्मं न भवइ।

धातु प्रयोग

इंधणस्स अहावेण (अभाव) अग्गी केच्चिरं पजलिस्सइ? अग्गी धूमं पजहइ। धाई सिसुं दुद्धं पज्जेइ। तुज्झ सव्वं वत्तं अहं आयण्णामि। मुणी अग्गिं न पज्जालेज्जा। अहं गुरुणो उवासणम्मि पज्जुवट्ठामि। सावगा साहुणो पज्जुवासंति। चंदो निसाए पज्जोयइ। अमुम्मि णयरे केत्तिआ जणा पज्जोसवंति। तुब्भे परुप्परं न पज्झंझेज्जा।

क्रियातिपत्ति प्रत्यय प्रयोग

जइ तुमं मज्झ मणस्स अवत्थं मुणेज्जा ता कयावि मज्झ उवहासं ण कुणेज्जा। जइ हं एगं छणं पुव्वं आगच्छेज्जा ता वप्फजाणस्स (रेलगाडी) उवरिं आसीणो होज्जा। जइ तुमं रहस्सं जाणेज्जा ता सच्चमग्गस्स कयावि विचलियं ण होज्जा। जइ रायमग्गम्मि पयासो होज्जा ता अम्हे खड्डुं न पडेज्जा। जइ इणं पोत्थयं हं तस्स देज्जा ता सो पसण्णो होज्जा। जइ तुज्झ पिआ अत्थ णिवसेज्जा ता तुज्झं सो बहुधणं देज्जा। तुमं एगग्गचित्तेण पढेज्जा अण्णहा अणुत्तीण्णो होज्जा।

प्राकृत में अनुवाद करो

मनुष्य का शरीर जल जाता है, हड्डियां शेष रहती हैं। शाकाहारी मांस नहीं खाते हैं। शरीर में चर्बी बढाना किसको अच्छा लगता है? खून की अल्पता से स्मरण शक्ति कमजोर पडती है। पीव की तत्काल शुद्धि करो, उससे होने वाले दर्द से मत डरो। शरीर की सात धातुओं में मज्जा का कौन-सा स्थान है? आंतों में मल भी रहता है। दीर्घ श्वास से फेफडे की शुद्धि होती है। पुरुष के दाहिने भाग में तिल का होना क्या शुभ होता है? उसके नस-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नस में वीरत्व भरा है। वीर्य की सुरक्षा परम आवश्यक है। झिल्ली से शरीर की सुरक्षा होती है। उनकी तिल्ली ठीक प्रकार से काम नहीं करती है।

धातु का प्रयोग करो

हमारी बातों को कौन ध्यान से सुनता है ? धूआं बहुत उठता है, देखो आग कहां जलती है ? जो त्याग करता है वह पाता है। घर में जो भी आता है उसे वह ठंडा पानी पिलाता है। शीतकाल में लोग स्थान-स्थान पर अग्नि जलाते हैं। स्कूल में आज सब लडके उपस्थित हैं ? बडे जनों की सेवा करनी चाहिए। नक्षत्र रात में ही प्रकाशित होते हैं। इस शहर में अब हमें नहीं रहना चाहिए। वे परस्पर क्यों शब्द करते हैं ?

क्रियातिपत्ति प्रत्ययों का प्रयोग करो

मेरे पास पर्याप्त धन होता तो मैं विदेश अवश्य जाता। यदि वैद्य समय पर न पहुंचता तो रोगी मर जाता। यदि पास में जलाशय न होता तो सारा गांव जल जाता। यदि उसे भूखा रहना पडता तो वह स्वस्थ हो जाता। यदि वह भगवान के पास जाता तो उसके दुःख दूर हो जाते। यदि वह मेरे पास पढता तो पास हो जाता। यदि यहां आचार्यश्री का चतुर्मास होता तो धर्म की जागरणा होती। यदि वह प्रेक्षाध्यान करता तो रोग से मुक्त हो जाता।

प्रश्न

१. क्रियातिपत्ति किसे कहते हैं ?
२. क्रियातिपत्ति में किस नियम से क्या-क्या आदेश होता है ?
३. हो धातु के प्रथमपुरुष, मध्यमपुरुष और उत्तमपुरुष के एकवचन तथा बहुवचन के रूप बताओ।
४. मांस, मज्जा, पीव, चर्बी, खून, नस, आंत, फेफडा, तिल, मसा, हड्डी, वीर्य, तिल्ली, झिल्ली शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. पजल, पजह, पज्ज, पज्जाल, पज्जुवट्ठ, पज्जुवास, पज्जोय, पज्जोसव, आयण्ण, पज्झंझ धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (वृत्तिजीवी वर्ग १)

धोबी—रजओ
नाई—णाविओ, ण्हाविओ
तेली—घंचियो, तेल्लिओ
कुंभार—कुलालो, कुंभआरो
माली मालिओ, आरंभिओ
दर्जी—सूइयारो
भडभूजा—भट्ठयारो
सुनार—सोवण्णिओ, सुवण्णयारो
लुहार—लोहारो, लोहयारो
जुलाहा—कोलिओ, पडयारो
कंदोई—कंदवियो
मोची—मोचिओ, चम्मयारो
तंबोली—तंबोलिओ
ठठेरा—तंबकुट्टओ

०　०　०

जूता—उवाणहा
हजामत—उवासणा
कर्तव्य—कायव्वं
चमडे की धौंकनी—भत्थी

धातु संग्रह

पडह—जलाना, दग्ध करना
पडिअग्ग—संभालना
पडिअर—बीमार की सेवा करना
पडिअर—बदला चुकाना
पडिआइय—फिर से पान करना
पडिआइय—फिर से ग्रहण करना
पडिइ—पीछे लौटना, वापस आना
पडिउज्जम—संपूर्ण प्रयत्न करना
पडिउच्चार—उच्चारण करना
पडिउस्सस—पुनर्जीवित होना

लिंगबोध

लिंग तीन प्रकार के होते हैं—पुरुषलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग। जिस प्रकार विभक्ति और वचन के बिना नाम या संज्ञा का प्रयोग नहीं होता उसी प्रकार लिंग के बिना भी उसका प्रयोग नहीं होता। इसलिए लिंग का ज्ञान भी आवश्यक है। प्राकृत में लिंग व्यवस्था संस्कृत से कुछ भिन्न है। वह इस प्रकार है—

नियम ६१४ (प्रावृट्-शरत्-तरणयः पुंसि १।१३) प्रावृट्, शरत् और तरणि—ये तीनों शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंगी हैं परन्तु प्राकृत में ये पुंलिंगी होते हैं। प्रावृष्—पाउसो। शरद्—सरओ। तरणिः—तरणी।

नियम ६१५ (स्नमदाम-शिरो-नभः १।३२) दामन्, शिरस् और नभस् शब्दों को छोडकर शेष सकारान्त और नकारान्त शब्द संस्कृत में नपुंसकलिंगी हैं परन्तु प्राकृत में पुंलिंगी हैं।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

संस्कृत (न)	प्राकृत (पुं)	संस्कृत (न)	प्राकृत (पुं)
यशस्	जसो	तेजस्	तेओ
पयस्	पओ	उरस्	उरो
तमस्	तमो	जन्मन्	जम्मो
नर्मन्	नम्मो	वर्मन्	वम्मो
मर्मन्	मम्मो	धामन्	धामो

नीचे लिखे तीन शब्द प्राकृत में भी नपुंसकलिंगी हैं—
दामन्—दामं । सिरस्—सिरं । नभस्—नहं ।
बहुलाधिकार से नीचे लिखे शब्द नपुंसक लिंग में हैं—
श्रेयस्—सेयं । वयस्—वयं । सुमणस्—सुमणं
शर्मन्—सम्मं । चर्मन्—चम्मं

नियम ६१६ (वाक्ष्यर्थ-वचनाद्याः १।३३) अक्षि के पर्यायवाची और वचन आदि शब्द विकल्प से पुंलिग होते हैं ।

संस्कृत	प्राकृत (पुं)	प्राकृत (न)	संस्कृत	प्राकृत (पुं)	प्राकृत (न)
अक्षि	अक्खो	अक्खि	नयनं	नयणो	नयणं
	अच्छी	अच्छि	लोचनं	लोयणो	लोयणं
चक्षु	चक्खू	चक्खुं	वचन	वयणो	वयणं
कुलम्	कुलो	कुलं	छन्द	छंदो	छंदं
माहात्म्यं	माहप्पो	माहप्पं	दुःखं	दुक्खो	दुक्खं
भाजनं	भायणो	भायणं	विद्युत्	विज्जुणा	विज्जूए (स्त्री)

नियम ६१७ (गुणाद्याः क्लीबे वा १।३४) गुण आदि शब्द विकल्प से नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होते हैं ।

संस्कृत	प्राकृत (न)	प्राकृत (पुं)	संस्कृत	प्राकृत (न)	प्राकृत (पुं)
गुणः	गुणं	गुणो	देवः	देवं	देवो
बिन्दुः	बिंदुं	बिंदू	मण्डलाग्रः	मंडलग्गं	मंडलग्गो
कररुहः	कररुहं	कररुहो	वृक्षः	रुक्खं	रुक्खो

नियम ६१८ (वेमाञ्जल्याद्याः स्त्रियाम् १।३५) भाववाची इमन् प्रत्ययान्त शब्द और अञ्जलि आदि शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिंग में विकल्प से होता है ।

संस्कृत	प्राकृत (स्त्री)	प्राकृत (पुं या नपुं)
गरिमन्	एसा गरिमा	एस गरिमा (पुं)
महिमन्	एसा महिमा	एस महिमा (पुं)
धूर्त्तत्व	एसा धुत्तिमा	एस धुत्तिमा (पुं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द—

अञ्जलिः (पुं)	अंजली	अंजलि (पुं)
पृष्ठम्	पिट्ठी	पिट्ठं (न)
अक्षि (न)	अच्छी	अच्छि (न)
प्रश्नः	पण्हा	पण्हो (पुं)
चौर्यं	चोरिआ	चोरिअं (न)
कुक्षिः	कुच्छी	कुच्छी (पुं)
बलिः	बली	बली (पुं)
निधिः	निही	निही (पुं)
रश्मिः	रस्सी	रस्सी (पुं)
विधिः	विही	विही (पुं)
ग्रन्थिः	गंठी	गंठी (पुं)

प्रयोग वाक्य

रजओ वत्थाइं सच्छाइं धावइ। णाविओ तस्स उवासणं मंगलवारे न करिस्सइ। तेल्लिओ तेल्लं विक्किणइ। कुंभआरो घडाइं घडइ। सूइआरो सूइणा वत्थाइं सिव्वइ। मालिओ पुप्फेहिं मालं गुभइ। सोवण्णिओ कुंडलं णिम्माइ। लोहआरो भत्थीए लोहस्स संडासं करेइ। कोलिओ तंतुहिं वत्थाइं णिम्माइ। किं तंबोलिओ तंबोलाणि सयं खाअइ? कंदवियो घेउरं करेइ। मोचिओ कस्स उवाणहं न करेइ? अस्स गामस्स भट्ठयारस्स किं अभिहाणं अत्थि? तंबकुट्टओ तंबस्स अणेगाणि वत्थूणि णिम्माइ।

धातु प्रयोग

दावाणलो वणं पडहइ। मणिमोत्तियाइयं सारदव्वं पडिअग्ग। साहुणीओ बिदासरणयरे लुक्कसाहुणीए पडिअरंति। जो चत्तभोगा इच्छइ सो वंतं पडिआइयइ। जो दिण्णधण्णं पडिआइयइ सो कायव्वत्तो भट्ठो। मुणिणो मणो सिया संजमत्तो बाहिं गच्छेज्ज तया पडिक्कमणे पडिइइ। संजमे पडिउज्जमेज्जा। सेहो सम्मं न पडिउच्चारइ। मुच्छिओ लक्खमणो (लक्ष्मण) ओसहिणा पडिउस्ससिओ।

प्राकृत में अनुवाद करो

धोबी के पास कपडे मत धुलाओ। मनुष्यों में नाई चालाक होता है। तेली के घर से सरसों का तेल लाओ। चंदन कुम्हार गधे को घोडा क्यों कहता है? माली के पास किन फूलों की माला है? दर्जी कपडे सीने के लिए हमारे घर कब आएगा? भडभुजा चनों को रेत में भुनता है (सेकता है)। सुनार सोने की चोरी करता है। लुहार कितने दिनों से यहां आया हुआ है? जुलाहा मोटा वस्त्र बुनता है। कंदोई लड्डू और पेडा बनाता है। मोची के पास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कितने प्रकार के जूते हैं ? तंबोली के पान मीठे नहीं है। ठठेरा तांबे से घडा बनाता है।

धातु का प्रयोग करो

अग्नि ने गांव का एक भाग जला दिया। धनी लोग रत्नों को संभालकर रखते हैं। जो साधु बीमार साधु की सेवा करता है वह निर्जरा का लाभ कमाता है। किए हुए उपकार का बदला चुकाना चाहिए। वमन किए हुए पदार्थ को फिर से खाने वाला कौन है ? दिए हुए दान को कोई भी वापस ग्रहण करना नहीं चाहता। युद्ध में सेना कभी-कभी पीछे भी लौटती है। याद करने के लिए बाल साधु को पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। प्रतिक्रमण करते समय शुद्ध उच्चारण करना चाहिए। उसने इस बीमारी के बाद पुनः जीवन धारण किया है।

प्रश्न

१. लिंग कितने प्रकार के होते हैं ? लिंग का ज्ञान आवश्यक क्यों है ?
२. तीन ऐसे शब्द बताओ जो संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं और प्राकृत में पुंलिगी है ?
३. अक्षिवाची और वचन आदि शब्दों का प्राकृत में कौन-सा लिंग होता है ?
४. कौन-से शब्द संस्कृत में नपुंसकलिंगी हैं और प्राकृत में पुंलिगी हैं ?
५. भाववाची इमन् प्रत्ययान्त शब्दों का प्रयोग किस लिंग में होता है ?
६. धोबी, नाई, तेली, कुंभार, माली, दर्जी, सुनार, लुहार, भडभूजा, जुलाहा, कंदोई, मोची, तंबोली, ठठेरा—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. पडिह, पडिअग्ग, पडिअर, पडिअर, पडिआइय, पडिआइय, पडिइ, पडिउज्जम, पडिउच्चार, पडिउस्सस धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (वृत्ति जीवी वर्ग २)

चिकित्सक—चिइच्छओ
वैद्य—वेज्जो
चित्रकार—चित्तयारो (सं)
कारीगर—सिप्पी, कारु
मिस्त्री—जंतिओ
ज्योतिषी—खणदो (सं) जोइसिओ
कंबल बेचने वाला—कांबलिओ
ड्राइक्लीनर—णिण्णेजओ (सं)
प्रतिमा बनाने वाला—पडिमायारो
गवैया—गायओ, गाओ
बजाने वाला—वायगो
नाचने वाला—णच्चओ
चटाई बनाने वाला—वरुडो
बनिया—वणिओ, वावारि (वि)
जिल्दसाज—पोत्थारो
रसोइया—पाचओ

प्रतिमा—पडिमा
छुट्टी—अवगासो
विवाह—विआहो
भाग्य—भग्गं

धातु संग्रह

पडिकप्प—सजावट करना
पडिकोस—आक्रोश करना शाप देना, गाली देना
पडिक्ख—प्रतीक्षा करना
पडिक्खल—गिरना, हटना
पडिक्कम—निवृत्त होना, पीछे हटना
पडिखिज्ज—खिन्न होना
पडिजागर—सेवाशुश्रूषा करना, निभाना, निर्वाह करना
पडिगाह—ग्रहण करना
पडिच्छ—ग्रहण करना
पडिणिक्खम—बाहर निकलना

स्त्री प्रत्यय

पुंलिग शब्दों को स्त्रीलिंगी शब्द बनाने के लिए प्राकृत में आ, ई (ङी) और उ प्रत्यय लगते हैं। आ और ई संस्कृत के आप् तथा ईप् के प्रतिरूपक हैं।

(नियम २९६ स्त्रियामादविद्युतः १।१५ से) विद्युत् शब्द को छोडकर स्त्रीलिंग में होने वाले शब्दों के अन्त्य व्यंजन को आ हो जाता है। **अन्त्य व्यंजन** 7 **आ**—सरित् (सरिआ) प्रतिपत् (पाडिवआ) संपद् (संपआ) बाहुलकात् य श्रुति भी होती है—सरिया, पाडिवया, संपयो।

नियम ६१९ (स्वस्रादे र्डा ३।३५) स्वसृ आदि शब्दों को स्त्रीलिंग में डा प्रत्यय होता है। स्वसृ (ससा) बहन। ननान्दृ (णणंदा) ननंद। दुहितृ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(दुहिआ) दौहित्री। गवयः (गऊआ) गाय।

नियम ६२० (छाया-हरिद्रयोः ३।३४) छाया और हरिद्रा शब्दों से स्त्रीलिंग में ङी (ई) प्रत्यय विकल्प से होता है। छाया (छाया, छाही) छाया। हरिद्रा (हलिद्दी, हलिद्दा) हल्दी।

नियम ६२१ (अजाते पुंसः ३।३२) अजातिवाची पुंलिंग शब्दों से स्त्रीलिंग में ङी प्रत्यय विकल्प से होता है। नीलः (नीली, नीला) नीली। कालः (काली, काला) काली। हसमानः (हसमाणी, हसमाणा) हंसती हुई। शूर्पणखी (सुप्पणही, सुप्पणहा)। अनया (इमीए, इमाए) एतयो (इईए, एआए) **अजातेरितिकिम् ?** जाति अर्थ में जातिवाची अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंग में ई प्रत्यय जोडा जाता है। हरिणी, सिंही, करिणी इत्यादि। कहीं आ प्रत्यय भी जोडते हैं—एलया, अया।

नियम ६२२ (किं यत् तदोस्यमामि ३।३३) किं, यद्, तद्—इन तीन शब्दों से सि, अम् और आम् प्रत्ययों को छोडकर शेष स्यादि प्रत्ययों में स्त्रीलिंग में ङी (ई) प्रत्यय विकल्प से होता है। कीओ, काओ। कीए, काए। कीसु, कासु। जीओ, जाओ। जीए, जाए। जीसु, जासु। तीओ, ताओ। तीए, ताए। तीसु, तासु।

(**नियम २६१ रो रा १।१६ से**) स्त्रीलिंग मेंअन्त्य र् को रा आदेश होता है। गिर् (गिरा) वाणी। पुर् (पुरा) प्राचीन। धुर् (धुरा) धुरी।

नियम ६२३ (बाहोरात् १।३६) स्त्रीलिंग में बाहु शब्द के अंतिम उ को आ आदेश होता है। बाहा (बाहुः) भुजा।

नियम ६२४ (प्रत्यये ङी नं वा ३।३१) अण् आदि प्रत्ययों को संस्कृत में स्त्रीलिंग में ङी (ईप्) प्रत्यय कहा गया है। प्राकृत में उनसे ङी प्रत्यय विकल्प से होता है। पक्ष में आप् (आ) प्रत्यय भी होता है। साहणी, साहणा। कुरुचरी, कुरुचरा।

प्रयोग वाक्य

चिइच्छओ गुणसायरो किं तुज्झ चिइच्छं करेइ ? वेज्जो सामसुंदरो अस्स गामस्स पमुहो वेज्जो अत्थि। चित्तयारो पासणाहस्स चित्तं चित्तेइ। सिप्पी णियसिप्पं जणा दंसेइ। जंतिएण अज्ज अवगासो कहं गहिओ ? जोइसिओ गहाणं पभावेण जणाणं भग्गं कहेइ। कांबलिअस्स पासे केत्तिलाणि कंबलाणि संति ? णिण्णेजओ नीरं विणा वत्थाइं धावइ। पडिबिंबयारेण पासणाहस्स पडिमा भव्वा कया। गायओ सुमेरो मंदसरेण महुरं गाअइ। वायगो वि गायएण सह अत्थ आगमिहिइ। विआहे वरस्स भाआ चे णच्चओ भवेज्ज तं न सोहणं। वरुडो पइदिणं कज्जं कहं न करेइ ? वणिओ वावारम्मि पडू भवइ। पोत्थारो अत्थ कया आगमिस्सइ ? पाचओ बहु सम्मं पयइ (पकाता है)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणियस्स रण्णो भिभिसारस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि । सो तुवं कहं पडिकोसेइ ? साहू मुहु-मुहु असंजमं पडिक्कमइ । तुमं कं पडिक्खसि ? गगणत्तो पाणिअबिंदूइं पडिक्खंति । तुमं अप्पे परिस्समे किं पडिखिज्जसि ? साहू भिक्खं पडिगाहेइ पडिच्छइ वा । सोहणो संपुण्णं परिवारं पडिजागरइ । सो जिणसासणे गिहवासत्तो पडिणिक्खमइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

चिकित्सक आज घर पर नहीं है । वैद्य नया शोध कार्य नहीं करता है । चित्रकार क्या चित्र बनाना सिखाता है ? कारीगर अपनी कला में बहुत प्रसिद्ध है । मिस्त्री के साथ कितने आदमी और हैं । ज्योतिषी तीनों काल को जानता है । कंबल बेचने वाला कहां से आया है ? ड्राइक्लीनर अपने कार्य में कुशल है । प्रतिमा बनाने वाला कब तक प्रतिमा बनाकर देगा ? क्या तुम गवैया बनना चाहते हो ? वाद्य बजाने वाला कितना रुपया मांगता है ? नाचने वाला केवल मूक नृत्य करता है । चटाई बनाने वाले के पास जाकर कहो वह जल्दी अपना काम पूरा करके दे । बनिये की बुद्धि सबके पास नहीं होती है । जिल्दसाज जैन विश्व भारती में एक मास में दो बार आता है । रसोइया क्या विवाह में मीठाई बना देगा ?

धातु का प्रयोग करो

आज दीपावली है, घर की सजावट दीपकों से करो । लडाई में भाई भाई को गाली देता है । दो वर्ष के बाद वह व्यापार से निवृत्त हो जाएगा । उसने तुम्हारी प्रतीक्षा क्यों नहीं की ? वह संयम से क्यों गिर गया ? तुम्हें देखते ही वह खिन्न क्यों होता है ? उसने मेरे द्वारा दिए गए वस्त्र ग्रहण क्यों नहीं किए ? आज के युग में जो परिवार का निर्वाह करता है, वही जानता है । दीक्षा के लिए उसने किस गांव से निष्क्रमण किया था ?

प्रश्न

१. पुंलिग शब्दों को स्त्रीलिंगी बनाने के लिए कौन-कौन से प्रत्यय लगते हैं ?
२. स्त्रीलिंग में ङा और ङी प्रत्यय किस नियम से किन-किन शब्दों को होता है ?
३. स्त्रीलिंग में अन्त्य व्यंजन में किस नियम से क्या आदेश होता है ? उदाहरण सहित बताओ ।
४. चिकित्सक, वैद्य, चित्रकार, कारीगर, मिस्त्री, ज्योतिषी, कंबल बेचने वाला, ड्राइक्लीनर, प्रतिमा बनाने वाला, गवैया, बजाने वाला,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाचने वाला, चटाई बनाने वाला, बनिया, जिल्दसाज—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ?

५. पडिकप्प, पडिकोस, पडिक्कम, पडिक्ख, पडिक्खल, पडिखिज्ज, पडिगाह, पडिच्छ, पडिजागर और पडिणिक्खम—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

६. जण्हुआ, पासो, टंगो, किलेओ, मसो, अंतं, घंचिओ, कोलिओ, ण्हाविओ—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (वृत्ति जीवी वर्ग ३)

किसान—किसीवलो
अहीर—अहिरो, गोवालो
गडरिया—अयाजीवो, अयापालो
घसियारा—तणहारो
मजदूर—भारहरो
पसारी—गंधिओ
चौकीदार—पहरी, दारवालो
सपेरा—आहितुंडिओ
भंगी—संमज्जओ
नौकर—सेवओ, भिच्चो
बढई—रहयारो, तक्खो, वड्ढई
मूल्य लेकर धान काटने वाला—अत्थारिओ
चपरासी—पेसो
चुराई वस्तु को खोजकर लाने वाला—कूवियो

०

जूठा—णवोद्धरणं (दे०)
ब्राह्मण—बंभणं
दुर्लभ—दुलहो
धूम्रपान—धूमपाणं

धातु संग्रह

पडिचर—परिभ्रमण करना
पडिणिज्जाय—अर्पण करना
पडिदा—दान का बदला देना
पडितप्प—भोजनादि से तृप्त करना
पडिदंस—दिखलाना
पडिपेहा—ढकना, आच्छादन करना
पडिणिग्गच्छ—बाहर निकलना
पडिन्नव—प्रतिज्ञा कराना, नियम दिलाना
पडिपाअ—प्रतिपादन करना
पडिपुच्छ—पूछना, पृच्छा करना

कारक—प्राकृत में कारक संबंधी विधान संस्कृत के समान है। कुछ विशेष नियम ये हैं—

नियम ६२५ (चतुर्थ्याः षष्ठी ३।१३१) चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति होती है। मुनये मुनिभ्यो वा ददाति (मुणिस्स मुणीणं वा देहि) नमो देवाय देवेभ्यो वा (नमो देवस्स देवाणं वा)।

नियम ६२६ (तादर्थ्यङे र्वा ३।१३२) तादर्थ्य में होने वाली चतुर्थी विभक्ति के एकवचन को षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। देवार्थम् (देवाय, देवस्स वा)।

नियम ६२७ (वधाड्डाइश्च ३।१३३) वध शब्द से चतुर्थी विभक्ति को डाइ (आइ) और षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। वधार्थम् (वहाइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वहस्स, वहाय)।

नियम ६२८ (क्वचिद् द्वितीयादेः ३।१३४) द्वितीया आदि (द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी) विभक्तियों के स्थान पर कहीं-कहीं षष्ठी विभक्ति होती है। सीमाधरं वन्दे (सीमाधरस्स वंदे) धनेन लुब्धः (धणस्स लुद्धो) तैरेतदनाचीर्णम् (तेसिमेअमणाइन्नं) चिरेण मुक्ताः (चिरस्स मुक्का) सहितेभ्यः इतराणि (सहिआण इअराइं) चौराद् बिभेति (चोरस्स बीहइ) पृष्ठे केशभारः (पिट्ठीए केसभारो)।

नियम ६२९ (द्वितीया-तृतीययोः सप्तमी ३।१३५) द्वितीया और तृतीया विभक्ति के स्थान पर कहीं-कहीं सप्तमी विभक्ति होती है। नगरं न यामि (नयरे न जामि) ताभिः तैः वा अलंकृता पृथिवी (तिसु तेसु अलंकिया पुहवी)।

नियम ६३० (पञ्चम्या स्तृतीया ३।१३६) पंचमी विभक्ति के स्थान पर कहीं-कहीं तृतीया और सप्तमी विभक्ति होती है। चौराद् बिभेति (चोरेण बीहइ) अन्तःपुराद् रन्त्वा आगतो राजा (अंतेउरे रमिउमागओ राया)।

नियम ६३१ (सप्तम्या द्वितीया ३।१३७) सप्तमी विभक्ति के स्थान पर कहीं-कहीं द्वितीया विभक्ति होती है। विद्युद् द्योतकं स्मरति रात्रौ (विज्जुज्जोयं भरइ रत्तिं) तस्मिन् काले तस्मिन् समये (तेणं कालेणं तेणं समएणं)।

नियम ६३२ (द्विवचनस्य बहुवचनम् ३।१३०) स्यादि और तिबादि की सभी विभक्तियों के द्विवचन के स्थान पर बहुवचन होता है।

प्रयोग वाक्य

किसीवलो पच्चूसे णइ खेत्ते गच्छइ। सुद्धं दुद्धं अहिरस्स चेअ गिहे मिलिस्सइ। भारहरो भारं चिअ वहइ। अत्थारिओ पइ दिणं वेयणस्स तीस रूवगा गिण्हइ। गंधिओ अणेगाणि वत्थूणि विक्किणइ। अजावालो अयाओ खेत्ते नेइ। तणहारो वणाओ तणाइं आणेइ। पहरी निसाए विजागरइ। आहितुंडिओ अहीणं णच्चं दंसावेइ। संमज्जओ कस्सावि णवोद्धरणं न खाअइ। गामे सेवओ दुलहो अत्थि। रहयारो कट्ठाइं तक्खइ। कूवियो कहं न चेट्ठइ? पेसो केत्तिला रूवगा याचइ।

धातु प्रयोग

मुणी देसे पएसे य पडिचरइ। हे भंते। तुब्भकेरं वत्थुं तुब्भ पडिणिज्जायामि। सो पच्चूसे पइदिवहं गिहत्तो पडिणिग्गच्छइ। सामो दिवहे एगं बंभणं (ब्राह्मण) पडितप्पइ। आयरिएण वीसजणा धूमपाणस्स पडिन्नविआ। कवी धणस्स थुईए पडिदेइ। तुमए जेणधम्मो पडिपाअणीओ। मुणी जत्ताए किसीवलं मग्गं पडिपुच्छइ। सीया उण्हपाणिअभायणं पडिपेहाइ। गुरू धम्ममग्गं पडिदंसेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत में अनुवाद करो

किसान खेत में बीज बोता है। अहीर गायों का पालन करता है। घसियारा घास काटकर बेचता है। चौकीदार सजगता से अपना कार्य करता है। मजदूर दिन भर भार ढोता है फिर भी उसकी भूख नहीं मिटती। तुम्हारे खेत में वेतन लेकर धान काटने वाले कितने हैं ? गडरिया चार सौ भेड़, बकरियों को चराता है। पसारी की दुकान पर कितने आदमी बैठे हैं ? सपेरा सांप को पकडने के लिए वन में गया है। भंगी घर की सफाई क्यों नहीं करता है ? बढई एक दिन में एक किवाड भी नहीं बनाता है। चपरासी आज कार्य पर क्यों नहीं आया है ? राजा का हार गुम हो गया है, खोज करने वाले को कहो, वह खोज कर लाए। वेतन लेकर घास को काटने कितने व्यक्ति आए हैं ?

धातु का प्रयोग करो

संपूर्ण भारत का परिभ्रमण किसने किया है ? वह भगवान को जलांजलि अर्पण करता है। उसको देश से बाहर निकाल दिया। वह साधर्मिकों को भोजन से तृप्त करता है। रमेश घर में आने वालों को अपना घर दिखाता है। मुनि भिक्षा लेते हैं और उन्हें जीवन का मार्ग बताते हैं। साधु ग्रामवासियों को मद्यमांस छोडने का नियम दिलवाते हैं। उसने तर्क सहित सत्य का प्रतिपादन किया। मैं आपसे आपके जीवन के संस्मरण पूछता हूं। स्त्रियां अपने मुंह को ढांकती हैं।

प्रश्न

१. प्राकृत में चतुर्थी के स्थान पर कौन-सी विभक्ति किस नियम से होती है ? तादर्थ्यचतुर्थी विभक्ति के एकवचन को क्या आदेश होता है ? और किस नियम से ? तीन उदाहरण दो।
२. द्वितीया, तृतीया, पंचमी और सप्तमी के स्थान पर कौन-कौन सी विभक्ति किस नियम से आदेश होती है ? दो-दो उदाहरण दो।
३. षष्ठी विभक्ति किन विभक्तियों के स्थान पर होती है ? उदाहरण दो।
४. किसान, अहीर, गडरिया, घसियारा, मजदूर, पसारी, चौकीदार, सपेरा, भंगी, नौकर, बढई, चपरासी, चुराई वस्तु को खोजकर लाने वाला—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
६. पडिचर, पडिणिज्जाय, पडिदा, पडितप्प, पडिदंस, पडिणिग्गच्छ पडिन्नव, पडिपाअ, पडिपुच्छ, पडिपेहा धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (वृत्ति जीवी वर्ग ४)

जासूस—चरो
जादूगर—इंदजालिओ
जुआरी—कितवो
चोर—तक्करो, चोरो
रंडीबाज—खिंगो
डाकू—दस्सू
ठग – वंचगो, पतारगो
जारपुरुष—अणडो (दे०)
पाकिटमार—गंडभेओ, गंठिछेओ
सुराविक्रेता—सुंडिओ
हिजडा—चिंधपुरिसो
मच्छीमार—केवट्टो, धीवरो
कसाई—सोणिओ
शिकारी—लुद्धो

० ० ०

मछली—मच्छो
व्यापार—वावारं
जूआखाना—टेंटा (दे०)
जुआ—जूअं
मछली पकडने का जाल—पवंपुलो
शान्ति—संति (स्त्री)

धातु संग्रह

पडिबंध—रोकना, अटकाना
पडिभम—घूमना, पर्यटन करना
पडिबंध—वेष्टन करना
पडिभास—मालूम होना
पडिबुज्झ—बोधपाना
पडिमंत—उत्तर देना
पडिभंज—भांगना, टूटना
पडिमुंच—छोडना
पडिभंस—भ्रष्ट करना
पडियाइक्ख—त्याग करना

समास

समास और विग्रह दो शब्द हैं। परस्पर अपेक्षा रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग को समास कहते हैं। समासित पदों को अलग करने को विग्रह कहते हैं। प्राकृत में समास करने के लिए कोई सूत्र या विधान नहीं है। साहित्य में समासित पद मिलते हैं। उन्हें समझने के लिए संस्कृत का आधार लेना होता है। संस्कृत में जो समास का विधान है वही प्राकृत में लागू होता है। समास के प्रमुख रूप से चार भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व। कर्मधारय और द्विगु तत्पुरुष के अन्तर्गत हैं। कोई इन्हें स्वतंत्र मानकर समास के ६ भेद मानते हैं।

नियम ६३३ (दीर्घ-ह्रस्वौ मिथो वृत्तौ १।४) समास में प्रथम शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो जाता है। अन्तर्वेदि: (अन्तावेई) । सप्तविंशति: (सत्तावीसा)।

कहीं पर विकल्प से होते हैं—

भुजयंत्रम् (भुआयंतं, भुअयंत) पतिगृहम् (पईहरं, पइहरं) वेणुवनं (वेलूवणं) वारिमति: (वारीमई, वारिमई) ।

दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से—

नदी स्रोतस् (नइसोत्तं, नईसोत्तं) गौरीगृहम् (गोरिहरं, गोरीहरं) यमुनातटम् (जंउणयडं, जंउणायडं), बधूमुखम् (वहुमुहं, वहूमुहं) ।

अव्ययीभाव समास

समास में दो पद होते हैं—पूर्वपद और उत्तरपद। पूर्व (पहले) होने वाले पद को पूर्वपद और आगे होने वाले पद को उत्तरपद कहते हैं। उत्तर-पद के कुछ अर्थों के लिए अव्यय प्रयोग में आते हैं। अव्ययीभाव समास में उन अव्ययों का प्राग् निपात हो जाता है यानि वह अव्यय उत्तरपद से पूर्वपद में आ जाता है। उत्तरपद का शब्द नपुंसकलिंगी हो जाता है। दीर्घ शब्द हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। कुछेक अर्थों के लिए निम्नलिखित अव्यय निश्चित हैं।

अर्थ	अव्यय	अर्थ	अव्यय
समीप अर्थ में	उव	सप्तमी विभक्ति के अर्थ में	अहि
योग्य अर्थ में	अणु	अनतिक्रमण के अर्थ में	जहा
विनाश अर्थ में	अइ	वस्तु के अभाव में	निर् नि+ अगला वर्ण द्वित्व)
पश्चाद् अर्थ में	अणु	वीप्सा अर्थ में	पइ
साथ के अर्थ में	सह	समृद्धि अर्थ में	सु
एकसाथ अर्थ में	स		

उदाहरण

गुरुणो समीपं—उवगुरु	आयरियस्स पच्छा—अणुआयरियं
अप्पंसि—अज्झप्पं	पुरं पुरं पइ—पइपुरं
रूवस्स जोग्गं—अणुरूवं	चक्केण सह—सचक्कं
सत्ति अणइक्कमिऊण—जहासत्ति	भद्दाणं समिद्धी—सुभद्दं
हिमस्स अच्चओ—अइहिमं	चक्केण जुगवं—सचक्कं
बलस्स अहाओ—णिब्बलं	

प्रयोग वाक्य

पत्तेयदेसस्स अण्णदेसम्मि चरा भवंति। कितवो टेंटाए जूअं खेलइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खिगस्स मणम्मि (मणंसि) संती नत्थि। पतारगो वायेण लोएहिन्तो धणं गिण्हइ। जणसमूहे पाओ (प्रायः) गंठिछेओ मिलइ। चिंधपुरिसो थीणं वत्थाणि परिहाइ। परस्स किमवि वत्थुं आणं विणा जो गिण्हइ सो चोरो भवइ। दस्सू दिणे चेअ लुंटइ। रमेसो अणडं मारिउं अहिलसइ। अत्थ सुंडिअस्स वावारं न चलिस्सइ। केवट्टो पवंपुलेण मच्छा गिण्हइ भक्खइ य। तुमं सोणिअं णासिऊण किं उवदिससि? लुद्धो पुच्छइ जं किं इओ हरिणो गओ?

धातु प्रयोग

तुज्झ कज्जम्मि को वि न पडिबंधइ। किं तुमं संकप्पेण पुव्वगहिअं संकप्पं पडिबंधसि? करकंडू सयं पडिबुज्झइ। मज्झ पत्तं कहं पडिभंजिअं? गणबाहिसाहू अण्णं साहुं गणाओ पडिभंसइ। सीयकाले पयजत्ताए को पडिभमइ? झाणम्मि तं भविस्सं पडिभासइ। सेट्ठिणा भिच्चं पडिमुंचिउं बहु पयत्तईअ। अहं पडियाइक्खामि तिणा सह विवादं न करिहिमि। सो रायाणं पडिमंतेइ।

अव्ययप्रयोग वाक्य

अहं उवगुरुं उवविसामि। अणुआयरियं संघस्स विआसो को करिस्सइ? अज्झप्पं रमणं साहुस्स सेयं। अणुरूवं सम्माणं मिलइ। पइमुणिं सो सुहपुच्छं पुच्छइ। णिद्धणाण साउज्जं (सहयोग) को करिहिइ? णिब्बलाणं को मित्तं? जहासत्ति तवो करणीओ। जणा सुजेणं असूअंति। हिमवम्मि पव्वये अइहिमं कया जाअं? सो सचक्कं सगडिआ कीणइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

जासूस ने क्या नई सूचना दी है? राज्य कर्मचारी ने जुआरी को जुवाखाने में जुआ खेलते हुए पकडा। ठग की किसी के साथ मित्रता नहीं है। पाकिटमार भी प्रशिक्षण लेता है। भारत का सुप्रसिद्ध जादूगर आजकल विदेश गया हुआ है। समाज ही व्यक्ति को डाकू बनाता है। हिजडों का भी एक समाज होता है। चोर किसके मकान में घुसा है? जार पुरुष की दुर्गति होती है। सुरा विक्रेता सुरा का प्रचार करता है। मच्छीमार रात में भी समुद्र में जाकर मछलियों को पकडते हैं।

धातु का प्रयोग करो

साधु बनने में उसके लिए कोई अवरोध नहीं है। संकल्प को दोहरा कर वह संकल्प को संकल्प मे वेष्टित करता है। कुछ महापुरुष स्वयं प्रतिबोध पाते हैं। उनकी मित्रता कैसे टूटी? धर्मपथ से किसी को भ्रष्ट मत करो। वह प्रतिवर्ष कई तीर्थस्थानों का पर्यटन करता है। उसकी आत्मा निर्मल है इसीलिए उसे भविष्य की घटना प्रतिभासित होती है। उसने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई उत्तर नहीं दिया वह पिंजडे से पक्षी को छोडता है। वह स्त्री का त्याग करता है।

प्राकृत में अनुवाद करो (अव्यय का प्रयोग)

तेरे घर के पास किसका घर है? भगवान महावीर के बाद कौन हुए? घर में कौन रहेगा? प्रतिष्ठा के अनुरूप कार्य करो। समय मात्र का भी प्रमाद मत करो। यह स्थान मनुष्यों रहित क्यों है? यह स्थान मक्षिका रहित है। यथाशक्ति गुरु की सेवा करनी चाहिए। जैनों की समृद्धि ईर्ष्या का कारण बनती है। शिमला में बर्फ का विनाश कब हुआ? उसने कुँए सहित खेत को खरीद लिया। कसाई को हिंसा न करने का उपदेश दो। शिकारी हरिण को मारना चाहता है।

प्रश्न

१. प्राकृत में समास के लिए क्या विधान है?

२. नीचे लिखे शब्दों में बताओ किस नियम से किस शब्द को ह्रस्व या दीर्घ हुआ है? अन्तावेई भुआयंतं, पईहरं, नईसोत्तं, सत्तावीसा, बहुमुहं।

३. नीचे लिखे अव्यय किस अर्थ में प्रयुक्त होते हैं? उव, पइ, अणु, जहा, अइ, सु, अहि, सह।

४. अव्ययीभाव समास में पूर्वपद कौनसा शब्द होता है? और उत्तरपद किन-कन लिंगों में प्रयुक्त होता है?

५. जासूस, जुआरी, ठग, पाकिटमार, हिंजडा, जादूगर, चोर, डाकू, जारपुरुष, सुराविक्रेता, मच्छीमार, कसाई, शिकारी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

६. पडिबंध, पडिबंध, पडिबुज्झ, पडिभंज, पडिभंस, पडिभम, पडिभास, पडिमंत, पडिमुंच और पडियाइक्ख धातुओं के अर्थ बताओ तथा वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्पुरुष समास

शब्द संग्रह (स्त्री वर्ग १)

नायिका—णायिआ
धाई—धाई, धारी
नर्तकी—णट्टई
लुहारिन—लोहआरी
सुनारिन—सुवण्णआरी
जादूगरी—किच्चा
कपास—कप्पासो, ववणं (दे०)
सेठानी—सेट्ठिणी
क्षत्रियाणी—खत्तिआणी
ब्राह्मणी—बंभणी
सूत बनाने वाली स्त्री—सुत्तगारी
वृत्ति लिखने वाली स्त्री—वुत्तिगारी
गाने वाली—मेहरिआ, मेहरी

धातु संग्रह

पडिरु—प्रतिध्वनि करना
पडिलभ, पडिलंभ—प्राप्त करना
पडिलाभ—साधु आदि को दान देना
पडिलेह—निरीक्षण करना
पडिवक्क—उत्तर देना
पडिवज्ज—स्वीकार करना
पडिवय—ऊंचे जाकर गिरना
पडिवस—निवास करना
पडिवह—वहन करना
पडिवाय—प्रतिपादन करना

तत्पुरुष—जिस समास में उत्तर पद के अर्थ की प्रधानता होती है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। उत्तर पद में जो लिंग होता है, समास के बाद भी वही लिंग रहता है। पूर्वपद में सातों विभक्तियों का प्रयोग किया जाता है। पूर्व पद में जिस विभक्ति का लोप होता है उसे उस नाम का तत्पुरुष कहते हैं। द्वितीया विभक्ति का लोप हो उसे द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया विभक्ति का लोप हो उसे तृतीया तत्पुरुष, इसी प्रकार सप्तमी विभक्ति का लोप हो उसे सप्तमी तत्पुरुष कहते हैं। समास होने के बाद एक शब्द बन जाता है।

द्वितीया— संसारं अतीतो—संसारातीतो। दिवं गतो—दिवंगतो। दिवं अव्यय है इसलिए मूल रूप में है। जिणं अस्सिओ—जिणस्सिओ। खणं सुहा—खणसुहा।

तृतीया— अहिणा दट्ठो—अहिदट्ठो। गुणेहिं संपन्नो—गुणसंपन्नो। लज्जाए जुत्तो—लज्जाजुत्तो। विज्जाए पुण्णो—विज्जापुण्णो।

चतुर्थी— नेउराय हिरण्णं—नेउरहिरण्णं। गामस्स हिअं—गामहिअं। थंभाय दारु—थंभदारु। णयरस्स सुहं—णयरसुहं।

पंचमी— चरित्ताओ भट्ठो—चरित्तभट्ठो। घराओ णिग्गओ—घरणिग्गओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोरत्तो भयं—चोरभयं। पावाओ भीओ—पावभीओ। कम्माओ मुत्तो—कम्ममुत्तो। आसत्तो पडिओ—आसपडिओ।

षष्ठी— पासस्स मंदिरं—पासमंदिरं। विज्जाए मंदिरं—विज्जामंदिरं। समाहिणो ट्ठाणं—समाहिट्ठाणं। लोगस्स उज्जोयगरो—लोगोज्जोयगरो। धम्मस्स आलयो—धम्मालयो। गामस्स सामी—गामसामी। रट्ठस्सपई—रट्ठपई।

सप्तमी— ववहारे कुसलो—ववहारकुसलो। पुरिसेसु उत्तमो—पुरिसोत्तमो णयरे सेट्ठो—णयरसेट्ठो। पुरिसेसु सीहो—पुरिससीहो। लोगेसु उत्तमो—लोगुत्तमो। लेहणे दक्खो—लेहणदक्खो।

तत्पुरुष समास का दूसरा रूप भी मिलता है। पहले पद में प, अइ अणु आदि अव्यय होते हैं और दूसरे पद में प्रथमा आदि छह विभक्तियां। इसका प्रयोग दो पदों के अन्य अर्थ में होता है, इसलिए इसे बहुव्रीहि रूपक तत्पुरुष कहते हैं। बहुव्रीहिसमास और बहुव्रीहिरूपकतत्पुरुष की पहचान विग्रह से होती है। दोनों के विग्रह में अन्तर है। बहुव्रीहिरूपकतत्पुरुष समास के विग्रह में अव्यय का अर्थ साथ में रहता है, बहुव्रीहिसमास में नहीं रहता। बहुव्रीहिसमास में उत्तरपद का लिंग नहीं रहता, वह विशेषण बन जाता है और विशेष्य के अनुसार चलता है।

प्रथमा—प—पगओ आयरिओ—पायरिओ

द्वितीया—अइ—अइक्कंतो गंगं—अइगंग

तृतीया—अणु—अणुगयं अत्थेण—अन्वत्थं

चतुर्थी—अलं—अलं कुमारीए—अलंकुमारी

पंचमी—उत्—उक्कंतो मग्गाओ—उम्मग्गो

प्रयोग वाक्य

अस्स णयरस्स णायिआए किं अभिहाणं अत्थि? धाई सिसुं खेलावेइ। णट्टई सहाए णट्टइ। लोहआरी लोहआरस्स ठाणे कज्जं करेइ। सुवण्णआरी पगईए सरला अत्थि। सेट्ठिणी सेट्ठिं सिक्खइ। खत्तिआणी वीरा पुत्ता जणेइ। बंभणी जावं जवइ। सुत्तगारी कप्पासेहिं सुत्तं करेइ। वुत्तगारी पोत्थयं लिहइ। किच्चा इंदजालिअत्तो अहिया पडू अत्थि।

धातु प्रयोग

कूवो पडिरुइ। कज्जकत्ता पइघरं धणं पडिलंभइ पडिलभइ वा। सावगो साहुं पडिलाभेइ। मुणी वत्थाइं पत्ताइं य पडिलेहइ। तुमं पत्तेयं पण्हं मा पडिवक्क। सो चरित्तं पडिवज्जइ। ओज्झरो पव्वयाओ पडिवमइ। अहं अमुम्मि नयरे पंचवरिसाओ पडिवसामि। आयरिओ गणस्स भारं पडिवहइ। तिणा विसयो सम्मं पडिवायिओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत में अनुवाद करो

नायिका बहुत धन कमाती है। धाई बच्चे को अपना नहीं मानती है। नर्तकी को अपनी सभा में कौन बुलाता है ? लुहारिन घर-घर में जाकर लोहे की वस्तुएं बेचती है। सुनारिन सुनार को सोने की चोरी न करने की शिक्षा देती है। सेठानी का पेट बहुत बडा है। क्षत्रियाणी में भी वीरता है। ब्राह्मणी पूजा पाठ कुछ नहीं जानती। सूत्र बनाने वाली स्त्री दिन भर श्रम करती है। वृत्ति लिखने वाली स्त्री के अक्षर बहुत सुंदर हैं। जादूगरी कल इस शहर में खेल दिखाएगी।

धातु का प्रयोग करो

ध्वनि के एक क्षण के बाद प्रतिध्वनि सुनाई देती है। जो साधु को शुद्ध दान देता है वह निर्जरा का लाभ कमाता है (प्राप्त करता है)। साधु को दिन में अपना प्रत्येक वस्त्र निरीक्षण (पडिलेहण) करना चाहिए। प्रभा हर प्रश्न का उत्तर देती है। दिनेश ब्रह्मचर्य को स्वीकार करता है। जो महानगरों में निवास करते हैं, उन्हें शुद्ध हवा बहुत ही कम मिलती है। साधु उपधानतप को वहन करता है। अरुणा अपनी मान्यता (बात) का अच्छी तरह प्रतिपादन करती है। फल वृक्ष से गिर गया।

प्रश्न

१. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ?
२. तत्पुरुष समास करने के बाद शब्द का लिंग कौन-सा होता है ?
३. तत्पुरुष समास में कौन-कौन सी विभक्तियों का लोप किया जाता है और उन्हें किस नाम से पुकारा जाता है ?
४. तत्पुरुष समास में क्या अव्ययों का भी प्रयोग होता है ? दूसरे पद में कितनी विभक्तियां होती हैं ? उदाहरण सहित समझाओ।
५. बहुव्रीहिसमास और बहुव्रीहिरूपकतत्पुरुष समास में क्या अन्तर है ? उदाहरण देते हुए स्पष्ट करो।
६. नायिका, धाई, नर्तकी, लुहारिन, सुनारिन, सेठानी, क्षत्रियाणी, ब्राह्मणी, वृत्ति लिखने वाली स्त्री, सूत बनाने वाली स्त्री और जादूगरी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. पडिरु, पडिलंभ, पडिलभ, पडिलाभ, पडिलेह, पडिवक्क, पडिवज्ज, पडिवय, पडिवस, पडिवह और पडिवाय धातुओं के अर्थ बताओ और अपने वाक्य में प्रयोग करो।
८. नीचे लिखे वाक्यों का समास करो और बताओ कौनसा तत्पुरुष है ?

किसणं सिओ। थेणाओ भीओ। जिणेण सरिसो। सीलेण निउणो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलंबाय सुवण्णं। भूयाण बली। कलासुं कुसलो। साहुसु सेट्ठो। जलेण मिस्सं। उत्तरं गामस्स। सुहं पत्तो। देवस्स आलयो। नराण पुज्जो।

९. समासित वाक्यों का विग्रह करो—इंदियातीतो। दयाजुत्तो। लोयहिअं। संसारभीओ। जिणोत्तमो। देवालयो। उदगभवणं। दंसणभट्ठो। विज्जालयो। रायपुरिसो। सग्गगओ। खत्तिअहियं।

१०. पोत्थारो, णच्चओ, जंतिओ, तणहारो, किसीवलो भारहरो, इंदजालिओ, खिगो, चरो—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (स्त्री वर्ग २)

पटरानी—महिसी
अप्सरा—किंनरी
सुंदरी—सुंदरी
राक्षसी—पिसल्ली, रक्खसी
वेश्या—पणसुंदरी
चंडालिनी—आइंखिणिया
कामीस्त्री—कामुआ
कुलटा—कुलडा
उपपत्नी—अहिविण्णा
वन्ध्या—अवियाउरी (दे०)
चंचलस्त्री—चवला

स्वरूप—सरूवं
काच—कायो
भंडार—कोट्ठागारो
वेदना—वेयणा
साक्षात्—सक्खं
कोप—कोवो

धातु संग्रह

पडिसव—शाप के बदले शाप देना
पडिसव—प्रतिज्ञा करना
पडिसाड—सडाना
पडिसंजल—उद्दीपित करना
पडिसंध—फिर से साधना
पडिसम—विरत होना
पडिसंहर—निवृत्त करना
पडिसंवेय—अनुभव करना
पडिसंचिक्ख—विचार करना
पडिसंधा—आदर करना, स्वीकार करना

कर्मधारय

विशेष्य और विशेषण के अथवा उपमा और उपमेय के रूप में जहां दो शब्दों का मेल होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। अथवा जिस समास के विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही विभक्ति और एक ही लिंग आता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं। कर्म का अर्थ है क्रिया। धारय का अर्थ धारण करने वाला। इस समास में सब पद एक ही क्रिया से अन्वित होते हैं। इसके छ भेद हैं—

(१) **विशेषण पूर्वपद**—जिसमें पूर्वपद विशेषण हो। कण्हो य सो सप्पो=कण्हसप्पो।

(२) **विशेषणोत्तरपद**—जिसमें उत्तरपद विशेषण हो। आयरियो य य सो पवरो=आयरियपवरो।

(३) **विशेषणोभयपद**—जिसमें दोनों पद विशेषण हो। सीयं य तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उण्हं जलं=सीउण्हं जलं। रत्तं य पीअं वत्थं=रत्तपीअं वत्थं।

(४) उपमान पूर्वपद—जिसमें पहला पद उपमान वाची हो। घणो इव सामो=घणसामो (घनश्यामः)। वज्ज इव देहो=वज्जदेहो (वज्रदेहः)

(५) उपमेय उत्तरपद—जिसमें उत्तरपद उपमेयवाची हो। पुरिसो सीहो इव=पुरिससीहो। मुहं चंदो इव=मुहचंदो।

(६) अवधारण बोधक—जिसका पहला पद किसी भी अर्थ में हो और वह दूसरे पद से जोडा जाए उसे अवधारण बोधक कहते हैं। विज्जा एव धणं=विज्जाधणं। संजमो चिअ धणं=संजमधणं। णाणं चेअ गंगा=णाणगंगा

द्विगु समास

कर्मधारय का प्रथमपद यदि संख्या परक हो तो उसको द्विगु समास कहते हैं। द्विगुसमास प्रायः समुदाय बोधक होता है। णवण्हं तत्ताणं समाहारो =णवतत्तं। तिण्णि लोया=तिलोयं। चउण्हं कसायाणं समूहो=चउक्कसायं।

नञ्तत्पुरुष

अभाव या निषेधार्थक अ अथवा अण के साथ संज्ञा शब्दों के समास को नञ्तत्पुरुष समास कहते हैं। उत्तरपद में व्यंजन आदि वाला संज्ञा शब्द हो तो अ के साथ तथा स्वर आदि वाला हो तो अण के साथ समास होता है।

न हिंसा (अहिंसा)	न आयारो (अणायारो)
न सच्चं (असच्चं)	न इट्ठं (अणिट्ठं)
न धम्मो (अधम्मो)	न इड्ढी (अणिड्ढी)

प्रयोग वाक्य

चेलणा सेणिअरण्णो महिसी आसि। किन्नरिं पासिऊण जो विचलिरो न भवइ सो एव बंभयारी। सुंदरिं णिभालिऊणं मणो चंचलो भवइ। रक्खसी जणा भयभेरवा करेइ। पणसुंदरी णयरवासिणो पत्ती भवइ। कुलडा परपुरिसाओ पेम्मं करेइ। धम्मेसस्स पत्ती कामुआ नत्थि। रमेसस्स एगा अहिविण्णा गिहस्स पासे चेअ वसइ। चवलाए चवलत्तं थीणं दोसो होइ। अवियाउरीए पुत्तस्स अहिलासा बहुभवइ।

धातु प्रयोग

पडिसवमाणो सोहणो सहलो (सफल) न भवइ। सो कल्लं जावज्जीवं असच्चजंपणस्स पडिसविस्सइ। रज्जाहिगारी कोट्ठागारे संगहियस्स अन्नं किमट्ठं पडिसाडइ ? मोहणो रमेसस्स कोवं पडिसंजलइ। तुडियकायो (काच) न पडिसंधइ। अहं कल्लं पावाओ पडिसमिस्सामि। सावगो सामाइयम्मि सावज्जजोगाओ अप्पाणं पडिसंहरइ। सो सक्खं वेयणं पडिसंवेयइ। मुणी संसारस्स सरूवं पडिसंविक्खइ। सरलो णियतुडिं पडिसंधाइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राकृत में अनुवाद करो

राजा के एक पटरानी होती थी। कई स्त्रियां अप्सरा के समान रूपवती होती हैं। इस वर्ष की भारतसुंदरी कौन है? स्त्री को राक्षसी क्यों कहा गया है? वेश्या किसी की भी पत्नी नहीं होती है। कुलटा का समाज में सम्मान नहीं होता है। कामी स्त्री जगह-जगह पुरुष को खोजती है। कामी पुरुष उपपत्नी को पत्नी से अधिक चाहता है। चंचल स्त्री का मन स्थिर नहीं रहता है। वन्ध्या को माता बनने की प्रबल इच्छा होती है।

धातु का प्रयोग करो

किसी को शाप के बदले शाप मत दो। प्रतिदिन एक प्रतिज्ञा अवश्य करो। फल नहीं खाते हो इसीलिए घर में पडे हुए फल सड रहे हैं। क्या तुम अग्नि को उद्दीपित करते हो? साधु अपने पात्र को फिर से सांधते हैं। क्या तुम सांसारिक कार्यों से विरत हो गए? उसने अपनी इंद्रियों को विषय से निवृत्त किया। मुनि प्रतिक्षण सुख का अनुभव करता है। पारस मुनि ने तपस्या पर विचार किया। वह चित्त समाधि को स्वीकार करता है। अपने व्यवहार से तुमने टूटी हुई मित्रता को फिर से सांध लिया।

प्रश्न

१. कर्मधारय समास किसे कहते हैं? उसके कितने भेद होते हैं?
२. विशेषण पूर्वपद, विशेषण उत्तरपद और विशेषण उभयपद किसे कहते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।
३. उपमान पूर्वपद और उपमेय उत्तरपद में क्या अंतर है? दो-दो उदाहरण दो।
४. द्विगु समास के तीन उदाहरण दो।
५. नञ् तत्पुरुष समास के चार उदाहरण दो।
६. नीचे लिखे शब्दों का समास विग्रह् करो और बताओ ये किस भेद के अन्तर्गत हैं।
पीअवत्थं, कण्हसाडी, सीउण्हो वातो (वायु)। पुरिसगंधहत्थी, गुरुवरो, सेअपीअं मुहं, आसवरो, लोहदेहो, तवधणं, छदव्वं, अपरिग्गहो, पंचमहव्वयं, अपुण्णं, अणुत्तरं
७. पटरानी, अप्सरा, सुंदरी, राक्षसी, वेश्या, कुलटा, कामीस्त्री, उपपत्नी, वंध्या, चंचलस्त्री—इनके लिए प्राकृत शब्द बताओ।
८. पडिसव, पडिसव, पडिसाड, पडिसंजल, पडिसंध, पडिसम, पडिसंहर, पडिसंवेय, पडिसंचिक्ख, पडिसंध—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुव्रीहि समास

शब्द संग्रह (स्त्रीवर्ग ४)

ऊंचे नाक वाली—तुंगणासिआ
बडे पेट वाली—दीहोअरी
अच्छे केश वाली—सुएसी
शीघ्र प्रसववाली—अणुसूआ
मोटी स्त्री—पीवरी
युवती—जुवई
पुत्रवती—पुत्तवई
चतुरस्त्री—णिउणा
गृहपत्नी—गिहिणी
परतंत्रस्त्री—आविउज्झा (दे०)

० ० ० ०

वार्ता—वत्ता
वैक्रिय शरीर से संबंधित—विउव्विअ (वि)
स्वतंत्र—सतंत (वि)
घटना—घडणा
लब्धि—लद्धि (स्त्री)

धातु संग्रह

पडिसंखा—व्यवहार करना
पडिसंखेव—समेटना
पडिसंचिक्ख चिंतन करना
पडिसाह—उत्तर देना
पडिसेव—निषिद्ध वस्तु का सेवन करना
पडिहर—फिर से पूर्ण करना
पडिहा—मालूम होना, लगना
पडिहास—मालूम होना, लगना
पडिसुण—प्रतिज्ञा करना, स्वीकार करना
पडिसाहर—निवृत्त करना

बहुव्रीहि

बहुव्रीहि समास में पूर्वपद और उत्तरपद की प्रधानता नहीं होती है, तीसरे पद की प्रधानता होती है, इसलिए उसे अन्यपदप्रधान समास भी कहते हैं। बहुव्रीहिसमास करने के बाद वह समासित पद किसी शब्द का विशेषण ही बनता है, विशेष्य नहीं होता। विशेष्य के अनुसार उसमें लिंग और वचन होते हैं। बहुव्रीहिसमास दो प्रकार का होता है—समानाधिकरण और व्यधिकरण। जिस विग्रह में दोनों पदों में समान अधिकरण (विभक्ति) होती है उसे समानाधिकरण कहते हैं। जहां दोनों पदों में भिन्न-भिन्न विभक्ति होती है उसे व्यधिकरण कहते हैं। विग्रह में ज (यत्) शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह विशेष्य से संबंध रखता है। ज शब्द में द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक का प्रयोग किया जाता है। बहुव्रीहिसमास में जिन शब्दों में समास होता है, वे शब्द त (तत्) के द्वारा सूचित अर्थ के विशेषण बनते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समानाधिकरण बहुव्रीहि के उदाहरण—

आरूढो वाणरो जं रुक्खं सो आरूढवाणरोरुक्खो (वृक्षः)। जिआणि इंदियाणि जेण सो जिइंदियो मुणी। जिआ परीसहा जेण सो जिअपरीसहो महावीरो। णट्ठो मोहो जस्स सो णट्ठमोहो वीयराओ। सेयं अंबरं जेसिं ते सेयंबरा। वीरा णरा जम्मि गामे सो वीरणरो गामो। जिओ कामो जेण सो जिअकामो महादेवो। पीअं अंबरं जस्स सो पीआंबरो। आसा (दिशा) अंबरं जेसिं ते आसंबरा। एगो दंतो जस्स सो एगदंतो गणेसो। सुत्तो सीहो जाए सा सुत्तसीहा गुहा।

व्यधिकरण के उदाहरण

चक्कं पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी विण्हू (विष्णुः)। गंडीवं करे जस्स सो गंडीवकरो अज्जुणो।

उपमान पूर्वपद वाला बहुव्रीहि

मिगनयणाइं इव णयणाणि जाए सा मिगनयणा। चंदस्स मुहं इव मुहं जाए सा चंदमुही।

प्रयोग वाक्य

सुसीला तुंगणासिआ अत्थि। दक्खिणपएसवासिणीओ इत्थीओ दीहउरीओ कहं भवंति? मज्झ बहिणी सुएसी अत्थि। किं तस्स भगिणी अणुसूआ अत्थि? पीवरी दंसणे वि सोहणा न लग्गइ। जुवई पइणा सह उज्जाणम्मि परिअडइ। णिउणा गिहस्स कज्जं कुसलत्तेण करेइ। गिहिणी पइणा सह चिंतणं करेइ। पुत्तवई एगं कण्णं अहिलसइ। आविउज्झा सतंता भविउं इच्छइ।

धातु प्रयोग

सो सम्मं पडिसंखाइ। सो णियवत्तं पडिसंखेवइ। भोगे धम्मं, जो एवं पडिसंचिक्खे सो असच्चं जंपइ। सरोजा सच्चं पडिसाहइ। मुणी वेउव्विअलद्धि पडिसाहरइ। मए लसुणभक्खणं पडिसुणिअं। पडिसेवी मुणी अणायारं पडिसेवइ। आयरियो जोइसगंथं पडिहरइ। केण कारणेणं तुमं भविस्सं पडिहासि? सो झाणजोगी अत्थट्ठिओ अमेरिआए घडणं सक्खं पडिहासइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

ऊंचे नाकवाली स्त्री अपने पति से झगडा करती है। बडे पेटवाली स्त्री को चलने में कठिनाई अनुभव होती है। अच्छे केशवाली स्त्री हमारे घर में कुसुम ही है। शीघ्र प्रसववाली स्त्री के दस बच्चे हैं। युवती श्रम करने में नहीं थकती है। चतुर स्त्री बातचीत में अपनी चतुराई दिखाती है। पुत्रवती अपने भाग्य की सराहना करती है। गृहपत्नी ही वास्तव में घर है। परतंत्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्री मन में दुःख पाती है।

धातु का प्रयोग करो

वह सबके साथ अच्छा व्यवहार करता है। वह अपने भाषण को क्यों नहीं समेटता है? परस्पर के व्यवहार पर चिंतन करना चाहिए। उसने अपने आरोपों का उत्तर दिया। तुमने अपनी इंद्रियों को विषयों से निवृत्त किया। प्रतिदिन साधुओं के एक बार दर्शन करने की मैंने प्रतिज्ञा ली है। असत्य बोलने का त्याग लेकर भी वह असत्य बोला। उसने उत्तराध्ययन सूत्र फिर से पूर्ण किया। आचार्य भिक्षु ने किस ज्ञान से जाना कि साधु विहार कर आ रहे हैं, तुम सामने जाओ। एक महिला ने बताया कि इस वर्ष भारत का शासक बदलेगा।

प्रश्न

१. बहुव्रीहिसमास का दूसरा नाम क्या है? उसके नामकरण के पीछे कारण क्या है?
२. बहुव्रीहि समास करने के बाद उसमें लिंग और वचन कौन से होते हैं? तथा क्यों?
३. समानाधिकरण और व्यधिकरण किसे कहते हैं?
४. बहुव्रीहि समास के विग्रह में किस शब्द का प्रयोग आवश्यक होता है और उसमें कौन सी विभक्ति होती है?
५. नीचे लिखे शब्दों का समास विग्रह करो—
पीअंबरो, नट्ठमोहो, महाबाहू, अपुत्तो, अणुज्जमो पुरिसो। चरणधणा साहवो। विहवा, अवरूवो, जिअकामो, जराजज्जरियदेहे।
६. नीचे लिखे समास किए हुए शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो—
भट्ठो आयारो जाओ सो—भट्ठायरो। धुओ सव्वो किलेसो जस्स सो—धुअसव्वकिलेसो। णिग्गया लज्जा जस्स सो—णिलज्जो। अइक्कंतो मग्गो जेण सो—अइमग्गो रहो।
७. ऊंचे नाक वाली, बडे पेट वाली, अच्छे केशवाली, शीघ्र प्रसववाली, मोटी स्त्री, युवती, पुत्रवती, चतुरस्त्री, गृहपत्नी, परतंत्रस्त्री—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
८. पडिसंखा, पडिसंखेव, पडिसंचिक्ख, पडिसाह, पडिसाहर, पडिहर, पडिहा, पडिहास, पडिसुण, पडिसेव—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (स्त्री वर्ग ४)

पनिहारी—पाणिअहारी
गंधद्रव्य चुनने वाली—गंधिआ
फूल चुनने वाली—अंबोच्ची
ज्योतिषी की स्त्री—गणई
नौकरानी—दुल्लसिआ (दे०)
पान बेचने वाली—डोंगिली (दे०)
बच्चों को खेलकूद कराने वाली—किड्डाविया
नटी—नडी
दूती—अंतीहारी
दासी—दासी
धीवर की स्त्री—धीवरी
धनी की स्त्री—धणपत्ती, धणमंती
अध्यापिका—उवज्झायणी

० ० ०

विशाल (उदार)—उराल (वि)
भक्ति—भत्ति (स्त्री)
जन्मपत्रिका—जम्मपत्तिया
कृपापात्र—किवापत्तं

धातु संग्रह

पणच्च—नृत्य करना
पणय—स्नेह करना
पणाम—नमाना
पणाम—उपस्थित करना
पणास—नाश करना
पण्णा—प्रकर्ष से जानना
पणिवय—नमन करना, वंदन करना
पणिहा—ध्यान करना, एकाग्र चिंतन करना
पणोल्ल—प्रेरणा करना
पण्हुअ—झरना, टपकना

द्वंद्व—

जिसमें सब पद प्रधान हों तथा जिसके विग्रह में च, अ या य शब्द का प्रयोग होता हो उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। इसके दो भेद हैं—(१) इतरेतर (२) समाहार।

(१) **इतरेतर**—जिसमें पृथक्-पृथक् प्रत्येक शब्द का समान महत्त्व होता है उसे इतरेतर द्वंद्व कहते हैं। इसमें प्राकृत में बहुवचन ही आता है। लिंग अंतिम शब्द के अनुसार होता है।

नेत्तं अ नेत्तं य त्ति = नेत्ताइं
माआ च पिआ य इत्ति = पिअरा
सासू य ससुरो य इत्ति = ससुरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवा य देवीओ य = देवदेवीओ

(२) **समाहार**—जिसमें पृथक्-पृथक् शब्दों का महत्त्व न होकर केवल समूह का महत्त्व होता है उसे समाहारद्वन्द्व कहते हैं। इसमें एकवचन और नपुंसकलिंग होते हैं।

घडो य संख य पडो य = घडसंखपडं
तवो य संजमो य एएसिं समाहारो = तवसंजमं
पुण्णं य पावं य = पुण्णपावं
णाणं य दंसणं य चरित्तं य = णाणदंसणचरित्तं
असणं य पाणं य = असणपाणं

एकशेष द्वंद्व—

जिसमें दो शब्दों या अनेक शब्दों में से एक शेष रहकर दोनों या सब का बोध कराए उसे एकशेषद्वन्द्व कहते हैं।

जिणो य जिणो य जिणो य त्ति = जिणा
माआ अ पिआ य त्ति = पिअरा
सासू य ससूरो अ त्ति = ससुरा

प्रयोग वाक्य

पाणिअहारी जुगवं दो घडाइं तलायत्तो आणेइ। किड्डाविया सिसुणो कीडावेइ। धीवरी मच्छा पयावेइ। नडी आपणम्मि खेलं पदंसइ। धणपत्ती उरालचित्तेण धणं वितरइ। दुल्लसिआ गिहस्स सव्वाइं कज्जाइं करेइ। दासी-परंपरा अज्जत्ता न चलइ। गणई वि जम्मपत्तियं करेइ। अंबोच्ची मालमवि गुंफइ। अंतोहारी अंतेउरीए किवापत्तं भवइ। उवज्झायणी सिसू पढावेइ। डोंगिली दिवहम्मि एव तंबोलाइं विक्कीणइ। समये समये गंधिआ वि हट्टे उवविसइ।

धातु प्रयोग

णट्टई किमट्ठं पणच्चइ। सुसीला विमलेण सह पणयइ। आयरिएण भिक्खुणा रायणयरवासीणं (राजनगरवासी) सावगा पणामिआ। नायमंदिरे तेण तुमं पणामिओ। माली कहं उज्जाणं पणासइ? सावगा भत्तिपुण्णेण गुरुं पणिवयंति। मुणी सुहो (शुभ) एगंते पणिहाइ। थेरो सेहं पढिउं पणोल्लइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

बच्चों को खेल कूद कराने वाली के मन में ममत्व नहीं है। नौकरानी सेठानी के कटु वचनों को सहन नहीं करती है। नटी का खेल देखने कल कौन-कौन जाएंगे? धीवर की स्त्री ने कभी भी आम नहीं खाया। पनीहारी आज हमारे घर में क्यों नहीं आई? वस्तुओं की तरह स्त्री का भी विक्रय होता था,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह दासी कहलाती थी। क्या ज्योतिषी की स्त्री ज्योतिष के विषय में कुछ नहीं जानती? गंधद्रव्य बेचने वाली स्त्री का नाम क्या आप जानते हैं? फूल चुनने वाली स्त्री दिन में ३० माला बनाती है। दूती बहुत चालाक होती है। अध्यापिका बच्चों को स्नेह से पढाती है। पान बेचने वाली दिन में १०० रु० कमाती है। धनी की स्त्री भावना से उदार नहीं है।

धातु का प्रयोग करो

सुशीला क्या तुम कल स्कूल में नाचोगी? जो जितना जल्दी स्नेह करता है वह उतना ही जल्दी तोडता भी है। मुनि ने अहंकारी को भी नमाया। कल मैं आपको न्यायाधीश के सामने उपस्थित करूंगा। उसने अपनी कुल परंपरा का नाश कर दिया। मैं भगवान पार्श्वनाथ को वंदन करता हूं। क्या तुम प्रतिदिन घर में ध्यान करते हो? उसने मुझे तुम्हारे पास आने की प्रेरणा दी। ध्यानयोगी ने अपनी प्रज्ञा से तत्त्वों को प्रकर्ष से जाना। तुम्हारी स्कूल की छत से वर्षा में पानी टपकता है।

प्रश्न

१. द्वन्द्व समास किसे कहते हैं?
२. द्वन्द्व समास के कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद को समझाते हुए दो-दो उदाहरण दो।
३. द्वन्द्व समास के पांच उदाहरण दो और उन्हें दूसरे भेदों में परिवर्तन करो।
४. समास विग्रह करो—पिअरा, ससुरा, असणपाणं, तवसंजमं, पइपुत्ता, वाणरमोरहंसा, सुहदुक्खाइं, सुहदुक्खं, जिणा, देवदाणवगंधव्वा, उसहवीरा, अजियसंतिणो, पुण्णपावाइं, पइदेअरपुत्तं।
५. नीचे लिखे समासितपदों में बताओ कौनसा पद शुद्ध या अशुद्ध है और क्यों? पुण्णपावं, पुण्णपावाइं। सुहदुक्खाइं, सुहदुक्खं। तवसंजमा, तवसंजमं। णाणदंसणचरित्ताइं, णाणदंसणचरित्तं।
६. पनिहारी, बच्चों को खेलकूद कराने वाली, गंधद्रव्य बेचने वाली, फूल चुनने वाली, ज्योतिष की स्त्री, नौकरानी, पान बेचने वाली, नटी, दूती, दासी, धीवर की स्त्री, धनी की स्त्री, अध्यापिका—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. पणच्च, पणय, पणाम, पणाम, पणास, पणिहा, पणिवय, पणोल्ल, पण्णा, पण्हअ—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो।
८. णट्टई, बंभणी, किच्चा, कामुआ, पणसुंदरी, चवला, पीवरी, णिउणा, सुएसी—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८१ तद्धित

शब्द संग्रह (राजनीति वर्ग)

राष्ट्रपति—रट्ठवई (पुं)
मंत्री—मंती (पु)
नेता—अग्गणी
राज्यपाल—रज्जवालो
दूत—दूयो
छावनी—छायणिया
संसद—संसया
विधानसभा—विहाणसहा
उपराष्ट्रपति—उवरट्ठवई (पुं)
विधायक—विहाअगो (सं)
तमाखू—तंबूकूडो
प्रधान मंत्री—पहाणमंती
मुख्य मंत्री—मुहमंती
सरपंच—गामणी
कलेक्टर—जिलाहीसो
सेनापति—सेणावई
वोट—मयं
सदस्य—सब्भ (वि)
प्रतिनिधि—पइणिही (पु)
प्रस्ताव—पत्थावो
निर्वाचन—णिव्वायणं (सं)
समर्थन—समत्थणं

धातु संग्रह

ममा—ममता करना
मरह—क्षमा करना
मरिस—सहन करना
मह—मथना, विलोडन करना
मिस्स—मिश्रण करना, मिलाना
मा—माप करना
माण—सम्मान करना
मिल—मिलना
गिला—म्लान होना
अक्खोड—आस्फोटन करना, एक बार झडकाना

तस्येदं

संस्कृत में 'तस्येदं' का अर्थ है—उसका यह। प्राकृत में इस अर्थ में केर आदि प्रत्यय होते हैं।

नियम ६३४ (इदमर्थस्य केरः २।१४७) इदं अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को प्राकृत में केर प्रत्यय होता है। युष्मदीयः (तुम्हकेरो) तुम्हारा। अस्मदीयः (अम्हकेरो) हमारा।

नियम ६३५ (पर-राजभ्यां क्क-डिक्कौ च ३।१४८) 'उसका यह' अर्थ में पर शब्द से क्क और केर प्रत्यय तथा राजन् शब्द से डिक्क और केर प्रत्यय होते हैं। परकीयम् (पारक्कं, परक्कं, परकेरं) पराया, दूसरे का।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकीयम् (राइक्कं, रायकेरं) राजा का।

(नियम ७५ अतः समृद्ध्यादौ वा १।४४) से परक्कं के आदि अ को आ हुआ है।

नियम ६३६ (युष्मदस्मदोञ एच्चयः २।१४६) तुम्ह और अम्ह शब्द से 'उसका यह' अर्थ में संस्कृत के अञ् प्रत्यय को एच्चय प्रत्यय होता है। यौष्माकम् (तुम्हेच्चयं) तुम्हारा। आस्माकम् (अम्हेच्चयं) हमारा।

संस्कृत शब्दों से बने प्राप्त प्राकृत शब्द—

मईयो (मदीयः) मेरा। आरिसो (आर्षः) ऋषियों का। उपरितन (उवरिल्लं) ऊपर का।

प्रयोग वाक्य

सतंतभारहस्स पढमो रट्ठवई सिरीरायिंदपसायो आसि। राहाकिण्हो कया उवरट्ठवई आसि? पहाणमंती चेअ खिप्पं परिअट्टइ तया देसस्स विआसो कहं भवे? मुहमंती केवलं भासणं देइ। सिक्खामंती अमुम्मि नयरे कया आगमिहिइ? अज्जत्ता अग्गणिणो परिभासा भिण्णा अत्थि। गामणी गामस्स विआसस्स विसये चिंतइ। रट्ठवइसासणे चेअ रज्जवालस्स पभावो वड्ढइ। दूयो तम्मि देसे सदेसस्स पइणिहित्तं करेइ। सेणावई देसस्स रक्खणट्ठं पइसमयं जागरूओ भवइ। छायणियाए सेणा वसंति। मयं गहिउं तुमं अत्थ कहं आगओ? संसयाए सब्भो भविउं को न अहिलसइ? विहाणसहाए अज्झक्खो कोऽत्थि? जिलाहीसो अहिआरपुण्णो भवइ। किं मज्झ पत्थावे तुज्झ समत्थणं अत्थि? विहाणसहाए केत्तिला जणा संति?

धातु प्रयोग

सो परिवारं ममाइ। जीवो पइक्खणं मरइ। बहू सासुं मरिसइ। मरहंतु णं देवाणुप्पिया। महिंदो दहिं महइ। वावरी आवणम्मि वत्थाइं माइ। किं तुमं पिउं न माणसि? तिवरिसस्स पच्छा दक्खिणदेसे साहुणो साहूहिन्तो मिलिस्संति। पाणिअस्स अहावे पुप्फाइं मिलांति। मुक्खो तंबूकूडम्मि घयं मिस्सइ।

प्रत्यय प्रयोग

राइक्को पुरिसो अहिआरेण संपण्णो भवइ। पारक्कं धणं धूलिव्व होइ। तुम्हेच्चयो भाया अज्ज कत्थ गमिस्सइ? अम्हेच्चयं कज्जं किं तुमं करिस्ससि? तुम्हकेरं णाणं तुज्झ पासे एव विज्जइ। अम्हकेरे गिहे आयरिओ अज्ज किं आगमिस्सइ?

प्राकृत में अनुवाद करो

राष्ट्रपति देश का पहला नागरिक होता है। प्रधानमंत्री बार-बार राष्ट्रपति के पास जाता है। उपराष्ट्रपति विद्वान व्यक्ति है। मंत्री काम करने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का आश्वासन देते हैं पर करते नहीं। मुख्य मंत्री हमारे गांव में कभी नहीं आए। नेता को जनता का सही मार्गदर्शन करना चाहिए। सरपंच रुपये लेकर काम करा देता है। कलेक्टर अवस्था में छोटा है पर बुद्धिमान है। राज्यपाल जब सत्ता में नहीं होते तब शांति का जीवन जीते हैं। दूत अपने देश का प्रतिनिधित्व अपनी पटुता से करता है। सेनापति की कुशलता ही देश को विजय दिलाती है। अपने क्षेत्र में संसद सदस्य का महत्त्व होता है। रमेश इस क्षेत्र से विधान सभा में जाएगा। छावनी ही सेना का घर होता है। कार्यकर्ता वोटों के लिए प्रचार करते हैं। ग्रामवासियों ने मंत्री के सामने क्या कहा ? कौन सा प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण है ?

धातु का प्रयोग करो

वीतराग किसी पर ममत्व नहीं करते। आज गांव में कौन मर गया ? आप मुझे क्षमा कर दें। जो सहता है, वह परिवार के साथ चल सकता है। देवों ने और असुरों ने समुद्र का मंथन किया। उस साधु ने अपना वस्त्र क्यों नहीं मापा ? जो दूसरों का सम्मान करता है, वह सम्मान पाता है। भाई बहन से मिलने के लिए उसके गांव गया। उसका मुख म्लान क्यों हो गया ? धर्म में किसी का मिश्रण नहीं होता है।

प्रत्यय का प्रयोग करो

तुम्हारी माता सुशील है। दूसरे की स्त्री माता के समान होती है। तुम्हारा भाषण कल बहुत अच्छा था। हमारी दुकान में सब चीजें मिलती हैं। राजा की सेना हमारे गांव में आ गई। तुम्हारी स्कूल में कितने लडके पढते हैं ?

प्रश्न

१. प्राकृत में इदं अर्थ में क्या-क्या प्रत्यय होते हैं ? दो उदाहरण दो।
२. पर और राजन् शब्द से इदं अर्थ में क्या प्रत्यय होता है ?
३. तुम्हेच्चयं और अम्हेच्चयं इन रूपों में किस नियम से किस अर्थ में क्या प्रत्यय हुआ है ?
४. नेता, मंत्री, मुख्यमंत्री, सरपंच, प्रधानमंत्री, दूत, सेनापति, छावनी, राज्यपाल, जिलाधीश, संसद, विधान सभा, विधायक, कलेक्टर, वोट, सदस्य, प्रस्ताव, निर्वाचन, आदेश, न्याय और प्रतिनिधित्व—इन शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।
५. ममा, मरह, मरिस, मह, मा, माण, मिल, गिला अक्खोड और मिस्स धातुओं के अर्थ बताओ और इन्हें वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (धातु-उपधातु वर्ग)

सोना—सुवण्णं, कणगं
चांदी—रययं, जायरूवं
तांबा—तंबो
सीसा—तउं
लोह—लोहं
जस्ता—जसदो
रांगा—रंगं (दे०)
कांस्य—कंसं
कालालोह—कालायसं
पीतल—पित्तलं
अभ्रक—अब्भपडलं (दे०)
तूतिया—तुत्थं (सं)
कलइ—सरययरंगचुण्णं (सं)

० ० ० ०

खिचडी—किसरा
संस्कार—सक्कारो

धातु संग्रह

मीस—मिलाना, मिश्रण करना
मुअ—छोडना
मुच्छ—मूर्च्छित होना
रंज—खुशी करना
उक्किर—खोदना, शस्त्र से पत्थर आदि पर अक्षर आदि लिखना
पक्खोड—प्रस्फोटन करना, बार-बार झाडना
रंग—रंगना
रंध—रांधना, पकाना
रज्ज—अनुराग करना
रम—संभोग करना

मत्वर्थ

वह इसका है या इसमें है—इस अर्थ में संस्कृत में जो प्रत्यय होते हैं उसे मत्वर्थ प्रत्यय कहते हैं। मत्वर्थ हिन्दी में 'वाला' अर्थ को प्रकट करता है। जैसे—धनवाला, रसवाला बुद्धिवाला आदि। प्राकृत में इस अर्थ में आल, आलु आदि ९ प्रत्यय होते हैं।

नियम ६३७ (आल्विल्लोल्लाल-वन्त-मन्तेत्तेर-मणा मतोः २।१५९) मतु प्रत्यय के स्थान में आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त, इत्त, इर, मण ये ९ प्रत्यय आदेश होते हैं।

आलु—स्नेहवान् (नेहालू) स्नेहवाला। दयालुः (दयालू) दयावाला। ईर्ष्यालुः (ईसालू) ईर्ष्यावाला।

इल्ल—शोभावान् (सोहिल्लो) शोभावाला। छायावान् (छाइल्लो) छायावाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्ल—विचारवान् (विआरुल्लो) विचार वाला। श्मश्रुवान् (मंसुल्लो) दाढीवाला।

आल—शब्दवान् (सद्दालो) शब्दवाला। ज्योत्स्नावान् (जोण्हालो) ज्योत्स्ना वाला।

वन्त—धनवान् (धणवंतो) धनवाला। भक्तिमान् (भत्तिवंतो) भक्तिवाला।

मन्त—श्रीमान् (सिरिमंतो) लक्ष्मीवाला। धीमान् (धीमंतो) बुद्धिवाला।

इत्त—काव्यवान् (कव्वइत्तो) काव्यवाला। मानवान् (माणइत्तो) मानवाला।

इर—गर्ववान् (गव्विरो) गर्ववाला। रेखावान् (रेहिरो) रेखावाला।

मण—धनवान् (धणमणो) धनवाला। शोभावान् (सोहामणो) शोभावाला। भयवान् (बीहामणो) भयवाला।

संस्कृत शब्दों से बने शब्द

धनिन् (धणि) धनवाला। तपस्विन् (तवस्सि) तपस्वी। मनस्विन् (मणंसि) बुद्धिमान्।

प्रयोग वाक्य

सुवण्णस्स अंगुलीयो मज्झ करांगुलीए विज्जइ। रययस्स नेउरं तुज्झ भगिणीए पासे नत्थि। रामचंदो कंसस्स थालम्मि भोयणं करेइ। लोहस्स दीहकडाहो मज्झ गिहे अत्थि। पित्तलस्स सुफणीए सागो अत्थि। कालायसस्स खणी दक्खिणपएसे अत्थि। जसदा सासं (श्वासरोग) नस्सइ। तउं गुणेसुं रंगसमाणं विज्जइ। चुण्णजोगेण तंबस्स सुवण्णं भवइ। रंगस्स भस्सं बंगं कहिज्जइ। अब्भपडलस्स खणी कस्सिं पएसे विज्जइ? तुत्थं कंडुं (खाज) कुट्ठं (कोढ) य नस्सइ। रंगस्स चुण्णं रययस्स मिस्सेण 'कलइ' भवइ।

धातु प्रयोग

मुग्गदालीए तुवरी दाली न मीसउ। सो धम्मं न कयावि मुंचिहिइ। लट्ठिपहारेण सो मुच्छिओ। धणवंतो णियसदणं रंगइ। सो परचित्तरंजणे कुसलो अत्थि। भगिणी किसरं रंधइ। किं तुमं धम्मं रज्जसि? मोहणो न रमइ। सो महावीरस्स जीवणं उक्किरइ।

प्रत्यय प्रयोग

दयालुस्स हिअए करुणा विज्जइ। छाइल्लम्मि रुक्खम्मि लोआ गिम्हकाले वीसमंति। विआरुल्लो णरो पत्तेयम्मि विसये चिंतेइ। धणवंतो धणेण सत्ति पदंसइ। धीमंतो धणंजयो सुंदरं लेहं लिहइ। माणइत्तो मोहणो कत्थ वि न नमइ। गव्विरो णरो मोरउल्ला अथिरे रूवे गव्वं करेइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

कारीगर पत्थर पर अक्षर उत्कीर्ण कर उसमें सीसा भरता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोने का कुंडल तुम्हारे पास है। चांदी की तरह मन को उज्ज्वल रखो। कांसे की गिलास में वह पानी पीता है। काला लोह कहां मिलता है? लोहे की संडासी हर घर में मिलती है। वह पीतल के बर्तन बेचता है? जस्ता नेत्रों के लिए हितकर है। सीसा प्रमेहनाशक होता है। सोना बनाने में शुद्ध तांबा काम में आता है। अभ्रक चांदी के समान चमकती है। रांगे की भस्म औषधि में काम आती है। कलइ तांबे और पीतल के वर्तनों पर किया जाता है।

धातु का प्रयोग करो

लोभी मनुष्य अनेक वस्तुओं में मिश्रण करता है। उसने तुमको क्यों छोड दिया? लक्ष्मण युद्ध में मूर्च्छित हो गया। उसने अपनी बहन को खुश कर दिया। धार्मिक संस्कारों से उसका मन रंग दो। उसका धर्म के प्रति अनुराग क्यों नहीं है? सभाभवन में भिक्षु स्वामी का जीवन कौन उत्कीर्ण करेगा?

प्रत्यय का प्रयोग करो

स्नेही व्यक्ति का हृदय स्नेह से पूर्ण होता है। दाढ़ी-मूंछ वाला मनुष्य अपनी दाढी और बढाता है। आज शब्द वाली हवा चलती है। इस मनुष्य में भक्ति बहुत है। लक्ष्मीवान् भी लक्ष्मी की पूजा करता है। रेखा वाला पत्र मेरे पास लाओ। भय वाला आदमी रात में अंधेरे से भी डरता है।

प्रश्न

१. मत्वर्थ किसे कहते हैं?
२. मतु प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में कौन से प्रत्यय आदेश होते हैं?
३. आलु, इल्ल, आल, उल्ल, वन्त, मन्त, इर, मण, इत्त इन प्रत्ययों के दो-दो उदाहरण दो।
४. सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कांस्य, सीसा, रांगा, काला लोह, अभ्रक, कलइ, जस्ता, पीतल, तूतिया—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. मीस, मुअ, मुंच, मुच्छ, रंज, रंग, रंध, रज्ज, रम, उक्किर—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (स्पर्श वर्ग)

गरम—उसिण (वि)	हल्का—लहुय (वि)
ठंडा—सीय (वि)	भारी, बडा—गरुय (वि)
कठोर—कक्कस (वि)	कोमल—मउय (वि)
रूखा—लुक्ख (वि)	चिकना—णिद्धं
न भारी न हल्का—अगरुलहु (वि)	शीतोष्ण, ठंडा तथा गरम—सीउण्हं

० ० ० ० ०

बर्फ—हिमं	गूंद—णिज्जासो

धातु संग्रह

रय—बनाना, निर्माण करना	रिज्झ—रीझना, खुशी होना
रव—बोलना	री—जाना, चलना
रस—चिल्लाना, आवाज करना	रुअ—रोना
रा—शब्द करना,	रुंध—रोकना, अटकाना
रा—चिपकना, श्लेष करना	रुच (दे)—पीसना

भव अर्थ

संस्कृत के तत्रभवं (उसमें होने वाला) अर्थ के लिए प्राकृत में इल्ल और उल्ल प्रत्यय होता है।

नियम ६३८ (डिल्ल-डुल्लौ भवे २।१६३) भव अर्थ में नाम से डिल्ल (इल्ल) और डुल्ल (उल्ल) प्रत्यय होते हैं।

गाम+इल्ल=गामिल्लं (ग्रामे भवं) ग्राम में होने वाला
हेट्ठ+इल्ल=हेट्ठिल्लं (अधस्तनं) नीचे होने वाला
घर+इल्ल=घरिल्लं (गृहे भवं) घर में होने वाला
अप्प+उल्ल=अप्पुल्लं (आत्मनि भवं) आत्मा में होने वाला
नयर+उल्ल=नयरुल्लं (नगरे भवं) नगर में होने वाला

प्रयोग वाक्य

सो उसिणं दुद्धं पिवइ। गिम्हकाले सीयं जलं रोअइ। कक्कसा भासा न जंपणीआ। तुमं ववहारम्मि लुक्खो सि। कप्पासो लहुयो भवइ। सो कम्मणा गरुयो अत्थि। तस्स हिअयं मउयं अत्थि। णिद्धम्मि वत्थुम्मि रयो खिप्पं लग्गइ। अहं सीउण्हेहिं सलिलेहिं ण्हामि। आआसो अगरुलहू अत्थि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

सो सिलोगा रयइ । पक्खिणो पच्चूसे रवंति । सो अरण्णेव्व गिहे रसइ । संपइ को राइ ? सिसू माअरं राइ । जया राया रिज्झइ तया किमवि अवस्सं देइ । साहू भूमिं अवलोइऊण रीइ । बालो केण कारणेण रुअइ । सासू वरस्स (दुलहा) मग्गं केण कारणेण रुंधइ ? दासी अण्णं रुचइ ।

प्रत्यय प्रयोग

अज्जत्ता गामिल्ला जणा णयरे वसंति । सीयकाले हेट्ठिल्लं जलं उसिणं भवइ । अप्पुल्लं सुहं केण लद्धं ? नयरुल्ला ववत्था गामम्मि न भवइ । घरिल्लं गावीए घयं सरीरस्स उसिणत्तं समइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

अति गरम दूध नहीं पीना चाहिए । बर्फ का ठंडा पानी स्वास्थ्य के लिए अहितकर है । ब्रह्मचारी की शय्या कठोर होनी चाहिए । रूखा आदमी स्नेह का व्यवहार नहीं करता । साधु को उपकरणों से हल्का रहना चाहिए । भारी वस्तु अच्छी नहीं होती । कोमल शब्दों का व्यवहार करो । चिकना पदार्थ अधिक नहीं खाना चाहिए । दूध शीतोष्ण पीना चाहिए । ऐसा पदार्थ कौन-सा है जो न भारी है और न लघु ।

धातु का प्रयोग करो

वह ग्रन्थ की रचना करता है । अधिक नहीं बोलना चाहिए । बच्चा किसके लिए चिल्लाता है ? बाहर देखो, कौन शब्द करता है ? वह गूंद से पत्र चिपकाता है । तुम्हारे कार्य ने उसे रिझा लिया । मनुष्य अपनी गति से चलता है । जो काम में जाते समय रोता है वह क्या समाचार लाएगा ? वह तुम्हारे मार्ग को रोकता है । आज उसने क्या पीसा ?

प्रत्ययों का प्रयोग करो

ग्राम में होने वाली स्कूल में लडकियां सुविधा से पढ सकती हैं । ध्यानगृह घर के नीचे है । यह नवनीत घर का है । क्रोध आदि आत्मा में होने वाले दोष हैं । नगर में होने वाले स्वागत का महत्त्व होता है ।

प्रश्न

१. तत्रभवं शब्द का हिन्दी अर्थ क्या है ?
२. भव अर्थ में प्राकृत में कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ? दो-दो उदाहरण दो।
३. गरम, ठंडा, कठोर, कोमल, रूखा, चिकना, हल्का, भारी शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ।
४. रय, रस, रव, रा, रिज्झ, री, रुअ, रुंध और रुच धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।
५. अंतीहारी, गणई, दुल्लसिआ, रज्जवालो, जिलाहीसो, पहाणमंती, जसदो, सुवण्णं, रययं शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (रोग वर्ग १)

ग्रीवाफूलन—गंडमाला
कोढ—कोढो
पागलपन—अवमारो
काणापन—काणियं
कूबड़ापन—खुज्जियं
गूंगापन—मूयं
भस्मकरोग—गिलासिणी
शोथ—सूणिओ
जलंधर—जलोयरं
ब्याऊ—पायफोडो
फुनसी—फुडिआ
कंपनवात—वेवयो
हाथीपगा—सिलिवइ (वि)
राजयक्ष्मा (टी. बी) रायंसि (पुं)
उदररोग—उदरं
हस्तविकलता—कुणियो
पंगुता—पीढसप्पि (पुं)
आंधासीसी—अवहेडगो
ववासीर—अरसो
केशझडना (गंजापन)—केसघायो (सं)
पीठ में गांठ—पिट्ठिगंठि (पुं० स्त्री)

० ० ० ०

स्मृति—सई (स्त्री)
प्रस्थान—पत्थाणं

धातु संग्रह

रोअ—निर्णय करना
रोह—उत्पन्न होना
लंघ—लांघना
लंछ—कलंकित करना
लभ, लंभ—प्राप्त करना
लक्ख—जानना, पहचानना
लग्ग—लगना, संग करना
लज्ज—शरमाना
लल—विलास करना, मौज करना
लय—ग्रहण करना, लेना

शील आदि प्रत्यय

शील आदि के तीन अर्थ हैं—शील (स्वभाव), धर्म (कुल आदि आचार), साधु (अच्छा)। संस्कृत में तृन्, इष्णु आदि प्रत्यय शील अर्थ में कर्त्ता से होते हैं। प्राकृत में इस अर्थ में इर प्रत्यय होता है।

नियम ६३१ (शीलाद्यर्थस्येरः २।१४५) शील, धर्म और साधु अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को इर आदेश होता है।

हसनशीलः (हसिरो)
लज्जावान् (लज्जिरो)
वेपनशीलः (वेविरो)
उच्छ्वसनशीलः (ऊससिरो)
रोदनशीलः (रोविरो)
जल्पनशीलः (जम्पिरो)
भ्रमणशीलः (भमिरो)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रयोग वाक्य

मोहणो गंडमालाए पीडिओ अत्थि। अणेगेसुं जणेसु अज्जत्ता कोढो दिस्सइ। सुसीला अवमारेण पीडिया आसि परं मंतजवेण रोगरहिया जाआ। सउणदिट्ठीए काणियं असुहं अत्थि। मूयस्स सई अहिया भवइ। समये-समये अणेगे जणा सूणिअस्स परिणामं अणुभवंति। मुणी संगीओ तीसवरिसपुव्वं गिलासणीए वसीभूओ आसि। वेवयस्स तिण्णि कारणाणि संति। दक्खिणदेसस्स एगभागे सिलिवइपीडिआ अणेगे जणा संति। जत्थ अजाओ राओ सयंति तत्थ रायंसिस्स रोगी चिट्ठइ, सयइ वा। उदरं जया भवइ तया रोगिस्स अवत्था दंसणीआ भवइ। जुज्झे सो कुणिओ जाओ। अरसो वायजणिओ य भवइ। पीढसप्पिणो रोगी अज्जत्ता साहणपओएण चलइ धावइ य। अवहेडगे सीसस्स अद्धभागो दुक्खइ। रायचंदस्स पुव्वं पिट्ठिगंठी आसि। सीयकाले साहुणो, साहुणीओ य पायफोडेण पीडं अणुभवंति। रमेसस्स बालत्तम्मि केसघायो आसि। कालुगणिस्स एगा फुडिआ वि पाणघाया जाआ। जलोयरं कस्स मुणिस्स अत्थि?

धातु प्रयोग

विहारकाले मग्गस्स संका भवेज्ज तया पुच्छित्ता रोअए। जत्थ अक्कं ववइ तत्थ अंबं न रोहइ। तुमं गहणार्डवि कया लंघिस्ससि? सो तुमं कहं लंछइ? जइ तुमं अज्ज पएसे पत्थाणं करिहिसि तया पउरं धणं लंभिहिसि लभिहिसि वा। अहं तुं सम्मं लक्खामि। साहुसंगेण धम्मस्स रंगो लग्गइ। सा अत्थ आगमिउं लज्जइ। सा विज्जं लभिहिइ। तुज्झ किवाए अहं ललामि। उत्तमसिक्खा जत्थ कत्थावि मिलेज्ज लयणिज्जा।

प्राकृत में अनुवाद करो

हमारे गांव में किसी के ग्रीवाफूलन रोग नहीं है। एक व्यक्ति ने साधारण दवा से अपना कोढ मिटाया। सीता पागल कैसे हो गई? काणा व्यक्ति हृदय से स्वच्छ नहीं होता है। बुढापे में कूबडापन होना आवश्यक नहीं है। गूंगापन किस कर्म के उदय से होता है? शोथ से व्यक्ति मोटा दिखाई देता है। भस्मरोग में मनुष्य जितना भी खाता है सब भस्म हो जाता है। क्रोध से अथवा मैथुन से अथवा बीमारी से शरीर में कंपनवाय होता है। मरुभूमि में हाथीपगा देखने को कम लोग मिलते हैं। राजयक्ष्मा (टी. बी.) रोग संक्रामक होता है (संकामइ)। उदररोग भयंकर होता है। हाथ कटा हुआ मनुष्य परवश हो जाता है। आजकल बवासीर की चिकित्सा बहुत सरल है। उसके किस कारण से लंगडापन हुआ? आंधासीसी रोग की चिकित्सा मैं जानता हूं। उदरग्रन्थि रोग की क्या चिकित्सा है? जिसके पैर में ब्याऊ नहीं फटती, वह दूसरों की पीडा क्या जानता है? गंजापन से चेहरे की सुंदरता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम होती है। छोटी फुन्सी भी असावधानी से बहुत दुख देती है। एक साध्वी ने जलंधर रोग के कारण प्राण त्याग दिया।

धातु का प्रयोग करो

जहां शंका हो वहां अपनी बुद्धि से निर्णय करना चाहिए। आम का वृक्ष यहां पैदा नहीं होता है। क्या तुम इस पानी के प्रवाह को लांघ सकते हो? धन का लोभी धन के लिए दूसरों को कलंकित करता है। वह तुम से ज्ञान प्राप्त करता है। क्या तुम मुझे नहीं पहचानते? तुम्हें देखकर वह क्यों शरमाती है? विनय से विद्या प्राप्त होती है। जो विलास करता है वह अपना अमूल्य समय व्यर्थ में खोता है। वह विद्यालय से सम्मान ग्रहण करता है।

प्रश्न

१. शीलादि के तीन अर्थ कौन से हैं?

२. शील अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को क्या प्रत्यय आदेश होता है। कोई पांच उदाहरण दो।

३. ग्रीवाफूलन, कोढ, पागलपन, काणापन, कूबडापन, जलंधर, गूंगापन, गंजापन, भष्मकरोग, शोथ, पीठ में गांठ, कंपनवात, हाथीपगा, राजयक्ष्मा, उदररोग, हस्तविकलता, पंगुता, आंधासीसी, बवासीर, ब्याऊ, फुनसी आदि शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ?

४. रोअ, रोह, लंघ, लंछ, लंभ, लक्ख, लग्ग, लज्ज, लल, लभ, लय—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (रोग वर्ग २)

बुखार—जरो
भगंदर—भगंदरो
प्रमेह—पमेहो
जुखाम—पडिस्सायो
कब्ज, मलमूत्रावरोधजन्यरोग—गुदगहो (सं)
अंडकोशवृद्धि—अंडवड्ढणं
खाज—कंडू (स्त्री)
खांसी रोग—कासो
व्रण—फोडो
पित्तरोग— पित्तो, पित्तं
पेट की गांठ—उदरगंठि (पुं, स्त्री)
नासुर—नाडीवणो (सं)
वमन—वमणं
दस्तों का रोग—गहणी (सं) स्त्री
हिचकी—हिक्का
पथरी—मुत्तकिच्छं (सं)
अस्थि में भयंकर सोजन—विद्दहि (सं)
छींकरोग—छिक्का (दे०)
कफरोग—कफो
वायुरोग—वाउ (पुं)

० ०

व्यक्ति—विअत्ति

धातु संग्रह

लस— श्लेष करना, चमकना
लहुअ—लघुकरना
लाय—काटना, छेदना
लाल—स्नेहपूर्वक पालन करना
लाय—लगाना, जोडना
लालप्प—खूब बकना
लास—नाचना
लाह—प्रशंसा करना
लिच्छ—प्राप्त करने की इच्छा
लिप—लेप करना, लीपना

भाव

जिस गुण के होने से द्रव्य में शब्द का सन्निवेश (संबंध) होता है उस गुण को भाव कहते हैं। साधुता गुण के कारण ही साधु शब्द अपना अर्थ बोध देता है। संस्कृत में सब शब्दों से भाव में त्व और तल् प्रत्यय होता है। इनके अतिरिक्त कुछ शब्दों से इमन् और ट्यण् आदि प्रत्यय भी होते हैं। प्राकृत में भाव अर्थ में इमा, त्तण और त्त प्रत्यय होते हैं।

नियम ६४० (त्वस्य डिमा-त्तणौ वा २।१५४) भावसूचक त्व प्रत्यय को डिमा (इमा) और त्तण प्रत्यय विकल्प से होता है। पक्ष में त्व को त्त प्रत्यय होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इमा—पीनिमा, पीनत्वं (पीणिमा) मोटापन। पुष्पत्वं (पुप्फिमा) पुष्पपना।
त्तण—पीनत्वम् (पीणत्तणं) मोटापन। पुष्पत्वं (पुप्फत्तणं) पुष्पपना
त्त—देवत्वम् (देवत्तं) देवपना। साधुत्वम् (साहुत्तं) साधुपना।

संस्कृत परक पीनता शब्द का प्राकृत में पीणया भी होता है। इसी प्रकार अन्य शब्दों के भी रूप बनते हैं।

प्रयोग वाक्य

तुमं मुहु-मुहु जरपीडिओ कहं जाओ ? अत्थ भगंदरस्स चिइच्छा वरा न भवइ। पमेहेण सरीरो सिढलो भवइ। केन कारणेण तुमं पडिस्साएण पीडिओ जाओ। रमेसस्स गुदगहं पासिऊण तस्स पिआ चिंतापुण्णो जाओ। मरुभूमीए वि कस्सइ अंडवड्ढणं भवइ। कस्स विद्द्ही विज्जइ ? दहि-भक्खणेण कासो वड्ढइ। केन कारणेण तस्स फोडो न भरइ। महुरवत्थुणा पित्तो उवसामइ। तस्स उदरगंठी कहं वड्ढइ ? नाडीवणो वि भयंकरो भवइ। किं कारणमत्थि, सेहो साहू जं किमवि खाअइ तस्स वमणं भवइ ? गहणीए सरीरो सिढिलो होइ। हिक्का वि दीहकासा बलइ। मुत्तकिच्छे पाणिअं अहियं पाअव्वं। भूविदो मुणी सइ जुगवं सत्त छिक्काओ करेइ। केन कारणेण कफो विवड्ढइ। वाउरोगिस्स अवत्था अदंसणीआ भवइ।

धातु प्रयोग

सण्हम्मि वत्थुम्मि रयाइं खिप्पं लसंति। मुक्खेण सद्धिं वियायो नरं लहुअइ। सो तुम्ह संबंधं लायइ। माआ पुत्तं लालइ। विरोही मित्तेण सह लालप्पइ। सा अज्ज न लासिस्सइ। गुरुणा अज्ज तुमं लाहिओ। मुणी पत्तीए खंडाइं लायइ। अहं किमवि न लिच्छामि। सो वरिसम्मि सइ गिहं लिंपइ।

प्रत्यय प्रयोग

पीणिमा महं किंचि वि न रोअइ। आयारेण साहुत्तं सोहइ। संजम-दिट्ठीए देवत्ताओ मणुअस्स बहुमहत्तं अत्थि। पुप्फत्तणेण पायवो सोहइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

मुझे इस वर्ष पांच बार बुखार आया। किस कर्म के उदय से भगंदर होता है ? प्रमेह में मूत्र साफ नहीं आता। जुखाम भी कभी-कभी लंबे समय तक चलती है। मलावरोध (कब्ज) से मनुष्य कष्ट पाता है। अंडकोशवृद्धि दक्षिण के लोगों में अधिक मिलती है। अस्थि के सूजन की चिकित्सा सरल नहीं है। खांसी से नींद कम आती है। चीनी की बीमारी वाले का व्रण जल्दी नहीं भरता है। पित्त का लक्षण क्या है ? उसकी पेट की गांठ प्रतिदिन बढ रही है। एक साधु के नासूर का रोग मैंने देखा था। वमन होने के बाद मन में प्रसन्नता होती है। इस वर्ष किसको दस्तों का रोग हुआ था ? क्या हिचकी वायु से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आती है ? पथरी का रोग क्यों होता है ? खाज रोगी को खाज करना मीठा लगता है। जुखाम में छींक अधिक आती है। श्वेत वस्तु के प्रयोग से कफ बढता है। वायु रोग कितने प्रकार का होता है ?

धातु का प्रयोग करो

गूंद दो पन्नों का श्लेष करता है। स्त्री के साथ विवाद करने से मनुष्य की लघुता होती है। वह खेत को नहीं काटेगा। उसकी बहन ने भाई का स्नेह-पूर्वक पालन किया। जो वस्त्रों को जोडता है, क्या वह मन को नहीं जोड सकता ? सुशील उसके घर पर जाकर बहुत बका। विमला घर में ही नाचती है। जो दूसरों की प्रशंसा करता है, वह उसका प्रिय बनता है। तुम क्या प्राप्त करना चाहते हो ? वह अपनी दुकान को लीप रहा है।

प्रत्यय प्रयोग करो

मोटापन किसको प्रिय लगता है ? साधुत्व पूजनीय होता है, व्यक्ति नहीं। देव होकर भी यदि दूसरों को सताता है तो उसमें देवत्व नहीं है। मनुष्यत्व ही मनुष्य को आगे बढाता है।

प्रश्न

१. भाव किसे कहते हैं ?
२. प्राकृत में भाव अर्थ में कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ?
३. भाव में होने वाले प्रत्ययों का लिंग क्या है ?
४. बुखार, भगंदर, प्रमेह, जुखाम, मलावरोध (कब्ज), अंडकोशवृद्धि, अस्थि में सूजन, खांसी, व्रण, पित्त, कफ, वायु, पेट की गांठ, नासुर, वमन, दस्तों का रोग, हिचकी, पथरी, खाज, छींक रोग—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. लस, लहुअ, लाय, लाल, लाय, लालप्प, लास, लाह, लिच्छ, लिंप—इन धातुओं का अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (रोगी वर्ग)

अंधा—अंधो
बहरा—बहिरो
बेहोशीवाला—मुच्छिर (वि)
प्रलंब अंड वाला—पलंबंडो (सं)
खाज का रोगी—कच्छुल्लो
लंगडा—पंगू (पुं)
दस्त का रोगी—अइसारिओ
दाद का रोगी—दद्दुलो
वायु का रोगी—वाइओ
कूबडो—खुज्जो
खांसी का रोगी—कासिल्लो।
काणा—काणो
लूला (हस्तरहित) कुंटो
गूंगो—मूयो
वामन—वडभो
बुखारवाला—जरि (वि)
पित्त का रोगी—पित्तिओ
मोटे पेट वाला—तुंदिलो
कोढी—कोढिओ
कफ का रोगी—सिलिम्हिओ
चितकबरा—सबलो

धातु संग्रह

लिह्—चाटना
लुअ—छेदना, काटना
लुंच—बाल उखाडना, लुंचन करना
लुंप—लोपकरना, विनाश करना
लुक्क—छिपना
लुढ—लुढकना
लुभ—लोभ करना
लूड—लूटना
लोअ—देखना
उंज—सींचना, उत्सेचन करना

त्रस्, त्र और दा प्रत्यय

संस्कृत में पंचमी विभक्ति के अर्थ में तस् प्रत्यय होता है। प्राकृत में पंचमी विभक्ति के अर्थ में त्तो और दो प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

० सप्तमी विभक्ति के अर्थ में संस्कृत में त्रस् प्रत्यय होता है प्राकृत में त्र के स्थान पर हि, ह और त्थ प्रत्यय आदेश होता है।

० कालसूचक सप्तमी विभक्ति के अर्थ में संस्कृत के दा प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में सि, सिअं और इआ प्रत्यय विकल्प से होता है।

नियम ६४१ (त्तो दो तसो वा २।१६०) तस् प्रत्यय के स्थान पर त्तो और दो प्रत्यय विकल्प से आदेश होते हैं।

सर्वतः (सव्वत्तो, सव्वदो, सव्वओ) सब प्रकार से। एकतः (एगत्तो, एगदो, एगओ) एक प्रकार से। अन्यतः (अन्नत्तो, अन्नदो, अन्नओ) अन्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकार से। कुतः (कत्तो, कदो, कओ) कहां से, किससे। यतः (जत्तो, जदो, जओ) जहां से, जिससे। ततः (तत्तो, तदो, तओ) वहां से, उससे। इतः (इत्तो, इदो, इओ) यहां से, इससे।

नियम ६४२ (त्रपो हि-ह-त्थाः २।१६१) त्र प्रत्यय को हि, ह और त्थ ये प्रत्यय आदेश होते हैं।

हि—ज+हि=जहि (यत्र) यहां। त+हि=तहि (तत्र) वहां।

ह—ज+ह=जह (यत्र) यहां। त+ह=तह (तत्र) वहां।

त्थ—क+त्थ=कत्थ (कुत्र) कहां। अन्न+त्थ=अन्नत्थ (अन्यत्र) दूसरे में।

नियम ६४३ (वैकाद्दः सि-सिअं-इआ २।१६२) एक शब्द से परे दा प्रत्यय को सि, सिअं और इआ ये आदेश विकल्प से होते हैं। एक्कसि, एक्कसिअं, एक्कइआ, एगया (एकदा) एक समय में।

(ङे र्डाह डाला इआ काले ३।६५) नियम ५११ से कि यत् और तत् शब्दों से कालवाची सप्तमी को डाह, डाल और इआ ये तीन प्रत्यय विकल्प से आदेश होते हैं।

कदा (काहे, काला, कइआ) कब। यदा (जाहे, जाला, जइआ) जब। तदा (ताहे, ताला, तइआ) तब।

संस्कृत शब्दों से बने दा प्रत्यय के रूप—

यदा (जया) जब। सर्वदा (सव्वया) हमेशा। कदा (कया) कब। अन्यदा (अण्णया) अन्य समय में। तदा (तया) तब।

प्रयोग वाक्य

अंधो वि अण्णस्स साउज्जं अंतरेण सपण्णाए पहे चलइ। बहिरो किमवि न सुणइ। मूयो न जंपइ न सुणइ। काणेण लोआ भीअंति। कुंटो किं लिहिस्सइ? सा खुज्जा कहं जाआ? सो कोढिअस्स पासे आसित्तए न इच्छइ। एगया लक्खमणो (लक्ष्मण) वि मुच्छिरो जाओ। णिद्धणो पलंबंडो वुड्ढो चिइच्छं इच्छइ। कच्छुल्लो अणेगहुत्तो णियसरीरं कण्डूअइ। पंगू केण साहज्जेण (सहयोग) अत्थ आगओ? एगया अहमवि अइसारिओ जाओ। बंगदेसे अणेगे जणा दद्दुला भवंति। वाइओ बहु किच्छं अणुभवइ। लोआ वडभं भगवंतस्स अवतारं मण्णंति। जरी संतचित्तेण मोगेण वा सव्वं सहइ। पित्तिओ किं खादिउं इच्छइ? तुंदिलो पइक्खणं दुक्खं अणुभवइ। साहूसु को सिलिम्हिओ अत्थि? सबलो सुंदरो न लग्गइ। कासिल्लो निसाए न निद्दाइ सुहेण।

धातु प्रयोग

सो ओसहिं लिहइ। अहं कल्लं लुंचिस्सामि। साहू भविऊण चे धणं रक्खेज्ज सो साहुत्तं लुंपइ। खेलम्मि बालो अण्णं बालं पासिऊण लुक्कइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निद्दाए सो लुढईअ । कयावि न लुभियव्वं । सो लुडिउं अमुम्मि गामे आगओ । किं तुमं सूरं चक्खुहिं लोअसि ?

प्रत्यय प्रयोग

एसो नरो कओ आगओ ? तुमं जओ आगओ तत्थ चेअ गच्छ । नयरं इओ अइदूरं नत्थि । तुमं तओ णाणं लह । जहि केत्तिला मुक्खा संति ? तेण सद्धि तुमं तहि गच्छ । कल्लं सो कत्थ गमिस्सइ ? एक्कसि अहं अत्थ आगओ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

अंधे व्यक्ति के लिए संसार का रूप कुछ नहीं है । बहिरा व्यक्ति गूंगा भी होता है । गूंगा जानकर भी वस्तु का स्वाद नहीं बता सकता । इस गांव के वामन व्यक्ति का नाम क्या है ? काणा कुबुद्धि चलाता है । लूला परवश होकर जीता है । कूबडे की दशा को देखकर जवानी में सावधान रहे । कोढी होने पर सुंदर रूप कुरूपता में बदल जाता है । लंगडा अंधे के सहयोग से मार्ग को पार कर जाता है । बेहोशीवाला कुछ समय के लिए मृत्यु के समान है । प्रलंब अंडवाला किस भोजन से या वायुमंडल से होता है ? खाज के रोगी को खाज प्रिय लगती है । दस्त रोगी दस मिनट भी शांति की नींद नहीं लेता है । आर्द्र प्रदेश की आर्द्रता से दाद के रोगी अधिक होते हैं । वायु के रोगी को क्या नहीं खाना चाहिए ? मोटे पेट वाला उठने और बैठने में कष्ट की अनुभूति करता है । बुखार वाले को आज अन्न मत खिलाओ । क्या पित्त का रोगी मीठा भोजन खाएगा ? कफ का रोगी कोई भी बनना नहीं चाहता । रमेश चित्तकबरा कब हुआ ? खांसी वाला दही क्यों खाता है ?

धातु का प्रयोग करो

तुमने आज मधु के साथ कौन सी दवा चाटी ? तुम काटना जानते हो, जोडना नहीं । साधु एक साल में कम से कम एक बार लुंचन करते हैं । सुरक्षा के अभाव में पशुओं की कई जातियां लुप्त हो जाएंगी । अविनयी गुरु से छिपना चाहता है । आयुष्य पूर्ण होने पर वह खाना खाते-खाते लुढक गया । तुम किसके लिए क्षोभ करते हो ? वे दिन में ही सबको लूटते हैं । मुंह धोने के बाद वह नहीं पोंछता है । वह सुंदर रूप को देखता है ।

प्रत्यय प्रयोग करो

प्रमादी को सब प्रकार से भय है । तुमने यह पुस्तक किससे ली है ? वह वहां से घर जाएगा । तुम्हारे भाई के विवाह में यहां से कोई नहीं आएगा । गुरु दर्शन करने वहां कौन जाएगा ? तुम यहां मत आओ । ये लोग कहां रहते हैं ? एक समय यह इस देश का राजा था । तुम ध्यान कब करोगे ? जब भारत स्वतंत्र होगा तब मैं अपने देश में वापस आऊंगा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. संस्कृत की पंचमी विभक्ति और सप्तमी विभक्ति के अर्थ में प्राकृत में कौन-कौन से प्रत्यय होते हैं ? तीन-तीन उदाहरण दो।
२. डाह, डाल और इआ—ये तीन प्रत्यय किस अर्थ में होते हैं ?
३. इस पाठ में नियमों के अतिरिक्त कौन से शब्द हैं जो संस्कृत शब्दों से बने हैं ?
४. अंधा, बहरा, बेहोशीवाला, प्रलंब अंड वाला, खाज का रोगी, लंगडा, दस्त का रोगी, दाद का रोगी, वायु का रोगी, कूबडा, काणा, लूला, गूंगा, वामन, बुखार वाला, पित्त का रोगी, कफ का रोगी, मोटे पेट वाला और कोढी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ
५. लिह, लुअ, लुंच, लुंप, लुक्क, लुढ, लुभ, लूड, लोअ—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
६. लुक्खं, मउयं, णिद्धं, खुज्जियं, सिलिवइ, पायफोडो नाडीवणो, जरो, कासो—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इव, कृत्वस् प्रत्यय

शब्द संग्रह (वाद्य वर्ग)

झालर—झल्लरी
तूर्य—तुरिअं
वीणा—तंती
घंटा—घंटो
ताल—तालो
मृदंग—मुइंगो
शंख—संखो
डुग्डुगी—डिंडिमं
छोटी घंटी—घंटिया
नगारा, ढोल—ढोल्लं (दे.)
डमरु—डमरुगो

० ० ०

वाद्य—वाइअं
बजाना—वायणं
भक्त—भत्तो

धातु संग्रह

लोट्ट—लेटना
वंच—ठगना
लोल—विलोडन करना
वंज—व्यक्त करना
लोव—लोपकरना,
वक्कम—उत्पन्न होना
बअल—पसरना, फैलना
वक्खा—विवरण करना, कहना
वईवय—जाना
वंद—प्रणाम करना

व्व और हुत्त प्रत्यय

संस्कृत में इव (उसके जैसा) अर्थ में वत् प्रत्यय होता है। उस वत् प्रत्यय को प्राकृत में 'व्व' प्रत्यय आदेश होता है।

नियम ६४४ (वते र्व्वः २।१५०) वत् प्रत्यय को 'व्व' प्रत्यय होता है।

मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः (महुरव्व पाडलिपुत्ते पासाया) मथुरा के जैसे पाटलिपुत्र में प्रासाद हैं। क्षत्रियवत् शूराः (खत्तियव्व सूरा) क्षत्रिय के समान शूर हैं। साधुवत् त्यागी (साहुव्व चाई) साधु जैसा त्यागी है। पर्वतवत् ऊर्ध्वम् (पव्वयव्व उड्ढं) पर्वत जैसा ऊंचा है। सुशीलवत् धर्मिष्ठा (सुसीलव्व धम्मिट्ठा) सुशील के जैसे धार्मिक हैं।

हुत्त प्रत्यय

बार के अर्थ को बताने के लिए संस्कृत में कृत्वस् प्रत्यय आता है। प्राकृत में उस अर्थ के लिए हुत्त प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैनागमों में हुत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यय का प्रयोग कम और खुत्तो प्रत्यय का प्रयोग अधिक हुआ है।

नियम ६४५ (कृत्वसो हुत्तं २।१५८) कृत्वस् प्रत्यय को हुत्त आदेश होता है।

शतकृत्वस् (सयहुत्तं) सौ बार। एककृत्वस् (एगहुत्तं) एक बार। त्रिकृत्वस् (तिहुत्तं) तीन बार। त्रिकृत्वस् (तिक्खुत्तो) तीनबार (आगम प्रयोग)

प्रयोग वाक्य

देवालये झल्लरी निनायो होइ। तंति को वाएइ? तालवायओ संपइ अत्थ न आगओ। तुरियाणं णिणायो गगणं फुसे। भत्ता पूयाकाले देवालये घंटं वाएइ। विज्जालये समय-सूअणट्ठं घंटियाए पओगो भवइ। जुज्झस्स संख-णिणायो जाओ। सो डिंडिमं वाइऊण जणा संगहिऊणं य वाणरस्स खेलं पदंसइ। जीअस्स ढोल्लं को वाएइ? मुइंगवायणं को जाणइ?

धातु प्रयोग

अत्थ गद्दभो कहं लोट्टइ? किं दहीइं सरला लोलिहिइ? वागरणे इसण्णा (इत् संज्ञा) लोवइ। सलिलं वअलइ। साहू गामाणुग्गामं वईवयइ। सुसीलो जणा वंचइ। महेसो णियविआरा वंजइ। अत्थ किं वक्कमइ? मुणी महावीरस्स जीवणं वक्खाइ। अहं पइदिणं आयरिअं वंदामि।

प्रत्यय प्रयोग

तुज्झ मणो सायरव्व गहिरो। कुसुमव्व मिऊ तस्स हिययं। वायव्व सया गइमंतो ठायव्वं। अहं दसहुत्तो अमुम्मि गामे आगओ। मए सयहुत्तं लुंचणं कयं।

प्राकृत में अनुवाद करो

आज शाम को मंदिर में झालर देर से क्यों बजी? वीणा का स्वर मधुर होता है। ताल का प्रयोग कौन करता है? ग्रामों में मंदिर में पूजा के बाद शंख बजता है। तूर्य की ध्वनि दूर तक जाती है। घंटा दुर्ग में बजता है। डुगडुगी बजाने से लडके और पुरुष इकट्ठे हो जाते हैं। कई विवाहों में ढोल बजाया जाता है। साधना केंद्र में भी छोटी घंटी बजाकर समय की सूचना देते हैं। मृदंग को सीखाने वाला कौन है? युद्ध में नगारा बजाने से सैनिकों को जोश आता था।

धातु का प्रयोग करो

घोडा थकान मिटाने के लिए लेटता है। देवताओं और दानवों ने समुद्र का विलोडन किया। सूर्य के प्रकाश में चंद्रमा का लोप हो जाता है। बात बहुत जल्दी फैलती है। आयुष्य पल-पल जा रहा है। क्या तुम मुझे ठगना चाहते हो? वह शब्दों के माध्यम से अपनी बात व्यक्त करना चाहता है। तुम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपने जीवन की घटना का विवरण करते हो। मैं सब साधुओं को प्रणाम करता हूं। जो पैदा होता है उसका नाश होता है।

प्रत्यय का प्रयोग करो

तुम्हारी तरह वह भी प्रमाद करता है। मैं उसकी तरह तपस्या करना चाहता हूं। क्या अमेरीका की तरह भारत भी शक्तिशाली बनेगा ? मैंने तुमको अनेक बार कहा फिर भी तुम ध्यान नहीं देते हो। वह दिन में तीन बार खाना खाता है। मैं तुम्हारी दुकान पर अनेक बार आया हूं।

प्रश्न

१. इव (उसके जैसा) अर्थ में प्राकृत में कौन सा प्रत्यय होता है ? उसके तीन उदाहरण दो।
२. बार अर्थ में क्या प्रत्यय होता है ? पांच उदाहरण बताओ।
३. झालर, वीणा, ताल, शंख, घंटा, डमरु, तूर्य, घंटा, मृदंग, डुगडुगी, नगारा (ढोल) शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?
४. लोट्ट, लोल, लोव, वअल, वईवय, वंच, वंज, वक्कम, वक्खा, वंद—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (कीडा आदि क्षुद्र जन्तु)

मधुमक्खी—महुमक्खिआ
भौंरा—भसलो
मक्खी—मक्खिआ, मच्छिआ
खट्मल—मक्कुणो
मच्छर—मसओ
दीमक—उवदेही
जुगनू—खज्जोओ
कानखजूरो—कण्णजलूया
जौंक—जलूया, जलूगा
शलभ (पतंग)—सलहो
मकोडा—कीडो, पिवीलिओ
कीडी—कीडी, कीडिया
लीख—लिक्खा
जूं—जूआ
डांस—डंसो
तिलचटा, झींगुर—झिंगिरो (दे०)
वीरबहूटी—इंदगोवो, इंदगोवगो

धातु संग्रह

वग्ग—कूदना, जाना
वच्च—जाना
वज्जाव—बजाना
वग्ग—वर्ग करना, किसी अंक को समान अंक से गुणा करना
वण्ण—वर्णन करना
वद्धाव—बधाई देना
वम—वमन करना
णिव्वाव—बुझाना
वट्ट—वरतना
वय—बोलना

परिमाणार्थ प्रत्यय

परिमाण अर्थ में प्राकृत में इत्तिअ आदि प्रत्यय होते हैं।

नियम ६४६ (यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च २।१५६) यत् (ज) तत् (त) और एतत् (एअ) शब्द परिमाण अर्थ में हों तो डावतु प्रत्यय को इत्तिअ आदेश होता है तथा एतत् शब्द का लुक् हो जाता है। यावत् (जित्तिअं) जितना। तावत् (तित्तिअं) उतना। एतावत् (इत्तिअं) इतना।

नियम ६४७ (इदं किमश्च डेत्तिअ-डेत्तिल-डेद्दहाः २।१५७) इदं (इम) किं (क) यत् (ज) तत् (त) एतत् (एअ) शब्द से परिमाण अर्थ में अतु और डावतु प्रत्यय को प्राकृत में डेत्तिअ (एत्तिअ) डेत्तिल (एत्तिल) डेद्दह (एद्दह)—ये तीन आदेश होते हैं।

इयत् (एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं) इतना
कियत् (केत्तिअं, केत्तिलं, केद्दहं) कितना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यावत् (जेत्तिअं, जेत्तिलं, जेद्दहं) जितना
तावत् (तेत्तिअं, तेत्तिलं, तेद्दहं) उतना
एतावत् (एत्तिअं, एत्तिलं, एद्दहं) इतना

नियम ६४८ (मात्रटि वा १।८१) मात्रट् प्रत्यय के आकार को एकार विकल्प से होता है। इयन्मात्रम् (एत्तिअमेत्तं, एत्तिअमत्तं)।

प्रयोग वाक्य

महुमक्खिआ जणा कया पीडइ ? भसलो रूवेण कण्हो भवइ। भद्दवये मासे मच्छिआओ बहुलाओ भवंति। मक्कुणो राओ वत्थम्मि पविसित्ता जणा पीडइ। सलहो पगासे पडइ जीवणं य नासइ। पिवीलिआ पुण्णदिवहं परिस्समइ। लिक्खा कत्थ वसइ ? जलूया मणुअस्स सरीरस्स रत्तं आगसइ। कीडो वेगेणं चलइ। तुमं जूआओ कहं मारसि ? डंसा कत्थ उप्पज्जंति ? वरिसाए इंदगोवा पासिऊणं बाला हत्थे गिण्हंति। झिगिरस्स वण्णो केरिसो भवइ ? अहं कण्णजलूयाए भीएमि। उवदेही कट्ठमवि खाअइ। खज्जओ निसाए जहासत्ति पगासइ। तुमए केत्तिलाओ लिक्खाओ मारिआओ ?

धातु प्रयोग

रमेसो वग्गिउं न इच्छइ। सो पंचसंखं वग्गइ। तुमं सुए किं सहाए भासिउं वच्चिहिसि ? अहं संखं वज्जाविस्सामि। तुज्झ पासे किं वट्टइ ? अहं तस्स पयारं वण्णामि। सो तुं बद्धावेइ जं तुमं पढमो जाओ परिक्खाए। जो अहियं खाअइ सो वमइ। अहं अमुम्मि विसये किमवि न वयामि।

प्रत्यय प्रयोग

तुमं केत्तिआ अंबा चूसिउं इच्छसि ? जेत्तिअं पाणिअं पिविउं तुमं इच्छसि तेत्तिअं पिव। एत्तिअं कज्जं अवस्सं कर। एत्तिअमेत्तं मज्झ देहि।

प्राकृत में अनुवाद करो

इतनी मधुमक्खियां आकाश में क्यों उडती हैं ? वर्षा ऋतु में भौंरा मिट्टी से घर बनाकर किसको भीतर प्रवेश कराता है ? मक्खियां बहुत सताती हैं। खट्मल कहां ज्यादा होते हैं ? पानी की प्रचुरता से यहां मच्छर अधिक हो गए। पतंग में कितनी आसक्ति होती है ? कमरे में मकोडे घूमते हैं। चीटियों का श्रम सबके लिए अनुकरणीय है। लीख पैदा होने का कारण क्या है ? उसके सिर में कितनी जूंएं हैं ? जौंक रक्त को क्यों पीती है ? दीमक किस भूमि में अधिक होते हैं ? जुगनू के प्रकाश में तुम क्या करना चाहते हो ? कानखजूरा कान में कैसे घुस गया ? झींगुर की आवाज क्या तुमने सुनी है ? वीरबहूटी का रंग लाल होता है। डांस बहुत तेज काटता है। तिलचटा यहां बहुत कम है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु का प्रयोग करो

वह मकान से तालाब में कूदता है। ८५ की संख्या का मौखिक वर्ग करना सरल नहीं है। वह आज आपके यहां से जाना चाहता है। तुम वाद्य बजाकर क्या कमाना चाहते हो? क्या तुम हिमालय का वर्णन कर सकते हो? वह सुशील को बधाई देता है कि तुम्हारे पुत्र हुआ है। आज उसने वमन क्यों किया? तुम क्या बोलते हो? मुझे सुनाई नहीं देता।

प्रत्यय प्रयोग करो

मनुष्य जितना जानता है उतना कह नहीं सकता। कितने लोग यहां बाहर से आए हैं। इतने जोर से मत बोलो जिससे दूसरों को बाधा हो।

प्रश्न

१. प्रमाण अर्थ में प्राकृत में कौन से प्रत्यय होते हैं?

२. परिमाण अर्थ में होने वाले संस्कृत के अतु और डावतु प्रत्यय को प्राकृत में किन शब्दों से क्या प्रत्यय होता है?

३. मधुमक्खी, भौंरा, मक्खी, खट्मल, मच्छर, पतंग, मकोडा, कीडी, जूं, लीख, डांस, जौंक, दीमक, जुगनू, कानखजूरो, तिलचटा, वीरबहूटी, झींगुर—इन शब्दों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ।

४. वग्ग, वग्ग, वच्च, वज्जाव, वट्ट, वण्ण, वद्धाव, वम, वय—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८९ स्वार्थिक प्रत्यय

शब्द संग्रह (रेंगने वाले, आदि प्राणी)

सांप—सप्पो, भुयंगो
विच्छु—विच्छिओ
गिरगिट—सरडो
गिलहरी—तिल्लहडी (दे०)
खाडहिला (दे०)
छछुंदर—छच्छुंदरं, छच्छुंदरो (दे०)
छिपकली—घरोलिया, घरोली
अजगर—अयगरो, अजगरो
नेवला—णउलो
मछली—मच्छो
गोह—गोधा

धातु संग्रह

वरिस—वरसना
वव—बोना
ववस—चेष्टा करना, प्रयत्न करना
ववहर—व्यापार करना
वस—वसना, वास करना
वह—ढोना, पहुंचाना
वह—पीडा करना
वाए—बजाना
वाए—पढाना
वागर—प्रतिपादन करना

स्वार्थ

स्वार्थ का अर्थ है—शब्द का अपना अर्थ। शब्द से प्रत्यय लगने के बाद भी शब्द का वही अर्थ रहता है। ऐसे अर्थ में होने वाले प्रत्ययों को स्वार्थिक प्रत्यय कहते हैं। प्राकृत में स्वार्थ में क, इल्ल और उल्ल प्रत्यय का प्रयोग होता है। संस्कृत में भी स्वार्थ में कप् (क) प्रत्यय होता है।

नियम ६४९ (स्वार्थे कश्च वा २।१६४) स्वार्थ में क, डिल्ल (इल्ल) डुल्ल (उल्ल) प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

क—चन्द्रकः (चंदओ) चन्द्रमा। गगनकः (गगणयं) गगन। इहकः, इह (इहयं) यहां। आलेष्टुकं, आलेष्टुं (आलेट्ठुअं)

इल्ल—पल्लवकः, पल्लवः (पल्लविल्लो) पत्र। पुरा, पुरो वा (पुरिल्लो) पहले

उल्ल—मुखकः (मुहुल्लं) मुंह। हस्तकः (हत्थुल्लो) हाथ

नियम ६५० (ल्लो नवैकाद् वा २।१६५) नव और एक शब्द से स्वार्थ में ल्लो प्रत्यय विकल्प से होता है। नवः (नवल्लो, नवो) नया, नवीन। एकः (एकल्लो, एक्कल्लो, एक्को, एओ) एक, अकेला।

नियम ६५१ (उपरेः संव्याने २।१६६) संव्यान (प्रावरण) अर्थ में उपरि शब्द से स्वार्थ में ल्ल प्रत्यय होता है। उपरितनः (अवरिल्लो)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊपर का।

नियम ६५२ (भ्रुवो मया-डमया वा २।१६७) भ्रू शब्द से स्वार्थ में मया, डमया—ये दो प्रत्यय होते हैं। भ्रूः (भुमया, भमया) भौंह।

नियम ६५३ (शनैसो डिअम् २।१६८) शनैः शब्द से स्वार्थ में डिअं (इअं) प्रत्यय होता है। सण + इअं = सणिअं (शनैः) धीरे-धीरे।

नियम ६५४ (मनको न वा डयं च २।१६९) मनाक् शब्द से स्वार्थ में डय (अय) और डिअं (इअं) प्रत्यय विकल्प से होते हैं। मणा + डयं मणायं (मनाक्) थोडा। मणा + डिअं = मणियं (मनाक्) थोडा। पक्ष में मणा (मनाक्) थोडा।

नियम ६५५ (मिश्राड्डालिअं २।१७०) मिश्र शब्द से स्वार्थ में डालिअ प्रत्यय विकल्प से होता है। मिश्रम् (मीसालिअं, मीसं) मिला हुआ।

नियम ६५६ (रो दीर्घात् २।१७१) दीर्घ शब्द से स्वार्थ में र प्रत्यय विकल्प से होता है। दीर्घम् (दीहरं, दीहं) दीर्घ, लम्बा।

नियम ६५७ (त्वादेः सः २।१७२) संस्कृत में भाव में त्व, तल् आदि प्रत्यय होते हैं। उन प्रत्ययान्त शब्दों से स्वार्थ में त्व, तल् आदि विकल्प से होते हैं। मृदुकत्वम् (मउअत्तया) मृदुता।

नियम ६५८ (विद्युत्पत्रपीतान्धाल्लः २।१७३) विद्युत्, पत्र, पीत और अन्ध शब्द से स्वार्थ में ल प्रत्यय विकल्प से होता है। विद्युत् (विज्जुला, विज्जू) बिजली। पत्रम् (पत्तलं, पत्तं) पत्र, पत्ता। पीतम् (पीअलं, पीअं) पीला। अन्धः (अन्धलो, अंधो) अंधा।

प्रयोग वाक्य

दो कण्हा सप्पा अत्थ केत्तिलत्तो समयत्तो वसंति ? अमुम्मि गामे केद्दहा विच्छिआ संति ? सरडव्व रूवो न परिवट्टियव्वो। समुद्दस्स पासे वासिणो पुरिसा मच्छा खाअंति। सो खाडहिलाए भीअइ। घरोलिया निसाए भोयणट्ठं भमइ। अयगरो दूरत्तो जीवा आकड्ढइ। णउलस्स सप्पस्स य जुज्झं भवइ। गोधाए डंसिओ नरो खिप्पमेव मरइ। छच्छुंदरस्स अवरनाम अत्थि गंधमूसिओ।

धातु प्रयोग

जो अक्कं ववइ सो अंबं कहं पाविस्सइ ? सो तुज्झ कज्जं पूरिइत्तए ववसइ। सो मए सह सम्मं न ववहरइ। तुमं मज्झ हिययम्मि वससि। गद्दभो-णवरं चंदणस्स भारं वहइ। विच्छिओ जणा कहं वहइ ? संझाकाले देवालये को संखं वाएस्सइ ? अम्हे सिरी भिक्खुसद्दाणुसासणं को वाएहिइ ? आयरिओ महावीरस्स सिद्धंतं वागरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यय प्रयोग

चंदओ गगणयम्मि पगासइ। असोय पल्लविल्लं पासिऊण संदेहो जाओ। किं तुज्झ मुहुल्लम्मि पूगीफलं अत्थि ? मज्झ हत्थे सव्वा सत्ती अत्थि। अहं एक्कल्लो न मि, संपुण्णसंघो मए सद्धि अत्थि। तुज्झ अवरिल्लो ववहारो सोहणो नत्थि। तुमं भमयाइ झाणं करेहि। सा सणिअं-सणिअं कहं चलइ ? मणियं फलरसं बालस्स वि देहि। मीसालिअं ओसहं न फलइ। अंधल्लो अत्थ कहं आगओ ?

प्राकृत में अनुवाद करो

सांप क्या खाता है ? बिच्छु क्यों पैदा होते हैं ? गिरगिट अपने रूपों को क्यों बदलता है ? आठ मंगलों में युगलमछली भी एक मंगल है। गिलहरी वक्ष पर चढती है। छछुंदर कहां रहते हैं ? छिपकली रात में ही क्यों घूमती है ? अजगर सांप की तरह जीवों को डसता नहीं है, निगलता है। नेवले की शक्ति सांप से अधिक होती है। गोह का जहर बहुत प्रबल होता है।

धातु का प्रयोग करो

बच्चों में धर्म के संस्कार (सक्कालो) बोने चाहिए। वह विवाद को मिटाने के लिए प्रयत्न करता है। वह परस्त्री को माता के समान मानता है। क्या देश की सीमा पर सैनिक बसते हैं ? वह केवल ज्ञान का भार ढोता है। तुम्हारा व्यवहार मेरे मन को पीडा करता है। वीणा कौन बजाएगा ? न्याय का ग्रंथ हमें कौन पढाएगा ? वह अपने विचारों का अच्छी तरह प्रतिपादन करता है।

प्रत्यय प्रयोग करो

गगन में चंद्रमा कब उदय हुआ ? पहले पत्र पर लिखते थे। हाथ और मुंह को पानी से धो लो। उसे नया जीवन मिला है। वह अकेला ही साधना करता है। ऊपर का मकान खाली है। भौंह पर किस रंग का ध्यान करना चाहिए ? धीरे-धीरे उसने घर पर अधिकार कर लिया। थोडा खाना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। मिश्रित और पीसी हुई दवा में वस्तु का ज्ञान हरेक को नहीं होता। उसका दीर्घजीवन कुछ लोगों के लिए हितकर रहा। मृदुता दूसरे के मन को जीतती है। बिजली आकाश में चमकती है। पीला पत्ता अपने जीवन की कहानी कहता है। अंधा मनुष्य आवाज से पहचान करता है।

प्रश्न

१. 'स्वार्थेकश्च वा' इस नियम के अनुसार स्वार्थ में कितने प्रत्यय होते हैं। प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. एक्कल्लो, अवरिल्ओ, नवल्लो, भमया, सणिअं, मीसालिअं, दीहरं, पीअलं, मउअत्तया, विज्जुला—इन शब्दों में किस नियम से क्या प्रत्यय हुआ है ? अपने वाक्य में इन्हें प्रयोग करो ।

३. सांप, विच्छु, गिरगिट, मछली, छछुंदर, छिपकली, अजगर, नेवला, गोह और गिलहरी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

४. वव, ववस, ववहर, वस, वह, वह, वाए, वारिस, वाए और वागर —इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।

५. कच्छुल्लो, वडभो, मूयो, डिंडिमं, तंती, घंटिया, मसओ, लिक्खा—इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (शस्त्र वर्ग १)

हथियार—अत्थं, आउहं
तलवार—असी (पुं) खग्गो
ढाल—फलगो
भाला—कुंतो
बंदूक—भुसुंढि (दे० स्त्री)
दांती—लवित्तं
गुप्ती—करवालिआ
हथौडा—घणो (दे०)
बर्छी—सल्लं

बंब—फोडत्थं (सं)
तोप—सयग्घी (दे० स्त्री)
राइफल—कुच्छिभरियत्थं (सं)
टैंक—सत्थावरुहं (सं)
कटार—करवालिआ
लाठी—लगुडो, डंडो, दंडो
कैंची—कत्तिया
सुई—सुई (स्त्री)

०

धान्य—सस्सं
वेतन लेकर काम करने
वाला—वेयणियो

०

अभिषेक—अभिसेओ, अभिसेगो
वास्तव—जहत्थं

धातु संग्रह

वाय—पढना, पढाना
वायाम—कसरत करना
वार—रोकना
वा—गति करना
वा—बुनना

वावाअ—मार डालना
वास—संस्कार डालना
वाह—वहन कराना
वाहर—बोलना
वाल—मोडना

मयट् प्रत्यय

नियम ६५९ (सर्वाङ्गादीनस्येकः २।१५१) सर्वाङ्ग शब्द से व्याप्नोति (व्याप्त) अर्थ में होने वाले (इन) प्रत्यय को इक आदेश होता है। सर्वाङ्गीणम् (सव्वंगीओ) सब अंगों में व्याप्त।

नियम ६६० (पथोणस्येकट् २।१५२) पथ शब्द से नित्य जाने के अर्थ में होने वाले ण प्रत्यय को इकट् (इअ) आदेश होता है। पह+इअ= पहिओ (पथिकः) पथिक।

नियम ६६१ (ईयस्यात्मनो णयः २।१५३) आत्मन् शब्द से शेष अर्थ में होने वाले ईय प्रत्यय को प्राकृत में णय आदेश होता है। अप्प+णय =

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पणयं (आत्मीयम्) अपना।

नियम ६६२ (अनङ्कोठात्तैलस्य डेल्लः २।१५५) अंकोठ शब्द को छोडकर 'उसका तैल' इस अर्थ में डेल्ल (एल्ल) प्रत्यय होता है। कटुतैलम् (कडुएल्लं) कटु का तैल।

(मयट्य इर्वा १।५०) नियम ८१ के अनुसार—संस्कृत के मयट् प्रत्यय में म के अ को अइ आदेश विकल्प से होता है। विषमयः (विसमइओ, विसमओ) जिसका अधिकांश भाग विषयुक्त हो।

प्रयोग वाक्य

अत्थस्स परंपराए अवसाणो न भवइ। खत्तिओ खग्गेण सत्तुं (शत्रु) मारइ। फलगस्स पओगो सुरक्खाए (सुरक्षा) कज्जइ। गामवासिणो जुज्झ-काले परुप्परं सल्लस्स पओगं करेंति। महारायपयावस्स (महाराणा प्रताप) कुंतं किं को वि हत्थे गिण्हिउं समत्थो? तुज्झ भाउणा भुसुंढीए पंच जणा मारिआ। किसीवलो लवित्तेण सस्साइं लुअइ। आणं विणा णियघरे को फोडत्थाइं णिम्माइ? गोपालेण करवालिआए मुल्लं दिण्णं। विमलेण दंडस्स पओगो कहं कओ? सुसीला कत्तिआए वत्थाणि कत्तइ। लोहारेण घणेण पहारो दिण्णो। रायाभिसेआवसरे सयग्घीए पओगो केण कओ? सत्थावरुहस्स पहारो पलंबो भवइ। सुसीला सूईए वत्थाइं सिव्वइ।

धातु प्रयोग

उवज्झायो सुत्तं वायइ। अहं पच्चूसे वायामामि। माआ सिसुं बाहिं गमिउं वारेइ। वाऊ मंदं वाइ। तंतुवायो वत्थाइं वाइ। सो मुक्खो मच्छिओ वावाअइ। आयरिओ सावगा वासइ। सासू पुत्तवहूए सह मिउं वाहरइ। किं तुमं लोहं वालिउं समत्थो?

प्रत्यय प्रयोग

तुज्झ लेहो सव्वंगीओ वरो अत्थि। पहिओ मग्गे पिवासिओ जाओ। संसारे अप्पणयं किं अत्थि? अयसी एल्लं आवणे किं सुलहमत्थि? घयमइअं भोयणं भक्खिउं को-को इच्छइ?

प्राकृत में अनुवाद करो

हथियार मात्र साधन है। एक समय तलवार का अधिक महत्त्व था। ढाल किसके पास है? बर्छी अनेक घरों में उपलब्ध होती हैं। भाले का प्रयोग शक्तिशाली व्यक्ति ही कर सकता है। उसने बंदूक से हरिण को मारा। हरगोपाल की दुकान में बम कैसे फूटा? तुम तोप का प्रयोग कब करोगे? राइफल किसके पास थी? उसने टैंक से अनेक लोगों को मारा। विवाह में दुलहा कटार रखता है। वह खेत में दांती से घास (तणं) काटता है। क्या

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम लाठी चलाना सीखते हो ? कैंची से ही कोट, पतलून आदि बनते हैं। हथौडा किसके पास मिलेगा ? सूई का काम करो, कैंची का नहीं।

धातु का प्रयोग करो

दूसरों को पढाना सरल नहीं है। स्वास्थ्य के लिए प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए। तुम मुझे उसके पास जाने के लिए क्यों रोकते हो ? आज हवा नहीं चलती है। गांव-गांव में कपडे बुनना चाहिए। सिंह पशुओं को और मनुष्य को मार डालता है। माता अपने बच्चों में संस्कार डालना चाहती है। तप को वहन कराना आचार्य का कार्य है। ध्यान के समय कौन बोलता है ? जो अपने विचारों को सत्य की ओर मोडता है, वही वास्तव में सत्य का शोधक है।

प्रत्यय का प्रयोग करो

हमारा सर्वांगीण विकास होना चाहिए। पथिक का काम है मार्ग में चलते रहना। अपने देश का गौरव किसको नहीं होता ? सरसों का तेल कहां मिलेगा ? आज दहिमय साग खाने की इच्छा है।

प्रश्न

१. मयट् प्रत्यय को क्या आदेश होता है ? तीन शब्द बताओ।
२. उसका तेल अर्थ में क्या प्रत्यय होता है ?
३. इस पाठ में इक, इकट् और णय प्रत्यय किस शब्द से किस अर्थ में किस प्रत्यय को हुआ है ?
४. तलवार, भाला, बंदूक, दांती, वर्छी, तोप, बंब, राइफल, टैंक, कटार, हथौडो, लाठी, कैंची, ढाल, गुप्ती, सूई—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. वाय, वायाम, वार, वा, वा, वावाअ, वास, वाह, वाहर, वाल—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९१ तरतम प्रत्यय

शब्द संग्रह (शस्त्र वर्ग २)

धनुष—धणू	पिस्तौल—गुलिअत्थं (सं)
मुद्गर—मोग्गरो	मशीनगन—गुलिआजंतं (सं)
कुल्हाडी—कुहाडी, फरसू	वाण—सरो
आरा—करकयो	गदा—गया
चक्र—चक्को	त्रिशूल—तिसूलं
अंकुश—अंकुसो	सरौता—संकुला
चाबुक—कसो	पत्थर फेंकने का अस्त्र—गुंफणं
छुरी—छुरिया	वज्र—वज्जो
०	०
म्यान—खग्गपिहाणयं	तूणीर—तूणी, तूणा

धातु संग्रह

हक्क—हांकना, खदेडना	हस—हीन होना, कम होना
हर—हरण करना, छीनना	हा—त्यागना
हरिस—खुश होना	हिंड—भ्रमण करना, जाना
हव—होना	हिरि—लज्जित होना
हो—होना	हील—अवज्ञा करना

तरतम प्रत्यय

प्राकृत में एक की अपेक्षा से अच्छा के अर्थ में अर (तर) और ईयस प्रत्यय तथा सबसे अच्छा के अर्थ में अम (तम) और इट्ठ (इष्ठ) प्रत्ययों का प्रयोग संस्कृत के समान होता है। विशेष्य के अनुसार इसमें तीनों लिंग होते हैं। जैसे पिओ पुत्तो। पिआ धूया। पिअं पोत्थयं।

शब्द	अर (तर)	अम (तम)	शब्द	अर (तर)	अम (तम)
गुरु	गरीयस	गरिट्ठ	तिक्ख	तिक्खअर	तिक्खतम
पिअ	पिअअर	पिअअम	जेट्ठ	जेट्ठअर	जेट्ठअम
उच्च	उच्चअर	उच्चअम	बहु	भूयस	भूयिट्ठ
खुद्द	खुद्दअर	खुद्दअम	अप्प	कणीअस	कणिट्ठ
पडु	पटुअर, पडीयस	पडुअम, पडिट्ठ			

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रयोग वाक्य

रामो धणुणा बालिं मारीअ। वावामे अहं मोग्गरं चलावेमि। सो कुहाडीए कट्ठाइं कट्टइ। सो करकयेण रुक्खं कट्टइ। चक्को णरं मारिउं समत्थो। दीहकायो नागो अंकुसेण वसीभवइ। आसवरो कसं न इच्छइ। सुसीला छुरियाए सागं कट्टइ। रामस्स सरो बालीइ हिअये पविसीअ। भीमस्स गया पसिद्धा अत्थि। सिवस्स तिसूलस्स उवओगो किं आसि? देविंदो वज्जेण देवं मारइ। विजएण गुलिअत्थेण तिण्णि जणा मारिआ। सुसीला संकुलाइं पोग्गफलाइं कट्टइ। अमुम्मि णयरे अज्ज गुलिआजंतस्स पओगो कहं जाओ? किसीवलो गुंफणेण चडआओ मारइ। देविंदो कस्स उवरिं वज्जं अक्खिवइ।

धातु प्रयोग

गोवालो धेणूओ हक्कइ। चोरो सेट्ठित्तो धणं हरइ। तुज्झ विआसं सुणिऊण अहं हरिसामि। झाणेण कोहो कमसो ह्रसइ। सो जावज्जीवं सुरं हाइ। तुमं कत्थ हिंडसि? अणायारं सेवित्ता सो हिरिसु। सो तुं कहं हीलइ?

प्रत्यय प्रयोग

संपइ अत्थ मुणी जयचंदो साहुसु जेट्ठयरो अत्थि। कणिट्ठो साहू गिरीसो किं पढइ? गरिट्ठं भोयणं साहूणं न हियअरं अत्थि। तेरापंथधम्मसंघे उच्चअमं पयं आयरियस्स अत्थि। अणुव्वयस्स पयारे भूयिट्ठो पयासो (प्रयास) केण कओ?

प्राकृत में अनुवाद करो

राम के युग में धनुष का विशेष महत्त्व था। किसान ने कब कुल्हाडी से इस वृक्ष की शाखा को काटा? आरा (करोत) विशाल वृक्षों को भी काट देती है। अंकुश बहुत छोटा होता है, पर शक्तिशाली होता है। तुम घोडे को चाबुक क्यों मारते हो? आपकी छुरी किस पर चलेगी? हनुमान की गदा से सब भयभीत हो जाते थे। उसका हृदय वज्र के समान कठोर है। त्रिशूल किन संन्यासियों की पहचान है? मेरा मुद्गर किसके पास है? सुदर्शन चक्र बडा शक्तिशाली है। तुम सरौता किस दुकान से लाए हो? वीरेन्द्रसिंह के पास पिस्तौल है। मशीनगन कितनी दूर तक मार करता है? उसने म्यान से तलवार निकाली। राम का तूणीर तुम ले जाओ। वज्र केवल देवों के इन्द्र का ही शस्त्र है।

धातु का प्रयोग करो

किसान का लडका पशुओं को हांकता है। कसाई (सोणिओ) बकरों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को मारता है। रावण ने सीता का हरण किया। आचार्य को अपने गांव में पाकर गांव के लोग बहुत प्रसन्न हैं। तुम्हारा प्रभाव कम क्यों हुआ? साधु बनने वाला परिवार के मोह को त्यागता है। हमने अनेक प्रान्तों का भ्रमण किया। किसी को हिंसा नहीं करनी चाहिए। अनुत्तीर्ण में अपना नाम सुनकर वह लज्जित हुआ। तुम उसकी अवज्ञा क्यों करते हो?

प्रत्यय का प्रयोग करो

वह सबसे छोटा है। तुम मेरे से बडे हो। तुम मुझे सबसे प्रिय हो। राम भाइयों में सबसे बडा था। क्या वह तुमसे बडा है? सुशील अपने परिवार में सबसे छोटा है। इसकी धार उससे तीक्ष्ण है। इस गांव में सबसे ऊंचा मकान किसका है? गरीष्ठ भोजन मत करो। विनय सबसे अधिक पटु है। सोहन मोहन से क्षुद्र है। तुम्हारे में उससे अधिक गुण है।

प्रश्न

१. तरतम प्रत्ययों के स्थान पर कौन से प्रत्यय होते हैं? दोनों में क्या अंतर है?
२. अर और अम प्रत्ययान्त शब्द किस लिंग में व्यवहृत होते हैं?
३. पांच वाक्य अम प्रत्यय लगाकर बनाओ।
४. धनुष, मुद्गर, कुल्हाडी, आरा, चक्र, अंकुश, चाबुक, सरौता, छुरी, बाण, गदा, त्रिशूल, वज्र, मशीनगन, पिस्तौल, फत्थर फेंकने का अस्त्र, म्यान और तूणीर के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. हक्क, हर, हरिस, हस, हा, हिंड, हिरि और हील धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरणार्थक प्रत्यय (१)

णिजन्त (ञिन्नन्त)

शब्द संग्रह (सुगंधित पत्र-पुष्प वाले पौधे)

कमल—पोम्मं
गुलाब—पाडलो
चंपा—चंपा, चंपयो
मौलसिरी—बउलो
मरुआ—मरुअगो, मरुअओ मरुवयो
अगस्तिया—अगत्थियो
केवडा—केअगो
वासंती—णवमालिया
मोगरा, वेला—मल्लिआ
चमेली—जाई, मालई
जूही—जूही, जूहिआ
अडहुल—जासुमणो
तिलक—तिलगो, तिलयो
दौना—दमणगो, दमणगं
सिन्दुरिया—सिन्दुरो
कूजा—कुज्जयो
तुलसी—तुलसी
गेंदा—झंडु (सं)

धातु संग्रह

सिच—सींचना, छिडकना
सिज—अस्फुट आवाज करना
सिक्ख—सीखना, पढना
सिज्झ—सीझना, निष्पन्न होना
सिणा—स्नान करना
सिणिज्झ—स्नेह करना
सिर—बनाना, निर्माण करना
सिलाह—प्रशंसा करना
सिलेस—आलिंगन करना
सिव्व—सीना, सांधना

प्रेरणार्थक प्रत्यय

जहां एक कर्त्ता को दूसरा कर्त्ता कार्य करने को प्रेरित करता हो वहां संस्कृत में णि प्रत्यय आता है। भिक्षु शब्दानुशासन में णि के स्थान पर ञिन् प्रत्यय आता है। इसलिए णिजन्त को ञिन्नन्त कहते हैं।

नियम ६६३ (णेरदेदावावे ३।१४९) णि के स्थान पर अत्, एत्, आव और अवे—ये चार आदेश होते हैं।

नियम ६६४ (अदेल्लुक्यादेरत आः ३।१५३) णि को अत् या ऐत् आदेश होने पर या णि का लुक् होने पर धातु के आदेश अ को आ हो जाता है। अत्—हासइ। एत्—हासेइ। आव—हसावइ। आवे—हसावेइ। कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ। उवसामइ, उवसामेइ, उवसमावइ उवसमावेइ।

नियम ६६५ (गुर्वादेरविर्वा ३।१५०) उपधा में गुरु या दीर्घस्वर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाली धातु हो तो अवि प्रत्यय विकल्प से होता है। अत्, एत्, आव और आवे प्रत्यय भी होते हैं। चूस—चूसइ, चूसेइ, चूसावइ, चूसावेइ, चूसविइ।

नियम ६६६ (भ्रमेस्तालिअण्ट-तमाडौ ४।३०) णि प्रत्ययान्त भ्रम धातु को तालिअण्ट और तमाड विकल्प से आदेश होते हैं। भ्रमयति (तालिअण्टइ, तमाडइ) पक्ष में

नियम ६६७ (भ्रमेराडो वा ३।१५१) भ्रम धातु से परे णि को आड आदेश विकल्प से होता है। भमाडइ, भमाडेइ। पक्ष में भामइ, भामेइ, भमावइ, भमावेइ (भ्रमयति) घूमता है।

नियम ६६८ (छदेर्णेणुमनूमसन्नुम-ढक्कौम्बाल-पव्वालाः ४।२१) णि प्रत्ययान्त छद धातु को णुम, नूम, सन्नुम, ढक्क, ओम्वाल और पव्वाल आदेश विकल्प से होते हैं। छादयति (णुमइ, नूमइ, सन्नुमइ, ढक्कइ, ओम्वालइ, पव्वालइ, छायइ) ढंकवाता है।

नियम ६६९ (निविपत्योर्णिहोडः ४।२२) नि उपसर्गपूर्वक वृन् धातु और पत् धातु णि प्रत्ययान्त हो तो उसे णिहोड आदेश विकल्प से होता है। निवारयति (णिहोडइ, निवारेइ) निवारण करवाता है। पातयति (णिहोडइ, पाडेइ) गिराता है।

नियम ६७० (दूङो दूमः ४।२३) णि प्रत्यान्त दूङ् धातु को दूम आदेश होता है। दावयति (दूमेइ) दुःखित करवाता है।

नियम ६७१ (धवले दुमः ४।२४) णि प्रत्ययान्त (धवलयति) रूप को दुम आदेश विकल्प से होता है। धवलयति (दुमइ, धवलइ) सफेद करना, चूना आदि से पोतना।

प्रयोग वाक्य

जाईए पुप्फाइं सुन्दराइं भवंति। जुहिआ देसस्स सव्वभागे उप्पज्जइ। पोम्मं पंके उप्पज्जइ परं उवरि चिट्ठइ। पाडलस्स पुप्फाइं पसिद्धाइं संति। चंपयस्स पुप्फाणि अत्थ न संति। कयंबो गुणेण सीयलो भवइ। बउलस्स बीएसु एगविहं तेल्लं भवइ। कुज्जयो पाडलस्स चेअ जाई (जाति) अत्थि। मल्लिआए अणेगे भेया संति। केअगो कफं नासइ। तिलगस्स पुप्फं तिलसमं भवइ। जासुमणो अणेगवण्णो भवइ। सिन्दुरस्स रुक्खो सुंदरो होइ। अगत्थियो दक्खिणदेसे बंगदेसे य पउरेण भवइ। तुलसीए पत्ताणि ओसहीए उवओगीइं भवंति। दमणगो सयं उप्पज्जइ। मरुवयो देसस्स सव्वभागे मिलइ। झंडू जरणासगो भवइ।

धातु प्रयोग

रट्ठवई गिहुज्जाणं पइदिणं सिचइ। बालो किं सिजइ? अहं तुहाओ सिक्खिउं अहिलसामि। घरे अन्नं सिज्झइ। तुमं दिणे कइहुत्तो सिणासि। सो

कमवि न सिणिज्जइ। तुमं कं सिलाहसि ? रामो लहुभाअरं सिलेसइ। सरोया वत्थाइं सिव्वइ। तुज्झ पसंसं सुणिऊण सो कहं तुमं सिणिज्झइ ? अहं कव्वं सिरामि।

प्रेरणार्थक प्रत्यय प्रयोग

असोगो तुं कहं हसावेइ ? सो तुमं कज्जं कराइ। माआ बालं अंबं चूसावेइ। कम्माइं णरं संसारे भमाडेंति। गिहसामी भिच्चेण सयणं ओम्बालइ। सो रुक्खत्तो फलाइं णिहाडेइ। साहू जणाणं दुक्खं णिहोडइ। तस्स हियय को दूमेइ ? रमेसो भीइं दुमेइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

नेहरुजी गुलाब का फूल अपने पास रखते थे। इस गांव में भी कमल पैदा होता है। हमारे बाग में चमेली के फूल बहुत हैं। क्या इस उद्यान में जूही नहीं है ? चंपा का वृक्ष १२ मास हरा रहता है। कदंब कफकारक और वायुजनक होता है। मौलसिरी कुष्ठ के रोग को दूर करता है। कूजा की लता बहुत फैलती है। वेला के पुष्प मेरे भाई को बहुत प्रिय है। केवडा दो प्रकार का होता है। तिलक दांत संबंधी रोगों को दूर करनेवाला है। जवाकुसुम (अडहुल) का तेल महंगा मिलता है। सिन्दुरिया के फूल प्रसिद्ध हैं। अगस्तिया प्रतिश्याय, ज्वर और कास में लाभकारी है। लोग तुलसी को पवित्र मानते हैं। दौना बालकों के उदर संबंधी बीमारी में बहुत उपयोगी है। मरुआ की सुगंध मीठी होती है। गेंदा के फूलों का रस रक्त बवासीर में लाभप्रद है।

धातु का प्रयोग करो

तपस्वी साधु-साध्वियों ने अपनी तपस्या से संघ को सींचा है। अस्फुट आवाज करनेवाला शिशु इस घर में कोई नहीं है। मैं प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ से सीखता हूं। खीचडी अभी सीझी नहीं है। तुम स्नान क्यों करते हो ? उसने तुमसे स्नेह कब किया ? मनुष्य का निर्माण कौन करेगा ? वे सब विमल की प्रशंसा करते हैं। पिता ने पुत्री का आलिंगन किया। टूटे दिल को सीने का प्रयास करो।

जिन्नन्त धातु का प्रयोग करो

तुम उसको क्यों हंसाते हो ? वह तुमसे अप्रामाणिक कार्य क्यों करवाता है ? पिता पुत्र को क्यों चूमता है ? मंत्री राजा को राज्य में घुमाता है। वह तुम्हारी प्रतिष्ठा को क्यों गिराता है ? वैद्य से वह रोग का निवारण करवाता है।

प्रश्न

१. णि के स्थान पर क्या आदेश होते हैं ?

२. अवि प्रत्यय विकल्प से कहां होता है और किस नियम से ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. तालिअण्ट और तमाड आदेश किसको होता है ?
४. निपूर्वक वृन् धातु से णि प्रत्यय को क्या आदेश होता है ?
५. धवलयति और दावयति को किस नियम से क्या आदेश होता है ?
६. कमल, गुलाब, चंपा, गेंदा, मौलसिरी, खस, वेला, चमेली, जूही औडहुल और केवडा के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
७. सिंच, सिंच, सिक्ख, सिज्झ, सिणा, सिणिज्झ, सिर, सिलाह, सिलेस, सिव्व और सीअ धातुओं का अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
८. णउलो, सरडो, खाडहिला, कुंतो, कारवलिआ, फलगो, कसो सरो, छुरिया—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अनुवाद करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९३ प्रेरणार्थक प्रत्यय (२)

शब्द संग्रह [सुगंधित द्रव्य]

केसर—कुंकुमं	कस्तूरी—कत्थूरी, कत्थूरिआ
इत्र—पुप्फसारो	गुलाबजल—पाडलजलं
केवडाजल—केअइजलं	गूगल—गुग्गुलो
अगर—अगरो	कर्पूर—कप्पूरो
तगर—तगरो, टगरो	कुंदरु—कुंदुरुक्को
खस—उसीरं	सुगंधबाला—हिरिबेरो
मुलहठी—लट्ठिमहु (सं)	नख—नखं (सं)
चंदन—चंदणो	कंकोल—कंकोलो
शिलारस—सिल्हगं	लोहबान—लोवाणो (सं)

० ० ० ०

मुसलमान—जवणो	यंत्र—जंतं
धुआं—धुम्मो	

धातु संग्रह

सील—अभ्यासकरना	सुप—मार्जनकरना
सुअ—सुनना	सुप्प—सोना
सुंघ—सूंघना	सुव—सोना
सुज्झ—शुद्धहोना	सुसमाहर—अच्छी तरह ग्रहण करना
सुत्त—बुनना	सुस्स—सूखना

नियम ६७२ (तुलेरोहामः ४।२५) णि प्रत्ययान्त तुल् धातु को ओहाम आदेश विकल्प से होता है

तुलयति (ओहामइ, तुलइ) तौलता है, तुलना करता है ।

नियम ६७३ (विरिचेरोलुण्डोल्लुण्ड-पल्हत्थाः ४।२६) वि पूर्वक रेचयति को ओलुण्ड, उल्लुण्ड और पल्हत्थ—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। विरेचयति (ओलुण्डइ, उल्लुण्डइ, पल्हत्थइ, विरेअइ) विरेचन करवाता है ।

नियम ६७४ (तडेराहोड-विहोडौ ४।२७) णि प्रत्ययान्त तड् धातु को आहोड, और विहोड आदेश विकल्प से होता है। ताडयति (आहोडइ, विहोडइ, ताडइ) पिटवाता है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ६७५ (मिश्रे वीसालमेलवौ ४।२८) णि प्रत्ययान्त मिश्र् धातु को वीसाल और मेलव—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। मिश्रयति (वीसालइ, मेलवइ मिस्सइ) मिलाता है।

नियम ६७६ (उद्धूले गुंण्ठः ४।२९) उद्धूलयति को गुण्ठ आदेश विकल्प से होता है।

उद्धूलयति (गुण्ठइ, उद्धूलेइ) धूसरित करता है।

नियम ६७७ (नशे विउडनासव-हारव-विप्पगाल-पलावाः ४।३१) णि प्रत्ययान्त नश् धातु को विउड, नासव, हारव, विप्पगाल, पलाव—ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं। नाशयति (विउडइ, नासवइ, हारवइ, विप्पगालइ, पलावइ, नासइ) नाश करवाता है।

नियम ६७८ (दृशे दाव-दंस-दक्खवाः ४।३२) णि प्रत्ययान्त दृश् धातु को दाव, दंस और दक्खव—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं।

दर्शयति (दावइ, दंसइ, दक्खवइ, दरिसइ) दिखाता है।

नियम ६७९ (घटेः परिवाडः ४।५०) णि प्रत्ययान्त घट् धातु को है परिवाड आदेश विकल्प से होता है। घटयति (परिवाडइ, घडेइ) घटाता है, संगत करता है।

नियम ६८० (उद्घटे रुग्गः ४।३३) णि प्रत्ययान्त उद्पूर्वक घट् धातु को उग्ग आदेश विकल्प से होता है। उद्घाटयति (उग्गइ, उग्घाडइ) खोलता है।

नियम ६८१ (वेष्टेः परिआलः ४।५१) णि प्रत्ययान्त वेष्ट् धातु को परिआल आदेश विकल्प से होता है। वेष्टयति (परिआलेइ, वेढेइ) वेष्टन करता है, लपेटता है।

नियम ६८२ (स्पृहः सिहः ४।३४) णि प्रत्ययान्त स्पृह् धातु को सिह आदेश होता है। स्पृहयति (सहइ) चाहता है।

नियम ६८३ (संभावेरासंघः ४।३५) संभावयति को आसंघ आदेश विकल्प से होता है। संभावयति (आसंघइ, संभावइ) संभावना करता है।

प्रयोग वाक्य

तेण कुंकममीसियपयो कहं पिज्जइ ? पारसो गिम्हकाले पाडलपुप्फसारस्स पओगं करेइ। से जंतलेहणे पाडलजलं मग्गइ। सा केअइजलं नेत्तपीलाए नेत्तेसु पाडेइ। अमुम्मि गामम्मि केसिं पासे महग्घा कत्थूरी अत्थि ? सो कप्पूरेलाकंकोलं तंबोलं खाअइ। कप्पूरो सेयवण्णो होइ। तगरस्स अवरनामं सुगंधबाला अत्थि। कुंदुरुक्को सल्लईए (सल्लकी वृक्ष) णिय्यासो भवइ। नखं नक्खसरिसं होइ अओ नखं कहिज्जइ। अंगारे ठविएण लोवाणे सेयवण्णस्स धुम्मो (धूआं) णिस्सरइ। चंदणो सीयलदो भवइ। कंकोलो मुहस्स दुगंधत्तं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूरीकरेइ। लट्ठिमधुम्मि सेयवण्णो महुरपयत्थो भवइ। हिरिबेरम्मि कत्थूरीसमो सुगंधो भवइ। उसीरं तणस्स मूलं अत्थि। सिल्हगम्मि णिथ्याससमो सुगंधो होइ। पुराणरुक्खस्स कट्ठम्मि अगरो कत्थइ मिलइ।

धातु प्रयोग

सो मासम्मि चत्तारि सामाइयाणि सीलइ। सो सव्वा सुणइ, परं करेइ णियमईए। अहं पुप्फाइं न सुंघामि। सो पायच्छित्तेण सुज्झइ। सिरीभिक्खु-सद्दाणुसासणस्स सुत्ताइं केण सुत्तीअ? सा भायणाणि सुपइ। साहू रोगं अन्तरेण दिणे कहं सुप्पइ? अहं रत्तीए सिग्घं सुवामि। तुज्झ सरीरं कहं सुस्सइ? तुमं सिक्खं सुसमाहरसि।

ञिन्नन्त धातु का प्रयोग

सो तुमं केण सह ओहामइ, तुलइ वा। वेज्जो रोगिं विरेअइ, ओलुण्डइ, पल्हत्थइ वा। रमेसो सत्तुं अण्णेण पुरिसेण विहोडइ, आहोडइ, ताडइ वा। पिआ पुत्तेण सुद्धघयम्मि वणस्सइघयं वीसालइ, मेलवइ, मिस्सइ वा। को वत्थाइं गुण्ठइ, उद्धूलेइ वा? सो तुम्हे पोत्थयं दाऊण कहं विउडइ, नासवइ, हारवइ, विप्पगालइ, पलावइ, नासइ वा। तुमं णियनव्वभवणं कं दावइ दंसइ, दक्खवइ, दरिसवइ वा? को घडं परिवाडइ, घडेइ वा? मंती सहाभवणं उग्गइ, उग्घाडइ वा। हत्थलिहियपोत्थयं को परिआलेइ, वेढेइ वा? साहू तवस्सिं भत्तपाणपच्चक्खाणं सिहइ। किं तुमं न संभावसि मग्गे अवरोहं आगमिस्ससि?

प्राकृत में अनुवाद करो

वह मिठाई में केसर मिलाता है। इत्र की सुगंध से सारा कमरा भर गया। केवडे का जल ठंडा होता है। कस्तूरी मृग के नाभि में होती है। गुलाब जल बाजार में किसके पास मिलेगा? पान में कर्पूर कौन खाता है? लोग गर्मी में ठंडी हवा के लिए खस को काम में लेते हैं। तगर का मूल्य क्या है? कुंदुरु कहां पैदा होता है? लोबान का प्रयोग मुसलमान अधिक करते हैं। औषधि में सुगंधबाला के मूल का व्यवहार होता है। मुलहठी चीनी से ५० गुणा अधिक मीठी होती है। नख समुद्री जीव के मुख के ऊपर का आवरण है। क्या तुम्हारे पास शिलारस है? कंकोल अंधापन को दूर करती है। हमारे घर में अगर है।

धातु का प्रयोग करो

निद्रा कम करने का अभ्यास करना चाहिए। तुम मौन रहकर किस की बात सुनते हो? कुत्ता चोर को पकडने के लिए क्या सूंघता है? वह स्नान कर शरीर को शुद्ध करता है। वह रुई से कौन-सा वस्त्र बुनना चाहता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है ? सीता अपने सम्पूर्ण घर का मार्जन करती है। तुम दिन में बार-बार क्यों सोते हो ? वह रात में भी नहीं सोता है। तुम्हारी बात को वह अच्छी तरह ग्रहण करता है। किस चिंता से उसका शरीर सूख रहा है ?

ञिन्नन्त धातुओं का प्रयोग करो

वह वायु की गति से मन की तुलना करता है। उसका शरीर स्वस्थ है फिर भी वैद्य विरेचन क्यों करवाता है ? मोहन अध्यापक से सोहन को पिटवाता है। तुम अपनी पत्नी से दूध में पानी क्यों मिलवाते हो ? वह मिठाई को बाजार में खुली छोडकर धूल से धूसरित क्यों करवाता है ? तुम उसको पर्वत पर स्थित भगवान पार्श्वनाथ का मंदिर दिखाते हो। वह पर्वत पर देवालय करवाता है। तुम पुस्तकालय का उद्घाटन किससे करवाते हो ? वह अपने बिस्तर को वेष्टित करवाता है। अहिंसा की यात्रा में साथ चलने के लिए वह तुम्हारी इच्छा करवाता है। क्या वह संभावना नहीं करता कि इससे वह उसका शत्रु बनेगा ?

प्रश्न

१. ञिन् (णि) प्रत्ययान्त तुल, तड, मिश्र, रेचय और वश धातुओं को क्या-क्या आदेश किस नियम से होता है ?

२. गुण्ठ, परिवाड, दाव, उग्ग, परिआल और आसंघ ये आदेश किस-किस धातु से हुए हैं ?

३. केसर, कस्तूरी, इत्र, गुलाबजल, केवडा जल, गूगल, अगर, तगर, कर्पूर, कुंदरु, खस, सुगंधबाला, मुलहठी, नख, चंदन, कंकोल, लोबान, शिलारस शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

४. सील, सुअ, सुंघ, सुज्झ, सुत्त, सुप, सुप्प, सुव, सुसमाहर, सुस्स—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरणार्थक प्रत्यय (३)

शब्द संग्रह [वस्ती और मार्ग वर्ग]

ग्राम—गामो
बडा कस्वा—दोणमुहं
नगर—णयरं
उपनगर— उवणयरं
छोटीवस्ती (गांव)—पल्ली (स्त्री)
मुहल्ला—गोमद्दा (दे.) रच्छा
हवेली—हम्मिओ (दे.)
झोंपडी—झुंपडा (दे.)
कुटिया—इरिया (दे.)
महानगर—महाणयरं
राजधानी—रायहाणी
व्यापारीनगर—पट्टणं
सडक—महापहो, रायमग्गो
मार्ग—मग्गो
गली—वीहि (स्त्री)
गुफा—गुहा, कफाडो (दे०)
पगडंडी—पद्धइ
प्रासाद—पासायो,

०   ०

समस्या—समस्सा

धातु संग्रह

से, सेअ—सोना
सेह—सिखाना
सोअ—सोना, शोक करना
सोभ—शोभायुक्त करना
सोह—शुद्धिकरना
सोह—शोभना, चमकाना
साइज्ज—स्वाद लेना
सार—ठीक करना
सार—याद दिलाना
सारक्ख—अच्छी तरह रक्षण करना

नियम ६८४ (उन्नमेरुत्थंघोल्लालगुलुगुञ्छोप्पेलाः ४।३६) णि प्रत्ययान्त उद्पूर्वक नम् धातु को उत्थंघ, उल्लाल गुलुगुञ्छ, उप्पेल—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। उन्नमयति (उत्थंघइ, उल्लालइ, गुलुगुञ्छइ, उप्पेलइ, उन्नामइ) ऊंचा करता है, उन्नत करता है।

नियम ६८५ (प्रस्थापेः पट्ठव-पेण्डवौ ४।३७) प्रस्थापयति को पट्ठव और पेण्डव आदेश विकल्प से होते हैं। प्रस्थापयति (पट्ठवइ, पेण्डवइ, पट्ठावइ) प्रस्थान करवाता है, भेजता है।

नियम ६८६ (विज्ञपेर्वोक्कावुक्कौ ४।३८) विज्ञापयति को वोक्क और अवुक्क आदेश विकल्प से होते हैं। विज्ञापयति (वोक्कइ, अवुक्कइ, विण्णवइ) विज्ञप्ति करता है।

नियम ६८७ (अर्पेरल्लिव-चच्चुप्प-पणामाः ४।३९) अर्पयति को

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अल्लिव, चच्चुप्प और पणाम आदेश विकल्प से होता है। अर्पयति (अल्लिवइ, चच्चुप्पइ, पणामइ) पक्ष में।

(वार्पौ १।६३) नियम ६४ से अर्पयति के आदि अ को ओ विकल्प से होता है। अर्पयति (ओप्पेइ, अप्पइ) अर्पण करता है।

नियम ६८८ (यापेर्जवः ४।४०) णि प्रत्ययान्त या धातु (यापयति) को जव आदेश विकल्प से होता है। यापयति (जवइ, जावेइ) कालयापन करता है।

नियम ६८९ (प्लावेरोम्वाल-पव्वालौ ४।४१) प्लावयति को ओम्वाल और पव्वाल आदेश विकल्प से होते हैं। प्लावयति (ओम्वालइ, पव्वालइ, पावेइ) खूब भिजाता है।

नियम ६९० (विकोशेः पक्खोडः ४।४२) नाम धातु विकोशयति को पक्खोड आदेश विकल्प से होता है। विकोशयति (पक्खोडइ, विकोसइ) खोलता है, फैलाता है।

नियम ६९१ (रोमन्थेरोग्गाल-वग्गोलौ ४।४३) नाम धातु रोमन्थयति को ओग्गाल और वग्गोल—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। रोमन्थयति (ओग्गालइ, वग्गोलइ, रोमन्थइ) चबाई वस्तु को पुनः चबाता है।

नियम ६९२ (प्रकाशेणुव्वः ४।४५) प्रकाशयति को णुव्व आदेश विकल्प से होता है। प्रकाशयति (णुव्वइ, पयासेइ) प्रकाशित करता है, चमकाता है।

नियम ६९३ (कम्पेर्विच्छोलः ४।४६) कम्पयति को विच्छोल आदेश विकल्प से होता है। कम्पयति (विच्छोलइ, कम्पेइ) कंपाता है।

नियम ६९४ (आरोहेर्वलः ४।४७) आरोहयति को वल आदेश विकल्प से होता है। आरोहयति (वलइ, आरोवेइ, आरोहेइ) ऊपर चढाता है।

नियम ६९५ (रञ्जे रावः ४।४९) णि प्रत्ययान्त रञ्ज् धातु को राव आदेश विकल्प से होता है। रञ्जयति (रावेइ, रञ्जेइ) खुशी करता है।

नियम ६९६ (कमेर्णिहुवः ४।४४) कम् धातु स्वार्थ में णि प्रत्ययान्त हो तो णिहुव आदेश विकल्प से होता है। कामयते (णिहुवइ, कामेइ)।

नियम ६९७ (दोले रङ्खोलः ४।४८) दुल् धातु स्वार्थ में णि प्रत्ययान्त हो तो रङ्खोल आदेश विकल्प से होता है। दोलायते (रङ्खोलइ, दोलइ) झूलता है।

प्रयोग वाक्य

गामवासिणो समक्खे का समस्सा अत्थि ? सुसीलो कम्मि दोणमुहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वसइ ? णयरवासिणो गामम्मि वसिउं न इच्छंति । रायहाणीए लोआ पइवरिसं वड्ढंति । भारहे केत्तिलाइं महाणयराइं संति ? चोरपल्लीइ चोरा चेअ वसंति । वरिसाए साहुणो झुंपडाइ ठाअंति । किं तुज्झभवणं रायमग्गे अत्थि ? वीहीए सूअरा भमंति । गोमट्टाए केत्तिला जणा निवसंति ? रायहाणीए महरोलीए उवणयरे मज्झ भाआ वसइ । कुडुल्लीए साहू अत्थि न वा । अहं पट्टणे गमिउं इच्छामि । एगो साहू गुहाए झाणं झाएइ । पासायम्मि राया कहं नत्थि ? अजत्ता रायिंदो णियणव्वम्मि हम्मिअम्मि वसइ ।

धातु प्रयोग

तुमं रत्तिदिवहं कहं सोअसि ? तुज्झ मित्तं तुं किं सेहइ ? तुमं किमट्ठं अज्ज सोअसि ? परिवारेण सह चंदो राईए सोहइ । तुज्झ लेहं पसंतो सोहइ । गगणे राओ चंदो सोहइ । साहू वत्थूइं न साइज्जइ । सो असुद्धं सिलोगं सारइ । रमेसो सारइ जं तुमए तं कज्जं कयं न वा ? खत्तियो सरणागयं सारक्खइ ।

प्रत्यय प्रयोग

आयरिअतुलसीए तेरापंथधम्मसंघे नारीजाइं उत्थंघीअ, उल्लालीअ, गुलुगुञ्छीअ, उप्पेलीअ वा । पिआ णियपुत्तं रायहाणि पट्ठवइ, पट्ठावइ, पेण्डवइ वा । गुरु सीसा धम्मं वोक्कइ, अवुक्कइ, विण्णवइ वा । सो जीवणं धम्मपयारट्ठं अल्लिवइ, चच्चुप्पइ, पणामइ, ओप्पेइ वा । सो धम्मं अंतरेण केवलं जीवणं जावेइ, जवेइ वा । तुमं रत्तीइ लवंगा कहं ओम्वालइ, पव्वालइ, पावेइ वा ? ठाणं लभिऊणं सो आसणाइं पक्खोडइ, विकोसइ वा । पसुणो सइ (एकबार) भोयणं संगिण्हंति राओ य ओग्गालइ, वग्गोलइ, रोमन्थइ वा । आयरिअतुलसी जेणधम्मं णुव्वइ, पयासेइ वा । अहिणिवेसिणो सासगस्स भयं जणा विच्छोलइ, कम्पेइ वा । भिच्चो भारं पव्वयम्मि वलइ, आरोवेइ, आरोहेइ वा । पई पत्तिं आभूसणं दाऊण रावेइ, रञ्जेइ वा । विरत्तो न णिहुवइ कामेइ वा । सीला दोलाए रङ्खोलइ, दोलइ वा ।

प्राकृत में अनुवाद करो

आजकल शहरों में समस्याएं बहुत हैं । गांव में सडक क्यों नहीं है ? चोरपल्ली में कोई जाना नहीं चाहता । गर्मी में झोंपडी ठंडी रहती है । राजधानी में कई देशों के दूतावास होते हैं । उसका घर गली में ही है । सडक पर चलने का सबको अधिकार है । बडे शहरों में शुद्ध वायु कम मिलती है । इस मार्ग से दूसरा मार्ग भी निकलता है । राजा का महल गांव में सबसे ऊंचा है । सेठ की हवेली में कौन रहता है ?

धातु का प्रयोग करो

बच्चा सुख से सोता है । उसे व्यावहारिक ज्ञान सिखाना चाहिए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किस प्रदेश के लोग अधिक शोक करते हैं ? बच्चों से घर शोभायमान लगता है। वह पानी से उसके भोजन के स्थान को शुद्ध करता है। गण में साधुओं के बीच आचार्य शोभायमान होते हैं। बच्चा बर्फ का स्वाद लेता है। उसे उच्चारण ठीक करना चाहिए। उसने पुनर्जन्म के संबंध को याद दिलाया। राजा शरण में आए हुए का अच्छी तरह संरक्षण करता है।

णिन्नन्त धातुओं का प्रयोग करो

प्रधानमंत्री ने अपने भाई की उन्नति की। जैनधर्म के प्रचार के लिए वह समणियों को विदेश प्रस्थान करवाता है। मैं आपकी पुस्तक को आपके हाथों में अर्पण करता हूं। वह संयम से काल यापन करता है। तुम सूंठ को पानी में अधिक भिजोते हो। क्या तुम आर्द्रवस्त्र को धूप में फैलाते हो ? ऊंट खाई वस्तु को रात में फिर चबाता है। आचार्य युवाचार्य को प्रकाश में लाते हैं। शीतकाल में ठंडी हवा मनुष्यों को कंपाती है। मंत्री अपने परिवार वालों को ऊंचा उठाता है। पिता बच्चों को मिठाई देकर खुशी करता है। सावन में कौन झूले में नहीं झूलती है।

प्रश्न

१. नीचे लिखे आदेश किस नियम से और किस धातु को हुए हैं—उत्थंघ, पेण्डव, चच्चुप्प, जव, पक्खोड, विच्छोल, राव।

२. उन्नमयति, विज्ञापयति, प्रस्थापयति, अर्पयति, प्लावयति और रोमन्थयति को क्या-क्या आदेश होता है ?

३. स्वार्थ में णि प्रत्यय किन धातुओं को होता है ?

४. ग्राम, बडा कस्वा, शहर, महानगर, राजधानी, व्यापारी नगर, उपनगर, मुहल्ला, सडक, मार्ग, गली, गुफा, कुटिया, झोंपडी—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

५. से, सेअ, सेह, सोअ, सोभ, सोह, साइज्ज, सार, सार, सारक्ख—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९५ भावकर्म

शब्द संग्रह (मास वर्ग)

श्रावण—सावणं
भाद्रव—भद्दवयं
आसोज—आसोओ
कार्तिक—कत्तिओ
मृगसर—मग्गसिरो
पोष—पोसो
माह—माहो
फाल्गुन—फग्गुणो
चैत्र—चइत्तो
वैशाख—वइसाहो
जेठ—जेट्ठो
आषाढ—आसाढो

धातु संग्रह

संक—संशय करना
संखा—गिनती करना
संकम—गति करना, जाना
संगच्छ—स्वीकार करना
संकल—जोडना, संकलन करना
संघट्ट—स्पर्श करना
संकेअ—संकेत करना
संघस—संघर्ष करना
संकोअ—संकुचित करना
संचाय—समर्थ होना

भावकर्म

भाव का अर्थ है क्रिया। जहां प्रत्यय केवल क्रिया अर्थ में ही होता है उसे भाववाच्य कहते हैं। जहां धातु से प्रत्यय कर्म में होता है उसे कर्मवाच्य कहते हैं। भाव में कर्म नहीं होता। जहां कर्म होता है उसे भाव नहीं कह सकते। दोनों में से एक रहता है, दोनों साथ नहीं रह सकते।

भाव का प्रयोग अकर्मक धातु से होता है। रोना, पैदा होना, सोना, लज्जित होना आदि उनके अर्थ वाली धातुएं अकर्मक होती हैं। खाना, पीना, देखना, करना आदि अर्थों में सकर्मक धातु का प्रयोग होता है। इन सकर्मक धातुओं में विवक्षा से कर्म का प्रयोग न करने से अकर्मक रह जाती हैं। प्राकृत में भाव-कर्म में दो प्रत्यय आते हैं—ईअ (ईय) और इज्ज। इन प्रत्ययों में से कोई एक प्रत्यय धातु के लगाने से भावकर्म की धातु के रूप बन जाते हैं। इन प्रत्ययों का प्रयोग वर्तमानकाल, विध्यर्थ, आज्ञा और ह्यस्तन भूतकाल में ही होता है। भविष्यत्काल और क्रियातिपत्ति में भावकर्म के प्रत्ययों के रूप कर्तृवाच्य की तरह ही चलते हैं।

नियम ६९८ (ईअ-इज्जौ क्यस्य ३।१६०) संस्कृत में भावकर्म में क्य प्रत्यय होता है। प्राकृत में क्य प्रत्यय को ईअ और इज्ज ये दो आदेश होते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हैं। हस् + ईअ = हसीअइ। हस + इज्ज = हसिज्जइ। हो + ईअ = होईअइ। हो + इज्ज = होइज्जइ। पढ + ईअ = पढीअइ। पढ + इज्ज = पढिज्जइ।

नियम ६९९ (दृशि-वचेर्डीस-डुच्चं ३।१६१) दृश् और वच् धातु से क्य प्रत्यय को क्रमशः डीस और डुच्च प्रत्यय होते हैं। दृश् + डीस = दीसइ (दृश्यते), वच् + डुच्च = वुच्चइ (उच्यते)।

नियम ७०० (म्मश्चेः ४।२४३) भाव कर्म में चि धातु के अन्त में म्म विकल्प से होता है, उसके योग में क्य का लुक् हो जाता है। चिम्मइ (चीयते) पक्ष में।

नियम ७०१ (न वा कर्मभावे व्वः क्यस्य च लुक् ४।२४२) चि, जि, श्रु, हु, स्तु, लू, पू और धून्—इन आठ धातुओं के अंत में भाव कर्म में व्व का आगम विकल्प से होता है। उसके योग में क्य का लुक् हो जाता है। चीयते (चिव्वइ, चिणिज्जइ)। जीयते (जिव्वइ, जिणिज्जइ)। श्रूयते (सुव्वइ, सुणिज्जइ)। भूयते (हुव्वइ, हुणिज्जइ)। स्तूयते (थुव्वइ, थुणिज्जइ) लूयते (लुव्वइ, लुणिज्जइ)। पूयते (पुव्वइ, पुणिज्जइ)। धूयते (धुव्वइ, धुणिज्जइ)।

नियम ७०२ (हन्खनोन्त्यस्य ४।२४४) हन् और खन् धातु के अंत को भाव कर्म में म्म प्रत्यय विकल्प से होता है। उसके योग में क्य प्रत्यय का लुक् होता है। हन्यते (हम्मइ, हणिज्जइ)। खन्यते (खम्मइ, खणिज्जइ)।

नियम ७०३ (ब्भो दुह-लिह-वह-रुधामुच्चातः ४।२४५) दुह्, लिह्, वह् और रुध् धातु को 'ब्भ' प्रत्यय विकल्प से होता है और क्य प्रत्यय का लुक् होता है। दुह्यते (दुब्भइ, दुहिज्जइ)। लिह्यते (लिब्भइ, लिहिज्जइ)। उह्यते (वुब्भइ, वहिज्जइ)। रुध्यते (रुब्भइ, रुन्धिज्जइ)।

नियम ७०४ (समनूपाद्रुधेः ४।२४८) सं, अनु, उप उपसर्ग पूर्वक रुध् धातु को भाव कर्म में ज्झ विकल्प से होता है और क्य प्रत्यय का लुक् होता है। संरुध्यते (संरुज्झइ, संरुन्धिज्जइ)। अनुरुध्यते (अणुरुज्झइ, अणुरुन्धिज्जइ)। उपरुध्यते (उवरुज्झइ, उवरुन्धिज्जइ)।

नियम ७०५ (दहो ज्झः ४।२४६) दह् धातु को भाव कर्म में ज्झ प्रत्यय विकल्प से होता है। उसके योग में क्य प्रत्यय का लुक् होता है। दह्यते (डज्झइ, डहिज्जइ)।

नियम ७०६ (लुगावी क्त भावकर्मसु ३।१५२) भावकर्मविहित क्त प्रत्यय परे हो तो णि (ञिन्नन्त) के स्थान पर लुक् और आवि ये दो आदेश होते हैं। कारिअं, कराविअं। हासिअं, हसाविअं।

प्रयोग वाक्य

जइणधम्माणुसारेण पुव्वं वरिसस्स आरंभो सावण सुक्का पडिवयाए

होहीअ। भद्दवये जेणाण संवच्छरी महापव्वं भवइ। आसोयम्मि दसहरापव्वं होइ। दीवावली कत्तिअम्मि भवइ। मग्गसिरम्मि सीअं वड्ढइ। पोसो मलमासो कहिज्जइ। तेरापंथधम्मसंघस्स पमुहपव्वं मेरामहोच्छवं माहम्मि हवइ। भारहे पाओ सव्वत्थ सव्वे जणा फग्गुणम्मि होलिं खेलंति। चइत्तम्मि सरीरस्स रत्तं परिअट्टणं भवइ। अक्खयतइया वइसाहमासे भवइ। जेट्ठे आइच्चस्स आयवो जणा तावइ। आसाढो वरिसस्स अवसाणमासो अत्थि।

धातु प्रयोग

जो संकेइ सो विणस्सइ। मुणी संकमेण न संकमेज्ज। असीई पंच सट्ठी य संकलेहि। रमेसो तं किं संकेइ? तुमं तं पण्हेण कहं संकोअइ? तुमं घराइं संखासि। तुज्झ कहणं हं संगच्छामि। पुरिसा साहुणिं न संघट्टंति। सो अग्गिणो अट्ठ कट्ठाइं संघसइ। अहं तं कज्जं करिउं संचाएमि।

प्रत्यय प्रयोग

तुमए कहं हसिज्जइ, हसीअइ वा। सुसीलाए पत्ताइं पढिज्जइ। किं तुमए उज्जाणं दीसइ? तिणा किं वुच्चइ? तुमए उज्जाणे किं चिम्मइ, चिव्वइ, चिणिज्जइ वा। मुणिणा इंदियाइं जिव्वंति, जिणिज्जंति वा। किं तुमए सम्मं न सुणिज्जइ? मए चंदपभु थुव्वइ, थुणिज्जइ। जणेहिं साहू सव्वत्थ पुव्वइ, पुणिज्जइ वा। विमलाए किं हुव्विहिइ, हुणिज्जिस्सइ वा? तिणा रुक्खाणि कहं लुव्वंति, लुणिज्जंति वा। साहुहिं कम्माइं धुव्वंति, धुणिज्जंति वा। संजमिणा के वि जीवा न हम्मंति, हणिज्जंति वा? अज्ज तुमए भूमी कहं खम्मइ, खणिज्जइ वा। मए गावी दुब्भइ, दुहिज्जइ वा। मए भारो न वुब्भिहिइ, वहिज्जिहिइ वा। तस्स मग्गो तुमए कहं रुब्भइ, रुन्धिज्जइ वा? इरिसाए हिअयं डज्झइ, डहिज्जइ वा।

प्राकृत में अनुवाद करो

श्रावण में वर्षा होती है। भाद्रव में जैन साधु केशलुंचन करते हैं। साधक आसोज की नवरात्रि में जाप करते हैं। कार्तिक में बहिनें गंगा स्नान करती हैं। चतुर्मास के बाद मृगसर में साधु विहार करते हैं। पोष में ठंड अधिक पडती है। माघ में विवाह अधिक होते हैं। फाल्गुन में हवाएं तेज चलती हैं। कुछ प्रदेशों में चैत्र मास में वर्ष का प्रारंभ होता है। वैशाख और जेठ मास में सूर्य का ताप असह्य होता है। आषाढ की पूर्णिमा के दिन तेरापंथ धर्म संघ की स्थापना हुई थी।

धातु का प्रयोग करो

धर्म में श्रद्धा करो, संशय मत करो। वह उससे बात करने के लिए राजधानी जाता है। इस गांव के साधार्मिक भाइयों की गिनती करो। वह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मौन में संकेत करता है। मुनि अपनी इंद्रियों को संकुचित करता है। वह पुत्री के विवाह के लिए धन को जोडता है। सीमा अपने पति की बात को स्वीकार नहीं करती है। साधु सचित्त का स्पर्श नहीं करते हैं। शांति चाहने वालों को किसी से संघर्ष नहीं करना चाहिए। क्या तुम इस कार्य को करने के लिए समर्थ हो ?

प्रत्यय का प्रयोग करो

वह क्यों हंसता है ? तुम कौन-सी पुस्तक पढते हो ? वह विद्वान् बनेगा। वह पांच मिनट तक आकाश को देखता है। तुम किसको कहते हो ? वह अवगुणों को चुनता है। विमला मन को जीतती है। सरोज सबकी बात सुनती है। तुम किस तीर्थंकर की स्तुति करते हो ? आजकल धन की पूजा होती है। क्या भगवान का साक्षात्कार होता है ? वह वृक्ष को क्यों काटता है ? वह सांप को मारता है। वे दस दिनों से खान को खोदते हैं। मेरी बहन भैंस को दुहती है। तुम किसका भार उठाते हो ? हमारी प्रगति को कौन रोकता है ?

प्रश्न

१. भाव कर्म एक है या दो ? विस्तार से समझाओ ?
२. भाव कर्म के रूप बनाने के लिए किन प्रत्ययों का प्रयोग करना होता है ?
३. नीचे लिखे रूप किन-किन धातुओं के हैं—दीसइ, वुच्चइ, चिम्मइ, जिब्वइ, लुव्वइ, वुब्भइ, दुब्भइ, पुव्वइ, थुव्वइ।
४. श्रावण, भाद्रव, आसोज, कार्तिक, मृगसर, पोष, माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, जेठ और आषाढ—इन मासों के लिए प्राकृत के शब्द बताओ ?
५. संक, संकम, संकल, संकेअ, संकोअ, संखा, संगच्छ, संघट्ट, संघस और संचाय धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।
६. केअगो, पाडलो, मालई, टगरो, लट्ठिमहु, कप्पूरो, उवणयरं, कुडुल्ली, कफाडो—इन शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में वाक्य बनाओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावकर्म (२)

शब्द संग्रह [ग्रह-नक्षत्र वर्ग]

सूर्य—आइच्चो, दिणअरो
चंद्रमा—चंदो, हिमयरो
मंगल—अंगारयो
बुध—बुहो
बृहस्पति—बहस्सई (पुं)
शुक्र—सुक्को
शनि—सणी (पुं)
राहु—राहू (पुं)
केतु—केऊ (पुं)
नक्षत्र—णक्खत्तं
तारा—तारा
ग्रह—गहो

धातु संग्रह

संचिण—संग्रह करना, इकट्ठा करना
संझाअ—ध्यान करना, चिंतन करना
संचुण्ण—खण्ड-खण्ड करना, चूर-चूर करना
संणज्झ—कवच धारण करना
संतर—तैरना
संजम—निवृत्त होना
संताव—हैरान करना, तपाना
संजय—सम्यक् प्रयत्न करना
संथर—बिछौना करना
संजोअ—संबद्ध करना, संयुक्त करना

नियम ७०७ (बन्धो न्धः ४।२४७) बन्ध् धातु के न्ध को भावकर्म में ज्झ विकल्प से आदेश होता है, उसके योग में क्य प्रत्यय का लुक् होता है। बध्यते (बज्झइ, बन्धिज्जइ)।

नियम ७०८ (गमादीनां द्वित्वम् ४।२४९) गम्, हस्, भण्, छुप्, लभ्, कथ् और भुज् धातुओं के अन्त्यवर्ण को भावकर्म में द्वित्व विकल्प से होता है। उसके योग में क्य प्रत्यय का लुक् होता है।

गम्यते (गम्मइ, गमिज्जइ)। हस्यते (हस्सइ, हसिज्जइ)।
भण्यते (भण्णइ, भणिज्जइ)। छुप्यते (छुप्पइ, छुविज्जइ)।
रुद्यते (रुव्वइ, रुविज्जइ)। लभ्यते (लब्भइ, लहिज्जइ)।
कथ्यते (कत्थइ, कहिज्जइ)। भुज्यते (भुज्जइ, भुज्जिज्जइ)

नियम ७०९ (ह-कृ-तृ-ज्रामीरः ४।२५०) हृ, कृ, तृ और जृ धातुओं के अन्त्य को ईर आदेश विकल्प से होता है, क्य का लुक् होता है।

ह्रियते (हीरइ हरिज्जइ)। क्रियते (कीरइ, करिज्जइ)।
तीर्यते (तीरइ, तरिज्जइ)। जीर्यते (जीरइ, जरिज्जइ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ७१० (अर्जे विढप्पः ४।२५१) अर्ज् धातु को विढप्प आदेश विकल्प से होता है, क्य का लुक् होता है। अर्ज्यते (विढविज्जइ, अज्जिज्जइ)

नियम ७११ (ज्ञो णव्व-णज्जौ ४।२५२) जानाति को कर्मभाव में णव्व और णज्ज—ये दो विकल्प से आदेश होते हैं। उसके योग में क्य का लुक् होता है। ज्ञायते (णव्वइ, णज्जइ, जाणिज्जइ, मुणिज्जइ)

नियम ७१२ (व्याहृगे र्वाहिप्पः ४।२५३) व्याहरति को भावकर्म में वाहिप्प आदेश विकल्प से होता है। उसके योग में क्य का लुक् होता है। व्याह्रियते (वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ)

नियम ७१३ (आरभे राढप्पः ४।२५४) आरभते को भावकर्म में आढप्प आदेश विकल्प से होता है, उसके योग में क्य का लुक् होता है। आरभ्यते (आढप्पइ, आढवीअइ)

नियम ७१४ (स्निह-सिचोः सिप्पः ४।२५५) स्निह् और सिच् धातु को भावकर्म में सिप्प आदेश होता है। उसके योग में क्य का लुक् होता है। स्निह्यते (सिप्पइ) प्रीति करना। सिच्यते (सिप्पइ)

नियम ७१५ (ग्रहे र्घेप्पः ४।२५६) ग्रह् धातु को भावकर्म में घेप्प आदेश विकल्प से होता है। उसके योग में क्य का लुक् होता है। गृह्यते (घेप्पइ, गिण्हिज्जइ)

नियम ७१६ (स्पृशेश्छिप्पः ४।२५७) स्पृश् धातु को भावकर्म में छिप्प आदेश विकल्प से होता है। उसके योग में क्य का लुक् होता है। स्पृश्यते (छिप्पइ, छिविज्जइ)

नियम ७१७ (क्यङो र्यं लुक् ३।१३८) नाम धातु से होने वाले क्यङ्, क्यज्, क्यङष् प्रत्ययों के य का लुक् होता है। गरुआइ, गरुआअइ (अगुरु-र्गुरुर्भवति, गुरुरिवाचरति वा इत्यर्थः)। दमदमशब्दंकरोति (दमदमाइ, दमदमाअइ)

प्रयोग वाक्य

सोहव्व सत्तिमंतो सूरगहो अत्थि। चंदं चइऊण सव्वे गहा दिणअरस्स चोद्दहअंसाओ अंतरो अत्थंगया भवंति। मंगलगहस्स उवसमणट्ठं पवालं परिहियव्वं। बुधगहो वावरं कारवेइ। बहस्सइस्स रंगो पीओ भवइ। सुक्कस्स रंगो सुक्को होइ। सणी सणिअं चलइ। राहू चंदं गसइ। केऊ कूरगहो अत्थि। पुस्सणक्खत्तं सव्वेसु कज्जेसु सुहं भवइ। पत्तेयणक्खत्तस्स भिण्णाओ ताराओ संति।

धातु प्रयोग

विमलाए जराइ धणं संचिणइ। महिंदो मोअगं संचुण्णइ। संजमी सावज्जजोगाओ संजमइ। सामाइयम्मि सावगो संजयइ। सो समासे पयाइं

संजोअइ । सुहमुणी अहियसमयं संझाअइ । खलियो जुज्झे संणज्झइ । गंगानई को संतरिस्सइ ? सेट्ठी भिक्खारिं कहं संताबइ ? राओ पढमपहरस्स पच्छा अहं संथरामि ।

प्रत्यय प्रयोग

अट्ठदससु पावेसु कम्मेहिं बज्झइ, बन्धिज्जइ वा । तुमए कत्थ गम्मइ, गम्मिज्जइ वा ? तुम्हेहिं किं भण्णइ, भणिज्जइ वा ? तस्स माआइ को रुव्वइ, रुविज्जइ वा ? सुमणाइ सच्चं कत्थइ, कहिज्जइ वा । सुवण्णवावारे तेण किं लब्भइ, लहिज्जइ वा ? आवणे तुमए किं भुज्जइ, भुज्जिज्जइ वा ? तुज्झ सरीरं तिणा कहं छुप्पइ, छुविज्जइ वा ? तेणं सिसुहत्थाओ पत्थरं हीरइ, हरिज्जइ वा । सुरेसेण नई तीरइ, तरिज्जइ वा । सव्वेहिं वत्थूहिं जीरइ, जरिज्जइ वा । मए किमवि न कीरइ, करिज्जइ वा । तेणं दिवहे किं विढविज्जइ अज्जिज्जइ, वा ? तुमए अहं णव्वामि, णज्जामि, जाणिज्जामि, मुणिज्जामि वा । रमेसेण गारुडो वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ वा । अज्ज तुमए किं कज्जं आढप्पइ, आढवीअइ वा ? तेण तुमं सिप्पइ । गिहसामिणा णियउज्जाणं सिप्पइ । तस्स गिहाओ तुमए किं घेप्पइ, गिण्हिज्जइ वा ? तेण तुज्झ सरीरं किमट्ठं छिप्पइ, छिविज्जइ वा ?

प्राकृत में अनुवाद करो

सूर्यग्रह का दोष मिटाने के लिए मंत्र का जाप करो । चांदी की अंगूठी पहनने से चंद्रग्रह का दोष कम होता है । चन्द्रमा का संबंध मन से है । मंगल का संबन्ध शरीर के रक्त से है । बुध ग्रह के कारण मनुष्य ज्योतिष सीखता है । बृहस्पति ग्रह अध्यात्म की ओर प्रवृत्त करता है । गोचर (गोअर) ग्रहों में शुक्र अस्त हो तब दीक्षा देनी चाहिए । शनि मनुष्य को घर से सडक पर खडा कर देता है । राहु की गति धीमी होती है । बारहवें घर में बैठा केतु अच्छा फल देता है । वह स्वातिनक्षत्र में गांव में प्रवेश करता हैं । दिन में तारा कौन दिखाता है ? चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र में ८४ ग्रहों के नाम हैं ।

धातु का प्रयोग करो

वह किसके अवगुणों को संग्रह करता है ? महेश ने घडे के टुकडे-टुकडे कर दिए । क्या तुम भोजन से निवृत्त होते हो ? वह ईर्यासमिति (इरियासमिइ) में सम्यक् प्रयत्न करता है । तुम अपने विवाद में मुझे क्यों संबद्ध करते हो ? वह ध्यान क्यों नहीं करता है ? आज तुम कवच धारण क्यों करते हो ? यमुना नदी को वह भुजाओं से तैरेगा । पढाने के लिए तुम विद्यार्थियों को क्यों हैरान करते हो ? वह किसके लिए दिन में बिछौना करता है ?

प्रत्यय प्रयोग करो

वह तुमको प्रेम की रज्जु से बांधता है । क्या तुम आज अपने देश को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा रहे हो । वह कौन सा आगम पढता है ? देखो, रात को कौन और क्यों रोता है ? माता बच्चों को कहानी कहती है । मुझे तुम्हारा स्नेह प्राप्त होता है । मैं मिठाई नहीं खाता हूं । साधु अग्नि को नहीं छूते हैं । उसकी निंदा करने से तुम क्या प्राप्त करते हो ? जो हिंसा करता है वह जीवों के प्राण छीनता है । वह भवसागर को तैरता है । अब तुम क्या करते हो ? समय के साथ वस्त्र जीर्ण होते हैं । धर्म के साथ तुम पुण्य का भी अर्जन करते हो । मैं तुमको नहीं जानता । वह तुम्हारे से क्यों नहीं बोलता है ? मैं आज से साधना प्रारंभ करता हूं । पहले सोचकर जो प्रीति करता है वह दुःख नहीं पाता । वह अपने खेत को क्यों नहीं सींचता है ? वह प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करता है । क्या वह आकाश को छूता है ?

प्रश्न

१. सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, ग्रह, नक्षत्र और तारा के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
२. संचिण, संचुण्ण, संजम, संजय, संजोअ, संझाअ, संणज्झ, संतर, संताव और संथर—इन धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९७ कृत्यप्रत्यय

शब्द संग्रह (यंत्र वर्ग)

घडी यंत्र (घडीजंतं)
टाइपराइटर—लेहणजंतं
टेलीफोन—वत्ताजंतं
थर्मामीटर—तावभावअं
प्रेस—मुद्दणालयो
रेडिया—झुणिखेवअजंतं
लाउडस्पीकर—सुइजंतं
दूरवीक्षण—दूरविक्खणजंतं
बिजली का पंखा—संपावीजणं
साउण्ड बॉक्स—झुणिमंजूसा

धातु संग्रह

आलुंप—हरण करना
आलोअ—देखना
आलोअ—आलोचना करना, गुरु को अपना अपराध कहना
आलोड—हिलोरना, मंथन करना
आव (आ+या)—आना
आवआस—आलिंगन करना
आवज्ज—प्राप्त करना
आवट्ट—चक्र की तरह घूमना,
आवड—आना, आगमन करना
आवत्त—आना
आवर—ढांकना

कृत्यप्रत्यय

जहां अंत में चाहिए का प्रयोग आए अथवा यह करने योग्य है, खाने योग्य है या करना है, खाना है, जाना है—इत्यादि स्थानों पर कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इन्हें विध्यर्थ कृदन्त कहते हैं। संस्कृत में कृत्य प्रत्यय पांच हैं—तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण्। प्राकृत में धातु से तव्व, अणीअ और अणिज्ज प्रत्यय लगाने से विध्यर्थ कृदन्त के रूप बनते हैं। य, क्यप् और घ्यण् प्रत्ययों में य शेष रहता है। संस्कृत के य प्रत्यय को प्राकृत में 'ज्ज' हो जाता है। पूर्व नियम (९५) के अनुसार तव्व प्रत्यय के पूर्ववर्ती अ को इ और ए आदेश होता है।

तव्व प्रत्यय—

हस—हसितव्यम् (हसितव्वं, हसेतव्वं, हसिअव्वं, हसेअव्वं) हंसना चाहिए
हो—भवितव्यम् (होइतव्वं, होएतव्वं, होइअव्वं, होएअव्वं) होना चाहिए

अणीअ प्रत्यय—

हस—हसनीयम् (हसणीअं) हंसना चाहिए
कर—करणीअं (करणीयम्) करना चाहिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गम—गमनीयम् (गमणीअं) जाना चाहिए

अणिज्ज प्रत्यय—

हस—हसनीयम् (हसणिज्जं)

कर—करणीयम् (करणिज्जं)

गम—गमनीयम् (गमणिज्जं)

प्रेरक (णिजन्त) विध्यर्थ कृदन्त प्रत्यय—

हस—हसायितव्यम् (हसावितव्वं, हसाविअव्वं, हसावियव्वं) हंसाना चाहिए
हसनीयम् (हसावणीअं, हसावणिज्जं) हंसाना चाहिए

विध्यर्थ कृदन्त के कुछ उपलब्ध रूप—

(**द्यय्यर्यां जः २।२४**) **नियम ३१७ से** वर्ज्यम् (वज्जं) वर्जनेयोग्य। कार्यम् (कज्जं) करने योग्य।

अवज्जं (अवद्यं) नहीं बोलने योग्य, नहीं बोलना चाहिए, पाप। भार्या (भज्जा) स्त्री।

(**रुदभुजमुचां तोऽन्त्यस्य ४।२१२**) **नियम ६८ से** भोक्तव्यम् (भोत्तव्वं) भोजन करने योग्य, भोजन करना चाहिए।

रुदितव्यम् (रोत्तव्वं) रोने योग्य, रोना चाहिए।

मोक्तव्यम् (मोत्तव्वं) छोडने योग्य, छोडना चाहिए।

(**वचो वोत् ४।२११**) **नियम ६७ से** वक्तव्यम् (वोत्तव्वं) कहने योग्य, कहना चाहिए।

(**क्त्वा तुम् तव्येषु घेत् ४।२१०**) **नियम ६६ से** ग्रहीतव्यम् (घेत्तव्वं) ग्रहण करने योग्य, ग्रहण करना चाहिए।

(**आ कृगो भूत-भविष्यतोश्च ४।२१४**) **नियम ७० से** कर्तव्यम् (कायव्वं) करने योग्य।

(**साध्वस ध्य-ह्यां झः २।२६**) **नियम १६ से** गुह्यम् (गुज्झं) छिपाने योग्य, छिपाना चाहिए।

(**गोणादयः २।१७४**) **नियम ३ से** वाक्यम् (वच्चं) कहने योग्य।

कृत्यम् (किच्चं) करने योग्य। ग्राह्यम् (गेज्झं) ग्रहण करने योग्य। वाच्यम् (वच्चं) बोलने योग्य। जन्यम् (जन्नं) पैदा होने योग्य। पाच्यम् (पच्चं) पचने योग्य। भव्यम् (भव्वं) होने योग्य। आर्यः (अज्जो) आर्य। अर्यः (अज्जो) वैश्य, स्वामी। भृत्यः (भिच्चो) भृत्य, नौकर।

प्रयोग वाक्य

मज्झ पासे घडीजंतं नत्थि। लेहणजंतेण कमलेसो विण्णत्ति णिक्कसइ। वत्ताजंतेण तेण सूअणा दिण्णा। तावभावएण सो जरं (ज्वरं) पासइ। झुणिखेवअजंतं देसविदेसाणं वत्तं सावेइ। अहं सुइजंतं न फासेमि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूरविक्खणजंतं कस्स पासे अत्थि ? सो संपावीजणं अंतरेण अत्थ ठाउं न समत्थो अत्थि। जइणविस्सभारईए अंगणे एगो मुद्दणालयो अत्थि। झुणिमंजूसं अंतरेण सुइजंतस्स किं उवओगित्तं ?

धातु प्रयोग

पुढविजीवाणं पाणा को लुंपइ ? सो अट्ठं तत्थ गंतव्वं जत्थ कोवि न आलोएइ। आयरियाणं पासे सुइभावेण आलोएयव्वं। जेणसुत्ताणि के के साहुणो आलोडंति ? अत्थ अज्ज को आविस्ससि ? भाआ भाअरं आवआसइ। विवादेण तुमं किं आवज्जिस्ससि ? णमोक्कारमहामंतस्स सो अणेगहुत्तो आवट्टइ। तुमं कया अमुम्मि णयरे आवडिहिसि, आवत्तिहिसि वा ? सो णियखलणं कहं आवरइ ?

प्रत्यय प्रयोग

केण सद्धिं कयावि अइ न हसिअव्वं, हसेअव्वं वा। तुमए विणीओ होइतव्वो, होएतव्वो वा। तस्स गिहे न गमणिज्जं। पइदिणं सज्झायं करणिज्जं। तुमए मोरउला कोवि न हसावणीओ, हसावणिज्जो वा। मत्ताए अहियं न भोत्तव्वं। सया सच्चं वोत्तव्वं। परवत्थुं आणं अन्तरेण न घेत्तव्वं। गुत्तवत्ता सया गुज्झा।

प्राकृत में अनुवाद करो

भारत का कौन सा घडी यंत्र प्रसिद्ध है ? टाइपराइटर का मूल्य क्या है ? टेलीफोन पर मैं तुमसे बात करूंगा। क्या थर्मामीटर सही ज्वर बताता है ? रेडियो सुनने के लिए यहां कितने लोग आए हैं ? लाउडस्पीकर से दूर बैठे लोग वक्ता का भाषण सुनते हैं। वह दूरवीक्षण से चंद्रमा को देखता है। ग्रीष्म में बिजली का पंखा गर्म हवा देता है। इस प्रेस का मालिक कौन है ? साउण्डबॉक्स किसके पास है ?

धातु का प्रयोग करो

किसी के अधिकार को हरण नहीं करना चाहिए। वह केवल तुम्हारे दोष ही देखता है। साधु आचार्य के पास प्रतिदिन आलोचना करते हैं। हमारे घर में माता प्रातः दधि का मंथन करती है। तुम्हारी इच्छा के बिना तुम्हारे घर कोई भी नहीं आएगा। बडे साधु छोटे साधु का आलिंगन करते हैं। वह गुरु के सान्निध्य में बैठकर शिक्षा प्राप्त करता है। तपस्विनी साध्वी कनकावली तप की कौनसी आवृत्ति करती है ? आचार्य तुम्हारे गुणों को क्यों ढांकते हैं ? तुम्हारे व्यवहार के कारण तुम्हारे साथ कोई भी नहीं आएगा।

प्रत्यय का प्रयोग करो

तुम्हें सदा पांच मिनट हंसना चाहिए। उसे बडों के साथ नम्र होना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाहिए। गलत काम कभी नहीं करना चाहिए। तुम्हें उसके साथ जाना चाहिए। यह काम तुम्हें नहीं करना चाहिए। रात में नहीं खाना चाहिए। उसे अपने भाग्य पर रोना नहीं चाहिए। तुम्हें धूम्रपान छोड देना चाहिए। उसे कुछ न कुछ नियम अवश्य ग्रहण करना चाहिए। साधक को अपनी उपलब्धि छिपानी चाहिए, किसी को कहनी नहीं चाहिए। किसी के अवगुण उसे ही कहना चाहिए दूसरों को नहीं।

प्रश्न

१. संस्कृत में कृत्यप्रत्यय कितने होते हैं। प्राकृत में उसके लिए कितने प्रत्यय हैं। शेष प्रत्ययों के लिए क्या नियम काम में लिया जाता है? उदाहरण सहित समझाओ।
२. कृत्य प्रत्ययों का प्रयोग किस अर्थ में होता है?
३. घडीयंत्र, टाइपराइटर, टेलीफोन, थर्मामीटर, रेडिया, लाउडस्पीकर, प्रेस, दूरवीक्षण और बिजली का पंखा—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
४. आलुंप, आलोअ, आलोअ, आलोड, आव, आवआस, आवज्ज, आवट्ट, आवड, आवत्त और आवर धातुओं के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (स्फुट)

विरह—अवहायो
असमर्थ—असंथड (वि)
तिरस्कार—अवहेरी
दुर्भिक्ष—दुब्भिक्खं
मैथुन—अबहिट्ठं (दे०)
निरर्थक—अट्टमट्ट (वि) (दे०)
पुराना मंदिर—अहिहरं (दे०)
आश्चर्य—अब्भुयं
चमकदार, प्रकाशित—अब्भुत्तिअ (वि)
दोष का झूठा आरोप—अलग्गं (दे०)
अनवसर—अवरिक्क (वि)

धातु संग्रह

आवास—वास करना, रहना
आवा—पीना
आविअ—पीना
आविंध—बींधना
आविहव—प्रगट होना
आवीड—पीडना
आवेस—भूताविष्ट करना
आस—बैठना
आसंघ—संभावना करना
आसाअ—स्वाद लेना, चखना

क्त प्रत्यय

क्त प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल के अर्थ में होता है। यह कार्य की समाप्ति बताता है। किया, गया, खाया, पीया आदि। क्त प्रत्यय सब धातुओं से होता है। सकर्मक धातु से कर्म में और अकर्मक धातु से भाव तथा कर्ता में होता है। भाव में प्रत्यय होने से धातु के रूपों में नपुंसक लिंग और एक वचन होता है। कर्म में प्रत्यय होने से कर्म के अनुसार धातु (क्रिया) के रूप तीनों लिंगों में होते हैं। कर्ता में प्रत्यय होने से कर्ता के अनुसार धातु के रूप तीनों लिंगों में होते हैं। क्त प्रत्यय के स्थान पर प्राकृत में त और अ प्रत्यय होता है।

नियम ७१८ (क्ते ३।१५६) क्त प्रत्यय परे होने पर पूर्ववर्ती अ को इ हो जाता है। गम्—गतः (गमिओ) गया। हस्—हसितः (हसिओ) हंसा। चल्—चलितः (चलिओ) चला। पठ्—पठितः (पढिओ) पढा।

प्रेरक (ञिन्नन्त) में क्त प्रत्यय—

कर—कारितः (कारिओ कराविओ) करवाया हुआ।

हस्—हासितः (हासिओ, हसाविओ) हंसाया हुआ।

भाव में क्त प्रत्यय के रूप—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गतम् (गामिअं, गमितं) गया हुआ।
हसितं (हसिअं, हसितं) हंसा हुआ।
कर्म में क्त प्रत्यय के रूप—
पढिआ विज्जा (पठिता विद्या)
गमिओ गामो (गतः ग्रामः)
भणियं नाणं (भणितं ज्ञानं)
संस्कृत शब्दों से बने प्राकृत के क्त प्रत्यय के रूप—

गयं (गतम्) गया हुआ। तप्तम् (तत्तं) तपा हुआ। मतम् (मयं) माना हुआ। दृष्टम् (दट्ठं, दिट्ठं) देखा हुआ। कृतम् (कडं) किया हुआ। कृतम् (कयं) किया हुआ। हृतम् (हडं) हरण किया हुआ। मृष्टम् (मट्ठं) शुद्ध किया हुआ। मृतम् (मडं) मरा हुआ। म्लानम् (मिलाणं) कुम्हलाया हुआ। जितम् (जिअं) जीता हुआ। आख्यातम् (अक्खायं) कहा हुआ। निहितम् (निहियं) स्थापित किया हुआ। संस्कृतम् (सक्कयं) संस्कृत। आज्ञप्तम् (आणत्तं) आज्ञा किया हुआ। विनष्टम् (विनट्ठं) विनष्ट। संस्कृतम् (संखयं) संस्कृत किया हुआ। हृतम् (हयं) मरा हुआ। आक्रुष्टम् (आकुट्ठं) आक्रोश किया हुआ। जातम् (जायं) पैदा हुआ। प्रणष्टम् (पणट्ठं) नाश। ग्लानम् (गिलाणं) ग्लान हुआ। प्ररूपितम् (परूविअं) प्ररूपित किया हुआ। स्थितं (ठियं) स्थित। पिहितम् (पिहिअं) ढका हुआ। प्रज्ञप्तम् (पण्णत्तं) कहा हुआ। प्रज्ञपितम् (पण्णविअं) प्रज्ञापित किया हुआ। क्लिष्टम् (किलिट्ठं) क्लेशयुक्त। स्मृतम् (सुअं) स्मरण किया हुआ। श्रुतम् (सुयं) सुना हुआ। संसृष्टम् (संसट्ठं) संसर्ग युक्त। घृष्टम् (घट्ठं) घिसा हुआ।

नियम ६१६ (क्तेनाप्फुण्णादयः ४।२५८) क्त प्रत्यय सहित आक्रम आदि धातुओं के स्थान में अप्फुण्ण आदि शब्द निपात हैं। आक्रान्तः (अप्फुण्णो)। उत्कृष्टम् (उक्कोसं)। स्पष्टम् (फुडं)। अतिक्रान्तः (वोलीणो)। विकसितः (वोसट्टो)। निपतितः (निसुट्टो)। रुग्णः (लुग्गो)। नष्टः (ल्हिक्को)। प्रमृष्टः, प्रमुषितोवा (पम्हुट्ठो)। अर्जितम् (विढत्तं)। स्पष्टम् (छित्तं)। स्थापितम् (निमिअं)। आस्वादितम् (चक्खिअं)। लूनम् (लुअं)। त्यक्तम् (जढं)। क्षिप्तम् (झोसिअं)। उद्वृत्तम् (निच्छूढं)। पर्यस्तम् (पल्हत्थं, पलोट्टं)। ह्रेषितम् (हीसमणं)।

प्रयोग वाक्य

सो तुज्झ विरहं सहिउं असंथडो अत्थि। केसिं वि अवहेरी न कायव्वा। दुब्भिक्खम्मि अन्नं दुलहं (दुर्लभ) भवइ। साहगो अवहिट्ठं न इच्छइ। अट्टमट्टाए वत्ताए समयो न पूरिअव्वो। गामम्मि अहिहरं केण णिम्मियं अत्थि? संसारे केत्तिलाइं अब्भुयाइं संति? अब्भुत्तिअं वत्थं मज्झ न रोएइ। तस्स अवरिं किं अलग्गं अत्थि? महापुरिसेण सह अवरिक्कणिवेअणं न कायव्वं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु प्रयोग

अहं रायहाणीए आवासामि। घरसामी रत्तीए दुद्धं आवाइ। भसलो पुप्फाण रसं आविअइ। रामस्स सराइं लक्खं आबिधइ। साहूणाए णिम्मल-भावेण किं नाणं आविहवइ? खेत्तसामी खेत्ते उक्खुं आवीडइ। तस्स भज्जाए भूओ (भूत) आवेसइ। गिम्हकाले रुक्खछायाए अहं आसामि। अहं आसंघामि तुमं साहुत्तं अंगीकरिस्ससि। सो पत्तेयं वत्थु आसाएइ।

प्रत्यय प्रयोग

को मुणी विएसे गओ? लोएसेण आयारसुत्तं पढिअं। सावगेण साहुट्ठाणं गयं। मए जोइसविज्जा पढिआ। रिसभेण दसवेआलियं सुत्तं भणियं। तुमए तस्स माला कहं हडा? केण पुण्णरूवेण मणो जिओ। महिंदेण न कोवि आकुट्ठो। तुमए कत्थ जाअं? भगवया महावीरेण किं अक्खायं अत्थि अमुम्मि विसये। विमलो मट्ठं जलं न पिवइ। किं एअं नीरं तत्तं? अत्थ मग्गे केण दुद्धपत्तं निहियं? किं तुमए चंदलोअं दिट्ठं? सीहेण मिग्गो अप्फुण्णो। तस्स णाणं फुडं अत्थि। अज्ज भोयणस्स सव्वं वत्थु केण जढं। तेण महु जीवणे न चक्खिअं।

प्राकृत में अनुवाद करो

विरह को सहन करने वाला साधक होता है। वह आगम के शोध का कार्य करने में असमर्थ है। उसने तुम्हारा तिरस्कार कब किया था? दुर्भिक्ष में मनुष्य धैर्य (धिज्जं) खो देते हैं। उसे मैथुन से विरति हो गई है। वह निरर्थक कार्यों में धन देता है। वह पुराने मंदिर को नया बनाता है। तुम्हारा यहां आना मुझे आश्चर्य लगता है। सूर्य के प्रकाश से प्रत्येक वस्तु प्रकाशित हो जाती है। उसने तुम्हारे पर आरोप क्यों लगाया? जो अनवसर में बात करता है, वह सफल नहीं होता।

धातु का प्रयोग करो

पक्षी रात में वृक्षों पर वास करते हैं। प्यासे पशु तालाब में पानी पीते हैं। पपीहा वर्षा की बूंदों को पीता है। जंगल में शिकारी (लुद्धो) ने हरिण को बींधा। किस साधु को अवधिज्ञान प्रगट हुआ है? तेली पत्नी को पीडता है। सुशीला के ही शरीर में भूताविष्ट क्यों हुआ? कुत्ता रात को गली में बैठता है। मैं संभावना करता हूं तुम इस वर्ष एकान्त साधना करोगे। वह मदिरा को क्यों चखता है?

प्रत्यय प्रयोग

साधुत्व को छोडकर वह घर में क्यों गया? उसने तुम्हारा काव्य ध्यान से पढा है। यह कार्य तुमने स्वयं नहीं किया है, अपितु तुमसे कराया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गया है। क्या यह सांप मर गया? वह खेल में जीत गया। तुमने उस पर क्यों आक्रोश किया? तुम कब पैदा हुए थे? इस वर्ष जेठ मास में सूर्य बहुत अधिक तपा। यह बगीचा क्यों कुम्हलाया? तुमने उस साधु को कब देखा? यह भोजन साधु को नहीं कल्पता है, क्योंकि उसके लिए स्थापित है। स्वाध्याय के लिए भगवान ने आज्ञा दी है। यह मकान नष्ट क्यों हुआ? विहार करना सिद्धांत के द्वारा माना हुआ है।

प्रश्न

१. क्त प्रत्यय का प्रयोग किस काल के अर्थ में होता हैं?
२. कर्ता, कर्म और भाव में प्रत्यय होने से कौनसा लिंग और वचन होता है?
३. प्राकृत में क्त प्रत्यय के स्थान पर कौनसा प्रत्यय होता है?
४. विरह, असमर्थ, तिरस्कार, दुर्भिक्ष, मैथुन, निरर्थक, पुराना मंदिर, आश्चर्य, आरोप, चमकदार (प्रकाशित) और अनवसर के लिए प्राकृत शब्द बताओ।
५. आवास, आवा, आविअ, आविंध, आविहव, आवीड, आवेस, आस, आसंघ और आसय धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्यों में प्रयोग करो।
६. फग्गुणो, कत्तिओ, मग्गसिरो, सणी, बुहो, अंगारयो, वत्ताजंत्तं, तावभावअं शब्दों को वाक्य में प्रयोग करो तथा हिन्दी में अर्थ बताओ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

९९ शतृ और शान प्रत्यय

शब्द संग्रह (यान वर्ग)

वायुयान—वाउजाणं (सं)	रेलगाडी—बप्फगं (सं)
मोटर—तेलजाणं (सं)	मुसाफिरगाडी—पारिजाणिओ (सं)
बस—परिवहणं (सं)	ट्रक—भारवाहजाणं (सं)
साइकल—पायजाणं (सं)	अगनबोट—अग्गिबोओ (सं)
रथ—रहो	बैलगाडी—बलीवद्दजाणं
भैंसागाडी—महिसजाणं	घोडागाडी—आसजाणं
ऊंटगाडी—उट्टजाणं	गधागाडी—गद्दभजाणं
नौका—णावा	जलजहाज—जलजाणं

० ० ० ०

लाइसेंस—आणावणं (सं)	टिकट—वहणदलं (सं)
पेट्रोल—भूतेलसारो (सं)	रेल की लाइन—लोहसरणि (पुं)

धातु संग्रह

आहा—कहना	आसास—आशा करना
आहर—छीनना, खींच लेना	आहर—लाना
आहार—खाना	आहल्ल—हिलना
आहिंड—घूमना	आहव—बुलाना
आसास—आश्वासन देना, सान्त्वना देना	आहम्म—आना

शतृ-शान प्रत्यय

हिन्दी भाषा में जाता हुआ, खाता हुआ, पीता हुआ आदि अर्थों में शतृ और शान प्रत्यय आते हैं। ये दोनों वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय हैं। ये प्रत्येक धातु से वर्तमान अर्थ में होते हैं। जहां ये भविष्यत् अर्थ में होते हैं वहां 'स्स' प्रत्यय और जुड जाता है। इनके रूप तीनों लिंगों में व्यवहृत होते हैं। संस्कृत भाषा में शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं से और शान प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं से होता है। प्राकृत भाषा में यह भेद नहीं है। शतृ प्रत्यय को जो आदेश होता है वही शान प्रत्यय को आदेश होता है, इसलिए दोनों प्रत्ययों के रूपों में भेद नहीं होता। हेमचंद्राचार्य ने जिसे आनश् प्रत्यय की संज्ञा दी है, भिक्षुशब्दानुशासन में उसकी शान प्रत्यय संज्ञा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ७२० (शत्रानशः ३।१८१) शतृ प्रत्यय को न्त और माण आदेश होता है। शान प्रत्यय को भी न्त और माण आदेश होता है। हस्—हसन् (हंसतो, हसमाणो) हंसता हुआ। हो—भवन् (होअंतो, होमाणो) होता हुआ। दा— ददन्, ददानः (दित, देंत, ददंत, देयमाण) देता हुआ।

नियम ७२१ (ई च स्त्रियाम् ३।१८२) स्त्रीलिंग में शतृ और शान दोनों प्रत्ययों को ई, न्त और माण—ये तीन आदेश होते हैं। न्त और माण के आगे आप (आ) या ईप् (ई) और जुड जाता है। हसन्ती (हसई, हसन्ती, हंसता, हसमाणी, हसमाणा) हंसती हुई।

(वर्तमाना-पंचमी शतृषु वा ३।१५८) नियम ५६२ से वर्तमान काल, पंचमी विभक्ति और शतृ प्रत्यय परे हो तो अ को ए विकल्प से होता है।

(१) अंत आदेश के रूप—

हस्—(**पुंलिग**)—हसंतो, हसितो, हसेंतो (हसन्) हंसता हुआ।
(**स्त्रीलिंग**)—हसंती, हसिती, हसेंती (हसन्ती) हंसती हुई।
हसंता, हसिता, हसेंता (हसन्ती) हंसती हुई।
(**नपुंसकलिंग**)—हसंतं, हसितं, हसेंतं (हसत्) हंसता हुआ।

हो—(**पुंलिग**)—होअंतो, होइंतो, होएंतो, होंतो, हुंतो (भवन्) होता हुआ।
(**स्त्रीलिंग**)— होअंती, होइंती, होएंती, होंती, हुंती (भवन्ती) होती हुई।
होअंता, होइंता, होएंता, होंता, हुंता ,, ,, ,,
(**नपुंसकलिंग**)—होअंतं, होइंतं, होएंतं, होंतं, हुंतं (भवत्) होता हुआ।

माण आदेश के रूप—

हस्—(**पुंलिग**)—हसमाणो, हसेमाणो (हसन्) हंसता हुआ।
(**स्त्रीलिंग**)—हसमाणी, हसेमाणी, हसमाणा, हसेमाणा (हसन्ती) हंसती हुई।
(**नपुंसकलिंग**)— हसमाणं, हसेमाणं (हसत्) हंसता हुआ।

हो—(**पुंलिग**)—होअमाणो, होएमाणो, होमाणो (भवन्) होता हुआ।
(**स्त्रीलिंग**)—होअमाणी, होएमाणी, होमाणी, होअमाणा, होएमाणा, होमाणा (भवन्ती) होती हुई।
(**नपुंसकलिंग**)—होअमाणं, होएमाणं, होमाणं (भवत्) होता हुआ।

ई आदेश के रूप—

हस्—(**स्त्रीलिंग**)—हसई, हसेई (हसन्ती) हंसती हुई।
हो—(,,)—होअई, होएई, होई (भवन्ती) होती हुई।

णिजंत (ञिन्नन्त) में शतृ शान रूप—

हासंतो, हासेंतो। हसावंतो, हसावेंतो। हासमाणो, हासेमाणो, हसाव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणो, हसावेमाणो (हसयन्) हंसाता हुआ।

(२) **भाव में शतृ-शान के रूप**—

हस्—हस् + इज्ज + न्त हसिज्जंतं
हस् + इज्ज + माण हसिज्जमाणं
हस् + ईअ + न्त हसीअंतं
हस् + ईअ + माण हसीअमाणं
} (हास्यमानं) हंसा जाता हुआ, हंसने में आने वाला

ख—भविष्यत् शतृ-शान के रूप—

भविष्यत् काल में शतृ शान प्रत्ययों के स्थान पर धातु से स्सन्त, स्समाण, स्सई प्रत्यय होते हैं। हसिस्संतो, हसिस्समाणो, हसिस्सई (हसिष्यन्ती)।

(३) **कर्मवाच्य में शतृ-शान के रूप**—

पुंलिग—भणीअंतो, भणिज्जंतो गंथो (भण्यमानो ग्रन्थः) पढा जाता हुआ ग्रंथ।

भणीअमाणो, भणिज्जमाणो सिलोगो (भण्यमानः श्लोकः) पढा जाता हुआ श्लोक।

स्त्रीलिंग—भणीज्जंती, भणीअंती गाहा (भण्यमाना गाथा) पढी जाती हुई गाथा।

भणिज्जमाणी, भणीअमाणी भणिज्जई, भणीअई पंती (भण्यमाना पङ्क्तिः) पढी जाती हुई पंक्ति।

नपुंसकलिंग—भणीअंतं, भणीअमाणं, भणिज्जंतं, भणिज्जमाणं पगरणं (भण्यमानं प्रकरणं) पढा जाता हुआ प्रकरण।

ख—कर्मवाच्य में प्रेरणार्थक शतृ शान रूप—

भणाविज्जंतो, भणाविज्जमाणो, भणावीअंतो, भणावीअमाणो मुणी (भण्यमानो मुनिः) पढाया जाता हुआ मुनि। भणाविज्जती, भणाविज्जमाणा, भणावीअंती, भणावीअमाणा, भणाविज्जई, भणावीअई साहुणी (भण्यमाना साध्वी) पढाई जाती हुई साध्वी।

प्रयोग वाक्य

सो वाउजाणेण विएसं गमिस्सइ। मज्झ गामे बप्फजाणं न आजाइ। संतिपसायस्स सेट्ठिणो पासे केत्तिलाइं तेलजाणाइं संति ? अज्जत्ता पायजाणं घरे घरे अत्थि। भारवाहजाणेण दूरट्ठाणत्तो अणेगाणि वत्थूणि आजाअंति, जाअंति य। पुव्वकाले रहस्स पओगो हुत्था। तुम्हे बलीवद्दजाणम्मि अहियं भारं न देह। गामे जणा महिसजाणेण खेत्तस्स अन्नं घरे आणेंति। अहं आसजाणम्मि न आसामि। आसजाणं पिव गद्दभजाणं वि णयरे चलइ। मरुभूमीए उट्टजाणं मरुणो वाउजाणं कहिज्जइ। मए अग्गिपोएण गंगाजत्ता कया। णावाहिं जलजत्ता केण न कया ? अम्हेहिं बंबईमहाणयरे विसाल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलजाणं दिट्ठं ।

धातु प्रयोग

सो तं आसासइ तुज्झ जीवणभारो हं वहिहिमि । पत्तेयजीवो पोग्गलाइं आहरइ । अहं पइदिणं अन्नं आहारेमि । तुमं किमट्ठं वणे आहिंडसि ? सा तलायत्तो नीरं आहरइ । मज्झ दंतपंतो (अंतिमदांत) कहं आहिल्लइ । आयरिओ साहुणो आह्वेइ । किं साहुणो अज्ज अम्हाण गामे आगमिस्संति ?

प्रत्यय प्रयोग

सो हसंतो कहं जंपइ ? विमला हसई कहं आगच्छइ ? सो धणं देयमाणो णयरत्तो बाहिं गओ । लोएसो हसावमाणो किं जंपइ ? हसिज्जमाणस्स धणंजयस्स णयणाहिंतो अंसूइं (आंसू) पंडति । तेण भणिज्जमाणो गंथो गंभीरो अत्थि । तुमए भणाविज्जई साहुणी संघपमुहा होहिइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

वायुयान तेज गति से चलता है । रेलगाडी यहां नहीं ठहरेगी । मोटर सडक पर चलती है । साइकल की यात्रा सस्ती होती है । ट्रक के द्वारा कल कश्मीर से सेवें आएंगी । रथ में बैठने वाला कोई नहीं है । बैलगाडी में लोग क्यों बैठते हैं ? किस जाति के लोगों के पास भैंसागाडी अधिक हैं ? क्या तुम घोडा गाडी पर चढना चाहते हो ? गधागाडी भार अधिक ढोती है । गांव के लोग ऊंटगाडी पर चढ कर यात्रा करते हैं । अगनवोट की यात्रा सुख से होती है । नौकायात्रा में तूफान का भय रहता है । विशाल जहाज में आवश्यक सामग्री उपलब्ध होती है ।

धातु का प्रयोग करो

रमेश ने उसको सान्त्वना दी । तुमने सत्य कभी नहीं कहा । माता ने बच्चे के हाथ से छुरी छीन ली । मनुष्य क्या नहीं खाता है ? तुम गली में इधर-उधर क्यों घूमते हो ? माता आशा करती है कि मेरा पुत्र मेरी सेवा करेगा । तुम शहर से क्या लाए हो ? तुम्हारा दांत क्यों हिलता है ? तुम उसको यहां बुलाओ । उसका इस गांव में आना सफल हुआ ।

प्रत्यय का प्रयोग करो

हंसता हुआ जो आदमी बोलता है उसे कहो वह न हंसे । उसने रोटी देती हुई बहन को देखा । हंसा जाता हुआ मनुष्य क्यों रोने लगा । हंसाता हुआ रमेश स्वयं नहीं हंसता है । पढी जाती हुई गाथा को शुद्ध करो । पढाया जाता हुआ मुनि क्या कहना चाहता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न

१. आनश् और शान प्रत्यय एक है या दो ? शान संज्ञा कौन मानता है ?
२. शतृ और शान प्रत्यय किस अर्थ में आता है ?
३. शतृ और शान प्रत्यय के रूप किस लिंग में व्यवहृत होते हैं ।
४. शतृ और शान प्रत्ययों को प्राकृत में क्या आदेश होता है ?
५. शतृ और शान प्रत्यय वर्तमानकाल में होता है या भविष्यकाल में भी। दोनों के रूपों में क्या अंतर है ?
६. वायुयान, रेलगाडी, मोटर, साइकल, ट्रक, रथ, बैलगाडी, भैंसागाडी, घोडागाडी, गधागाडी और ऊंटगाडी के लिए प्राकृत शब्द बताओ ।
७. आसास, आहा, आहर, आहार, आहिंड, आसास, आहर, आहल्ल, आहव और आहम्म धातुओं के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुहा—गुफा
उइअ (वि)—उदित
थोओ —थोडा
अमुणिअ—अज्ञात
खयाणलो—दावानल
उअहि (पुं)—उदधि
गहिरो—गहरा
दोहि (वि)—द्रोही
कज्जालाव—(कार्यालाप) कार्यों
दुमो—वृक्ष
पवओ—बंदर

नियम ७२२ (इदितो वा ४।१) सूत्र में 'इ' इत जाने वाली धातुओं के आदेश विकल्प से होते हैं।

नियम ७२३ (कथे वंज्जर-पज्जरोप्पाल-पिसुण-संघ-बोल्ल-चव-जम्प-सीस-साहाः ४।२) कथि धातु को वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल चव, जम्प, सीस और साह—ये आदेश होते हैं। कथयति (वज्जरइ, पज्जरइ, उप्पालइ, पिसुणइ, संघइ, बोल्लइ, चवइ, जम्पइ, सीसइ, साहाइ, कहइ) कहता है। कथितः (वज्जरिओ) कथनम् (वज्जरणं) कथयित्वा (वज्जरिऊण) कथयन् (वज्जरन्तो) कथयितव्यं (वज्जरिअव्वं)। इसी प्रकार अन्य धातुओं आदेश के रूप बना सकते हैं।

नियम ७२४ (दुःखे णिव्वरः ४।३) दुःखविषययुक्त कथ् धातु को णिव्वर आदेश विकल्प से होता है। दुःखं कथयति (णिव्वरइ) दुःख कहता है।

नियम ७२५ (जुगुप्सेर्झुण-दुगुच्छ-दुगुञ्छाः ४।४) जुगुप्सि धातु को झुण, दुगुच्छ और दुगुञ्छ—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। जुगुप्सति (झुणइ, दुगुच्छइ, दुगुञ्छइ जुगुच्छइ) घृणा करता है।

नियम ७२६ (बुभुक्षि वीज्योर्णीरव-वोज्जौ ४।५) बुभुक्षि धातु को णीरव और वीजि धातु को वोज्ज आदेश विकल्प से होता है। बुभुक्षति (णीरवइ) खाना चाहता है। वीजयति (वोज्जइ) हवा करता है।

नियम ७२७ (ध्या-गोर्झा-गौ ४।६) ध्या धातु को झा और गा धातु को गा आदेश विकल्प से होता है। ध्यायति (झाइ, झाअइ)। णिज्झाइ, णिज्झाअइ (निध्यायति) देखता है। गाइ, गाअइ (गाति) गाता है।

नियम ४२८ (ज्ञो जाण-मुणौ ४।७) जानाति को जाण और मुण आदेश होता है। जानाति (जाणइ, मुणइ) जानता है। बहुलाधिकारात् कहीं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विकल्प से होता है। जाणिअं, णायं (ज्ञातम्) जाणिऊण, णाऊण (ज्ञात्वा) जाणणं, णाणं (ज्ञानं)। मणइ रूप तो मन्यति का बनता है।

नियम ७२९ (उदो ध्मो धुमा ४।८) उद् पूर्वक ध्मा धातु हो तो ध्मा को धुमा आदेश होता है। उद्ध्माति (उद्धुमाइ) जोर से धमनी चलाता है।

नियम ७३० (श्रदो धो दहः ४।९) श्रद् से परे धा (दधाति) धातु को दह आदेश होता है। श्रद्दधाति (सद्दहइ) श्रद्धा करता है।

नियम ७३१ (पिबेः पिज्ज-डल्ल-पट्ट-घोट्टाः ४।१०) पिबति को पिज्ज, डल्ल, पट्ट और घोट्ट—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। पिबति (पिज्जइ, डल्लइ, पट्टइ, घोट्टइ, पिअइ) पीता है।

नियम ७३२ (उद्वातेरोरुम्मा वसुआ ४।११) उत्पूर्वक वाति को ओरुम्मा और वसुआ आदेश विकल्प से होता है। उद्वाति (ओरुम्माइ, वसुआइ, उव्वाइ) सूखाता है।

नियम ७३३ (निद्रातेरोहीरोङ्घौ ४।१२) निपूर्वक द्राति को ओहीर और उङ्घ आदेश विकल्प से होता है। निद्राति (ओहीरइ, उङ्घइ, निद्दाइ) नींद लेता है।

नियम ७३४ (आघ्रेराइग्घः ४।१३) आजिघ्रति को आइग्घ आदेश विकल्प से होता है। आजिघ्रति (आइग्घइ) सूंघता है।

नियम ७३५ (स्नातेरब्भुत्तः ४।१४) स्नाति को अब्भुत्त आदेश विकल्प से होता है। स्नाति (अब्भुत्तइ, ण्हाइ) स्नान करता है।

नियम ७३६ (समः स्त्यः खाः ४।१५) सं पूर्वक स्त्यायति को खा आदेश होता है। संस्त्यायति (संखाइ) सान्द्र होता है, जमता है।

नियम ७३७ (स्थष्ठा-थक्क-चिट्ठ-निरप्पाः ४।१६) स्था धातु को ठा, थक्क, चिट्ठ और निरप्प आदेश होता है। तिष्ठति (ठाइ, ठाअइ थक्कइ, चिट्ठइ, निरप्पइ) ठहरता है। स्थानं (ठाणं) प्रस्थितः (पट्ठिओ) प्रस्थापितः (पट्ठाविओ) बहुलाधिकारात् कहीं पर नहीं भी होता है—थिअं, थाणं, पत्थिओ, उत्थिओ।

नियम ७३८ (उदष्ठ-कुक्कुरौ ४।१७) उत् से परे तिष्ठति को ठ और कुक्कुर आदेश होता है। उत्तिष्ठति (उट्ठइ, उकुक्कुरइ) उठता है।

नियम ७३९ (म्लेर्वा-पव्वायौ ४।१८) म्लायति को वा और पव्वाय आदेश विकल्प से होता है। म्लायति (वाइ, पव्वायइ मिलाइ) म्लान होता है, निस्तेज होता है।

नियम ७४० (निर्मो निम्माण-निम्मवौ ४।१९) निर्मिमीति को निम्माण और निम्मव आदेश होता है। निर्मिमीति (निम्माणइ, निम्मवइ) बनाता है, रचना करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ७४१ (क्षे णिज्झरो वा ४।२०) क्षयति को णिज्झर आदेश विकल्प से होता है। क्षयति (णिज्झरइ, झिज्जइ) क्षीण होता है।

धातु प्रयोग वाक्य

सो तुं किं वज्जरइ, पज्जरइ, उप्पालइ, पिसुणइ, संघइ, बोल्लइ, चवइ, जम्पइ, सीसइ, साहइ, कहइ वा ? विरही किं णिव्वरिहिइ ? पुरिसो पुरिसेण कहं झुणइ, दुगुञ्छइ, दुगुच्छइ, जुगुच्छइ वा ? किं तुमं महुरं वत्थु णीरवसि ? रायाणं को वोज्जइ ? अहं पव्वयस्स मुहाए झामि। सरोजा पुत्तं मुहु मुहु कहं णिज्झाइ ? दिणेसो तुब्भाओ सुट्ठु गाअइ। किं तुमं ममं न जाणसि, मुणसि वा ? राओ को उद्धुमाइ ? अहं जइणसासणं सद्दहामि। किं तुमं मइरं पिज्जसि, डल्लसि, पट्टसि, घोट्टसि, पिअसि वा ? किणा चिंताए तस्स सरीरं ओरुम्माइ, वसुआइ, उव्वाइ वा ? सो रत्तीए वि न ओहीरइ, उङ्घइ, निद्दाइ वा। तुमं पुप्फसारं आइग्घसि। सो गंगानईए पइदिणं अब्भुत्तइ, ण्हाइ वा। सीयेण णवणीयं संखाइ। देसदोही तुज्झघरे कहं ठाइ, ठाअइ, थक्कइ, चिट्ठइ, निरप्पइ वा ? भक्खरस्स उइअस्स पच्छा सो संथराओ उट्ठइ, उकुक्कुरइ वा। नीरं अंतरेण पुप्फाइं वांति, पव्वायंति, मिलांति वा। विमलो कव्वं निम्माणइ, निम्मवइ वा। रागेण दोसेण वा मोहणीयकम्मं न णिज्झरइ, झिज्जइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

ते विरला सप्पुरिसा जे अभणेन्ता, घडेन्ति कज्जालावे ?
थोअ च्चिअ ते वि दुमा जे अमुणिअ कुसुमणिग्गमा देंति फलं ॥१॥
जो लंघिज्जइ रविणो जो अ खविज्जइ खयाणलेण वि बहुसो।
कह सो उइअपरिहवो दुत्तारो त्ति पवआण भण्णइ उअही ॥२॥

प्राकृत में धात्वादेश का प्रयोग करो

वह हमेशा सत्य कहता है। तुम किसके सामने अपना दुःख कहते हो ? किसी भी मनुष्य के साथ घृणा मत करो। सिंह हिरण को खाना चाहता है। नौकर सेठ को हवा करता है। पर्वत की गुफा में कौन ध्यान करता है ? राजा सबको एक समान देखता है। विमला कितना मधुर गाती है ? जो एक वस्तु के अस्तित्व को पूर्ण रूप से जानता है, वह सब वस्तुओं को जानता है। लुहार प्रतिदिन जोर से धमनी चलाता है। मैं धर्म पर श्रद्धा करता हूं। वह बर्फ का पानी क्यों पीता है ? गर्मी में आर्द्र वस्त्र जल्दी सूखता है। तुम गहरी नींद लेते हो। कुत्ता स्थान को क्यों सूंघता है ? माता गंगा-स्नान करती है। किस कारण से दहि जमता है ? गर्मी में मनुष्य छाया में ठहरता है। वह बहुत जल्दी उठता है। तुम्हारी प्रगति से वह म्लान होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह अपना नया घर बनाता है। उसका पुण्य क्षीण होता है।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक बार एक राजा अपना कारावास देखने गया। उसने वहां के सभी कैदियों को देखना चाहा। कारावास का अधिकारी सभी कैदियों को एक-एक करके राजा के सामने लाया। राजा ने सभी से अपने दोष को कहने के लिए कहा, जिसके कारण उन्हें कारावास का दंड मिला था। सभी ने कहा हम निर्दोष थे। राजा ने पुनः उन लोगों को कारावास में भेज दिया। अंत में एक योग्य मनुष्य आया और राजा के सामने खडा हो गया। राजा ने वही प्रश्न उससे भी किया। उसने उत्तर दिया—मैंने अपने गांव में एक धनी की कीमती अंगूठी चुराई थी। इसलिए मैं इस दण्ड के योग्य हूं। राजा उसकी दोष-स्वीकृति पर प्रसन्न हो गया और मुक्ति के लिए आज्ञा देते हुए कहा—इसने चोरी की है इसलिए यह दण्डित हुआ। अब यह सत्य बोलता है इसलिए यह पुरस्कार के योग्य है।

प्रश्न

१. गुहा, दोहि, उअहि, थोअ, खयाणल, गहिर, कज्जलाव, पवअ, अमुणिअ और उइअ शब्दों के अर्थ बताओ।
२. नीचे लिखी धातुएं किन-किन धातुओं के आदेश हैं? झा, मुण, जाण, वसुआ, आइग्घ, पिज्ज, णिव्वर, णीरव, पव्वाय, णिज्झर, अब्भुत्त, चिट्ठ, थक्क, उङ्घ, ओहीर, बोल्ल, जंप, साह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०१ धात्वादेश (२)

शब्द संग्रह

विशाल—विसाल (वि)
दया—दया
वर्षा—वरिसा
घास—तणं
आवाज—झुणि (पुं)
तट—तडो
आराम—सुहं
अल्प—अप्पं (वि)
जोर—वेगो, वेओ

धातुओं को आदेश—

नियम ७४२ (क्रियः किणो वेस्तु क्के च ४५२) क्रीणाति को किण आदेश होता है। वि से परे हो तो क्किण हो जाता है। क्रीणाति (किणइ) खरीदता है। विक्रीणाति (विक्किणइ) बेचता है।

नियम ७४३ (भियो भा-बीहौ ४।५३) बिभेति को भा और बीह आदेश होता है। बिभेति (भाइ, बीहइ) डरता है। भीतं (भाइअं, बीहिअं) डरा हुआ। बहुलाधिकारात् भीओ।

नियम ७४४ (आलीङोल्ली ४।५४) आलीयति को अल्ली आदेश होता है। आलीयति (अल्लीअइ) लीन होता है। आलीनो (अल्लीणो)।

नियम ७४५ (निलीङेर्णिलीअ-णिलुक्क-णिरिग्घ-लुक्क-लिक्क-ल्हिक्काः ४।५५) निलीङ् को छ आदेश विकल्प से होते हैं। निलीयते (णिलीअइ, णिलुक्कइ, णिरिग्घइ, लुक्कइ, लिक्कइ, ल्हिक्कइ, निलिज्जइ) छिपता है।

नियम ७४६ (विलीङेर्विरा ४।५६) विलीङ् को विरा आदेश विकल्प से होता है। विलीयते (विराइ, विलिज्जइ) पिघलता है, नष्ट होता है।

नियम ७४७ (रुते रुञ्ज-रुण्टौ ४।५७) रौति को रुञ्ज और रुण्ट—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। रौति (रुञ्जइ, रुण्टइ, रवइ) आवाज करता है।

नियम ७४८ (श्रुटेर्हणः ४।५८) शृणोति को हण आदेश विकल्प से होता है। शृणोति (हणइ, सुणइ) सुनता है।

नियम ७४९ (धुगेर्धुवः ४।५९) धुनाति को धुव आदेश विकल्प से होता है। धुनाति (धुवइ, धुणइ) हिलाता है, कंपाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ७५० (भुवे र्हो-हुव-हवाः ४।६०) भू धातु को हो, हुव और हव—ये आदेश विकल्प से होते हैं। भवति (होइ, हुवइ, हवइ, भवइ) होता है।

नियम ७५१ (अविति हुः ४।६१) वित् प्रत्यय (भिक्षुशब्दानुशासन में पित् प्रत्यय) छोडकर भू धातु को हु आदेश विकल्प से होता है। भवंति (हुंति)। पित् प्रत्यय होने से हु आदेश नहीं हुआ। भवति (होइ)।

नियम ७५२ (पृथक्-स्पष्टे णिव्वडः ४।६२) पृथक्भूत और स्पष्ट अर्थ में भू धातु को णिव्वड आदेश होता है। पृथक् भवति (णिव्वइ) पृथक् होता है। स्पष्टो भवति (णिव्वडइ)स्पष्ट होता है।

नियम ७५३ (प्रभौ हुप्पो वा ४।६३) प्रभु कर्तृक (प्र पूर्वक भू धातु) को पहुप्प आदेश होता है। प्रभवति (पहुप्पइ, पभवेइ) समर्थ होता है, पहुंचता है।

नियम ७५४ (क्ते हूः ४।६४) भू धातु को हू आदेश होता है क्त प्रत्यय परे हो तो। भूतं (हूअं) हुआ। अनुभूतं (अणुहूअं)। प्रभूतं (पहूअं)।

नियम ७५५ (कृगेः कुणः ४।६५) कृ धातु को कुण आदेश विकल्प से होता है। करोति (कुणइ, करइ) करता है।

नियम ७५६ (काणेक्षिते णिआरः ४।६६) काना देखना विषय में कृ धातु को णिआर आदेश विकल्प से होता है। काणेक्षितं करोति (णिआरइ) कानी नजर से देखता है।

नियम ७५७ (निष्टम्भावष्टम्भे णिट्ठुह-संदाणं ४।६७) निष्टम्भ अर्थ में और अवष्टम्भ अर्थ में कृ धातु को क्रमशः णिट्ठुह और संदाण आदेश विकल्प से होता है। निष्टम्भं करोति (णिट्ठुहइ) स्तब्ध करता है। अवष्टम्भं करोति (संदाणइ) सहारा लेता है, अवलम्बन लेता है।

नियम ७५८ (श्रमे वावम्फः ४।६८)श्रम विषय में कृ धातु को वावम्फ आदेश विकल्प से होता है। श्रमं करोति(वावम्फइ) श्रम करता है।

नियम ७५९ (मन्युनौष्ठमालिन्ये णिव्वोलः ४।६९) क्रोध से ओष्ठ को मलिन करने के अर्थ में कृ धातु को णिव्वोल आदेश विकल्प से होता है। मन्युना ओष्ठं मलिनं करोति (णिव्वोलइ) क्रोध से होठ मलिन करता है।

नियम (७६० शैथिल्य-लम्बने पयल्लः ४।७०) शैथिल्य और लम्बन विषय में कृ धातु को पयल्ल आदेश विकल्प से होता है। शिथली भवति (पयल्लइ) शिथिल करता है। ढीला करता है।

नियम ७६१ (निष्पाताच्छोटे णीलुञ्छः ४।७१) निष्पतन और आच्छोटन विषय में कृ धातु को णीलुञ्छ आदेश विकल्प से होता है। निष्पतति (णीलुञ्छइ) निष्पतन करता है। आच्छोटयति (णीलुञ्छइ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आच्छोटन करता है। झाडता है।

प्रयोग वाक्य

गामवासिणो णयरे घयं विक्किणंति सुरं किणति। सीहो वणे काहितो न भाइ, बीहइ वा। आइच्चो पइदिणं कहं णिलीअइ, णिलुक्कइ, णिरिग्घइ, लुक्कइ, लिक्कइ, ल्हिक्कइ, निलिज्जइ वा? पलोभेण किं तुज्झ मणो न विराइ, विलिज्जइ वा। पभायम्मि पक्खिणो रुञ्जंति, रुण्टंति, रवंति वा। सो अप्पं हणइ, सुणइ वा। हिंसा अहिंसअस्स हिययं धुवइ, धुणइ वा। कयाइ दिवहो होइ, कयाइ रत्ती हुवइ, हवइ, भवइ वा। भाया भाऊओ णिव्वडइ। गुरूणं समक्खे सो णिव्वडइ। अहं पव्वयम्मि आरोहिउं पहुप्पामि, पभवेमि वा। तत्थ किं हूअं? मुणी साहणं कुणइ, करइ वा। गामवासिसुं को णिआरइ? सो मंतजवेण तस्स गइं णिट्ठुहइ। वुड्ढो मग्गे लट्ठिं संदाणइ। महिंदो घरे वावम्फइ। मुणी भविऊणं सो कहं णिव्वोलइ? सो किमट्ठं णियमं न पयल्लइ? वाणरो रुक्खस्स डालिं पयल्लइ। सो वत्थाइं णीलुञ्छइ।

हिन्दी में अनुवाद करो

अदिज्जमाणा वि अन्नेसिं, अपरिभुज्जमाणा वि अत्तणा, गोविज्जमाणा वि पच्छन्ने, रक्खिज्जमाणा वि पयत्तेण, असंसयं नस्सइ एसा। किं वा दाणभोगरहियाए अवित्तिकम्मयरमेत्ताए संपयाए त्ति वा बीयं वि लक्खं देहि। कुबेरेण वुत्तं—जं देवो आणवेइ। अहो उदारया कुमारस्स त्ति विम्हिया कुसलनिउणा। चित्तवट्टियं पुणो पुणो पिच्छंतेण पढियं कुमारेण—

मयणघरिणी नूणं, दासीदसं वि न पावए
ति-णयण-पिया पत्ता लोए तणं व लहुत्तणं ॥१॥
सलिलनिहिणो धूया धूलीसमा वि न सोहए
अमरमहिला हीलाठाणं इमीए पुरो भवे ॥२॥

प्राकृत में अनुवाद करो

एक नदी के तट पर एक विशाल वट वृक्ष था। उसकी डालियों पर पक्षी अपना-अपना घोंसला बनाकर आराम से रहते थे। एक बार वर्षा ऋतु में एक बंदरों का समूह आया और वृक्ष के नीचे ठहरा। वर्षा जोर से हुई। शीत के मारे बंदर कांप रहे थे। वृक्ष पर रहने वाले पक्षियों में से एक ने दया प्रकट करते हुए कहा—भाइयो! मैं अपने घोसले में आराम से रहता हूं। तुम्हारे पास भी मनुष्यों की तरह हाथ-पैर हैं। तुम अपने लिए हमारे से अच्छा घर बना सकते हो। घर के बिना तुम कष्ट क्यों उठा रहे हो? उस पक्षी के विचार सुन कर बंदर क्रुद्ध हो गए। वृक्ष पर चढकर बंदरों ने पक्षियों के घोंसलों को नष्ट कर डाला।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातुओं का प्रयोग करो

वह घास खरीदता है। तुम घी बेचते हो। वह किसी से नहीं डरता है। विद्यार्थी अध्यापक से क्यों छिपता है? अग्नि से नवनीत पिघलता है। पक्षी आवाज करते हैं। मेरी बात कौन सुनता है? तुम तालाब के पानी को क्यों कंपाते हो? जो होना होता है वही होता है। फूल वृक्ष से पृथक् होता है। साधु संघ से पृथक् क्यों होता है? वह तुम्हारे सामने स्पष्ट होता है। तुम वर्षा में घर पहुंचते हो। क्या तुम उसका हित करते हो? गांव की स्त्रियां नव वधू के वर को कानी नजर से देखती हैं। तुम्हारी गति को किसने स्तब्ध किया? वह वृक्ष की डाली का आलम्बन लेता है। मैं प्रतिदिन शरीर का श्रम करता हूं। उसकी इच्छा के प्रतिकूल होने से उसने क्रोध से होठ को मलिन किया। वह अपने अधोवस्त्र को ढीला करता है। वृक्ष पर क्या लटकता है? तुम व्यर्थ में पानी का निष्पतन करते हो। वह आच्छोटन क्यों करता है?

प्रश्न

१. घोंसला, विशाल, दया, बर्फ, घास, तट, आराम, अल्प, जोर और आवाज—इन शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

२. किण, भा, बीह, अल्ली, णिलुक्क, विलिज्ज, लुक्क, हुण, णिव्वड, णिआर, संदाण, णिल्वोल, पयल्ल आदेश किन धातुओं को किस अर्थ में आदेश होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धात्वादेश (३)

शब्द संग्रह

महल—पासायो
दाना—कणो
धान्यागार—धण्णागारं
सुरक्षित—सुरक्खिअ (वि)
रहस्य—रहस्स (वि)
भंडार—भंडारो
गाडी—सगडं
वृत्ति—वित्ति (स्त्री)
सफाई—पमज्जणं
लापरवाही—अजागरुअया
रसोई बनाने वाली—महाणसिणी

नियम ७६२ (**क्षुरे कम्मः ४।७२**) क्षुर विषय में कृ धातु को कम्म आदेश विकल्प से होता है। क्षुरं करोति (कम्मइ) हजामत करता है।

नियम ७६३ (**चाटौ गुललः ४।७३**) चाटु विषय में कृ धातु को गुलल आदेश विकल्प से होता है। चाटु करोति (गुललइ) खुशामद करता है।

नियम ७६४ (**स्मरे झर-झूर-भर-भल-लढ-विम्हर-सुमर-पयर-पम्हुहाः ४।७४**) स्मर धातु को झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर और पम्हुह—ये नव आदेश विकल्प से होते हैं। स्मरति (झरइ, झूरइ, भरइ, भलइ, लढइ, विम्हरइ, सुमरइ, पयरइ, पम्हुहइ) स्मरण करता है, याद करता है।

नियम ७६५ (**विस्मुः पम्हुस-विम्हर-वीसराः ४।७५**) विस्मरति को पम्हुस, विम्हर और वीसर आदेश होते हैं। विस्मरति (पम्हुसइ, विम्हरइ, वीसरइ) भूलता है।

नियम ७६६ (**व्याहृगेः कोक्क-पोक्कौ** ४।७६) व्याहरति को कोक्क और पोक्क आदेश विकल्प से होता है। व्याहरति (कोक्कइ, कुक्कइ। पोक्कइ, वाहरइ) बुलाता है।

नियम ७६७ (**प्रसरेः पयल्लोवेल्लौ** ४।७७) प्रसरति को पयल्ल और उवेल्ल आदेश विकल्प से होता है। प्रसरति (पयल्लइ, उवेल्लइ, पसरइ) फैलता है।

नियम ७६८ (**महमहो गन्धे** ४।७८) गंध का फैलना अर्थ में महमह आदेश होता है। गंधो प्रसरति (महमहइ) गंध फैलती है।

नियम ७६९ (**निस्सरे णीहर-नील-धाड-वरहाडाः ४।७९**) निस्सरति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को णीहर, नील, धाड और वरहाड—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। निस्सरति (णीहरइ, नीलइ, धाडइ, वरहाडइ, नीसरइ) बाहर निकलता है।

नियम ७७० (**जाग्रेर्जग्गः ४।८०**) जागर्ति को जग्ग आदेश विकल्प से होता है। जागर्ति (जग्गइ, जागरइ) जागता है।

नियम ७७१ (**व्याप्रेराअड्डः ४।८१**) व्यापिपर्त्ति को आअड्ड आदेश विकल्प से होता है। व्यापिपर्त्ति (आअड्डेइ, वावरेइ) काम में लगता है, व्यापृत होता है।

नियम ७७२ (**संवृगेः साहर-साहट्टौ ४।८२**) संवृणोति को साहर और साहट्ट आदेश विकल्प से होता है। संवृणोति (साहरइ, साहट्टइ, संवरइ) समेटता है, संवरण करता है।

नियम ७७३ (**आदृङः सन्नामः ४।८३**) आद्रियते को सन्नाम आदेश विकल्प से होता है। आद्रियते (सन्नामइ) आदर करता है।

नियम ७७४ (**प्रहृगेः सारः ४।८४**) प्रहरति को सार आदेश विकल्प से होता है। प्रहरति (सारइ) प्रहार करता है।

नियम ७७५ (**अवतरेरोह-ओरसौ ४।८५**) अवतरति को ओह और ओरस आदेश विकल्प से होता है। अवतरति (ओहइ, ओरसइ) नीचे उतरता है।

नियम ७७६ (**शकेश्चय-तर-तीर-पाराः ४।८६**) शक् धातु को चय, तर, तीर और पार ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। शक्नोति (चयइ, तरइ, तीरइ, पारइ, सक्कइ) सकता है। त्यजति को चयइ, तरति को तरइ, तीरयति को तीरइ, पारयति को पारेइ आदेश भी होते हैं।

नियम ७७७ (**फक्कस्थक्कः ४।८७**) फक्कति को थक्क आदेश होता है। फक्कति (थक्कइ) नीचे आता है।

नियम ७७८ (**श्लाघः सलहः ४।८८**) श्लाघते को सलह आदेश होता है। श्लाघते (सलहइ) प्रशंसा करता है।

नियम ७७९ (**खचेर्वेअडः ४।८९**) खच् धातु को वेअड विकल्प से आदेश होता है। खचते (वेअडइ, खचइ) पावन करता है।

नियम ७८० (**पचेः सोल्ल-पउल्लौ ४।९०**) पचति को सोल्ल और पउल आदेश विकल्प से होता है। पचति (सोल्लइ, पउलइ, पचइ) पकाता है।

नियम ७८१ (**मुचेश्छड्डावहेड-मेलोस्सिक्क-रेअव-णिल्लुञ्छधंसाडाः ४।९१**) मुञ्चति को छड्ड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क, रेअव, णिल्लुञ्छ, धंसाड—ये सात आदेश विकल्प से होते हैं। मुञ्चति (छड्डइ, अवहेडइ, मेल्लइ, उस्सिक्कइ, रेअवइ, णिल्लुञ्छइ, धंसाडइ, मुअइ) छोडता है।

नियम ७८२ (**दुःखे णिव्वलः ४।९२**) दुख विषयक मुंच धातु को णिव्वल आदेश विकल्प से होता है। दुःखं मुञ्चति (णिव्वलेइ) दुख को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छोडता है।

नियम ७८३ (वञ्चे र्वेहव-वेलव-जूरवोमच्छाः ४।६३) वञ्चति को वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। वञ्चति (वेहवइ, वेलवइ, जूरवइ, उमच्छइ, वञ्चइ) ठगता है।

प्रयोग वाक्य

रायिंदो सयं कम्मइ । सो गुललइ, संभवामि, कज्जसिद्धीए एरिसं करेइ। सेहो साहू दिवहे वीसगाहाओ झरइ, झूरइ, भरइ, भलइ, लढइ, विम्हरइ, सुमरइ, पयरइ, पम्हुहइ वा। तुमं एगमासस्स पुव्वं जं सिक्खियं तं कहं पम्हुसिसि, विम्हरसि, वीसरसि वा? गुरु विज्जट्ठिणो कहं कोक्कइ, कुक्कइ, पोक्कइ, वाहरइ वा? पेक्खज्झाणं विएसे वि पयल्लइ, उवेल्लइ, पसरइ वा। वाउणा पुप्फाण गंधो महमहइ। सूरियो अब्भेहिंतो णीहरइ, नीलइ, धाडइ, वरहाडइ नीसरइ वा। अज्ज राओ को जग्गिहिइ, जागरिस्सइ वा? पुत्तवहू पच्चूसे घरकज्जम्मि न आअड्डेइ, वावरेइ वा। साहगो मणं साहरइ, साहट्टइ, संवरइ वा। अहं तुं सन्नामामि। सो कं सारइ? अहं पव्वयत्तो ओरसामि, ओहामि वा। तुमं एअं कज्जं करित्तए चयसि, तरसि, तीरसि, पारसि, सक्कसि वा। नीराइं पव्वयत्तो थक्कंति। लोएसो धणंजयं सलहइ। गुरुणो चरणाइं ठाणं वेअडंति, खचंति वा। विमला ओयणं सोल्लइ, पउलइ, पचइ वा। अहं घयं छड्डामि, अवहेडामि, मेल्लामि, उस्सिक्कामि, रेअवामि, णिल्लुञ्छामि, धंसाडामि वा। तुमं कहं न णिव्वलसि? धणेसो रमेसं वेहवइ, वेलवइ, जूरवइ, उमच्छइ, वञ्चइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

कस्सइ कुलपुत्तयस्स भाया वेरिएण वावाइओ। सो जणणीए भन्नइ—पुत्त। पुत्तघायगं घायसु त्ति। तओ सो तेण नियपोरुसाओ जीवग्गाहं गिण्हिऊण जणणीसमीवमुवणीओ, भणिओ य भाइघायग! कहिं आहणामि? त्ति। तेण वि खग्ग मुग्गामियं दट्ठूण भयभीएण भणियं—जहिं सरणागया आहम्मंति। इमं च सोऊण तेण जणणीमुहमवलोइयं। तीए महासत्तत्तणमवलंबंतीए उप्पन्न-करुणाए भणियं—न पुत्त सरणागया आहम्मंति।

जओ—सरणागयाण विस्संभियाण, पणयाण वसणपत्ताणं।
रोगिय अजंगमाणं, सप्पुरिसा नेव पहरंति ॥१॥

तेण भणियं—कहं रोसं सफलं करेमि? तीए भन्नइ—न पुत्त! सव्वत्थ रोसो सफलो करेयव्वो। पच्छा सो तेण विसज्जिओ चलणेसु निवडिऊण खामेऊण य गओ।

धातु का प्रयोग करो

मंगलवार को कौन हजामत करता है? वह उसकी खुशामद क्यों करता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्या तुम मुझे याद करते थे ? क्या वह मुझे भूल गया ? विनय को वहां कौन बुलाता है ? तेल की बूंद पानी पर फैलती है । तुम्हारा यश चारों ओर फैलता है। इत्र की गंध फैलती है । उसके घर से वर्षा का पानी बाहर क्यों नही निकलता ? तुम किस समय जागते हो ? कल से वह अपने काम में लगेगा। वह अपने भाषण को पांच मिनट में समेटता है। विनीत शिष्य अध्यापक का आदर करता है। उसने तुम्हारे पर प्रहार क्यों किया ? क्या भगवान स्वर्ग से नीचे उतरता है ? मैं तुम्हारा सब काम कर सकता हूं। क्या वह कभी महल से नीचे आता है ? वह स्वार्थवश ही तुम्हारी प्रशंसा करता है। वह भोजन को स्वयं पकाता है। तुम अपने अवगुणों को क्यों नहीं छोडते ? जो दुःख को सहता है वह साधक होना चाहिए। उसने तुमको क्यों ठगा ?

प्राकृत में अनुवाद करो

एक सेठ के चार पुत्रवधूएं थीं। उनकी परीक्षा के लिए सेठ ने चारों को चावल के पांच-पांच दानें दिए और सुरक्षित रखने के लिए कहा। पहली पुत्रवधू ने लापरवाही से फेंक दिए और सोचा मांगेंगे तब धान्यागार से लाकर दे दूंगी। दूसरी ने उनको खा लिया। तीसरी ने उनको आभूषण की छोटी पेटी में सुरक्षित रख दिया। सोचा—ससुर ने दिए हैं तो कोई रहस्य होना चाहिए। चौथी पुत्रवधू ने खेत में उनकी बुवाई कराई। अच्छी फसल हुई। पांच वर्षों में विशाल भंडार हो गया। सेठ पांच वर्ष बाद घर आया। सब बहुओं से दानें मांगे। तीनों ने लाकर दे दिए। चौथी ने कहा—दानें मंगाने हों तो गाडी भेजो। सेठ ने चारों को पूछा, क्या-क्या किया ? सब ने अपनी-अपनी क्रिया बताई। चारों का कार्य सुन सेठ ने चारों को घर का एक-एक कार्य सौंप दिया। दानों को फेंकने वाली वहू को सफाई का, खाने वाली को रसोई का, सुरक्षित रखने वाली को भंडार का कार्य सौंप दिया। चौथी को घर की स्वामिनी का भार दिया।

प्रश्न

१. महल, दाना, धान्यागार, सुरक्षित, रहस्य, भंडार, गाडी, वृत्ति, सफाई, लापरवाही, रसोई बनाने वाली शब्दों के प्राकृत शब्द बताओ।
२. कम्म, गुलल, सुमर, विम्हर, भल, वीसर, पम्हुस, पोक्क पयल्ल, महमह, उवेल्ल, धाड, णीहर, जग्ग, आअड्ड, सन्नाम, ओरस, तीर, पार, थक्क, सोल्ल, धंसाड, णिव्वल आदेश किन किन धातुओं को होता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०३ धात्वादेश (४)

शब्द संग्रह

पद्य—पज्जं
व्यक्तित्व—वत्तित्तणं
उपहार—उवहारो
सज्जन—सुअणो
जो दीखता न हो—अईसन्तो
स्वाधीन—साहीण (वि)
अनुयायी—अणुगमिर (वि)
अपशकुन—अवसउणं
पति—दइओ
स्वप्न—सिविणं
चुगली—पिट्ठिमंसं
यात्री—जत्तिओ

नियम ७८४ (रचेरुग्गहावह-विडविड्डाः ४।९४) रच् धातु को उग्गह, अवह और विडविड्ड—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। रचयति (उग्गहइ, अवहइ, विडविड्डइ, रयइ) बनाता है।

नियम ७८५ (समारचेरुवहत्थ-सारव-समार-केलायाः ४।९५) समारच् धातु को उवहत्थ, सारव, समार और केलाय—ये आदेश विकल्प से होते हैं। समारचयति (उवहत्थइ, सारवइ, समारइ और केलायइ, समारयइ) बनाता है।

नियम ७८६ (सिचेः सिञ्च-सिम्पौ ४।९६) सिञ्चति (सिच्) को सिञ्च और सिम्प आदेश विकल्प से होते हैं। सिञ्चति (सिञ्चइ, सिम्पइ, सेअइ) सींचता है, छिड़कता है।

नियम ७८७ (प्रच्छः पुच्छः ४।९७) प्रच्छ् धातु को पुच्छ आदेश होता है। पृच्छति (पुच्छइ) पूछता है।

नियम ७८८ (गर्जे र्बुक्कः ४।९८) गर्जति को बुक्क आदेश विकल्प से होता है। गर्जति (बुक्कइ, गज्जइ) गरजता है।

नियम ७८९ (वृषे ढिक्कः ४।९९) वृष कर्ता हो तो गर्ज् धातु को ढिक्क आदेश विकल्प से होता है। वृषभो गर्जति (ढिक्कइ) सांड गरजता है।

नियम ७९० (राजेरग्घ-छज्ज-सह-रीर-रेहाः ४।१००) राज् धातु को अग्घ, छज्ज, सह, रीर और रेह—ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं। राजति, राजते (अग्घइ, छज्जइ, सहइ, रीरइ, रेहइ, रायइ) शोभता है, चमकता है।

नियम ७९१ (मस्जेराउड्ड-णिउड्ड-बुड्ड-खुप्पाः ४।१०१) मज्जति को आउड्ड, णिउड्ड, बुड्ड और खुप्प—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्जति (आउड्डइ, णिउड्डइ, बुड्डइ, खुप्पइ, मज्जइ) डूबता है।

नियम ७९२ (पुञ्जेरारोल-वमालौ ४।१०२) पुञ्ज् धातु को आरोल और वमाल ये आदेश विकल्प से होते हैं। पुञ्जति (आरोलइ, वमालइ, पुञ्जइ) इकट्ठा करता है।

नियम ७९३ (लस्जेर्जीहः ४।१०३) लज्जति को जीह आदेश विकल्प से होता है। लज्जति (जीहइ, लज्जइ) लज्जा करता है।

नियम ७९४ (तिजेरोसुक्कः ४।१०४) तिज् धातु को ओसुक्क आदेश विकल्प से होता है। तेजते (ओसुक्कइ) तीक्ष्ण करता है।

नियम ७९५ (मृजेरुग्घुस-लुञ्छ-पुञ्छ-पुंस-फुस-पुस-लुह-हुल-रोसाणाः ४।१०५) मृज् धातु को उग्घुस, लुञ्छ, पुञ्छ, पुंस, फुस, पुस, लुह, हुल और रोसाण—ये आदेश विकल्प से होते हैं। मार्जति (उग्घुसइ, लुञ्छइ, पुञ्छइ, पुंसइ, फुसइ, पुसइ, लुहइ, हुलइ, रोसाणइ, मज्जइ) साफ करता है।

नियम ७९६ (भञ्जेर्वेमय-मुसुमूर-मूर-सूर-सूड-विर-पविरञ्ज-करञ्ज-नीरञ्जाः ४।१०६) भञ्ज् धातु को वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरञ्ज, करञ्ज, नीरञ्ज—ये आदेश विकल्प से होते हैं। भनक्ति (वेमयइ, मुसुमूरइ, मूरइ, सूरइ, सूडइ, विरइ, पविरञ्जइ करञ्जइ, नीरञ्जइ, भञ्जइ) तोडता है, भांगता है।

नियम ७९७ (अनुव्रजेः पडिअग्गः ४।१०७) अनुव्रजति को पडिअग्ग आदेश विकल्प से होता है। अनुव्रजति (पडिअग्गइ, अणुवच्चइ) अनुसरण करता है।

नियम ७९८ (अर्जेर्विढवः ४।१०८) अर्ज् धातु को विढव आदेश विकल्प से होता है। अर्जति (विढवइ, अज्जइ) पैदा करता है, उपार्जन करता है।

नियम ७९९ (युजो जुञ्ज-जुज्ज-जुप्पाः ४।१०९) युज् धातु को जुञ्ज, जुज्ज, जुप्प—ये आदेश होते हैं। युनक्ति (जुञ्जइ, जुज्जइ, जुप्पइ) जोडता है।

नियम ८०० (भुजो भुञ्ज-जिम-जेम-कम्माण्ह-चमढ-समाण-चड्डाः ४।११०) भुज्, धातु को भुञ्ज, जिम, जेम, कम्म, अण्ह, चमढ, समाण और चड्डु—ये आदेश होते हैं। भुङ्क्ते (भुञ्जइ, जिमइ, जेमइ, कम्मइ, अण्हइ, चमढइ, समाणइ, चड्डइ) भोजन करता है।

नियम ८०१ (वोपेन कम्मवः ४।१११) उप सहित भुज् धातु को कम्मव आदेश विकल्प से होता है। उपभुज्यते (कम्मवइ, उवहुञ्जइ) भोजन करता है।

नियम ८०२ (घटे गढः ४।११२) घटते को गढ आदेश विकल्प से होता है। घटते (गढइ, घडइ) बनाता है, चेष्टा करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ८०३ (समो गलः ४।११३) संघटते को गल आदेश विकल्प से होता है। संघटते (गलइ, संघडइ) प्रयत्न करता है।

नियम ८०४ (हासेन स्फुटे मूरः ४।११४) हास के कारण जो स्फुटित होता है उसको मूर आदेश विकल्प से होता है। हासेन स्फुटति (मूरइ) हंसी फूट पडती है।

धातु प्रयोग वाक्य

किं तुमं सिलोगा उग्गहसि, अवहसि, विडविड्डुसि, रयसि वा? सो आउव्वेयगंथं उवहत्थइ, सारवइ, समारइ, केलायइ समारयइ वा। सो रुक्खाइं सिंचइ, सिंपइ, सेअइ वा। तुमं मिमं किं पुच्छसि? मेहो सावणे बुक्कइ, गज्जइ वा। किं रायणयरम्मि उसहो ढिक्कइ? साहूणं मज्झे आयरिओ अग्घइ, छज्जइ, सहइ, रीरइ, रेहइ, रायइ वा। पक्खिणो जलासये न आउड्डंति, णिउड्डंति, बुड्डंति, खुप्पंति, मज्जंति वा। सो किमट्ठं जणा आरोलइ, वमालइ, पुंजइ वा? णवोढा सासूओ जीहइ, लज्जइ वा। सो किमट्ठं छुरिआ ओसुक्कइ? सीया भायणाइं उग्घुसइ, लुञ्छइ पुञ्छइ, पुंसइ, फुसइ, पुसइ, लुहइ, हुलइ, रोसाणइ, मज्जइ वा। सो सइ लट्ठिं वेमयइ, मुसुमुरइ, मूरइ, सूरइ, सूडइ, विरइ, पविरञ्जइ, करञ्जइ, नीरञ्जइ, भञ्जइ वा। बालो पुरिसा पडिअग्गइ, अणुवच्चइ वा। सो धणेहिं धणं विढवइ अज्जइ वा। किं तुमं कट्ठखण्डाइं जुञ्जसि, जुज्जसि, जुप्पसि वा। सुदंसणो पइदिणं मिट्ठान्नं भुंजइ, जिमइ, जेमइ, कम्मइ, अण्हइ, चमढइ, समाणइ, चड्डइ वा। सो मज्झण्हे किमवि न कम्मवइ, उवहुज्जइ वा। किं राया दुग्गं गढइ, घडइ वा? तुमं किमट्ठं एअं गलसि, संघडसि वा?

हिन्दी में अनुवाद करो

ना पुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो वा नालियं वए।
कोहं असच्चं कुव्विज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥१॥
जरा जाव न पीडेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे ॥२॥
ता मज्झिमो च्चिअ वरं, दुज्जणसुअणेहिं दोहिं वि न कज्जं।
जह दिट्ठो तवइ खलो, तहेअ सुअणो अईसन्तो ॥३॥
धण्णा ता महिलाओ जा दइअं सिविणाए वि पेच्छन्ति।
णिद्द च्चिअ तेण विणा ण एइ, का पेच्छए सिविणं ॥४॥
बहुं सुणेइ कण्णेहिं, बहुं अच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं, भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥५॥
अपुच्छिओ न भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा, मायामोसं विवज्जए ॥६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठिकुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई ॥७॥

धातु का प्रयोग करो

क्या वह पद्य में काव्य बना सकता है? वह भगवान महावीर के जीवन को संस्कृत में पद्यरूप में बनाता है। वह वृक्षों के मूल की अपेक्षा पत्रों को सींचता है। तुमने ज्योतिषी से क्या प्रश्न पूछा? आज बादल नहीं गरजे। यदि दाहिने पार्श्व में सांड गरजता है तो यात्री शुभ फल पाता है। क्या चंद्रमा दिन में भी आकाश में चमकता है? नदी में पशु नहीं डूबते फिर आदमी क्यों डूबता है? कीडी अपने स्वभाव से इकट्ठा करती रहती है। आजकल बहूएं ससुराल में भी लज्जा नहीं करती। तुम्हारा भाई शस्त्र को तेज किसलिए करता है? तुम वस्त्रों को कब साफ करोगे? शैक्ष साधु पात्रों को अधिक क्यों तोडता है? अनुयायी साधुओं का अनुसरण करते हैं। तुम एक मास में कितने रुपए उपार्जन करते हो? वह दोनों के मन को जोडने के लिए प्रयत्न करता है। साधु टूटे हुए पात्र को कुशलता से जोडता है। तुम सायंकाल भोजन में क्या खाते हो? वह व्यक्तित्व बनाने के लिए प्रयत्न करता है।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक राजा ने एक बार स्वप्न देखा कि मेरे सभी दांत गिर गए हैं। इसे अपशकुन जानकर उसने स्वप्नज्ञाता को बुलाया और अपने स्वप्न का फल पूछा। स्वप्नज्ञाता ने उत्तर दिया इसका फल बहुत बुरा है। आपके परिवार के सभी सदस्य आपके सामने ही मर जाएंगे। यह सुनकर राजा कुपित हो गया और उसे कैद में बंद करा दिया। राजा ने दूसरे स्वप्नज्ञाता को बुलाया और स्वप्न का फल पूछा। वह होशियार था। उसने उत्तर दिया राजन्! स्वप्न बहुत अच्छा है। इसका फल होगा, आप अपने परिवार में दीर्घजीवी होंगे। राजा उसके उत्तर से प्रसन्न हुआ और उसे बहुमूल्य उपहार दिया। दोनों स्वप्नज्ञाताओं का फलित एक था, पर वाणी की कला भिन्न-भिन्न थी।

प्रश्न

१. आयुर्वेद, पद्य, व्यक्तित्व, उपहार, जो दीखता न हो, स्वाधीन, अनुयायी, अपशकुन, पति, और चुगली के लिए प्राकृत शब्द बताओ?
२. उग्गह, अवह, सारव, समार, केलाय, सिम्प, बुक्क, ढिक्क, रीर, छज्ज, सह, बुड्ड, खुप्प, आरोल, वमाल, जीह, ओसुक्क, पुस, मूर, विर, पडिअग्ग, विढव, जुज्ज, जेम, चमढ, समाण, कम्मव, गढ, गल, मूर आदेश किन-किन धातुओं को होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह

दीवार, भींत—भित्ति (स्त्री)
पोला—पोल्ल (वि)
क्रम—कमो
आज्ञाकारी—आणाइत्त (वि)
उपार्जित—उवज्जिय (वि)
मांसरहित—णिम्मंसं
प्रसंग—वइअरो
चक्र—चक्को
पैर—चलणो
स्तूप—थूभो
मायका—माउघरो, माउघरं
उदित—उइयं
भरपूर—णिब्भरो
प्रतिज्ञा, नियम—अभिग्गहो
उतरकर—ओयरिऊण

नियम ८०५ (**मण्डेश्चिञ्च-चिञ्चअ-चिञ्चिल्ल-रीड-टिविडिक्काः ४।११५**) मण्डि धातु को चिञ्च, चिञ्चअ, चिञ्चिल्ल, रीड, टिविडिक्क—ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं। मण्डयति (चिञ्चइ, चिञ्चिअइ, चिञ्चिल्लइ, रीडइ, टिविडिक्कइ, मण्डइ) भूषित करता है, सजाता है।

नियम ८०६ (**तुडेस्तोड-तुट्ट-खुट्ट-खुडोक्खुडोल्लुक्क-णिलुक्क-लुक्कोल्लूराः ४।११६**) तुड् धातु को तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड, उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर—ये आदेश विकल्प से होते हैं। तुडति (तोडइ, तुट्टइ, खुट्टइ, खुडइ, उक्खुडइ, उल्लुक्कइ, णिलुक्कइ, लुक्कइ, उल्लूरइ, तुडइ) तोडता है, भेदन करता है।

नियम ८०७ (**घूर्णो घुल-घोल-घुम्म-पहल्लाः ४।११७**) घूर्ण् धातु को घुल, घोल, घुम्म और पहल्ल—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। घूर्णति (घुलइ, घोलइ, घुम्मइ, पहल्लइ) घूमता है, चक्राकार घूमता है।

नियम ८०८ (**विवृतेर्ढंसः ४।११८**) विवृत् धातु को ढंस आदेश विकल्प से होता है। विवर्तते (ढंसइ, विवट्टइ) धंसता है, गिर पडता है।

नियम ८०९ (**क्वथेरट्टः ४।११९**) क्वथ् धातु को अट्ट आदेश विकल्प से होता है। क्वथति (अट्टइ, कढइ) क्वाथ करता है।

नियम ८१० (**ग्रंथो गण्ठः ४।१२०**) ग्रन्थ् धातु को गण्ठ आदेश विकल्प से होता है। ग्रथ्नाति (गण्ठइ) गूंथता है।

नियम ८११ (**मन्थे र्घुसल-विरोलौ ४।१२१**) मन्थ् धातु को घुसल और विरोल आदेश विकल्प से होते हैं। मथ्नाति (घुसलइ विरोलइ) मथता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है, विलोडन करता है।

नियम ८१२ (ह्लादेरवअच्छः ४।१२२) णिजन्त और अणिजन्त ह्लाद् धातु को अवअच्छ आदेश होता है। ह्लादते (अवअच्छइ) खुश होता है। ह्लादयति (अवअच्छइ) खुश करता है।

नियम ८१३ (नेः सदो मज्जः ४।१२३) निपूर्वक सद् धातु को मज्ज आदेश होता है। निषीदति (णुमज्जइ) बैठता है। अत्ता एत्थ णुमज्जइ (आत्मा यहां बैठती है)।

नियम ८१४ (छिदे र्दुहाव-णिच्छल्ल-णिज्झोड-णिव्वर-णिल्लूर-लूराः ४।१२४) छिद् धातु को दुहाव, णिच्छल्ल, णिज्झोड, णिव्वर, णिल्लूर और लूर —ये आदेश विकल्प से होते हैं। छिदति (दुहावइ, णिच्छल्लइ, णिज्झोडइ, णिव्वरइ, णिल्लूरइ, लूरइ, छिंदइ) छेदता है, खंडित करता है।

नियम ८१५ (आङा ओअन्दोद्दालौ ४।१२५) आ युक्त छिद् धातु को ओअन्द और उद्दाल आदेश विकल्प से होते हैं। आछिदति (ओअन्दइ, उद्दालइ, आच्छिन्दइ) हाथ से छीनता है।

नियम ८१६ (मृदो मल-मढ-परिहट्ट-खड्ड-चड्ड-मड्ड-पन्नाडाः ४।१२६) मृद्नाति को मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड और पन्नाड—ये सात आदेश होते हैं। मृद्नाति (मलइ, मढइ, परिहट्टइ, खड्डइ, चड्डइ, मड्डइ, पन्नाडइ) मर्दन करता है।

नियम ८१७ (स्पन्देश्चुलुचुलः ४।१२७) स्पन्द् धातु को चुलुचुल आदेश विकल्प से होता है। स्पन्दते (चुलुचुलइ, फन्दइ) फडकता है, थोडा हिलता है।

नियम ८१८ (निरः पदेर्वलः ४।१२८) निर् प्रर्वक पद् धातु को वल आदेश विकल्प से होता है। निष्पद्यते (निव्वलइ, निप्पज्जइ) निष्पन्न होता है, सिद्ध होता है।

नियम ८१९ (विसंवदेर्विअट्ट-विलोट्ट-फंसाः ४।१२९) वि और सं पूर्वक वद् धातु को विअट्ट, विलोट्ट और फंस—ये आदेश विकल्प से होते हैं। विसंवदते (विअट्टइ, विलोट्टइ, फंसइ, विसंवयइ) अप्रमाणित होता है।

नियम ८२० (शदो झड-पक्खोडौ ४।१३०) शीयते को झड और पक्खोड आदेश होते हैं। शीयते (झडइ, पक्खोडइ) झडता है, पके फल गिरता है।

नियम ८२१ (आक्रन्दे र्णीहरः ४।१३१) आक्रन्दति को णीहर आदेश होता है। आक्रन्दति (णीहरइ) चिल्लाता है।

नियम ८२२ (खिदेर्जूर-विसूरौ ४।१३२) खिद् धातु को जूर और विसूर आदेश विकल्प से होता है। खिद्यते (जूरइ, विसूरइ, खिज्जइ) खेद करता है, अफसोस करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ८२३ (रुधेरुत्थङ्घः ४।१३३) रुध् धातु को उत्थङ्घ आदेश विकल्प से होता है। रुणद्धि, रुन्धे (उत्थङ्घइ, रुन्धइ) रोकता है।

नियम ८२४ (निषेधेर्हक्कः ४।१३४) निषेधति को हक्क आदेश विकल्प से होता है। निषेधति (हक्कइ, निसेहइ) निषेध करता है।

नियम ८२५ (क्रुधेर्जूरः ४।१३५) क्रुध् धातु को जूर आदेश विकल्प से होता है। क्रुध्यति (जूरइ, कुज्झइ) क्रोध करता है।

नियम ८२६ (जनो जा-जम्मौ ४।१३६) जायते को जा और जम्म आदेश होता है। जायते (जाअइ, जम्मइ) उत्पन्न होता है।

धातु प्रयोग वाक्य

घणसामो कण्हपडिमं चिञ्चइ, चिञ्चअइ, चिञ्चिल्लइ, रीडइ, टिविडिक्कइ, मण्डइ वा। तुमं कवाडं कहं तोडसि, तुट्टसि, खुट्टसि, खुडसि, उक्खुडसि, उल्लुक्कसि, णिल्लुक्कसि, लुक्कसि, उल्लूरसि, तुडसि वा ? सो गामस्स बाहिं उज्जाणम्मि घुलइ, घोलइ, घुम्मइ, पहल्लइ वा। भूकंपेण भूमी ढंसइ, विवट्टइ वा। विज्जो आउव्वेयस्स ओसहीणं अट्टइ, कढइ वा। तुमं नीरं कहं घुसलसि, विरोलसि वा ? विमला णियकेसा गंठइ। तुमं पुरक्कारं पाऊणं अवअच्छइ। सो णिद्धणा मोअगं दाऊण अवअच्छइ। अमुम्मि विज्जालये विज्जट्ठिणो कत्थ णुमज्जंति ? सो णावं दुहावइ, णिच्छल्लइ, णिज्झोडइ, णिव्वरइ, णिल्लूरइ, लूरइ, छिंदइ वा। धणंजयो जोगक्खेमस्स हत्थत्तो पत्तं ओअन्दइ, उद्दालइ, अच्छिन्दइ वा। विजयो सरीरे तेल्लं मलइ, मढइ, परिहट्टइ, खड्डइ, चड्डइ, मड्डइ, पन्नाडइ वा। संपइ मज्झ दाहिणभुआ चुलुचुलइ, फंदइ वा। मंतजवेण तस्स कज्जं निव्वलइ, निप्पज्जइ वा। तुज्झ कहणं विअट्टइ, विलोट्टइ, फंसइ, विसंवयइ वा। रुक्खत्तो पुप्फाइं झडंति, पक्खोडंति वा। जो णीहरइ सो कम्माइं बंधंति। तुज्झ घरे साहू गोयरट्ठं आगओ तया तुमं किमट्ठं जूरसि, विसूरसि खिज्जसि वा ? भीइए आरुहियं बालं सो उत्थङ्घइ, रुन्धइ वा। आयरिओ साहुं तस्स घरं गमिउं कहं हक्कइ, निसेहइ वा ? सो अम्हं जूरइ, कुज्झइ वा। एगदिवहे केत्तिला बाला जाअंति, जम्मंति वा ?

हिन्दी में अनुवाद करो

वासुदेवस्स पुत्तो ढंढो पत्तजोव्वणो सुणिऊण चउमहव्वयाइं समणधम्मं परिच्चइय उदारे कामभोगे संसारविरत्तो अरिट्ठनेमिस्स सगासे निक्खंतो। ता गहिय दुविहसिक्खो विहरए भगवया समं। अन्नया उइयं तं पुव्वोवज्जिय-मंतराइयं कम्मं समिद्धेसु गामणगरेसु हिंडतो न लहइ कहिंचि भिक्खं। जया वि लहइ तया वि जं वा तं वा। तेण सामी पुच्छिओ। पच्छा तेण अभिग्गहो गहिओ—जहा परस्स लाभो न मए गिण्हियव्वो। वासुदेवो भयवं वंदणत्थं बारवइं गओ। तित्थयरं पुच्छइ—एयासि अट्ठारसण्हं समणसाहस्सीणं को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुक्करकओ ? भयवया भणिअं—जहा ढंढणअणगारो । सो कहिं ? सामी भणइ, नयरिं पविसंतो पेच्छिहिसि । दिट्ठो य सुक्को निम्मंससरीरो पसंतप्पा ढंढणो अणगारो णयरिं पविसंतेणं । तओ भत्तिनिब्भरमणेण ओयरिऊण करिवराओ, वंदिओ सविणयं, पमज्जिया सहत्थेण चलणा, पुच्छिओ य पंजलिउडेण सुहविहारं । एक्केण इब्भसेट्ठिणा दिट्ठो चिंतियं च—जहा महप्पा एस कोइ तवस्सि, जो वासुदेवेण वि एवं सम्माणिज्जइ । सो (ढंढणो) य भवियव्वयावसेण तस्सेव घरं पविट्ठो । तेण परमाए सद्धाए मोयगेहिं पडिलाभिओ । आगओ सामिस्स दावइ, पुच्छइ य—जहा मम लाभंतराइयं खीणं ? सामिणा भणइ न खीणं, एस वासुदेवस्स लाभो त्ति । कहिओ सेट्ठिभत्तिकरणवइयरो तओ "न परलाभं उवजीवामि, न वा अन्नस्स देमि' त्ति अमुच्छियस्स परिट्ठवंतस्स अस्खलितपरिणामस्स तस्स केवलनाणं समुप्पन्नं ।

प्राकृत में धातु प्रयोग करो

वह अपने शरीर को विभूषित करता है । तुम दीवार को क्यों तोडते हो ? स्तूप के ऊपर चक्र घूमता है । पोली जमीन जल्दी धंसती है । तुम किन औषधियों का क्वाथ करते हो ? देवताओं और असुरों ने समुद्र का मंथन किया था । गणधरों ने भगवान् महावीर की वाणी को गूंथा जो आगम कहलाए । आपके आगमन से मैं बहुत खुश हूं । धर्मेश भूखों को भोजन खिलाकर उन्हें खुश करता है । क्या वह जमीन पर नहीं बैठता है ? किस कारण से तुम मकान को खंडित करते हो ? उसने मेरे हाथ से पुस्तक छीन ली । वह प्रतिदिन मर्दन क्यों करता है ? दर्शनकेन्द्र पर ध्यान करने से वह स्थान फडकता है । गुरु के आशीर्वाद से कार्य निष्पन्न होता है । जंगल में कौन चिल्लाता है ? भोजन में तुम्हारे न आने से वह खेद करता है । तुम्हारे मार्ग को कौन रोकता है ? तुमको वहां जाने से कौन निषेध करता है ? जो क्रोध करता है, उसका शरीर पतला हो जाता है । जो उत्पन्न होता है वह एक दिन मरेगा ।

धातु का प्रयोग करो

एक परिवार में तीन भाई थे । तीनों ही विवाहित थे । सबसे छोटा भाई अधिक बुद्धिमान था । उसकी पत्नी तीनों में सबसे छोटी थी । इसलिए उसे काम भी अधिक करना पडता था । जिस दिन बडी बहू के खाना बनाने का क्रम आता उस दिन भी वह सहयोग करती । और जिस दिन दूसरे नम्बर की बहू का क्रम आता उस दिन भी वह सहयोग करती । यह नई बहू थी फिर भी दोनों बडी बहुओं से अधिक काम करती । काम करना उसके लिए भारी नहीं था । दुःख तो इस बात का था कि काम करने पर भी वह सासू की कृपापात्र नहीं थी । खाने को शेष रहा हुआ मिलता था । पति भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माता का आज्ञाकारी पुत्र था। इसलिए वह अपनी पत्नी की बात पर ध्यान नहीं देता था। बहू के मन की बात सुनने वाला ससुर-पक्ष में कोई नहीं था। मायके में अपनी माता के पास आकर वह सारी घटना सुनाती थी। सुनाने से उसका दिल हल्का होता था।

प्रश्न

१. दीवार, पोला, क्रम, आज्ञाकारी, उपार्जित, मांसरहित, प्रसंग, स्तूप, मायका, चक्र, भरपूर, नियम आदि शब्दों के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

२. रीड, चिञ्च, खुड, लुक्क, खुट्ट, घोल, पहल्ल, दंस, अट्ट, वुसल, गंठ, अवअच्छ, मज्ज, दुहाव, लूर, ओअन्द, मल, मढ, चुलुचुल, वल, झड, णीहर, जूर, विसूर, उत्थंघ, जम्म—ये आदेश किन-किन धातुओं को होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५ धात्वादेश (६)

शब्द संग्रह

खत्तं (दे.)—सेंध	अण्डं—अण्डा
चेड (दे.)—दास, नौकर	कुक्कुटी—मुर्गी
उद्दवेउं—मारने के लिए	संतुट्ठो—संतुष्ट
धाहा (दे.)—पुकार, चिल्लाहट	सुवण्णिअ (वि)—सोने का
मुक्खत्तणं—मूर्खता	असंतोसो—असंतोष
लोभो—लालच	

नियम ८२७ (तनेस्तड-तड्ड-तड्डव-विरल्लाः ४।१३७) तन् धातु को तड, तड्ड, तड्डव, विरल्ल—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। तनोति (तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ, तणइ) फैलाता है।

नियम ८२८ (तृपस्थिप्पः ४।१३८) तृप्यति को थिप्प आदेश होता है। तृप्यति (थिप्पइ) तृप्त होता है, संतुष्ट होता है।

नियम ८२९ (उपसर्पेरल्लिअः ४।१३९) उपपूर्वक सर्पति को अल्लिअ आदेश विकल्प से होता है। उपसर्पति (अल्लिअइ, उवसप्पइ)।

नियम ८३० (संतपे झंङ्खः ४।१४०) संपूर्वक तप् धातु को झङ्ख आदेश विकल्प से होता है। संतपति (झङ्खइ, संतप्पइ) संतप्त होता है।

नियम ८३१ (व्यापेरोअग्गः ४।१४१) व्याप्नोति को ओअग्ग आदेश विकल्प से होता है। व्याप्नोति (ओअग्गइ, वावेइ) व्याप्त करता है।

नियम ८३२ (समापेः समाणः ४।१४२) समाप्नोति को समाण आदेश विकल्प से होता है। समाप्नोति (समाणइ, समावेइ) पूरा करता है। समास करता है।

नियम ८३३ (क्षिपेर्गलत्थाड्डक्ख-सोल्ल-पेल्ल-णोल्ल-छुह-हुल-परी-घत्ताः ४।१४३) क्षिप् धातु को गलत्थ, अड्डक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, (ह्रस्वे णुल्ल) छुह, हुल, परी, घत्त—ये आदेश विकल्प से होते हैं। क्षिपति (गलत्थइ, अड्डक्खइ, सोल्लइ, पेल्लइ, णोल्लइ, (णुल्लइ), छुहइ, हुलइ, परीइ, घत्तइ, खिवइ) फेंकता है।

नियम ८३४ (उत्क्षिपे र्गुलगुञ्छोत्थंघाल्लत्थोब्भुत्तोस्सिक्क-हक्खुवाः ४।१४४) उत् पूर्वक क्षिप् धातु को गुलगुंछ, उत्थङ्घ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव—ये आदेश होते हैं। उत्क्षिपति (उक्खिवइ गुलगुंछइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्थङ्घइ, अल्लत्थइ, उब्भुत्तइ, उस्सिक्कइ, हक्खुवइ) ऊंचा करता है, उठाता है।

नियम ८३५ (**आक्षिपे र्णीरवः ४।१४५**) आ पूर्वक क्षिप् धातु को णीरव आदेश विकल्प से होता है। आक्षिपति (णीरवइ, अक्खिवइ) आक्षेप करता है।

नियम ८३६ (**स्वपेः कमवस-लिस-लोट्टाः ४।१४६**) स्वप् धातु को कमवस, लिस और लोट्ट—ये आदेश विकल्प से होते हैं। स्वपिति (कमवसइ, लिसइ, लोट्टइ, सुअइ) सोता है, लेटता है।

नियम ८३७ (**वेपेरायम्बायज्झौ ४।१४७**) वेप् धातु को आयम्ब और आयज्झ आदेश विकल्प से होते हैं। वेपते (आयम्बइ, आयज्झइ, वेवइ) कांपता है, हिलता है।

नियम ८३८ (**विलपेर्झङ्ख-वडवडौ ४।१४८**) वि पूर्वक लप् धातु को झङ्ख और वडवड आदेश विकल्प से होते हैं। विलपति (झंखइ, वडवडइ, विलवइ) विलाप करता है, चिल्लाता है।

नियम ८३९ (**लिपो लिम्पः ४।१४९**) लिम्पति को लिम्प आदेश होता है। लिम्पइ (लिम्पते) लीपता है।

नियम ८४० (**गुप्ये विर-णडौ ४।१५०**) गुप्यति को विर और णड आदेश विकल्प से होता है। गुप्पइ (विरइ, णडइ, गुप्यति) व्याकुल होता है।

नियम ८४१ (**कृपोवहोणिः ४।१५१**) कृप् धातु को णिन्नन्त अवह आदेश होता है। कृपां करोति (अवहावेइ) कृपा करता है।

नियम ८४२ (**प्रदीपेस्तेअव-सन्दुम-सन्धुक्काब्भुत्ताः ४।१५२**) प्रदीप्यति को तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त—ये चार आदेश होते हैं। प्रदीप्यति (तेअवइ, सन्दुमइ, सन्धुक्कइ, अब्भुत्तइ, पलीवइ) जलता है।

नियम ८४३ (**लुभेः संभावः ४।१५३**) लुभ्यति को संभाव आदेश विकल्प से होता है। लुभ्यति (संभावइ, लुब्भइ) लोभ करता है।

नियम ८४४ (**क्षुभेः खउर-पड्डुहौ ४।१५४**) क्षुभ् धातु को खउर और पड्डुह आदेश विकल्प से होते हैं। क्षुभ्यति (खउरइ, पड्डुहइ, खुब्भइ) क्षुब्ध होता है।

नियम ८४५ (**आङो रभे रम्भ-ढवौ ४।१५५**) आपूर्वक रभ् धातु को रम्भ और ढव आदेश विकल्प से होते हैं। आरभते (आरम्भइ, आढवइ, आरभइ) आरंभ करता है।

नियम ८४६ (**उपालम्भे र्झङ्ख-पच्चार-वेलवाः ४।१५६**) उपालंभते को झङ्ख, पच्चार और वेलव—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। उपालंभते (झङ्खइ, पच्चारइ, वेलवइ, उवालंभइ) उपालंभ देता है।

नियम ८४७ (**अवे र्जृम्भो-जम्भा ४।१५७**) जृम्भति को जम्भा आदेश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होता है। वि सहित नहीं होता है। जृम्भति (जम्भाइ) जंभाइ लेता है। केलिपसरो विअम्भइ (केले के वृक्ष का फैलाव विकसित होता है)।

नियम ८४८ (भाराक्रान्ते नमेर्णिसुढः ४।१५८) भाराक्रान्त कर्ता हो तो नम् धातु को णिसुढ आदेश विकल्प से होता है। भाराक्रान्तो नमति (णिसुढइ, णवइ)।

नियम ८४९ (विश्रमेर्णिव्वा ४।१५९) विश्राम्यति को णिव्वा आदेश विकल्प से होता है। विश्राम्यति (णिव्वाइ, वीसमइ) विश्राम करता है।

नियम ८५० (आक्रमे रोहावोत्थारच्छुन्दाः ४।१६०) आक्रमति को ओहाव, उत्थार और छुन्द—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। आक्रमति (ओहावइ, उत्थारइ, छुन्दइ, अक्कमइ) आक्रमण करता है।

नियम ८५१ (भ्रमेष्टिरिटिल्ल-ढुण्ढुल्ल-ढण्ढल्ल-चक्कम्म-भम्मड-भमड भमाड-तलअण्ट-झण्ट-झम्प-भुम-गुम-फुम-फुस-ढुम-ढुस-परी-पराः ४।१६१) भ्रम् धातु को टिरिटिल्ल आदि अठारह आदेश विकल्प से होते हैं। भ्रमति (टिरिटिल्लइ, ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढल्लइ, चक्कम्मइ, भम्मडइ, भमडइ, भमाडइ, तलअण्टइ, झण्टइ, झम्पइ, भुमइ, गुमइ, फुमइ, फुसइ, ढुमइ, ढुसइ, परीइ, परइ, भमइ) घूमता है।

धातु प्रयोग वाक्य

वातो गंधं तडइ, तड्डइ, तड्डवइ, विरल्लइ, तणइ वा। तुज्झ महुरं वयणं सुणिऊण अहं थिप्पामि। मुणी आयरियं अल्लिअइ, उवसप्पइ वा। केण कारणेण, तुमं झंङ्खसि, संतप्पसि वा? सोहणो घयेण घडं ओअग्गइ, वावेइ वा। आयरिओ कल्लं सिग्घं वक्खाणं समाणिस्सइ, समाविस्सइ वा। रमेसो रुक्खस्स अवरि पत्थराणि कहं गलत्थइ, अड्डक्खइ, सोल्लइ, पेल्लइ, णोल्लइ, छुहइ, हुलइ, परीइ, घत्तइ, खिवइ वा? सुसीला तणस्स भारं गुलगुंछइ, उत्थंघइ, अल्लत्थइ, अब्भुत्तइ, उस्सिक्कइ, हक्खुवइ, उक्खिवइ वा। तुमं महेसं कहं णीरवसि, अक्खिवसि वा? किं सो गिम्हकाले वि दिवहे न कमवसइ, लिसइ, लोट्टइ, सुअइ वा? अप्पेणावि वातेण पाणियं आयम्बइ, आयज्झइ, वेवइ वा। किं तुज्झ भगिणी झङ्खइ, वडवडइ, विलवइ वा। विमला भीइं लिम्पइ। मुणी गिम्हकाले विहारम्मि विरइ, णडइ, गुप्पइ वा? गुरु सीसं अवहावेइ। दीवो सयं तेअइ, सन्दुमइ, सन्धुक्कइ, अब्भुत्तइ, पलीवइ वा। तुमं णवरं धणं संभावइ, लुब्भइ वा। तुज्झ पत्थरखेअणपमाएण पाणिअं खउरइ, पड्डुहइ, खुब्भइ वा। धम्मेसो अज्ज वागरणस्स अज्झयणं आरम्भइ, आढवइ, आरभइ वा। सासू पुत्तवहुं झङ्खइ, पच्चारइ, वेलवइ, उवालम्भइ वा। अज्जाहं जम्भामि। रुक्खो णिसुढइ, णवइ वा। रुक्खम्मि पहिओ णिव्वाइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीसमई वा। सीहो पसुं ओहावइ, उत्थारइ, छुंदइ, अवक्कमइ वा। सो गामे कहं टिरिटिल्लइ, ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढल्लइ, चक्कम्मइ, भम्मडइ, भमडइ, भमाडइ, तलअण्टइ, झण्टइ, झम्पइ, भुमइ, गुमइ, फुमइ, फुसइ, ढुमइ, ढुसइ, परीइ, परइ, भमइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

एगम्मि नयरे एगो चोरो। सो रत्तिं विभवसंपन्नेसु घरेसु खत्तं खणिउं सुबहुं दव्वजायं घेत्तुं अप्पणो घरेगदेसे कूवं सयमेव खणित्ता तत्थ दव्वजायं पक्खिवइ। जहिच्छियं सुवन्नं दाऊण कन्नगं विवाहेउं पसूयं संतिं उद्दवेत्ता तत्थेवागडे पक्खिवइ "मा मे भज्जा चेडरूवाणि य परूढपणयाणि होऊण रयणाणि परस्स पगासिस्संति।" एवं कालो वच्चइ। अन्नया तेणेगा कन्नगा विवाहिया अईवरूविणी। सा पसूया संती तेण न मारिया। दारगो य से अट्ठवरिसो जाओ। तेण चिंतियं—अइचिरं धारिया एयं पुव्वं उद्दवेउं पच्छा दारयं उद्दविस्सामि। तेण सा उद्दवेउं अगडे पक्खित्ता। तेण य दारगेण गिहाओ निग्गच्छिऊण धाहा कया। लोगो मिलिओ। तेण भन्नइ एएण मम माया मारिय त्ति। रायपुरिसेहिं सुयं। ते हिं गहिओ। दिट्ठो कूवो दव्वभरिओ अट्ठियाणि सुबहूणि। सो बंधेऊण रायसभं समुवणीओ जायणा पगारेहिं। सव्वं दव्वं दवावेऊण कुमारेण मारिओ।

धातु का प्रयोग करो

गुणग्राही दूसरों के गुणों को फैलाता है। गुरु के दर्शन से श्रावक तृप्त होता है। भाई बहन के पास जाता है। मरुभूमि की गर्मी से लोग संतप्त होते हैं। गुणों से वह अपने को व्याप्त करता है। मैं अपने काम को पूर्ण करता हूं। वह तुम्हारे पर शब्दों का बाण फेंकता है। वह तुम्हारे हाथ को ऊंचा उठाता है। वे परस्पर एक-दूसरे पर आक्षेप करते हैं। वह प्रतिदिन दिन में लेटता है। राजा के भय से जनता कांपती है। इस घर में बहनें क्यों विलाप करती हैं? विमला घर के आंगन को चतुराई से लीपती है। कौन किस पर कृपा करता है? आज दीपक क्यों नहीं जलता है? जो लोभ करता है, क्या वह अधिक कमाता है? कभी-कभी प्रकृति भी क्षुब्ध होती है। मैं अपने ग्रंथ निर्माण का कार्य कल आरंभ करूंगा। तुम उसको क्यों उपालंभ देते हो? वह बार-बार क्यों जंभाई लेता है? पेड फलों के भार से झुकते हैं, (नमते हैं।) जो जलता है, वह विश्राम करता है। कौन देश किस देश पर आक्रमण करता है? समय की सूई प्रतिक्षण घूमती है।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक किसान के पास एक मुर्गी थी, जो प्रतिदिन सोने का एक अण्डा देती थी। वह लालची मनुष्य इससे संतुष्ट नहीं था। एक दिन उसने सोचा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह मुर्गी मुझे प्रतिदिन एक ही अण्डा देती है। इसके पेट में सोने के ऐसे बहुत से अण्डे होंगे। यदि मैं इन सभी को एक ही समय में पाऊं तो मैं धनी हो सकता हूं। अतएव उसने मुर्गी को मारकर उसके पेट को छुरी से काट दिया। लेकिन उसके पेट में एक अण्डा भी नहीं मिला। इस प्रकार जो वह सोने का अण्डा प्रतिदिन पाता था, समाप्त हो गया। साथ ही वह मुर्गी भी समाप्त हो गई। किसान ने अपनी मूर्खता पर खेद प्रकट किया और पश्चात्ताप में डूब गया। वस्तुतः असंतोष और लालच सब दुःखों की जड है।

प्रश्न

१. सेंध, दास, पुकार, मूर्खता, अंडा, मुर्गी, संतुष्ट, असंतोष के लिए प्राकृत शब्द बताओ।

२. विरल्ल, थिप्प, अल्लिअ, झङ्ख, ओअग्ग, समाण, पेल्ल, उत्थंघ, सोल्ल, णीरव, कमवस, आयम्ब, झङ्ख, तडवड, लिम्प, णड, अवह, सन्दुम, संभाव, खउर, आढव, झङ्ख, पच्चार, जम्भ, णिसुढ, उत्थार, झण्ट, झम्प आदेश किन-किन धातुओं को होता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह

ऋद्धिसंपन्न—खद्धादाणिअ (वि) अनार्य देश—पच्चंतो
पहनना—आविंध (धातु) छिपाना—गोव (धातु)
दूरकरना—अवणी (धातु) वापस लौट गया—अवक्कंत (वि)

नियम ८५२ (गमेरई अइच्छाणुवज्जावज्जसोक्कुसाक्कुस-पच्चड्ड-पच्छन्द-णिम्मह-णी-णीण-णीलुक्क-पदअ-रम्भ-परिअल्ल-वोल-परिअल-णिरिणास-णिवहावसेहावहराः ४।१६२) गम् धातु को अई आदि इक्कीस आदेश विकल्प से होते हैं। गच्छति (अईइ, अइच्छइ, अणुवज्जइ, अवज्जसइ, उक्कुसइ, अक्कुसइ, पच्चड्डइ, पच्छंदइ, णिम्महइ, णीइ, णीणइ, णीलुक्कइ, पदअइ, रम्भइ, परिअल्लइ, वोलइ, परिअलइ, णिरिणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, अवहरइ, गच्छइ, हम्मइ) जाता है। णिहम्मइ, णीहम्मइ, आहम्मइ, पहम्मइ—ये हम्म धातु से बनते हैं।

नियम ८५३ (आङा अहिपच्चुअः ४।१६३) आ सहित गम् धातु को अहिपच्चुअ आदेश विकल्प से होता है। आगच्छति (अहिपच्चुअइ, आगच्छइ) आता है।

नियम ८५४ (समा अब्भिडः ४।१६४) संपूर्वक गम् धातु को अब्भिड आदेश विकल्प से होता है। संगच्छते (अब्भिडइ, संगच्छइ) मिलता है, संगति करता है।

नियम ८५५ (अभ्याङोम्मत्थः ४।१६५) अभि और आ सहित गम् धातु को उम्मत्थ आदेश विकल्प से होता है। अभ्यागच्छति (उम्मत्थइ, अब्भागच्छइ) सामने आता है।

नियम ८५६ (प्रत्याङा पलोट्टः ४।१६६) प्रति और आ सहित गम् धातु को पलोट्ट आदेश विकल्प से होता है। प्रत्यागच्छति (पलोट्टइ, पच्चागच्छइ) वापस आता है।

नियम ८५७ (शमेः पडिसा-परिसामौ ४।१६७) शम् धातु को पडिसा और परिसाम आदेश विकल्प से होता है। शाम्यति (पडिसाइ, परिसामइ, समइ) शांत होता है।

नियम ८५८ (रमेः संखुड्ड-खेड्डोब्भाव-किलिकिञ्च-कोट्टुम-मोट्टाय-णीसर-वेल्लाः ४।१६८) रम् धातु को संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिञ्च,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल—ये आदेश विकल्प से होते हैं। रमति (संखुड्डइ, खेड्डइ, उब्भावइ, किलिकिञ्चइ, कोट्टुमइ, मोट्टायइ, णीसरइ, वेल्लइ, रमइ) क्रीडा करता है।

नियम ८५९ (**पूरेरग्घाडाग्घवोद्धुमाङ्गुमाहिरेमाः ४।१६९**) पूर् धातु को अग्घाड, अग्घव, उद्धुम, अङ्गुम, अहिरेम—ये आदेश विकल्प से होते हैं। पूरयति (अग्घाडइ, अग्घवइ, उद्धुमाइ, अङ्गुमाइ, अहिरेमइ, पूरइ) पूरा करता है, पूर्ति करता है।

नियम ८६० (**त्वरस्तुवर-जअडौ ४।१७०**) त्वरति को तुवर और जअड आदेश विकल्प से होता है। त्वरति (तुवरइ, जअडइ) शीघ्र होता है, तेज होता है।

नियम ८६१ (**त्यादिशत्रोस्तूरः ४।१७१**) त्वरति को ति (तिप्) आदि और शतृ प्रत्यय परे हो तो तूर आदेश होता है। त्वरति (तूरइ) त्वरन् (तूरन्तो) शीघ्र होता हुआ।

नियम ८६२ (**तुरोत्यादौ ४।१७२**) अत्यादि (तिप् आदि छोड) प्रत्यय परे हो तो त्वर् धातु को तुर आदेश होता है। त्वरन् (तुरिओ, तुरन्तो)।

नियम ८६३ (**क्षरः खिर-झर-पज्झर-पच्चड-णिच्चल-णिट्टुआः ४।१७३**) क्षर् धातु को खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ—ये छह आदेश होते हैं। क्षरति (खिरइ, झरइ, पज्झरइ, पच्चडइ, णिच्चलइ, णिट्टुअइ) टपकता है, गिरता है।

नियम ८६४ (**उच्छल्ल उत्थल्लः ४।१७४**) उच्छलति को उत्थल्ल आदेश होता है। उच्छलति (उत्थल्लइ) उछलता है।

नियम ८६५ (**विगलेस्थिप्प-णिट्टुहौ ४।१७५**) विगलति को थिप्प और णिट्टुह आदेश विकल्प से होते हैं। विगलति (णिट्टुहइ, विगलइ) गल जाता है, नष्ट हो जाता है।

नियम ८६६ (**दलि-वल्योर्विसट्ट-वम्फौ ४।१७६**) दल् धातु को विसट्ट और वल् धातु को वम्फ आदेश विकल्प से होता है। दलयति (विसट्टइ, दलइ) विकसता है, फटता है। वलते (वम्फइ, वलइ) लौटता है, वापस आता है।

नियम ८६७ (**भ्रंशेः फिड-फिट्ट-फुड-फुट्ट-चुक्क-भुल्लाः ४।१७७**) भ्रंश् धातु को फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क और भुल्ल—ये छह आदेश विकल्प से होते हैं। भ्रंशयति (फिडइ, फिट्टइ, फुडइ, फुट्टइ, चुक्कइ, भुल्लइ, भंसइ) च्युत होता है, गिरता है।

नियम ८६८ (**नशेर्णिरणास-णिवहावसेह-पडिसा-सेहावहराः ४।१७८**) नश् धातु को णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवरेह—ये आदेश विकल्प से होते हैं। नश्यति (णिरणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, पडिसाइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेहइ, अवरेहइ, नस्सइ) भागता है, पलायन करता है।

नियम ८६९ (**अवात् काशो वासः ४।१७९**) अव से परे काश् धातु को वास आदेश होता है। अवकाशते (ओवासइ) अवकाश पाता है।

नियम ८७० (**संदिशेरप्पाहः ४।१८०**) संदिशति को अप्पाह आदेश विकल्प से होता है। संदिशति (अप्पाहइ, संदिसइ) संदेश देता है।

नियम ८७१ (**दृशोनिअच्छपेच्छावयच्छावयज्झ-वज्ज-सव्वव-देक्खौ अक्खावक्खावअक्ख-पुलोअ-पुलअ-निआवआस-पासाः ४।१८१**) दृश् धातु को निअच्छ आदि पन्द्रह आदेश होते हैं। पश्यति (निअच्छइ, पेच्छइ, अवयच्छइ, अवयज्झइ, वज्जइ, सव्ववइ, देक्खइ, ओअक्खइ, अवक्खइ, अवअक्खइ, पुलोएइ, पुलएइ, निअइ, अवआसइ, पासइ) देखता है।

धातु प्रयोग वाक्य

किं समणीओ विएसं अईंति, अइच्छंति, अणुवज्जंति, अवज्जसंति, उक्कुसंति, अक्कुसंति, पच्चड्डुंति, पच्छंदंति, णिम्महंति, णींति, णीणंति, णीलुक्कंति, पदअंति, रम्भंति, परिअल्लंति, वोलंति, परिअलंति, णिरिणासंति, णिवहंति, अवसेहंति, अवहरंति, गच्छंति वा। मनीसा विएसाओ अहिपच्चुअंति, आगच्छंति वा। सावगो साहुणो अब्भिहडइ, संगच्छइ वा। सो तुमं उम्मत्थइ, अब्भागच्छइ। बालो विज्जालयाओ पल्लोट्टइ, पच्चागच्छइ वा। उवज्झायं पासिऊण विज्जट्ठिणो पडिसांति, परिसामंति, समंति वा। बाला उज्जाणे संखुड्डुंति, खेड्डुंति, उब्भावंति, किलिकिञ्चंति, कोट्टुमंति, मोट्टायंति, णीसरंति, वेल्लंति वा। तुज्झ गंथं अहं अग्घाडामि अग्घवामि, उद्धुमामि, अङ्गुमामि, अहिरेमामि, पूरामि वा। पहिओ वरिसं पासिऊण तुवरइ, जअडइ वा। तुरन्तो पहिओ पडइ। तुज्झ सिरकेसाओ पाणियबिंदूइं खिरंति, झरंति, पज्झरंति, पच्चडंति, णिच्चलंति, णिट्टुअंति वा। विवादे ईसरो उत्थल्लइ। कालपभावाओ नव्वाइं वत्थाइं वि णिट्टुहंति, विगलंति वा। रुक्खस्स पुप्फाइं विसट्टंति, दलंति वा। मंती णियदेसं वम्फइ, वलइ वा। समयं पूरित्ता देवा देवलोगाओ फिड्डंति, फिट्टंति, फुडंति, फुट्टंति, चुक्कंति भुल्लंति वा। साहूणं परीसेहिंतो पराभूओ सो णिरणासइ, णिवहइ, अवसेहइ, पडिसाइ, सेहइ, अवरेहइ, नस्सइ वा। किं तुमं दिणे न ओवाससि? आयरियो जणा अप्पाहइ, संदिसइ वा। सो णियावगुणा निअच्छइ, पेच्छइ, अवयच्छइ, अवयज्झइ, वज्जइ, सव्ववइ, देक्खइ, ओअक्खइ, अवक्खइ, अवअक्खइ, पुलोएइ, पुलएइ, निअइ, अवआसइ, पासइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

एगो मरुओ परदेसं गंतूण साहापाराओ होऊण सविसयमागओ। तस्सऽन्नेण मरुएण 'खद्धादाणिअ' त्तिकाउं दारिगा दिन्ना। सो य लोए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दक्खिणाओ लहइ। परे विभवे वट्टइ। तेण तीसे भारियाए सुबहुं अलंकारजायं दिन्नं। सा निच्चमंडिया अच्छइ। तेण भन्नइ—एस पच्चंतगामो तो तुमं एयाणि आभरणाणि तिहिपव्वणीसु आविधाहि, कहिं चि चोरा आगच्छेज्जा तो सुहं गोविज्जंति। सा भणइ—अहं ताए वेलाए सिग्घमेवावणिस्सामि। अन्नया तत्थ चोरा पडिया। ते तमेव निच्चमंडिया गिहमणुपविट्ठा। सा तेहिं सालंकारा गहिया। सा य पणीयभोयणत्ताओ मंसोवचियपाणिपाया न सक्कइ कडाईणि अवणेउं। तओ चोरेहिं तीसे हत्थे पाए छेत्तूण अवणीयाणि गिण्हिउं च अवक्कंता।

धातु का प्रयोग करो

वह अपने काम पर जाता है। जो जाता है वह कहां आता है? वह अच्छे व्यक्तियों की संगति करता है। श्रावक स्वागत के लिए साधुओं के सामने आते हैं। जो जाता है वह यहां वापस नहीं आता। उसके ध्यान से क्रोध शांत होता है। क्या बालक सारे दिन क्रीडा करेगा? तुम्हारा अपूर्ण वाक्य मैं पूरा करता हूं। वह युद्ध की गति को तेज करता है। मकान की छत से वर्षा की बूंदें टपकती हैं। भडभुंजे का चना गर्म रेत से उछलता है। बर्फ गलती है। अंकुर फूटता है। पांच वर्षों के बाद वह अपने देश वापस आता है। जो धर्म से च्युत होता है उसके लिए स्थान कौन-सा है? किस दुःख के कारण तुम घर से पलायन करते हो? प्रधानमंत्री देश को संदेश देता है। ईर्ष्या स्त्री जाति का जातिगत स्वभाव है। पुरुष का हृदय कठोर होता है। स्त्री का हृदय कोमल होता है। मनुष्य दूसरे की प्रगति को सहन नहीं करता है। किसी पर संदेह से आरोप मत लगाओ। अपनी संकल्पशक्ति बढाओ। संकल्प से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में बहुत समय से वर्षा में खडा हूं।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक वृद्ध आदमी के छ पुत्र थे। वे हमेशा एक दूसरे से लडते थे। बूढे आदमी ने हर प्रकार से उनके बीच पारस्परिक स्नेह उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। लेकिन उसके सारे प्रयास व्यर्थ हुए। अन्ततः एक दिन उसने सभी को अपने समक्ष बुलवाया। उसने उन्हें छडियों का एक बंडल दिया और बारी-बारी से उसे तोडने का आदेश दिया। क्रमानुसार प्रत्येक ने पूरे बल के साथ प्रयत्न किया लेकिन कार्य सिद्ध न हुआ। उसके बाद पिता ने बंडल को खोल देने की आज्ञा दी। उसमें से प्रत्येक को एक-एक छडी देकर उसे दो भागों में तोडने का आदेश दिया। बिना किसी प्रयास के प्रत्येक ने छडी तोड दी। पिता ने पुत्रों को कहा—एकता की शक्ति देखो। यदि तुम मित्रता के बंधन में बंधे रहोगे तो तुम्हें कोई भी हानि पहुंचाने में समर्थ न होगा। यदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम एक दूसरे से घृणा करोगे और आपस में कलह करोगे तो तुम लोग आसानी से शत्रुओं के शिकार हो जाओगे ।

प्रश्न

१. बर्फ, ऋद्धिसंपन्न, अंकुर, अनार्यदेश, वापस लौटना—इनके लिए प्राकृत शब्द बताओ ।

२. खद्धादाणिअ और आविंध, अवणी तथा गोव धातु का अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

३. णिम्मह, णीण, अहिपच्चुअ, अब्भिड, उम्मत्थ, पलोट्ट, पडिसा, परिसाम, उब्भाव, मोट्टाय, उद्धुम, अहिराग, तुवर, खिर, पज्झर, उत्थल्ल, णिट्टुह, विसट्ट, वम्फ, फिड, चुक्क, णिवह, ओवास, अप्पाह, अवयच्छ, पुलोअ आदेश किन-किन धातुओं को होता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७ धात्वादेश (८)

शब्द संग्रह

दीक्षित—पव्वइयो
विश्राम—विस्सामं
प्रद्वेष—पओसो
हांकना—खेड (धातु)
गवाले की लडकी—गोवदारया
देखता हुआ—पलोइंतो
उत्पथ—उप्पहो
बहुश्रुत, शास्त्रज्ञ—बहुस्सुओ
पास जाता हुआ—उवसप्पंत
अणालोइय—प्रायश्चित्त के लिए अपने दोष को गुरु को न बताना
व्याकुल—अक्खित्त (वि)
पास—अब्भास (वि)

नियम ८७२ (स्पृशः फास-फंस-फरिस-छिव-छिहालुङ्खालिहाः ४।१८२) स्पृशति को फास, फंस, फरिस, छिव, छिह, आलुङ्ख और आलिह—ये सात आदेश होते हैं। स्पृशति (फासइ, फंसइ, फरिसइ, छिवइ, छिहइ, आलुङ्खइ, आलिहइ) छूता है।

नियम ८७३ (प्रविशेरिअः ४।१८३) प्रविशति को रिअ आदेश विकल्प से होता है। प्रविशति (रिअइ, पविसइ) प्रवेश करता है।

नियम ८७४ (प्रान्मृश-मुषोर्म्हुसः ४।१८४) प्र पूर्वक मृशति और मुष्णाति को म्हुस आदेश होता है। प्रमृशति (पम्हुसइ) स्पर्श करता है। प्रमुष्णाति (पम्हुसइ) चोरी करता है।

नियम ८७५ (पिषे णिवह-णिरिणास-णिरिणज्ज-रोञ्च-चड्डाः ४।१८५) पिष् धातु को णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड—ये पांच आदेश विकल्प से होते हैं। पिनष्टि (णिवहइ, णिरिणासइ, णिरिणज्जइ, रोञ्चइ, चड्डइ, पीसइ) पीसता है।

नियम ८७६ (भषेर्भुक्कः ४।१८६) भष् धातु को भुक्क आदेश विकल्प से होता है। भषति (भुक्कइ, भसइ) भौंकता है।

नियम ८७७ (कृषेः कड्ढ-साअड्ढाञ्चाणच्छायञ्छाइञ्छाः ४।१८७) कृष् धातु को कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च, अणच्छ, अयञ्छ, आइञ्छ—ये छ आदेश विकल्प से होते हैं। कर्षति (कड्ढइ, साअड्ढइ, अञ्चइ, अणच्छइ, अयञ्छइ, आइञ्छइ, करिसइ) खींचता है।

नियम ८७८ (असावक्खोडः ४।१८८) असि विषय में कृष् धातु को अक्खोड आदेश होता है। असिं कोशात् कर्षति (अक्खोडइ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ८७६ (**गवेषेर्डुण्डुल्ल-ढण्ढोल-गमेस-घत्ताः ४।१८६**) गवेष् धातु को ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, छत्त—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। गवेषयति (ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढोलइ, गमेसइ, घत्तइ, गवेसइ) ढूंढता है, खोजता है।

नियम ८८० (**श्लिषेः सामग्गावयास-परिअन्ताः ४।१६०**) श्लिष्यति को सामग्ग, अवयास, परिअन्त—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। श्लिष्यति (सामग्गइ, अवयासइ, परिअन्तइ, सिलेसइ) आलिंगन करता है।

नियम ८८१ (**म्रक्षेश्चोप्पडः ४।१६१**) म्रक्ष् धातु को चोप्पड आदेश विकल्प से होता है। म्रक्षति (चोप्पडइ, मक्खइ) चोपडता है।

नियम ८८२ (**काङ्क्षेराहाहिलङ्घाहिलङ्ख-वच्च-वम्फ-मह-सिह-विलुम्पाः ४।१६२**) काङ्क्षति को आह, अहिलंघ, अहिलङ्ख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुम्प—ये आठ आदेश विकल्प से होते हैं। काङ्क्षति (आहइ, अहिलङ्घइ, अहिलङ्खइ, वच्चइ, वम्फइ, महइ, सिहइ, विलुम्पइ, कङ्खइ) चाहता है।

नियम ८८३ (**प्रतीक्षेः सामय-विहीर-विरमालाः ४।१६३**) प्रतीक्षते को सामय, विहीर, विरमाल—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। प्रतीक्षते (सामयइ, विहीरइ, विरमालइ, पडिक्खइ) प्रतीक्षा करता है।

नियम ८८४ (**तक्षेस्तच्छ-चच्छ-रम्प-रम्फाः ४।१६४**) तक्ष् धातु को तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ—ये चार आदेश विकल्प से होते हैं। तक्ष्णोति (तच्छइ, चच्छइ, रम्पइ, रम्फइ, तक्खइ) पतला करता है, छीलता है।

नियम ८८५ (**विकसेः कोआस-वोसट्टौ ४।१६५**) विकसति को कोआस, वोसट्ट—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। विकसति (कोआसइ, वोसट्टइ, विअसइ)—विकास करता है।

नियम ८८६ (**हसेर्गुञ्जः ४।१६६**) हसति को गुञ्ज आदेश विकल्प से होता है। हसति (गुञ्जइ, हसइ हंसता है।

नियम ८८७ (**स्रंसेर्ल्हस-डिम्भौ ४।१६७**) स्रंस् धातु को ल्हस, डिम्भ—ये दो आदेश विकल्प से होते हैं। स्रंसते (ल्हसइ, डिम्भइ, संसइ) खिसकता है, नीचे गिरता है।

नियम ८८८ (**त्रसेर्डर-बोज्ज-वज्जाः ४।१६८**) त्रस् धातु को डर, बोज्ज और वज्ज—ये तीन आदेश विकल्प से होते हैं। त्रस्यति, त्रसति (डरइ, बोज्जइ, वज्जइ, तसइ) डरता है।

नियम ८८९ (**न्यसो णिम-णुमौ ४।१६६**) न्यस्यति को णिम और णुम आदेश होते हैं। न्यस्यति (णिमइ, णुमइ) स्थापना करता है।

नियम ८६० (**पर्यसः पलोट्ट-पल्लट्ट-पल्हत्थाः ४।२००**) पर्यस्यति को पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ—ये तीन आदेश होते हैं। पर्यस्यति (पलोट्टइ, पल्लट्टइ, पल्हत्थइ) फेंकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ८९१ (**निःश्वसेर्झङ्खः** ४।२०१) निःश्वसिति को झङ्ख आदेश विकल्प से होता है। निःश्वसिति (झङ्खइ, नीससइ) नीसास लेता है।

नियम ८९२ (**उल्लसेरूसलोसुम्भ-णिल्लस-पुलआअ-गुञ्जोल्लारोआः** ४।२०२) उल्लसति को ऊसल, ऊसुम्भ, णिल्लस, पुलआअ, गुञ्जोल्ल, आरोअ—ये छ आदेश विकल्प से होते हैं। उल्लसति (ऊसलइ, ऊसुम्भइ, णिल्लसइ, पुलआअइ, गुञ्जोल्लइ ह्रस्वे गुञ्जुल्लइ आरोअइ, उल्लसइ) उल्लास पाता है।

नियम ८९३ (**भासेर्भिसः** ४।२०३) भास् धातु को भिस आदेश विकल्प से होता है। भासते (भिसइ, भासइ) शोभता है, चमकता है।

नियम ८९४ (**ग्रसेर्घिसः** ४।२०४) ग्रसति को घिस आदेश विकल्प से होता है। ग्रसति (घिसइ, गसइ) निगलता है।

नियम ८९५ (**अवाद्गाहेर्वाहः** ४।२०५) अव से परे गाह् को वाह आदेश विकल्प से होता है। अवगाहते (ओवाहइ, ओगाहइ) अवगाहन करता है।

नियम ८९६ (**आरुहेश्चड-वलग्गौ** ४।२०६) आरोहति को चड और वलग्ग आदेश विकल्प से होते हैं। आरोहति (चडइ, वलग्गइ, आरुहइ) चढता है।

नियम ८९७ (**मुहे गुंम्म-गुम्मडौ** ४।२०७) मुह् धातु को गुम्म और गुम्मड आदेश विकल्प से होता है। मुह्यति (गुम्मइ, गुम्मडइ, मुज्झइ) मुग्ध होता है।

नियम ८९८ (**दहेरहिऊलालुङ्खौ** ४।२०८) दहति को अहिऊल और आलुङ्ख आदेश विकल्प से होता है। दहति (अहिऊलइ, आलुङ्खइ) जलाता है।

नियम ८९९ (**ग्रहो-वल-गेण्ह-हर-पङ्ग-निरुवारहिपच्चुआः** ४।२०९) ग्रह् धातु को वल, गेण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार और अहिपच्चुअ—ये आदेश विकल्प से होते हैं। गृह्णाति (वलइ, गेण्हइ, हरइ, पङ्गइ, निरुवारइ, अहि-पच्चुअइ) ग्रहण करता है।

धातु प्रयोग

पुत्तो पिअरस्स चरणा फासइ, फंसइ, फरिसइ, छिवइ, छिहइ, आलुङ्खइ, आलिहइ वा। मुणी चाउम्मासस्स पवेसाय णयरं रिअइ, पविसइ वा। सो तुज्झ सरीरं कहं पम्हुसइ ? चोरो कस्स गिहं पम्हुसइ ? मनीसा गोहूमं णिवहइ, णिरिणासइ, णिरिणज्जइ, रोञ्चइ, चड्डइ, पीसइ वा। कुक्कुरो भुक्कइ, भसइ वा। किसीवलो हलं कड्ढइ, साअड्ढइ, अञ्चइ, अणच्छइ, अयञ्छइ, आइञ्छइ। सेट्ठिणी पलंबं ढुण्ढुल्लइ, ढण्ढोलइ, गमेसइ, घत्तइ,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गवेसइ वा। माआ पुत्तिं सामग्गइ, अवयासइ, परिअन्तइ, सिलेसइ वा। भगिणी रुट्ठिअं चोप्पडइ, मक्खइ वा। तुमं किं अहिलंघसि, अहिलंखसि, वच्चसि, वम्फसि, महसि, सिहसि विलुंपसि वा? सो कं सामयइ, विहीरइ, विरमालइ, पडिक्खइ वा। मोहणो लोभं तच्छइ, चच्छइ, रम्पइ, रम्फइ, तक्खइ वा? रामो पइदिणं कोआसइ, वोसट्टइ, विअसइ वा। तुमं कहं गुञ्जसि, हससि वा? सण्हांगणे पाया ल्हसंति, डिम्भंति, संसंति वा। भगिणी णिसाए भूआओ डरइ, बोज्जइ, वज्जइ, तसइ वा। सो गिहे पडिमं णिमइ, णुमइ वा। रामो सरं पलोट्टइ, पल्लट्टइ, पल्हत्थइ वा। पत्तेयजीवो पइक्खणं झङ्खइ, नीससइ वा। पुत्तस्स पगइं पासिऊण माआ ऊसलइ, ऊसुम्भइ, णिल्लसइ, पुलआअइ, गुञ्जो, ल्लइ, आरोअइ, उल्लसइ वा। तुज्झ कंठे हारो भिसइ, भासइ वा। धेणू तणाइं घिसइ, गसइ वा। मुणी अंगसुत्ताणि ओवाहइ, ओगाहइ वा। मुणी झाणसेणिं चडइ, वलग्गइ, आरुहइ वा। तुमं तस्स रूवस्स उवरिं कहं गुम्मइ, गुम्मडइ, मुज्झइ वा? तुज्झ ववहारो मज्झ हिअयं अहिऊलइ, आलुंखइ वा। सो तुज्झ पाणिं वलइ, गेण्हइ, हरइ, पङ्गइ, निरुवारइ, अहिपच्चुअइ वा।

हिन्दी में अनुवाद करो

दो भायरो पव्वइया। तत्थेगो बहुस्सुओ, एगो अप्पसुओ। जो बहुस्सुओ सो आयरिओ। सो सीसेहिं सुत्तत्थाणं निमित्तमुवसप्पंतेहिं दिवसओ विस्सामं न लभइ। रत्तिं पि परिपुच्छणाईहिं सुविउं न लहइ। जो सो अप्पसुओ सो दिवसओ रत्तीए य सेच्छाए (स्वेच्छा) अच्छइ। अन्नया सो आयरिओ चिंतेइ—मे भाया पुन्नवंतो जो सुहं जेमेऊण सुहेण सुयइ। अम्हं पुण मंदपुन्नाणं रत्तिं पि निद्दा नत्थि। एवं च नाणपओसओ तेण नाणावरणिज्जं कम्मं बद्धं। सो तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंतो कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववन्नो। तओ चुओ इहेव भारहे वासे आहीरघरे दारओ जाओ। कमेण वड्ढिओ जोव्वणत्थो जाओ विवाहिओ य। दारिया जाया अतीवरूववई। सा य भद्दकन्नया। कयाणि ताणि पियापुत्ताणि अन्नेहिं आभीरेहिं समं सगडं घयस्स भरेऊणं नगरं विक्किणणट्ठं पट्ठियाणि। सा य कन्नया सारहित्तं सगडस्स करेइ। ततो ते गोवदारया तीए रूवेणऽक्खित्ता तीसे सगडस्स अब्भासगयाइं सगडाइं उप्पहेण खेडंति तं पलोइंता। ताइं सव्वाइं सगडाइं उप्पहेणं भग्गाइं। तओ तीए नामकं कयं 'असगड' त्ति इयरस्स 'असगडपिय' त्ति। तस्स तं चेव वेरग्गं जायं। तं दारियं परिणावेउं सव्वं च घरसारं दाऊण पव्वइओ।

धातु का प्रयोग करो

श्रावक साध्वियों को नहीं छूते हैं। वह अपने नए घर में शुभ वेला में प्रवेश करता है। उसका छोटा पुत्र अभी चोरी क्यों करता है? अधिकारी ने कहा—समय आने पर मैं उसको पीस दूंगा। कुत्ता रात में कब भौंकता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह मुश्किल से अपने परिवार का भार खींचता है। क्षत्रिय म्यान से तलवार को किसलिए खींचता है? साधु घर-घर में जाकर शुद्ध आहार को खोजता है। शीत से बचाने के लिए माता बच्चे का आलिंगन करती है। रोगी तेल से अपने शरीर को चोपडता है। तुम मुझ से क्या चाहते हो? प्रतिदिन मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता हूं। साधु अपने पात्र को पतला करता है। प्रति वर्ष वह विकास करता है। बात कहने से पूर्व वह क्यों हंसता है? पहाड से बर्फ नीचे गिरती है। कठोर अनुशासन से सब डरते हैं। कौन वस्तु तुम मेरे लिए स्थापना करते हो? बालक क्रोध से पुस्तक को फेंकता है। उसने उच्छ्वास लिया पर निःश्वास नहीं लिया। शिष्य गुरु के पास रहकर उल्लास पाता है। उसके शरीर पर धुले हुए श्वेत वस्त्र अधिक शोभते हैं। सांप चूहे को निगल जाता है। उसने २५ वर्षों तक सूत्रों का अवगाहन किया। वह क्रमशः ऊपर चढता है। तुम किस रूप पर मुग्ध हुए हो?

प्राकृत में अनुवाद करो

एक वृद्ध मनुष्य अपने उद्यान में आम्र वृक्षों के रोपने में अत्यन्त परिश्रम कर रहा था। एक युवक मनुष्य ने उन्हें देखकर हंसी उडाई और कहा—आपके ये प्रयत्न अत्यन्त निरर्थक हैं। आप अत्यन्त वृद्ध हैं और इन वृक्षों के फलों का स्वाद लेने के लिए आप जीवित नहीं रहेंगे। वृद्ध मनुष्य ने शांतिपूर्वक अपनी आंखें उठायीं और युवक पुरुष की ओर देखते हुए कहा—प्यारे बच्चे! तुमने अच्छा प्रश्न किया है। मेरे जन्म लेने के पूर्व ही किसी ने इन विशाल वृक्षों को उद्यान में रोपा था और मैं उनके मधुर फलों को खा रहा हूं। अब मैं इन वृक्षों को रोपता हूं ताकि तुम्हारे जैसे नवयुवक लोग मेरी मृत्यु के बाद फल खा सकें। यह उत्तर सुनकर वह लडका लज्जित हुआ और उसने वृद्ध मनुष्य के अच्छे विचारों की प्रशंसा की।

प्रश्न

१. पव्वइयो, विस्सामं, पओसो, बहुस्सुओ, उवसप्पंत, अणालोइय, अक्खित्त, पलोइंत, अब्भास—इन शब्दों का अर्थ बताओ।
२. फास, फंस, रिअ, पम्हुस, पम्हुस, णिरिणास, चड्ड, भुक्क, साअड्ढ, अणच्छ, घत्त, ढुण्ढुल्ल, अवयास, चोप्पड, अहिलङ्ख, मह, सामय, रम्प, गुञ्ज, ल्हस, डर, बोज्ज, णुम, पलोट्ट, झङ्ख, ऊसल, पुलआअ, भिस, घिस, ओवाह, गुम्म—ये आदेश किन-किन धातुओं को होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह

असिवं—मारी रोग
भूयवाइय— भूतवादिक
अलाहि—अलं, बस
आमय—रोग
पिवासा—प्यास
उवद्दवं—उपद्रव
निहालेयव्वं—देखना चाहिए
चिप्पिड—चिपटे नाक वाला
नायरया—नगर जन

नियम ६०० (**गमिष्यमासां छः ४।२१५**) गम्, इष्, यम् और आस् धातुओं के अंत को छ होता है। गच्छइ, इच्छइ, जच्छइ, अच्छइ।

नियम ६०१ (**छिदि-भिदो न्दः ४।२१६**) छिद् और भिद् के अन्त्य को न्द आदेश होता है।

द् > न्द—छिद्=छिन्द। भिद्=भिन्द।

नियम ६०२ (**युध-बुध-गृध-क्रुध-सिध-मुहां ज्झः ४।२१७**) युध्, बुध्, गृध्, क्रुध्, सिध् और मुह् धातुओं के अन्त को ज्झ होता है।

ध् > ज्झ—युध्=जुज्झ। बुध्=बुज्झ। गृध्=गिज्झ। क्रुध्=कुज्झ। सिध्=सिज्झ।

ह् > ज्झ—मुह्=मुज्झ।

नियम ६०३ (**रुधो न्ध म्भौ च ४।२१८**) रुध् के अन्त्य वर्ण को न्ध, म्भ और ज्झ होता है।

ध् > न्ध, म्भ—रुध्=रुन्धइ, रुम्भइ, रुज्झइ।

नियम ६०४ (**सद-पतोर्डः ४।२१९**) सद् और पत् धातु के अन्त्य को ड होता है।

द्, त् > ड—सद्=सडइ। पत्=पडइ।

नियम ६०५ (**क्वथ-वर्धां ढः ४।२२०**) क्वथ् और वर्ध् धातु के अन्त्य को ढ होता है।

थ्, ध > ढ—क्वथ्=कढइ। वर्ध्=वड्ढइ।

नियम ६०६ (**वेष्टः ४।२२१**) वेष्ट् वेष्टने धातु के (नियम ३९४ क ग ट ड २।७७) से ष् का लोप होने के बाद अन्त्य ट को ढ होता है।

ट् > ढ—वेष्ट्=वेढइ।

नियम ६०७ (**समो ल्लः ४।२२२**) सं पूर्वक वेष्ट् धातु को ल्ल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होता है।

ट्>ल्ल—संवेष्ट्=संवेल्लइ।

नियम ६०८ (वोदः ४।२२३) उद् से परे वेष्ट् के अन्त्य को ल्ल विकल्प से होता है।

ट्>ल्ल—उद्वेष्ट्=उव्वेल्लइ, उव्वेढइ।

नियम ६०९ (स्विदां ज्जः ४।२२४) स्विद् जैसी दकारान्त धातुओं के अन्त्य को ज्ज होता है।

द्>ज्ज—स्विद्=सिज्जइ। संपद्=संपज्जइ। खिद्=खिज्जइ।

नियम ६१० व्रज-नृत-मदां च्चः ४।२२५) व्रज्, नृत् और मद् धातुओं के अन्त्य वर्ण को च्च होता है।

ज,त,द 7 च्च—व्रज्=वच्चइ। नृत्=नच्चइ। मद्=मच्चइ।

नियम ६११ (रुद-नमो वः ४।२२६) रुद् और नम् धातु के अन्त्य वर्ण को व होता है।

द्, म्>व—रुद्=रूवइ। नम्=नवइ।

नियम ६१२ (उद्विजः ४।२२७) उद् पूर्वक विज् धातु के अन्त्य वर्ण को व होता है।

ज्7व—उद्विज्—उव्विवइ।

नियम ६१३ (खाद-धावो लुक् ४।२२८) खाद् और धाव् धातु के अन्त्य वर्ण का लुक् होता है।

द्7लुक्—खाद्=खाइ, खाअइ। खाहिइ, खाउ।

व्7लुक्—धाव=धाइ, धाहिइ, धाउ। बहुलाधिकारात् वर्तमान, भविष्य और विध्यर्थ के एकवचन में ही लुक् होता है। बहुवचन होने से यहां नहीं हुआ है—खादन्ति, धावन्ति। कहीं पर नहीं भी होता—धावइ पुरओ (आगे दौडता है।)

हिन्दी में अनुवाद करो

असिवोवद्दवे नयरे आदन्नस्स स पुरजणवयस्स राइणो समीवं तिन्नि भूयवाइया आगया। भण्णंति—अम्हे असिवं उवसमावेमो त्ति। राइणा भणियं—सुणेमो केणुवाएणं? त्ति। तत्थेगो भणइ—अत्थि मम मंतसिद्धमेगं भूयं अलंकियविभूसियं तं सव्वजणमणहरं रूवं विउव्विऊण गोपुररत्थासु लीलायंतं परियडइ, तं न निहालेयव्वं, तं निहालियं रूसइ। जो पुण तं निहालेइ सो विणस्सइ। जो पुण तं पेच्छिऊण अहोमुहो ठाइ सो रोगाओ मुच्चइ। राया भणइ—अलाहि मे एएण अइरूसणेण।

बीयो भणइ—महव्वयं भूयं महइ महालयं रूवं विउव्वइ लंबोयरं चिप्पिटं विउअकुच्छि पंचसिरं एगपायं विसिहं विभत्सरूवं अट्टट्टहासं मुयंतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गायंतं पणच्चमाणं तं च विकयरूवं परिभमंतं दट्ठूण जो पओसइ उवहसइ पवंचेइ वा तस्स सत्तहा सिरं फुट्टइ। जो पुण तं सुहाहि वायाहिं अहिनंदइ धूवपुप्फाइएहिं पूएइ सो सव्वामयाणं मुच्चइ। राया भणइ—अलाहि एएणं वि। तइओ भणइ—ममावि एवं विहं चेव नाइवेसकरं भूयमत्थि, पियापियकारिं दंसणाओ एव रोगेहिंतो मोयइ। एवं होउ त्ति। तेण तहा कए असिवं उवसंतं। तुट्ठो राया। आणंदिया नायरया। पूइओ सो भूयवाई सव्वेहि पि।

प्राकृत में अनुवाद करो

ग्रीष्म ऋतु में एक दिन एक यात्री जंगल से होकर जा रहा था। जब अपराह्ण काल हुआ तब उसे प्यास लग गई। सभी जलाशय और नदियां सूख गई थीं। उसे अपनी प्यास बुझाने के लिए कहीं भी पानी नहीं मिला। अंत में वह नारियल के वृक्ष के नीचे आया। वृक्ष पर कोमल नारियल लगे थे। वृक्ष लम्बे होने के कारण वह नारियल के फल तक नहीं जा सकता था। वृक्ष पर अनेक बंदरों को बैठा हुआ देखकर उस चतुर यात्री ने एक उपाय सोचा। उसने भूमि पर से कुछ पत्थरों को लेकर लगातार बंदरों पर फेंका। बंदर भी नारियल फल को तोडकर यात्री को मारने लगे। उसने उन नारियलों को बडे आनंद से संगृहीत कर लिया। उनके मधुर जल से अपनी प्यास बुझा कर वह अपने पथ पर चल दिया। सहजबुद्धि मनुष्य का परम साथी है।

प्रश्न

१. नीचे लिखे रूपों में बताओ धातु के किस वर्ण को किस नियम से क्या आदेश हुआ है? जच्छ, गिज्झ, सिज्झ, रुम्भ, रुज्झ, सड, पड, वेढ, संवेल्ल, उव्वेल्ल, खिज्ज, वच्च, मच्च, उव्विव।
२. असिव, अलाहि, चिप्पिड, जत्ती, नायरया—इन शब्दों के अर्थ बताओ और वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०६ धातुवर्णादेश (२)

शब्द संग्रह

पट्टिओ—प्रस्थान किया
खुड्डओ—छोटा साधु
तिसा—प्यास
खंतओ (दे०)—बाप
सत्तसारय—जीवों को याद करने वाला
मलिण—मैला
पारेवय—कबूतर
पच्छओ—पीछे से
समावडिया—सामने आई
नित्थर—पार करना (धातु)
पडिच्छइ—ग्रहण करना
विउस (वि)—विद्वान्
फट्टिअंवत्थं—फटे वस्त्र
आसा—आशा, अभिलाषा

नियम ६१४ (सृजोरः ४।२२६) सृज्, धातु के अन्त्य को र होता है।
ज्>र सृज्—निसिरइ, वोसिरइ। वोसिरामि।

नियम ६१५ (शकादीनां द्वित्वम् ४।२३०) शक् आदि धातुओं का अन्त्य वर्ण द्वित्व हो जाता है। शक्—सक्कइ। जिम्—जिम्मइ। लग्—लग्गइ। मग्—मग्गइ। कुप्—कुप्पइ। नश्—नस्सइ। अट्—अट्टइ। परिअट्टइ। लुट्—पलोट्टइ। तुट्—तुट्टइ। नट्—नट्टइ। सिव्—सिव्वइ। इत्यादि।

नियम ६१६ (स्फुटि चलेः ४।२३१) स्फुट् और चल् धातु के अन्त्य को द्वित्व विकल्प से होता है। स्फुट्—फुट्टइ, फुडइ। चल्—चल्लइ, चलइ।

नियम ६१७ (प्रादे मीलेः ४।२३२) प्र आदि से परे मील् धातु के अन्त्य वर्ण को द्वित्व विकल्प से होता है। पमील्—पमिल्लइ, पमीलइ। निमिल्लइ, निमीलइ। संमिल्लइ, संमीलइ। उम्मिलइ, उम्मीलइ। प्र आदि न होने से द्वित्व नहीं होता है—मीलइ।

नियम ६१८ (उवर्णस्यावः ४।२३३) धातु के अन्त्य उवर्ण को अव आदेश होता है।
उवर्ण 7 अव न्हुङ्—निण्हवइ। हु—निहवइ। च्युङ्—चवइ। रु—रवइ। कु—कवइ। सू—सवइ, पसवइ।

नियम ६१६ (ऋवर्णस्यारः ४।२३४) धातु के अन्त्य ऋवर्ण को अर आदेश होता है।
ऋवर्ण 7 अर कृ—करइ। धृ—धरइ। मृ—मरइ। वृ—वरइ। सृ—सरइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हृ—हरइ । तृ—तरइ । जृ—जरइ ।

नियम ६२० (वृषादीनामरिः ४।२३५) वृष् जैसी धातुओं के ऋवर्ण को अरि आदेश होता है ।

ऋवर्ण 7 अरि वृष्—वरिसइ । कृष्—करिसइ । मृष्—मरिसइ । हृष्—हरिसइ । जिन धातुओं के अरि आदेश दिखाई दें उन्हें इस नियम के अन्तर्गत समझें ।

नियम ६२१ (रुषादीनां दीर्घः ४।२३६) रुस् जैसी धातुओं का स्वर दीर्घ हो जाता है ।

उ 7 ऊ रुस्—रूसइ । तुष्—तूसइ । शुष्—सूसइ । दुष्—दूसइ । पुष्—पूसइ । शिष्—सीसइ ।

नियम ६२२ (युवर्णस्य गुणः ४।२३७) धातु के इवर्ण और उवर्ण को गुण हो जाता है, क्ङित प्रत्यय परे हो तो ।

इवर्ण, उवर्ण 7 गुण जि—जेऊण । णी—नेऊण, नेइ, नेति । डी—उड्डेइ, उड्डेंति । मुच्—मोत्तूण । श्रु—सोऊण ।

नियम ६२३ [स्वराणां स्वराः ४।२३८] धातुओं के स्वरों के स्थान पर स्वर विकल्प से होते हैं ।

स्वर 7 स्वर हवइ—हिवइ । चिणइ, चुणइ । सद्दहणं, सद्दहाणं । धावइ, धुवइ । रुवइ, रोवइ । कहीं-कहीं पर नित्य होता है ।

दा—देइ । ली—लेइ । हा—विहेइ । नस्—नासइ ।

नियम ६२४ (चि-जि-श्रु-हु-स्तु-लू-पू-धूगां-णो ह्रस्वश्च ४।२४१) चि, जि, श्रु, हु, स्तु, लू, और पू धातु के अंत में णकार का आगम होता है और इनका स्वर ह्रस्व हो जाता है । चिणइ, जिणइ, सुणइ, हुणइ, थुणइ, लुणइ, पुणइ । बहुलाधिकार से कहीं ण विकल्प से होता है । उच्चिणइ, उच्चेइ । जेऊण, जिणिऊण । जयइ, जिणइ । सोऊण, सुणिऊण ।

नियम ६२५ (धातवोर्थान्तरेपि ४।२५९) धातुओं के अर्थ बताए गए हैं उनसे भिन्न अर्थ में भी धातुएं प्रयुक्त होती हैं । जैसे—बलिः प्राणने खादने पि । वलइ खादति, प्राणनं करोति वा । कलिः संख्याने संज्ञानेपि । कलइ जानाति, संख्यानं करोति वा । रिगिर्गतौ प्रवेशेपि । रिगइ गच्छति, प्रविशति वा । कांक्षते र्वम्फ आदेशः प्राकृते । वम्फइ इच्छति, खादति वा । फक्कतेस्थक्क आदेशः । थक्कइ नीचांगतिकरोति, विलम्बयति वा । विलुप्युपालम्भ्योर्झङ्ख आदेशः । झङ्खइ, विलपति, उपालभते, भाषते वा । पडिवालेइ प्रतीक्षते, रक्षति वा ।

हिन्दी में अनुवाद करो

उज्जेणी णयरी । तत्थ धणमित्तो नाम वाणियओ । तस्सपुत्तो धणसम्मो नाम । सो धणमित्तो पुत्तेण सह पव्वइओ । अन्नया य ते साहू विहरंता मज्झण्ह-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समए एलगच्छपुरपहे पट्ठिया । सो वि खुड्डओ तिसाए अभिभूओ सणियं सणियमेइ । सो वि से खंतओ सिणेहाणुरागेण पच्छओ एइ । साहुणो वि पुरओ वच्चंति । अंतरा य नई समावडिया । खंतएण भणियं—एहि पुत्त ! पियसु पाणियं । नित्थरेसु आवइं, पच्छा आलोएज्जासि । सो न इच्छइ । खंतो नई उत्तिन्नो, चिंतइ य ओसरामि मणागं जावेस खुड्डओ पाणियं पियइ । मा मम आसंकाए न पाहित्ति एगंते पडिच्छइ जाव खुड्डो पत्तो नइं । दढव्वयाए सत्तसारयाए ण पीयं । अन्ने भण्णंति—अईववाहिओ हं तं पिबामि पाणियं । पच्छा गुरुमूले पायच्छित्तं पडिवज्जिस्सामि त्ति उक्खित्तो जलंजली । अह से चिंता जाया । कहमेए हलाहलए जीवे पिबामि । जओ एगम्मि उदगबिंदुम्मि, जे जीवा जिणवरेहिं पन्नत्ता ।

ते पारेवयमेत्ता, जंबूद्दीवे ण माएज्जा ॥१॥

सो अइसंविग्गेण न पीयं, उत्तिन्नो नइं । आसाए छिन्नाए नमोक्कारं झायंतो सुहपरिणामो कालगओ देवेसु उववन्नो ।

प्राकृत में अनुवाद करो

एक समय एक बहुत बडा विद्वान् जो गरीब था, राजा के घर खाना खाने के लिए गया । फटे वस्त्रों से सज्जित होने के कारण राजा ने एक भी शब्द स्वागत में नहीं कहा । पंडित ने शीघ्र ही इसे समझ लिया । इस प्रकार के व्यवहार का कारण मेरे ये वस्त्र हैं । दूसरे दिन वह अच्छे वस्त्रों से भूषित होकर उसी सज्जन के घर गया । राजा ने उसका स्वागत किया और आदर दिया । वह उन्हें भोजनगृह में ले गया । भोजन करने के पहले ही अतिथि ने अपने ऊपर के वस्त्रों को पृथ्वी पर फैला दिया और तीन मुट्ठी भात उन पर फेंक दिया । जब ब्राह्मण से पूछा गया कि आपने ऐसा क्यों किया ? तब उसने उत्तर दिया—कल मैं आपके पास गंदे वस्त्रों में आया था । आपने मुझे कुछ शब्दों के योग्य भी न समझा । लेकिन आज इन वस्त्रों के कारण ही आपने मुझे आदर दिया है ।

प्रश्न

१. सृज्, शक्, स्फुट्, चल्, पमील्—इन धातुओं के अन्त्य वर्ण को क्या आदेश होता है ? उदाहरण सहित बताओ ।

२. धातु के अन्त्य उवर्ण और ऋवर्ण को क्या आदेश होता है ।

३. रुस् आदि और वृष् आदि धातुओं को क्या आदेश होता है ? सोदाहरण बताओ ।

४. किन धातुओं के अंत में णकार का आगम होता है और दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है ?

५. नीचे लिखी धातुएं किन-किन अर्थों में प्रयुक्त होती हैं ? बलि, कलि, रिग्, कांक्षति, फक्क, पडिवाल ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

- शौरसेनी में जो नियम बताए गए हैं उनके अतिरिक्त सारे नियम प्राकृत के ही लगते हैं।
- शौरसेनी में उपसर्ग प्राकृत के ही समान हैं। उनमें अक्षर-परिवर्तन आगे के नियमानुसार कर लेना चाहिए। अति—अदि (नियम ९२६ त को द)।
- अकारान्त पुंलिंग शब्द के रूप प्राकृत के तरह ही चलते हैं किन्तु पंचमी विभक्ति के एकवचन का रूप आदो और आदु प्रत्यय जोडने से बनता है। जिणादो, जिणादु। वीरादो, वीरादु।
- शब्द परिवर्तन—वात का वाद, अज्ज का अय्य बनता है और शब्दों के परिवर्तन के लिए देखो (नियम ९२९,९३०)।
- आज्ञार्थक प्रत्ययों में तु के स्थान पर दु का प्रयोग होता है। जीवदु (जीवतु, जीवउ) मरदु (मरतु, मरउ)।

वर्तमानकाल देक्ख धातु के एकवचन के रूप—

प्र०पु०—देक्खदि/देक्खेदि/देक्खदे/देक्खेदे
म०पु०—देक्खसि/देक्खेसि/देक्खसे/देक्खेसे
उ०पु०—देक्खमि/देक्खेमि

भविष्यकाल के देक्ख धातु के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	देक्खिस्सिदि, देक्खिस्सिदे	देक्खिस्संति, देक्खिस्सिते, देक्खिस्सिइरे
म०पु०	देक्खिस्सिसि, देक्खिस्सिसे	देक्खिस्सिह, देक्खिस्सिध देक्खिस्सिइत्था
उ०पु०	देक्खिस्सं, देक्खिस्सिमि	देक्खिस्सिमो, देक्खिस्सिमु, देक्खिस्सिम

देक्ख धातु की तरह अन्य धातुओं के रूप चलते हैं।

वर्णादेश

नियम ९२६ (तो दोनादौ शौरसेन्यामसंयुक्तस्य ४।२६०) शौरसेनी में अनादि और असंयुक्त त को द हो जाता है।

त>द—ततः मारुतिना (तदो मारुदिना)। एतस्मात् (एदाहि, एदाहो)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ६२७ (**अधः क्वचित्** ४।२६१) शौरसेनी में वर्णान्तर के पश्चाद् कहीं-कहीं अधःस्थित त को द होता है।

त 7 द—निश्चिन्तः (निच्चिन्दो)। शकुन्तला (सउन्दला)। अन्तःपुरम् (अन्देउरं)।

नियम ६२८ (**वादे स्तावति** ४।२६२) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि त को द विकल्प से होता है।

त 7 द—तावत् (दाव, ताव)।

नियम ६२९ (**थो धः** ४।२६७) शौरसेनी में पद के अनादि में होने वाले थ को ध विकल्प से होता है।

थ 7 ध—नाथः (णाधो, णाहो)। कथम् (कधं, कहं)। राजपथः (राजपधो)।

नियम ६३० (**न वा र्यो य्यः** ४।२६६) शौरसेनी में र्य के स्थान में य्य विकल्प से होता है।

र्य 7 य्य—आर्यपुत्रः (अय्यउत्तो)। पर्याकुलः (पय्याकुलो) पक्षे पज्जाकुलो (**द्य य्य र्यां जः २।२४ नियम ३१७ से ज हुआ है।**)

नियम ६३१ (**पूर्वस्य पुरवः** ४।२७०) शौरसेनी में पूर्व शब्द को पुरव आदेश विकल्प से होता है। अपूर्वं (अपुरवं) पक्षे अपुव्वं। (सर्वत्र लवरां २।७९ नियम ३९६ से र लोप, अनादौ शेषादेशयोः २।८९ नियम ४२० से द्वित्व)।

नियम ६३२ (**मोन्त्याण्णो वेदेतोः** ४।२७९) शोरसेनी में अन्त्य मकार से परे इकार और एकार को णकार का आगम विकल्प से होता है। युक्तमिदम् (जुत्तंणिमं, जुत्त मिणं), किमेतत् (किं णेदं, किमेदं) एवमेतत् (एवं णेदं, एवमेदं)। सदृशं इदं (सरिसं णिमं, सरिसमिणं)।

शब्दसिद्धि

नियम ६३३ (**अतो ङसेर्डादो-डादू** ४।२७६) शौरसेनी में अकार से परे ङसि को डादो और डादु आदेश विकल्प से होता है।

ङसि 7 डादो, डादु—जिनात् (जिणादो, जिणादु), वीरात् (वीरादो, वीरादु)।

नियम ६३४ (**तस्मात् ताः** ४।२७८) शौरसेनी में तस्माद् को ता आदेश होता है।

तस्माद् 7 ता—तस्माद् (ता)। तस्मात् यावत् प्रविशामि (ता जाव पविसामि) तस्मात् अलं एतेन मानेन (ता अलं एदिणा माणेण)।

नियम ६३५ (**भवद्-भगवतोः** ४।२६५) शौरसेनी में भवत् और भगवत् शब्द से परे सि प्रत्यय हो तो न् को म् हो जाता है।

न् 7 म्—भवान् (भवं) भगवान् (भगवं)। कहीं पर अन्य शब्दों को भी म् हो जाता है। मघवान् (मघवं), संपादितवान् (संपाइअवं) कृतवान्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(कयवं)।

नियम ६३६ (आ आमन्त्र्ये सौ वेनो नः ४।२६३) शौरसेनी में इन् के नकार को आ विकल्प से होता है, आमन्त्रण अर्थ में होने वाला सि प्रत्यय परे हो तो। हे सुखिन् (सुहिआ, सुहि।)

नियम ६३७ (मो वा ४।२६४) शौरसेनी में आमन्त्रण सि परे हो तो नकार को म विकल्प से होता है।

न् 7 म्—हे भगवन् (भयवं, भयव)।

नियम ६३८ (इह-हचो र्हस्य ४।२६८) शौरसेनी में (मध्यमस्ये त्थाहचौ ३।१४३) से इह शब्द के होने वाले हच् (ह) को ध विकल्प से होता है।

ह 7 ध—इह (इध, इह)। भव (होध, होह)। परित्रायध्वम् (परित्तायध, परित्तायह)।

नियम ६३९ (इदानीमो दाणिं ४।२७७) शौरसेनी में इदानीं के स्थान पर दाणिं आदेश होता है।

इदानीं>दाणिं—इदानीम् (दाणिं)। अन्याम् इदानीं बोधिम् (अण्णं दाणिं बोहिं)।

अव्यय

नियम ६४० (एवार्थे य्येव ४।२८०) शौरसेनी में एव अर्थ में य्येव निपात है। सः एव एषः (सो य्येव एसो)।

नियम ६४१ (हञ्जे चेट्याह्वाने ४।२८१) दासी को बुलाने में हञ्जे निपात है। हे चतुरिके (हञ्जे चदुरिके)।

नियम ६४२ (हीमाणहे विस्मय-निर्वेदे ४।२८२) विस्मय और निर्वेद अर्थ में हीमाणहे निपात है। विस्मये—आश्चर्यं यत् जीवत्वत्सा मे जननी (हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जननी)। निर्वेदे—दुखं, यत् परिश्रान्ता वयं एतेन निजविधेः दुर्व्यसितेन (हीमाणहे पलिस्सन्ता हगे एदेण नियविधिणो दुव्वसिदेण)।

नियम ६४३ (णं नन्वर्थे ४।२८३) ननु अर्थ में णं निपात है। ननु भवान् मम अग्रतः चलति (णं भवं मे अग्गदो चलदि) आर्ष में वाक्यालंकार में भी—नमोत्थु णं, जया णं, तया णं।

नियम ६४४ (अम्महे हर्षे ४।२८४) हर्ष अर्थ में अम्महे निपात है। हर्षः, यत् एतस्यां सूर्मिलया सुपरिगृद्धः भवान् (अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपलिगढिदो भवं)।

नियम ६४५ (हीहीविदूषकस्य ४।२८५) शौरसेनी में विदूषकों के हर्ष में हीही निपात है। हर्षः यत् संपन्नाः मनोरथाः प्रियवयस्यस्य (हीही

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भो संपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स) ।

धातु रूप

नियम ६४६ (भुवो भः ४।२६९) शौरसेनी में भुव (भू) के ह् को भ विकल्प से होता है ।

ह्>भ—भवति (भोदि, होदि)।

नियम ६४७ (दिरिचेचोः ४।२७३) इच् (इ) एच्(ए) के स्थान पर दि होता है । भवति (भोदि, होदि)।

नियम ६४८ (अतो देश्च ४।२७४) अकार से परे इ और ए के स्थान पर दे और दि होता है । भवति (भुवदे, भुवदि, हुवदे, हुवदि) । गच्छति (गच्छदे, गच्छदि) । रमते (रमदे, रमदि)।

नियम ६४९ (भविष्यति स्सिः ४।२७५) शौरसेनी में भविष्य अर्थ में विहित प्रत्यय (हि, हा, स्सा) को स्सि होता है । भविष्यति (भविहिदि, भविस्सिदि)। गमिष्यति (गमिहिदि, गमिस्सिदि)।

कृदन्त

नियम ६५० (क्त्व इय-दूणौ ४।२७१) शौरसेनी में क्त्वा प्रत्यय को इय, दूण आदेश विकल्प से होते हैं । भूत्वा (भविय, भोदूण)। रन्त्वा (रमिय, रन्दूण) पक्ष में भोत्ता, रन्ता ।

नियम ६५१ (कृ-गमो डडुअः ४।२७२) कृ और गम् से परे क्त्वा प्रत्यय को डडुअ आदेश विकल्प से होता है । कृत्वा (कडुअ, करिय, करिदूण) । गत्वा (गडुअ, गच्छिय, गच्छिदूण) ।

नियम ६५२ शेषं प्राकृतवत् ४।२८६) शौरसेनी में बताए गए नियमों के अतिरिक्त शेष नियम प्राकृत के ही लगते हैं ।

प्रयोग वाक्य

(१) भयवं मज्झ भावं जाणदि (भगवान् मेरे भाव को जानते हैं) । (२) पादेसु पणामिअ णिव्वत्तेहि णं (चरणों में प्रणाम कर लौट आओ) । (३) इध राअउले तं दे भोदु (इस राजकुल में वह तुम्हारे लिए हो) । (४) भवं कधं गच्छदि तस्स पासे (आप उसके पास कैसे जाते हैं) ? (५) णाधस्स का परिभाषा भोदि (नाथ की क्या परिभाषा होती है) ? (६) दाणि अय्याए कय्य को करिस्सदि (इस समय आर्या का कार्य कौन करेगा) ? (७) अम्हाणं पुरदो को गच्छदि (हमारे आगे कौन जाता है) ? (८) ईदिसं भयवं दूरे वन्दीअदि (ऐसे भगवान को दूर से नमस्कार किया जाता है) । (९) सो कय्यं करिदूण निश्चिन्दो रादीए सुवइ (वह कार्य करके रात में निश्चिन्त हो सोता है) । (१०) अण्णं अण्णं णिमन्तेदु दाव भवं (तब तक आप दूसरे-दूसरे को निर्मंत्रित करें) । (११) एसो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वाआए पच्चाचक्खिदो (वह वाणी से प्रत्याख्यात (अस्वीकृत) करें। (१२) हिअएण अणुबन्धीअमाणो गच्छीअदि (हृदय से अनुसरण किया जा रहा है)। (१३) दक्खिणाए रूवगा भविस्संदि (दक्षिणा में रुपए होंगे)। (१३) सो एव्व दाणिं गच्छदि (वही इस समय जाता है)। (१४) भवं अप्पेणावि तुस्सदि (आप थोडे से ही संतुष्ट हो जाते हैं)। (१६) ता अहं इदो य्येव आअच्छदि (मैं यहां ही आ रहा हूं)। (१५) कव्वं जेव दे कइत्तणं पिसुणेदि (काव्य ही तुम्हारे कवित्व को बता रहा है)। (१६) आवेअक्खलिदाए गईए पब्भट्ठं मे हत्थादो पुप्फभायणं (आवेग से स्खलित गति के कारण मेरे हाथ से पुष्पों का वर्तन गिर गया)।

शौरसेनी में अनुवाद करो

इस घर में मेरा कौन है ? इस समय आर्य पुत्र कहां मिलेंगे ? भगवान के पास क्या मांगते हो ? भगवान सबको देखते हैं। आप क्या करेंगे, मेरे भगवान आप ही हैं। मेतार्य क्या कहेगा ? आप यहां कैसे आएंगे ? आपने मेरा कार्य किया (कयवं)। राजपथ पर सब चलते हैं। वह रात्रि में निश्चित हो सुख की नींद सोता है। वह गुरु के आगे क्यों चलता है ? क्या आप संतुष्ट हैं ? अनाथ कौन नहीं है ? शकुन्तला ब्रह्मचर्य का सेवन करती है। लता विकथा नहीं करती है। प्रभा प्रभात में प्रभु के प्रवचन को पढती है। तुम्हें सत्य कथा कहनी चाहिए (भणिदव्वं)। अच्छा (होदु) इन (एदाणं) लोगों का कार्य कौन करेगा ? वहां जाकर मैं बात पूछूंगा। पुस्तक पढकर मैं उत्तर दूंगा। वीर से कौन नहीं डरता है ?

प्रश्न

१. शौरसेनी में त और थ को किस नियम से क्या आदेश कहां होता है ?
२. र्य को ज्ज होता है या और कुछ आदेश होता है, किस नियम से ?
३. शौरसेनी में मकार को णकार कहां होता है ?
४. अकारान्त शब्द से ङसि प्रत्यय परे होने पर क्या रूप बनता है ?
५. शौरसेनी में इदानीं, एव, विस्मय और ननु अर्थ में क्या अव्यय हैं ?
६. हीही, अम्महे अव्यय किस अर्थ में प्रयोग में आते हैं ? एक-एक वाक्य बनाओ।
७. क्त्वा प्रत्यय को क्या-क्या आदेश होता है ?
८. भविष्य अर्थ में क्या प्रत्यय होता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

- प्राकृत में जो उपसर्ग हैं वे ही मागधी में हैं। मागधी के नियमों के अनुसार अक्षर परिवर्तन कर लेना चाहिए। नियम ९५४ के अनुसार र को ल और स को श होता है। परि=पलि, परा=पला, सं=शं आदि।
- नियम ९५३ से ज को य और नियम ९५५ से छ को श्च होता है। इन नियमों के अनुसार शब्द परिवर्तन इस प्रकार होता है—अरिहंत=अलिहंत। जिण=यिण। पुच्छ=पुश्च। पिच्छ=पिश्च। सर्व=शव्व। वीर=वील। महावीर=महावील आदि।
- मागधी में अकारान्त पुंलिग शब्द के रूप प्राकृत की तरह चलते हैं किन्तु मागधी में कुछ विशेष परिवर्तन होता है। प्रथमा के एकवचन में वीरो का वीले बनता है, वीलो नहीं। पंचमी के एकवचन का वीर शब्द का वीलादो और वीलादु बनता है।
- षष्ठी के एक वचन का वीलाह, वीलश्श (वीरस्य) बनता है।
- षष्ठी के बहुवचन का वीलाहं, वीलाणं (वीराणाम्) बनता है।
- मागधी में क्त्वा प्रत्यय को दाणि होता है। कृत्वा=करिदाणि, सोढ्वा—शहिदाणि।
- मागधी में क्त प्रत्ययान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन (सि) प्रत्यय को उ होता है। हसिदु, हसिदे (हसितः) पढिदु (पठितः)
- मागधी में धातु रूप में भी शाब्दिक परिवर्तन होता है। क्रियातिपत्ति में हो धातु के रूप—होन्दो (पुं) होन्दी (स्त्री) होन्दं (नपुं) इसी प्रकार अन्य धातुओं के बनते हैं।

भण् धातु के भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	भणिश्शदि, भणिश्शदे	भणिश्शिंति, भणिश्शिंते, भणिश्शिइरे
म० पु०	भणिश्शिशि, भणिश्शिशे	भणिश्शिह, भणिश्शिध, भणिस्सिइत्था
उ० पु०	भणिश्शं, भणिश्शिमि	भणिश्शिमो, भणिश्शिमु, भणिश्शिम

सरल (असंयुक्त) व्यंजन

नियम ९५३ (ज-द्य-यां यः ४।२९२) मागधी में ज, द्य और य को य आदेश होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज>य—जानति (याणदि)। जन: (यणे)। जनपद: (यणवदे)। अर्जुन: (अय्युणे)। दुर्जन: (दुय्यणे)। गर्जति (गय्यदि)। गुणवर्जित: (गुणवय्यिदे)।

य7य—यदा (यधा)। याति (यादि)। यदि (यदि)। यानपात्रम् (याणवत्तं)। यस्य यत्वविधानं (आदे र्योज: १।२४५) बाधनार्थम्।

नियम ९५४ (रसोर्ल-शौ ४।२८८) मागधी में र को ल और स को श होता है।

र>ल—नर: (नले)। धीवर: (धीवले)। कर: (कले)। पुरुष: (पुलिशे)।

स7श—हंस: (हंशे)। स: (शे)। सारस: (शालशे)। नासा (नाशा)। माशे (माष:)।

श7श—शलणे (शरण:) शत्तू (शत्रु:) पिशल पारा २२१ के अनुसार श को श।

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन

द्य7य—मय्यं (मद्यम्)। अय्य (अद्य)। विय्याहले (विद्याधर:)। नियम ९५३ से।

नियम ९५५ (छस्यश्चोनादौ ४।२९५) मागधी में अनादि छ को श्च होता है।

छ7श्च—गश्च (गच्छ)। पृच्छति (पुश्चदि)। उच्छलति (उश्चलदि)। पिच्छिल: (पिश्चिले)।

नियम ९५६ (ट्ट-ष्ठयोस्ट: ४।२९०) मागधी में ट्ट और ष्ठ को स्ट होता है।

ट्ट7स्ट—पट्ट: (पस्टे)। भट्टारिका (भस्टालिका)। भट्टिनी (भस्टिणी)।

ष्ठ>स्ट—कोष्ठ: (कोस्टे)। सुष्ठु: (शुस्टु)। कोष्ठागारं (कोस्टागालं)।

नियम ९५७ (न्य-ण्य-ज्ञ-ञ्जां ञ्ञ: ४।२९३) मागधी में न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज को ञ्ञ होता है।

न्य>ञ्ञ—मन्यु: (मञ्ञू)। अभिमन्यु: (अहिमञ्ञू)। अन्य: (अञ्ञे)। सामान्य: (शामञ्ञे)। कन्यका (कञ्ञका)।

ण्य>ञ्ञ—पुण्यवान् (पुञ्ञवन्ते)। अब्रह्मण्यम् (अबम्हञ्ञं)। पुण्याहं (पुञ्ञाहं)। पुण्यम् (पुञ्ञं)।

ज्ञ7ञ्ञ—प्रज्ञा (पञ्ञा)। अवज्ञा (अवञ्ञा)। सर्वज्ञ: (शव्वञ्ञे)।

ञ्ज7ञ्ञ—अञ्जली (अञ्ञली)। धनञ्जय: (धणञ्ञए)। प्राञ्जल: (पञ्ञले)।

नियम ९५८ (स-षो: संयोगे सोग्रीष्मे ४।२८९) मागधी में संयोग में सकार और षकार हो तो उसे स हो जाता है ग्रीष्म शब्द को छोडकर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह नियम ऊर्ध्वलोपादि का अपवाद है। प्रस्खलति (प्रस्खलदि)। हस्तिन् (हस्ती)। वृहस्पतिः (बुहस्पदी)। मस्करी (मस्कली)। विस्मयः (विस्मये)। शुष्क (शुस्क)। कष्टम् (कस्टं)। विष्णुम् (विस्नुं)। निष्फलं (निस्फलं)।

नियम ६५६ (स्थ-र्थयोः स्तः ४।२६१) मागधी में स्थ और र्थ को स्त होता है।

स्थ > स्त—उपस्थितः (उवस्तिदे)। सुस्थितः (शुस्तिदे)।

र्थ > स्त—अर्थः (अस्ते)। सार्थवाहः (शस्तवाहे)।

नियम ६६० (क्षस्य ≍कः ४।२९६) मागधी में अनादि में होने वाले क्ष को ≍क होता है।

क्ष > ≍क—यक्षः (य≍के)। राक्षसः (ल≍कशे)।

शब्द रूप

नियम ६६१ (अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् ४।२८७) मागधी में अकार को एकार होता है पुंलिंग की सि परे हो तो।

अ > ए—नरः (नले)। कतरः (कयरे)। एषः (एशे)। मेषः (मेशे)। पुरुषः (पुलिशे)।

नियम ६६२ (अवर्णाद् वा ङसो डाहः ४।२९९) मागधी में अवर्ण से परे ङस् को डाह आदेश विकल्प से होता है।

ङस् > डाह—जिनस्य (यिणाह)। पक्षे यिणस्स। कर्मणः (कम्माह)। इदृशस्य (एलिशाह)। शोणितस्य (शोणिदाह)।

नियम ६६३ (आमो डाहं वा ४।३००) मागधी में अवर्ण से परे आम् को डाह आदेश विकल्प से होता है। जिनानाम् (यिणाहं, यिणाणं)।

व्यत्ययात् प्राकृतेपि—कर्मणाम् (कम्माहँ) तेषां (ताहँ) युष्माकम् (तुम्हाहँ) सरिताम् (सरिआहँ) अस्माकम् (अम्हाहँ)

आदेश

नियम ६६४ (अहं-वयमोर्हगे ४।३०१) अहं और वयं को हगे आदेश होता है। अहं (हगे)। वयं (हगे)

[अस्मदः सौ हके हगे अहके ११।९] वररुचि के अनुसार मागधी में अहं को हके, हगे और अहके—ये तीन आदेश होते हैं। अहं भणामि (हके, हगे अहके भणामि)

[शृगालशब्दस्य शिआला शिआलका ११।७ वररुचि] शृगाल को शिआल और शिआलक आदेश होते हैं। शृगालः आगच्छति (शिआले, शिआलके आगच्छदि)

[हृदयस्य हडक्कः ११।६ वररुचि] हृदय शब्द को हडक्क आदेश होता हैं। हृदये आदरो मम (हडक्के आदले मम)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धातु रूप

नियम ९९५ (व्रजो जः ४।२९४) मागधी में व्रज् के ज् को ञ्ज होता है। व्रजति (वञ्जदि)।

नियम ९९६ (तिष्ठ श्चिष्ठः ४।२९८) मागधी में स्था धातु के तिष्ठ को चिष्ठ आदेश होता है। तिष्ठति (चिष्ठदि)।

नियम ९९७ (स्कः प्रेक्षाचक्षोः ४।२९७) मागधी में प्रेक्षा और आचक्ष के क्ष को स्क होता है। प्रेक्षते (पेस्कदि)। आचक्षते (आचस्कदि)।

कृदन्त प्रत्यय

[क्त्वोदाणिः ११।१६ वररुचि] क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर दाणि आदेश होता है। सोढ्वा गतः (शहिदाणि गडे)। कृत्वा आगतः (करिदाणि आअडे)।

[क्तान्तादुश्च ११।११ वररुचि] क्त प्रत्ययान्त शब्द से परे सि को उ होता है। हसितः (हशिदु, हशिदे)।

[कृञ् मृङ् गमां क्तस्य डः ११।१५ वररुचि] डुकृञ् करणे, मृ और गम् धातु से परे क्त को ड होता है। कृतः (कडे)। मृतः (मडे)। गतः (गडे)।

नियम ९९८ (शेषं शौरसेनी वत् ४।३०२) शेष नियम प्राकृत शौरसेनी के समान हैं।

प्रयोग वाक्य

(१) अअं कहिं गश्चदि (यह कहां जाता है) ? (२) हगे कुटुम्ब-भलणं कलेमि (मैं कुटुम्ब का भरण करता हूं)। (३) यणे सव्वं न याणदि (मनुष्य सब नहीं जानता है)। (४) शे भोयणं करिदाणि गश्चदि (वह भोजन करके जाता है)। (५) अज्जा धम्मशञ्चअं कलेध (अज्ञो! धर्म का संचय करो)। (६) शञ्जम्मध णिअपोटं (अपने पेट को नियंत्रण में रखो)। (७) इंदियचोला हलन्ति चिलशञ्चिदं धम्मं (इंद्रिय रूपी चोर चिरसंचित धर्म को हरण करते हैं)। (८) णिच्चं जग्गेध झाणपडहेण (ध्यान रूपी नगारे से हमेशा जागृत रहो)। (९) एकशिशं दिअशे शे गुणवय्यिदे कहं गय्यिदे (एक दिन वह गुण वर्जित होने पर भी कैसे गरजा) ? (१०) पुलिशे! अस्तश्श पभावं पेक्खिश्शं (पुरुष! अर्थ का प्रभाव देखूंगा)। (११) अणिच्चदाए पेक्खिअ णवल दाव धम्माण शलणं म्हि (अनित्यता से (संसार) को देखकर मैं अब केवल धर्म की शरण में आ गया हूं)। (१२) हडक्के आदले मम (मेरे हृदय में आदर है)। (१३) हगे केलिशे अस्तशञ्चअं कलेमि, मए सह न गमिश्शं (मैं कैसा अर्थ संचय करता हूं, मेरे साथ नहीं जाएगा)। (१४) तश्श दालिद्दं पणट्ठं (उसका दारिद्र्य नष्ट हो गया)। (१५) हगे पुञ्ञवन्ते, गुलुशलणे आअडे (मैं पुण्यवान हूं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरु की शरण में आ गया हूं)। (१६) अय्य तुए सुस्टु कडे (आज तुमने अच्छा किया)। (१७) कस्टे आअडे वि शे शत्तुशलणं न गश्चदि (कष्ट आने पर भी वह शत्रु की शरण में नहीं जाता है)। (१८) शे कोस्टागालं पेस्कदि (वह कोष्ठागार को देखता है)। (१६) यधा शे तत्थ गमिश्शं तधा हगे आगमिश्शं (जब वह वहां जाएगा तब मैं आऊंगा)। (२०) तुए कधं हसिदु (तुम कैसे हंसे)? (२१) शे णलं शग्गं गाहदि (वह मनुष्य स्वर्ग जाता है)। (२२) हगे गामान्तलवाशी म्हि (मैं गाम में रहने वाला हूं)।

मागधी में अनुवाद करो

यह नर क्या पूछता है? पुरुष क्या चाहता है? कष्ट सहन कर वह स्वर्ग में जाएगा। आज वह उसके घर आएगा। तुम क्या जानते हो? वह मनुष्य कहां जाएगा? (वञ्जिश्शं)? दुर्जनों का कार्य मैं नहीं करूंगा (करिश्शं)। वह अभी (शम्पदं) मद्य नहीं पीएगा। वह केवल (णवल) घर-वासी है। मैं धर्म की शरण में जाता हूं। उसकी अवज्ञा कौन करेगा? धनंजय पुण्यवान् है। हंस पूर्व कर्मों का फल पूछता है। कौन उछलता है? तुमने अच्छा किया। क्या अन्य मनुष्य भी ऐसा करेंगे? सामान्य मनुष्य भी आचार्य को जानता है? क्या उसका पुण्य निष्फल होगा? जब जब वह हंसता है तब तब मैं उसकी अवज्ञा करता हूं। मैं उसकी जाति (यादि) नहीं पूछूंगा। तुम्हारे कर्मों का फल किसके पास जाएगा?

प्रश्न

१. मागधी में द्य, ज और य को क्या आदेश होता है?
२. र, स और श को मागधी में होने वाले आदेशों के एक-एक उदाहरण दो।
३. मागधी में क्त्वा प्रत्यय को कौन सा प्रत्यय आदेश होता है? दो उदाहरण दो।
४. क्त प्रत्ययान्त शब्दों को सि प्रत्यय परे होने पर क्या आदेश बनता है?
५. आम् प्रत्यय को क्या आदेश होता है?
६. मागधी में हृदय के लिए क्या शब्द प्रयोग में आता है?
७. व्रज्, तिष्ठ, प्रेक्षा और चक्ष् धातुओं को मागधी में क्या आदेश होता है?
८. ट्ट, ष्ठ, न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज शब्दों को किस नियम से क्या आदेश होता है? एक-एक उदाहरण दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरल व्यंजन परिवर्तन

नियम ६६६ (टोस्तुर्वा ४।३११) पैशाची में टु को तु विकल्प से होता है।

टु > तु—कटुकम् (कतुकं, कटुकं)। कुटुम्बकम् (कुतुम्बुकं, कुटुम्बकम्)।

नियम ६७० (णो नः ४।३०६) पैशाची में ण को न होता है।

ण > न—गुणः (गुनो)।

नियम ६७१ (लो ळः ४।३०८) पैशाची में ल को ळ होता है।

ल > ळ—जलम् (जळं)। सलिलम् (सळिळं)। कमलम् (कमळं)। शीलं (सीळं)।

नियम ६७२ (श-षोः सः ४।३०९) पैशाची में श और ष को स होता है।

श > स—शक्रः (सक्को)। शशी (ससी)। शोभते (सोभति)। शोभनं (सोभनं)।

ष > स—विषमः (विसमो)।

नियम ६७३ (हृदये यस्य पः ४।३१०) पैशाची में हृदय शब्द के य को प होता है।

य > प—हृदयकम् (हितपकं)।

नियम ६७४ (तदोस्तः ४।३१०) पैशाची में त और द को त होता है। भगवती (भगवती)। सदनं (सतनं)।

संयुक्त व्यंजन परिवर्तन

नियम ६७५ (ज्ञोञ्ञः पैशाच्याम् ४।३०३) पैशाची में ज्ञ को ञ्ञ होता है।

ज्ञ > ञ्ञ—सर्वज्ञः (सव्वञ्ञो)। संज्ञा (सञ्ञा)। प्रज्ञा (पञ्ञा)। विज्ञानम् (विञ्ञानं)।

नियम ६७६ (राज्ञो वा चिञ् ४।३०४) पैशाची में राजन् शब्द के ज्ञ को चिञ् आदेश विकल्प से होता है।

ज्ञ > चिञ्—राज्ञा (राचिञा, रञ्ञा)।

नियम ६७७ (न्य-ण्योर्ञ्ञः ४।३०५) पैशाची में न्य और ण्य को ञ्ञ होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्य > ञ्ञ—कन्यका (कञ्ञका)। अभिमन्युः (अभिमञ्ञू)।
ण्य 7 ञ्ञ—पुण्याहं (पुञ्ञाहं)।

नियम ९७८ (र्य-स्न-ष्टां रिय-सिन-सटाः क्वचित् ४।३१४) पैशाची में र्य, स्न और ष्ट के स्थान पर क्रमशः रिय, सिन और सट आदेश कहीं-कहीं होते है।

र्य 7 रिय—भार्या (भारिया)।
स्न > सिन—स्नातं (सिनातं)।
ष्ट 7 स—कष्टं (कसटं)।

शब्दरूप

नियम ९७९ (अतो ङसेर्डातो डातू ४।३२१) पैशाची में अकार से परे ङसि को डातो (आतो) और डातु (आतु) आदेश होते हैं। त्वद् (तुमातो, तुमातु)। मद् (ममातो, ममातु)।

नियम ९८० (तदिदमोष्टा नेन स्त्रियां तु नाए ४।३२२) पैशाची में तद् और इदं को टा प्रत्यय सहित नेन आदेश होता है। स्त्रीलिंग में नाए आदेश होता है। तेन, अनेन, एनेन (नेन)। तया, अनया (नाए)।

नियम ९८१ (यादृशादेर्दुस्तिः ४।३१७) पैशाची में यादृश जैसे शब्दों के दृ को ति आदेश होता है। यादृशः (यातिसो)। तादृशः (तातिसो)। अन्यादृशः (अञ्ञातिसो)।

धातु रूप

नियम ९८२ (इचेचः ४।३१८) पैशाची में इच् (इ) एच् (ए) को ति आदेश होता है। भवति (भोति)। नयति (नेति)।

नियम ९८३ (आत्तेश्च ४।३१९) पैशाची में अकार से परे इ और ए को ते तथा चकार से ति आदेश होता है। रमति (रमति, रमते)। लपति (लपति, लपते)। आस्ते (अच्छति, अच्छते)। गच्छति (गच्छति, गच्छते)।

नियम ९८४ (भविष्यत्येय्य एव ४।३२०) पैशाची में भविष्यकाल की इ और ए परे हो तो उनको एय्य ही होता है। स्सि नहीं। भविष्यति (हुवेय्य)।

कृदन्त प्रत्यय

नियम ९८५ (क्त्वस्तूनः ४।३१२) पैशाची में क्त्वा प्रत्यय को तून आदेश होता है।

क्त्वा 7 तून—गत्वा (गन्तून)। हसित्वा (हसितून)। पठित्वा (पठितून)। कथित्वा (कधितून)।

नियम ९८६ (द्धून-त्थूनौ ष्ट्वः ४।३१३) पैशाची में ष्ट्वा रूप को द्धून और त्थून होते हैं। दृष्ट्वा (तद्धून, तत्थून)। नष्ट्वा (नद्धून, तत्थून)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम ९८७ (क्यस्येय्यः ४।३१५) पैशाची में क्य प्रत्यय को इय्य आदेश होता है। दीयते (दिय्यते)। रम्यते (रमिय्यते)। पठ्यते (पठिय्यते)।

नियम ९८८ (कृगो डीरः ४।३१६) पैशाची में कृ धातु से परे क्य को डीर आदेश होता है। क्रियते (कीरते)।

नियम ९८९ (न क-ग-च-जादि षट्-शम्यन्त-सूत्रोक्तम् ४।३२४) पैशाची में (कगचजतद पयवां प्रायो लुक् १।१७७) से लेकर (**षट् शमी साव सुधा सप्तपर्णे ष्वादे श्छः १।२६५**) तक के सूत्र जो कार्य करते हैं वह पैशाची में नहीं होता है।

नियम ९९० (शेषं शौरसेनीवत् ४।३२३) पैशाची में शेष नियमों का कार्य शौरसेनी के समान है।

चूलिका पैशाची

नियम ९९१ (चूलिका-पैशाचिके तृतीय-तुर्ययो राद्य-द्वितीयौ ४।३२५) चूलिकापैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण को क्रमशः पहला और दूसरा वर्ण हो जाता है। नगरं (नकरं)। मेघः (मेखो)। राजा (राचा)। निर्झरः (निच्छरो)। डमरुकः (टमरुको)। गाढम् (काठं)। मदनः (मतनो)। मधुरम् (मथुरं)। बालकः (पालको)। रभसः (रफसो)।

नियम ९९२ (नादि-युज्योरन्येषाम् ४।३२७) चूलिकापैशाची में अन्य आचार्यों के मत से वर्ण का तीसरा और चतुर्थवर्ण आदि में हो तो उसे प्रथम और द्वितीय वर्ण नहीं होते हैं। तथा युज् धातु को आदेश नहीं होता है। गतिः (गती)। धर्मः (धम्मो)। जीमूतः (जीमूतो)। झर्झरः (झच्छरो)। डमरुकः (डमरुको)। ढक्का (ढक्का)। दामोदरः (दामोतरो)। बालकः (बालको)। भगवती (भकवती)। नियोजितम् (नियोजितं)।

नियम ९९३ (रस्य लो वा ४।३२६) चूलिका पैशाची में र को ल विकल्प से होता है। हरम् (हलं, हरं)।

नियम ९९४ (शेषं प्राग्वत् ४।३२८) चूलिका पैशाची में शेष नियम पैशाची के समान चलते हैं। नकरं, मक्कनो—इनके न को ण नहीं होता। ण का न तो हो जाता है।

प्रयोग वाक्य

तत्तो तुमं सयगुनो बुद्धिमंतो सि। तुज्झ हितपके केत्तिलो णेहो अत्थि? मतनं मारिउं को समत्थो अत्थि? किं तस्स पुञ्ञं पबलं विज्जति? यातिसो अहं मि तातिसो तुम्हाणं समक्खं मि। पञ्ञं अंतरेण तस्स को मुल्लो अत्थि? तुम्ह कुतुम्बकस्स पालणं को करेय्य? सो सव्वञ्ञं महावीरं किं पुच्छइ? कञ्ञाए पण्हो को अत्थि? घरं गन्तून सा किं पढेय्य? सो पोत्थयं तद्धून उत्तरं लिहति। सो केणावि सह न गच्छेय्य। किं सा तुज्झ साउज्जं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करेय्य ? नरो यातिसं करेति तातिसं फलं लभति । सा पठितून किं करेय्य । रायपहे को याचति ? अय्यस्स किं अभिहार्ण अत्थि ? सो घरे गन्तून रमेय्य । नाए किं कीरते । ससी निसाए गगने सोभति । तुज्झ सतने (सदने) सता (सदा) सुद्धी कधं न भवति ? तुं पासिउं अहं सता जागरूओ मि । तुज्झ मुह-मंडलं तत्थून, नाममंतं जवितून य अहं आनंदं अनुभवामि । नेन किं दिय्यते ? सिसुना घरांगने रमिय्यते अज्जत्ता तुज्झदंसणं देवयाए अहियं दुल्लहं अत्थि । तुज्झ भग्गस्स णिम्माणं तुज्झ हत्थेसुं विज्जति । तुमं ममातो किं इच्छसि ? हितपके सता गुणाणं पइट्ठं करेहि सो पढितून विएसं गच्छेय्य । कल्लं सो किं जपेय्य । समयं नट्ठून सो किं पाएय्य ?

चूलिका पैशाची

संपइ नकरस्स पिआ को अत्थि? मेखो आकाशे सोभइ । निच्छरो सयं वहइ । कूरकम्मेहिं काठं बंधणं बंधइ । अहं मथुरं फळं भुंजिउं अभिलसामि । पालको विज्जालये पढइ । हळस्स देवालये संखं को वायइ ? नती (नदी) रफसेण वहइ । भकवतीए सरस्वईए देवीए आराहणं पालको करेइ । अस्स पएसस्स को राचा अत्थि ?

पैशाची में अनुवाद करो

(पैशाची के नियमों में आए हुए शब्दों का प्रयोग करो । जो शब्द उसमें न मिले उन्हें शौरसेनी में खोजो । वहां भी न मिले तो प्राकृत के शब्दों का प्रयोग करो ।)

तुम्हारे कुटुम्ब में कितने आदमी हैं ? दूध में क्या गुण है ? क्या तुम जानते हो ? शक्र ने कब दर्शन दिए थे ? शशी तारों के साथ आकाश में अच्छा लगता है । मेरे हृदय की बात क्या तुम जान सकते हो ? आज हमारे सदन में कौन आएगा ? मदन (कामदेव) बहुत बलवान् होता है । सदा सत्य बोलना चाहिए । सर्वज्ञ को पूर्णरूप से कौन जान सकता है ? प्रज्ञा का महत्त्व तुम नहीं जानते । आहार संज्ञा के कारण मनुष्य क्या करता है ? विज्ञान का कार्य है सत्य को प्राप्त करना । कन्या का अध्ययन लडके से कई गुना अधिक है । अभिमन्यु ने कब क्या सीखा था ? जैसा तुम व्यवहार करोगे वैसा फल पाओगे । उसने कथा कब कही थी ? कथा कहकर वह कब उठेगा ? वह पढेगा या घर जाएगा ? सूर्य को आंखों से कौन देखेगा ? चंद्रमा को देखकर उसने क्या कहा था ? विवाद में समय नष्ट कर वह हानि में रहेगा । क्या वह खेलकर अपनी शक्ति को बढाता है । परीक्षा का परिणाम देखकर वह हंसेगा या रोएगा ? जो परीक्षा में अनुत्तीर्ण होता है, वह अगले वर्ष में दुगुणे परिश्रम से पढता है । तुम्हें देखकर उसकी याद आती है । तुम्हारा हृदय क्या पत्थर से भी अधिक कठोर है । तुम पढते हो तो बिना मन से पढते हो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हारा मन स्थिर नहीं है। मन में संकल्प करो इस वर्ष मैं परीक्षा में प्रथम आऊंगा। मन का संकल्प बलवान् होता है। जब तक तुम्हारा पुण्य बलवान् है, तुम्हारा नुकसान नहीं होगा। हृदय में भगवान का स्मरण करो। कुटुम्ब में कौन ब्रह्मचारी है ? जैसी शक्ति हो वैसी तपस्या करो।

चूलिका पैशाची में अनुवाद करो

नगर के बाहर उद्यान है। इस नगर में तुम कितने वर्षों से रहते हो ? मेघ को देखकर मन प्रसन्न होता है। मेघ का रंग कैसा है ? निर्झर किस गांव के पास है ? निर्झर का पानी मीठा है। किस क्रिया से कर्मों का गाढ बंधन बंधता है। मधुर फल कौन-कौन से हैं ? मधुर व्यवहार से मनुष्य दूसरे के दिल को जीत लेता है। बालक कहां रोता है ? बालक की माता कहां गई है ? महादेव की पूजा मंदिर में होती है। महादेव का मंदिर यहां से कितनी दूर है ? भगवती चण्डी देवी की आराधना कौन करता है ? पानी वेग से बहता है।

प्रश्न

१. पैशाची में टु, ण और ल को क्या आदेश होता है ?
२. य को प कहां होता है ?
३. ज्ञ, न्य और ण्य को किस नियम से क्या आदेश होता है ? उदाहरण देते हुए स्पष्ट करो।
४. भारिया, सिनातं, कसटं में किस शब्द को क्या आदेश हुआ है ?
५. टा प्रत्यय को नेन और नाए आदेश कहां और किन शब्दों को होता है ?
६. भविष्यकाल के इ और ए प्रत्यय को क्या आदेश होता है ? पांच उदाहरण दो।
७. क्त्वा प्रत्यय को क्या आदेश होता है ? द्धून और त्थून रूप किस प्रत्यय को किस धातु के योग से होता है ?
८. चूलिका पैशाची में वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण को क्या-क्या आदेश होता है ? प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह

हउं—मैं	अम्हे, अम्हइं—हम दोनों/हम सब
तुहुं—तू, तुम	तुम्हे, तुम्हइं—तुम दोनों/तुम सब
सो—वह	ते—वे दोनों/वे सब
सा—वह (स्त्री)	ता—वे दोनों/वे सब (स्त्री)
ज—जो (पुं)	क (पुं, नपुं)—कौन
जा—जो (स्त्री)	का (स्त्री)—कौन
कवणा (स्त्री)—कौन	कवण (पुं, नं) कौन

धातु संग्रह

वइट्ठ—बैठना	रूस—रूसना
सय—सोना	णच्च—नाचना
जग्ग—जागना	ण्हा—स्नान करना
लुक्क—छिपना	हरिस—प्रसन्न होना
जीव—जीना	हस—हसना

- **जिण और मुणि शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या १,२** गामणी, साहु और सयंभू शब्द के रूप मुणि शब्द की तरह चलते हैं। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या ३,४,५।
- **हस धातु और हो धातु के वर्तमान काल के रूप याद करो।** देखो—परिशिष्ट ४ संख्या १,२।

अपभ्रंश

१. अपभ्रंश में चार प्रकार के ही शब्द मिलते हैं—(१) अकारान्त (२) आकारान्त (३) इकारान्त (४) उकारान्त।

२. अपभ्रंश में चार प्रकार के कालवर्णित हैं—(१) वर्तमानकाल (२) विधि एवं आज्ञा (३) भूतकाल (४) भविष्यकाल।

सरल व्यंजन परिवर्तन

नियम ६६५ (अनादौ स्वरादसंयुक्तानां क-ख-त-थ-प-फां ग-घ-द-ध-ब-भाः ४।३९६) अपभ्रंश में पद की अनादि में क, ख, त, थ, प, फ हों तो उनको क्रमशः ग, घ, द, ध, ब और भ आदेश होते हैं। **क को ग**—करं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(गरु)। ख को घ—सुखेन (सुघि)। त और थ को द और ध—कथितं (कधिदु)। प को ब—शपथं (सबधु)। फ को भ—सफलं (सभलउं)। ये शब्द श्लोकों के अन्तर्गत हैं, इसलिए आदि में नहीं है।

नियम ९९६ (मोनुनासिको वो वा ४।३९७) अपभ्रंश में अनादि असंयुक्त वर्तमान म को अनुनासिक व (वँ) विकल्प से होता है। कमलं (कँवलु, कमलु)।

संयुक्त वर्णपरिवर्तन

नियम ९९७ (वाधो रो लुक् ४।३९८) अपभ्रंश में संयुक्त वर्ण में र अधः (दूसरा) हो तो उसका लोप विकल्प से होता है। प्रियः (पिउ, प्रिय)।

नियम ९९८ (म्हो म्भो वा ४।४१२) अपभ्रंश में म्ह को म्भ विकल्प से होता है। ग्रीष्मः (गिम्भो)। म्ह शब्द संस्कृत में नहीं है। प्राकृत में (**पक्ष्म-श्म-ष्म-स्म-ह्मां म्हः २।७४**) से म्ह आदेश होता है। उसी का यहां ग्रहण है।

नियम ९९९ (आपद्-विपत्-संपदां द इः ४।४००) अपभ्रंश में आपद्, विपद् और संपद् के द् को इ होता है। आपद् (आवइ)। विपद् (विवइ)। संपद् (संपइ)।

आगम

नियम १००० (अभूतोपि क्वचित् ४।३९९) अपभ्रंश में कहीं पर न होने पर भी र हो जाता है। व्यासो महर्षिः (व्रासु महारिसी)।

नियम १००१ (परस्परस्यादि रः ४।४०९) अपभ्रंश में परस्पर शब्द के आदि में अकार हो जाता है। परस्परम् (अवरोप्परु)।

आदेश

नियम १००२ (स्वाराणां स्वराः प्रायोपभ्रंशे ४।३२९) अपभ्रंश में स्वरों के स्थान पर प्रायः स्वर होते हैं। क्वचित् (कच्चु, काच्च)। वीणा (वेण, वीण)। बाहु (बाह, बाहा, बाहु)। पृष्ठम् (पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि)। तृणः तणु, तिणु, तुणु)। प्रायः शब्द का अर्थ है—अपभ्रंश के नियमों से कहे जाते हैं उनका भी कहीं प्राकृत की तरह और कहीं शौरसेनी की तरह कार्य होता है।

नियम १००३ (अन्यादृशोऽन्नाइसावराइसौ ४।४१३) अपभ्रंश में अन्यादृश शब्द को अन्नाइस और अवराइस दो आदेश होते हैं। अन्यादृशः (अन्नाइसो, अवराइसो)।

नियम १००४ (प्रायसः प्राउ-प्राइव-प्राइम्ब-पग्गिम्वाः ४।४१४) अपभ्रंश में प्रायस् शब्द को प्राउ, प्राइव, प्राइम्व, पग्गिम्व—ये चार आदेश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होते हैं। प्रायस् (प्राउ, प्राइव, पाइम्व, पग्गिम्व)।

नियम १००५ (वान्यथोनु: ४।४१५) अपभ्रंश में अन्यथा शब्द को अनु आदेश विकल्प से होता है। अन्यथा (अनु, अन्नह)।

नियम १००६ (कुतस: कउ-कहन्ति हु ४।४१६) अपभ्रंश में कुतस् शब्द को कउ और कहन्तिहु ये दो आदेश होते हैं। कुत: (कउ, कहन्तिहु)।

नियम १००७ (ततस्तदो स्तोः ४।४१७) अपभ्रंश में ततः (तस्मात्) और तदा शब्दों को तो आदेश होता है। तत: (तो)। तदा। (तो)।

नियम १००८ (एवं-परं-समं-ध्रुवं-मा-मनाक-एम्व पर समाणु ध्रुवु मं मणाउं ४।४१८) अपभ्रंश में एवं, परं, समं, ध्रुवं, मा और मनाक् शब्दों को क्रमश: एम्व, पर, समाणु ध्रुवु, मं और मणाउं आदेश होते हैं। एवं (एम्व)। परं (पर)। समं (समाणु)। ध्रुवं (ध्रुवु)। मा (मं)। मनाक् (मणाउं)।

नियम १००६ (किलाथवा-दिव-सह-नहे: किराहवइ दिवे सहुं नाहिं ४।४१६) अपभ्रंश में किल आदि शब्दों को क्रमश: किर आदि आदेश होते हैं। किल (किर)। अथवा (अहवइ)। दिवा (दिवं)। सह (सहुं)। नहि (नाहिं)।

नियम १०१० (पश्चादेवमेवैवेदानीं-प्रत्युतेतसः पच्छइ-एम्वइ-जि-एम्वहिं पच्चलिउ-एत्तेह ४।४२०) अपभ्रंश में पश्चात् आदि शब्दों को पच्छइ आदि आदेश होते हैं। पश्चाद् (पच्छइ)। एवमेव (एम्वइ)। एव (जि)। इदानीम् (एम्वहिं)। प्रत्युत (पच्चलिउ)। इत: (एत्तहे)।

नियम १०११ (विषण्णोक्त-वर्त्मनो वुन्न-वुत्त-विच्चं ४।४२१) अपभ्रंश में विषण्ण आदि को वुन्न आदि आदेश होते हैं। विषण्ण: (वुन्नउ)। उक्त: (वुत्तउ)। वर्त्म (विच्चउ)।

नियम १०१२ (शीघ्रादीनां बहिल्लादय: ४।४२२) शीघ्र आदि शब्दों को बहिल्ल आदि आदेश होते हैं। शीघ्रम् (वहिल्लउ)। झकट: (घंघलु)। अस्पृश्य संसर्ग: (विट्टालु)। भय: (द्रवक्कउ)। आत्मीय: (अप्पणउ)। नव (नवखु)। दृष्टि: (द्रेहि)। गाढ: (निच्चट्टु)। साधारण: (सड्ढलु)। कौतुक: (कोड्डु)। क्रीडा (खेड्डु)। रम्य: (रवण्णु)। अद्भुतम् (ढक्करि)। हे सखि (हेल्लि)। पृथक्पृथक् (जुअंजुअ)। मूढ: (नालिउ)। मूढ: (वढउ)। अवस्कन्द: (दडवडउ)। यदि (छुड्डु)। सम्बन्धी (केरउ)। सम्बन्धी (तणु)। माभैषी: (मब्भीसडी)। यद् यद् दृष्टम् (जाइट्ठिआ)।

नियम १०१३ (इवार्थे नं-नउ-नाइ-नावइ-जणि-जणव: ४।४४४) इव के अर्थ में नं आदि छ आदेश होते हैं। इव (नं, नउ, नाइ, नावइ, जणि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणु)।

अव्यय

नियम १०१४ (घइमादयोनर्थकाः ४।४२४) अपभ्रंश में घइं आदि अनर्थक अव्यय हैं। घइं। आदि शब्द से खाइं। अनर्थक (घाइं, खाइं)।

नियम १०१५ (हुहुरु घुग्घादयः शब्द-चेष्टानुकरणयोः ४।४२३) अपभ्रंश में हुहुरु आदि शब्द के अनुकरण में और घुग्घ आदि चेष्टा के अनुकरण अर्थ में निपात हैं। हुहुरु (हुहुरु) आदि शब्द से घुण्ट (घुण्ट) एक बार पीने योग्य पानी। घुग्घ (बन्दर की चेष्टा) आदि शब्द से उट्ठबइस (उत्थोपवेश) ऊठ बैठ।

नियम १०१६ (तादर्थ्ये केहिं-तेहिं-रेसि-रेसिं-तणेणाः ४।४२५) अपभ्रंश में तादर्थ्यद्योत्य अर्थ में ये पांच शब्द निपात हैं। केहिं, तेहिं, रेसि, रेसिं, तणेण (वास्ते, लिए)। तउकेहि (त्रपु के लिए) इसी प्रकार पांचों अव्यय प्रयुक्त होते हैं।

प्रयोग वाक्य (वर्तमानकाल)

सो हसइ/हसेइ/हसए = वह हंसता है। इसके तीन वाक्य बन सकते हैं। सो हसइ/सो हसेइ/सो हसए। इसी प्रकार अन्य वाक्य समझें। सा णच्चइ/णच्चेइ/णच्चए = वह नाचती है। हउं/ण्हाउं/ण्हामि = मैं स्नान करता हूं। अम्हे/अम्हइं सयहुं/सयमो/सयमु/सयम = हम दोनों/हम सब सोते हैं/सोती हैं। हम दोनों और हम सब संक्षेप में हैं, वैसे ही सब सोते हैं और सोती हैं संक्षेप में हैं। इसके चार वाक्य बनते हैं (१) हम दोनों सोते हैं (२) हम सब सोते हैं। (३) हम दोनों सोती हैं (४) हम सब सोती हैं। इसी प्रकार कर्ता और क्रिया के विकल्प समझें। तुम्हें/तुम्हइं रूसहु/रूसह/रूसित्था = तुम दोनों/तुम सब रूसते हो/रूसती हो। ते वइट्ठहिं/वइट्ठंति/वइट्ठन्ते। वइट्ठिरे = वे दोनों/वे सब बैठते हैं/बैठती हैं। तुहुं लुक्कहि/लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि (तुम छिपते हो/छिपती हो।) हउं सयउं/सयामि (मैं सोता हूं।) सो जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए (वह जागता है।) सा रूसइ/रूसेइ/रूसए (वह रूसती है।) तुहुं णच्चहि/णच्चसि/णच्चसे/णच्चेसि (तुम नाचते हो/नाचती हो)। सो जीवइ/जीवेइ/जीवए (वह जीता है।) तुहुं हरिसहि/हरिससि/हरिससे/हरिसेसि (तुम प्रसन्न होते हो/प्रसन्न होती है।) हउं जीवउं/जीवामि/जीवमि/जीवेमि (मैं जीता हूं/जीती हूं)। सा हसइ/हसेइ/हसए (वह हंसती है।) तुम्हे/तुम्हइं जग्गहु/जग्गह/जग्गित्था (तुम दोनों/तुम सब जागते हो/जागती हो)।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (क्रिया के सब रूप लिखो)

मैं छिपता हूं। वह जागता है। तुम रूसते हो। वे दोनों बैठते हैं। हम सब जागते हैं। वे दोनों हंसती हैं। वह नाचती है। मैं जागता हूं। वे सब

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोती हैं। तुम दोनों बैठती हो। हम सब जीते हैं। मैं रूसता हूं। वे सब छिपते हैं। वे दोनों सोते हैं। वे सब नाचती हैं। मैं हंसता हूं। तुम जागते हो। हम सब हंसती हैं। तुम दोनों प्रसन्न होते हो। तुम जीते हो। मैं बैठता हूं। हम दोनों सोते हैं। मैं स्नान करता हूं। तुम स्नान करते हो। तुम दोनों स्नान करते हो। वे सब स्नान करती हैं। हम दोनों स्नान करते हैं। वह छिपता है। हम दोनों हंसते हैं। वे दोनों जीते हैं।

वाक्यों को शुद्ध करो (क्रिया बदलो)

सो हसउं। हउं रूसहि। अम्हे सयहु। सा हरिसेमि। अम्हइं हसित्था। तुम्हे सयमो। तुहुं णच्चह। ते जीवमि। तुम्हइं सयन्ति। सा रूसहु। हउं जग्गन्ते। तुहुं लुक्कह। सा जीवसि। हउं रूसए। अम्हे जीवउं। अम्हइं हसए। सो जीवेमि। तुम्हे वइट्ठसि। हउं सयहु। तुम्हइं जीवहि। अम्हे हसित्था। हउं रूससे। सा वइट्ठाइ।

वाक्य को शुद्ध करो (सर्वनाम बदलो)

हउं वइट्ठमो। तुहुं सयउ। अम्हे जग्गेह। तुम्हइं णच्चामो। तुम्हे लुक्केमो। ते लुक्कउ। सो हरिसह। ता सयह। अम्हे वइट्ठन्तु। सो ण्हाऊं। तुम्हइं जीव। अम्हे णच्चसु। ते रूसह। हउं वइट्ठइ। तुम्हे हसन्ति। तुहुं जीवेइ। अम्हइं जग्गउं।

प्रश्न

१. अपभ्रंश में कितने प्रकार के काल वर्णित हैं ?
२. अपभ्रंश में कितने प्रकार के शब्द मिलते हैं ?
३. पद की अनादि में क,ख,त,थ,प, फ को क्या आदेश होता हैं ?
४. संयुक्त वर्ण में किन वर्णों को क्या आदेश होता है ?
५. अपभ्रंश में कहां किन वर्णों का आगम होता है ?
६. अन्यादृश, प्रायस्, अन्यथा, कुतस्, तदा, समं, मनाक्, नहि, सह, प्रत्युत, इदानीम्, इतः, इव को अपभ्रंश में क्या-क्या आदेश होता है ?
७. नियम १०१२ के आदेश होने वाले चार शब्द बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (पुंलिग)

गंथ—पुस्तक
जणेर—बाप
कियंत—मृत्यु
करह—ऊंट
नरिंद—राजा
पड—वस्त्र
सप्प—सांप
गव्व—गर्व
सायर—समुद्र
रयण—रत्न
बालअ—बालक
गाम—गांव
मित्त—मित्र
सलिल—पानी
मेह—मेघ
घर—मकान
दुक्ख—दुःख

धातु संग्रह

गल—गलना
गज्ज—गर्जना
घाल—डालना
चोप्पड—स्निग्ध करना, चोपडना
धो—धोना
फाड—फाडना
लज्ज—शरमाना
डर—डरना
कोक—बुलाना
कुट्ट—कूटना
छोल्ल—छीलना
छोड—छोडना
उपकर—उपकार करना
रोक्क—रोकना
उच्छल—उछलना
घूम—घूमना

अव्यय

आम—जब तक ताम—तब तक जेम—जिस प्रकार
तेम—उस प्रकार जहा—जिस प्रकार तहा—उस प्रकार

- **माला शब्द याद करो। देखो परिशिष्ट ३ संख्या ६।** मइ, वाणी, धेणु और वहू शब्द के रूप माला की तरह चलते हैं। देखो—परिशिष्ट ३, संख्या ७,८,९,१०)।
- **हस और हो धातु के विधि एवं आज्ञा के रूप याद करो। देखो—परिशिष्ट ४, संख्या १,२।**

नियम १०१७ (स्यौ पुंस्योद् वा ४।३३२) अपभ्रंश में पुंलिग में अकारान्त नाम परे सि हो तो अकार को ओकार विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम १०१८ (स्यम् जस्-शसां लुक् ४।३४४) अपभ्रंश में सि, अम्, जस् और शस् का लुक् हो जाता है। जिणो। पक्ष में।

नियम १०१९ (स्यमोरस्योत् ४।३३१) अपभ्रंश में अकार को उकार हो जाता है सि और अम (द्वितीया का एकवचन) परे हो तो। जिणु।

नियम १०२० (स्यादौ दीर्घ ह्रस्वौ ४।३३०) अपभ्रंश में पुंलिग में नाम का अन्त्य अक्षर ह्रस्व हो तो दीर्घ और दीर्घ हो तो ह्रस्व विकल्प से होता है, स्यादि विभक्ति परे हो तो। जिणा, जिण। जिणु। जिणा, जिण।

नियम १०२१ (एट्टि ४।३३३) अपभ्रंश में अकार को एकार होता है, टा प्रत्यय परे हो तो।

नियम १०२२ (आट्टो णानुस्वारौ ४।३४२) अपभ्रंश में अकार से परे टा प्रत्यय को ण और अनुस्वार ये दो आदेश होते हैं। जिणेण, जिणें।

नियम १०२३ (भिस्येद् वा ४।३३५) अपभ्रंश में अकार को एकार विकल्प से होता है भिस् (तृतीया का बहुवचन) परे हो तो।

नियम १०२४ (भिस् सुपोर्हि ४।३४७) अपभ्रंश में भिस् और सुप् (सप्तमी का बहुवचन) को हि आदेश होता है। जिणेहि। पक्ष में जिणहिं।

नियम १०२५ (ङसे र्हे-हू ४।३३६) अपभ्रंश में अकार से परे ङसि को हे और हु ये दो आदेश होते हैं। जिणहे, जिणहु।

नियम १०२६ (भ्यसो हुं ४।३३७) अपभ्रंश में अकार से परे भ्यस् (चतुर्थी का बहुवचन) को हुं आदेश होता है। जिणहुं।

नियम १०२७ (ङसः सु-हो स्सवः ४।३३८) अपभ्रंश में अकार से परे ङस् (षष्ठी का एकवचन) को सु, हा, स्स ये तीन आदेश होते हैं। जिणसु, जिणहो, जिणस्सु।

नियम १०२८ (आमो हं ४।३३९) अपभ्रंश में अकार से परे आम् (षष्ठी का बहुवचन) को हं आदेश होता है। जिनानाम् (जिणहं)।

नियम १०२९ (षष्ठ्याः ४।३४५) अपभ्रंश में षष्ठी विभक्ति का प्रायः लुक् हो जाता है। जिनस्य, जिनानाम् (जिण)।

नियम १०३० (ङि नेच्च ४।३३४) अपभ्रंश में अकार से परे ङि (सप्तमी का एकवचन) प्रत्यय हो तो प्रत्यय सहित अकार को इकार और एकार होता है। जिणि, जिणे। जिणेहिं, जिणहिं हे जिणो, हे जिणु।

नियम १०३१ (आमन्त्र्ये जसो होः ४।३४६) अपभ्रंश में आमंत्रण अर्थ में नाम से परे जस् को हो आदेश होता है। जिणहो।

नियम १०३२ (सर्वस्य साहो वा ४।३६६) अपभ्रंश में सर्व शब्द को साह आदेश विकल्प से होता है। सर्व (साहु, सव्वु)।

नियम १०३३ (सर्वादे र्ङसे र्हां ४।३५५) अपभ्रंश में सर्वादि शब्दों के अकार से परे ङसि (पंचमी का एकवचन) को हा आदेश होता है। सर्व-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्मात् (सत्वहां)।

नियम १०३४ (ङेर्हि ४।३५७) अपभ्रंश में सर्वादि शब्दों के अकार से परे ङि को हिं आदेश होता है। सर्वस्मिन् (सव्वहिं)। शेष रूप जिन के समान चलते हैं।

नियम १०३५ (यत्तदः स्यमो ध्रुं त्रं ४।३६०) अपभ्रंश में यत् और तत् शब्द के स्थान पर क्रमशः ध्रुं, त्रं आदेश विकल्प से होता है, सि और अम् परे हो तो। तत् (त्रं)। तत् (ध्रुं)।

नियम १०३६ (यत्तत् किम्भ्यो ङसो डासु र्न वा ४।३५८) अपभ्रंश में यत्, तत् और किं शब्द के अकार से परे ङस् को डासु आदेश विकल्प से होता है। तस्य (तासु)। यस्य (जासु)।

प्रयोग वाक्य (विधि एवं आज्ञा)

सो हसउ, हसेउ (वह हंसे)। अम्हे, अम्हइं हसमो, हसामो, हसेमो (हम हंसे)। हउं हसमु (मैं हसूं)। ते हसन्तु, हसेन्तु (वे दोनों/वे सब हंसें)। तुम्हे हसह, हसेह (तुम दोनों/तुम सब हंसे)। अम्हे ण्हामो। तुम्हे रूसेह। हउं ठामु। ते जग्गेन्तु। रामु रूसउ। हउं डरमु सो फुल्लउ। तुम्हइं भिडेह। हउं घूमेमु। सा लज्जउ। ते थक्कंतु। तुम्हे डरह। सूरिओ उगउ। देविंदो उच्छलउ। जणेरु घूमउ। कइ (कवि) गंथ पढउ। करहो उच्छलउ। कियंतो लुक्कउ। इंदधणु उगए। सामी ण्हाउ। बालआ जग्गन्तु। तुहुं हसु। हउं लुक्केमु। सो सयेउ। सा होउ। अम्हे लुक्कामो। तुहुं उच्छल। हउं भिडेमु। अम्हे घूमेमो। तुहुं णच्चहि। हउं जीवमु। सो लुढउ। तुहुं थक्के। तुम्हे थक्कह। अम्हइं थक्कमो। तुहुं थक्कि। तुम्हइं थक्कह। हउं थक्कमु सुसीला पढउ। नरिंदो उपकरउ। सा दुक्ख छोडउ। सीया धोउ। तुहुं छोडे। अम्हे छोल्लेमो। ता डालंतु। विमला चोप्पडउ। तुम्हे कोकह। मेहो गज्जउ। तुहुं रोक्केहि। सा कुट्टउ। तुहुं पड फाडि। सायरु गज्जउ। कियंतो रोक्कउ। तुम्हे दुक्ख छोडह। मित्तो कोकउ।

अपभ्रंश में अनुवाद करो

तुम दोनों घूमो। वह शरमाए। वे दोनों भिडें। हम कूटें। तुम धोओ। वह छीले। हम सब छोडें। तुम फाडो। हम दोनों रोकें। तुम सब सोओ। वे दोनों छिपे। हम बुलाएं। वे धोएं। हम दोनों नाचें। वे सब स्नान करें। हम सब बैठें। तुम सोओ। मैं जागूं। तुम दोनों जागो। मैं जीऊं। तुम छिपो। तुम दोनों हंसो। वे नाचें। हम सब नाचें। वे सोएं। मैं सोऊं। वे उपकार करें। वे दोनों डालें। मैं नाचूं। तुम सब बैठो। वे दोनों जीव। वे सब जागें। हम सब डरें। तुम गर्जो। वे रोकें। तुम छीलो। हम धोएं। वे सब धोएं। वह नाचे। सीता कूटे। हम रोकें। मैं रोकूं। वह उछले।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हम दोनों उछलें। वे दोनों शरमाएं। तुम उछलो। मैं उछलूं। मैं उपकार करूं। तुम उपकार करो।

वाक्य शुद्ध करो (क्रिया बदलो)

तुम्हे ण्हामु। अम्हे लुक्कह। तुहुं ण्हाउ। सा णच्चे। हउं भिडु। ते कोकहि। सो रूसेमो। हउं डरि। सा भिडह। तुहुं कुट्टेमु। हउं हरिसउं। ते ण्हामु। अम्हइं घूम। हउं घालह। तुम्हे लज्जामो। सा ण्हासु। तुहुं चोप्पडउ। तुम्हइं चोप्पडंतु। हउं ण्हाह। अम्ह सयह।

प्रश्न

१. जणेर, कियंत, करह, गंथ, सलिल, रयण, मित्त, पड, मेह, दुक्ख और सायर शब्द का अर्थ बताओ।
२. गर्जना, डालना, स्निग्ध करना (चोपडना) धोना, फाडना, कूटना, छीलना, बुलाना, रोकना, उछालना, उपकार करना, छोडना, कूटना के अर्थ में धातु बताओ।
३. पुंलिग में अकार से परे, टा, भिस्, भ्यस्, आम् और ङि प्रत्यय परे हो तो क्या-क्या आदेश होता है।
४. सु, हा, त्स, हो, रहा, हिं, त्रं, डासु—ये आदेश किस शब्द को कौन-सा प्रत्यय परे होने पर होता है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११५ अपभ्रंश (३)

शब्द संग्रह (नपुंसकलिंग)

भायण—वर्तन	वत्थ—वस्त्र	जोव्वण—यौवन
मण—मन	पत्त—कागज	घय—घी
भोयण—भोजन	णायर—नागरिक	जीवण—जीवन
रज्ज—राज्य	खीर—दूध	कट्ठ—काठ
सुह—सुख	लक्कुड—लकडी	णाण—ज्ञान
वेरग्ग—वैराग्य	सच्च—सत्य	धण्ण—धान
मरण—मरण		

धातु संग्रह

फुल्ल—कूदना	पीस—पीसना
उग्घाड—उघाडना, खोलना	थक्क—थकना
लिह—लिखना	णिज्झर—झरना
कट्ट—काटना	लुढ—लुढकना
वखाण—व्याख्यान करना	पिव—पीना
सुक्क—सूखना	

अव्यय

अज्जु—आज	म—मत	जेत्थु—जहां
केत्थु—कहां	ण—नहीं	तेत्थु—वहां

- **नपुंसकलिंग में कमल, वारि, महु शब्द को याद करो। देखो— परिशिष्ट ३ संख्या ११,१२,१३।**
- **हस और हो धातु के भविष्यकाल के रूप याद करो। देखो— परिशिष्ट ४।**

नियम १०३७ (अदस ओइ ४।३६४) अपभ्रंश में अदस् के स्थान पर ओइ आदेश होता है, जस् और शस् परे हो तो। अमी, अमून् (ओइ)।

नियम १०३८ (इदम आयः ४।३६५) अपभ्रंश में इदं शब्द को आय आदेश होता है, स्यादि विभक्ति परे हो तो। अयं (आयउ)।

नियम १०३९ (एतदः स्त्री-पुंक्लीबे एह-एहो-एहु ४।३६२) अपभ्रंश में एतत् शब्द को स्त्रीलिंग में एह, पुंलिंग में एहो और नपुंसकलिंग में एहु आदेश होता है, सि और अम् परे हो तो। एह कुमारी। एहो नरु। एहु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणोरह-ठाणु।

नियम १०४० (एइर्जस्-शसोः ४।३६३) अपभ्रंश में एतत् शब्द को एइ आदेश होता है, जस् और शस् परे हो तो। एते घोटकाः (एइ घोडा) एतान् पश्य (एइ पेच्छ)।

नियम १०४१ (किम काइं-कवणौ वा ४।३६७) अपभ्रंश में किं शब्द को काइं और कवण आदेश विकल्प से होता है। किम् (काइं, कवणु, किं)।

नियम १०४२ (किमो डिहे वा ४।३५६) अपभ्रंश में किं शब्द के अकारान्त से परे ङसि को डाहे आदेश विकल्प से होता है। कस्मात् (किहे)। मुनिः (मुणी)।

नियम १०४३ (एं चेदुतः ४।३४३) अपभ्रंश में इकार और उकार से परे टा को एं, ण और अनुस्वार होता है। मुनिना (मुणिएं, मुणिण, मुणि)। मुनिभिः (मुणिहिं)।

नियम १०४४ (ङसि-भ्यस्-ङीनां हे-हुं-हयः ४।३४१) अपभ्रंश में इकार और उकार से परे ङसि, भ्यस् और ङि को क्रमशः हे, हुं और हि—ये तीन आदेश होते हैं। मुनेः (मुणिहे)। मुनिभ्यः (मुणिहुं)। मुनौ (मुणिहि) मुनेः (मुणि) षष्ठी में विभक्ति का लुक् हुआ है।

नियम १०४५ (हुं चेदुद्भ्याम् ४।३४०) अपभ्रंश में इकार और उकार से परे आम् को हुं, हं आदेश होते हैं। मुनीनाम् (मुणिहुं, मुणिहं) इसी प्रकार उकारान्त शब्द के भी रूप बनते हैं। प्रायो अधिकार से कहीं पर सुप् प्रत्यय को भी हुं आदेश होता है। द्वयोः (दुहुं)।

स्त्रीलिंग

नियम १०४६ (स्त्रियां जस्-शसोरुदोत् ४।३४८) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में नाम से परे जस् और शस् हो तो प्रत्येक को उ और ओ आदेश होते हैं। मालाः (मालाउ, मालाओ)। मालाः (मालाउ, मालाओ)।

नियम १०४७ (ट ए ४।३४९) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में नाम से परे टा को ए आदेश होता है। मालया (मालाए)। मालाभिः (मालाहिं)।

नियम १०४८ (ङस्-ङस्यो र्हे ४।३५०) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान नाम से परे ङस् और ङसि हो तो उनको हे आदेश होता है। मालायाः, मालायाः (मालाहे)।

नियम १०४९ (भ्यसामोर्हुः ४।३५१) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान नाम से परे भ्यस् और आम् प्रत्यय हो तो प्रत्ययों को हु आदेश होता है। मालाभ्यः, मालानाम् (मालाहु)।

नियम १०५० (ङे र्हि ४।३५२) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाम से परे ङि को हि आदेश होता है। मालायाम् (मालाहि)। हे माला, हे मालाहो।

नियम १०५१ (स्त्रियां डहे ४।३५९) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान यत्, तत् और किं शब्द से परे ङस् को डहे आदेश विकल्प से होता है। तस्याः (तहे)। यस्याः (जहे)। कस्याः (कहे)।

नपुंसकलिंग

नियम १०५२ (क्लीबे जस्-शसो रिं ४।३५३) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान नाम से परे जस् और शस् को इं आदेश होता है। कमलानि (कमलइं)। कमलानि (कमलइं)। शेष रूप पुंल्लिग के समान चलते हैं।

नियम १०५३ (कान्तस्यात उं स्यमोः ४।३५४) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान ककारान्त नाम में जो अकार हो उससे परे सि और अम् को उं आदेश होता है। तुच्छकम्, तुच्छकम् (तुच्छउं)।

नियम १०५४ (इदमः इमुः क्लीबे ४।३६१) अपभ्रंश में नपुंसक लिंग में वर्तमान इदम् शब्द से परे सि और अम् को शब्द सहित इमु आदेश होता है। इदं (इमु) इदं (इमु)। इदं कुलं (इमुकुलु)। इदं कुलं पश्य (इमुकुलु देक्खु)।

प्रयोग वाक्य (भविष्यकाल)

सा णच्चेसइ/णच्चेसए/णच्चिहिइ/णच्चिहिए (वह नाचेगी)। ता णच्चेसहिं/णच्चेसंति/णच्चिहिहिं/णच्चिहिंति (वे नाचेंगी)। हउं ण्हासउं/ण्हासामि/ण्हाहिउं/ण्हाहिमि (मैं नहाऊंगा)। अम्हे ण्हासहुं/ण्हासमो/ण्हासमु/ण्हासम/ण्हाहिहुं/ण्हाहिमो/ण्हाहिमु/ण्हाहिम (हम सब/हम दोनों नहाएंगे)। तुहुं णच्चेसहि/णच्चेससि/णच्चेससे/णच्चिहिहि/णच्चिहिसि (तुम नाचोगे)। तुम्हे णच्चेसहु/णच्चेसह/णच्चेसइत्था/णच्चिहिहु/णच्चिहिह/णच्चिहित्था (तुम दोनों/तुम सब नाचोगे)। हउं णच्चेसउं/णच्चेसमि/णच्चिहिउं/णच्चिहिमि (मैं नाचूंगा)। अम्हे णच्चेसहुं / णच्चेसमो / णच्चेसमु / णच्चेसम / णच्चिहिहुं / णच्चिहिमो / णच्चिहिमु/णच्चिहिम (हम नाचेंगे)। सुसीला पीसेसइ। सा पड कट्टेहिइ। अम्मे अज्जु वखाणेसहुं। मइं (मुझको) को कोकिहिइ ? सो पइं (तुमको) रोक्किहिए। तुहुं भायणि घय घालिसहि। सीया वत्थ फाडिहिहि। हउं सच्च उग्घाडि हिउं। माया चोप्पडिहिइ। सा पत्त लिहिहिए। तुहुं कट्ठ छोल्लेससि। तुम्हे उपकरिहिहु। अम्हे बोल्लिसहुं। बालअ सलिल पिविहिइ। सो लक्कुडाइं कट्टेसइ। सा पत्तु लिहिसए। तुहुं कट्ठइं न कट्टि हिहि। सा घण्णाइं पीसिहिए। तुहुं सच्च कोकिहिसे। हउं खीरइं पिवेसउं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंशमें अनुवाद करो

वह शरमाएगी। हम सब कूदेंगे। वे दोनों बैठेंगे। वह उछलेगा। हम नहीं थकेंगे। मैं नहीं मरूंगा। तुम दोनों कहां घूमोगे ? वे सब नहीं सोएंगे। मैं नहीं डरूंगा। तुम सत्य नहीं बोलोगे। वह वस्त्र नहीं काटेगी। वह चुपडेगी। तुम कहां व्याख्यान करोगे ? तुम्हें कौन रोकेगा ? मुझे कौन बुलाएगा ? मैं काष्ठ नहीं छीलूंगा। वह घी नहीं डालेगी। तुम आज कहां बैठोगे ? मैं आज बोलूंगा। वे दोनों नहीं पीसेंगी। वह वस्त्र फाडेगा। मैं उपकार करूंगा। तुम पत्र नहीं लिखोगे। वह स्नान नहीं करेगी। तुम कहां छिपोगे ? मैं नहीं नाचूंगा। आज वे पत्र लिखेंगे। तुमको कौन बुलाएगा ? मैं सत्य उघाडूंगा। तुम कहां कूदोगे ? वे कहां बैठेंगे ? वह आज दूध पीएगा। वह वस्त्र सुखाएगी। मैं नहीं थकूंगा। हम कहां घूमेंगे ? मैं व्याख्यान करूंगा। हम सब कूदेंगे।

रिक्तस्थान की पूर्ति करो

(१)······लज्जेसइत्था।(२)······हसेसहुं।(३)······बोल्लिहिमु। (४)······उग्घाडेसउं। (५)······कट्टेसहु। (६)······उपकरिहिसे। (७)······चोप्पडेसमु। (८)······फाडिहिहिं। (९)······वक्खाणिहिसि। (१०)······रोक्किहिमि। (११)······घालिसउ। (१२)······पीसेसन्ति। (१३)······बोल्लेसह। (१४)······लिहिहिए। (१५)······फाडिहिह। (१६)······करेसामि। (१७)······ण्हाहिमु। (१८)······कोकित्था। (१९)······बोल्ल। (२०)······उपकरेमु। (२१)······फाडसि। (२२) ······लिहउ। (२३)······वइट्टह। (२४)······रोक्कमु। (२५)······ घालहुं। (२६)······पीसंतु। (२७)······फाडसु। (२८)······उग्घाडए। (२९)······छोल्लउं। (३०)······कट्टह।

प्रश्न

१. स्त्रीलिंग में ओ, ए, हे, हु, डहे आदेश किन-कन प्रत्ययों को होता है ?
२. नपुंसक लिंग में जस् और शस् प्रत्यय को क्या आदेश होता है।
३. नपुंसक में उं आदेश किस प्रत्यय को होता है ?
४. पुंलिंग में ओइ, काइं, कवण, एइ, हे आदेश किस को किस प्रत्यय परे होने पर होता है।
५. लकडी, वस्त्र, नागरिक, यौवन, भोजन, वैराग्य, घी, पत्र, जीवन, ज्ञान, मरण, सुख—इन शब्द के लिए अपभ्रंश शब्द बताओ।
६. फुल्ल, थक्क, णिज्झर, लुढ, पिव, पीस, उग्घाड, लिह, कट्ट, वक्खाण, सुक्क धातु के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह (आकारान्त शब्द)

जणेरी—माता	वाया—वाणी
कमला—लक्ष्मी	संझा—संध्या
सुया—पुत्री	सोहा—शोभा
जरा—बुढापा	पसंसा—प्रशंसा
महिला—स्त्री	झुंपडा—झोंपडी
मेहा—बुद्धि	तिसा—तृषा
निसा—रात्रि	

धातु संग्रह

वड्ढ—बढना	उवविस—बैठना
खुम्म—भूख लगना	खास—खांसना
उवसम—शांत होना	लग्ग—लगना
उस्सस—सांस लेना	छिज्ज—छीजना
विअस—खिलना	लोट्ट—लोटना
चिट्ठ—ठहरना, बैठना	चुक्क—भूल करना, चूकना
कुद्द—कूदना	छुट्ट—छूटना
ओढ—ओढना	

अव्यय

जइ—यदि	तो—तो	इय—इस प्रकार
जह—जैसे	तह—वैसे	तम्हा—इसलिए
जम्हा—चूंकि	वि—भी	णवि—नहीं

० **सव्व, त, ज, क एत, इम शब्द याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या १४,१५,१६,१७,१८,१९।**

युष्मदस्मत् और स्त्री प्रत्यय

नियम १०५५ (युष्मदः सौ तुहुं ४।३६८) अपभ्रंश में युष्मद् शब्द से परे सि हो तो तुहुं आदेश होता है। त्वम् (तुहुं)।

नियम १०५६ (जस्-शसोस्तुम्हे तुम्हइं ४।३६९) अपभ्रंश में युष्मद् शब्द को जस् और शस् प्रत्यय सहित तुम्हे और तुम्हइं आदेश होते हैं। यूयम् (तुम्हे, तुम्हइं)। युष्मान् (तुम्हे, तुम्हइं)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम १०५७ (टा-ङ्यमा पइं तइं ४।३७०) अपभ्रंश में युष्मद् शब्द को टा, ङि और अम् प्रत्यय सहित पइं और तइं आदेश होते हैं। त्वया (पइं, तइं)। त्वयि (पइं, तइं)। त्वाम् (पइं, तइं)।

नियम १०५८ (भिसा तुम्हेहिं ४।३७१) अपभ्रंश में भिस् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तुम्हेहिं आदेश होता है। युष्माभिः (तुम्हेहिं)।

नियम १०५६ (ङसि-ङस्भ्यां तउ-तुज्झ-तुध्र ४।३७२) अपभ्रंश में ङसि और ङस् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तउ, तुज्झ और तुध्र आदेश होते हैं। त्वत् (तउ, तुज्झ, तुध्र)। तव (तउ, तुज्झ, तुध्र)।

नियम १०६० (भ्यसाम्भ्यां तुम्हहं ४।३७३) अपभ्रंश में भ्यस् और आम् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तुम्हहं आदेश होता है। युष्मभ्यम् (तुम्हहं)। युष्माकम् (तुम्हहं)।

नियम १०६१ (तुम्हासु सुपा ४।३७४) अपभ्रंश में सुप् प्रत्यय सहित युष्मद् शब्द को तुम्हासु आदेश होता है। युष्मासु (तुम्हासु)।

नियम १०६२ (सावस्मदो हउं ४।३७५) अपभ्रंश में सि प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को हउं आदेश होता है। अहम् (हउं)।

नियम १०६३ (जस्-शसो रम्हे अम्हइं ४।३७६) अपभ्रंश में जस् और शस् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हे और अम्हइं आदेश होते हैं। वयम् (अम्हे, अम्हइं)। अस्मान् (अम्हे, अम्हइं)।

नियम १०६४ (टा-ङ्यमा मइं ४।३७७) अपभ्रंश में टा, ङि और अम् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को मइं आदेश होता है। मया (मइं)। मयि (मइं)। माम् (मइं)।

नियम १०६५ (अम्हेहिं भिसा ४।३७८) अपभ्रंश में भिस् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हेहिं आदेश होता है। अस्माभिः (अम्हेहिं)।

नियम १०६६ (महु मज्झु ङसि-ङस् भ्याम् ४।३७९) अपभ्रंश में ङसि और ङस् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को महु और मज्झु आदेश होते हैं। मत् (महु, मज्झु)। मम (महु, मज्झु)।

नियम १०६७ (अम्हहं भ्यसाम्भ्याम् ४।३८०) अपभ्रंश में भ्यस् और आम् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हहं आदेश होता है। अस्मभ्यम् (अम्हहं)। अस्माकम् (अम्हहं)।

नियम १०६८ (सुपा अम्हासु ४।३८१) अपभ्रंश में सुप् प्रत्यय सहित अस्मद् शब्द को अम्हासु आदेश होता है। अस्मासु (अम्हासु)।

स्त्री प्रत्यय

नियम १०६६ (स्त्रियां तदन्ताड्डी ४।४३१) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान प्राक्तन सूत्रद्वय (अ-डड-डुल्लाः स्वार्थिक-क-लुक् च ४।४२६ और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योगजाश्चैषाम् ४।४३०) के प्रत्यय अ, डड, डुल्ल, डडअ अन्त वाले प्रत्ययान्त शब्दों से डी प्रत्यय होता है। गोरी (गोरडी)। कुटी (कुडुल्ली)।

नियम १०७० (आन्तान्ताड्डा ४।४३२) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान आन्त (डड प्रत्यय आदि अ प्रत्ययान्त) उन आन्त प्रत्ययान्त शब्दों से डा प्रत्यय होता है। धूलिः (धूलडिआ)।

नियम १०७१ (अस्ये ४।४३३) अपभ्रंश में स्त्रीलिंग में वर्तमान अकार को इकार हो जाता है, आ प्रत्यय परे हो तो। धूलिः (धूलडिआ)।

भूतकाल

अपभ्रंश में भूतकाल के अर्थ को व्यक्त करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का ही प्रयोग किया जाता है। धातु में अ और य प्रत्यय लगाकर भूतकालिक कृदन्त का रूप बनाया जाता है। धातु के अंतिम अकार को इकार हो जाता है और प्रत्यय जुड जाता है। य प्रत्यय अ में बदला जा सकता है। भूतकालिक कृदन्त कर्तृवाच्य में कर्ता के अनुसार चलता है। कर्ता पुंलिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग तीनों हो सकते हैं। स्त्रीलिंग में प्रयोग करने से पूर्व प्रत्यय के आगे आ प्रत्यय और जुड जाता है। पुंलिंग में भूतकालिक कृदन्त के रूप जिण शब्द की तरह, स्त्रीलिंग में माला शब्द की तरह और नपुंसक लिंग में कमल शब्द की तरह रूप चलते हैं। व्यंजनांत (अकारान्त) और स्वरान्त धातु के रूप इस प्रकार बनते हैं।

	एकवचन	**बहुवचन**
पुंलिग—	हसिअ/हसिआ/हसिओ/हसिउ होअ/होआ/होउ/होओ	हसिअ/हसिआ होअ/होआ
स्त्रीलिंग—	हसिआ/हसिअ	हसिआ/हसिअ/ हसिआउ/हसिअउ हसिआओ/हसिअओ
	ठाआ/ठाअ	ठाआ/ठाअ/ठाआउ/ठाअउ/ ठाआओ/ठाअओ
नपुंसकलिंग—	हसिअ/हसिउ/हसिआ होअ/होआ/होउ	हसिअ/हसिआ/हसिअइं/ हसआइं/होअ/होआ/होअइं/ होआइं

प्रयोग वाक्य (भूतकाल)

हउं हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ (मैं हंसा)। अम्हे हसिअ/हसिआ (हम हंसे)। सा हसिआ/हसिअ (वह हंसी)। ता हसिआ/हसिअ/हसिआउ/हसिअउ/हसिआओ/हसिअओ (वे हंसी)। तुहुं हसिअ/हसिआ/हसिओ/हसिउं (तुम हंसा)। तुम्हे हसिअ/हसिआ (तुम सब हंसे/तुम दोनों हंसे)। सो हसिअ/

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसिआ/हसिउ/हसिओ (वह हंसा)। ते हसिअ/हसिआ (वे दोनों हंसे/वे सब हंसे)। रज्जं/रज्जा/रज्जु वड्ढिअ/वड्ढआ/वड्ढिउ (राज्य बढा)। कमल/कमला/कमलइं/कमलाइं विउसिअ/विउसिआ/विउसिअइं/विउसिआइं (सब कमल खिले। नरिंदु बोल्लिओ। महुइं भुंजिआइं। सा लज्जिआ। ता उट्ठिअउ। साहू जग्गिउ। तुहुं लुक्किओ। ता वइट्ठिअओ। महेलीओ डरिअओ। जणेरी बोल्लिअ। कमला उस्सासिअ। कोवु उवसमिओ। तिसा लग्गिअ। जणेरी खासिआ। पसंसा वड्ढिअ। जणेरु उवविसउ। सुसीला चुक्किआ। जणेरी पड धोआ। कमल विअसिउ। वेरग्ग वड्ढिअ। लक्कुड कट्टिआ।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (बहुवचन के सारे रूपों का उपयोग करो प्रत्येक वाक्य में)

स्वामी डरा। माता जागी। महिलाएं बैठीं। वस्तुएं बढीं। राजा सोया। महिलाएं छिपीं। शक्ति जागी। सुशीला शरमाइ। राज्य बढा। साधु आज नहीं सोया। कमल खिला। वह उठा। तुम ठहरे। तुम सब कहां बैठे? सीता नहीं डरी। माता ने वस्त्र ओढा। उन्हें प्यास लगी। महिलाएं शांत हुईं। राजा को भूख लगी। उसकी प्रशंसा हुई। बालक बैठा। पुत्री ने सांस लिया। बुद्धि बढी। पिता बैठा। महिलाएं ठहरीं। पुत्री जगी। वह छिपी। वे चुके। पुत्रियां थकीं। महिलाएं घूमी। सीता ने धान्य पीसा। यौवन लुढक गया। सत्य खोला। लकडियां काटीं। सुख बढा। माता भूली। दूध पीया। यौवन बढा।

प्रश्न

१. पइं, तइं, मइं, तउ, तुध्र, तुम्हहं, महु, अम्हासु—ये रूप किस शब्द के किस विभक्ति और वचन के हैं?
२. स्त्रीलिंग में डी और डा प्रत्यय कहां होता है?
३. भूतकाल के रूप बनाने का क्या तरीका है?
४. जणेरी, कमला, सुया, जरा, महिला, मेहा, वाया, संझा, सोहा, पसंसा, झुंपडा और तिसा—इन शब्दों को अपने वाक्य में प्रयोग करो।
५. तम्हा, इय और जह—इन अव्ययों का वाक्य में प्रयोग करो।
६. वड्ढ, खुम्म, उवसम, उस्सस, विअस, चिट्ठ, कुद्द, ओढ, उवविस, खास, लग्ग, छिज्ज, लोट्ट, चुक्क और छुट्ट धातु के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११७ अपभ्रंश (५)

शब्द संग्रह

कइ (पुं)—कवि	दहि (न)—दही	वत्थु (न)—पदार्थ
साहु (पुं)—साधु	आंखि (स्त्री)—आंख	भत्ति (स्त्री)—भक्ति
गुरु (पुं)—गुरु	गव्व (पुं)—गर्व	माया (स्त्री)—माता
बिन्दु (पुं)—बूंद	पुत्ती (स्त्री)—पुत्री	सामि (पुं)—स्वामी
जंतु (पुं)—प्राणी	दिवायर (पुं)—सूर्य	

धातु संग्रह

दा—देना	सुण—सुनना	भुल—भूलना
मग्ग—मांगना	गवेस—खोज करना	वण्ण—वर्णन करना
सेव—सेवा करना	गरह—निंदा करना	कह—कहना
कर—करना	मार—मारना	सुमर—स्मरण करना
जेम—जीमना	चोर—चुराना	गच्छ—जाना
थुण—स्तुति करना	सीख—सीखना	

० **अम्ह और तुम्ह शब्द तथा संख्यावाची शब्दों को याद करो। देखो—परिशिष्ट ३ संख्या २३,२४,२६ से ३५।**

तद्धित

नियम १०७२ (पुनर्विनः स्वार्थे डुः ४।४२६) अपभ्रंश में पुनर् और बिना को स्वार्थ में डु प्रत्यय होता है। पुनः (पुणु)। बिना (विणु)।

नियम १०७३ (अवश्यमो डें-डौ ४।४२७) अपभ्रंश में अवश्यम् को स्वार्थ में डें और ड—ये प्रत्यय होते हैं। अवश्यम् (अवसें, अवस)।

नियम १०७४ (एकशसो डिः ४।४२८) अपभ्रंश में एकशस् शब्द से स्वार्थ में डि प्रत्यय होता है। एकशः (एक्कसि)।

नियम १०७५ (अ-डड-डुल्लाः स्वार्थिक-क-लुक् च ४।४२९) अपभ्रंश में नाम से परे स्वार्थ में अ, डड, डुल्ल—ये तीन प्रत्यय होते हैं, इनके योग में स्वार्थ में हुए क प्रत्यय का लोप हो जाता है। अग्निष्ठः (अग्गिट्ठउ)। दोषा (दोसडा)। कुटी (कुडुल्ली)।

नियम १०७६ (योगजाश्चैषाम् ४।४३०) अपभ्रंश में अ, डड, डुल्ल और इनके योग से बनाने वाले डडअ आदि प्रत्यय प्रायः स्वार्थ में होते हैं। हृदयम् (हिअडउं)। चूटकः (चुडुल्लउ)। बलम् (बलुल्लडा)। बलम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(बलुल्लडउ)।

नियम १०७७ (युष्मदादेरीयस्य डारः ४।४३४) अपभ्रंश में युष्मद् आदि शब्दों से परे ईय प्रत्यय को डार आदेश होता है। युष्मदीयम् (तुहारउ) अस्मादीयम् (अम्हारउ)।

नियम १०७८ (अतो र्डेत्तुलः ४।४३५) अपभ्रंश में इदं, किं, यत्, तत्, एतद् शब्दों से परे अतु प्रत्यय को डेत्तुल आदेश होता है। इयत् (एत्तुलो)। कियत् (केत्तुलो)। यावत् (जेत्तुलो)। तावत् (तेत्तुलो)। एतावत् (एत्तुलो)।

नियम १०७९ (त्रस्य डेत्तहे ४।४३६) अपभ्रंश में सर्व आदि शब्द सप्तम्यन्त हो, उस अर्थ में होने वाले त्र प्रत्यय को डेत्तहे आदेश होता है। अत्र (एत्तहे)। तत्र (तेत्तहे)।

नियम १०८० (त्वतलोः प्पणः ४।४३७) अपभ्रंश में त्व और तल् प्रत्यय को प्पण आदेश होता है। बहुत्वं, बहुता (बहुप्पणु)। वृद्धत्वं, वृद्धता (वड्डप्पणु)।

नियम १०८१ (कथं-यथा-तथां थादेरेमेमेहेधा डितः ४।४०१) अपभ्रंश में कथं, यथा, तथा शब्द के थ से अगले वर्ण तक डेम, डिम, डिह और डिध आदेश होता है। कथं (केवं, किवं, किह, किध, केम, किम)। यथा (जेवं, जिवं, जेम, जिम, जिह, जिध)। तथा (तेवं, तिवं, तेम, तिम, तिह, तिध)। नियम ९९६ से म को (वं) विकल्प से हुआ है।

नियम १०८२ (यादृक्-तादृक्-कीदृगीदृशां दादेर्डेहः ४।४०२) अपभ्रंश में यादृक्, तादृक्, कीदृक् और ईदृक् शब्दों के दृ से आगे के वर्णों को डेह आदेश होता है। यादृक् (जेहु)। तादृक् (तेहु)। कीदृक् (केहु)। ईदृक् (एहु)।

नियम १०८३ (अतां डइसः ४।४०३) अपभ्रंश में यादृक्, तादृक्, कीदृक्, ईदृक्—इन अदन्त शब्दों के द से आगे के वर्णों को डइस आदेश होता है। यादृशः (जइसो)। तादृशः (तइसो)। कीदृशः (कइसो)। ईदृशः (अइसो)।

नियम १०८४ (यत्र-तत्रयोस्त्रस्य-डिदेत्थ्वत्तु ४।४०४) अपभ्रंश में यत्र और तत्र शब्द के त्र को डेत्थु और डत्तु आदेश होते हैं। यत्र (जेत्थु, जत्तु)। तत्र (तेत्थु, तत्तु)।

नियम १०८५ (एत्थु कुत्रात्रे ४।४०५) अपभ्रंश में कुत्र और अत्र के त्र को डेत्थु आदेश होता है। कुत्र (केत्थु)। अत्र (एत्थु)।

नियम १०८६ (यावत्-तावतोर्वादेर्म उं महिं ४।४०६) अपभ्रंश में यावत् और तावत् के वत् को म, उं और महिं आदेश होता है। यावत् (जाम, जाउं, जामहिं)। तावत् (ताम, ताउं, तामहिं)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नियम १०८७ (**वा यत्तदोऽतोर्डेवडः** ४।४०७) अपभ्रंश में यत् और तत् शब्द अतु प्रत्ययान्त (यावत्, तावत्) के वत् अवयव को डेवड आदेश विकल्प से होता है। यावत् (जेवडु, जेत्तुलो)। तावत् (तेवडु, तेत्तुलो)।

नियम १०८८ (**वेदं किमोर्यादेः** ४।४०८) अपभ्रंश में इदं और किं शब्द अनुप्रत्ययान्त (इयत्, कियत्) के यत् अवयव को डेवड आदेश विकल्प से होता है। इयत् (एवडु, एत्तुलो)। कियत् (केवडु, केत्तुलो)।

संबंधभूत कृदन्त (क्त्वा प्रत्यय) पूर्वकालिक क्रिया

धातु के साथ पूर्वकालिक क्रिया (क्त्वा प्रत्यय) जोडने से संबंधभूत कृदन्त के रूप बनते हैं। क्त्वा प्रत्यय का अर्थ है करके। क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है। यह अर्धक्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके आगे पूर्वकालिक क्रिया होती है, वह किसी भी काल की हो सकती है। अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय के स्थान पर आठ प्रत्यय होते हैं—इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु। हस् धातु के इन आठ प्रत्ययों के रूप क्रमशः ये बनते हैं—हसि, हसिउ, हसिवि, हसवि, हसेप्पि, हसेप्पिणु, हसेवि, हसेविणु (हंसकर)। इसी प्रकार अन्य धातु के रूप बनते हैं।

हेत्वर्थ कृदन्त (तुम् प्रत्यय)

तुम् प्रत्यय का अर्थ होता है—के लिए। अपभ्रंश में तुम् प्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। तुम् प्रत्यय को अपभ्रंश में प्रत्यय आदेश होते हैं—एवं, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु। हस् धातु के तुम् प्रत्ययान्त रूप ये हैं—हसेवं, हसण, हसणहं, हसणहिं, हसेप्पि, हसेप्पिणु, हसेवि, हसेविणु। इसी प्रकार अन्य धातुओं के रूप बनाए जा सकते हैं। शेष चार प्रत्यय क्त्वा और तुम् प्रत्यय के समान हैं, प्रसंग से अर्थ निकाला जाता है।

प्रयोग वाक्य (संबंधभूत कृदन्त)

हउं हसि जीवउं (मैं हंसकर जीता हूं)। हउं हसिवि जीवेसउं (मैं हंसकर जीऊंगा। हउं हसिउ जीवमु (मैं हंसकर जीऊं)। हउं हसवि बोल्लिअ (मैं हंसकर बोला)। सो हसेप्पि बोल्लइ (वह हंसकर बोलता है)। सो हसेप्पिणु बोल्लउ (वह हंसकर बोले)। सो हसेवि बोल्लेसइ)। (वह हंसकर बोलेगा)। सो हसेविणु बोल्लिआ (वह हंसकर बोला)। तुहुं बोल्लि वइट्ठहि। तुहुं बोल्लिउ वइट्ठसु। तुहुं बोल्लिवि वइट्ठेसहि। तुहुं बोल्लवि वइट्ठिअ। सा भुंजेप्पि सयइ। सा भुंजेप्पिणु सयउ। सा भुंजेवि सयिहिइ। सा भुंजेविणु सयिआ। सो घूमि उववसिइ। तुहुं लिहिउ सयिहिहि। तुहुं पढिवि वखाणसु। ते थक्किवि वइट्ठंति। तुम्हे सयवि जग्गिहित्था बालअ खीर पिवेवि सयइ। अम्हे सुणिवि कहइ। तुहुं दाइ मग्गइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रयोग वाक्य (तुम् प्रत्यय)

हउं जग्गेवं सयउं (मैं जागने के लिए सोता हूं)। हउं जग्गण सयेसउं। (मैं जागने के लिए सोऊंगा)। हउं जग्गणहिं सयिअ (मैं जागने के लिए सोया। हउं जग्गणहं सयमु (मैं जागने के लिए सोऊं)। सो जग्गेप्पि सयइ (वह जागने के लिए सोता है। सो जग्गेप्पिणु सयउ (वह जागने के लिए सोए)। सो जग्गेवि सयेहिइ (वह जागने के लिए सोएगा)। सो जग्गेविणु सयिअ (वह जागने के लिए सोया)। तुहुं णच्चेवं उट्ठहि। तुहुं कोकण उट्ठसु। तुहुं णच्चणहं उट्ठेसहि। हउं बोल्लणहिं उट्ठिउ। सा लुक्केवि उट्ठेसइ। सा णच्चेविणु उट्ठिआओ। सो णच्चिण उववसइ। तुहुं खासणहं दहि भुंजहि। हउं जीवेप्पि खीर पिवउं। अम्हे लिहेव पढहुं। ते लक्कुड कट्टेवं घूमसि।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग करो)

वह वस्त्र धोकर सोता है। तुम घी डालकर कहां जाते हो? वह पुत्री को मारकर भागता है। तुम कहकर भूलते हो। वह छूकर वस्तु को जानता है। वे स्तुति कर मांगेंगे। तुम पुस्तक चुराकर पढते हो। मैं सेवा कर सीखता हूं। वे पढकर वर्णन करेंगे। वह तुमको कहकर नाचेगा। वे स्तुति कर निंदा करते हैं। सीता धान्य कूटकर पीसती है। तुम यादकर भूलते हो। साधु गवेषणा कर खाता है। वह खाकर पीता है। तुम पीकर खाते हो। वह रुष्ट होकर सोता है।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (तुम् प्रत्यय का प्रयोग करो)

वह मांगने के लिए जाता है। वह ज्ञान सीखने के लिए सेवा करता है। तुम याद करने के लिए सुनते हो। वे मारने के लिए भागते हैं। तुम देने के लिए मांगते हो। वे खाने के लिए जाते हैं। वह कूदने के लिए दौडता है। वह जीने के लिए सांस लेती है। उसे खाने के लिए भूख लगती है। वह थकने के लिए दौडता है। तुम लिखने के लिए सुनते हो। वह वस्त्र धोने के लिए मांगता है। मैं स्तुति करने से डरता हूं। बालक नहाने के लिए छिपता है। वह नाचने के लिए जागती है। तुम जागने के लिए सोते हो।

प्रश्न

१. स्वार्थ में किस शब्द से क्या प्रत्यय होता है?
२. ईय, अतु, त्र और त्व प्रत्ययों को अपभ्रंश में क्या आदेश होते हैं?
३. जेत्तुलो, तेत्तुलो, तामहिं, जइसो, जेहु—इन शब्दों का वाक्य में प्रयोग करो।
४. कवि, साधु, गुरु, बूंद, प्राणी, सूर्य, स्वामी, दही, पदार्थ, आंख, भक्ति, गर्व, माता, स्त्री—इन शब्दों के लिए अपभ्रंश के शब्द बताओ।
५. दा, मग्ग, सेव, कर, जेम, थुण, सीख, गरह, सुण, भुल, कह, मार, सुमर, चोर, गच्छ, वण्ण धातु के अर्थ बताओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्द संग्रह

घर (पुं) —मकान	ससा (स्त्री) —बहिन
पिआमह (पुं) —दादा	कहा (स्त्री) —कथा
मारूअ (पुं) —पवन	सद्धा (स्त्री) —श्रद्धा
बप्प (पुं) —पिता	सासू (स्त्री) —सासू
सरिआ (स्त्री) —नदी	बहू (स्त्री) —बहू
भुक्खा (स्त्री) —भूख	आगि (स्त्री) —आग
णिद्दा (स्त्री) —नींद	णारी (स्त्री) —नारी
तण्हा (स्त्री) —तृष्णा	लच्छी (स्त्री) —लक्ष्मी

धातु संग्रह

उट्ठ—उठना	नस्स—नष्ट होना
पड—गिरना	पसर—फैलना
रुव—रोना	जल—जलना
खेल—खेलना	खुम्म—भूख लगना
बिह—डरना	उतर—उतरना, नीचे आना
पणम—प्रणाम करना	पाल—पालना
खा—खाना	चर—चरना

० आय, अवस्, कवण शब्दों को याद करो। देखो परिशिष्ट ३ संख्या २०,२१,२२।

उच्चारणलाघव

नियम १०८९ (कादि-स्थैदोतोरुच्चार-लाघवम् ४।४१०) अपभ्रंश में क आदि वर्णों में ए और ओ का प्रायः उच्चारण—लाघव होता है। सुखेन चिन्त्यते मानः, (सुघें चिंतिज्जइ माणु) तस्य अहं कलियुगे दुर्लभस्य (तसु हउं कलिजुगि दुल्लहहों)।

नियम १०९० (पदान्ते उं-हुं-हिं-हंकाराणाम् ४।४११) अपभ्रंश में पदान्त में उं, हुं, हिं, हं का उच्चारणलाघव होता है।

तिवन्त

नियम १०९१ (त्यादेराद्यत्रयस्य संबंधिनो बहुत्वे हिं न वा ४।३८२) अपभ्रंश में त्यादि के पहले त्रिक के बहुवचन को हिं आदेश विकल्प से होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुर्वन्ति (करहिं, करन्ति)।

नियम १०९२ (मध्यत्रयस्याद्यस्य हिः ४।३८३) अपभ्रंश में त्यादि के मध्यत्रिक के एकवचन को हि आदेश विकल्प से होता है। करोषि (करहि, करसि)।

नियम १०९३ (बहुत्वे हुः ४।३८४) अपभ्रंश में त्यादि के मध्यत्रय के बहुवचन को हु आदेश विकल्प से होता है। कुरुथ (करहु, करहे)।

नियम १०९४ (अन्त्यत्रयस्याद्यस्य उं ४।३८५) अपभ्रंश में त्यादि के अन्त्यत्रय के एकवचन को उं आदेश विकल्प से होता है। करउं। पक्षे करोमि (करेमि)।

नियम १०९५ (बहुत्वे हुं ४।३८६) अपभ्रंश में त्यादि के अन्त्य त्रय के बहुवचन को हुं आदेश विकल्प से होता है। कुर्मः (करहुं)। पक्षे करिमु।

नियम १०९६ (हि-स्वयोरिदुदेत् ४।३८७) अपभ्रंश में तुबादि के हि और स्व को इ, उ और ए—ये तीन आदेश होते हैं। कुरु (करि, करु, करे)। पक्षे करहि।

नियम १०९७ (वर्त्स्यति स्यस्य सः ४।३८८) अपभ्रंश में भविष्य अर्थविषयक त्यादि के स्य को स विकल्प से होता है। करिष्यति (कासइ)। पक्षे काहिइ।

नियम १०९८ (क्रियेः कीसु ४।३८९) अपभ्रंश में क्रिये इस क्रियापद को कीसु आदेश विकल्प से होता है। क्रिये (कीसु)। पक्ष में (किज्जउं)। क्रिये यह संस्कृत का सिद्ध रूप है।

नियम १०९९ (भुवः पर्याप्तौ, हुच्चः ४।३९०) अपभ्रंश में भू धातु पर्याप्त अर्थ में हो तो उसे हुच्च आदेश होता है। प्रभवति (पहुच्चइ) समर्थ है।

नियम ११०० (ब्रूगो ब्रुवो वा ४।३९१) अपभ्रंश में ब्रू धातु को ब्रुव आदेश विकल्प से होता है। ब्रवीति (ब्रुवइ)। पक्षे ब्रोइ।

नियम ११०१ (व्रजे र्वुञः ४।३९२) अपभ्रंश में व्रजति के व्रज् को वुञ् आदेश होता है। व्रजति (वुञइ)।

नियम ११०२ (दृशेः प्रस्सः ४।३९३) अपभ्रंश में दृश् धातु को प्रस्स आदेश होता है। पश्यति (प्रस्सदि)।

नियम ११०३ (ग्रहे र्गृण्हः ४।३९४) अपभ्रंश में ग्रह् धातु को गृण्ह आदेश होता है। गृह्णाति (गृण्हइ)।

नियम ११०४ (तक्ष्यादीनां छोल्लादयः ४।३९५) अपभ्रंश में तक्ष् आदि धातुओं को छोल्ल आदि आदेश होते हैं। तक्षति (छोलिज्जइ)। आदि शब्द से देशी धातु के जो क्रियापद मिलते हैं उनके उदाहरण—दहइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(झलक्किअइ) अनुगच्छति (अब्भडइ)। शल्यायते (खुडुक्कइ)। गर्जति (घुडुक्कइ)। तिष्ठति (थति)। आक्रम्यते (चम्पिज्जइ)। शब्दायते (धुट्ठुअइ)।

कृदन्त प्रत्यय

नियम ११०५ (तव्यस्य इएव्वउं एव्वउं एवा ४।४३८) अपभ्रंश में तव्य प्रत्यय को इएव्वउं, एव्वउं, एवा—ये तीन आदेश होते हैं। कर्तव्यम् (करिएव्वउं)। सोढव्यम् (सहेव्वउं)। स्वपितव्यम् (सोएवा)।

नियम ११०६ (क्त्व-इ-इउ-इवि-अवयः ४।४३९) अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय को इ, इउ, इवि, अवि—ये चार आदेश होते हैं। मारयित्वा (मारि, मारिउ, मारिवि, मारवि)।

नियम ११०७ (एप्प्येप्पिण्वेव्येविणवः ४।४४०) अपभ्रंश में क्त्वा प्रत्यय को एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु—ये चार आदेश होते हैं। पूर्व सूत्र से इस सूत्र को अलग करने का कारण है, इन चार प्रत्ययों को अगले सूत्र में भी लेना है। जित्वा (जेप्पि, जेप्पिणु, जेवि, जेविणु)।

नियम ११०८ (तुम एवमणाणहमणहिं च ४।४४१) अपभ्रंश में तुम् प्रत्यय को एवं, अण, अणहं, अणहिं—ये चार आदेश होते है। च शब्द से एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु—ये चार और आदेश होते हैं। दातुम् (देवं)। कर्तुम् (करण, करहं, करणहिं)। जेतुम् (जेप्पि)। त्यक्तुम् (चएप्पिणु)। लातुम् (लेविणु)। पालयितुम् (पालेवि)।

नियम ११०९ (गमेरेप्पिण्वेप्प्योरेर्लुग् वा ४।४४२) अपभ्रंश में गम् धातु से परे एप्पिणु, एप्पि हो तो इनके एकार का लुक् विकल्प से होता है। गत्वा (गम्प्पिणु, गम्पि)। पक्ष में—गमेप्पिणु, गमेप्पि।

नियम १११० (तृनोऽणअः ४।४४३) अपभ्रंश में तृन् प्रत्यय को अणअ आदेश होता है। कथयिता (बोल्लणउ)।

नियम ११११ (लिंगमतन्त्रम् ४।४४५) अपभ्रंश में लिंग का नियम निश्चित नहीं है।

(१) गय कुम्भइं दारन्तु। (२) अब्भा लग्गा डुङ्गरिहिं।
(३) पाइ विलग्गी अन्त्रडी। (४) डालइं मोडन्ति।

(१) कुम्भ शब्द पुंलिंग है, परन्तु यहां नपुंसकलिंग में हैं।
(२) अब्भ शब्द नपुंसकलिंग है, यहां पुंलिंग में है।
(३) अंत शब्द नपुंसक है, यहां स्त्रीलिंग में है।
(४) डाली शब्द स्त्रीलिंग है, यहां नपुंसकलिंग में है।

नियम १११२ (शेषं शौरसेनी वत् ४।४४६) अपभ्रंश में प्रायः शौरसेनी के समान कार्य होता है। **इति अपभ्रंश।**

नियम १११३ (व्यत्ययश्च ४।४४७) प्राकृत आदि भाषाओं में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यत्यय होता है। मागधी में (तिष्ठश्चिष्ठः ४।२९८) से तिष्ठ को चिष्ठ होता है। उसी प्रकार प्राकृत, पैशाची और शौरसेनी में भी होता है। क्रियाओं में भी व्यत्यय होता है। वर्तमान काल की क्रिया भूतकाल के अर्थ में आती है। जैसे—अह पेच्छइ रहुतणओ। (अथ प्रेक्षाञ्चक्रे इत्यर्थः)। आभासइ रयणीअरे (आ बभाषे रजनीचरान् इत्यर्थः)। भूतकाल की क्रिया वर्तमान काल में प्रयुक्त होती है—सोहीअ एस वण्ठो (शृणोति एष वण्ठ इत्यर्थः)।

नियम १११४ (शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ४।४४८) प्राकृत भाषा आदि में जो नियम नहीं कहे गए हैं वे संस्कृत व्याकरण के अनुस्वार चलते हैं। हेट्ठट्ठिअ सूर निवारणाय—यहां चतुर्थी का आदेश प्राकृत में नहीं कहा गया है, वह संस्कृत से ही समझें। कहीं-कहीं पर नियम कहा भी गया है तो भी संस्कृत के समान होता है, जैसे—प्राकृत में उरस् शब्द का सप्तमी का एक वचन का उरे, उरम्मि बनता है, तो भी कहीं उरसि भी होता है। इसी प्रकार सिरे, सिरम्मि के साथ शिरसि। सरे, सरम्मि के साथ सरसि। इत्यादि।

वर्तमान कृदन्त (शतृ-शान)

हंसता हुआ, खाता हुआ, उठता हुआ आदि अर्थों में वर्तमान कृदन्त आता है। वर्तमान कृदन्त के रूप विशेषण होते हैं। विशेष्य के अनुसार इनमें लिंग और वचन होते हैं। अपभ्रंश में वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय न्त और माण ये दो हैं। पुंलिंग में इनके रूप जिण शब्द की तरह, स्त्रीलिंग में माला शब्द की तरह और नपुंसक लिंग में कमल शब्द की तरह चलते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग—	हसन्तु/हसन्तो/हसंत/हसंता	हसन्त/हसन्ता
	हसमाणु/हसमाणो/हसमाण/हसमाणा	हसमाण/हसमाणा
स्त्रीलिंग—	हसंता/हसंत	हसंता/हसंत/हसंताउ/हसंतउ हसंताओ/हसंतओ
	हसमाण/हसमाणा	हसमाणा/हसमाण/हसमाणाउ/हसमाणउ/हसमाणाओ/हसमाणओ
नपुंसकलिंग—	विअसंतु/विअसंत/विअसंता/विअसमाणु/विअसमाण/विअसमाणा	विअसंत/विअसंता/विअसंतइं/विअसंताइं/विअसमाण/विअसमाणा/विअसमाणइं/विअसमाणाइं

प्रयोग वाक्य (शतृ-शान प्रत्यय)

(१) सु/सो/लिहन्तु/लिहन्तो/लिहन्त/लिहन्ता भुंजइ (वह लिखता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हुआ खाता है)। (२) स/सु/लिहमाणु/लिहमाणो/लिहमाण/लिहमाणा भुंजउ (वह लिखता हुआ खाए)। (३) ते लिहन्त/लिहन्ता भुंजेसहिं (वे लिखते हुए खाएंगे)। (४) ते लिहमाण/लिहमाणा उट्ठिआ (वे लिखते हुए उठे)। (५) सा भुंजन्ता/भुंजन्त पढइ (वह खाती हुई पढती है)। (६) ता भुंजंता/भुंजंत/भुंजंताउ/भुंजंतउ/भुंजंताओ/भुजंतओ पढंति। (७) कमलु विअसंतु/विअसंत/विअसंता/विअसमाणु/विअसमाण/विअसमाणा हसइ। (८) कमलइं विअसंत/विअसंता/विअसंतइं/विअसंताइं/विअसमाण/ विअसमाणा/विअसमाणइं / विअसमाणाइं हसंति (कमल खिलते हुए हंसते हैं)।

बालओ उट्ठन्तु पडइ। सो आंखिउ चोरन्तो लुक्कइ। बिन्दू पडमाणा नस्संति। जंतू उस्ससंता मरंति। साहु जेमन्तो भोयण न मग्गइ। तुहुं खेलन्तो उवविससि। मेहा सुमरन्ता वड्ढइ। महिलाउ णच्चन्ताउ थक्कंति। सा घुमन्त पडइ।

अपभ्रंश में अनुवाद करो (शतृ-शान का प्रयोग करो)

तुम वर्णन करते हुए भूल गए। तुम पढते हुए हंसते हो। वे देते हुए मांगने लगे। तुम जीमते हुए उठे। मैं स्मरण करता हुआ भूल गया। मैं हंसता हुआ जीता हूं। पानी फैलता हुआ सूखता है। श्रद्धा बढती हुई शोभती है। महिलाएं हंसती हुई घूमती हैं। पुत्री जागती हुई उठी। वह नाचती हुई गिरी। मेघ गरजते हुए गए। वह हंसता हुआ बोला। माता कथा कहती हुई सोई। पुत्री सेवा करती हुई उठी। बालक दौडता हुआ खाता है। बहिन खेलती हुई रोने लगी। आग जलती हुई नष्ट हो गई। आग जलती हुई फैलने लगी। दादा मकान में गिरता हुआ उठा। पुत्री स्तुति करती हुई निंदा करने लगी। बुढापा बढता हुआ रुक गया।

प्रश्न

१. उच्चारण-लाघव किन स्वरों का होता है ?
२. अपभ्रंश में दृश् और ग्रह् धातु को क्या आदेश होता है ?
३. अनुगच्छति, तिष्ठति, आक्रम्यते, दहइ—इन रूपों का अपभ्रंश में क्या-क्या रूप बनता है ?
४. क्त्वा और तुम् प्रत्यय को कौन-कौन से प्रत्यय आदेश होते हैं ? प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दो।
५. अणअ आदेश किस प्रत्यय को होता है ?
६. तव्य प्रत्यय को कितने आदेश होते हैं। प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दो।
७. इस पाठ में आई हुई किन्हीं सात धातुओं और सात शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग करो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट

	पृष्ठ
१. प्राकृत शब्द रूपावली	४५१
२. प्राकृत धातु रूपावली	४७७
३. अपभ्रंश शब्द रूपावली	५१०
४. अपभ्रंश धातु रूपावली	५२६
५. अकार आदि क्रम से वर्ग व शब्द संग्रह	५४१
६. एकार्थ धातुएं	५६८
७. वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा	५८७
सहायक ग्रंथ सूचि	५९८
शुद्धि-पत्र	६००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट १

पंलिगाः शब्दाः

१ अकारान्त जिण (जिन) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० जिणो (जिणे)	जिणा
द्वि० जिणं	जिणा, जिणे
तृ० जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ
पं० जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ जिणाहि, जिणाहिंतो, जिणा	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ जिणाहि, जिणेहि, जिणाहिंतो, जिणेहिंतो, जिणासुंतो, जिणेसुंतो
च०, ष० जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
स० जिणे (जिणंसि) जिणम्मि	जिणेसु, जिणेसुं
सं० हे जिण, हे जिणो, हे जिणा	हे जिणा

वीर, वच्छ, राम, देव, सावग आदि सभी अकारान्त पुंलिग शब्दों के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं।

(कोष्ठक में दिए गए रूप आर्ष रूप हैं)।

२ आकारान्त गोवा (गोपा) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० गोवो	गोवा
द्वि० गोवां	गोवा
तृ० गोवाण, गोवाणं	गोवाहि, गोवाहिं, गोवाहिँ
पं० गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहिंतो	गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहिंतो, गोवासुंतो
च०, ष० गोवस्स	गोवाण, गोवाणं
स० गोवम्मि	गोवासु, गोवासुं
सं० हे गोवो, हे गोवा	हे गोवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३ इकारान्त मुणि (मुनि) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मुणी	मुणिणो, मुणी, मुणउ, मुणओ
द्वि० मुणिं	मुणिणो, मुणी
तृ० मुणिणा	मुणीहि, मुणीहिं, मुणीहिँ
पं० मुणिणो, मुणित्तो, मुणीओ मुणीउ, मुणीहिंतो	मुणित्तो, मुणीओ, मुणीउ मुणीहिंतो, मुणीसुंतो
च०, ष० मुणिणो, मुणिस्स	मुणीण, मुणीणं
स० मुणिम्मि (मुणिंसि)	मुणीसु, मुणीसुं
सं० हे मुणि, हे मुणी	हे मुणिणो, हे मुणी, हे मुणउ, हे मुणओ

कवि, रिसि, पाणि, हरि, अग्गि, णरवइ, बोहि, समाहि आदि शब्दों के रूप मुणी शब्द की तरह चलते हैं।

४ ईकारान्त गामणी (ग्रामणी) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० गामणी	गामणिणो, गामणी, गामणउ, गामणओ
द्वि० गामणिं	गामणिणो, गामणी
तृ० गामणिणा	गामणीहि, गामणीहिं, गामणीहिँ
पं० गामणिणो, गामणित्तो गामणीओ, गामणीउ गामणीहिंतो	गामणित्तो, गामणीओ, गामणीउ गामणीहिंतो, गामणीसुंतो
च०, ष० गामणिणो, गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
स० गामणिम्मि (गामणिंसि)	गामणीसु, गामणीसुं
सं० हे गामणि, हे गामणी	हे गामणिणो, हे गामणी, हे गामणउ, हे गामणओ

पही (प्रधी) के रूप गामणी शब्द की तरह चलते हैं।

५ उकारान्त साहु (साधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० साहू, साहु	साहुणो, साहू, साहओ, साहउ, साहवो (साहवे)[1]
द्वि० साहुं	साहुणो, साहू
तृ० साहुणा	साहूहि, साहूहिं, साहूहिँ

१. अवे प्रत्यय का रूप (साहवे आदि) आर्ष प्राकृत में पर्याप्त रूप से मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं० साहुणो, साहुत्तो, साहूओ साहूउ, साहूहिंतो	साहुत्तो, साहूओ, साहूउ साहूहिंतो, साहूसुंतो
च०, ष० साहुणो, साहुस्स	साहूण, साहूणं
स० साहुम्मि (साहुंसि)	साहूसु, साहूसुं
सं० हे साहू, हे साहु	हे साहुणो, हे साहू, हे साहउ हे साहओ, हे साहवो

गुरु, गउ, भिक्खु, धणु, मेरु, इंदु, मच्चु, सेउ, सव्वण्णु आदि उकारान्त शब्दों के रूप साहु शब्द की तरह चलते हैं।

६ ऊकारान्त खलपू (खलपू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० खलपू	खलपुणो, खलपू, खलपउ, खलपओ, खलपवो
द्वि० खलपुं	खलपुणो, खलपू
तृ० खलपुणा	खलपूहि, खलपूहिं, खलपूहिँ
पं० खलपुणो, खलपुत्तो, खलपूओ, खलपूउ, खलपूहिंतो	खलपुत्तो, खलपूओ, खलपूउ खलपूहिन्तो, खलपूसुन्तो
च०, ष० खलपुणो, खलपुस्स	खलपूण, खलपूणं
स० खलपुम्मि, (खलपुंसि)	खलपूसु, खलपूसुं
सं० हे खलपू, हे खलपु	हे खलपुणो, हे खलपू, हे खलपउ हे खलपओ, हे खलपवो

७ ऊकारान्त सयंभू (स्वयंभू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सयंभू	सयंभुणो, सयंभू, सयंभओ, सयंभउ

शेष रूप खलपू शब्द के समान चलते हैं।

गोत्तभू, सरभू, अभिभू अदि शब्दों के रूप सयंभू शब्द की तरह चलते हैं।

८ ऋकारान्त पिउ, पितु, पिअर, पितर (पितृ) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० पिआ, पिअरो	पिअवो, पिअओ पिअउ, पिऊ, पिअरा
द्वि० पिअरं	पिऊ, पिउणो, पिअरे, पिअरा
तृ० पिउणा, पिअरेण पिअरेणं	पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ, पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ
पं० पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ	पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	पिऊउ, पिऊहिंतो, पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअराहिंतो, पिअरा	पिऊसुन्तो, पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिन्तो पिअरेहिन्तो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
च०, ष०	पिउणो, पिउस्स, पिअरस्स	पिऊण, पिऊणं, पिअराण, पिअराणं
स०	पिउम्मि (पिउंसि) पिअरम्मि (पिअरंसि) पिअरे	पिऊसु, पिऊसुं, पिअरेसु, पिअरेसुं
सं०	हे पिअ, हे पिअरं, हे पिअरो हे पिअरा, हे पिअर	हे पिउणो, हे पिऊ, हे पिअवो, हे पिअओ, हे पिअउ, हे पिअरा

(पिउ के रूप साहु और पिअर के रूप जिण की तरह चलते हैं)।

पितु के रूप पिउ के समान और पितर के रूप पिअर के समान चलते हैं। पिआ के स्थान पिया तथा पिअ के स्थान पर पिय रूप भी मिलता है।

९ ऋकारान्त कत्तु, कत्तार (कर्तृ) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	कत्ता, कत्तारो	कत्तारा, कत्तओ, कत्तुणो
द्वि०	कत्तारं	कत्तारा, कत्तुणो
तृ०	कत्तारेण, कत्तुणा	कत्तारेहि, कत्तारेहिं, कत्तारेहिँ
पं०	कत्तुणो, कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो, कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहि, कत्ताराहिंतो, कत्तारा	कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तूहिन्तो कत्तूसुन्तो, कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहिंतो, कत्तारासुंतो
च०, ष०	कत्तुणो, कत्तुस्स, कत्तारस्स	कत्तूण, कत्तूणं, कत्ताराण, कत्ताराणं
स०	कत्तारम्मि, कत्तुम्मि, कत्तारे	कत्तुसु, कत्तुसुं, कत्तारेसु, कत्तारेसुं
सं०	हे कत्त, हे कत्तारो	हे कत्तू, हे कत्तुणो, हे कत्तउ हे कत्तओ, हे कत्तवो, हे कत्तारा

इसी प्रकार अन्य ऋकारान्त शब्दों के रूप चलते हैं।

भ्रातृ—भायर, भाउ वक्तृ—वत्तार, वत्तु
दातृ—दायार, दाउ ज्ञातृ—णायार, णाउ
जामातृ—जामायर, जामाउ

१० ऋकारान्त भत्तु, भत्तार (भर्तृ) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	भत्ता, भत्तारो	भत्तुणो, भत्तू, भत्तउ, भत्तओ, भत्तारा, भत्तवो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि० भत्तारं	भत्तुणो, भत्तू, भत्तारे, भत्तारा
तृ० भत्तुणा, भत्तारेण, भत्तारेणं	भत्तुहि, भत्तुहिं, भत्तुहिँ, भत्तारेहि, भत्तारेहिं भत्तारेहिँ
पं० भत्तुणो, भत्तुत्तो, भत्तूओ भत्तूउ, भत्तूहिन्तो, भत्तारत्तो, भत्ताराओ, भत्ताराउ भत्ताराहि, भत्ताराहिन्तो, भत्तारा	भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहिन्तो भत्तूसुन्तो भत्तारत्तो, भत्ताराओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्तारेहि, भत्ताराहिंतो, भत्तारेहिंतो, भत्तारासुन्तो, भत्तारेसुन्तो
च०, ष० भत्तुणो, भत्तुस्स, भत्तारस्स	भत्तूण, भत्तूणं, भत्ताराण, भत्ताराणं
स० भत्तुम्मि, भत्तारम्मि, भत्तारे	भत्तूसु, भत्तूसुं, भत्तारेसु, भत्तारेसुं
सं० हे भत्त, हे भत्तारो	हे भत्तू, हे भत्तुणो, हे भत्तउ, हे भत्तओ, हे भत्तवो, हे भत्तारा

उकारान्त भत्तु शब्द के रूप साहु की तरह और अकारान्त भत्तार शब्द के रूप जिण की तरह चलते हैं।

११ ऐकारान्त सुरेअ (सुरै) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सुरेअ	सुरेआ
द्वि० सुरेअं	सुरेआ, सुरेए
तृ० सुरेण	सुरेएहि, सुरेएहिं, सुरेएहिँ
पं० सुरेअत्तो, सुरेआओ सुरेआउ, सुरेआहि, सुरेआहिंतो, सुरेआ	सुरेअत्तो, सुरेआओ, सुरेआउ, सुरेआहि, सुरेएहि, सुरेआहिंतो सुरेएहिंतो, सुरेआसुंतो, सुरेएसुंतो
च०, ष० सुरेअस्स, सुरेअंसि, सुरेअम्मि	सुरेआण, सुरेआणं, सुरेएसु, सुरेएसुं

संस्कृत के ऐकारान्त शब्द प्राकृत में अकारान्त हो जाते हैं।

१२ औकारान्त गिलाअ (ग्लौ) शब्द

गिलोअ शब्द के रूप पुंलिग अकारान्त जिण शब्द की तरह चलते हैं।

१३ तवस्सि (तपस्विन्) शब्द

(इसके रूप इकारान्त पुंलिग मुणि शब्द की तरह चलते हैं। दण्डिन् (दण्डि) करिन् (करि) प्राणिन् (पाणि) आदि इन्नन्त पुंलिग शब्द तवस्सि की तरह यानि मुणि की तरह चलते हैं)।

१४ नकारान्त राय (राजन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० राया, रायो, रायाणो	रायाणो, राइणो, राया, रायाणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि० राइणं, रायं, रायाणं	राइणो, रायाणो, रण्णो, राए, राया, रायाणा
तृ० राइणा, रण्णा, राएण, राएणं रायाणेण, रायणेणं, रायणा	राईहि, राईहिं, राईहिं, राएहि, राएहिं, राएहिँ, रायाणेहि, रायाणेहिं, रायाणेहिँ
पं० राइणो, रण्णो, रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, रायाहिंतो	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राईसुन्तो, रायत्तो, रायाओ, रायाउ, रायाहि, राएहि, रायाहिन्तो, राएहिन्तो रायासुन्तो, राएसुन्तो, रायाणत्तो, रायाणाओ, रायाणाउ
च०, ष० राइणो, रण्णो, रायस्स रायाणस्स, रायणो	राईण, राईणं, राइणं, रायाण, रायाणं, रायाणाण, रायाणाणं
स० (राइंसि) राइम्मि (रायाणंसि) रायम्मि, राये, रायाणे, रायाणम्मि	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं, रायाणेसु रायाणेसुं
सं० हे राया, हे राय, हे रायो, हे रायाण, हे रायाणो	हे राइणो, हे रायाणो, हे राया, हे रायाणा

प्राकृत में व्यंजनान्त शब्द नहीं होते हैं। या तो उनके अंतिम व्यंजन का लोप हो जाता है या वे अकारान्त के रूप में बदल जाते हैं। संस्कृत की अपेक्षा वे व्यंजनान्त होते हैं।

१५ नकारान्त अप्पाण, अत्ताण, अप्प और अत्त (आत्मन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अप्पा, अत्ता, अप्पाणो, अप्पो	अप्पाणो, अत्ताणो, अप्पाणा, अप्पा
द्वि० अप्पिणं, अत्ताणं, अप्पाणं, अप्पं	अप्पाणो, अत्ताणो, अप्पाणे, अप्पे
तृ० अप्पणिआ, अप्पणइआ अप्पणा, अत्ताणा, अप्पेण अप्पेणं, अप्पाणेण, अप्पाणेणं	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ अप्पाणेहि, अप्पाणेहिं, अप्पाणेहिँ
पं० अप्पाणो, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो अप्पाणा, अप्पणो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि,	अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणेहि अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणेहिन्तो अप्पाणासुन्तो, अप्पाणेसुन्तो, अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पेहि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पाहिन्तो, अप्पा	अप्पाहिन्तो, अप्पेहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेसुन्तो
च०, ष० अप्पाणस्स, अप्पस्स, अप्पणो, अत्तणो	अप्पाणाण, अप्पाणाणं, अप्पाण अप्पाणं, अप्पिण, अत्ताणाण, अत्ताणाणं
स० अप्पाणम्मि, अप्पाणे, अप्पम्मि अप्पे, अत्ताणम्मि (अप्पंसि) (अप्पाणंसि)	अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं, अप्पेसु अप्पेसुं, अत्ताणेसु, अत्ताणेसुं
सं० हे अप्पाणो, हे अप्पो, हे अप्प	हे अप्पाणो, हे अप्पाण, हे अप्पा

(अप्प शब्द के रूप राजन् की तरह और अप्पाण शब्द के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं। इसी प्रकार ब्रह्मन् (बम्ह, बम्हाण) युवन् (जुव, जुवाण) ग्रावन् (गाव, गावाण) उक्षन् (उच्छ, उच्छाण) शब्दों के रूप चलते हैं।)

१६ नकारान्त महव, महवाण (मघवन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० महवा	महवा
द्वि० महवं	महवा
तृ० महवेण, महवेणं	महवेहि, महवेहिं, महवेहिँ
पं० महवत्तो महवाओ महवाउ महवाहि, महवाहिंतो, महोणो	महवत्तो, महवाओ, महवाउ, महवाहि, महवेहि, महवाहिंतो, महवासुंतो
च०, ष० महवस्स,	महवाण, महवाणं
स० महवे, महविम्मि	महवेसु, महवेसुं

अकारान्त महवाण शब्द के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं।

१७ नकारान्त मुद्ध, मुद्धाण (मुग्धन्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मुद्धा	मुद्धा
द्वि० मुद्धं	मुद्धा
तृ० मुद्धेण, मुद्धेणं	मुद्धेहि, मुद्धेहिं, मुद्धेहिँ
पं० मुद्धत्तो, मुद्धाओ, मुद्धाउ, मुद्धाहि, मुद्धाहिंतो	मुद्धत्तो, मुद्धाओ, मुद्धाउ, मुद्धाहि मुद्धेहि मुद्धाहिंतो, मुद्धासुन्तो
च०, ष० मुद्धणो, मुद्धस्स	मुद्धाण, मुद्धाणं
स० मुद्धम्मि, मुद्धे	मुद्धेसु, मुद्धेसुं

(मुद्धाण शब्द के रूप जिण शब्द की तरह चलते हैं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८ नकारान्त जन्मन् (जम्म) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० जम्मो	जम्मा
द्वि० जम्मं	जम्मे, जम्मा
तृ० जम्मेण, जम्मेणं	जम्मेहि, जम्मेहिं, जम्मेहिँ
पं० जम्मत्तो, जम्माओ, जम्माउ, जम्माहि, जम्माहिंतो	जम्मत्तो, जम्माओ जम्माउ, जम्माहि, जम्मेहि, जम्माहिंतो, जम्मेहिन्तो, जम्मासुंतो, जम्मेसुंतो
च०, ष० जम्मस्स	जम्माण, जम्माणं
स० जम्मे, जम्मम्मि	जम्मेसु, जम्मेसुं

१९ सकारान्त चन्दम (चन्द्रमस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० चन्दमो	चन्दमा
द्वि० चन्दमं	चन्दमा, चन्दमे
तृ० चन्दमेण, चंदमेणं	चन्दमेहि, चन्दमेहिं, चन्दमेहिँ
पं० चन्दमत्तो, चन्दमाओ चन्दमाउ, चन्दमाहि, चन्दमाहिंतो	चन्दमत्तो, चन्दमाओ, चन्दमाउ, चन्दमाहि, चन्दमेहि, चन्दमाहिंतो, चन्दमासुन्तो
च०, ष० चन्दमस्स	चन्दमाण, चन्दमाणं
स० चन्दमे, चन्दमम्मि	चन्दमेसु, चन्दमेसुं

२० शतृ प्रत्यय हसन्त, हसमाण (हसत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० हसन्तो, हसमाणो	हसन्ता, हसमाणा
द्वि० हसन्तं, हसमाणं	हसन्ते, हसमाणे
तृ० हसन्तेण, हसमाणेण हसन्तेणं, हसमाणेणं	हसन्तेहि, हसन्तेहिं, हसन्तेहिँ, हसमाणेहि, हसमाणेहिं हसमाणेहिँ
पं० हसन्तत्तो, हसमाणत्तो हसंताओ, हसंताउ, हसंताहि, हसंताहिंतो, हसमाणाओ, हसमाणाउ, हसमाणाहि, हसमाणाहिंतो	हसन्तत्तो, हसन्ताओ, हसन्ताउ, हसन्ताहि, हसन्तेहि, हसन्ताहिन्तो, हसन्तेहिंतो, हसन्तासुंतो, हसेन्तेसुंतो, हसमाणत्तो, हसमाणाओ, हसमाणाउ, हसमाणाहि, हसमाणेहि, हसमाणाहिंतो, हसमाणेहिन्तो, हसमाणासुंतो, हसमाणेसुंतो
च०, ष० हसन्तस्स, हसमाणस्स	हसन्ताण, हसन्ताणं, हसमाणाण, हसमाणाणं
स० हसन्तम्मि, हसमाणम्मि	हसन्तेसु, हसन्तेसुं, हसमाणेसु, हसमाणेसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२१ तकारान्त भगवन्त (भगवत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	भगवन्तो	भगवन्ता
द्वि०	भगवन्तं	भगवन्ते, भगवंता
तृ०	भगवन्तेण, भगवन्तेणं	भगवन्तेहि, भगवन्तेहिं, भगवन्तेहिँ
पं०	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ भगवन्ताउ, भगवन्ताहि, भगवन्ताहिंतो	भगवन्तत्तो, भगवन्ताओ, भगवन्ताउ, भगवन्ताहि, भगवन्तेहि भगवन्ताहिंतो, भगवन्तासुन्तो
च०, ष०	भगवन्तस्स	भगवन्ताण, भगवन्ताणं
स०	भगवन्तम्मि	भगवन्तेसु, भगवन्तेसुं

स्त्रीलिंगाः शब्दाः

२२ आकारान्त माला (माला) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माला	मालाओ, मालाउ, माला
द्वि०	मालं	मालाओ, मालाउ, माला
तृ०	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ
पं०	मालाअ, मालाइ, मालाए मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो मालासुन्तो
च०, ष०	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
स०	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु, मालासुं
सं०	हे माले, हे माला	हे मालाओ, हेमालाउ, हेमाला

इसी प्रकार रमा, कण्णा, कहा, आणा, पण्णा, स्पृहा (छिहा) लता (लदा) ससा (स्वसृ) छुहा (क्षुध्) हलिद्दा, मट्टिआ आदि शब्द चलते हैं।

२३ इकारान्त स्त्रीलिंग मइ शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मई, मईआ	मईओ, मईउ, मई
द्वि०	मइं	मईओ, मईउ, मई
तृ०	मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईहि, मईहिं, मईहिँ
पं०	मईअ, मईआ, मईइ, मईए मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो	मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो मईसुन्तो
च०, ष०	मईअ, मईआ, मइइ, मईए	मईण, मईणं
स०	मईअ, मईआ, मईइ, मईए	मईसु, मईसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० हे मइ, हे मई	हे मई, हे मईउ, हे मईओ

इसी प्रकार मुत्ति, राइ, थुइ, इड्ढि, धिइ (धृति) वसहि (वसति) आदि शब्द चलते हैं।

(स्त्रीलिंग सभी इकारान्त शब्द मइ की तरह ही चलते हैं।)

२४　　ईकारान्त स्त्रीलिंग वाणी (वाणी) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वाणी, वाणीआ	वाणी, वाणीआ, वाणीउ, वाणीओ
द्वि० वाणिं	वाणी, वाणीआ, वाणीउ, वाणीओ
तृ० वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीहि, वाणीहिं, वाणीहिँ
पं० वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए, वाणित्तो, वाणीओ, वाणीउ	वाणित्तो, वाणीओ, वाणीउ, वाणीहिन्तो, वाणीसुन्तो
च०,ष० वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीण, वाणीणं
स० वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीसु, वाणीसुं
सं० हे वाणि	हे वाणीआ, हे वाणीउ, हे वाणीओ, हे वाणी

इसी प्रकार नदी, इत्थी, पुढवी, बहिणी, सई (सती) लच्छी (लक्ष्मी) रुप्पिणी (रुक्मणी) आदि शब्दों के रूप चलते हैं।

२५　　उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु (धेनु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० धेणू	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
द्वि० धेणुं	धेणूउ, धेणूओ, धेणू
तृ० धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि धेणूहिं, धेणूहिँ,
पं० धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए, धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिन्तो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ धेणूहिन्तो, धेणूसुन्तो
च०, ष० धेणूअ, धेणुआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूण, धेणूणं
स० धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूसु, धेणूसुं
हे धेणु	हे धेणुउ, हे धेणुओ, हे धेणु

इसी प्रकार तणु (तनु) रज्जु आदि शब्द चलते हैं।

२६　　ऊकारान्त स्त्रीलिंग वधू [वहू] शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वहू	वहूउ, वहूओ, वहू
द्वि० वहुं	वहूउ, वहूओ, वहू

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

तृ०	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूहि, वहूहिं, वहूहिँ
पं०	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहुत्तो, वहूओ, वहूउ
	वहुत्तो, वहूओ, वहूउ, वहूहिन्तो	वहूहिन्तो, वहूसुन्तो
च०, ष०	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूण, वहूणं
स०	वहूअ. वहूआ वहूइ, वहूए	वहूसु, वहूसुं
	हे वहु	हे वहूओ, हे वहूउ, हे वहू

इसी प्रकार सासू (श्वश्रु) चमू (चमू) आदि शब्द चलते हैं।

रूपों की समानता

- स्त्रीलिंग के आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारांत शब्दों के सभी रूप समान हैं, केवल दीर्घ ईकारान्त शब्दों के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में आ प्रत्यय का रूप विशेष होता है।
- आकारान्त को छोड, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों के तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक एक वचन में आकारान्त से आ प्रत्यय अधिक लगता है।
- द्वितीया के एकवचन और पंचमी के त्तो प्रत्यय परे रहने पर शब्द का अन्तिम दीर्घस्वर ह्रस्व हो जाता है। शेष स्थानों पर शब्द का अंतिम स्वर दीर्घ हो जाता है।
- ईकारान्त और ऊकारान्त के संबोधन के एकवचन में ह्रस्व होता है तथा इकारान्त और उकारान्त के सम्बोधन के एकवचन में विकल्प से ह्रस्व होता है।

२७ ऋकारान्त स्त्रीलिंग माआ, माअरा, माउ (मातृ) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माआ, माअरा	माअरा, माअराउ, माअराओ, माआ, माआउ, माआओ, माऊ, माऊउ, माऊओ
द्वि०	माअं, माअरं	माअरा, माअराउ, माअराओ, माआ, माआउ, माआओ, माऊ, माऊउ, माऊओ
तृ०	माअराअ, माअराइ, माअराए	माअराहि, माअराहिं, माअराहिँ
	माआअ, माआइ, माआए	माआहि, माआहिं, माआहिँ
	माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माऊहि, माऊहिं, माऊहिँ
पं०	माअराअ, माअराइ, माअराए	माअरत्तो, माअराओ, माअराउ,
	माअरत्तो, माअराओ माअराउ	माअराहिन्तो, माअरासुन्तो
	माअराहिन्तो, माआअ, माआइ,	माअत्तो, माआओ, माआउ
	माआए माअत्तो, माआओ	माआहिन्तो, माआसुन्तो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	माआउ, माआहिन्तो, माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए माउत्तो, माऊओ, माऊउ, माऊहिन्तो	माउत्तो,माऊओ माऊउ, माऊहिन्तो, माऊसुन्तो
च०, ष०	माअराअ, माअराइ, माअराए माआअ, माआइ, माआए माऊअ, माऊआ, माऊइ, माऊए	माअराण, माअराणं, माआण, माआणं माऊण, माऊणं, माईण, माईणं
स०	माअराअ, माअराइ, माअराए माआअ, माआइ, माआए माऊअ माऊआ, माऊइ, माऊए	माअरासु, माअरासुं, माआसु, माआसुं, माऊसु, माऊसुं
सं०	हे माआ	हे माआओ, हे माआउ, हे माआ

इसी प्रकार दुहितृ (दुहिआ) ननान्दृ (नणंदा) पितृस्वसृ (पिउसिया, पिउच्छा) मातृस्वसृ (माउसिया, माउच्छा) आदि शब्दों के रूप मातृ शब्द की तरह चलते हैं ।

२८ ओकारान्त गो (गो) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	गावी, गावीआ	गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी
द्वि०	गाविं	गावीआ, गावीउ, गावीओ, गावी
तृ०	गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीहि, गावीहिं, गावीहिँ
पं०	गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए, गावित्तो, गावीओ, गावीउ, गावीहिन्तो	गावित्तो, गावीओ, गावीउ, गाविहिन्तो, गावीसुन्तो
च०, ष०	गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीण, गावीणं
स०	गावीअ, गावीआ, गावीइ, गावीए	गावीसु, गावीसुं
सं०	हे गावि	हे गावीआ, हे गावीउ, हे गावीओ, हे गावी

गावी शब्द के रूप वाणी की तरह चलते हैं ।

२९ औकारान्त नावा (नौ) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	नावा	नावाओ, नावाउ, नावा
द्वि०	नावं	नावाओ, नावाउ, नावा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० नावाअ, नावाइ, नावाए	नावाहि, नावाहिं, नावाहिँ
पं० नावाअ, नावाइ, नावाए नावत्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो	नावत्तो, नावाओ, नावाउ, नावाहिन्तो नावासुन्तो
च०, ष० नावाअ, नावाइ, नावाए	नावाण, नावाणं
स० नावाअ, नावाइ, नावाए	नावासु, नावासुं
सं० हे नावा	हे नावाओ, हे नावाउ, हे नावा

नावा के रूप माला की तरह चलते हैं।

नपुंसकलिंगाः शब्दाः

३० अकारान्त नपुंसक वण (वन) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वणं	वणाइँ, वणाइं, वणाणि
द्वि० वणं	वणाइँ, वणाइं, वणाणि
तृ० वणेण	वणेहि, वणेहिं, वणेहिँ
पं० वणत्तो, वणाओ, वणाउ, वणाहि, वणाहिन्तो, वणा	वणत्तो, वणाओ, वणाउ, वणाहि वणाहिन्तो, वणासुन्तो
च०, ष० वणस्स	वणाण, वणाणं
स० वणे, वणम्मि	वणेसु, वणेसुं
सं० हे वण	हे वणाइँ, हे वणाइं, हे वणाणि

३१ इकारान्त (दधि) दहि शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० दहिं	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
द्वि० दहिं	दहीइँ, दहीइं, दहीणि
तृ० दहिणा	दहीहि, दहीहिं, दहीहिँ
पं० दहिणो, दहित्तो, दहीओ दहीउ, दहीहिन्तो	दहित्तो, दहीओ, दहीउ, दहीहिन्तो दहीसुन्तो
च०, ष० दहिणो, दहिस्स	दहीण, दहीणं
स० दहिम्मि	दहीसु, दहीसुं
सं० दे दहि	हे दहीइँ, हे दहीइं, हे दहीणि

(प्रथमा, द्वितीया और संबोधन को छोडकर शेष रूप मइ शब्द की तरह चलते हैं।)

३२ उकारान्त महु (मधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० महुं	महूइँ, महूइं, महूणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि० महुं	महूइँ, महूइं, महूणि
तृ० महुणा	महूहि महूहिं, महूहिँ,
पं० महुणो, महुत्तो, महूओ महूउ, महूहिन्तो	महुत्तो, महूओ, महूउ, महूहिन्तो महूसुन्तो
च०, ष० महुणो, महुस्स	महूण, महूणं
स० महुम्मि	महूसु, महूसुं
सं० हे महु	हे महूइँ, हे महूइं, हे महूणि

(प्रथमा, द्वितीया और संबोधन को छोडकर शेष रूप साहु शब्द की तरह चलते हैं।

व्यंजनान्त शब्द नपुंसकलिग

नपुंसकलिग में व्यंजनान्त शब्द के अंतिम वर्ण का लोप हो जाता है। शेष शब्द अकारान्त, इकारान्त, और उकारान्त रहते हैं। उनके रूप वण, दहि और महु की तरह चलते हैं। सुविधा की दृष्टि से कुछेक शब्दों के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

३३ अश्रु (अंसु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अंसुं	अंसूइँ, अंसूइं, अंसूणि
द्वि० अंसुं	अंसूइँ, अंसूइं, अंसूणि

(शेष रूप महु शब्द (३२) की तरह चलते हैं)।

३४ नकारात्मक दाम (दामन्) नपुंसकलिग शब्द

प्र० दामं	दामाइँ, दामाइं, दामाणि
द्वि० दामं	दामाइँ, दामाइं, दामाणि
तृ० दामेण	दामेहि, दामेहिं, दामेहिँ
पं० दामत्तो, दामाओ, दामाउ दामाहि, दामाहिंतो	दामत्तो, दामाओ, दामाउ, दामाहि दामाहिन्तो, दामासुन्तो
च०, ष० दामस्स	दामाण, दामाणं
स० दामम्मि	दामेसु, दामेसुं
सं० हे दाम	हे दामाइँ, हे दामाइं, हे दामाइ

३५ नकारान्त नाम (नामन्) नपुंसकलिग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० नामं	नामाइँ, नामाइं, नामाणि
द्वि० नामं	नामाइँ, नामाइं, नामाणि

(शेष रूप दामन् शब्द की तरह चलते हैं।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६ नकारान्त पेम्म (प्रेमन्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० पेम्मं	पेम्माइँ, पेम्माइं, पेम्माणि
द्वि० पेम्मं	पेम्माइँ, पेम्माइं, पेम्माणि

(शेष रूप दामन् शब्द की तरह चलते हैं)

३७ नकारान्त अह (अहन्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० अहं	अहाइँ, अहाइं, अहाणि
द्वि० अहं	अहाइँ, अहाइं, अहाणि

(शेष रूप दामन् शब्द की तरह चलते हैं)

३८ सकारान्त सेय (श्रेयस्) नपुंसकलिंग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सेयं	सेयाइँ, सेयाइं, सेयाणि
द्वि० सेयं	सेयाइँ, सेयाइं, सेयाणि

(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

३९ सकारान्त वय (वयस्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० वयं	वयाइँ, वयाइं, वयाणि
द्वि० वयं	वयाइँ, वयाइं, वयाणि

(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

४० शतृ प्रत्ययान्त हसंत, हसमाण (हसत्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र० हसन्तं	हसन्ताइँ, हसन्ताइं, हसन्ताणि
द्वि० हसन्तं	हसन्ताइँ, हसन्ताइं, हसन्ताणि

(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

प्र० हसमाणं	हसमाणाइँ, हसमाणाइं, हसमाणाणि
द्वि० हसमाणं	हसमाणाइँ, हसमाणाइं, हसमाणाणि

(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

४१ वत् प्रत्ययान्त भगवन्त (भगवत्) शब्द

प्र० भगवन्तं	भगवन्ताइँ, भगवन्ताइं, भगवन्ताणि
द्वि० भगवन्तं	भगवन्ताइँ, भगवन्ताइं, भगवन्ताणि

(शेष रूप वण शब्द की तरह चलते हैं)

४२ सकारान्त आउ, आउस (आयुष्) शब्द

प्र० आउं	आऊइँ, आऊइं, आऊणि
द्वि० आउं	आऊइँ, आऊइं, आऊणि

(शेष रूप महु शब्द की तरह चलते हैं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिलिंगाः शब्दाः

४३ क पुंलिंग अकारान्त सव्व (सर्व) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्वो (सव्वे)	सव्वे
द्वि०	सव्वं	सव्वे, सव्वा
तृ०	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ
पं०	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि सव्वेहि, सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो, सव्वासुंतो सव्वेसुंतो
च०, ष०	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स०	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहिं	सव्वेसु, सव्वेसुं
सं०	हे सव्व, हे सव्वो, हे सव्वा, (हे सव्वे)	हे सव्वे

४३ ख स्त्रीलिंग सव्वा (सर्वा) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्वा	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
द्वि०	सव्वं	सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वा
तृ०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि, सव्वाहिं, सव्वाहिँ
पं०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिंतो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहिंतो सव्वासुन्तो
च०, ष०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स०	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु, सव्वासुं
सं०	हे सव्वा	हे सव्वाओ, हे सव्वाउ, हे सव्वा

(सव्वा शब्द के रूप माला की तरह चलते हैं। चतुर्थी और षष्ठी के बहुवचन में सव्वेसिं रूप विशेष बनता है।)

सर्व आदि शब्दों को स्त्रीलिंग में ये आदेश होते हैं—

सर्व=सव्वी, सव्वा। यद्=जी, जा। तद्=ती, ता। किं=की, का। इदम्=इमी, इमा। एतद्=एई, एआ। अदस्=अमु। आकारान्त के रूप माला, ईकारान्त के रूप वाणी और उकारान्त के रूप धेणु की तरह चलते हैं। कुछेक रूप विशेष बनते हैं, इसलिए इन शब्दों के सब रूप दिए जा रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३ ग अकारान्त नपुंसक सव्व (सर्व) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्वं	सव्वाइँ, सव्वाइं, सव्वाणि
द्वि०	सव्वं	सव्वाइँ, सव्वाइं, सव्वाणि

(शेष रूप पुंलिंग सर्व शब्द के समान चलते हैं।)

विश्व (विस्स) उभय (उभय) कतर (कयर) अपर (अवर) इतर (इयर) आदि सर्वादि अकारान्त शब्द सर्व (सव्व) शब्द की तरह ही चलते हैं।

४४ क ज (यद्) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जो, (जे)	जे
द्वि०	जं	जे, जा
तृ०	जेण, जेणं, जिणा	जेहि, जेहिं, जेहिँ
पं०	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा, जम्हा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जेहि, जाहिन्तो, जेहिन्तो, जासुन्तो, जेसुन्तो
च०, ष०	जस्स	जेसिं, जाण, जाणं
स०	(जंसि) जस्सि, जम्मि, जत्थ, जहिं, जाहे, जाला, जइया	जेसु, जेसुं

४४ ख जा, जी (यद्) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जा	जीओ, जीउ, जीआ, जी, जाओ, जाउ, जा
द्वि०	जं	जीओ, जीउ, जीआ, जी, जाओ, जाउ, जा
तृ०	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जीहि, जीहिं, जीहिँ, जाहि, जाहिं, जाहिँ
पं०	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो	जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जीसुन्तो जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो
च०, ष०	जिस्सा, जीसे, जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जेसिं, जाण, जाणं
स०	जाअ, जाइ, जाए, जीअ, जीआ, जीइ, जीए	जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४ ग यत् (ज) नपुंसकलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जं	जाइँ, जाइं, जाणि
द्वि०	जं	जाइँ, जाइं, जाणि

(शेष रूप पुंलिग के समान चलते हैं।)

४५ क त, ण (तद्) पुंलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	स, सो, ण(से)	ते, णे
द्वि०	तं, णं	ते, ता, णे, णा
तृ०	तेण, तेणं, तिणा	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ
पं०	तो, तत्तो, ताओ, ताउ, तम्हा ताहि, ताहिन्तो, ता, णत्तो णाओ, णाउ णम्हा, णाहि, णाहिन्तो, णा	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहिन्तो, तेहिन्तो, तासुन्तो, तेसुन्तो, णत्तो, णाओ, णाउ, णाहि, णेहि, णाहिन्तो, णेहिन्तो, णासुन्तो, णेसुन्तो
च०, ष०	तस्स, तास	सिं, तास, तेसिं, ताण, ताणं
स०	(तंसि) तस्सि, तहिं, तत्थ ताहे, ताला, तइआ, (णंसि) णस्सि, णहिं, णम्मि, णत्थ णाहे, णाला, णइआ	तेसु, तेसुं, णेसु, णेसुं

४५ ख ता ती, णा, णी (तद्) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सा, ता, णा	तीआ, तीउ, तीओ, ती, ताउ, ताओ, ता
द्वि०	तं, णं	तीआ, तीउ, तीओ, ती, ताउ, ताओ, ता
तृ०	तीअ, तीआ, तीइ, तीए ताअ, ताइ, ताए	तीहि, तीहिं, तीहिँ, णाहि, णाहिं, णाहिँ ताहि, ताहिं, ताहिँ
पं०	तीअ, तीआ, तीइ, तीए तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो
च०, ष०	तिस्सा, तीसे तीअ, तीआ तीइ, तीए, तास, से, ताअ ताइ, ताए,	ताण, ताणं, तास
स०	तीअ, तीआ, तीइ, तीए ताअ, तइ, ताए	तीसु, तीसुं, तासु, तासुं

(तद् के आदेश णी और णा के रूप प्रथमा के एकवचन को छोडकर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो और ता की तरह चलते हैं।)

४५ ग त, ण (तद्) नपुंसकलिंग शब्द

प्र०, द्वि० तं, णं ताइँ, ताइं, ताणि, णाइँ, णाइं, णाणि

(शेष रूप पुंलिग की तरह चलते हैं।)

४६ क क (किं) पुंलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	को (के)	के
द्वि०	कं	के, का
तृ०	केण, केणं, किणा	केहि, केहिं, केहिँ
पं०	कत्तो, काओ, काउ, काहि काहिन्तो, कम्हा, किणो, कीस	कत्तो, काओ, काउ, काहि, केहि, काहिन्तो केहिन्तो, कासुन्तो, केसुन्तो
च०, ष०	कस्स, कास	काण, काणं, केसिं, कास
स०	कस्सि, कम्मि, कत्थ, कहिं काहे (कंसि) काला, कइआ	केसु, केसुं

४६ ख की, का (किं) स्त्रीलिंग शब्द

प्र०	का	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का
द्वि०	कं	कीआ, कीउ, कीओ, की, काउ, काओ, का
तृ०	कीअ, कीआ, कीइ, कीए काअ, काइ, काए	कीहि, कीहिं, कीहिँ, काहि, काहिं, काहिँ
पं०	कीअ, कीआ, कीइ, कीए कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो काअ, काइ, काए, कम्हा कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो	कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, कीसुन्तो कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो
च०, ष०	कास, किस्सा, कीसे, कीअ कीआ, कीइ, कीए, काअ काइ, काए	केसिं, काण, काणं
स०	कीअ, कीआ, कीइ कीए, काअ, काइ, काए	कीसु, कीसुं, कासु, कासुं

४६ ग क (किं) नपुंसकलिंग शब्द

प्र०, द्वि० किं काइँ, काइं, काणि

(शेष रूप पुंलिग की तरह चलते हैं।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४७ क इम (इदं) पुंलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अयं, इमो (इमे)	इमे
द्वि०	इमं, इणं, णं	इमे, इमा, णे, णा
तृ०	इमेण, इमेणं, इमिणा णेण, णेणं	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ एहि, एहिं, एहिँ
पं०	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमेहि इमाहिन्तो, इमेहिन्तो, इमासुन्तो, इमेसुन्तो
च०, ष०	इमस्स, अस्स, से	इमाण, इमाणं, सिं, इमेसिं
स०	अस्सि, इमस्सि, इमम्मि इह (इमंसि)	इमेसु, इमेसुं

४७ ख इमी, इमा (इदं) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमा, इमी, इमिआ	इमीआ, इमीउ, इमीओ, इमी, इमाओ इमाउ, इमा
द्वि०	इमिं, इमं, इणं, णं	इमीआ, इमीउ, इमीओ, इमी, इमाओ इमाउ, इमा, णाओ, णाउ, णा
तृ०	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए, णाअ णाइ, णाए	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ, इमाहि, इमाहिं इमाहिँ, णाहि, णाहिं, णाहिँ
पं०	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमीहिन्तो, इमाअ, इमाइ इमाए, इमत्तो, इमाओ इमाउ इमाहिन्तो	इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमीहिंतो इमीसुन्तो, इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहिन्तो, इमासुन्तो
च०, ष०	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए, से	इमीण, इमीणं, इमाण, इमाणं, सि
स०	मीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए इमाअ, इमाइ, इमाए	इमीसु, इमीसुं, इमासु, इमासुं

४७ ग इम (इदं) नपुंसकलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०, द्वि०	इदं, इणं, इणमो	इमाइँ, इमाइं, इमाणि

(शेष रूप वण (वन) शब्द की तरह चलते हैं।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८ क एअ (एतद्) पुंलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसो, एस, इणं, इणमो (एसे)	एए
द्वि०	एअं	एए, एआ
तृ०	एएण, एएणं, एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ
पं०	एअत्तो, एआओ, एआउ एआहि, एआहिन्तो, एआ एत्तो, एत्ताहे	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहि एआहिन्तो, एएहिन्तो, एआसुन्तो, एएसुन्तो
च०, ष०	एअस्स, से	एएसिं, एआण, एआणं, सिं
स०	एअंसि, एअम्मि, अयम्मि, ईयम्मि, एत्थ (एअंसि)	एएसु, एएसुं

४८ ख एई, एआ (एतद्) स्त्रीलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एसा, एस, इणं, इणमो एई, एइआ	एईओ, एईउ, एईआ, एई, एयाओ, एयाउ एआ
द्वि०	एइं, एअं	एईओ, एईउ, एईआ, एई, एआओ, एआउ एआ
तृ०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए	एईहि, एईहिं, एईहिँ, एआहि, एआहिं एआहिँ
पं०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो, एअत्तो, एआअ एआइ, एआए, एत्तो, एआओ एआउ, एआहिन्तो	एइत्तो, एईओ, एईउ एईहिन्तो एईसुन्तो एत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो एआसुन्तो,
च०, ष०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए, से	एईण, एईणं, एआण, एआणं, सिं, एएसिं
स०	एईअ, एईआ, एईइ, एईए एआअ, एआइ, एआए	एईसु, एईसुं, एआसु, एआसुं

४८ ग एअ, एत (एतद्) नपुंसकलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एअं, एस, इणं, इणामो	एआइँ, एआइं, एआणि
द्वि०	एअं	एआइँ, एआइं, एआणि

(शेष रूप पुंलिग की तरह चलते हैं।)

४९-क अमु (अदस्) पुंलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	अह, अमू	अमुणो, अमओ, अमवो, अमउ, अमू

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि० अमुं	अमुणो, अमू
तृ० अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
पं० अमुणो, अमुत्तो, अमूओ अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो अमूसुन्तो
च०, ष० अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
स० अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि (अमुंसि)	अमूसु, अमूसुं

४९-ख अमु (अदस्) स्त्रीलिंग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अह, अमू	अमूओ, अमूउ, अमू
द्वि० अमुं	अमूओ, अमूउ, अमू
तृ० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
पं० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए अमुत्तो, अमूओ, अमूउ अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो अमूसुन्तो
ष० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
स० अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए अयम्मि, इअम्मि	अमूसु, अमूसुं

४९-ग अमु (अदस्) नपुंसकलिंग शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अह, अमुं	अमूइँ, अमूइं, अमूणि
द्वि० अमुं	अमूइँ, अमूइं, अमूणि

(शेष रूप पुंलिंग की तरह चलते हैं)

५० अम्ह (अस्मद्) शब्द (तीनों लिंगों में)

एकवचन	बहुवचन
प्र० हं, अहं, अहयं, म्मि, अम्हि अम्मि	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो, वयं, मे
द्वि० मं, ममं, मिमं, अहं, णे, णं मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
तृ० मि, मे, ममं, ममए, ममाइ मइ, मए, मयाए, णे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे
पं० मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि ममाहिन्तो, ममा, महत्तो	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि ममाहिन्तो, ममासुन्तो, ममेहि, ममेहिन्तो ममेसुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाओ, महाउ, महाहि महाहिन्तो, महा, मज्झत्तो मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि मज्झाहिन्तो, मज्झा	अम्हाहि, अम्हाहिन्तो, अम्हासुन्तो अम्हेहि, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो
च०, ष० मे, मइ, मम, मह, महं मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो अम्हाण, अम्हाणं, ममाण, ममाणं, महाण महाणं, मज्झाण, मज्झाणं
स० मि, मइ, ममाइ, मए, मे अम्हस्सि, अम्हम्मि (अम्हंसि) ममस्सि, ममम्मि (ममंसि) महस्सि, महम्मि (महंसि) मज्झंसि, मज्झम्मि (मज्झंसि) अम्हे, ममे, महे, मज्झे (मम्मि)	अम्हसु, अम्हसुं, अम्हेसु, अम्हेसुं, ममसु ममसुं, ममेसु, ममेसुं, महसु, महसुं, महेसु, महेसुं, मज्झसु, मज्झसुं, मज्झेसु, मज्झेसुं अम्हासु, अम्हासुं

५१ तुम्ह (युष्मद्) शब्द (तीनों लिंगों में)

एकवचन	बहुवचन
प्र० तं, तुं, तुवं, तुह, तुमं	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे उय्हे,
द्वि० तं, तुं, तुवं, तुमं, तुह, तुमे तुए	वो, तुज्झ, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुय्हे उय्हे, भे
तृ० भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहिं उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
पं० तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहि तईहिन्तो, तई, तुवत्तो, तुवाओ तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो तुवा, तुमत्तो, तुमाओ, तुमाहि तुमाहिन्तो, तुमा, तुहत्तो तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि तुहाहिन्तो, तुहा, तुब्भत्तो तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि तुब्भाहिन्तो, तुब्भा, तुम्हाओ तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो तुम्हा, तुज्झत्तो, तुज्झाओ तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह	तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि तुब्भाहिन्तो, तुब्भासुंतो, तुब्भेहि, तुब्भेहिन्तो, तुब्भासुंतो, तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हासुन्तो, तुम्हेहि, तुम्हेहिन्तो, तुम्हेसुन्तो, तुज्झत्तो, तुज्झाओ तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो तुज्झासुन्तो, तुज्झेहि, तुज्झेहिन्ता तुज्झेसुन्तो, तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ तुय्हाहि, तुय्हाहिन्तो, तुय्हासुन्तो, तुय्हेहि तुय्हेहिन्तो, तुय्हेसुन्तो, उय्हत्तो, उय्हाओ उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हाहिन्तो, उय्हासुन्तो उय्हेहि, उय्हेहिन्तो, उय्हेसुन्तो, उम्हत्तो उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हाहिन्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुज्झ, तहिन्तो	उम्हासुन्तो, उम्हेहि, उम्हेहिन्तो उम्हेसुन्तो
च०, ष० तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं तुम्ह, तुज्झ, तुम्हं, तुज्झं, तुब्भाण, तुब्भाणं, तुवाण, तुवाणं तुम्हाण, तुम्हाणं, तुमाण, तुमाणं, तुज्झाण तुज्झाणं, तुहाण, तुहाणं, उम्हाण, उम्हाणं
स० तुमे, तुमाइ, तुमए, तए, तइ तुम्मि, तुवम्मि, तुवंस्सि (तुवंसि) तुमम्मि, तुमंस्सि (तुमंसि) तुहम्मि, तुहंस्सि (तुहंसि) तुब्भम्मि, तुब्भंस्सि (तुब्भंसि) तुम्हम्मि, तुम्हंस्सि (तुम्हंसि) तुज्झम्मि, तुज्झंस्सि (तुज्झंसि)	तुसु, तुसुं, तुवसु, तुवसुं, तुवेसु, तुवेसुं तुमसु, तुमसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहसु, तुहसुं तुहेसु, तुहेसुं, तुब्भसु, तुब्भसुं, तुब्भेसु तुब्भेसुं, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं तुज्झसु, तुज्झसुं, तुज्झेसु, तुज्झेसुं, तुब्भासु तुब्भासुं, तुम्हासु, तुम्हासुं, तुज्झासु तुज्झासुं

संख्यावाची शब्दाः

५२-क एग (एक) पुंलिग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एगो, गगे	एगे
द्वि०	एगं	एगे, एगा
च०, ष०	एगस्स	एगण्ह, एगण्हं, एगेसिं

(शेष सव्वा ४३-क शब्द की तरह चलते हैं)

५२-ख एगा (एक) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एगा	एगाओ, एगाउ, एगा
द्वि०	एगं	एगाओ, एगाउ, एगा
च०, ष०	एगस्स	एगासिं, एगेसिं, एगण्ह, एगण्हं

(शेष रूप सव्वा ४३-ख की तरह चलते हैं)

५२-ग एग (एक) नपुंसकलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०, द्वि०	एगं	एगाइँ, एगाइं, एगाणि

(शेष रूप सव्व ४३-क की तरह चलते हैं)

संख्यावाची शब्द एग को छोडकर शेष शब्द बहुवचन में और तीनों लिंगों में एक समान चलते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३ दो, वे शब्द (द्वि) (तीनों लिंगों में)

(दो से लेकर दस शब्द तक के रूप बहुवचन में चलते हैं।)

प्र० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे
द्वि० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे
तृ० दोहि, दोहिं, दोहिँ, वेहि, वेहिं, वेहिँ
पं० दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो
च०, ष० दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं, वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं
स० दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

५४ ति (त्रि) शब्द

प्र० तिण्णि
द्वि० तिण्णि
तृ० तीहि, तीहिं, तीहिँ
पं० तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो
च०, ष० तिण्ह, तिण्हं
स० तीसु, तीसुं

५५ चउ (चतुर) शब्द

प्र० चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वि० चत्तारो, चउरो, चत्तारि
तृ० चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ
पं० चउत्तो, चऊओ, चऊउ चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ चउउ, चउहिन्तो, चउसुन्तो
च०, ष० चउण्ह, चउण्हं
स० चऊसु, चउसुं, चउसु, चउसुं

५६ पञ्च (पञ्चन्) शब्द

प्र० पंच
द्वि० पंच
तृ० पंचहि, पंचहिं, पंचहिँ
पं० पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहिन्तो पंचासुन्तो
च०, ष० पंचण्ह, पंचण्हं
स० पंचसु, पंचसुं

५६ छ (षष्ठ) शब्द

प्र० छ
द्वि० छ
तृ० छहि, छहिं, छहिँ
पं० छत्तो, छाओ, छाउ, छाहिन्तो छासुन्तो
च०, ष० छण्ह, छण्हं
स० छसु, छसुं

	५७ सत्त (सप्तन्) शब्द	५८ अट्ठ (अष्टन्) शब्द	५६ नव (नवन्) शब्द
प्र०	सत्त	अट्ठ	नव
द्वि०	सत्त	अट्ठ	नव
तृ०	सत्तहि, सत्तहिं, सत्तहिँ	अट्ठहि, अट्ठहिं, अट्ठहिँ	नवहि, नवहिं, नवहिँ
पं०	सत्तत्तो, सत्ताओ, सत्ताउ सत्ताहिन्तो, सत्तासुन्तो	अट्ठत्तो, अट्ठाओ, अट्ठाउ अट्ठाहिन्तो, अट्ठासुन्तो	नवत्तो, नवाओ, नवाउ नवाहिन्तो, नवासुन्तो
च०/ष०	सतण्ह, सतण्हं	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं	नवण्ह, नवण्हं
स०	सतसु, सतसुं	अट्ठसु, अट्ठसुं	नवसु, नवसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६० दस, दह (दशन्) शब्द

प्र० दह, दस
द्वि० दह, दस
तृ० दहहि, दहहिं, दहहिँ
दसहि, दसहिं, दसहिँ
पं० दहत्तो, दहाओ, दहाउ
दहाहिन्तो, दहासुन्तो
दसत्तो, दसाओ, दसाउ
दसाहिन्तो, दसासुन्तो
च०/ष० दसण्ह, दसण्हं
स० दहसु, दहसुं, दससु, दससुं
इसी प्रकार एगारह—
अट्ठारह शब्दों के रूप चलते हैं।

६१ वीसा (विंशति) स्त्रीलिंग शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वीसा	वीसाओ, वीसाउ, वीसा
द्वि०	वीसं	वीसाओ, वीसउ, वीसा
तृ०	वीसअ, वीसाइ वीसाए	वीसाहि, वीसाहिं वीसाहिँ

(शेष रूप माला शब्द की तरह)

इसी प्रकार एगूणवीसा, एगवीसा, एगूणतीसा, तीसा, एगतीसा, एगूणचत्तालीसा, चत्तालीसा, पण्णासा, अट्ठावणा आदि शब्द चलते हैं।

६२ सट्ठि (षष्टि) शब्द स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सट्ठी	सट्ठीउ, सट्ठीओ, सट्ठी
द्वि०	सट्ठिं	सट्ठीउ, सट्ठीओ, सट्ठी
तृ०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीहि, सट्ठीहिं, सट्ठीहिँ
पं०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए सट्ठित्तो, सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठीहिन्तो	सट्ठित्तो सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठीहिन्तो सट्ठीसुन्तो
च०/ष०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ सट्ठीए	सट्ठीण, सट्ठीणं
स०	सट्ठीअ, सट्ठीआ, सट्ठीइ, सट्ठीए	सट्ठीसु, सट्ठीसुं

इसी प्रकार एगूणसट्ठि, एगसट्ठि, एगूणसत्तरि, एगसत्तरि, एगूणसीइ, एगासीइ, एगूणनवइ, नवइ, एगनवइ, नवनवइ आदि शब्द चलते हैं।

६३ सय (शत) नपुंसक शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सयं	सयाइँ, सयाइं, सयाणि
द्वि०	सयं	सयाइँ, सयाइं, सयाणि
तृ०	सएण, सएणं	सएहि, सएहिं, सएहिँ

(शेष रूप वण (३०) की तरह चलते हैं।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट २ प्राकृत धातु रूपावली

हस् (हस्) धातु के कर्तृ वाच्य के रूप

धातोर्वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एक वचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसइ, हसेइ, हसए	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे, हसेन्ति, हसेन्ते, हसेइरे, हसिन्ति, हसिन्ते, हसइरे
म० पु०	हससि, हसेसि, हससे	हसित्था, हसह, हसेत्था, हसेह, हसइत्था, हसेइत्था
उ० पु०	हसमि, हसामि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम, हसामो, हसामु, हसाम, हसिमो, हसिमु, हसिम, हसेमो, हसेमु, हसेम

सर्ववचन, सर्वपुरुष—हसिज्ज, हसेज्ज, हसिज्जा, हसेज्जा

विधिआज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसउ, [हसए, हसे]	हसन्तु, हसिन्तु, हसेन्तु
म० पु०	हसहि, हसेहि, हससु, हसेसु, हसिज्जसु, हसेज्जसु, हसिज्जहि, हसेज्जहि, हसिज्जे, हसेज्जे, हस, हसे *[हसिज्जसि, हसेज्जसि, हसिज्जासि, हसेज्जासि, हसिज्जाहि, हसेज्जाहि, हसाहि]	हसह, हसेह [हसिज्जाह, हसेज्जाह]

इस [ ] कोष्ठक में जो रूप हैं वे आर्ष में मिलते हैं।

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसित्था, हसिसु

उ० पु०	हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसिमो, हसेमो

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसिज्ज, हसेज्ज हसिज्जा, हसेज्जा

'हस्' (हस्) धातोर्भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसीअ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'हस्' (हस्) धातोर्भविष्यत्कालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ, हसेहिए, [हसिस्सइ, हसिस्सए हसेस्सइ, हसेस्सए]	हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिरे, हसेहिन्ति, हसेहिन्ते, हसेहिरे, [हसिस्सन्ति, हसिस्सन्ते, हसेस्सन्ति, हसेस्सन्ते]
म० पु०	हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे, [हसिस्ससि, हसिस्ससे, हसेस्ससि, हसेस्ससे]	हसिहित्था, हसिहिह, हसेहित्था, हसेहिह, [हसिस्सह, हसेस्सह]
उ० पु०	हसिस्सं, हसिस्सामि, हसेस्सं, हसेस्सामि, हसिहामि, हसेहामि, हसिहिमि, हसेहिमि	हसिस्सामो, हसिस्सामु, हसिस्साम, हसेस्सामो, हसेस्सामु, हसेस्साम, हसिहामो, हसिहामु, हसिहाम, हसेहामो, हसेहामु, हसेहाम, हसिहिमो, हसिहिमु, हसेहिम, हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम, हसिहिस्सा, हसिहित्था, हसेहिस्सा, हसेहित्था
	सर्व पुरुष, सर्ववचन—	हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

'हस्' (हस्) धातोः क्रियातिपत्त्यर्थस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
	सर्ववचन, सर्वपुरुष—	हसिज्ज, हसिज्जा, हसेज्ज, हसेज्जा
पुंल्लिग	हसन्तो, हसेन्तो, हसिन्तो, हसमाणो, हसेमाणो, (हसन्ते, हसेन्ते, हसिन्ते, हसमाणे, हसेमाणे)	हसन्ता, हसेन्ता, हसिन्ता, हसमाणा, हसेमाणा
स्त्रीलिंग	हसन्ती, हसेन्ती, हसिन्ती, हसमाणी, हसेमाणी, हसन्ता, हसेन्ता, हसिन्ता, हसमाणा, हसेमाणा, हसन्तं, हसेन्तं हसिन्तं, हसमाणं, हसेमाणं	हसन्तीओ, हसेन्तीओ, हसिन्तीओ, हसमाणीओ, हसेमाणीओ, हसन्ताओ, हसेन्ताओ, हसिन्ताओ, हसमाणाओ, हसेमाणाओ, हसन्ताइं हसेन्ताइं, हसिन्ताइं, हसमाणाइं, हसेमाणाइं

इसी प्रकार कह् (कथ्) गच्छ् (गम्) जाण् (ज्ञा) देक्ख् (दृश्) नम् (नम्) बीह् (भी) बोल्ल् (कथ्) रुव् (रुद्) आदि हसान्त धातुओं के रूप चलते हैं ।

'हो' (भू) धातोर्वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे, हुन्ति, हुन्ते

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म० पु०	होसि	होइत्था, होह
उ० पु०	होमि	होमो, होमु, होम

'होअ' (भू) अंगस्य वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होअइ, होअए, होएइ	होअन्ति, होअन्ते, होइरे, होएन्ति, होएन्ते, होएइरे, होइन्ति, होइन्ते, होअइरे
म० पु०	होअसि, होअसे, होएसि	होइत्था, होअह, होएत्था, होएह, होअइत्था होएइत्था
उ० पु०	होअमि, होआमि, होएमि	होअमो, होअमु, होअम, होआमो, होआमु होआम, होइमो, होइमु, होइम होएमो, होएमु, होएम

'होज्ज-होज्जा' (भू) अंगस्य वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होज्जइ, होज्जाइ, होज्जेइ, होज्जए, होज्ज, होज्जा	होज्जन्ति, होज्जन्ते, होज्जइरे, होज्जान्ति, होज्जान्ते, होज्जाइरे, होज्जेन्ति, होज्जेन्ते, होज्जेइरे, होज्जिजन्ति, होज्जिजन्ते, होज्जिजरे, होज्ज, होज्जा
म० पु०	होज्जसि, होज्जासि, होज्जेसि, होज्जसे, होज्ज, होज्जा	होज्जित्था, होज्जह, होज्जेत्था, होज्जइत्था, होज्जाह, होज्जेइत्था, होज्जेह, होज्जाइत्था, होज्ज, होज्जा
उ० पु०	होज्जमि, होज्जामि, होज्जेमि, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जमु, होज्जम, होज्जामो, होज्जामु, होज्जाम, होज्जिमो, होज्जिमु, होज्जिम, होज्जेमो, होज्जेमु, होज्जेम, होज्ज, होज्जा

'होएज्ज-होएज्जा' (भू) अंगस्य वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	होएज्जइ, होएज्जाइ, होएज्जेइ, होएज्जए, होएज्ज, होएज्जा	होएज्जन्ति, होएज्जन्ते, होएज्जइरे, होएज्जान्ति, होएज्जान्ते, होएज्जाइरे, होएज्जेन्ति, होएज्जेन्ते, होएज्जेइरे, होएज्जिजन्ति, होएज्जिजन्ते, होएज्जिजरे, होएज्ज, होज्जा
म० पु०	होएज्जसि, होएज्जासि, होएज्जेसि, होएज्जसे,	होएज्जित्था, होएज्जह, होएज्जेत्था, होएज्जाह, होएज्जइत्था, होएज्जेह,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	होएज्ज, होएज्जा	हाएज्जेइत्था, होएज्जाइत्था, होएज्ज, होएज्जा
उ०पु०	होएज्जमि, होएज्जामि, होएज्जेमि, होएज्ज, होएज्जा	होएज्जमो, होएज्जमु, होएज्जम होएज्जामो, होएज्जामु, होएज्जाम होएज्जिमो, होएज्जिमु, होएज्जिम होएज्जेमो, होएज्जेमु, होएज्जेम होएज्ज, होएज्जा

* होज्ज-होज्जा-होएज्ज-होएज्जा-इत्यादि ज्ज-ज्जा-अङ्गस्य रूपाणि भूतकाले क्रियातिपत्त्यर्थे च न भवन्ति ।

'हो' (भू) धातोर्विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होउ	होन्तु, हुन्तु
म०पु०	होहि, होसु (होइज्जसि, होइज्जासि, होइज्जाहि)	होह (होज्जाह)
उ०पु०	होमु	होमो

'होअ' (भू) अंगस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होअउ, होएउ (होअए)	होअन्तु, होएन्तु, होइन्तु
म०पु०	होअहि, होएहि, होअसु, होएसु होइज्जसु, होएज्जसु, होइज्जहि होएज्जहि, होइज्जे, होएज्जे होअ, होए, (होइज्जसि होएज्जसि होइज्जासि, होएज्जासि होइज्जाहि, होएज्जाहि, होआहि)	होअह, होएह (होइज्जाह, होएज्जाह)
उ०पु०	होअमु, होआमु, होइमु, होएमु	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो

होज्ज, होज्जा, (भू) अंगस्य आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होज्जउ, होज्जाउ, होज्जेउ (होज्जे) (होज्जए) होज्ज होज्जा	होज्जन्तु, होज्जान्तु, होज्जेन्तु होज्जिन्तु, होज्ज, होज्जा
म०पु०	होज्जहि, होज्जेहि, होज्जाहि होज्जसु, होज्जेसु, होज्जासु होज्जिज्जसु, होज्जेज्जसु होज्जिज्जहि, होज्जेज्जहि	होज्जह, होज्जेह, होज्जाह, होज्ज होज्जा (होज्जिज्जाह, होज्जेज्जाह)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	एकवचन	बहुवचन
	होज्जिज्जे, होज्जेज्जे, होज्ज होज्जा (होज्जिज्जसि, होज्जेज्जसि होज्जिज्जासि, होज्जेज्जासि होज्जिज्जाहि, होज्जेज्जाहि होज्जाहि)	
उ०पु०	होज्जमु, होज्जामु, होज्जिमु होज्जेमु, होज्ज, होज्जा	होज्जमो, होज्जामो, होज्जिमो होज्जेमो, होज्ज, होज्जा

होएज्ज, होएज्जा (भू) अंगस्य विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होएज्जउ, होएज्जाउ, होएज्जेउ (होएज्जए) होएज्ज, होएज्जा	होएज्जन्तु, होएज्जान्तु, होएज्जेन्तु होएज्जिन्तु, होएज्ज, होएज्जा
म०पु०	होएज्जहि, होएज्जाहि, होएज्जेहि होएज्जसु, होएज्जासु, होएज्जेसु होएज्जिज्जसु, होएज्जेज्जसु होएज्जिज्जहि, होएज्जेज्जहि होएज्जिज्जे, होएज्जेज्जे, होएज्ज होएज्जा (होएज्जिज्जसि, होएज्जेज्जसि, होएज्जिज्जासि होएज्जेज्जासि, होएज्जिज्जाहि होएज्जेज्जाहि, होएज्जाहि)	होएज्जह, होएज्जाह, होएज्जेह होएज्ज, होएज्जा (होएज्जिज्जाह होएज्जेज्जाह)
उ०पु०	होएज्जमु, होएज्जामु, होएज्जिमु होएज्जेमु, होएज्ज, होएज्जा	होएज्जमो, होएज्जामो, होएज्जिमो होएज्जेमो, होएज्ज, होएज्जा

'हो' (भू) धातोर्भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होसी, होही, होहीअ

'हो' अंगस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होअसी, होअही, होअहीअ

आर्षरूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होत्था, होंसु, होइत्था, होइंसु

'हो' (भू) धातोर्भविष्यत्कालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होहिइ, होहिए, (होस्सइ होस्सए)	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे (होस्सन्ति, होस्सन्ते)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	एकवचन	बहुवचन
म०पु०	होहिसि, होहिसे (होस्सासि, होस्ससे)	होहित्था होहिह (होस्सह)
उ०पु०	(होस्सं, होस्सामि) होहामि होहिमि	(होस्सामो, होस्सामु, होस्साम) होहामो, होहामु, होहाम, होहिमो होहिमु, होहिम होहिस्सा, होहित्था

'होअ' (भू) अंगस्य भविष्यत्कालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होइहिइ, होइहिए, होएहिइ होएहिए (होइस्सइ, होइस्सए होएस्सइ, होएस्सए)	होइहिन्ति, होइहिन्ते, होइहिरे होएहिन्ति, होएहिन्ते, होएहिरे (होइस्सन्ति, होइस्सन्ते, (होएस्सन्ति होएस्सन्ते)
म०पु०	होइहिसि, होइहिसे, होएहिसि होएहिसे (होइस्ससि, होइस्ससे होएस्ससि, होएस्ससे)	होइहित्था, होइहिह, होएहित्था होएहिह (होइस्सह, होएस्सह)
उ०पु०	(होइस्सं, होइस्सामि, होएस्सं, होएस्सामि) होइहामि, होएहामि होइहिमि, होएहिमि	(होइस्सामो, होइस्सामु, होइस्साम होएस्सामो, होएस्सामु, होएस्साम) होइहामो, होइहामु, होइहाम, होएहामो, होएहामु, होएहाम, होइहिमो, होइहिमु, होइहिम, होएहिमो, होएहिमु, होएहिम, होइहिस्सा, होइहित्था, होएहिस्सा, होएहित्था

'होज्ज-होज्जा' (भू) अंगस्य भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होज्जहिइ, होज्जहिए, होज्जाहिइ होज्जहिए होज्ज, होज्जा	होज्जहिन्ति, होज्जहिन्ते, होज्जहिरे, होज्जाहिन्ति, होज्जाहिन्ते, होज्जाहिरे, होज्ज, होज्जा
म०पु०	होज्जहिसि, होज्जहिसे, होज्जाहिसि, होज्जाहिसे, होज्ज होज्जा	होज्जहित्था, होज्जहिह, होज्जाहित्था, होज्जाहिह, होज्ज, होज्जा
उ०पु०	होज्जस्सं, होज्जस्सामि, होज्जास्सं होज्जास्सामि, होज्जहामि होज्जाहामि, होज्जहिमि होज्जाहिमि, होज्ज, होज्जा	होज्जस्सामो, होज्जसामु, होज्जसाम, होज्जास्सामो-मु-म, होज्जहामो-मु-म होज्जाहामो-मु-म, होज्जहिमो-मु-म होज्जाहिमो-मु-म, होज्जहिस्सा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	होज्जहित्था, होज्जाहिस्सा
	होज्जाहित्था, होज्ज, होज्जा

'होएज्ज-होएज्जा' (भू) अंगस्य भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होएज्जहिइ, होएज्जहिए होएज्जाहिइ, होएज्जाहिए होएज्ज, होएज्जा	होएज्जहिन्ति, होएज्जहिन्ते होएज्जहिरे, होएज्जाहिन्ति होएज्जाहिन्ते, होएज्जाहिरे, होएज्ज होएज्जा
म०पु०	होएज्जहिसि, होएज्जहिसे होएज्जाहिसि, होएज्जाहिसे होएज्ज, होएज्जा	होएज्जहित्था, होएज्जहिह होएज्जाहित्था, होएज्जाहिह होएज्ज, होएज्जा
उ०पु०	होएज्जस्सं, होएज्जसामि होएज्जास्सं, होएज्जास्सामि होएज्जहामि, होएज्जाहामि होएज्जहिमि, होएज्जाहिमि होएज्ज, होज्जा	होज्जसामो-मु-म होएज्जास्सामो-मु-म होएज्जहामो-मु-म होएज्जाहामो-मु-म, होएज्जहिमो-मु-म होएज्जहिस्सा, होएज्जहित्था होएज्जाहिस्सा, होएज्जाहित्था होएज्ज, होएज्जा

'हो-होअ' (भू) धातोः क्रियातिपत्यर्थस्य रूपाणि

सर्वपुरुष } हो—होज्ज, होज्जा, हुज्ज, हुज्जा
सर्ववचन } होअ—होएज्ज, होएज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग—	होन्तो, हुन्तो, होमाणो (होन्ते हुन्ते, होमाणे) होअन्तो, होएन्तो होइन्तो, होअमाणो, होएमाणो (होअन्ते, होएन्ते, होइन्ते होअमाणे, होएमाणे)	होन्ता, हुन्ता, होमाणा, होअन्ता होएन्ता, होइन्ता, होअमाणा होएमाणा
स्त्रीलिंग—	होन्ती, हुन्ती, होमाणी होमाणा, होअन्ती, होएन्ती होइन्ती, होअमाणी, होएमाणी होअमाणा, होएमाणा	होन्तीओ, हुन्तीओ, होमाणीओ होमाणाओ, होअन्तीओ, होएन्तीओ होइन्तीओ, होअमाणीओ, होएमाणीओ होअमाणाओ, होएमाणाओ
नपु०—	होन्तं, हुन्तं, होमाणं होअन्तं, होएन्तं, होइन्तं होअमाणं, होएमाणं	होन्ताइं, हुन्ताइं, होमाणाइं होअन्ताइं, होएन्ताइं, होइन्ताइं होअमाणाइं, होएमाणाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसी प्रकार नी (ने), डी (डे), जि (जे), स्ना (ण्हा), ध्यै (झा), स्था (ठा), पा (पा), या(जा), आदिस्वरान्त-धातुओं के रूप चलते हैं।

अस् (अस्) धातु

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	अत्थि	अत्थि
म०पु०	सि, अत्थि	अत्थि
उ०पु०	अत्थि, म्मि	अत्थि, म्हो, म्ह

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि
म०पु०	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि
उ०पु०	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि

आगम में उपलब्ध रूप

(वर्तमाने)

प्र०पु०	अत्थि	सन्ति
म०पु०	सि अंसि,	ह
उ०पु०	मि	मो

(विध्यर्थे)

प्र०पु०	सिया	सिया
म०पु०	सिया	सिया
उ०पु०	सिया	सिया

(आज्ञायाम्)

प्र०पु०	अत्थु	०
म०पु०	०	०
उ०पु०	०	०

(भूतकाले)

प्र०पु०	आसि, आसी	०
म०पु०	०	०
उ०पु०	०	आसिमो

इति कर्तरिरूपाणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भावे कर्मणि च रूपाणि

हसीअ, हसिज्ज (हस्-हस्य) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसीअइ, हसीअए, हसीएइ	हसीअन्ति, हसीअन्ते, हसीइरे हसीएन्ति, हसीएन्ते, हसीएइरे हसीइन्ति, हसीइन्ते, हसीअइरे
	हसिज्जइ, हसिज्जए, हसिज्जेइ	हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते, हसिज्जइरे हसिज्जेन्ति, हसिज्जेन्ते, हसिज्जेइरे हसिज्जिन्ति, हसिज्जिन्ते, हसिज्जिइरे
म०पु०	हसीअसि, हसीअसे, हसीएसि हसिज्जसि, हसिज्जसे, हसिज्जेसि	हसीइत्था, हसीअह, हसीएइत्था हसीएह, हसीअइत्था, हसिज्जित्था हसिज्जह, हसिज्जेइत्था, हसिज्जेह हसिज्जइत्था
उ०पु०	हसीअमि, हसीआमि, हसीएमि हसिज्जमि, हसिज्जामि हसिज्जेमि	हसीअमो, हसअमु, हसीअम हसीआमो, हसीआमु, हसीआम हसीइमो, हसीइमु, हसीइम हसीएमो, हसीएमु, हसएम हसिज्जमो, हसिज्जमु, हसिज्जम हसिज्जामो, हसिज्जामु, हसिज्जाम हसिज्जिमो, हसिज्जिमु, हसिज्जिम हसिज्जेमो, हसिज्जेमु, हसिज्जेम

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसीएज्ज, हसीएज्जा, हसिज्जेज्ज, हसिज्जेज्जा

हसीअ, हसिज्ज (हस्-हस्य) अंगस्य भावे कर्मणि च विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसीअउ, हसीएउ, हसिज्जउ, हसिज्जेउ	हसीअन्तु, हसीएन्तु, हसीइन्तु हसिज्जन्तु, हसिज्जेन्तु, हसिज्जिन्तु
म०पु०	हसीअहि, हसिएहि, हसीअसु हसीएसु, हसीइज्जसु, हसीएज्जसु हसीइज्जहि, हसीएज्जहि हसीइज्जे, हसीएज्जे, हसीअ हसिज्जहि, हसिज्जेहि, हसिज्जसु हसिज्जेसु, हसिज्जिज्जसु	हसीअह, हसीएह, हसिज्जह हसिज्जेह, (हसीइज्जाह, हसीएज्जाह, हसिज्जिज्जाह हसिज्जेज्जाह)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसिज्जेज्जसु, हसिज्जिज्जहि
हसिज्जेज्जहि, हसिज्जिज्जे
हसिज्जेज्जे, हसिज्ज (हसीइज्जसि
हसीएज्जसि, हसीइज्जासि
हसीएज्जासि, हसीइज्जाहि
हसीएज्जाहि, हसीआहि)
(हसिज्जिज्जसि, हसिज्जेज्जसि
हसिज्जिज्जासि, हसिज्जेज्जासि
हसिज्जिज्जाहि, हसिज्जेजाहि
हसिज्जाहि)

उ०पु०	हसीअमु, हसीआमु, हसीइमु हसीएमु, हसिज्जमु, हसिज्जामु हसिज्जिमु, हसिज्जेमु	हसीअमो, हसीआमो, हसीइमो हसीएमो, हसिज्जमो, हसिज्जामो हसिज्जिमो, हसिज्जेमो

सर्वपुरुष सर्ववचन—हसीएज्ज, हसीएज्जा, हसीएज्जइ, हसीएज्जाइ
हसिज्जेज्ज, हसिज्जेज्जा, हसिज्जेज्जइ, हसिज्जेज्जाइ

हसीअ-हसिज्ज (हस्-हस्य) अंगस्य भावे कर्मणि च
भूतकालस्य रूपाणि

सर्व पुरुष सर्व वचन—हसीअईअ हसिज्जईअ
[हसीइत्था, हसिज्जित्था, हसीइंसु, हसिज्जिसु]
(हसीअ, हसित्था, हसिसु, इत्यादि रूपाणि कर्तरिवद् ज्ञेयानि)

भविष्यत्काले कर्मणि कर्तृवद् रूपाणि भवन्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ हसेहिए, हसिस्सइ, हसिस्सए हसेस्सइ, हसेस्सए	हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिरे हसेहिन्ति, हसेहिन्ते, हसेहिरे हसिस्सन्ति, हसिस्सन्ते, हसेस्सन्ति हसेस्सन्ते
म०पु०	हसिहिसि हसिहिसे, हसेहिसि हसेहिसे, हसिस्ससि, हसिस्ससे हसेस्ससि, हसेस्ससे	हसिहित्था, हसिहिह, हसेहित्था हसेहिह, हसिस्सह, हसेस्सह
उ०पु०	हसिस्सं, हसेस्सं, हसिस्सामि हसेस्सामि, हसिहामि, हसेहामि हसिहिमि, हसेहिमि	हसिस्सामो, हसिस्सामु, हसिस्साम, हसिहामो, हसिहामु, हसिहाम, हसेस्सामो, हसेस्सामु, हसेस्साम हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम, हसिहामो, हसिहामु, हसिहाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसेहामो, हसेहामु, हसेहाम
हसिहिस्सा, हसेहिस्सा, हसिहित्था
हसेहित्था

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

क्रियातिपत्त्यर्थे (कर्मणि) कर्तृवद रूपाणि भवन्ति

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हसेज्ज, हसेज्जा, हसिज्ज, हसिज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	हसन्तो, हसिन्तो, हसेन्तो हसमाणो हसेमाणो (हसन्ते हसेन्ते, हसिन्ते, हसमाणे हसेमाणे)	हसन्ता, हसिन्ता, हसेन्ता, हसमाणा हसेमाणा
स्त्रीलिंग	हसन्ती, हसेन्ती, हसिन्ती हसमाणी, हसेमाणी, हसन्ता हसेन्ता, हसिन्ता, हसमाणा हसेमाणा	हसन्तीओ, हसेन्तीओ, हसिन्तीओ हसमाणीओ, हसेमाणीओ, हसन्ताओ हसेन्ताओ, हसिन्ताओ, हसमाणाओ हसेमाणाओ
नपु०	हसन्तं, हसेन्तं, हसिन्तं हसमाणं, हसेमाणं	हसन्ताइं, हसेन्ताइं, हसिन्ताइं हसमाणाइं, हसेमाणाइं

होईअ-होइज्ज (भू-भूय) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होईअइ, होईअए, होईएइ होइज्जइ, होइज्जए, होइज्जेइ	होईअन्ति, होईअन्ते, होईअइरे होईइरे, होईएन्ति, होईएन्ते, होईएइरे होईइन्ति, होईइन्ते, होइज्जन्ति होइज्जन्ते, होइज्जइरे, होइज्जिरे होइज्जेन्ति, होइज्जेन्ते, होइज्जेइरे होइज्जिन्ति, होइज्जिन्ते
म०पु०	होईअसि, होईअसे, होईएसि होइज्जसि, होइज्जसे होइज्जेसि	होईअइत्था, होईइत्था, होईएइत्था होईअह, होईएह, होइज्जइत्था होइज्जह, होइज्जित्था, होइज्जेइत्था होइज्जेह
उ०पु०	होईअमि, होईआमि, होईएमि होइज्जमि, होइज्जामि होइज्जेमि	होईअमो, होईअमु, होईअम, होईआमो होईआमु, होईआम, होईइमो, होईइमु होईइम, होईएमो, होईएमु, होईएम होइज्जमो, होइज्जमु, होइज्जम

होइज्जामो, होइज्जामु, होइज्जाम
होइज्जिमो, होइज्जिमु, होइज्जिम
होइज्जेमो, होइज्जेमु, होइज्जेम

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होईएज्ज, होईएज्जा, होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा

होईअ-होइज्ज (भू-भूय) अंगस्य भावे कर्मणि च विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होईअउ, होईएउ (होईअए) होइज्जउ, होइज्जेउ (होइज्जए)	होईअन्तु, होईएन्तु, होईइन्तु, होइज्जन्तु होइज्जेन्तु, होइज्जिन्तु, होईअह, होईएह
म०पु०	होईअहि, होईएहि, होईअसु होईएसु, होईइज्जसु होएइज्जसु, होईइज्जहि होईएज्जहि, होईइज्जे, होईएज्जे होईअ, (होईइज्जसि, होईएज्जसि होईइज्जासि, होईएज्जासि होईइज्जाहि, होईएज्जाहि होईआहि) होइज्जहि, होइज्जेहि, होइज्जसु, होइज्जेसु, होइज्जिज्जसु होइज्जिज्जहि, होइज्जेज्जहि होइज्जिज्जे, होइज्जेज्जे, होइज्ज (होइज्जिज्जसि, होइज्जेज्जसि होइज्जिज्जासि, होइज्जेज्जासि होइज्जिज्जाहि, होइज्जेज्जाहि होइज्जाहि	होईअह, होईएह (होईइज्जाह होईएज्जाह) होइज्जह, होइज्जेह (होइज्जिज्जाह, होइज्जेज्जाह)
उ०पु०	होईअमो, होईआमु, होईइमु होईएमु, होइज्जमु, होइज्जामु होइज्जिमु, होइज्जेज	होईअमो, होईआमो, होईइमो होईएमो, होइज्जमो, होइज्जामो होइज्जिमो, होइज्जेमो

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होईएज्ज, होईएज्जा, होईएज्जइ, होईएज्जाइ, होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा, होइज्जेज्जइ, होइज्जेज्जाइ

होईअ, होइज्ज (भू-भूय) अंगस्य भावे कर्मणि च भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होईअसी, होईअही, होईअहीअ होइज्जसी, होइज्जही, होइज्जहीअ । होसी, होही, होहीअ (कर्तृवत्)

[होईइत्था, होईइंसु, होइज्जित्था, होइज्जिसु । होत्था हविंसु] (कर्तृवत्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काले कर्तरिवद् रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होहिइ, होईए	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे

(शेषं कर्तरिवद् ज्ञेयानि)

क्रियातिपत्त्यर्थे कर्तृवद् रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—होज्ज, होज्जा, हुज्ज, हुज्जा

	एकवचन	बहुवचन
पु०	होन्तो, हुन्तो, होमाणो	होन्ता, हुन्ता
स्त्री०	होन्ती, हुन्ती	होन्तीओ, हुन्तीओ
न०	होन्तं, हुन्तं	होन्ताइं, हुन्ताइं

(शेषं कर्तरिवद् ज्ञेयानि)

प्रेरके कर्तृरूपाणि

हास-हासे-हसाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्थ प्रेरके वर्तमानकालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हास—हासइ, हासए, हासेइ	हासन्ति, हासन्ते, हासिरे, हासेन्ति हासेन्ते, हासेइरे, हासिन्ति, हासिन्ते हासइरे
	हासे—हासेइ	हासेन्ति, हासेन्ते, हासेइरे, हासिन्ति हासिन्ते
	हसाव—हसावइ, हसावए हसावेइ	हसावन्ति, हसावन्ते, हसाविरे हसावेन्ति, हसावेन्ते, हसावेइरे हसाविन्ति, हसाविन्ते, हसावइरे
	हसावे—हसावेइ	हसावेन्ति, हसावेन्ते, हसावेइरे हसाविन्ति, हसाविन्ते
म०पु०	हास—हससि, हससे, हासेसि	हासित्था, हासह, हासेइत्था हासेह हासइत्था, हासेत्था
	हासे—हासेसि	हासेइत्था, हासेह
	हसाव—हसावसि, हसावसे हसावेसि	हसावित्था, हसावह, हसावेइत्था हसावेह, हसावइत्था, हसावेत्था
	हसावे—हसावेसि	हसावेइत्था, हसावेह
उ०पु०	हास—हासमि, हासामि हासेमि	हासमो, हासमु, हासम, हासामो हासामु, हासाम, हासिमो, हासिमु हासिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हासे—हासेमि	हासेमो, हासेमु, हासेम
हसाव—हसावमि, हसावामि हसावेमि	हसावमो, हसावमु, हसावम हसावामो, हसावामु, हसावाम हसाविमो, हसाविमु, हसाविम हसावेमो, हसावेमु, हसावेम
हसावे—हसावेमि	हसावेमो, हसावेमु, हसावेम

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

(सर्ववचन—सर्वपुरुष)

हास—हासेज्ज, हासेज्ज, हासिज्ज, हासिज्जा
हासे—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हसावे—हसावेज्ज हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा

हास-हासे-हासाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हास—हासउ, हासेउ	हासन्तु, हासेन्तु, हासिन्तु
	हासे—हासेउ	हासेन्तु, हासिन्तु
	हसाव—हसावउ, हसावेउ	हसावन्तु, हसावेन्तु, हसाविन्तु
	हसावे—हसावेउ	हसावेन्तु, हसाविन्तु
म०पु०	हास—हासहि हासेहि हाससु, हासेसु हासिज्जसु, हासेज्जसु हासिज्जहि, हासेज्जहि हासिज्जे, हासेज्जे, हास (हासिज्जसि, हासेज्जसि हासिज्जासि, हासेज्जासि हासिज्जाहि, हासेज्जाहि हासाहि)	हासह, हासेह (हासिज्जाह, हासेज्जाह)
	हासे—हासेहि (हासेइज्जसि हासेइज्जासि हासेइज्जाहि)	हासेसु, हासेह (हासेज्जाह)
	हसाव—हसावहि, हसावेहि हसावसु, हसावेसु	हसावह, हसावेह (हसाविज्जाह हसावेज्जाह)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसाविज्जसु, हसावेज्जसु
हसाविज्जहि, हसावेज्जहि
हसाविज्जे, हसावेज्जे, हसाव
(हसाविज्जसि, हसावेज्जसि
हसाविज्जासि, हसावेज्जासि
हसाविज्जाहि, हसावेज्जाहि
हसावाहि)

हसावे—हसावेहि, हसावेसु हसावेह (हसावेज्जाह)
(हसावेइज्जसि, हसावेइज्जासि
हसावेइज्जाहि)

उ०पु० हास—हासमु, हासामु, हासिमु हासमो, हासामो, हासिमो, हासेमो
हासेमु

हासे—हासेमु हासेमो

हसाव—हसावमु, हसावामु हसावमो, हसावामो, हसाविमो
हसाविमु, हसावेमु हसावेमो

हसावे—हसावेमु हसावेमो

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

(सर्वपुरुष—सर्ववचन)

हास—हासेज्ज,	हासेज्जा,	हासिज्ज,	हासिज्जा
हासे—हासेज्ज,	हासेज्जा,	हासिज्ज,	हासिज्जा
हसाव—हसावेज्ज,	हसावेज्जा,	हसाविज्ज,	हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज,	हसावेज्जा,	हसाविज्ज,	हसाविज्जा

हास-हासे-हसाव-सावे (हस्—हासय) अंगस्य

भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन—हासीअ, हासेईअ, हसवीअ, हसावेईअ

आर्ष रूपाणि

(सर्वपुरुष—सर्ववचन)

हास—हासित्था, हासिंसु
हासे—हासेत्था, हासेंसु
हसाव—हसावित्था, हसाविंसु
हसावे—हसावेत्था, हसावेंसु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हास-हासे-हसाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य

भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हास—हासिहिइ, हासिहिए	हासिहिन्ति, हासिहिन्ते, हासिहिरे
	हासेहिइ, हासेहिए	हासेहिन्ति, हासेहिन्ते, हासेहिरे
	(हासिस्सइ, हासिस्सए	(हासिस्सन्ति, हासिस्संते, हासेस्सन्ति
	हासेस्सइ, हासेस्सए)	हासेस्सन्ते)
	हासे—हासेहिइ, हासेहिए	हासेहिन्ति, हासेहिन्ते, हासेहिरे
	(हासेस्सइ, हासेहिए)	(हासेस्सन्ति, हासेस्सन्ते)
	हसाव—हसाविहिइ, हसाविहिए	हसाविहिन्ति, हसाविहिन्ते, हसाविहिरे
	हसावेहिइ, हसावेहिए	हसावेहिन्ति, हसावेहिन्ते, हसावेहिरे
	(हसाविस्सइ, हसाविस्सए	(हसाविस्सन्ति, हसाविस्सन्ते
	हसावेस्सइ, हसावेस्सए)	हसावेस्सन्ति, हसावेस्सन्ते)
	हसावे—हसावेहिइ, हसावेहिए	हसावेहिन्ति, हसावेहिंते, हसावेहिरे
	(हसावेस्सइ, हसावेस्सए)	(हसावेस्सन्ति, हसावेस्सन्ते)
म०पु०	हास—हासिहिसि, हासिहिसे	हासिहित्था, हासिहिह, हासेहित्था
	हासेहिसि, हासेहिसे	हासेहिह (हासिस्सह, हासेस्सह)
	(हासिस्ससि, हासिस्ससे	
	हासेस्ससि, हासेस्ससे)	
	हासे—हासेहिसि, हासेहिसे	हासेहित्था, हासेहिह
	[हासेस्ससि, हासेस्ससे]	(हासेस्सह)
	हसाव—हसाविहिसि, हसाविहिसे	हसाविहित्था, हसाविहिह
	हसावेहिसि, हसावेहिसे	हसावेहित्था, हसावेहिह (हसाविस्सह
	(हसाविस्ससि, हसाविस्ससे	हसावेस्सह)
	हसावेस्ससि, हसावेस्ससे)	
	हसावे—हसावेहिसि, हसावेहिसे	हसावित्था, हसावेहिह
	(हसावेस्ससि,हसावेस्ससे)	(हसावेस्सह)

	एकवचन	बहुवचन
उ०पु०	हास—हासिस्सं, हासेस्सं	हासिस्सामो, हासिस्सामु, हासिस्साम
	हासिस्सामि, हासेस्सामि	हासेस्सामो, हासेस्सामु हासेस्साम
	हासिहामि, हासेहामि	हासिहामो, हासिहामु, हासिहाम
		हासेहामो, हासेहामु, हासेहाम
		हासिहिमो, हासिहिमु, हासिहिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हासिहिमि, हासेहिमि	हासिहिस्सा, हासिहित्था
	हासेहिस्सा, हासेहित्था
हासे—हासेस्सं, हासेस्सामि	हासेस्सामो, हासेस्सामु, हासेस्साम
हासेहामि, हासेहिमि	हासेहामो, हासेहामु, हासेहाम
	हासेहिमो, हासेहिमु, हासेहिम
	हासेहिस्सा, हासेहित्था
हसाव—हसाविस्सं, हसावेस्सं	हसाविस्साम, हसाविस्सामु, हसाविस्साम
हसाविस्सामि, हसावेस्सामि	हसावेस्सामो, हसावेस्सामु, हसावेस्साम
हसाविहामि, हसावेहामि	हसाविहामो, हसाविहामु, हसाविहाम
	हसाविहामो, हसावेहामु, हसावेहाम
	हसावेहामो, हसाविहिमु, हसाविहिम
	हसाविहिमो, हसावेहिमु, हसावेहिम
हसाविहिमि, हसावेहिमि	हमाविहिस्सा, हसाविहित्था
	हसावेहिस्सा, हसावेहित्था
हसावे—हसावेस्सं, हसावेस्सामि	हसावेस्सामो, हसावेस्सामु, हसावेस्साम
हसावेहामि, हसावेहिमि	हसावेहामो, हसावेहामु, हसावेहाम
	हसावेहिमो, हसावेहिमु, हसावेहिम
	हसावेहिस्सा, हसावेहित्था

(सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन)

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

हास—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हासे—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हसाव—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा

हास-हासे-हसाव-हसावे (हस्—हासय) अंगस्य प्रेरके क्रियातिपत्त्यर्थरूपाणि

(सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन)

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

हास—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हासे—हासेज्ज, हासेज्जा, हासिज्ज, हासिज्जा
हसाव—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा
हसावे—हसावेज्ज, हसावेज्जा, हसाविज्ज, हसाविज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंलिंगे

एकवचन	बहुवचन
हास—हासंतो, हासेन्तो, हासिन्तो हासमाणो, हासेमाणो	हासन्ता, हासेन्ता, हासिन्ता हासमाणा, हासेमाणा
हासे—हासेन्तो, हासेमाणो	हासेन्ता, हासेमाणा
हसाव—हसावन्तो, हसावेन्तो, हसाविन्तो, हसावमाणो, हसावेमाणो	हसावन्ता, हसावेंता, हसाविन्ता हसावमाणा, हसावेमाणा
हसावे—हसावेन्तो, हसाविन्तो हसावेमाणो	हसावेन्ता, हसाविन्ता, हसावेमाणा

आर्ष एकवचनरूपाणि

हास—हासन्ते, हासेन्ते, हासिन्ते, हासमाणे, हासेमाणे
हासे—हासेन्ते, हासिन्ते, हासेमाणे
हसाव—हसावन्ते, हसावेन्ते, हसाविन्ते, हसावमाणे, हसावेमाणे
हसावे—हसावेन्ते, हसाविन्ते, हसावेमाणे

स्त्रीलिंगे

एकवचन	बहुवचन
हास—हासन्ती, हासेन्ती हासिन्ती, हासमाणी हासेमाणी	हासन्तीओ, हासेन्तीओ, हासिन्तीओ हासमाणीओ, हासेमाणीओ
हासे—हासेन्ती, हासेमाणी	हासेन्तीओ, हासेमाणीओ
हसाव—हसावन्ती, हसावेन्ती हसाविन्ती, हसावमाणी हसावेमाणी	हसावन्तीओ, हसावेन्तीओ, हसाविन्तीओ हसावमाणीओ, हसावेमाणीओ
हसावे—हसावेन्ती, हसाविन्ती हसावेमाणी	हसावेन्तीओ, हसाविन्तीओ हसावेमाणीओ

नपुंसकलिंगे

एकवचन	बहुवचन
हास—हासन्तं, हासेन्तं, हासिन्तं हासमाणं, हासेमाणं	हासन्ताइं, हासेन्ताइं, हासिन्ताइं हासमाणाइं, हासेमाणाइं
हासे—हासेन्तं, हासिन्तं, हासेमाणं	हासेन्ताइं, हासिन्ताइं, हासेमाणाइं
हसाव—हसावन्तं, हसावेन्तं हसाविन्तं, हसावमाणं हसावेमाणं	हसावन्ताइं, हसावेन्ताइं, हसाविन्ताइं हसावमाणाइं, हसावेमाणाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसावे—हसावेन्तं, हसाविन्तं हसावेन्ताइं, हसाविन्ताइं, हसावेमाणाइं
हसावेमाणं
इमानिरूपाणि जातिमनुसृत्य त्रिषु लिङ्गेषु प्रयुज्यन्ते ।

होअ-होए-होआव-होआवे (भू-भावय) अंगस्य प्रेरके वर्तमानकालस्य रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होअ—होअइ, होअए, होएइ	होअन्ति, होअन्ते, होइरे, होएन्ति होएन्ते, होएइरे, होइन्ति, होइन्ते होअइरे
	होए—होएइ	होएन्ति, होएन्ते, होएइरे
	होआव—होआवइ, होआवेइ होआवए	होआवन्ति, होआवन्ते, होआविरे होआवेन्ति होआवेन्ते, होआवेइरे होआविन्ति, होआविन्ते, होआवइरे
	होआवे—होआवेइ	होआवेन्ति, होआवेन्ते, होआवेइरे होआविन्ति, होआविन्ते
म०पु०	होअ—होअसि, होअसे, होएसि	होइत्था, होएइत्था, होअह, होएह होअइत्था
	होए—होएसि	होएइत्था, होएह
	होआव—होआवसि, होआवेसि होआवसे	होआवेइत्था, होआवेह, होआवह, होआवित्था, होआवइत्था
	होआवे—होआवेसि	होआवेइत्था, होआवेह
उ०पु०	होअ—होअमि, होआमि होएमि	होअमो, होअमु, होअम, होआमो होआमु, होआम, होइमो, होइमु होइम, होएमो, होएमु होएम
	होए—होएमि	होएमो, होएमु, होएम
	होआव—होआवमि, होआवामि होआवेमि	होआवमो, होआवमु, होआवम होआवामो, होआवामु, होआवाम होआविमो, होआविमु, होआविम होआवेमो, होआवेमु, होआवेम
	होआवे—होआवेमि	होआवेमो, होआवेमु, होआवेम

(सर्वपुरुष—सर्ववचन)

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

होअ—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होए—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा।

प्रेरके विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होअ	होअउ, होएउ	होअन्तु, होएन्तु, होइन्तु
होए	होएउ	होएन्तु, होइन्तु
होआव	होआवउ, होआवेउ	होआवन्तु, होआवेन्तु, होआविन्तु
होआवे	होआवेउ	होआवेन्तु, होआविन्तु
म०पु० होअ	होअहि, होएहि, होअसु होएसु, होइज्जसु होएज्जसु, होइज्जहि होएज्जहि, होइज्जे होएज्जे, होअ (होइज्जसि होएज्जसि, होइज्जासि होएज्जासि, होइज्जाहि होएज्जाहि, होआहि)	होअह, होएह (होइज्जाह, होएज्जाह)
होए	होएहि, होएसु (होएइज्जसि, होएइज्जासि होएइज्जाहि)	होएह (होएज्जाह)
होआव	होआवहि, होआवेहि होआवसु, होआवेसु होआविज्जसु, होआवेज्जसु होआविज्जहि, होआवेज्जहि होआविज्जे, होआवेज्जे होआव (होआविज्जसि होआवेज्जसि, होआविज्जासि होआवेज्जासि, होआविज्जहि होआवेज्जाहि, होआवाहि)	होआवह, होआवेह (होआविज्जाह होआवेज्जाह)
होआवे	होआवेहि, होआवेसु (होआवेइज्जसि होआवेइज्जासि)	होआवेह (होआवेज्जाह)
उ०पु० होअ	होअमु, होआमु, होइमु होएमु	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होए—होएमु	होएमो
होआव—होआवमु, होआवामु	होआवमो, होआवामो, होआविमो
होआविमु, होआवेमु	होआवेमो
होआवे—होआवेमु	होआवेमो

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होअ—	होएज्ज,	होएज्जा,	होइज्ज,	होइज्जा
होए—	होएज्ज,	होएज्जा,	होइज्ज,	होइज्जा
होआव—	होआवेज्ज,	होआवेज्जा,	होआविज्ज,	होआविज्जा
होआवे—	होआवेज्ज,	होआवेज्जा,	होआविज्ज,	होआविज्जा

प्रेरके भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुषे—सर्ववचन

होअ—	होअसी,	होअही,	होअहीअ
होए—	होएसी,	होएही,	होएहीअ
होआव—	होआवसी	होआवही	होआवहीअ
होआवे—	होआवेसी	होआवेही	होआवेहीअ

आर्षरूपाणि

होअ— होइत्था,	होइंसु
होए— होएइत्था,	होएइंसु
होआव—होआवित्था,	होआविंसु
होआवे—होआवेत्था	होआवेंसु

प्रेरके भविष्यत्काल रूपाणि

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होअ—होइहिइ, होइहिए, होएहिइ होएहिए, (होइस्सइ होइस्सए, होएस्सइ, होएस्सए	होइहिन्ति, होइहिन्ते, होइहिरे, होएहिन्ति, होएहिन्ते, होएहिरे, होइस्सन्ति, होइस्सन्ते
होए—होएहिइ, होएहिए (होएस्सइ, होएस्सए)	होएहिन्ति, होएहिन्ते, होएहिरे (होएस्सन्ति होएस्सन्ते)
होआव—होआविहिइ, होआविहिए	होआविहिन्ति, होआविहिन्ते, होआविहिरे
होआवेहिइ, होआवेहिए (होआविस्सइ, होआविस्सए होआवेस्सइ, होआवेस्सए)	होआवेहिन्ति, होआवेहिन्ते, होआवेहिरे (होआविस्सन्ति, होआविस्सन्ते होआवेस्सन्ति, होआवेस्सन्ते)
होआवे—होआवेहिइ होआवेहिए	होआवेहिन्ति, होआवेहिन्ते, होआवेहिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(होआवेस्सइ, होआवेस्सए)	(होआविस्सन्ति, होआविस्सन्ते, होआवेस्सन्ति, होआवेस्सन्ते)
म०पु० होअ—होइहिसि, होइहिसे होएहिसि, होएहिसे (होइस्ससि, होइस्ससे होएस्ससि, होएस्ससे)	होइहित्था, होइहिह, होएहित्था होएहिह (होइस्सह, होएस्सह)
होए—होएहिसि, होएहिसे (होएस्ससि, होएस्ससे)	होएहित्था, होएहिह (होएस्सह)
होआव—होआविहिसि, होआविहिसे होआवेहिसि, होआवेहिसे (होआविस्ससि, होआविस्ससे होआवेस्ससि, होआवेस्ससे)	होआविहित्था, होआविहिह होआवेइत्था, होआवेहिह (होआविस्सह, होआवेस्सह)
होआवे—होआवेहिसि (होआवेस्ससि) होआवेहिसे (होआवेस्ससे)	होआवेहिह (होआवेस्सह)
उ०पु० होअ—होइस्सं, होएस्सं, होइस्सामि होएस्सामि, होइहामि होएहामि, होइहिमि होएहिमि	होइस्सामो, होइस्सामु, होइस्साम होएस्सामो, होएस्सामु, होएस्साम होइहामो, होइहामु, होइहाम होएहामो, होएहामु, होएहाम होइहिमो, होइहिमु, होइहिम होएहिमो, होएहिमु, होएहिम होइहिस्सा, होइहित्था, होएहिस्सा होएहित्था
होए—होएस्सं, होएस्सामि होएहामि, होएहिमि	होएस्सामो, होएस्सामु, होएस्साम होएहामो, होएहामु, होएहाम होएहिमो, होएहिमु, होएहिम होएहिस्सा, होएहित्था
होआव—होआविस्सं, होआवेस्सं होआविस्सामि होआवेस्सामि होआविहामि होआवेहामि, होआविहिमि होआवेहिमि	होआविस्सामो, होआविस्सामु होआविस्साम, होआवेस्सामो होआवेस्सामु, होआवेस्साम, होआविहामो, होआविहामु, होआविहाम, होआवेहामो होआविहामु, होआविहाम होआवेहिस्सा, होआवेहित्था होआविहिमो, होआविहिमु होआविहिम, होआवेहिमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होआवेहिमु, होआवेहिम
होआविहित्था

होआवे—होआवेस्सं, होआवेस्सामि होआवेस्सामो, होआवेस्सामु
होआवेहामि, होआवेहिमि होआवेस्साम, होआवेहामो
होआवेहामु, होआवेहाम
होआवेहिमो, होआवेहिमु
होआवेहिम, होआवेहिस्सा
होआवेहित्था

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होअ—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होए—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा

प्रेरके क्रियातिपत्त्यर्थरूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होअ—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होएज्जा
होए—होएज्ज, होएज्जा, होइज्ज, होइज्जा
होआव—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा
होआवे—होआवेज्ज, होआवेज्जा, होआविज्ज, होआविज्जा

पुंलिग

एकवचन	बहुवचन
होअ—होअन्तो, होएन्तो होइन्तो, होअमाणो होएमाणो	होअन्ता, होएन्ता, होइन्ता होअमाणा, होएमाणा
होए—होएन्तो, होइन्तो, होएमाणो	होएन्ता, होइन्ता, होएमाणा
होआव—होआवन्तो, होआवेन्तो होआविन्तो, होआवमाणो होआवेमाणो	होआवन्ता, होआवेन्ता, होआविन्ता होआवमाणा, होआवेमाणा
होआवे—होआवेन्तो, होआविन्तो होआवेमाणो	होआवेन्ता, होआविन्ता होआवेमाणा

आर्षे—होअन्ते, होएन्ते होआवन्ते, होआवेन्ते (इत्यादीनि रूपाणि पूर्ववत्)

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
होअ—होअन्ती, होएन्ती, होइन्ती	होअन्तीओ, होएन्तीओ, होइन्तीओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होअमाणी, होएमाणी	होअमाणीओ, होएमाणीओ
होए—होएन्ती, होइन्ती	होएन्तीओ, होइन्तीओ
होएमाणी	होएमाणीओ
होआव—होआवन्ती, होआवेन्ती	होआवन्तीओ, होआवेन्तीओ
होआविन्ती, होआवमाणी	होआविन्तीओ, होआवमाणीओ
होआवेमाणी	होआवेमाणीओ
होआवे—होआवेन्ती, होआविन्ती	होआवेन्तीओ, होआविन्तीओ
होआवेमाणी	होआवेमाणीओ

नपुंसकलिंग

एकवचन	बहुवचन
होअ—होअन्तं, होएन्तं, होइन्तं	होअन्ताइं, होएन्ताइं, होइन्ताइं
होअमाणं, होएमाणं	होअमाणाइं, होएमाणाइं
होए—होएन्तं, होइन्तं, होएमाणं	होएन्ताइं, होइन्ताइं, होएमाणाइं
होआव—होआवन्तं, होआवेन्तं	होआवन्ताइं, होआवेन्ताइं
होआविन्तं, होआवमाणं	होआविन्ताइं, होआवमाणाइं
होआवेमाणं	होआवेमाणाइं
होआवे—होआवेन्तं, होआविन्तं	होआवेन्ताइं, होआविन्ताइं
होआवेमाणं	होआवेमाणाइं

प्रेरकस्य भावे कर्मणि रूपाणि

हसावीअ-हसाविज्ज-हासीअ-हासिज्ज (हस्—हास्य) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकालस्य रूपाणि

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० हसावीअ—हसावीअइ, हसावीअए हसावीएइ	हसावीअन्ति, हसावीअन्ते, हसावीएन्ति, हसावीएन्ते, हसावीएइरे, हसावीइन्ति, हसावीइन्ते, हसावीइरे हसावीअइरे
हसाविज्ज—हसाविज्जइ, हसाविज्जए हसाविज्जेइ	हसाविज्जन्ति, हसाविज्जन्ते हसाविज्जिरे, हसाविज्जेन्ति हसाविज्जेन्ते, हसाविज्जेइरे हसाविज्जिन्ति, हसाविज्जिन्ते हसाविज्जइरे
हासीअ— हासीअइ, हासीअए	हासीअन्ति, हासीअन्ते, हासीइरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	हासीएइ	हासीएन्ति, हासीएन्ते, हासीएइरे हासीइन्ति, हासीइन्ते, हासीअइरे
हासिज्ज—	हासिज्जइ, हासिज्जए हासिज्जेइ	हासिज्जन्ति, हासिज्जन्ते हासिज्जिरे, हासिज्जेन्ति हासिज्जेन्ते, हासिज्जेइरे हासिज्जिन्ति, हासिज्जिन्ते, हासिज्जइरे
म०पु० हसावीअ—	हसावीअसि, हसावीअसे हसावीएसि	हसावीइत्था, हसावीएइत्था हसावीअह, हसावीएह
हसाविज्ज—	हसाविज्जसि, हसाविज्जसे हसाविज्जेसि	हसाविज्जित्था, हसाविज्जेइत्था हसाविज्जह, हसाविज्जेह
हासीअ—	हासीअसि, हासीअसे हासीएसि	हासीइत्था, हासीएइत्था हासीअह, हासीएह
हासिज्ज—	हासिज्जसि, हासिज्जसे हासिज्जेसि	हासिज्जित्था, हासिज्जेइत्था हासिज्जह, हासिज्जेह
उ०पु० हसावीअ—	हसावीअमि हसावीआमि, हसावीएमि	हसावीअमो, हसावीअमु, हसावीअम हसावीआमो, हसावीआमु, हसावीअम, हसावीइमो, हसावीइमु, हसावीइम, हसावीएमो, हसावीएमु, हसावीएम
हसाविज्ज—	हसाविज्जमि हसाविज्जामि, हसाविज्जेमि	हसाविज्जमो, हसाविज्जमु हसाविज्जम, हसाविज्जामो हसाविज्जामु, हसाविज्जाम हसाविज्जिमो, हसाविज्जिमु हसाविज्जिम, हसाविज्जेमो, हसाविज्जेमु, हसाविज्जेम
हासीअ—	हासीअमि, हसीआमि हासीएमि	हासीअमो, हासीअमु, हासीअम हासीआमो, हासीआमु, हासीआम हासिइमो, हासीइमु, हासीइम हासीएमो, हासीएमु, हासीएम
हासिज्ज—	हासिज्जमि, हासिज्जामि हासिज्जेमि	हासिज्जमो, हासिज्जमु, हासिज्जम हासिज्जामो, हासिज्जामु, हासिज्जाम, हासिज्जिमो, हासिज्जिमु, हासिज्जिम हासिज्जेमो, हासिज्जेमु, हासिज्जेम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुष } हसावीएज्ज, हसावीएज्जा, हासिज्जेज्ज, हासिज्जेज्जा
सर्ववचन } हासीएज्ज, हासीएज्जा, हासिज्जेज्ज, हासिज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च विधि-आज्ञार्थयो रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० हसावीअ—	हसावीअउ, हसावीएउ	हसावीअन्तु, हसावीएन्तु हसावीइन्तु
हसाविज्ज—	हसाविज्जउ, हसाविज्जेउ	हसाविज्जन्तु, हसाविज्जेन्तु हसाविज्जिन्तु
हासीअ—	हासीअउ, हासिएउ	हासीअन्तु, हासीएन्तु, हासीइन्तु
हासिज्ज—	हासिज्जउ, हासिज्जेउ	हासिज्जन्तु, हासिज्जेन्तु हासिज्जिन्तु
म०पु० हसावीअ—	हसावीअहि, हसावीएहि हसावीअसु, हसावीएसु हसावीइज्जसु, हसावीएज्जसु हसावीइज्जहि, हसावीएज्जहि हसावीइज्जे, हसावीएज्जे हसावीअ, हसावीए (हसावीइज्जसि, हसावीएज्जसि हसावीइज्जासि, हसावीएज्जासि हसावीइज्जाहि, हसावीएज्जाहि हसावीआहि)	हसावीअह, हसावीएह (हसावीइज्जाह, हसावीएज्जाह)
हसाविज्ज—	हसाविज्जहि, हसाविज्जेहि हसाविज्जसु, हसाविज्जेसु हसाविज्जिज्जसु, हसाविज्जेज्जसु हसाविज्जिज्जहि, हसाविज्जेज्जहि हसाविज्जिज्जे, हसाविज्जेज्जे हसाविज्ज (हसाविज्जिज्जसि हसाविज्जेज्जसि, हसाविज्जिज्जासि हसाविज्जेज्जासि, हसाविज्जिज्जाहि हसाविज्जेज्जाहि, हसाविज्जाहि)	हसाविज्जह, हसाविज्जेह (हसाविज्जिज्जाह, हसाविज्जेज्जाह)
हासीअ—	हासीअहि, हासीएहि, हासीअसु हासीएसु, हासीइज्जसु हासीएज्जसु, हासीइज्जहि	हासीअह, हासीएह (हासीइज्जाह, हासीएज्जाह)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हासीएज्जहि, हासीइज्जे
हासीएज्जे, हासीअ
(हासीइज्जसि, हासीएज्जसि
हासीइज्जासि, हासीएज्जासि
हासीइज्जाहि, हासीएज्जाहि
हासीआहि)

हासिज्ज— हासिज्जहि, हासिज्जेहि — हासिज्जह, हासिज्जेह
हासिज्जसु, हासिज्जेसु — (हासिज्जिज्जाह
हासिज्जिज्जसु, हासिज्जेज्जसु — हासिज्जेज्जाह)
हासिज्जिज्जहि, हासिज्जेज्जहि
हासिज्जिज्जे, हासिज्जेज्जे
हासिज्ज (हासिज्जिज्जसि
हासिज्जेज्जसि, हासिज्जिज्जासि
हासिज्जेज्जासि, हासिज्जाहि)

उ०पु० हसावीअ—हसावीअमु, हसावीआमु — हसावीअमो, हसावीआमो
हसावीइमु, हसावीएमु — हसावीइमो, हसावीएमो
हसाविज्ज—हसाविज्जमु, हसाविज्जामु — हसाविज्जमो, हसाविज्जामो
हसाविज्जिमु, हसाविज्जेमु — हसाविज्जिमो, हसाविज्जेमो
हासीअ— हासीअमु, हासीआमु — हासीअमो, हासीआमो
हासीइमु, हासीएमु — हासीइमो, हासीएमो
हासिज्ज— हासिज्जमु, हासिज्जामु — हासिज्जमो, हासिज्जामो
हासिज्जिमु, हासिज्जेमु — हासिज्जिमो, हासिज्जेमो

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन

हसावीएज्ज, — हसावीएज्जा
हसाविज्जेज्ज, — हसाविज्जेज्जा
हासीएज्ज, — हासीएज्जा
हासिज्जेज्ज, — हासिज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुष, सर्ववचन

हसावीअ— हसावीअईअ
हसाविज्ज—हसाविज्जईअ
हासीअ— हासीअईअ
हासिज्ज— हासिज्जईअ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आर्षरूपाणि

हसावीअ— हसावीइत्था, हसावीइंसु
हसाविज्ज—हसाविज्जित्था, हसाविंज्जिसु
हासीअ— हासीइत्था, हासीइंसु
हासिज्ज— हासिज्जित्था हासिंज्जिसु

हसावि-हास (हस्—हास्य) प्रेरकाङ्गस्य भावे कर्मणि च भविष्यत्कालरूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० हसावि—	हसाविहिइ, हसाविहिए	हसाविहिन्ति, हसाविहिन्ते हसाविहिरे
	(हसाविस्सइ, हसाविस्सए)	(हसाविस्सन्ति-हसाविस्संते)
हास—	हासिहिइ, हासिहिए	हासिहिन्ति, हासिहिन्ते, हासिहिरे
	हासेहिइ, हासेहिए	हासेहिन्ति, हासेहिन्ते, हासेहिरे
	(हासिस्सइ, हासिस्सए)	(हासिस्सन्ति, हासिस्संते)
	हासेस्सइ, हासेस्सए	हासेस्सन्ति, हासेस्सन्ते)
म०पु० हसावि—	हसाविहिसि, हसाविहिसे	हसाविहित्था, हसाविहिह
	(हसाविस्ससि हसाविस्ससे)	(हसाविस्सह)
हास—	हासिहिसि, हासिहिसे	हासिहित्था, हासिहिह
	हासेहिसि, हासेहिसे	हासेहित्था, हासेहिह
	(हासिस्ससि, हासिस्ससे,	हासिस्सह
	हासेस्ससि, हासेस्सस)	(हासेस्सह)
उ०पु० हसावि—	हसाविस्सं, हसाविस्सामि	हसाविस्सामो-मु-म
	हसाविहामि, हसाविहिमि	हसाविहामो-मु-म
		हसाविहिमो-मु-म
		हसाविहिस्सा, हसाविहित्था
हास—	हासिस्सं, हासेस्सं	हासिस्सामो-मु-म, हासेस्सामो-मु-म
	हासिस्सामि, हासेस्सामि	हासिहामो-मु-म, हासेहामो-मु-म
	हासिहामि, हासेहामि	हासिहिमो-मु-म, हासेहिमो-मु-म
	हासिहिमि, हासेहिमि	हासिहिस्सा, हासिहित्था
		हासेहिस्सा, हासेहित्था

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषे—सर्ववचन

हसावि—हसाविज्ज, हसाविज्जा
हास— हासेज्ज, हासेज्जा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसावि-हास (हस्—हास्य) प्रेरकाङ्गस्य भावे कर्मणि च क्रियातिपत्त्यर्थ रूपाणि

पुंलिंग

एकवचन	बहुवचन
हसावि—हसाविन्तो, हसाविमाणो	हसाविन्ता, हसाविमाणा
हास— हासन्तो, हासेन्तो हासिन्तो	हासन्ता, हासेन्ता, हासिन्ता

स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
हसावि— हसाविन्ती, हसाविमाणी	हसाविन्तीओ, हसाविमाणीओ
हास— हासन्ती, हासेन्ती, हासिन्ती हासमाणी, हासेमाणी	हासन्तीओ, हासेन्तीओ हासिन्तीओ, हासमाणीओ हासेमाणीओ

नपुंसकलिंग

हसावि—हसाविन्तं, हसाविमाणं	हसाविन्ताइं, हसाविमाणाइं
हास—हासन्तं, हासेन्तं, हासिन्तं हासमाणं, हासेमाणं	हासन्ताइं, हासेन्ताइं, हासिन्ताइं हासमाणाइं, हासेमाणाइं

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

हसावि—हसाविज्ज, हसाविज्जा
हास— हासेज्ज, हासेज्जा

होआवीअ-होआविज्ज-होईअ-होइज्ज (भू-भाव्य) अंगस्य भावे कर्मणि च वर्तमानकाल रूपाणि

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होआवीअ—होआवीअइ	होआवीअन्ति-न्ते, होआवीइरे
होआवीएइ	होआवीएन्ति-न्ते, होआवीएइरे
होआवीअए	होआवीइन्ति-न्ते, होआवीअइरे
होआविज्ज—होआविज्जइ	होआविज्जन्ति-न्ते, होआविज्जिरे
होआविज्जेइ	होआविज्जेन्ति-न्ते, होआविज्जेइरे
होआविज्जए	होआविज्जिन्ति-न्ते, होआविज्जइरे
होईअ— होईअइ, होईएइ	होईअन्ति-न्ते, होईइरे
होईअए	होइएन्ति-न्ते, होईएइरे
	होईइन्ति-न्ते, होईअइरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होइज्ज—	होइज्जइ, होइज्जेइ	होइज्जन्ति-न्ते, होइज्जिरे
	होइज्जए	होइज्जेन्ति-न्ते, होइज्जेइरे
		होइज्जिन्ति-न्ते, होइज्जइरे
म०पु० होआवीअ—	होआवीअसि	होआवीइत्था, होआवीअह
	होआवीएसि, होआवीअसे	होआवीएइत्था, होआवीएह
होआविज्ज—	होआविज्जसि	होआविज्जित्था, होआविज्जह
	होआविज्जेसि	होआविज्जेइत्था, होआविज्जेह
	होआविज्जसे	
होईअ—	होईअसि, होईएसि	होईइत्था, होईअह, होईएइत्था
	होईअसे	होईएह
होइज्ज—	होइज्जसि, होइज्जेसि	होइज्जित्था, होइज्जह, होइज्जेइत्था
	होइज्जसे	होइज्जेह
उ०पु० होआवीअ—	होआवीअमि	होआवीअमो-मु-म, होआवीआमो-मु-म
	होआवीआमि	होआवीइमो-मु-म, होआवीएमो-मु-म
	होआवीएमि	
होआविज्ज—	होआविज्जमि	होआविज्जमो-मु-म
	होआविज्जामि	होआविज्जामो-मु-म
	होआविज्जेमि	होआविज्जिमो-मु-म
		होआविज्जेमो-मु-म
होईअ—	होईअमि, होईआमि	होईअमो-मु-म, होईआमो-मु-म
	होईएमि	होईइमो-मु-म, होईएमो-मु-म
होइज्ज—	होइज्जमि, होइज्जामि	होइज्जमो-मु-म, होइज्जामो-मु-म
	होइज्जेमि	होइज्जिमो-मु-म, होइज्जेमो-मु-म

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—होआवीएज्ज, होआवीएज्जा
होआविज्ज—होआविज्जेज्ज, होआविज्जेज्जा
होईअ— होईएज्ज, होईएज्जा
होइज्ज— होइज्जेज्ज, होइज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्म च विधिआज्ञार्थयो रूपाणि

एकवचन		बहुवचन
प्र०पु० होआवीअ—	होआवीअउ	होआवीन्तु, होआवीएन्तु
	होआवीएउ	होआवीइन्तु
होआविज्ज—	होआविज्जउ	होआविज्जन्तु, होआविज्जेन्तु
	होआविज्जेउ	होआविज्जिन्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होईअ—	होईअउ, होईएउ	होईअन्तु, होईएन्तु, होईइन्तु
होइज्ज—	होइज्जउ, होइज्जेउ	होइज्जन्तु, होइज्जेन्तु, होइज्जिन्तु
म०पु० होआवीअ—	होआवीअहि	होआवीअह, होआवीएह
	होआवीएहि, होआवीअसु	(होआवीइज्जाह, होआवीएज्जाह)
	होआवीएसु, होआवीइज्जसु	
	होआवीएज्जसु, होआवीइज्जहि	
	होआवीएज्जहि, होआवीइज्जे	
	होआवीएज्जे, होआवीअ	
	(होआवीइज्जसि, होआवीएज्जसि	
	होआवीइज्जासि, होआवीएज्जासि	
	होआवीइज्जाहि, होआवीएज्जाहि	
	होआवीआहि)	
होआविज्ज—	होआविज्जहि, होआविज्जेहि	होआविज्जह, होआविज्जेह
	होआविज्जसु, होआविज्जेसु	(होआविज्जिज्जाह
	होआविज्जिज्जसु, होआविज्जेज्जसु	होआविज्जेज्जाह)
	होआविज्जिज्जहि, होआविज्जेज्जहि	
	होआविज्जिज्जे, होआविज्जेज्जे	
	होआविज्ज (होआविज्जिज्जसि	
	होआविज्जेज्जसि, होआविज्जिज्जासि	
	होआविज्जेज्जासि, होआविज्जिज्जाहि	
	होआविज्जेज्जाहि, होआविज्जाहि)	
होईअ—	होईअहि, होईएहि, होईअसु	होइअह, होईएह
	होईएसु, होईइज्जसु, होईएज्जसु	(होईइज्जाह, होईएज्जाह)
	होईइज्जहि, होईएज्जहि	
	होईइज्जे, होईएज्जे, होईअ	
	(होईइज्जसि, होइएज्जसि	
	होईइज्जासि, होइएज्जासि	
	होईज्जाहि, होईएज्जाहि	
	होईआहि)	
होइज्ज—	होइज्जहि, होइज्जेहि, होइज्जसु	होइज्जह, होइज्जेह
	होइज्जेसु, होइज्जिज्जसु	(होइज्जिज्जाह
	होइज्जेज्जसु, होइज्जिज्जहि	होइज्जेज्जाह)
	होइज्जेज्जहि, होइज्जिज्जे	
	होइज्जेज्जे, होइज्ज	
	(होइज्जिज्जसि,ज्सजेजो ज्हिइ	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

होइज्जिजासि, होइज्जेज्जासि
होइज्जिज्जाहि, होइज्जेज्जाहि
होइज्जाहि)

उ०पु० होआवीअ—	होआवीअमु, होआवीआमु	होआवीअमो, होआवीआमो
	होआवीइमु, होआवीएमु	होआवीइमो, होआवीएमो
होआविज्ज—	होआविज्जमु, होआविज्जामु	होआविज्जमो, होआविज्जामो
	होआविज्जिमु, होआविज्जेमु	होआविज्जिमो, होआविज्जेमो
होईअ—	होईअमु, होईआमु, होईइमु	होईअमो, होईआमो, होईइमो
	होईएमु	होईएमो
होइज्ज—	होइज्जमु, होइज्जामु	होइज्जमो, होइज्जामो
	होइज्जिमु, होइज्जेमु	होइज्जिमो, होइज्जेमो

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—	होआवीएज्ज,	होआवीएज्जा
होआविज्ज—	होआविज्जेज्ज,	होआविज्जेज्जा
होईअ—	होईएज्ज,	होईएज्जा
होइज्ज—	होइज्जेज्ज,	होइज्जेज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च भूतकालस्य रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—होआवीअसी, होआवीअही, होआवीअहीअ
होआविज्ज—होआविज्जसी, होआवीअही, होआवीअहीअ
होईअ— होईअसी, होईअही, होईअहीअ
होइज्ज— होइज्जसी, होइज्जही, होइज्जहीअ

आर्षरूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवीअ—	होआवीइत्था,	होआवीइंसु
होआविज्ज—	होआविज्जित्था	होआविज्जिंसु
होईअ—	होईइत्था,	होईइंसु
होइज्ज—	होइज्जित्था,	होइज्जिंसु

प्रेरके होआवि-हो (भू—भाव्य) अंगस्यभावेकर्मणि च भविष्यत्काल रूपाणि

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० होआवि—	होआविहिइ	होआविहिन्ति, होआविहिन्ते
	होआविहिए	होआविहिरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	(होआविस्सइ होआविस्सए)	(होआविस्सन्ति-न्ते)
हो—	होहिइ, होहिए	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
	(होस्सइ, होस्सए)	(होस्सन्ति, होस्सन्ते)
म०पु० होआवि—	होआविहिसि होआविहिसे	होआविहित्था, होआविहिह
	(होआविस्ससि होआविस्ससे)	(होआविस्सह)
हो—	होहिसि, होहिसे	होहित्था, होहिह
	(होस्ससि, होस्ससे)	(होस्सह)
उ०पु० होआवि—	होआविस्सं	होआविस्सामो-मु-म
	होआविस्सामि	होआविहामो-मु-म
	होआविहामि, होआविहिमि	होआविहिमो-मु-म, होआविहिस्सा होआविहित्था
हो—	होस्सं, होस्सामि	होस्सामो-मु-म, होहामो-मु-म
	होहामि, होहिमि	होहिमो-मु-म, होहिस्सा, होहित्था

ज्ज-ज्जा प्रत्यये रूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवि—होआविज्ज, होआविज्जाज्जा

हो— होज्ज, होज्जा

(प्रेरके) भावे कर्मणि च क्रियातिपत्त्यर्थरूपाणि

सर्वपुरुषेषु—सर्ववचन

होआवि—होआविज्ज, होआविज्जा

हो— होज्ज-होज्जा

पुंलिग

	एकवचन	बहुवचन
होआवि—	होआविन्तो, होआविमाणो	होआविन्ता, होआविमाणा
हो—	होन्तो, हुन्तो, होमाणो	होन्ता, हुन्ता, होमाणा

स्त्रीलिंग

होआवि—	होआविन्ती, होआविमाणी	होआविन्तीओ, होआविमाणीओ
हो—	होन्ती, हुन्ती, होमाणी	होन्तीओ, हुन्तीओ, होमाणीओ

नपुंसकलिंग

होआवि—	होआविन्तं, होआविमाणं	होआविन्ताइं, होआविमाणाइं
हो—	होन्तं, हुन्तं, होमाणं	होन्ताइं, हुन्ताइं, होमाणाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ३ अपभ्रंश शब्द रूपावलि

० शब्द का अन्त्य स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व और ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है। उन रूपों में कोई विभक्ति नहीं लगती, जैसा शब्द होता है उसी रूप में रहता है।

१ अकारान्त पुंलिग जिण (जिन) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जिण, जिणा, जिणु, जिणो	जिण, जिणा
द्वि०	जिण, जिणा, जिणु	जिण, जिणा
तृ०	जिणेण, जिणेणं, जिणें	जिणहिं, जिणाहिं, जिणेहिं
पं०	जिणहे, जिणाहे, जिणहु, जिणाहु	जिणहुं, जिणाहुं
च०/ष०	जिण, जिणा, जिणसु जिणासु, जिणहो, जिणाहो, जिणस्सु	जिण, जिणा, जिणहं, जिणाहं
स०	जिणि, जिणे	जिणहिं, जिणाहिं
सं०	जिण, जिणा, जिणु, जिणो	जिण, जिणा, जिणहो, जिणाहो

२ इकारान्त पुंलिग मुणि (मुनि) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी
द्वि०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी
तृ०	मुणिएं, मुणीएं, मुणिं, मुणीं मुणिण, मुणीण, मुणिणं, मुणीणं	मुणिहिं, मुणीहिं
पं०	मुणिहे, मुणीहे	मुणिहुं, मुणीहुं
च०/ष०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी, मुणिहं, मुणीहं मुणिहुं, मुणीहुं
स०	मुणिहि, मुणीहि	मुणिहिं, मुणीहिं, मुणिहुं, मुणीहुं
सं०	मुणि, मुणी	मुणि, मुणी, मुणिहो, मुणीहो

३ ईकारान्त पुंलिग गामणी (ग्रामणी) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि
द्वि०	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० गामणीएं, गामणिएं, गामणीं गामणि, गामणीण, गामणिण गामणीणं, गामणिणं	गामणीहिं, गामणिहिं
पं० गामणीहे, गामणिहे	गामणीहुं, गामणिहुं
च०/ष० गामणी, गामणि	गामणी, गामणि, गामणीहं गामणिहं, गामणीहुं, गामणिहुं
स० गामणीहि, गामणिहि	गामणीहिं, गामणिहिं, गामणीहुं गामणिहुं
सं० गामणी, गामणि	गामणी, गामणि, गामणीहो गामणिहो

४ उकारान्त पुंलिग साहु (साधु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० साहु, साहू	साहु, साहू
द्वि० साहु, साहू	साहु, साहू
तृ० साहुएं, साहूएं, साहुं, साहूं, साहुण साहूण, साहुणं, साहूणं	साहुहिं, साबूहिं
पं० साहुहे, साहूहे	साहुहुं, साहूहुं
च०/ष० साहु, साहू	साहु, साहू, साहुहं, साहूहं
स० साहुहि, साहूहि	साहुहिं, साहूहिं, साहुहुं, साहूहुं
सं० साहु, साहू	साहु, साहू, साहुहो, साहूहो

५ ऊकारान्त पुंलिग सयंभू (स्वयंभू) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
द्वि० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
तृ० सयंभूएं, सयंभुएं, सयंभू, सयंभु सयंभूण, सयंभुण, सयंभूणं, सयंभुणं	सयंभूहिं, सयंभुहिं
पं० सयंभूहे, सयंभुहे	सयंभूहुं, सयंभुहुं
च०/ष० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु, सयंभूहुं, सयंभुहुं सयंभूहं, सयंभुहं
स० सयंभूहि, सयंभुहि	सयंभूहिं, सयंभुहिं
सं० सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु, सयंभूहो, सयंभुहो

६ आकारान्त स्त्रीलिंग माला (माला) शब्द

प्र० माला, माल	माला, माल, मालाउ, मालउ मालाओ, मालओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वि० माला, माल	माला, माल, मालाउ, मालउ मालाओ, मालओ
तृ० मालाए, मालए	मालाहिं, मालहिं
पं० मालाहे, मालहे	मालाहु, मालहु
च०/ष० माला, माल, मालाहे, मालहे	माला, माल, मालाहु, मालहु
स० मालाहिं, मालहिं	मालाहिं, मालहिं
सं० माला, माल	माला, माल, मालाउ, मालउ मालाओ, मालओ, मालाहो, मालहो

७ इकारान्त स्त्रीलिंग मइ (मति) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ, मइओ मईओ
द्वि० मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ, मइओ मईओ
तृ० मइए, मईए	मइहिं, मईहिं
पं० मइहे, मईहे	मइहु, मईहू
च०/ष० मइ, मई, मइहे, मईहे	मइ, मई, मइहु, मईहु
स० मइहिं, मईहिं	मइहिं, मईहिं,
सं० मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ, मइओ मईओ, मइहो, मईहो

८ ईकारान्त स्त्रीलिंग वाणी (वाणी) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० वाणी, वाणि	वाणी, वाणि, वाणीउ, वाणिउ वाणीओ, वाणिओ
द्वि० वाणी, वाणि	वाणी, वाणि, वाणीउ, वाणिउ वाणीओ, वाणीउ
तृ० वाणीए, वाणिए	वाणीहिं, वाणिहिं
पं० वाणीहे, वाणिहे	वाणीहु, वाणिहु
च०/ष० वाणी, वाणि, वाणीहे वाणिहे	वाणी, वाणि, वाणीहु, वाणिहु
स० वाणीहिं, वाणिहिं	वाणीहिं, वाणिहिं
सं० वाणी, वाणि	वाणी, वाणि, वाणीउ, वाणिउ वाणीओ, वाणिओ, वाणीहो, वाणिहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९ उकारान्त स्त्रीलिंग धेणु (धेनु) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० धेणु, धेधू	धेणु, धेणू, धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ धेणूओ
द्वि० धेणु, धेणू	धेणु, धेणू, धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ धेणूओ
तृ० धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं
पं० धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
च०/ष० धेणु, धेणू, धेणुहे, धेणूहे	धेणु, धेणू, धेणुहु, धेणूहु
स० धेणुहिं, धेणूहिं	धेणुहिं, धेणूहिं
सं० धेणु, धेणू	धेणु, धेणू, धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ धेणूओ, धेणुहो, धेणूहो

१० ऊकारान्त स्त्रीलिंग वधू [बहू] शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० बहु, बहू	बहु, बहू, बहुउ, बहूउ, बहुओ, बहुओ
द्वि० बहु, बहू	बहु, बहू, बहुउ, बहूउ, बहुओ, बहूओ
तृ० बहुए, बहूए	बहुहिं, बहूहिं
पं० बहुहे, बहूए	बहुहु, बहूहु
च०/ष० बहु, बहू, बहुहे, बहूहे	बहु, बहू, बहुहु, बहूहु
स० बहुहिं, बहूहिं	बहुहिं, बहूहिं
सं० बहु, बहू	बहु, बहू, बहुउ, बहूउ, बहुओ, बहूओ बहुहो, बहूहो

११ अकारान्त नपुंसकलिंग कमल (कमल) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कमल, कमला, कमलु कमलक—कमलउं[1]	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं
द्वि० कमल, कमला, कमलु कमलक—कमलउं	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं
तृ० कमलेण, कमलेणं, कमलें	कमलहिं, कमलाहिं, कमलेहिं

नोट—१. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द के स्वार्थ में क प्रत्यय होने पर उसका अन्त्य अक्षर अ होता है तब उसके प्रथमा व द्वितीया के एकवचन में उ प्रत्यय में अनुस्वार होता है। जैसे—कमलक शब्द का (नपुंसक प्रथमा व द्वितीया का एकवचन—कमलउं)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं०	कमलहे, कमलाहे, कमलहु कमलाहु	कमलहुं, कमलाहुं
च०/ष०	कमल, कमला, कमलसु कमलासु, कमलहो, कमलाहो कमलस्सु	कमल, कमला, कमलहं, कमलाहं
स०	कमलि, कमले	कमलहिं, कमलाहिं
सं०	कमल, कमला, कमलु कमलक – कमलउं	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं कमलहो, कमलाहो

१२ इकारान्त नपुंसकलिंग वारि (वारि) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वारि, वारी	वारि, वारी, वारीइं, वीराइं
द्वि०	वारि, वारी	वारि, वारी, वारिइं, वारीइं
तृ०	वारिं, वारीं, वारिएं, वारीएं वारिण, वारीण, वारिणं, वारीणं	वारिहिं, वारीहिं
पं०	वारिहे, वारीहे	वारिहुं, वारीहुं
च०/ष०	वारि, वारी	वारि, वारी, वारिहुं, वारीहुं, वारिहं वारीहं
स०	वारिहि, वारीहि	वारिहिं, वारीहिं, वारिहुं, वारीहुं
सं०	वारि, वारी	वारि, वारी, वारिइं, वारीइं, वारिहो वारीहो

१३ उकारान्त नपुंसकलिंग महु (मधु) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	महु, महू	महु, महू, महुइं, महूइं
द्वि०	महु, महू	महु, महू, महुइं, महूइं
तृ०	महुं, महूं, महुएं, महूएं, महुण महूण, महुणं, महूणं	महुहिं, महूहिं
पं०	महुए, महूए	महुहुं, महूहुं
च०/ष०	महु, महू	महु, महू, महुहुं, महूहुं, महुहं, महूहं
स०	महुहि, महूहि	महुहिं, महूहिं, महुहुं, महूहुं
सं०	महु, महू	महु, महू, महुइं, महूइं, महुहो, महूहो

१४ क पुंलिंग सव्व (सर्व) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	सव्व, सव्वा, सव्वु, सव्वो	सव्व, सव्वा
द्वि०	सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० सव्वें, सव्वेण, सव्वेणं	सव्वहिं, सव्वाहिं, सव्वेहिं
पं० सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
च०/ष० सव्व, सव्वा, सव्वसु सव्वासु, सव्वहो, सव्वाहो सव्वस्सु	सव्व, सव्वा सव्वहं, सव्वाहं
स० सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

१४ ख स्त्रीलिंग सव्वा (सर्वा) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व, सव्वाउ, सव्वउ, सव्वाओ सव्वओ
द्वि० सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व, सव्वाउ, सव्वउ, सव्वाओ सव्वओ
तृ० सव्वाए, सव्वए	सव्वाहिं, सव्वहिं
पं० सव्वाहे, सव्वहे	सव्वाहु, सव्वहु
च०/ष० सव्वा, सव्व, सव्वाहे सव्वहे	सव्वा, सव्व, सव्वाहु, सव्वहु
स० सव्वाहिं, सव्वहिं	सव्वाहिं, सव्वहिं

१४ ग नपुंसकलिंग सव्व (सर्व) शब्द (सब)

एकवचन	बहुवचन
प्र० सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा, सव्वइं, सव्वाइं
द्वि० सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा, सव्वइं, सव्वाइं
तृ० सव्वें, सव्वेण, सव्वेणं	सव्वहिं, सव्वाहिं, सव्वेहिं
पं० सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
च०/ष० सव्व, सव्वा, सव्वसु सव्वासु, सव्वहो, सव्वाहो सव्वस्सु	सव्व, सव्वा, सव्वहं, सव्वाहं
स० सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

१५ क पुंलिग त (तत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० स, सा, सु, सो, त्रं, तं	त, ता
द्वि० त्रं, तं	त, ता
तृ० तें, तेण, तेणं	तहिं, ताहिं, तेहिं
पं० तहां, ताहां	तहुं, ताहुं
च०/ष० त, ता, तसु, तासु, तहो ताहो, तस्सु, तासु	त, ता, तहं, ताहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० तहिं, ताहिं	तहिं, ताहिं

१५ ख स्त्रीलिंग ता (तत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० त्रं, तं, सा, स	ता, त, ताउ, तउ, ताओ, तओ
द्वि० त्रं, तं	ता, त, ताउ, तउ, ताओ, तओ
तृ० ताए, तए	ताहिं, तहिं
पं० ताहे, तहे	ताहु, तहु
च०/ष० ता, त, ताहे, तहे	ता, त, ताहु, तहु
स० ताहिं, तहिं	ताहिं, तहिं

१५ ग नपुंसक त (तत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० त्रं, तं	त, ता, तइं, ताइं
द्वि० त्रं, तं	त, ता, तइं, ताइं
तृ० तें, तेण, तेणं	तहिं, ताहिं, तेहिं
पं० तहां, ताहां	तहुं, ताहुं
च०/ष० त, ता, तसु, तासु, तहो ताहो, तस्सु, तासु	त, ता, तहं, वाहं
स० तहिं, ताहिं	तहिं, ताहिं

१६ क पुंलिंग ज (यत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० ध्रुं, जु, ज, जा, जो	ज, जा
द्वि० ध्रुं, जु, ज, जा	ज, जा
तृ० जें, जेण, जेण	जहिं, जाहिं, जेहिं
पं० जहं, जाहां	जहुं, जाहुं
च०/ष० ज, जा, जसु, जासु जहो, जाहो, जस्सु, जासु	ज, जा, जहं, जाहं
स० जहिं, जाहिं	जहिं, जाहिं

१६ ख स्त्रीलिंग जा (यत्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० ध्रुं, जु	जा, ज, जाउ, जउ, जाओ, जओ
द्वि० ध्रुं, जु	जा, ज, जाउ, जउ, जाओ, जओ
तृ० जाए, जए	जाहिं, जहिं
पं० जाहे, जहे	जाहु, जहु
च०/ष० जा, ज, जाहे, जहे	जा, ज, जाहु, जहु
स० जाहिं, जहिं	जाहिं, जहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६ ग नपुंसकलिंग ज (यत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	ध्रुं, जु	ज, जा, जइं, जाइं
द्वि०	ध्रुं, जु	ज, जा, जइं, जाइं
तृ०	जें, जेण, जेणं	जहिं, जाहिं
पं०	जहां, जाहां	जहुं, जाहुं
च०/ष०	ज, जा, जसु, जासु जहो, जाहो, जस्सु, जासु	ज, जा, जहं, जाहं
स०	जहिं, जाहिं	जहिं, जाहिं

१७ क पुंलिग क (किम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	क, का, कु, को	क, का
द्वि०	क, का, कु	क, का
तृ०	कें, केण, केणं	कहिं, काहिं, केहिं
पं०	कहां, काहां, किहे	कहुं, काहुं
च०/ष०	क, का, कसु, कासु कहो, काहो, कस्सु, कासु	क, का, कहं, काहं
स०	कहिं, काहिं	कहिं, काहिं

१८ ख स्त्रीलिंग का (किम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	का, क	का, क, काउ, कउ, काओ, कओ
द्वि०	का, क	का, क, काउ, कउ, काओ, कओ
तृ०	काए, कए	काहिं, कहिं
पं०	काहे, कहे	काहु, कहु
च०/ष०	का, क, काहे, कहे, कहे	का, क, काहु, कहु
स०	काहिं, कहिं	काहिं, कहिं

१७ ग नपुंसकलिंग क (किम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	क, का, कु	क, का, कइं, काइं
द्वि०	क, का, कु	क, का, कइं, काइं
तृ०	कें, केण, केणं	कहिं, काहिं, केहिं
पं०	कहां, काहां, किहे	कहुं, काहुं
च०/ष०	क, का, कसु, कासु कहो, काहो, कस्सु, कासु	क, का, कहं, काहं
स०	कहिं, काहिं	कहिं, काहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८ क पुंलिंग एत (एतत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एहो	एइ
द्वि०	एहो	एइ
तृ०	एतें, एतेण, एतेणं	एतहिं, एताहिं, एतेंहि
पं०	एतहां, एताहां	एतहुं, एताहुं
च०/ष०	एत, एता, एतसु, एतासु एतहो, एताहो, एतस्सु	एत, एता, एतहं, एताहं
स०	एतहि, एताहि	एतहिं, एताहिं

१८ख स्त्रीलिंग एता (एतत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एह	एइ
द्वि०	एह	एइ
तृ०	एताए, एतए	एताहिं, एतहिं
पं०	एताहे, एतहे	एताहु, एतहु
च०/ष०	एता, एत, एताहे, एतहे	एता, एत, एताहु, एतहु
स०	एताहिं, एतहिं	एताहिं, एतहिं

१८ ग नपुंसकलिंग एत् (एतत्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एहु	एइ
द्वि०	एहु	एइ
तृ०	एतें, एतेण, एतेणं	एतहिं, एताहिं, एतेंहि
पं०	एतहां, एताहां	एतहुं, एताहुं
च०/ष०	एत, एता, एतसु, एतासु एतहो, एताहो, एतस्सु	एत, एता, एतहं, एताहं
स०	एतहिं, एताहिं	एतहिं, एताहिं

१९ क पुंलिंग इम (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इम, इमा, इमु, इमो	इम, इमा
द्वि०	इम, इमा, इमु	इम, इमा
तृ०	इमें, इमेण, इमेणं	इमहिं, इमाहिं, इमेंहिं
पं०	इमहां, इमाहां	इमहुं, इमाहुं
च०/ष०	इम, इमा, इमसु, इमासु इमहो, इमाहो, इमस्सु	इम, इमा, इमहं, इमाहं
स०	इमहिं, इमाहिं	इमहिं, इमाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९ ख स्त्रीलिंग इमा (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमा, इम	इमा, इम, इमाउ, इमउ, इमाओ इमओ
द्वि०	इमा, इम	इमा, इम, इमाउ, इमउ, इमाओ इमओ
तृ०	इमाए, इमए	इमाहिं, इमहिं
पं०	इमाहे, इमहे	इमाहु, इमहु
च०/ष०	इमा, इम, इमाहे, इमहे	इमा, इम, इमाहु, इमहु
स०	इमाहिं, इमहिं	इमाहिं, इमहिं

१९ ग नपुंसकलिंग इम (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमु	इम, इमा, इमइं, इमाइं
द्वि०	इमु	इम, इमा, इमइं, इमाइं
तृ०	इमें, इमेण, इमेणं	इमहिं, इमाहिं, इमेहिं
पं०	इमहां, इमाहां	इमहुं, इमाहुं
च०/ष०	इम, इमा, इमसु, इमासु इमहो, इमाहो, इमस्सु	इम, इमा, इमहं, इमाहं
स०	इमहिं, इमाहिं	इमहिं, इमाहिं

२० क पुंलिंग आय (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	आय, आया, आयु, आयो	आय, आया
द्वि०	आय, आया, आयु	आय, आया
तृ०	आयें, आयेण, आयेणं	आयहिं, आयाहिं, आयेहिं
पं०	आयहां, आयाहां	आयहुं, आयाहुं
च०/ष०	आय, आया, आयसु, आयासु आयहो, आयाहो, आयस्सु	आय, आया, आयहं, आयाहं
स०	आयहिं, आयाहिं	आयहिं, आयाहिं

२० ख स्त्रीलिंग आया (इदम्) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	आया, आय	आया, आय, आयाउ, आयउ आयाओ, आयओ
द्वि०	आय, आय	आया, आय, आयाउ, आयउ आयाओ, आयओ
तृ०	आयाए, आयए	आयाहिं, आयहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं० आयाहे, आयहे	आयाहुं, आयहुं
च०/ष० आया, आय, आयाहे, आयहे	आया, आय, आयाहु, आयहु
स० आयहिं, आयहिं	आयाहिं, आयहिं

२० ग नपुंसक आय (इदम्)

एकवचन	बहुवचन
प्र० आय, आया, आयु	आय, आया, आयइं, आयाइं
द्वि० आय, आया, आयु	आय, आया, आयइं, आयाइं
तृ० आयें, आयेण, आयेणं	आयहिं, आयाहिं, आयेहिं
पं० आयहां, आयाहां	आयहुं, आयाहुं
च०/ष० आय, आया, आयसु, आयासु आयहो, आयाहो, आयस्सु	आय, आया, आयहं, आयाहं
स० आयहिं, आयाहिं	आयहिं, आयाहिं

२१ क पुंलिग अमु (अदस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अमु, अमू	ओइ
द्वि० अमु, अमू	ओइ
तृ० अमुएं, अमूएं, अमुं, अमूं, अमुण अमूण, अमुणं, अमूणं	अमुहिं, अमूहिं
पं० अमुहे, अमूहे	अमुहुं, अमूहुं
च०/ष० अमु, अमू	अमु, अमू, अमुहं, अमूहं, अमुहुं अमूहुं
स० अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं, अमुहुं, अमूहुं

२१ ख स्त्रीलिंग अमु (अदस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अमु, अमू	ओइ
द्वि० अमु, अमू	ओइ
तृ० अमुए, अमूए	अमुहिं, अमूहिं
पं० अमुहे, अमूहे	अमुहु, अमूहु
च०/ष० अमु, अमू, अमुहे, अमूहे	अमु, अमू, अमुहु, अमूहु
स० अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं

२१-ग नपुंसकलिंग अमु (अदस्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० अमु, अमू	ओइ
द्वि० अमु, अमू	ओइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ० अमुएं, अमूएं, अमुं, अमूं	अमुहिं, अमूहिं
पं० अमुहे, अमूहे	अमुहुं, अमूहुं
च०/ष० अमु, अमू	अमु, अमू, अमुहुं, अमूहुं, अमुहं अमूहं
स० अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं, अमुहुं, अमूहुं

२२ क पुंलिंग कवण (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कवण, कवणा, कवणु, कवणो	कवण, कवणा
द्वि० कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा
तृ० कवणें, कवणेण, कवणेणं	कवणहिं, कवणाहिं, कवणेहिं
पं० कवणहां, कवणाहां	कवणहुं, कवणाहुं
च०/ष० कवण, कवणा, कवणसु कवणासु, कवणहो, कवणाहो कवणस्सु	कवण, कवणा, कवणहं, कवणाहं
स० कवणहिं, कवणाहिं	कवणहिं, कवणाहिं

२२ ख स्त्रीलिंग कवणा (कम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कवणा, कवण	कवणा, कवण, कवणाउ, कवणउ कवणाओ, कवणओ
द्वि० कवणा, कवण	कवणा, कवण कवणाउ, कवणउ कवणाओ, कवणओ
तृ० कवणाए, कवणए	कवणाहिं, कवणहिं
पं० कवणाहे, कवणहे	कवणाहु, कवणहु
च०/ष० कवणा, कवण, कवणाहे कवणहे	कवणा, कवण, कवणाहु, कवणहु
स० कवणाहिं, कवणहिं	कवणाहिं, कवणहिं

२२ ग नपुंसकलिंग कवण (किम्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा, कवणइं, कवणाइं
द्वि० कवण, कवणा	कवण, कवणा, कवणइं, कवणाइं
तृ० कवणें, कवणेण, कवणेणं	कवणहिं, कवणाहिं, कवणेहिं
पं० कवणहां, कवणाहां	कवणहुं, कवणाहुं
च०/ष० कवण, कवणा, कवणसु कवणासु, कवणहो, कवणाहो कवणस्सु	कवण, कवणा, कवणहं, कवणाहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स० कवणहिं, कवणाहिं	कवणहिं, कवणाहिं

२३ (तीनों लिंगों में) अम्ह (अस्मद्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० हउं	अम्हे, अम्हइं
द्वि० मइं	अम्हे, अम्हइं
तृ० मइं	अम्हेहिं
पं० महु, मज्झु	अम्हहं
च०/ष० महु, मज्झु	अम्हहं
स० मइं	अम्हासु

२४ (तीनों लिंगों में) तुम्ह (युष्मद्) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० तुहुं	तुम्हे, तुम्हइं
द्वि० पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइं
तृ० पइं, तइं	तुम्हेहिं
पं० तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
च०/ष० तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
स० पइं, तइं	तुम्हासु

२५ (तीनों लिंगों में) काइं (किम्) शब्द

सभी वचनों और सभी विभक्तियों में काइं।

संख्यावाची शब्द

२६-क पुंलिंग एग, एअ, एक्क (एक) शब्द

एकवचन	बहुवचन
प्र० एग, एगा, एगु, एगो एअ, एआ, एउ, एओ एक्क, एक्का, एक्कु, एक्को	एग, एगा, एअ, एआ, एक्क, एक्का
द्वि० एग, एगा, एगु, एअ, एआ, एउ एक्क, एक्का, एक्कु	एग, एगा, एअ, एआ, एक्क, एक्का
तृ० एगें, एगेण, एगेणं, एएं, एएण एएणं, एक्कें, एक्केण, एक्केणं	एगहिं, एगाहिं, एगेहिं, एअहिं एआहिं, एएहिं, एक्कहिं, एक्काहिं एक्केहिं
पं० एगहां, एगाहां, एअहां, एआहां एक्कहां, एक्काहां	एगहुं, एगाहुं, एअहुं, एआहुं, एक्कहुं एक्काहुं
च०/ष० एग, एगा, एगसु, एगासु एगहो, एगाहो, एगस्सु, एअ एआ, एअसु, एआसु, एअहो	एग, एगा, एगहं, एगाहं, एअ, एआ एअहं, एआहं, एक्क, एक्का, एक्कहं एक्काहं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	एकवचन	बहुवचन
	एआहो, एअस्सु, एक्क, एक्का एक्कसु, एक्कासु, एक्कहो एक्काहो, एक्कसु	
स०	एगहिं, एगाहिं, एअहिं, एआहिं एक्कहिं, एक्काहिं	एगहिं, एगाहिं, एअहिं, एआहिं, एक्कहिं एक्काहिं

२६ख स्त्रीलिंग एगा, एआ, एक्का (एक) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एगा, एग, एआ, एअ, एक्का एक्क	एगा, एग, एगाउ, एगउ, एगाओ एगओ, एआ, एअ, एआउ, एअउ एआओ, एअओ, एक्का, एक्क, एक्काउ एक्कउ, एक्काओ, एक्कओ
द्वि०	एगा, एग, एआ, एअ, एक्का एक्क	एगा, एग, एगाउ, एगउ, एगाओ एगओ, एआ, एअ, एआउ, एअउ एआओ, एअओ, एक्का, एक्क, एक्काउ एक्कउ, एक्काओ, एक्कओ
तृ०	एगाए, एगए, एआए, एअए	एगाहिं, एगहिं, एआहिं, एअहिं, एक्काहिं एक्कहिं
पं०	एगाहे, एगहे, एआहे, एअहे एक्काहे, एक्कहे	एगाहु, एगहु, एआहु, एअहु, एक्काहु एक्कहु
च०/ष०	एगा, एग, एगाहे, एगहे एआ, एअ, एआहे, एअहे एक्का, एक्क, एक्काहे, एक्कहे	एगा, एग, एगाहु, एगहु, एआ, एअ एआहु, एअहु, एक्का, एक्क, एक्काहु एक्कहु
स०	एगाहिं, एगहिं, एआहिं, एअहिं एक्काहिं, एक्कहिं	एगाहिं, एगहिं, एआहिं, एअहिं एक्काहिं, एक्कहिं

२६ग नपुंसकलिंग एग, एअ, एक्क (एक) शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एग, एगा, एगु, एअ, एआ एउ एक्क, एक्का, एक्कु	एग, एगा, एगइं, एगाइं, एअ, एआ एअइं, एआइं, एक्क, एक्का, एक्कइं एक्काइं
द्वि०	एग, एगा, एगु, एअ, एआ एउ, एक्क, एक्का, एक्कु	एग, एगा, एगइं, एगाइं, एअ, एआ एअइं, एआइं, एक्क, एक्का, एक्कइं एक्काइं
तृ०	एगें, एगेण, एगेणं, एएं, एएण एएणं, एक्कें, एक्केण, एक्केणं	एगहिं, एगाहिं, एगेहिं, एअहिं, एआहिं एएहिं, एक्कहिं, एक्काहिं, एक्केहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पं०	एगहां, एगाहां, एअहां, एआहां एक्कहां, एक्काहां	एगहुं, एगाहुं, एअहुं, एआहुं, एक्कहुं एक्काहुं
च०/ष०	एग, एगा, एगसु, एगासु एगहो, एगाहो, एगस्सु, एअ एआ, एअसु, एआसु, एअहो एआहो, एअस्सु, एक्क, एक्का एक्कसु, एक्कासु, एक्कहो एक्काहो, एक्कस्सु	एग, एगा, एगहं, एगाहं, एअ, एआ एअहं, एआहं, एक्क, एक्का, एक्कहं एक्काहं
स०	एगहिं, एगाहिं, एअहिं, एआहिं एक्कहिं, एक्काहिं	एगहिं, एगाहिं, एअहिं, एआहिं, एक्कहिं एक्काहिं

२७ (तीनों लिंगों में) दु, दो, बे (द्वि) शब्द

बहुवचन

प्र० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे
द्वि० दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, वे
तृ० दोहि, दोहिं, दोहिँ, वेहि, वेहिं, वेहिँ
पं० दुत्तो, दुओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो, वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिंतो
च०/ष० दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं, वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं
स० दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

२८ तिण्ण (त्रि) शब्द (तीनों लिंगों में) / २९ चउ (चतुर) शब्द (तीनों लिंगों में)

	२८ तिण्ण (त्रि) — बहुवचन	२९ चउ (चतुर) — बहुवचन
प्र०	तिण्णि	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वि०	तिण्णि	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
तृ०	तीहि, तीहिं तीहिँ	चउहि, चउहिं, चउहिँ
पं०	तित्तो, तीआ, तीउ, तीहिन्तो तीसुन्तो	चउत्तो, चऊओ, चऊउ चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ चउहिन्तो, चउसुन्तो
च०/ष०	तीण्ह, तीण्हं	चउण्ह, चउण्हं
स०	तीसु, तीसुं	चऊसु, चऊसुं, चउसु, चउसुं

३० पंच (पञ्च) शब्द (तीनों लिंगों में) / ३१ छ (षष्) शब्द (तीनों लिंगों में)

	३० पंच (पञ्च) — बहुवचन	३१ छ (षष्) — बहुवचन
प्र०	पंच	छ
द्वि०	पंच	छ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृ०	पंचहि, पंचहिं, पंचहिँ	छहि, छहिं, छहिँ
पं०	पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहि पंचाहिन्तो, पंचासुन्तो,	छाओ, छाउ, छाहिन्तो, छासुन्तो
च०/ष०	पंचण्ह, पंचण्हं	छण्ह, छण्हं
स०	पंचसु, पंचसुं	छसु, छसुं

	३२ सात (सप्तन्) शब्द (तीनों लिंगों में)	३३ अट्ठ (अष्टन्) शब्द (तीनों लिंगों में)
	बहुवचन	बहुवचन
प्र०	सत्त	अट्ठ
द्वि०	सत्त	अट्ठ
तृ०	सत्तहि, सत्तहिं, सत्तहिँ	अट्ठहि, अट्ठहिं, अट्ठहिँ
पं०	सत्ताओ, सत्ताउ, सत्ताहिन्तो सत्तासुन्तो	अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिन्तो अट्ठासुन्तो
च०/ष०	सत्तण्ह, सत्तण्हं	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं
स०	सत्तसु, सत्तसुं	अट्ठसु, अट्ठसुं

३४ णव, नव (नवन्) शब्द (तीनों लिंगों में)

बहुवचन

प्र० णव

द्वि० णव

तृ० णवहि, णवहिं, णवहिँ

पं० णवाओ, णवाउ, णवाहिन्तो, णवासुन्तो

च०/ष० णवण्ह, णवण्हं

स० णवसु, णवसुं

३५ दह, दस (दशन्) शब्द (तीनों लिंगों में)

बहुवचन

प्र० दह, दस

द्वि० दह, दस

तृ० दहहि, दहहिं, दहहिँ, दसहि, दसहिं, दसहिँ

पं० दहाओ, दहाउ, दहाहिन्तो, दहासुन्तो, दसाओ, दसाउ, दसाहिन्तो दसासुन्तो

च०/ष० दहण्ह, दहण्हं, दसण्ह, दसण्हं

स० दहसु, दहसुं, दससु, दससुं

(अपभ्रंश रचना सौरभ के आधार पर)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ४ अपभ्रंश धातु रूपावली

कर्तृवाच्य

१. हस् (हस्) वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसदि, हसदे, हसइ, हसए	हसहिं, हसेहिं, हसंति, हसिंति, हसेंति हसन्ते, हसिंते, हसइरे, हसिरे, हसेइरे हसेज्ज, हसिज्ज, हसेज्जा, हसिज्जा
म०पु०	हसहि, हससि, हससे	हसहु, हसेहु, हसह, हसेह, हसध हसेध, हसइत्था, हसित्था, हसेत्था हसेज्ज, हसिज्ज, हसेज्जा, हसिज्जा
उ०पु०	हसउं, हसमि	हसहुं, हसेहुं, हसमो, हसामो, हसिमो हसेमो, हसमु, हसामु, हसिमु, हसेमु हसम, हसाम, हसिम, हसेम, हसेज्ज हसिज्ज, हसेज्जा, हसिज्जा

हस् (हस्) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हसदु, हसदे, हसउ, हसेउ	हसन्तु, हसेन्तु, हसिंतु
म०पु०	हसि, हसे, हसु, हस, हसहि हसाहि, हसेहि, हससु, हसेसु हसिज्जसु, हसेज्जसु, हसिज्जे हसेज्जे, हसिज्जहि, हसेज्जहि	हसह, हसहे, हसध, हसधे
उ०पु०	हसमु, हसामु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसेमो

हस् (हस्) भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिसदि, हसेसदि, हसिसदे हसेसदे, हसिस्सदि, हसेस्सदि हसिस्सदे, हसेस्सदे, हसिसइ हसेसइ, हसिसए, हसेसए हसिस्सिइ, हसेस्सिइ हसिस्सिए, हसेस्सिए	हसिसहिं, हसेसहिं, हसिसंदि, हसेसंदि हसिसंदे, हसेसंदे, हसिसइरे, हसेसइरे हसिस्सिहिं, हसेस्सिहिं, हसिस्संदि हसेस्संदि, हसिस्सिदे, हसेस्सिदे हसिस्सिइरे, हसेस्सिइरे
म०पु०	हसिसहि, हसेसहि, हसिस्सिहि हसेस्सिहि, हसिससि, हसेससि	हसिसहु, हसेसहु, हसिस्सिहु, हसेस्सिहु हसिसधु, हसेसधु, हसिसिधु, हसेसिधु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसिस्सिसि, हसेस्सिसि	हसिसह, हसेसह, हसिस्सिह, हसेस्सिह
हसिससे, हसेससे, हसिस्सिसे	हसिसध, हसेसध, हसिस्सिध, हसेस्सिध
हसेस्सिसे	हसिसइत्था, हसेसइत्था, हसिस्सिइत्था हसेस्सिइत्था
उ०पु० हसिसउं, हसेसउं, हसिस्सिउं हसेस्सिउं, हसिसमि, हसेसमि हसिस्सिमि, हसेस्सिमि	हसिसहुं, हसेसहुं, हसिस्सिहुं, हसेस्सिहुं हसिसमो, हसेसमो, हसिस्सिमो हसेस्सिमो, हसिसमु, हसेसमु, हसिस्सिमु हसेस्सिमु, हसिसम, हसेसम, हसिस्सिम हसेस्सिम

भूतकाल

अपभ्रंश में भूतकाल को व्यक्त करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग होता है। भूतकालिक कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए उसमें आ प्रत्यय जोडा जाता है। इनके रूप पुंलिग में देव शब्द, स्त्रीलिंग में माला शब्द और नपुंसकलिंग में कमल शब्द की तरह चलते हैं।

हस् (हस्) भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	हसिद, हसिदा, हसिदो, हसिदु हसिअ, हसिआ, हसिओ, हसिउ	हसिद, हसिदा, हसिअ, हसिआ
स्त्रीलिंग	हसिदा, हसिद, हसिआ हसिअ	हसिदा, हसिद, हसिदाउ, हसिदउ हसिदाओ, हसिदओ, हसिआ, हसिअ हसिआउ, हसिअउ, हसिआओ हसिअओ
नपुंसकलिंग	हसिदु, हसिद, हसिदा हसिउ, हसिअ, हसिआ	हसिद, हसिदा, हसिदइं, हसिदाइं हसिअ, हसिआ, हसिअइं, हसिआइं

हस् (हस्) क्रियातिपत्ति के रूप

अपभ्रंश में क्रियातिपत्ति के रूप प्राकृत के समान होते हैं।

२. ठाअ (ष्ठा) धातु वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठाअइ, ठाअए	ठाअहिं, ठाअन्ति, ठाअन्ते, ठाइरे
म०पु०	ठाअहि, ठाअसि, ठाअसे	ठाअहु, ठाअह, ठाइत्था
उ०पु०	ठाअउं, ठाअमि, ठाआमि ठाएमि	ठाअहुं, ठाअम, ठाआम, ठाइम ठाएम, ठाअमो, ठाआमो, ठाइमो ठाएमो, ठाअमु, ठाआमु, ठाइमु ठाएमु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाव (ष्ठा) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठावइ, ठावए	ठावहिं, ठावन्ति, ठावन्ते, ठावइरे
म०पु०	ठावहि, ठावसि, ठावसे	ठावहु, ठावह, ठावइत्था
उ०पु०	ठावउं, ठावमि, ठावामि ठावेमि	ठावहुं, ठावम, ठावाम, ठाविम ठावेम, ठावमो, ठावामो, ठाविमो ठावेमो, ठावमु, ठावामु, ठाविमु ठावेमु

ठाअ (ष्ठा) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठाअउ, ठाएउ	ठाअन्तु, ठाएन्तु
म०पु०	ठाइ, ठाए, ठाउ, ठाअ, ठाअहि ठाएहि, ठाअसु, ठाएसु	ठाअह, ठाएह
उ०पु०	ठाअमु, ठाएमु	ठाअमो, ठाआमो, ठाएमो

ठाव अंग (ष्ठा) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठावउ, ठावेउ	ठावन्तु, ठावेन्तु
म०पु०	ठावि, ठावे, ठावु, ठाव, ठावहि ठावेहि, ठावसु, ठावेसु	ठावह, ठावेह
उ०पु०	ठावमु, ठावेमु	ठावमो, ठावामो, ठावेमो

ठाअ (ष्ठा) भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठाएसइ, ठाएसए, ठाइहिइ ठाइहिए	ठाएसहिं, ठाएसन्ति, ठाइहिंहिं ठाइहिन्ति
म०पु०	ठाएसहि, ठाएससि, ठाइहिहि ठाइहिसि	ठाएसहु, ठाएसह, ठाएसइत्था ठाइहिहु, ठाइहिह, ठाइहित्था
उ०पु०	ठाएसउं, ठाएसमि, ठाइहिउं ठाइहिमि	ठाएसहुं, ठाएसमो, ठाएसमु, ठाएसम

ठाव अंग (ष्ठा) भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	ठावेसइ, ठावेसए, ठाविहिइ ठाविहिए	ठावेसहिं, ठावेसन्ति, ठाविहिंहिं ठाविहिन्ति
म०पु०	ठावेसहि, ठावेससि, ठाविहिहि ठाविहिसि	ठावेसहु, ठावेसह, ठावेसइत्था ठाविहिहु, ठाविहिह, ठाविहित्था

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उ०पु० ठावसउं, ठावेसमि, ठाविहिउं ठावेसहुं, ठावेसमो, ठावेसमु, ठावेसम ठाविहिमि

ठाअ (ष्ठा) भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुं०	ठाइअ, ठाइआ, ठाइओ ठाविउ	ठाइअ, ठाइआ
स्त्री०	ठाइआ, ठाइअ	ठाइआ, ठाइअ, ठाइआउ, ठाइअउ ठाइआओ, ठाइअओ
नपुं०	ठाइउ, ठाइअ, ठाइआ	ठाइअ, ठाइआ, ठाइअइं, ठाइआइं

ठाव (ष्ठा) अंग—भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुं०	ठाविअ, ठाविआ, ठाविओ	ठाविअ, ठाविआ
स्त्री०	ठाविआ, ठाविअ	ठाविआ, ठाविअ, ठाविआउ, ठाविअउ ठाविआओ, ठाविअओ
नपुं०	ठाविउ, ठाविअ, ठाविआ	ठाविअ, ठाविआ, ठाविअइं, ठाविआइं

३. हो (भू) वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होइ	होंहि, होन्ति, होन्ते, होइरे
म०पु०	होहि, होसि	होहु, होह, होइत्था
उ०पु०	होउं, होमि	होहुं, होमो, होमु, होम

नोट— आ, ई, ऊ दीर्घस्वर से परे संयुक्त अक्षर हो तो दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—ठान्ति—ठन्ति, ण्हान्ति—ण्हन्ति।

हो (भू) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होउ	होन्तु
म०पु०	होइ, होए, होउ, होहि होसु	होह
उ०पु०	होमु	होमो

हो (भू) भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होसइ, होहिइ	होसहिं, होसन्ति, होहिहि, होहिन्ति
म०पु०	होसहि, होससि, होहिहि होहिसि	होसहु, होसह, होहिह, होहिहु होसइत्था, होहित्था
उ०पु०	होसउं, होसमि, होहिउं होहिमि	होसहुं, होसमो, होसमु, होसम, होहिहुं होहिमो, होहिमु, होहिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हो (भू) भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुं०	होद, होदा, होदु, होदो होअ, होआ, होउ, होओ	होद, होदा, होअ, होआ
स्त्री०	होदा, होद, होआ, होअ	होदा, होद,होदाउ, होदउ, होदाओ होदओ, होआ, होअ, होआउ, होअउ होआओ, होअओ
नपुं०	होद, होदा, होदु, होअ, होआ, होउ	होद, होदा, होदइं, होदाइं, होअ, होआ, होअइं, होआइं

क्रियातिपत्ति

क्रियातिपत्ति के रूप प्राकृत के समान ही होते हैं।

० ० ० ० ० ० ० ०

प्रेरक (णिन्नन्त) धातु के रूप

प्रेरणा अर्थ में मूल धातु से अ और आव प्रत्यय जुडते हैं। धातु के आदि व्यंजन में अ, इ, उ स्वर हो तो अ को आ, इ को ए और उ को ओ हो जाता है। आ, ई और ऊ स्वर हो तो धातु का रूप वैसा ही रहता है। संयुक्त अक्षर आगे हो तो अ को आ नहीं होता, अ ही रहता है। धातु में प्रेरणार्थ प्रत्यय अ और आव जोड़ने से प्रेरणार्थक धातु बन जाती है। जैसे—

अ	आव
हस + अ = हास	हस + आव हसाव (हंसना)
भिड + अ = भेड	भिड + आव भिडाव (भिडाना)
लुक्क + अ = लोक्क	लुक्क + आव = लुक्काव (छिपाना)
ठा + अ = ठाअ	ठा + आव = ठाव (ठहराना)
जीव + अ = जीव	जीव + आव = जीवाव (जिलाना)
रूस + अ = रूस	रूस + आव = रूसाव (रूसना)
णच्च + अ = णच्च	णच्च + आव = णच्चाव (नचाना)

प्रेरक धातु + वर्तमान प्रत्यय = प्रेरणार्थक वर्तमानकाल के रूप

४. हास (हासय) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हासइ, हासए	हासहिं, हासन्ति, हासन्ते
म०पु०	हासहि, हाससि, हाससे	हासहु, हासह, हासइत्था
उ०पु०	हासउ, हासमि, हासामि हासेमि	हासहुं, हासमो, हासामो, हासिमो, हासेमो, हासमु, हासामु, हासिमु, हासेमु, हासम, हासाम, हासिम, हासेम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसाव (हासय) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसावइ, हसावए	हसावंहि, हसावन्ति, हसावन्ते
म०पु०	हसावहि, हसावसि, हसावसे	हसावहू, हसावह, हसाइत्था
उ०पु०	हसावउं, हसावमि, हसावामि, हसावेमि	हसावहुं, हसावमो, हसावामो, हसाविमो, हसावेमो, हसावमु, हसावामु, हसाविमु, हसावेमो, हसावम, हसावाम, हसाविम हसावेम

हास (हासय) विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हासउ, हासेउ	हासन्तु, हासेन्तु
म०पु०	हासि, हासे, हासु, हास हासहि, हासेहि, हाससु हासेसु	हासह, हासेह
उ०पु०	हासमु, हासेमु	हासमो, हासामो, हासेमो

हसाव (हासय) अंग के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसावउ, हसावेउ	हसावन्तु, हसावेन्तु
म०पु०	हसावसि, हसावसे, हसावसु हसाव, हसावहि, हसावेहि हसावसु, हसावेसु	हसावह, हसावेह
उ०पु०	हसावमु, हसावेमु	हसावमो, हसावामो, हसावेमो

हास (हासय) अंग के भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हासेसइ, हासेसए, हासिहिइ हासिहिए	हासेसहिं, हासेसन्ति, हासेहिंहि हासेहिन्ति
म०पु०	हासेसहि, हासेससि हासिहिहिं, हासिहिसि	हासेसहु, हासेसह, हासेसइत्था हासिहिहु, हासिहिह, हासिहित्था
उ०पु०	हासेसउं, हासेसमि हासिहिउं, हासिहिमि	हासेसहुं, हासेसमो, हासेसमु, हासेसम

हसाव (हासय) अंग के भविष्यत्काल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसावेसइ, हसावेसए हसाविहिइ, हसाविहिए	हसावेसहिं, हसावेसन्ति, हसाविहिंहि हसाविहिन्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म०पु०	हसावेसहि, हसावेससि	हसावेसहु, हसावेसह, हसावेसइत्था
	हसाविहिहि, हसाविहिसि	हसाविहिहु, हसाविहिह, हसाविइत्था
उ०पु०	हसावेसउं, हसावेसमि	हसावेसहुं, हसावेसमो, हसावेसमु
	हसाविहिउं, हसाविहिमि	हसावेसम

हास (हासय) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पु०	हासिअ, हासिआ, हासिओ हासिउ	हासिअ, हासिआ
स्त्री०	हासिआ, हासिअ	हासिआ, हासिअ, हासिआउ हासिअउ, हासिआओ, हासिअओ
नपुं०	हासिउ, हासिअ, हासिआ	हासिअ, हासिआ, हासिअइं हासआइं

हसाव (हासय) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पु०	हसाविअ, हसाविआ हसाविओ, हसाविउ	हसाविअ, हसाविआ
स्त्री०	हसाविआ, हसाविअ	हसाविआ, हसाविअ, हसाविआउ हसाविअउ, हसाविआओ, हसाविअओ
नपुं०	हसाविउ, हसविअ, हसाविआ	हसाविअ, हसाविआ, हसाविअइं हसाविआइं

५. होअ, होआवे (भावय) अंग के रूप

प्रेरक में वर्तमानकाल विधि एवं आज्ञा, भविष्यकाल और भूतकाल के रूप हास और हसाव के समान होते हैं।

भावकर्म

कर्तृवाच्य धातु + भाव प्रत्यय = भाव कर्म धातु

हस + इज्ज, इय = हसिज्ज, हसिय

६. हसिज्ज (हस्य) वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिज्जइ, हसिज्जए	हसिज्जहिं, हसिज्जन्ति, हसिज्जन्ते
म०पु०	हसिज्जहि, हसिज्जसि हसिज्जसे	हसिज्जहु, हसिज्जह, हसिजित्था
उ०पु०	हसिज्जउं, हसिज्जमि	हसिज्जहुं, हसिज्जम, हसिज्जाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसिज्जामि, हसिज्जेमि	हसिज्जिम, हसिज्जेम, हसिज्जमु हसिज्जामु, हसिज्जिमु, हसिज्जेमु हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जिमो हसिज्जेमो

हसिय (हस्य) अंग वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसियइ, हसियए	हसियहिं हसियन्ति, हसियन्ते
म०पु०	हसियहि, हसियसि, हसियसे	हसियहु, हसियह, हसियित्था
उ०पु०	हसियउं, हसियमि, हसियामि हसियेमि	हसियहुं, हसियम, हसियाम, हसियिम हसियेम, हसियमु, हसियामु, हसियिमु हसियेमु, हसियमो, हसियामो, हसियिमो हसियेमो

हसिज्ज (हस्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिज्जउ, हसिज्जेउ	हसिज्जन्तु, हसिज्जेन्तु
म०पु०	हसिज्जि, हसिज्जे, हसिज्जु हसिज्ज, हसिज्जहि हसिज्जेहि, हसिज्जसु हसिज्जेसु	हसिज्जह, हसिज्जेह
उ०पु०	हसिज्जमु, हसिज्जेमु	हसिज्जमो, हसिज्जामो, हसिज्जेमो

हसिय (हस्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसियउ, हसियेउ	हसियन्तु, हसियेन्तु,
म०पु०	हसियि, हसिये, हसियु हसिय, हसियहि, हसियेहि हसियसु हसियेसु	हसियह, हसियेह
उ०पु०	हसियमु, हसियेमु	हसियमो, हसियामो, हसियेमो

हसिज्ज (हस्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

एकवचन बहुवचन

(भावकर्म के भविष्यकाल के रूप कर्तृवाच्य के भविष्यकाल के समान चलते हैं।)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसिज्जिसदि, हसिज्जेसदि हसिज्जिसदे, हसिज्जेसदे हसिज्जिस्सिदि हसिज्जेस्सिदि हसिज्जिस्सिदे, हसिज्जेस्सिदे	हसिज्जिसहिं, हसिज्जेसहिं, हसिज्जिसंदि हसिज्जेसंदि, हसिज्जिसंदे, हसिज्जेसंदे हसिज्जिसइरे, हसिज्जेसइरे हसिज्जिस्सिहिं, हसिज्जेस्सिहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	हसिज्जिसइ, हसिज्जेसइ	हसिज्जिस्संदि, हसिज्जेस्संदि
	हसिज्जिस्सिइ, हसिज्जेस्सिइ	हसिज्जिस्सिदे, हसिज्जेस्सिदे
	हसिज्जिसए, हसिज्जेसए	हसिज्जिस्सिइरे, हसिज्जेस्सिइरे
	हसिज्जिस्सिए, हसिज्जेस्सिए	
म०पु०	हसिज्जिसहि, हसिज्जेसहि	हसिज्जिसहु, हसिज्जेसहु, हसिज्जिस्सिहु
	हसिज्जिस्सिहि, हसिज्जेस्सिहि	हसिज्जेस्सिहु, हसिज्जिसधु, हसिज्जेसधु
	हसिज्जिससि, हसिज्जेससि	हसिज्जिस्सिधु, हसिज्जेस्सिधु, हसिज्जिसह
	हसिज्जिस्सिसि, हसिज्जेस्सिसि	हसिज्जेसह, हसिज्जिस्सिह, हसिज्जेस्सिह
	हसिज्जिससे, हसिज्जेससे	हसिज्जिसध, हसिज्जेसध, हसिज्जिस्सिध
	हसिज्जिस्सिसे, हसिज्जेस्सिसे	हसिज्जेस्सिध, हसिज्जिसइत्था
		हसिज्जेसइत्था, हसिज्जिस्सिइत्था
		हसिज्जेस्सिइत्था
उ०पु०	हसिज्जिसउं, हसिज्जेसउं	हसिज्जिसहुं, हसिज्जेसहुं, हसिज्जिस्सिहुं
	हसिज्जिस्सिउं, हसिज्जेस्सिउं	हसिज्जेस्सिहुं, हसिज्जिसमो, हसिज्जेसमो
	हसिज्जिसामि, हसिज्जेसामि	हसिज्जिस्सिमो, हसिज्जेस्सिमो
	हसिज्जिस्सिमि, हसिज्जेस्सिमि	हसिज्जिसमु, हसिज्जेसमु
		हसिज्जिस्सिमु, हसिज्जेस्सिमु
		हसिज्जिसम, हसिज्जेसम
		हसिज्जिस्सिम, हसिज्जेस्सिम

हसिय (हस्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसियिसदि, हसियेसदि	हसियिसहिं, हसियेसहिं, हसियिसंदि
	हसियिसदे, हसियेसदे	हसियेसंदि, हसियिसंदे, हसियेसंदे
	हसियिस्सिदि, हसियेस्सिदि	हसियिसइरे, हसियेसइरे, हसियिस्सिहिं
	हसियिस्सिदे, हसियेस्सिदे	हसियेस्सिहिं, हसियिस्सिदि, हसियेस्सिदि
	हसियिसइ, हसियेसइ	हसियिस्सिदे, हसियिस्सिदे, हसियिस्सिइरे
	हसियिस्सिइ, हसियेस्सिइ	हसियेस्सिइरे
	हसियिसए, हसियेसए	
	हसियिस्सिए, हसियेस्सिए	
म०पु०	हसियिसहि, हसियेसहि	हसियिसहु, हसियेसहु, हसियिस्सिहु
	हसियिस्सिहि, हसियेस्सिहि	हसियेस्सिहु, हसियिसधु, हसियेसधु
	हसियिससि, हसियेससि	हसियिसिधु, हसियेसिधु, हसियिसह
	हसियिस्सिसि, हसियेस्सिसि	हसियेसह, हसियिस्सिह, हसियेस्सिह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसियिससे, हसियेससे	हसियिसध, हसियेसध, हसियिस्सिध
हसियिस्सिसे, हसियेस्सिसे	हसियेस्सिध, हसियिसइत्था
	हसियेसइत्था हसियिस्सिइत्था
	हसियेस्सिइत्था
उ०पु० हसियिसउं, हसियेसउं	हसियिसहुं, हसियेसहुं, हसियिस्सिहुं
हसियिस्सिउं, हसियेस्सिउं	हसियेस्सिहुं, हसियिसमो, हसियेसमो
हसियिसमि, हसियेसमि	हसियिस्सिमो, हसियेस्सिमो, हसियिसमु
हसियिस्सिमि, हसियेस्सिमि	हसियेसमु, हसियिस्सिमु, हसियेस्सिमु
	हसियिसम, हसियेसम, हसियिस्सिम
	हसियेस्सिम

हसिज्ज (हस्य) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	हसिज्जिद, हसिज्जिदा	हसिज्जिद, हसिज्जिदा, हसिज्जिअ
	हसिज्जिदो, हसिज्जिदु	हसिज्जिआ
	हसिज्जिअ, हसिज्जिआ	
	हसिज्जिओ, हसिज्जिउ	
स्त्रीलिंग	हसिज्जिदा, हसिज्जिद	हसिज्जिदा, हसिज्जिद, हसिज्जिदाउ
	हसिज्जिआ, हसिज्जिअ	हसिज्जिदउ, हसिज्जिदाओ
		हसिज्जिदओ, हसिज्जिआ, हसिज्जिअ
		हसिज्जिआउ, हसिज्जिअउ
		हसिज्जिआओ, हसिज्जिअओ
नपुं०	हसिज्जिदु, हसिज्जिद	हसिज्जिद, हसिज्जिदा, हसिज्जिदइं
	हसिज्जिदा, हसिज्जिउ	हसिज्जिदाइं, हसिज्जिअ, हसिज्जिआ
	हसिज्जिअ, हसिज्जिआ	हसिज्जिअइं, हसिज्जिआइं

हसिय (हस्य) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	हसियिद, हसियिदा	हसियिद, हसियिदा, हसियिअ, हसियिआ
	हसियिदो, हसियिदु	
	हसियिअ, हसियिआ	
	हसियिओ, हसियिउ	
स्त्रीलिंग	हसियिदा, हसियिद	हसियिदा, हसियिद, हसियिदाउ
	हसियिआ, हसियिअ	हसियिदउ, हसियिदाओ, हसियिदओ
		हसियिआ, हसियिअ, हसियिआउ
		हसियिअउ, हसियिआओ, हसियिअओ
नपुं०	हसियिदु, हसियिद	हसियिद, हसियिदा, हसियिदइं, हसियिदाइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसियिदा, हसियिउ हसियिअ, हसियिआ, हसियिअइं, हसियिआइं
हसियिअ, हसियिआ

७. स्वरान्त दा (दा) के भाव कर्म के रूप

दा + इज्ज = दाइज्ज। दा + इय = दाइय। दाइज्ज और दाइय के सब कालों के रूप हसिज्ज और हसिय के समान होते हैं। स्वरान्त सभी धातुओं के रूप भावकर्म में हसिज्ज और हसिय के समान चलते हैं।

८. प्रेरक धातु (ञिन्नत) से भावकर्म के रूप

- प्रेरक धातु + भावकर्म के प्रत्यय + काल बोधक प्रत्यय = प्रेरक (ञिन्नन्त) से भाव कर्म के रूप।
- कर, करावि + इज्ज, इय (भावकर्म प्रत्यय) + इ आदि (वर्तमान-काल के प्रथम पुरुष एकवचन के प्रत्यय) = कराविज्जइ, करावियइ।

कराविज्ज (कार्य) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कराविज्जइ, कराविज्जए	कराविज्जहिं, कराविज्जिन्ति कराविज्जन्ते
म०पु०	कराविज्जहि, कराविज्जसि कराविज्जसे	कराविज्जहु, कराविज्जह कराविज्जित्था
उ०पु०	कराविज्जउं कराविज्जमि कराविज्जामि, कराविज्जेमि	कराविज्जहुं, कराविज्जम कराविज्जाम, कराविज्जिम कराविज्जेम, कराविज्जमु कराविज्जामु, कराविज्जिमु कराविज्जेमु, कराविज्जमो कराविज्जामो, कराविज्जिमो कराविज्जेमो

करावियं (कार्य) अंग के वर्तमानकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	करावियइ, करावियए	करावियहिं, करावियन्ति, करावियन्ते
म०पु०	करावियहि, करावियसि	करावियहु, करावियह, करावियित्था
उ०पु०	करावियउं, करावियमि करावियामि, करावियेमि	करावियहुं, करावियम, करावियाम करावियिम, करावियेम, करावियमु करावियामु, करावियिमु, करावियेमु करावियमो, करावियामो, करावियिमो करावियेमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कराविज्ज (कार्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कराविज्जिज्जउ कराविज्जिज्जेउ	कराविज्जिज्जन्तु, कराविज्जज्जेन्तु
म०पु०	कराविज्जिज्जि, कराविज्जिज्जे कराविज्जिज्जु, कराविज्जिज्ज कराविज्जिज्जहि, कराविज्जिज्जेहि कराविज्जिज्जसु, कराविज्जिज्जेसु	कराविज्जिज्जह, कराविज्जिज्जेह
उ०पु०	कराविज्जिज्जमु, कराविज्जिज्जेमु	कराविज्जिज्जमो, कराविज्जिज्जामो कराविज्जिज्जेमो

कराविय (कार्य) अंग के विधि एवं आज्ञा के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	करावियिज्जउ, करावियिज्जेउ	करावियिज्जन्तु, करावियिज्जेन्तु
म०पु०	करावियिज्जि, करावियिज्जे करावियिज्जु, करावियिज्ज करावियिज्जहि, करावियिज्जेहि करावियिज्जसु, करावियिज्जेसु	करावियिज्जह, करावियिज्जेह
उ०पु०	करावियिज्जमु, करावियिज्जेमु	करावियिज्जमो, करावियिज्जामो करावियिज्जेमो

कराविज्ज (कार्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कराविज्जिसदि, कराविज्जेसदि कराविज्जिसदे, कराविज्जेसदे कराविज्जिस्सदि, कराविज्जेस्सदि कराविज्जिस्सदे, कराविज्जेस्सदे कराविज्जिसइ, कराविज्जेसइ कराविज्जिसए, कराविज्जेसए कराविज्जिस्सिइ, कराविज्जेस्सिइ कराविज्जिस्सिए, कराविज्जेस्सिए	कराविज्जिसहिं, कराविज्जेसहिं कराविज्जिसंदि, कराविज्जेसंदि कराविज्जिसंदे, कराविज्जेसंदे कराविज्जिसइरे, कराविज्जेसइरे कराविज्जिस्सिहिं, कराविज्जेस्सिहिं कराविज्जिस्संदि, कराविज्जेस्संदि कराविज्जिस्सिंदे, कराविज्जेस्सिंदे कराविज्जिस्सिइरे, कराविज्जेस्सिइरे
म०पु०	कराविज्जिसहि, कराविज्जेसहि कराविज्जिस्सिहि कराविज्जेस्सिहि कराविज्जिससि, कराविज्जेससि कराविज्जिस्सिसि कराविज्जेस्सिसि	कराविज्जिसहु, कराविज्जेसहु कराविज्जिस्सिहु, कराविज्जेस्सिहु कराविज्जिसधु, कराविज्जेसधु कराविज्जिसिधु, कराविज्जेसिधु कराविज्जिसह, कराविज्जेसह कराविज्जिस्सिह, कराविज्जेस्सिह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कराविज्जिससे, कराविज्जेससे	कराविज्जिसध, कराविज्जेसध
कराविज्जिस्सिसे	कराविज्जिस्सिध, कराविज्जेस्सिध
कराविज्जेस्सिसे	कराविज्जिसइत्था, कराविज्जेसइत्था
	कराविज्जिस्सिइत्था
	कराविज्जेस्सिइत्था
उ०पु० कराविज्जसउं, कराविज्जेसउं	कराविज्जिसहुं, कराविज्जेसहुं
कराविज्जिस्सिउं	कराविज्जिस्सिहुं, कराविज्जेस्सिहुं
कराविज्जेस्सिउं, कराविज्जिसमि	कराविज्जिसमो, कराविज्जेसमो
कराविज्जेसमि	कराविज्जिस्सिमो, कराविज्जेस्सिमो
कराविज्जिस्सिमि	कराविज्जिसमु, कराविज्जेसमु
कराविज्जेस्सिमि	कराविज्जिस्सिमु, कराविज्जेस्सिमु
	कराविज्जिसम, कराविज्जेसम
	कराविज्जिस्सिम, कराविज्जेस्सिम

कराविय (कार्य) अंग के भविष्यकाल के रूप

एकवचन	बहुवचन
प्र०पु० कराविथिसदि, करावियेसदि	करावियिसहिं, करावियेसहिं
करावियिसदे, करावियेसदे	करावियिसंदि, करावियेसंदि
करावियिस्सदि, करावियेस्सदि	करावियिसंदे, करावियेसंदे
करावियिस्सदे, करावियेस्सदे	करावियिसइरे, करावियेसइरे
करावियिसइ, करावियेसइ	करावियिस्सिहिं, करावियेस्सिहिं
करावियिसए, करावियेसए	करावियिस्संदि, करावियेस्संदि
करावियिस्सिइ, करावियेस्सिइ	करावियिस्सिदे, करावियेस्सिदे
करावियिस्सिए, करावियेस्सिए	करावियिस्सिइरे, करावियेस्सिइरे
म०पु० करावियिसहि, करावियेसहि	करावियिसहु, करावियेसहु
करावियिस्सिहि, करावियेस्सिहि	करावियिस्सिहु, करावियेस्सिहु
करावियिससि, करावियेससि	करावियिसधु, करावियेसधु
करावियिस्सिसि, करावियेस्सिसि	करावियिस्सिधु, करावियेस्सिधु
करावियिससे, करावियेससे	करावियिसह, करावियेसह
करावियिस्सिसे, करावियेस्सिसे	करावियिस्सिह, करावियेस्सिह
	करावियिसध, करावियेसध
	करावियिस्सिध, करावियेस्सिध
	करावियिसइत्था, करावियेसइत्था
	करावियिस्सिइत्था, करावियेस्सिइत्था
उ०पु० करावियिसउं, करावियेसउं	करावियिसहुं, करावियेसहुं
करावियिस्सिउं, करावियेस्सिउं	करावियिस्सिहुं, करावियेस्सिहुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करावियिसमि, करावियेसमि	कराविथिसमो, करावियेसमो
करावियिस्सिमि, करावियेस्सिमि	कराविथिस्सिमो, करावियेस्सिमो
	कराविथिसमु, करावियेसमु
	कराविथिस्सिमु, करावियेस्सिमु
	कराविथिसम, करावियेसम
	कराविथिस्सिम, करावियेस्सिम

कराविज्ज (कार्य) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	कराविज्जिद, कराविज्जिदा	कराविज्जिद, कराविज्जिदा
	कराविज्जिदो, कराविज्जिदु	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ
	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ	
	कराविज्जिओ, कराविज्जिउ	
स्त्रीलिंग	कराविज्जिदा, कराविज्जिद	कराविज्जिदा, कराविज्जिद
	कराविज्जिआ, कराविज्जिअ	कराविज्जिदाउ, कराविज्जिदउ
		कराविज्जिदाओ, कराविज्जिदओ
		कराविज्जिआ, कराविज्जिअ
		कराविज्जिआउ, कराविज्जिअउ
		कराविज्जिआओ, कराविज्जिअओ
नपुं०	कराविज्जिदु, कराविज्जिद	कराविज्जिद, कराविज्जिदा
	कराविज्जिदा, कराविज्जिउ	कराविज्जिदइं, कराविज्जिदाइं
	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ	कराविज्जिअ, कराविज्जिआ
		कराविज्जिअइं, कराविज्जिआइं

कराविय (कार्य) अंग के भूतकाल के रूप

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिग	कराविथिद, कराविथिदा	कराविथिद, कराविथिदा, कराविथिअ
	कराविथिदो, कराविथिदु	कराविथिआ
	कराविथिअ, कराविथिआ	
	कराविथिओ, कराविथिउ	
स्त्रीलिंग	कराविथिदा, कराविथिद	कराविथिदा, कराविथिद, कराविथिदाउ
	कराविथिआ, कराविथिअ	कराविथिदउ, कराविथिदाओ
		कराविथिदओ, कराविथिआ
		कराविथिअ, कराविथिआउ
		कराविथिअउ, कराविथिआओ
		कराविथिअओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुं०	करावियिदु, करावियिद	करावियिद, करावियिदा, करावियिदइं
	करावियिदा, करावियिउ	करावियिदाइं, करावियिअ, करावियिआ
	करावियिअ, करावियिआ	करावियिअइं, करावियिआइं

(प्राकृतमार्गोपदेशिका और अपभ्रंश रचना सौरभ के आधार पर)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ५ अकार आदि क्रम से वर्ग
व शब्दसंग्रह

वर्ग पाठ	वर्ग पाठ
आभूषण वर्ग (३८)	मास वर्ग (६५)
औषधिवर्ग (४४,४५)	मिठाई वर्ग (२५)
काल वर्ग (५२,५३)	यंत्र वर्ग (९७)
कीडा आदि क्षुद्र जंतु (८८)	यान वर्ग (९९)
खाद्य वर्ग (२९)	रत्न और मणि (६४)
गुडचीनी वर्ग (२३)	रसोई उपकरण (१६)
गृह अवयव (३०)	रसोई मसाला (१५)
गृह सामग्री वर्ग (१७,१८)	राजनीति वर्ग (८१)
गृह " (आसन आदि) (१८)	रेंगने वाले आदि प्राणी (८९)
गोरस वर्ग (१३)	रोग वर्ग (८४,८५)
ग्रहनक्षत्र वर्ग (९६)	रोगी वर्ग (८६)
जलाशय वर्ग (३५)	रोटी आदि वर्ग (२४)
जैन पारिभाषिक १ (२७)	वस्ती और मार्ग वर्ग (९४)
" " २ (२८)	वस्त्र वर्ग (३६,३७)
धातु उपधातु वर्ग (८२)	वाद्य वर्ग (८७)
धान्य वर्ग (४६,४७)	वृक्ष (५०)
न्यायालय वर्ग (१९)	वृत्तिजीवी (७३ से ७६)
पक्षी वर्ग (५४,५६,५७)	व्यापार वर्ग (३३)
पत्रालय वर्ग (२२)	शरीर के अंग-उपांग (६८ से ७२)
परिवार वर्ग (८ से १२)	शरीर विकार (३१)
पशु वर्ग (५८ से ६१)	शस्त्र वर्ग (९०,९१)
पात्र वर्ग (२६)	शाक वर्ग (४२,४३)
प्रसाधन सामग्री (३२)	शिक्षा वर्ग (३४)
बारह मास वर्ग (९५)	साला (६७)
फल वर्ग (४८,४९)	सुगंधित द्रव्य (९३)
महापुरुष वर्ग (७)	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुगंधित पत्र पुष्प वाले पौधे
व लता (६२)
स्त्री वर्ग (७७ से ८०)
स्पर्श वर्ग (८३)
स्फुट

आभूषण वर्ग पाठ (३८)

अंगूठी—अंगुलीयं, अंगुलिज्जं
कंठा—कंठमुरयो, कंठमुही
कंदोरो—कडिसुत्तं
करधनी—रसणा, मेहला
कान की बाली—कुंडलं, कण्णाआसं (दे०)
घुंघरु घंटिया
चूडी—वलयं, चूडो
टिकुली—णडालाभूसणं
नथ—णासाभरणं
पहुँची—कडओ
पांव का कडा—हंसओ
बंगडी—कंकणं, कंकणी
बिछिया—णूउरं, णेउरं
भुजबंद—केऊरं
मंगलसूत्र—कंठसुत्तं
मणियों से ग्रंथितहार—एगावली
मुकुट—मउडो
मोतियों की माला—हारो, पलंबं
रत्नों का हार—रयणावली
लच्छा—पायाभरणं
हंसुली—गेविज्जं
हाथ का कडा—कडगो

औषधि वर्ग (पाठ ४४,४५)

अजवायन—अज्जम (वि) दे०
अडूसा—वासओ
अश्वगंध—अस्सगंधा
आमला—धत्ती
इलायची (छोटी)—सुहुमेला
इलायची (बडी)—थूलेला, एला
ईसबगोल—ईसिगोलो (सं) णिद्धबीयं (सं)
ईसबगोलभुसी—ईसिगोलवुसं (सं)
कत्था—सिअखइरो
कालीमीर्च—कण्हमिरिअं
गिलोय—गिलोई, वच्छादणी
गोखरु—गोक्खुरो
गोरोचन—गोलोअणो (सं)
चूना—चुण्णं
जमालगोटा—सारओ
जायफल—जाइफलं
जावित्री—जाइवत्तिआ
त्रिफला—तिफला
दालचीनी—चोअं (दे०) चोचं
नागकेसर—णागकेसरो
पीपर—पिप्पली
पीपरामूल—पिप्पलीमूलं
बेहडा—बहेडओ
मेथी—मेथी (सं)
लौंग—लवंगो, पउमा
वंशलोचन—वंसरोअणा
सौंफ—सयपुप्फा
हर्र—हरडई, अभया

काल वर्ग (पाठ ५२,५३)

अतीतकाल—अईओ
ऋतु—उउ (ति)
काल का सूक्ष्म भाग—समयो
ग्रीष्म—गिम्हो
घटी—घडी
दिन—दिवसो, दिवहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पक्ष—पक्खो
पल—खणो
पूर्वदिन—पुव्वण्हो
प्रातःकाल—पगे, उसावेला
भविष्यकाल—अणागयं
मास—मासो
मध्यदिन—मज्भण्हो
मुहूर्त—मुहुत्तं
युग—जुगो
रात्रि—रत्ती, राई, निसा
वर्तमानकाल—पडिपुन्नं
वर्ष—वरिसो, संवच्छरो
वर्षा—वरिसा
वसंत—वसंतो
शरद्—सरयो
शिशिर—सिसिरो
संध्या—संझा
हेमंत—हेमंतो

कीडा आदि क्षुद्र जन्तु (पाठ ८८)

कानखजूरो—कण्णजलूया
कीडी—कीडी, कीडिया
खटमल—मक्कुणो
जुगनू—खज्जोओ
जूं—जूआ
जौंक—जलूया, जलूगा
झींगूर (तिलचटा)—झिंगिरो (दे.)
डांस—डंसो
दीमक—उवदेही
भौंरा—भसलो
मकोडा—कीडो, पिवीलिओ
मक्खी—मक्खिआ, मच्छिआ
मच्छर—मसओ
मधुमक्खी—महुमक्खिआ
लीख—लिक्खा
वीरबहूटी—इंदगोवगो
शलभ (पतंग)—सलहो

खाद्यवर्ग (पाठ २६)

अचार—संहाणं
कचोरी—पिट्ठिया (सं)
कॉफी—कफग्घी (सं)
कुलफी—कूलपी (सं)
चाट—अवदंसो (सं)
चाय—चविया, चायं (सं)
पकोडी—पक्कवडिया (सं)
बडा—बडगं
बडी—बडी (दे.)
मुरब्बा—मिट्ठपागो
समोसा—समोसो (सं)

गुडचीनी वर्ग (पाठ २३)

आर्द्रगुड—फाणिअं, फाणिओ
गुड—गुडो, गुलो
गुड से पहली अवस्था—कक्कबो (दे०)
खांड—खंडा
चासनी—सियालेहो
चीनी—सिता, सिया
बतासा—वातासो (सं)
शक्कर—मच्छंडी
शहद—महु (न)
शरबत—सक्करोदयं (सं)
सालममिसरी—छुहामूली (सं)

गृह अवयब (पाठ ३०)

अट्टारी—अट्टं
ओसारा—उवसालं
किंवाड—कवाडं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खिडकी—खडक्की (दे०) वायायणं
खूंटी—णागदंतो
घर का छोटा दरवाजा—मूसा (दे.)
घर का पिछला आंगन—पडोहरं
घर का भीतरी भाग—अंतोवगडा (दे०)
चौखट (दहलीज)—देहली, अंबेसी (पुं)
छत्त—छायणं
दरवाजा—दारं
दीवार—भित्ति (स्त्री)
बरामदा—वरंडिया (दे०)
बिच्छु के डंक के आकार वाली तीखी खूंटी—अलीपट्ट (दे०)

गृहसामग्री (पाठ १७,१८)

ईंट—इट्टा
एनक—उवनेत्तं (सं)
ओखली—उऊखलं, अवअण्णो (दे०)
खरल—खल्लं (सं)
गोंद—णिय्यासो
चक्की—णीसा (दे०) घरट्टो (दे०)
चलनी—चालणी
छींका—सिक्कगो
झाड़ू—बोहारी, वद्धणिआ, संमज्जणी
झूला—ढोला
टब—दोणी (सं)
टूथपाउडर—दंत चुण्णं
टूथपेष्ट—दंतपिट्टअं (सं)
दांत का ब्रुश—दंतधावणं (सं)
दियासलाई—दीवसलागा
दीया—दीवओ, दीवगो
पंखा—विजणं, विअणं
पुराना छाज आदि—कडंतरं
फिटकरी—फलिहा
बत्ती—वत्ती, वत्तिआ
बर्तन—पत्तं, भायणं
बोरा—पसेवो
मशहरी—मसहरी
मूसल—मूसलं, कडंतं
मोम—सीअं (दे०)
रस्सी—रज्जू (स्त्री)
लालटेन—कायदीविया (सं)
लोढा—लोढो
शिला—सिला
साजी—सज्जिआ
साबुन—सव्वक्खारो (सं)
सीमेंट—पत्थरचुण्णं
स्टोव—उद्धमाणं (सं)

गृहसामग्री (आसन आदि) (पाठ १८)

काठ का तख्ता—फलगो
काठशय्या—कट्ठसेज्जा
कुर्सी—वेत्तासणं, आसंदी (सं)
चारपाई—पलियंको
चौकी—चउपाइया, आसणं
पीढा—पीढं
बेंच—कट्ठासणं
मेज—पायफलगं (सं)
सोफा—सुहोववेसिया (सं)

गोरस वर्ग (पाठ १३)

कढी—कढिआ (दे०) तीमणं
खट्टी राब—अंबेली (दे०)
खीर—पायसो
घी—घयं, सप्पि, अज्जं
छाछ—तक्कं
दही—दहिं (न)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दही की मलाई—दहित्थारो (दे०)
दूध—खीरं, पयो, दुद्धं, अलिआरं (दे०)
दूध की मलाई—करघायलो
नवनीत—णवणीयं, दहिउप्फं (दे०)
मट्ठा—घोलं (दे०)
मावा—किलाडो, कूचिआ
रायता—दाहिअं (सं)
श्रीखंड—छिहंडओ (दे०)

ग्रह नक्षत्र वर्ग (पाठ ६६)

केतु—केऊ (पुं)
ग्रह—गहो
चंद्रमा—चंदो, हिमयरो
तारा—तारा
नक्षत्र—णक्खत्तं
बुध—बुहो
बृहस्पति—बहस्सई (पुं०)
मंगल—अंगारयो
राहु—राहू (पुं)
शनि—सणी (पुं)
शुक्र—सुक्को
सूर्य—आइच्चो, दिणअरो

जैन पारिभाषिक (पाठ २७, २८)

आचार्य—आयरिओ
आत्मा—अप्पा
आसक्ति—आसत्ती (स्त्री)
कर्म—कम्मं
चतुर्मास—चाउमासो
तप—तवो, तवं
द्वेष—दोसो
ध्यान—झाणं
पाप—पावो
पुण्य—पुण्णं
प्रमाद—पमायो, पमत्तो
मन—मणं, मणो
राग—रागो
वीतराग—वीयराओ
श्रावक—सावगो, समणोवासगो
श्राविका—साविया, साहुणी, समणो, वासिया, उवासिया
संथारा—अणसणं
समाधि—समाही (पुं)
सर्वज्ञ—सव्वण्णू
साधु—समणो, साहू
साध्वी—समणी,
स्वाध्याय—सज्झायो

जलाशय वर्ग (पाठ ३५)

कुंआ—कूवो, अगडो, अवडो
कुंड—कुंडं
छोटा कुंआ—कूविया
छोटा प्रवाह—ओग्गलो
टंकी—जलसंगहालयो (सं)
तालाब—तडाओ, तलायो, सरं
नदी—नई
नल—णलं
नहर—कुल्ला
निर्झर—अवज्झरो, ओज्झरो
पुष्करिणी—पोक्खरिणी
प्याऊ—पवा
बांध—बंधो (सं)
बावडी—वावी
समुद्र—समुद्दो, सायरो

धातु उपधातु वर्ग (पाठ ८२)

अभ्रक—अब्भपडलं (दे०)
कलइ—सरययरंगचुण्णं (सं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कांस्य—कंसं
कालालोह—कालायसं
चांदी—रययं, जायरूवं
जस्ता—जसदो
तांबा—तंबो
तूतिया—तुत्थं (सं)
पीतल—पित्तलं
रांगा—रंगं (दे०)
लोह—लोहं
पारा—पारयो
सीसा—तउं
सोना—सुवण्णं, कणगं
स्टील—टीलं

धान्यवर्ग (पाठ ४६,४७)

अरहर—आढकी
उडद—मासो
कांगन—कंगू (स्त्री)
कुलथी—कुलत्थो, कुलमासो
कुसुंभ—लट्टा (दे०)
कोंदो—कुद्दवो
खेंसारी—तिपुडो
गरहेडुवा—गवेधुआ
गेहूं—गोहूमो
चना—चणओ, चणो
चवला—आलिसंदगो
चावल—तण्डुलो
जौ—जवो
ज्वार—जुआरी
तिनी—णीवारो
तीसी—अलसी
बाजरा—बज्जरी
मक्का—मकायो, महाकायो
मटर—कलायो
मसूर—मसूरो
मूंग—मुग्गो
मोठ—वणमुग्गो, मकुट्ठो, तिउडगो
राई—राइ, राइगा
वांस के बीज—वंसजवो
शरबीज—चारुगो
सरसों—सस्सवो
साठीधान—साली
सावां—सामयो

न्यायालय वर्ग (पाठ १९)

अदालत—दंडासणं, धम्मासणं
अनुवाद—अणुवायो
अपील—पुनरावेयणं
अर्जी—आवेयणपत्तं
इकरारनामा—पइण्णापत्तं (सं)
कचहरी—नायालयो
गवाह—सक्खि (वि)
गवाही—सक्खं, सक्खिज्जं
घूंस—उक्कोडा (दे०) उक्कोया
घूंस लेकर कार्य करने वाला—उक्कोडिय (वि)
जज—नायगरो
जमानत—णासो
जामिनदार—पडिभू (वि) पाडुहुओ
जिस पर दावा किया गया हो—पडिवक्खियो
दफ्तर—अक्खपडलो (सं)
न्याय—नायो
प्रतिवादी—पडिवाई (वि)
फैसला—णिण्णयो
बयान—उवसत्ती
मुकदमा—अभिओगो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वकील—वायकीलो (सं)
वादी—वाई

पक्षी वर्ग (पाठ ५४,५६,५७)

आडी—आडी (स्त्री)
उल्लू—उलूओ, उलूगो
कंक—कंको
कबूतर—कवोओ
कुरर—कुररो
कोयल—कोइलो, कोइला, परहुतो
कौआ—काओ, पायसो
क्रौंच—कोंचो
खंजन—खंजणो
गरुड—गरुडो, गरुलो
गीध—गिद्धो
गौरैया—चडयो
चकवा—चक्कवाओ, चक्कआओ
चकोर—चकोरो
चमगादड—जउआ
चाष—चासो
चील—चिल्ला
टिटिहरी—टिट्टिभो
तीतर—तित्तिरो
पपीहा—चायवो, चायगो
बगुला—वयो, वगो
बगुली—वग्गी
बत्तक—बत्तओ
बाज—सेणो
भृंग—भिंगो
मुर्गा—कुक्कुडो
मुर्गी—कुक्कुडी
मैना—सारिआ
मोर—मोरो, अल्लल्ल (दे०)
बटेर—लावओ, लावगो
सारस—सारसो
सुआ—सुओ, कीरो
हंस—हंसो

पत्रालय वर्ग (पाठ २२)

डाकिया—पत्तवाहओ
तार—तुरिअसूअओ (सं)
तारघर—तुरिअसूअणालयो (सं)
पत्र—पत्तं
पत्रपेटी (लेटरबक्स)—पत्ताही (पुं) (सं)
पार्शल—पासलो (सं)
डाकघर—पत्तालयो
डाकघर (प्रमुख)—पमुहपत्तालयो
पोस्टमास्टर—पत्तालयाहिअक्खो (सं)
मनीआर्डर—धणाएसो (सं)
रजिस्ट्री—पंजिआ (सं)
लिफाफा—आवेट्टणं (सं)

परिवारवर्ग (पाठ ८ से १२)

चाचा—पिइज्जो, चुल्लपिऊ
चाची—पिइज्जजाया, चुल्लपिउजाया
चचेराभाई—पिइज्जपुत्तो,
चचेरी बहन—पिइज्जसुआ
जमाइ—जामाया
दंपति (पति-पत्नी)—दंपई (पुं)
दादा—पिआमहो, अज्जयो
दादी—पिआमही, अज्जआ
दुलहिन—अणरहू, णवा
देवर—दिअरो, देअरो, अण्णओ
देवरानी—अण्णी (दे.) अण्णिआ (दे.)
दोहिता—पडिपोत्तयो

ननंद—नणंदा
नाना—माआमहो
नानी—माउम्महो
पति—भत्ता, सामी, पई (पुं)
पत्नी—भज्जा, भारिया, दारा, पत्ती, घरिल्ला, घरणी, सिरीमई
परदादा—पज्जओ, पपिआमहो
परदादी—पज्जिआ, पपिआमही
परनाना—पमाआमहो
परनानी—पमाआमही
पिता—जणओ, बप्पो, पिऊ (पुं)
पुत्रवधू—णोहा, पुत्तबहू, सुण्हा
पोता—णत्तुणियो, पोत्तो
पोती—नत्तुणिया
पौत्र की बहू—णत्तुइणी
प्रपोता—पपोत्तो, पडिपुत्तो
प्रपोती—पपोती
प्रेयसी—पीअसी, पेअसी
फुफेरा भाई—पिउसिआणेयो
फुफेरी बहन—पिउसिआणिज्जा
बडी बहन का पति—भाओ (दे.)
बहन—बहिणी, भगिणी, ससा
बूआ—पिउस्सिआ, पिउच्चा, पिउच्छा
बेटा—पुत्तो, तणयो, सुनू, सुओ
बेटी—पुत्ती, तणया, धूया, दुहिआ
भतीजा—भाइसुओ
भतीजी—भाइसुआ
भाई—भाअरो, भायरो, भाऊ, भाई (पुं)
भाई (छोटा)—अणुओ
भाई (बडा)—अग्गओ
भानजा—भाइणिज्जो, भाइणेयो
भानजी—भाइणिज्जा, भाइणेया
भौजाई—भाउज्जाया, भाउज्जा, भाउज्जाइया
माता—माआ, अम्मो, जणणी
मामा—माउलो
मामी—मामी, मल्लाणी
मामे का बेटा—माउलपुत्तो
मौसा—माउसिआपई
मौसी—माउसिआ, माउसी, माउलिया (दे.)
मौसेरा भाई—माउसिआणेयो
मौसेरी बहन—माउसिआणिज्जा
ससुर—ससुरो
साढू—सालीधवो (सं)
साला—सालो
साला बडा—अवलो (सं)
साली—साली
साली बडी—कुली
सास—सस्सू, सासू, अत्ता

पशु (पाठ ५८ से ६१)

ऊंट—कमेलयो, उट्टो
ऊंटनी (सांड)—उट्टी
उदबिडाल—उदविडालो
उन्मत्तबैल—अलमलवसहो
कुत्ता—कुक्कुरो, सारमेयो
कुत्ती—सुणई, सुणिआ
खच्चर—वेसरो
खच्चरी—वेसरी
खरगोश—ससो
गधा—गद्दभो, रासहो
गाय—धेणु, गो (पुं)
गीदड—सियारो
गेंडा—गंडयो, खग्गी
घोडा—घोडओ, आसो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिडिया—चडया
चीता—चित्तो
चूहा—मूसिओ
दुष्ट बैल—अलमलो
नीलगाय—गवयो
पाडी छोटी—पड्डिया
बंदर—वाणरो
बकरा—अयो
बकरी—अया, छाली
बाघ—सद्दूलो, वग्घो
बिल्ली—मज्जारो, बिडालो
बैल—वसहो, बइल्लो
भालू—भल्लू, रिच्छो
भेड—मेसो
भेडिया—विओ, कोओ
भैंसा—महिसो
लंगूर—गोलांगुलो (सं)
लोमडी—खिखिरो
सांड—गोपती
सिंह—सीहो, सिंघो, केसरी
सियाली—सिआली
सूअर—सूअरो, वराहो
सोनचीडी—सउणचडया
हत्थिनी—करेणुआ, करिणी, हत्थिणी
हरिण—हरिणो
हाथी—हत्थी (पुं) करी (पुं) गयो

पात्र वर्ग (पाठ २६)

काच की गिलास—कायकंसो
कुंडी—करंडी
कुलडी—कुल्लडं
गिलास—कंसं, लहुपत्तं
घडा—घडो
झारी—भिंगो
तांबे का घडा—कलसो
तुम्बा (तुंबीपात्र)—कुउआ
दही रखने का मिट्टी का पात्र—
गग्गरी, छोटा घडा
मटका—कयलं (दे.)
मशक—चिरिक्का (दे.)
लोटा—करगो
सकोरा—कोडिअं

प्रसाधन सामग्री (पाठ ३२)

अंजन—अंजणो
इत्र—पुप्फसारो
कंघी—फणिहो, कंकसी (दे.)
केशों का जूडा—आमेलो
क्रीम—सरो
चोटी—छेंडो (दे.)
तेल—तेलं, तेल्लं
दर्पण—दप्पणो, आयंसो
नेलपालिश—णहरंजणं (सं)
पाउडर—चुण्णअं (सं)
पान—तंबोलं
पुष्पमाला—आमेलओ
मेंहदी—मेहदी
रूज—कवोलरंजणं
लिपष्टिक—ओट्ठरंजणं
सिंदुर—सेंदुरो
स्नो—हैमं (सं)

फलवर्ग (पाठ ४८, ४६

अंगूर—दक्खा
अंजीर—काउंबरी
अखरोट—अक्खोडबीयं
अनन्नास—अण्णास

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनार—दाडिमो
अमरूद—पेरुओ
आम—अंबं, सहआरफलं
आलुबुखारा—आरुयं (सं)
इमली—चिंचा, कुट्टा
कटहल—पणसो
कपित्थ—कविट्ठो
कमरख—कम्मरंगो (सं)
काजू—काजूअगो (सं)
किसमिस—अबीया, ईसिबीया (सं)
केला—कयलो
खज्जूर—खज्जूरो
खरबूजा—खब्बूयं, दसंगुलं (सं)
खुमानी—खुमाणी (सं)
जामुन—जंबूओ, जंबू
तरबूज—कालिंगो
तालमखाना—कोइलक्खी (त्रि.)
नारंगी—नारंगं
नारियल—णारिएलो
नाशपाती—अमियफलं
नीम का फल—णिंबोलिया
पपीता—महुकक्कडी
पिस्ता—णिकायगो (सं)
पीलू—पीलू (सं)
फालसा—अप्पट्ठि (सं)
बडहर—लउचो, एरावयो
बादाम—वायायो, नेत्तोवमफलं
बिजौरा—माहुलिंगो
बेल—बेलो
बोर—बोरं
मुनक्का—गोत्थणी (सं)
मौसंबी—मोसंबी
सहतूत—तुओ, तूलो (सं)
सिंघाडा—सिंघाडयो, सिंघाडगं
सुपारी—पोप्फलं
सेव—सेवं (सं)

महापुरुष (पाठ ७)

अरहंत—अरहंतो
आचार्य—आयरियो
उपाध्याय—उवज्झायो
जिन—जिणो
पार्श्वनाथ—पासणाहो
बुद्ध—बुद्धो
महावीर—महावीरो
शिव—हरो
साधु—साहू (पुं)
सिद्ध—सिद्धो, अदेही (पुं)

मासवर्ग (पाठ ८५)

आषाढ—आसाढो
आसोज—आसोओ
कार्तिक—कत्तिओ
चैत्र—चइत्तो
जेठ—जेट्ठो
पोष—पोसो
भाद्रव—भद्दवयं
माह—माहो
मृगसर—मग्गसिरो
वैशाख—वइसाहो
श्रावण—सावणं
फाल्गुन—फग्गुणो

मिठाईवर्ग (पाठ २५)

इमरती—अमिया, अमया (सं)
कलाकंद—कलाकंदो (सं)
कसार—कसारो
खाजा—महुसीसो

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

गजक—गजओ (सं)
गुज्झिया—संयावो, गोझिया
गुलाब जामुन—दुद्धपूअलिया (सं)
घेवर—घेउरो, घयपुण्णो
जलेबी—कुंडलिणी
पपडी—पप्पडी
पेठे की मिठाई—कोहंडी
पेडा—पिंडो (सं)
बालूशाही—महुमंठो
मालपुआ—अपूयो
मिठाई—मिट्ठन्नं
मोहनभोग—मोहणभोओ
रबडी—कुच्चिया (सं)
रसगुल्ला—रसगोलो (सं)
लड्डु—लड्डूओ, मोदओ
लापसी—लप्पसिया (दे०)
वर्फी—हेमी
शक्कर पारा—सक्करावालो

(यंत्र पाठ ६७)

घडीयंत्र—घडीजंतं
टाइपराइटर—लेहणजंतं
जीरोक्स—विज्जुछायाचित्तं
टेलीफोन—वत्ताजंतं
थर्मामीटर—तावमावअं
दूरवीक्षण—दूरविक्खणं
ध्वनिमंजूषा—झुणिमंजूसा
बिजली का पंखा—संपावीजणं
रेडियो रिकार्ड—झुणिखेवअजंतं
लाउडस्पीकर—सुइजंतं
जेनरेटर—जणित्तं

यान (पाठ ६६)

अगनबोट—अग्गिपोओ
ऊंटगाडी—उट्टजाणं
गदहा गाडी—गद्दभजाणं
घोडा गाडी—आसजाणं
जल जहाज—जलजाणं
नौका—णावा
ट्रक—भारवाहजाणं
बैल गाडी—बलीवद्दजाणं
भैंसा गाडी—महिसजाणं
मुसाफिर गाडी—परिजाणिओ
मोटर—तेलरहो, तेलजाणं
रथ—रहो
रेलगाडी—बप्फगं (सं)
बस—परिवहणं (सं)
वायुयान—वाउजाणं (सं)
साइकल—पायजाणं
स्कूटर—लहुतेलजाणं

रत्न और मणि (पाठ ६४)

गोमेद—गोमेयो, गोमेयं
चंद्रकान्तमणि—चंदकंतो
नीलम—इंदनीलो, नीलमणी (पुं)
पन्ना—मरगयो, मरअदो, मरगयं
पुखराज—पुप्फरायो, पुप्फरागो
माणिक—माणिक्कं
मूंगा—पवालो, पवालं
मोती—मुत्ता
लहसुनिया—वेडुरिओ, वेरुलियं
सर्पमणि—सप्पमणी (पुं)
सूर्यकांतमणि—सूरकंतो
स्फटिकमणि—फलिहो
हीरा—वइरो, वइरं

रसोई उपकरण (पाठ १६)

कटोरा—कट्टोरगो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडाही—कडाहा, कवल्लो
कठौती—चुण्णमद्दणी (सं)
कुर्छी—दव्वी
चमची—कडुच्छयो (दे०)
चिमटा—संदंसो
चुल्हा—चुल्ली
चुल्हे का पिछला भाग—अबचुल्लो
छाज—चिल्लं (दे.)
डोयो—डोओ
ढकना—पिहाणं
तमेली—सुफणी (दे.)
तवा—काहिल्लिआ (दे.)
थाली—थालिया, थाली, थालं
प्लेट—सरावो (सं)
संडासी—संडासं, संडासो
हांडी—हंडिआ, कंदु

रसोई मसाला (पाठ १५)

जीरा—जीरयो
तेजपत्ता—तेजपत्तं
धनिया—धाणा
मसाला—बेसवारो
मीर्च—मिरिअं
राई—राइगा
लवण—लोणं
हल्दी—हलिद्दा, हलद्दी
हींग—हिंगू

राजनीतिवर्ग (पाठ ८१)

उपराष्ट्रपति—उवरट्ठवई (पुं)
कलेक्टर—जिलाहीसो
छावनी—छायणिया
दूत—दूयो
निर्वाचन—णिव्वायणं
नेता—अग्गणी
प्रतिनिधि—पडिणिही (पुं)
प्रधानमंत्री—पहाणमंती (पुं)
प्रस्ताव—पत्थावो
मंत्री—मंती (पुं)
मुख्यमंत्री—मुहमंती (पुं)
राज्यपाल—रज्जवालो
राष्ट्रपति—रट्ठवई (पुं)
विधानसभा—विहाणसहा
विधायक—विहाअगो (सं)
वोट—मयं
संसद—संसया
सदस्य—सब्भ (वि)
सरपंच—गामणी
सेनापति—सेणावई (पुं)

रेंगने वाले आदि प्राणी (८६)

अजगर—अयगरो, अजगरो
गिरगिट—सरडो
गिलहरी—तिल्लहडी (दे०)
खाडहिला (दे०)
गोह—गोधा
छिपकली—घरोलिया, घरोली
छुछुंदर—छच्छुंदरं, छच्छूंदरो (दे०)
नेवला—णउलो
मछली—मच्छो
विच्छु—विच्छिओ
सांप—सप्पो, भुयंगो

रोग (पाठ ८४, ८५)

अंडकोश की वृद्धि—अंडवड्ढणं
अस्थि में सोजन—विद्दही (पुं) (सं)
आंधाशीशी—अवहेडगो
आफरो—गुदगुहो (सं)
उदररोग—उदरं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंपनवात—वेवयो
कफ—कफो
काणापन—काणियं
कूबडापन—खुज्जियं
कोढ—कोढो
खांसी—कासो
खाज—कंडू (स्त्री)
गंजापन—केसघायो (सं)
गूंगापन—मूयं
ग्रीवाफूलन—गंडमाला
छींक—छिक्का (दे.)
जलंधर—जलोयरं
जुखाम—पडिस्सायो
दस्तों का रोग—गहणी (स्त्री)
नासुर—नाडीवणो
पंगुता—पीढसप्पि (पुं)
पथरी—मुत्तकिच्छं
पागलपन—अवमारो
पित्त—पित्तो, पित्तं
पीठ में गांठ—पिट्ठिगंठि
पेट की गांठ—उदरगंठि
प्रमेह—पमेहो
फुनसी—फुडिआ
बवासीर (मस्सा)—अरसो
बुखार—जरो
ब्याऊ—पायफोडो
भगंदर—भगंदरो
भस्मकरोग—गिलासिणी
राजयक्ष्मा—रायंसि (पुं)
वमन—वमणं
वायु—वाऊ
व्रण—फोडो
शोथ—सूणिओ
हस्तविकलता—कुणियो
हाथीपगा—सिलिवइ (वि)
हिचकी—हिक्का

रोगीवर्ग (पाठ ८६)

अंधा—अंधो
कफ का रोगी—सिलिम्हिओ
काणा—काणो
कूबडा—खुज्जो
कोढी—कोढिओ
खांसी रोग वाला—कासिल्लो (वि)
खाज का रोगी—कच्छुल्लो
गूंगो—मूयो
चितकबरा—सबलो
दस्त का रोगी—अइसारिओ
दाद का रोगी—दद्दुलो
पित्त का रोगी—पित्तिओ
प्रलंब अंड वाला—पलंबंडो
बहरा—बहिरो
बुखार वाला—जरि (पुं)
बेहोशी वाला—मुच्छिर (वि)
मोटे पेट वाला—तुंदिलो
लंगडा—पंगू (पुं)
लूला—कुंटो
वामन—वडभो
वायु का रोगी—वाइओ

रोटी आदि वर्ग (पाठ २४)

आटा—चुण्णं, अट्टगं (दे०)
उडद की रोटी—मासरुट्टिआ
गूंदा हुआ वासी आटा—अवसामिआ (दे०)
गेहूं का आटा—गोहूमचुण्णं
चने का आटा—वेसणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चने की रोटी—चणग रुट्टिआ
जौ की रोटी—जवरुट्टिआ
डबल रोटी—अब्भूसो (सं)
परोठा—घयचोरी
पूरी—पोलिआ
फुलका—छप्पत्तिआ
बाजरे की रोटी—बज्जरीरुट्टिआ
बिस्कुट—पिट्ठगो (सं)
मक्की की रोटी—मकायरुट्टिआ
मोठ की रोटी—मकुट्ठरुट्टिआ
मैदा—समिआ
रोट—रोट्टगो
रोटी—रुट्टिआ (दे०)
बाटी—अंगार परिपाचिआ (सं)

वस्ती और मार्ग वर्ग (पाठ ९४)

उपनगर—उवणयरं
कुटिया—इरिया (दे०)
गली—वीहि (स्त्री)
गांव—गामो
गुफा—गुहा, कफाडो (दे०)
छोटी वस्ती—पल्ली (स्त्री)
झोंपडी—झुंपडा (दे०)
प्रासाद—पासायो,
बडा कस्वा—दोणमुहं
व्यापारी नगर—पट्टणं
पगडंडी—पद्धइ (स्त्री)
मार्ग—मग्गो
मुहल्ला—गोमुद्दा (दे०)
राजधानी—रायहाणी
शहर—णयरं
बडेशहर—महाणयरं
सडक—रायमग्गो

हवेली—हम्मिओ (दे०)

वस्त्रवर्ग (पाठ ३६, ३७)

अंगोछा—अंगपुंछणं
ओवरकोट—बुहइया (सं)
ऊनीवस्त्र—रोमजं, ओण्णेयं
ओढनी—ओयड्ढी (दे०)
कंचली (ब्लाउज)—कंचुलिआ
कुर्त्ता—कंचुओ
कोट—पावारो
कोरावस्त्र—अणाहयवत्थं
कौपीन—अवअच्छं (दे०)
घाघरा—घग्घरं
चड्डी—अद्धोरुगो, अड्ढोरुगो
चादर—पच्छयो
जोडे हुए वस्त्र—डंडी
टोप—सिरत्ताणं
टोपी—सिरक्कं
तकिया—उवहाणं
दुपट्टा—उत्तरीयं, उत्तरिज्जं
धोती—अहोवत्थं, कडिवत्थं
धोयावस्त्र—धोअवत्थं
पगडी—उण्हीसं
पतलून—पतलूणो (सं)
पायजामा—पायजामो
पेटीकोट—अंतरिज्जं
पैंट—अप्पईणं (सं)
बूंटेदार कौसंभवस्त्र—घट्टंसुओ
मलय देश का सूक्ष्म वस्त्र—मलीरं
मोटा वस्त्र—पत्थीणं
रजाई—नीसारो (सं)
रात्रिपौशाक—नत्तवेसो
रूमाल—पडपुत्तिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रेशमीवस्त्र—कोसेयं
लहंगा—चलणी, चंडातकं
बारीकवस्त्र—पम्हयो
वासकट—वासकडि (सं)
शेरवानी—पावारओ (सं)
सलवार—सूअवरो
साडी—साडी
सूतीवस्त्र—कप्पासं

वाद्य (पाठ ८७)

घंटा—घंटी
छोटी घंटी—घंटिया
झालर—झल्लरी
डमरु—डमरुगो
डुग्डुगी—डिंडिमं
ताल—तालो
तूर्य—तूरिअं
नगारा (ढोल)—ढोल्लं
मृदंग—मुइंगो
वीणा— तंती
शंख—संखो

विद्यालय (पाठ ३४)

अनुत्तीर्ण—अणुत्तिण्णो
इन्सपेक्टर—णिरिक्खओ (सं)
उत्तर पत्र—उत्तरपत्तं
उत्तीर्ण—उत्तिण्णो
उपकुलपति—उवकुलपई
कक्षा—कक्खा
कलम—लेहणी
कालांश—समयविभागो
कॉलेज—महाविज्जालयं
कुलपति—कुलपई
छात्र (विद्यार्थी)—छत्तो, विज्जट्ठी (पुं)
छुट्टी पत्र—अवगासपत्तं
दवात—मसीपत्तं
परीक्षा—परिक्खा
पुस्तक—पोत्थयं
पेन —लेहणी
पेन्सिल—पेंसिलो
फुट —मावअं
प्रश्न—पण्हो, पण्हा
प्रश्नपत्र—पण्हपत्तं
प्रिंसिपल (प्राचार्य)—पहाण सिक्खवओ
यूनिवर्सिटी—विस्सविज्जालयो
विद्यालय—विद्यालयो
विभागाध्यक्ष—विभागज्झक्खो
वस्ता—वेढणं
वेतन—वेयणं
वोर्ड —फलगं
शिक्षा—सिक्खा
स्नातक—ण्हाओ
स्याही—मसी

वृक्षवर्ग (पाठ ५०)

अशोक—असोयो
चंदन—चंदणो
चिरौंजी—पिआलो
नीम—णिंबो
पीपल—अस्सत्थो
पीलू—पीलू (पुं)
बबूल—बब्बूलो
मौलसिरी—बउलो
वरगद—वडो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वांस—वंसो

वृत्तिजीवीवर्ग (पाठ ७२ से ७६)

अहीर—अहिरो, गोवालो
कंबल बेचने वाला—कंबलिओ
कसाई—सोणिओ
कारीगर—सिप्पी, कारु
किसान—किसीवालो
कुंभार—कुंभआरो, कुलालो
गडरिया—अयाजीवो, अयापालो, मेसवालो
गवैया—गायओ, गाओ
घसियारा—तणहारो
चपरासी—पेसो
चटाई बनाने वाला—वरुडो
चिकित्सक—चिइच्छओ
चित्रकार—चित्तयारो
चुराई वस्तु को खोजकर लाने वाला—कूवियो
चोर—चोरो, तक्करो
चौकीदार—पहरी, दारवालो
जादूगर—इंदजालियो
जारपुरुष—अणडो (दे०)
जासूस—चरो
जिल्दसाज—पोत्थारो
जुलाहा—कोलिओ, पडयारो
जुवारी—कितवो
ज्योतिषी—जोइसिओ, खणदो (सं)
ठग—वंचओ, पतारगो
ठठेरा—तंबकुट्टओ
डाकू—दस्सू (पुं)
ड्राइक्लीनर—णिण्णेजओ (सं)
तंबोली—तंबोलिओ
तेली—तेल्लिओ, घंचिओ
दर्जी—सूइयारो, सोचिओ
धोबी—रजओ
नाई—णाविओ, ण्हाविओ
नाचनेवाला—णच्चओ
नौकर—सेवगो, भिच्चो
पसारी—गंधिओ
पाकिट मार—छेओ
प्रतिमा बनाने वाला—पडिमायारो
बजाने वाला—वायगो
बढई—रह्यारो, वड्ढई, तक्खो
बनिया—वणिओ, वावारि (पुं)
भंगी—संमज्जओ
भडभूंजा—भट्ठयारो
मच्छीमार—केवट्टो, धीवरो
मजदूर (कुली)—भारहरो
माली—मालिओ, मालायारो, आरंभिओ
मिस्त्री—जंतिओ
मूल्य लेकर धान काटने वाला—अत्थारिओ
मोची—चम्मयारो, मोचिओ
शिकारी—लुद्धो
रंडीबाज—खिंगो
रसोइया—पाचओ, सूदो
लुहार—लोहारो, लोह्यारो
वैद्य—वेज्जो
संपेरा—आहितुंडिओ
सुनार—सुवण्णयारो, सोवण्णिओ
सुराविक्रेता—सुंडिओ, सोंडिओ
हलवाई—कांदविओ
हिंजडा—चिंधपुरिसो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यापारवर्ग (पाठ ३३)

आफिस—कज्जालयो
आयात—आआओ (वि)
ऋण—उल्लं
कारखाना—कम्मसाला
खरीदना—कयो
खर्चा करने का धन—परिव्वयो
ग्राहक—गाहगो
दुकान—आवणो, हट्टो, अट्टयो
धन—धणं
नगद—टंको
निर्यात—णिज्जायो
बनिया—वणिओ
बाजार—विवणि (पुं) वणिअमग्गो
बेचना—विक्कयो
बेचनेवाला—विक्कइ (वि)
रुपया—रूवगो, रूवगं
लेन देन—परियाणं
वस्तु—वत्थुं
ब्याज—कलंतरं
व्यापार—ववहारो, वाणिज्जं, वावारो
व्यापारी—वावारि (पुं) वाणिअयो

शरीर के अंगउपांग (पाठ ६७ से ७२)

अंगूठा—अंगुट्ठो
आंख—णयणं, नेत्तं, चक्खुं (न)
आंख की पुतली—अक्खरा
आंत—अंतं
उंगली—अंगुली
एडी—पण्हिया
ओठ—अहरो, ओट्ठो
कंठ—कंठो
कंठमणि—अवडू, किआडिआ
कंधा—अंसो
कपाल—कवालो, भालो, कप्परो
कमर—फडी
कलेजा—हिययं
कांख—कक्खो, भुअमूलं
कान—कण्णो, सोत्तं, सवणो
केश—केसो, बालो, कयो
कोहनी—कुहुणी
खून—रत्तं, रुधिरं
खोपडी—पणिआ
गाल—कवोलो, गल्लो
घुटना—जाणु (न) जण्हुआ
चर्बी—मेदो, मेदं, वसा
छाती—उरो, वच्छं
जांघ—जंघा, टंका
जीभ—जीहा, रसणा
झिल्ली—झिल्लिआ
टांग—टंगो
ठोडी—चिबुअं
तिल—तिलो
दांत—दसणो, दंतो
दाढी—दाढिआ
दाढी मूंछ—समस्सू
धड (सिर सहित शरीर)—कमंधो
नस—सिरा
नाक—णासिया, णासा
नाखून—नहो
नाखून के नीचे का भाग—पढिसेगो
नाभि—णाही (पुं)
नितंब—नियंबो
पसली—पासो
पीठ—पिट्ठं
पैर—चरणो, पाओ
प्लीहा—पिलिहा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

झांपण—झंपणी, पम्हाइं
फेफडा—फुप्फुसं (दे०)
भुजा—भुआ, बाहू
भौं—भुमया, भमुहा
मज्जा—मज्जा
मसा—मसो
मसूडा—दंतवेट्ठो
मांस—मंसं
मुंह—वयणं, मुहं
मुट्ठी—मुट्ठिआ, मुट्ठी
मूंछ—आसरोमो
लिंग—सिण्हो, सिण्हं
वीर्य—वीरिओ, सुक्को
सिर—मत्थओ, सिरं
स्तन—थणो
हड्डी—अत्थी (पुं)
हथेली—करयलं
हाथ—करो, पाणी, (पुं) हत्थो

शरीर विकार (पाठ ३१)

अधोवायु (पादना)—वायनिसग्गो
आंख का मैल—दूसिआ
आंसू—अंसु
उच्छ्वास—ऊससिअं
कान का मैल—किट्टं
खांसी—खासिअं, कासितं
खुजली—खज्जू (स्त्री)
चक्कर—भमली
छींक—छीअं
जंभाई—जिंभा, जिंभिआ
जीभ का मैल—कुलुअं
डकार—उड्डुओ (दे०)
दांत का मैल—पिप्पिया (दे०)
थूक—थुक्को
नाक का मैल—सिंघाणं
निःश्वास—नीससिअं
पसीना—सेओ, घम्मो
मल—गूहं, मलं
मूत्र—मुत्तं
शरीर का मैल—जल्लं (दे०)
श्लेष्म—खेलो
हिचक्की—हिक्का, मुट्ठिक्का (दे०)

शस्त्रवर्ग (पाठ ६०, ६१)

अंकुश—अंकुसो
आरा—करकयो
कटार—करवालिआ
कुल्हाडी—कुहाडी, फरसू
कैंची—कत्तिया
गदा—गया
गुप्ति—करवालिआ
चक्र—चक्को
चाबुक—कसो
छुरी—छुरिया
टैंक—सत्थावरुहं (सं)
ढाल—फलगो
तलवार—असी (पुं) खग्गो
तोप—सयग्घी (दे० स्त्री) घरट्टी
त्रिशूल—तिसूलं
दांती—लवित्तं
धनुष—धणू
पत्थर फेंकने का अस्त्र—गुंफणं
पिस्तौल—गुलिअत्थं (सं)
बंदूक—मुसुंढि (दे० स्त्री)
बंब—फोडत्थं (सं)
बाण—सरो
भाला—कुंतो
मशीनगन—गुलिआजंतं (सं)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्गर—मोग्गरो
राइफल—कुच्छिभरियत्थं (सं)
लाठी—लगुडो
बर्छी—सल्लं
वज्र—वज्जो
सरोता—संकुला
सूई—सूई
हथोडा—घणो
हथोडी—हत्थोडी

शाकवर्ग (पाठ ४२, ४३)

अदरख—सिंगबेरं
आलु—आलू
करेला—कारिल्ली, कारेल्लयं
काकडी, खीरा—कक्कडी
केर—करीरफलं
केले का साग—केली
कोहला—कुम्हडी
गवार फली—गोराणी, दढबीआ, वाउइया
गाजर—गाजरं, गिंजणं (सं)
गोभी—गोजीहा (सं)
चने का साग—चणगसागं
चोपातियासाग—सोत्थीओ
चौलाई—तंदुलेज्जगो
टमाटर—रत्तंगो (सं)
टिंडा—डिंडिसो (सं)
तोरुं—घोसाडइ, घोसालइ (सं)
धनिया—कुत्थुंभरी
परवल—पडोलो, पडोला
पालक—पालक्का
पोदीना—पुदिणो, रुइस्सो
प्याज—पलंडू
फली—सिंबा
बैंगन—वायंगणं (दे०) बिंताणी
भिंडी—भिंडा
मक्का—मकायसागं, महाकायसागं
मकोय—कागमाई
मटरशाक—कलायसागं
मूली—मूलगं
लहसुन—लसुणं
लौकी—अलाउं
वत्थुआ—वत्थुलो
शकरकंदी—रत्तालु (सं)
सांगरी—समीफलं
सूरणकंद—सूरणं
हल्दी—हलद्दा, हलद्दी

सालावर्ग (पाठ ६७)

अट्टणसाला—व्यायामशाला
उट्टसाला—रसाला
उदगसाला—उदकगृह
उवट्ठाणसाला—सभास्थान
कम्मसाला—कारखाना
करणसाला—न्यायमंदिर
कूडागारसाला—षड्यंत्र वाला गृह
गंधव्वसाला—संगीतगृह
गंधियसाला—दारु आदि गंध वाली चीज बेचने की दुकान
गद्दभसाला—गधा रखने का स्थान
गोणसाला—गोशाला
घंघसाला—अनाथमंडप
घोडगसाला—घुडसाल
कुंभारसाला—कुंभारगृह

सुगंधित द्रव्य (पाठ ६३)

अगर—अगरो
इत्र—पुप्फसारो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंकोल—कंकोलो
कपूर—कप्पूरो
कस्तूरी—कत्थूरी, कत्थूरिआ
कुंदरु—कुंदुरुक्को
केवडाजल—केअइजलं
केसर—कुंकुमं
खस—उसीरं
गुलाबजल—पाडलजलं
गूगल—गुग्गुलो
चंदन—चंदणो
तगर—तगरो, टगरो
नख—नखं (सं)
मुलहठी—लट्ठिमहु (सं)
लोहबान—लोवाणो (सं)
शिलारस—सिल्हगं
सुगंधबाला—हिरिबेरो

सुगंधित पत्र पुष्प वाले पौधे व लता (पाठ ६२)

अगस्ति—अगत्थियो
अडहुल—जासुमणो
कमल—पोम्मं
कूजा—कुज्जयो
केवडा—केअगो
गुलाब—पाडलो
चंपा—चंपा, चंपयो
चमेली—जाई, मालई
जूही—जूही, जूहिआ
तिलक—तिलगो, तिलयो
तुलसी—तुलसी
दौना—दमणगो, दमणगं
मरुआ—मरुअगो, मरुवयो, मरुअओ
मोगरा—मल्लिआ
मौलसिरी—बउलो
वासंती—णवमालिआ
सिन्दूर—सिन्दूरं

स्त्रीवर्ग (पाठ ७७ से ८०)

अच्छे केश वाली—सुएसी
अध्यापिका—उवज्झायणी
अप्सरा—किंनरी
उपपत्नी—अहिविण्णा
ऊंचे नाक वाली—तुंगणासिआ
कामी स्त्री—कामुआ
कुलटा—कुलडा, अज्झा
क्षत्रियाणी—खत्तिआणी
गंध द्रव्य बेचने वाली—गंधिआ
गाने वाली—मेहरिआ, मेहरी
गृहपत्नी—गिहिणी
चंचला स्त्री—चवला
चंडालिनी—आइंखिणिया
चतुरस्त्री—णिउणा
जादूगरी—किच्चा
ज्योतिषीस्त्री—गणई
दासी—दासी
दूती—अंतीहरी
धनी की स्त्री—धणपत्ती, धणमंती
धाई—धाई, धारी
धीवर की स्त्री—धीवरी
नटी—नडी
नर्तकी—णट्टई
नायिका—णाविआ
नौकरानी—दुल्लसिआ
पटरानी—महिसी
पनिहारी—पाणिअहारी
परतंत्रस्त्री—आविउज्झा (दे०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पान बेचने वाली—डोंगिली (दे०)
पुत्रवती—पुत्तवई
फूल बिनने वाली—अंबोच्ची
बच्चों को खेल कूद कराने वाली—
किड्डुविया
बडे पेट वाली—दीहोअरी
ब्राह्मणी—बंभणी
मनुष्य की स्त्री—माणुसी
मोटी स्त्री—पीवरी
युवती—जुवई
राक्षसी—रक्खसी, पिसल्ली
लुहारिनी—लोहआरी
वन्ध्या—अवियाउरी
वृत्ति लिखने वाली—वुत्तिगारी
वेश्या—पणसुंदरी
शीघ्र प्रसव वाली—अणुसूआ
सुन्दरी—सुन्दरी
सुनारिन—सुवण्णआरी
सूत्र बनाने वाली—सुत्तगारी
सेठानी—सेट्ठिणी

स्पर्शवर्ग (पाठ ८३)

कठोर—कक्कस (वि)
कोमल—मउय (वि)
गरम—उसिण (वि)
चिकना—णिद्धं
ठंडा—सीय (वि)
न भारी न हल्का—अगरुलहु (वि)
भारी—गरुय (वि)
रूखा—लुक्ख (वि)
शीतोष्ण—सीउण्हं
हल्का—लहुय (वि)

स्फुट

अंकुर—अंकुरो (६१)
अंगारा—इंगारो, अंगारो (१६)
अज्ञात—अमुणिअ (१००)
अंडा—अण्डं (१०५)
अधिक चर्बी वाला—पमेइलो (६३)
अनवसर—अवरिक्क (६८)
अनार्य देश—पच्चंतो (१०६)
अनुयायी—अणुममिर (वि) (१०३)
अपक्व—आमो (४३)
अपना घर—णियगिहं (६)
अपराधी—अवराहिल्लो (५०)
अपशकुन—अवसउणं (१०३)
अभाव—अहावो, अभावो (७२)
अभिषेक—अभिसेओ, अभिसेगो (६०)
अलं—अलाहि (१०८)
अल्प—अप्पं (१०१)
असंतोष—असंतोसो (१०५)
असमर्थ—असंथड (वि) (६८)
अस्थि—अत्थि (न) (४७)
आकाश—आयासं, (५७)
आकृति—आकिई, आगिई (४०)
आज्ञाकारी—आणाइत्त (वि) (१०४)
आजकल—अजत्ता (१३)
आधा कर्म दोष से युक्त—आहाकड
(वि) (११)
आरोप—अलग्गं (६८)
आर्द्र—अद्द (६४)
आराम—सुहं (१०१)
आवाज—झुणि (पुं) (१०१)
आशा—(आसा) (१०६)
आश्चर्य—अब्भुयं (६८)
आयुर्वेद—आउव्वेयो (६४)
आशीष—आसिसा (८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उतरकर—ओयरिऊण (१०४)
उत्पथ—उप्पह (१०७)
उत्सव—महो, महं (३२)
उदधि—उअहि (पुं) (१००)
उदर—(उअरं) (४४)
उदित—उइय (वि) (१००)
उदित—उइयं (१०४)
उद्यम—उज्जमो (३६)
उपद्रव—उवद्दवं (१०८)
उपहार—उवहारो (१०३)
उपार्जित—उवज्जिय (वि) (१०४)
उपासना—उवासणं (७२)
ऋद्धि संपन्न—खद्धादाणिअ (वि) (१०६)
कचरा—कयवरो (६८)
कटाक्ष—काणच्छि (स्त्री) (५१)
कपास—कपासो, वत्रणं (न, स्त्री) (७७)
कबूतर—पारेवयो (१०६)
कब्ज—मलावरोहो (४८)
कर्तव्य—कायव्वं (७३)
कलेवा—कल्लवत्तो, पायरासो (१६)
कल्पना—कप्पणा (५३)
काच—कायो (७८)
कांति—कंति (स्त्री) (४०)
कार्यसमूह—कज्जालावो (१००)
कीमती—महग्घं (५१)
कुशल—कुसलो (६६)
कृपापात्र—किवापत्तं (८०)
कृमि—किमी (४४)
केन्द्र—किंदियं (६६)
कोप—कोवो (७८)
क्रम—कमो (१०४)
क्षेत्र—खेत्तं, छेत्तं (३६)
क्षेत्र—पल्लवायं (६३)
खंडन—विसारणं (६६)
खट्टा—खट्टं (२४)
खाई—फलिहा (३५)
खिचडी—किसरा (८२)
खेत में सोने वाला पुरुष—परिवासो (६३)
गड्ढा—खड्डं (७२)
गलना—गलणं (४६)
गले का—गलिच्च (६६)
गवाले की लड़की—गोवदारया (१०७)
गहरा—गहिरो (१००)
गाडी—सगडं (१०२)
गीला (आर्द्र)—अद्द (६४)
गुफा—गुहा (१००)
गूंद—णिज्जासो (८३)
गोष्ठी—गोट्ठी (४०)
ग्रास—गासो (४६)
घटना—घडणा (७८)
घडी—(घडी) (५२)
घर—घरो (११)
घर्षण—घसणं, घसणं (३७)
घाव—वणो (४३)
घास—तणं (१०१)
घूंघट—अंगुट्ठी (दे०) विरंगी (दे०) अवउंटणं, अवगुंठणं (१०)
घोडे के मुख को बांधने का वस्त्र—कडाली (५८)
घोंसला—णीडं, णेड्डं (५६)
चक्र—चक्को (१०४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चटनी—अवलेहो (४३)
चमकदार—अब्भुत्तं (६८)
चमड़े की धौंकनी—भत्थी (७३)
चर्बी—मेओ (४७)
चापलूस—चाडुयारो (६७)
चिकना—सण्ह (वि) (३७)
चामर—सीतं (४४)
चिकना—चिक्कणं (वि) (३२)
चितकबरा चित्तो (५३)
चिता—चियगा (५१)
चिह्न—चिंधं (३२)
चिल्लाहट—धाहा (स्त्री) दे० (१०५)
चुगली—पिट्ठिमंसं (१०३)
चुम्बन—गुलं (दे०) (४०)
चोंच—चंचू (स्त्री) (५४)
छावनी—छायणिया (६३)
छिलका—छोइया (६३)
छुट्टी—अवगासो (७४)
छोटा साधु—खुड्डुओ (१०६)
छोटी खाई—वाउलिया (३५)
जनता—जणया (३६)
जन्मपत्रिका—जम्मपत्तिआ (८०)
जीर्ण—जुन्नं, जुण्णं (६६)
जुकाम—पडीसायो (४४)
जुआ—जूअं (७६)
जुआखाना—टेंटा (७६)
जूं—जूओ (६६)
जूठा—णवोद्धरणं (५१, ७५)
जूता—उवाणहा (७३)
जेल—कारा (५१)
जो दीखता न हो—अईसंतो (वि) (१०३)
जोर—वेगो, वेयो (१०१)
ज्वर—जरो (६४)
झूला—डोला (६३)
टहनी—डाली (५०)
टिकट—वहणं, दलं (सं) (६६)
ठगाई—पयारणं (६२)
तंत्र—तंतं (४८)
तंबू—पडवा (६६)
तट—तडो (१०१)
तमाखू—तंबकूडो (८१)
तमाचा—चविडा (५१)
तरंग—तरंगो (४०)
तरकारी—तीमणं (१६)
तिरस्कार—अवहेरी (६८)
तिल—तिलो (६६)
तूणीर—तूणी, तूणा (६१)
तो—ता (७२)
थोडा—थोओ (वि) (१००)
दतवन—दंतसोहणं (६६)
दया—दया (१०१)
दहेज—अण्णाणं (दे०) (१२)
दाना—कणो (१०२)
दावानल—खआणल (१००)
दास—चेड (दे०) (१०५)
दीक्षित—पव्वइयो (१०७)
दीवार—भित्ति (स्त्री) (१०४)
दुर्दशा—दुद्दसा (६३)
दुर्भिक्ष—दुब्भिक्खं (६८)
दुर्लभ—दुलहो, दुल्लहो (७४)
दुर्लभ (महंगा)—महग्घविओ (५१)
देखता हुआ—पलोइंत (१०७)
देखना चाहिए—निहालेयव्वं (१०८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रोही—दोही (१००)
धंसा हुआ नाक—चिप्पड (वि) (१०८)
धान्य—सस्सं (६०)
धान्यागार—धण्णागारं (१०२)
धुंआ—धुम्मो (६३)
धूम्रपान—धूमपाणं (७५)
नगर जन—नायरया (१०८)
न भारी न हल्का—अगरुलहु (वि) (६३)
नाम—अभिहाणं (१२)
नास्तिक—णत्थिओ (वि) (६६)
नियम—अभिग्गहो (१०४)
निरर्थक—अट्टमट्ट (वि) (दे०) (६८)
निर्दोष—अणहो (६६)
नौकर—चेड (दे०) (१०५)
पडौसी, पडोसी—पाडोसिओ (६६)
पतला—पत्तल (वि) (७०)
पति—दइओ (१०३)
पत्थर—पाहणो, पत्थरो (११)
पथ्य—पच्छ (३६)
पदार्थ—पयत्थो (४६)
पद्य—पज्जं (१०३)
परस्पर—परोप्परं,परुप्परं (२१,६३)
परोसना—परीसणं, परिवेसणं (१६)
पवित्र, निर्दोष—अणहो (६६)
पसीना—सेअं (३२)
पाचन—पायणं (७२)
पात्र—पत्तं (६२)
पानी से गीला—उदओल्लं (६८)
पाप—पावं (११)
पाप—अणो (६६)
पापड—पप्पडो (४६)
पास—अब्भास (वि) (१०७)
पास जाता हुआ—उवसप्पंत (१०७)
पिंजडा—पंजरं, पिंजरं (५४)
पीछे से—पच्छओ (१०६)
पुकार—धाहा (दे०) (१०५)
पुण्य—(पुण्णं) (६)
पुराना—पुराअणं (४८)
पुराना मंदिर—अहिहरं (दे०) (६८)
पुष्टि वाला—पुट्ठिय (वि) (४८)
पूंछ—पुच्छं (५८)
पूर्ण—पुण्णं (६)
पेट्रोल—भूतेलसारो (६६)
पैर—चलणो (१०४)
पोला—पोलं (दे०) (४६)
पोल्लं (वि) (१०४)
प्यास—पिवासा (१०८) तिसा (१०६)
प्रकृति—पगई (स्त्री) (२४)
प्रतिज्ञा—अभिग्गहो (१०४)
प्रतिदिन—पइदिणं (६)
प्रतिमा—पडिमा (७४)
प्रद्वेष—पओसो (दे०) (१०७)
प्रशंसनीय—सग्घ (वि) (५१)
प्रसंग—वइअरो (१०४)
प्रस्थान—पत्थाणं (८४)
प्रायश्चित्त के लिए अपने दोष को गुरु को न बताना—अणालोइय (वि) (१०७)
प्रीति—पीई (४०)
फटा हुआ—फट्टिअं (१०६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फुनसी—फुडिया (६६)
फोटु—पडिच्छाया (६६)
बंदर—पवओ (१००)
बजाना—वायणं (८७)
बजे—वायणसमयो (सं) (२३)
बर्फ—हिमं (८३, १०६)
बस—अलाहि (१०८)
बहुश्रुत—बहुस्सुओ (१०७)
बातचीत—वत्ता, परिकहा (४०)
बाप—खंतओ (१०६)
ब्राह्मण—बंभणं (७५)
भंडार—कोट्ठागारो (७८)
भंडार—भंडारो (१०२)
भक्त—भत्तो (८७)
भक्ति—भत्ति (स्त्री) (८०)
भरपूर—णिब्भर (वि) (१०४)
भाग्य—भग्गं (७४)
भिखारी—भिक्खारी (८)
भीत—भीइ (१०४)
भुना हुआ—भुज्जिअ (वि) (४५)
भूतवादिक—भूयवाइयो (१०८)
मछली—मच्छा (७६)
मछली पकडने का जाल—पवंपुलो (७६)
मदिरा—मइरा, सुरा (५१)
मनोरथ—मणोरहो (३६)
मर्यादा—मज्जाया (३६)
महल—पासायो (१०२)
मांसरहित—णिम्मंसं (१०४)
मायका—माउघरो, माउघरं (१०४)
मारने के लिए—उद्दवेउ (१०५)
मारीरोग—असिवं (१०८)
मालिक—सामी (११)
मिठाई—मिट्ठन्नं (२५)
मुसलमान—जवणो (६३)
मुर्गी—कुक्कुडी (१०५)
मूर्खता—मुक्खत्तणं (१०५)
मूल्य—मुल्लो (३६)
मैथुन—अवहिट्ठं (दे०) (६८)
मैला—मलिणं (१०८)
म्यान—खग्गपिहाणयं (६१)
यंत्र—जंतं (६३)
यात्री—जत्ती (१०३)
युद्ध—जुज्झं (६६)
रक्षा—ताणं (३७)
रसोई बनाने वाली—महाणसिणी (१०२)
रहस्य—रहस्स (वि) (१०२)
राख—भस्सं (३६)
रुपया—रूवगं, रूवगो (५२)
रेल की लाइन—लोहसरणी (पुं. स्त्री) (६६)
रोग—आमयो (१०८)
रोगी लुक्को (२३)
लक्षण—लक्खणं (६६)
लब्धि—लद्धी (स्त्री) (७६)
लहर—उम्मी (स्त्री) (५३)
लाइसेंस—आणावणं (६६)
लापरवाही—अजागरुअया (१०२)
लालच—लोभो (१०५)
वंशलोचन—वंसरोयणा (५०)
वर्षा—वरिसा (१०१)
वाचाल—मुहरो (६३)
वाद्य—वाइअं (८७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वापस लौट गया—अवक्कंत (वि) (१०६)
वार्ता—वत्ता (१२, ७९)
वास्तव—जहत्थं (९०)
विघटन—विहडणं (६६)
विद्वान्—विउस (वि) (१०९)
विरह—अवहायो (९८)
विवाह—विआहो (७४)
विशाल (उदार)—उराल (वि) (८०)
विशाल—विसाल (वि) (१०१)
विश्राम—विस्सामं (१०७)
वृक्ष—दुमो (१००)
वृत्ति—वित्ती (स्त्री) (१०२)
वेतन लेकर काम करने वाला—वेयणियो (९०)
वेदना—वेयणा (७८)
वैक्रिय शरीर से संबंधित—विउव्विअ (वि) (७८)
व्यक्ति—वत्ति (५१)
व्यक्ति—विअत्ति (८५)
व्यक्तित्व—वत्तित्तणं (१०३)
व्यवहार—ववहारो (२४)
व्याकरण—वागरणं (४९)
व्याकुल—अक्खित्तं (१०७)
व्यापार—वावारं (७६)
व्यायाम—वायामो (६८)
शत्रु—सत्तू (९)
शांति—संति (स्त्री) (७६)
शाक—सागो (४३)
शाखा—डाली (५६)
शासक—सासओ (३८)
शास्त्रज्ञ—बहुस्सुयो (१०)
शिकारी—लुद्धगो (३९)
शीतोष्ण—सीउण्हं (९३)
शोभा—सोहा (५८)
श्मसान—मसाणं (४०)
श्रवण—सवणं (३९)
श्वास का रोग—सासो (६४)
संगति—संगो (३९)
संतुष्ट—संतुट्ठो (१०५)
संभव—संहवं (१३)
संस्कार—सक्कारो (८२)
सखी सहेली—अत्थयारिआ (दे०) (११)
सज्जन—सुअणो (१०३)
समर्थन—समत्थणं (८१)
सफाई—पमज्जणं (१०२)
सत्तू—सत्तू (२४)
समर्पण—समप्पणं (१२)
समस्या—समस्सा (९४)
सहयोग—साउज्जं, साहज्जं, साहिज्जं (४०)
सहायता—साहज्जं (९)
साक्षात्—सक्खं (७८)
सींग—विसाणं (५८)
सुरक्षित—सुरक्खिओ (१०२)
सेंध—खत्तं (दे०) (१०५)
सेवा—णिवेसणा (६३)
सेवा—परिचारणा (३६)
सोने का—सुवण्णिअ (वि) (१०५)
स्तूप—थूभो (१०४)
स्मृति—सई (स्त्री) (४४)
स्वच्छ—अच्छं (४४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वच्छंदी—सच्छंदो, अणोहट्टयो (दे.) (५१)
स्वतंत्र—सतंत (वि) (७६)
स्वप्न—सिविणं (१०३)
स्वभाव—सहाओ (३६)
स्वर—सरो (६६)
स्वरूप—सरूवं (७८)
स्वस्थता, स्वास्थ्य—सत्थं (२३)
स्वागत—सागयं (३६)
स्वाद—साओ (४६)
स्वाधीन—अहीण (वि) (१०३)
स्वेद (पसीना)—सेअं (३२)
हजामत—उवासणा (७३)
हलवाई—कंदविओ (२५)
होटल—पण्णभोयणालयो (२५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ६ : एकार्थक धातुएं

धातुओं का अर्थ हिन्दी के अकारादि क्रम से

(कोष्ठक में संख्या पाठ की सूचक है)

अ

अटकाना—पडिबंध (७६) रुंध (८३)
अतिक्रमण करना—अइक्कम (३४)
अतिपात करना—अइवाअ (२५)
अदृश्य होना—तिरोहा (५८)
अनुताप करना—अणुतप्प (३१)
अनुभव करना—पच्चणुभव (७०) पडिसंवेय (७९)
अनुराग करना—रज्ज (८२)
अनुसरण करना—पडिअग्ग, अणुवच्च (१०३)
अन्तर्हित करना—तिरोहा (५८)
अन्यथा करना—कूड (४७)
अपने को अमर समझना—अमराय (२५)
अपमान करना—अवमन्न (३०)
अभिमान करना—मज्ज (५२)
अभिलाषा करना—अहिलस (२४)
अभिषेक करना—अइंच (५७)
अभ्यास करना—सील (९३)
अर्चा करना (अर्चना करना)—अरिह (८)
अर्जन करना—अज्ज (३३)
अर्पण करना—पडिणिज्जाय (७५)
अलग होना—देखो टूटना
अवकाश पाना—ओवास (१०१)
अवगाहन करना—ओवाह, ओगाह (१०७)
अवज्ञा करना—हील (९१)
अवलोकन करना—देखो देखना
अवसाद पाना—अवसीअ (१०१)
अश्व को कवच से सज्जित करना—पक्खर (६८)
अस्फुट आवाज करना—सिंज (९२)
अहंकार करना—थब्भ (५४)

आ

आक्षेप करना—णीरव, अक्खिव (१०५)
आक्रमण करना—अक्कम (३४) ओहाव, उत्थार, छन्द (१०५)
आक्रोश करना—अक्कोस (१४) संजल (३१) पडिकोस (७४)
आचमन करना—आयम (४२)
आचरण करना—समायर (३१) आयर (४२)
आच्छादन करना—थय (५४) पक्खोड (६७) पडिपेहा (७५)
आच्छोटन करना—देखो झाडना
आज्ञा करना—देव (५९)
आतापना लेना—आयाव (४३)
आदत डालना—देखो अभ्यास करना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदर करना—आढा (१५) आअर (४२) पडिसंध (७८) सन्नाम (१०२)
आना—आगच्छ (११) आया (४३) आव, आवड, आवत्त (६७) आहम्म (६६) अहिपच्चुअ (१०६)
आपीडन करना—आवील (६४)
आमर्श करना—आमुस (६२)
आरंभ करना—आरंभ (३७) आढव, आरभ (१०५)
आराधना करना—आराह (१८) आरज्झ (४३)
आरूढ होना—दुरुह (५८)
आरोपित करना—आरोव (१८)
आलस्य करना—पमय (३०)
आलिंगन करना—आलिंग (४४) सिलेस (६२) आवआस (६७) सामग्ग, अवयास, परिअंत (१०७)
आलोचना करना—आलोअ (६७)
आवागमन करना—आवड (६७)
आवाज करना—कव (४६) देखो शब्द करना
आशा करना—आसास (६६)
आश्रय करना—आलंब (४४)
आश्वासन देना—आसास (८१)
आसक्त होना—आली (४४) गिज्झ (४६)
आसक्ति का प्रारंभ करना—पगिज्झ (६६)
आस्फोटन करना—अक्खोड (८१)
आह्वान करना—आयार (४३)

इ

इकट्ठा करना—चिण (५१) संचिण (६६) आरोल, वमाल, पुञ्ज (१०३)
इच्छा करना—इच्छ (६) अहिलस (१३)
इधर-उधर घूमना—चकंप (५१)

उ

उखाडना—उप्फाल (४७)
उचित होना—कप्प (३१)
उच्चारण करना—पडिउच्चार (७३)
उछल कर नीचे गिरना—पच्चोणिवय (७१)
उछलना—उप्फिड (१८) उक्कुद्द (१६) फंफ (६१) उत्थल्ल (१०६)
उठना—उट्ठ (१६) उकुक्कुर (१००)
उठाना—उप्फाल (४७) अल्लत्थ, अब्भुत्त, उस्सिक, हक्खुव, उक्खिव (१०५)
उडना—उड्डी (२६)
उत्कीर्ण करना—उक्किर (८२)
उत्तर देना—उत्तर (३४) पडिमंत (७६) पडिवक्क (७७) पडिसाह (७६)
उत्पन्न होना—अहिजाअ (११) पच्चाया (७०) रोह (८४) वक्कम (८७)
उदास होना—दुम्मण (५८)
उद्दीपित करना—पडिसंजल (७८)
उद्विग्न होना—दुम्मण (५८)
उन्नत करना—थंग (५४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपताप करना—दू (५९)
उपदेश देना—पच्चाहर (७०)
उपयोग में आना—पकप्प (६७)
उपयोग में लेना—उवजुंज (१७)
उपस्थित करना—पणाम (८०)
उपस्थित होना—पज्जुवट्ठा (७२)
उपालंभ देना—झङ्ख, पच्चार, वेलव, उवालम्भ (१०५)
उपासना करना—उवास (२७)
उबालना—कढ (४५) कह (क्वथ्) (४६) अट्ट (१०४)
उलटाना—ओयत्त (४०)
उल्लंघन करना—अइवत्त (१९) अइइ (३३) कम (४०)
उल्लास पाना—ऊसल, ऊसम्म, णिल्लस, पुलआअ, गुञ्जोल, आरोअ, उल्लस (१०७)

ऊ

ऊंचा करना—थंग (५४)
ऊंचा कूदना——उक्कुद्द (२६)
ऊंचा जाकर गिरना—पडिवय (७७)
ऊपर चढना—आरो (१०) देखो चढना

ए

एकत्रित करना—पिंड (४०)
एक बार स्पर्श करना—आमुस (६२)
एकाग्र चिंतन करना—पणिहा (८०)

क

कंपाना—धुव्व (५१) धुण (६५) ध्रुव (१०१)
कटाक्ष करना—कडक्ख (४५)
कतरना—कत्त (२३)
कम होना—ह्रस (ह्रस्व) (९१)
कमाना—अज्ज (३३) विढव (१०३)
करना—पकुव्व (६७) कर (४५) कुण (१०१)
करने का प्रारंभ करना—पकर (५३) पकुण (६७)
कलंकित करना—लंछा (८३)
कल्पना करना—कप्प (४५)
कल्याण करना—भद (६३)
कवच धारण करना—संणज्झ (९६)
कसरत करना—वायाम (९०)
कहना (बोलना)—कह (८) वज्जर (१६) कथ (२५) अक्खा (३०) दिस (५८) आइक्ख (३२) आअक्ख (४२) वक्खा (८७) वय (८८) आहा (९९) पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल, चव, जप, सीस, साह (१००) देखो, बोलना
कांपना—आयंव (४२) कंप (४५)
कांसना—कान (४६)
काटना—दू (५९) तक्ख (७३) लाय (८५) लुअ (८६)
कानी नजर से देखना—णिआर (१०१)
काम में आना—कप्प (४५) पकप्प (६६)
काम में लगना—आअड्ड, वावर (१०२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किसी अंक को समान अंक से गुणा करना—वग्ग (८८)
क्रीडा करना—कील (१३) किड्ड (४६) रम (३२) दिव (५८) संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिंच, कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल (१०६)
कुत्ते का भौंकना—बुक्क (३६) भुक्क (६५) भस (१०७)
कूटना—कुट्ट (१७)
कूदना—उकुद्द (१६) कुल्ल (४७) वग्ग (८७)
कृपा करना—अणुग्गह (३६) दय (५७) अवहाव (१०५)
क्रोध करना—कुप्प (२४) आरूस (४४) पकुप्प (६७) जूर, कुज्झ (१०४)
क्रोधित होना—रूस (७)
क्लेश पाना—किलिस्स (१६) किलेस (४६)
क्वाथ करना—देखो उबालना
क्षमा करना—मरह (८१)
क्षीण होना—णिज्झर, झिज्ज (१००)
क्षुब्ध करना—धरिस (५२)
क्षुब्ध होना—खुब्भ (४८) खउर, पड्डुह (१००)
क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना (क्षोभपाना)—पक्खुभ (६८)

ख

खंडखंड करना—संचुण्ण (६६)
खंडित करना (छेदना)—दुहाव, णिच्छल्ल, णिज्झोड, णिव्वर, णिल्लूर, लूर, छिंद (१०४)
खदेडना—हक्क (६१)
खरीदना—किण (१५) कीण (४६)
खांसना—खास (१३) कास (४६)
खाना—भुंज (६) गस (४६) जम्म (५१) भक्ख (६३) आहार (६६)
खाना चाहना—णीरव (१००)
खाली करने के लिए नमाना—देखो उलटाना
खिन्न करना—आयास (४३)
खिन्न होना—विसीअ (२५) अवसीअ (२६) खिज्ज (३३) पडिखिज्ज (७४)
खींचना—करिस (२८) अणुकड्ढ (३६) आअंछ (४२) पगड्ढ (६६) कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च, अणच्छ, अयञ्छ, अइञ्छ, करिस (१०७)
खींच लेना—आहर (६६)
खुलना (आंख का)—उम्मिल्ल (२४)
खुश होना—हरिस (६१) रिज्झ (८३) अवअच्छ (१०४)
खुशामद करना—अच्चीकर (३५) गुलल (१०२)
खुशी करना—रंज (८२) अवअच्छ (१०४)
खूब चलाना—पचाल (६६)
खूब बकना—लालप्प (८५)
खेद करना—सीअ (१८) विसीअ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२५)जूर, विसूर, खिज्ज (१०४)
खेलना—देखो क्रीडा करना
खोजना—देखो ढूंढना
खोदना—खण(२८)
खोदना (पत्थर आदि पर अक्षर आदि लिखना)—उक्किर (८२)

ग

गति करना—दव(५७)वा(६०)
गमन करना—दूइज्ज(५६) देखो जाना
गरजना—घुरुक्क(५०)थण(५४) गज्ज(१०४)
गरजना सांड का—ढिक्क (१०३)
गर्म करना—ताव(३६)
गलना—गल(४८)णिट्टुह, विगल (१०६)
गले लगाना—आलिंग(४४)
गाना—गाअ(४६)गा(१००)
गाली देना—अक्कोस(३५)सव (५२)पडिकोस(७४)
गिनती करना—कल (४६) संखा (६५)
गिरना—पड(७)पक्खल(६८) पडिक्खल(७४)फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल, भंस (१०६)
गीला करना—थिम(३८)
गुजरना—अइया(५६)
गुनना—गुण(४६)
गुरु को अपना अपराध कहना—आलोअ(६७)
गूंथना—गुभ(५०)गण्ठ(१०४)
ग्रहण करना—ओग्गह(६) आइ(४२)आया(४३)घत्त (५०)पगिण्ह(६६)पडिगाह (७४)पडिच्छ (७४) लय (८४)वल, गेण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार, अहिपच्चुअ(१०७)
ग्रहण करना (अच्छी तरह)—सुसमाहर(७३)सारक्ख(६४)

घ

घिसना (रगडना)—घस्स(५०)
घुडकना—घुरुक्क(५०)
घूमना—गम(६)अट्ट(२४)विहर (२५)विचर(२६)परिअट्ट (३२)पडिभम(७६)आहिंड (६६)घुल, घोल, घुम्म, पहल्ल (१०४)
घृणा करना—दुगुञ्छ(११)झुण, दुगुच्छ, जुगुच्छ(१००)

च

चक्र की तरह घूमना—आवट्ट (६७)
चखना—चक्ख (५१) आसाअ (६८)
चढना—चंप(५१)दुरुह(५८)चड, वलग्ग, आरुह(१०७)
चबाना—चर(३१)
चमक देना—ओप्प(२७)
चमकना—दिप्प(५८)धिप्प(६६) अग्घ, छज्ज, सह, रीर, रेह, राय(१०३)
चमकाना—लस(८५)सोह(६४)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चर्चा करना—चंप (५१)
चलना—री (८३) चर
चला जाना—पक्कम (६८)
चांपना—चंप (५१)
चाटना—लिह (८६)
चाहना—कंख (४५) दय (५७) देव (५९) अहिलंघ, अहिलंख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुंप (१०७)
चिंतन करना—विचिंत (२५) भाव (६५) धा (६६) पडिसंचिक्ख (७६) संझाअ (९६)
चिंता करना—चिंत (२८)
चित्र बनाना—चित्त (×) आलिह (३५)
चिह्न से पहचानना—आलक्ख (४४)
चिपकना—रा (८३)
चिल्लाना—अल्ल (१४) आरड (४३) आरस (४३) रस (८३) णीहर (१०४)
चुंबन लेना—चुंब (१२)
चुगली करना—पिसुण (१६)
चुनना—चिण (२४)
चुपडना (घी, तेल आदि से)—चोप्पड
चुराना—मुस (३४)
चूर्ण करना—चुण्ण (१५) दार (५७)
चूर-चूर करना—संचुण्ण (३५)
चेष्टा करना—ववस (८९)
चोपडना मालिश करना—मक्ख (६५)
चोरी करना—पम्हुस (६०)

छ

छानना—गाल (४९)
छिडकना—आइंच (४२) उप्फुस (४७) सिंच (९२)
छिन्न-भिन्न करना—छिंद (१९)
छिपना—लुक्क (८६) णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लिक्क, लिहक्क, निलिज्ज (१०१)
छिपाना—गोव (५०)
छीनना—हर (९१) आहर (९९)
छीनना हाथ से—ओअन्द, उद्दाल, अच्छिन्द (१०४)
छीलना (छिलना)—तक्ख (२९) तच्छ (३१) चच्छ, रम्प, रम्फ (१०७)
छूना—फरिस (३७) फंस (६१) आमुस (६२) फास, छिव, छिह, आलुङ्ख, आलिह, पम्हुस (१०७)
छेद करना (छेदना)—छिंद (१९) विंध (२५) कराल (४५) लाय (८५) लुअ (८६)
छोडना—मुंच (७) चय (२९) परिहर (३१) पक्खिव (६८) पडिमुंच (७६) मुअ (८२) ह्राह (९१) छड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क रेअव, णिल्लुञ्छ, धंसाड (१०२)

ज

जंभाइ लेना—विअंभ (५०) जम्भा (१०५)
जमना—संखा (१००)
जलना—डह, दह (७) संजल (३१) तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त, पलीव (१०५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जलाना—पज्जल (१३) झाम (१५) उज्जाल (४४) पज्जाल (७२) पडह (७३) अहिऊल, आलुंख (१०७)

जल्दी करना—तुर (५४) तुवर, जअड (१०६)

जागना—जागर (२६) जग्ग (१०२)

जानना—जाण (६) मुण (१६) संविद (६४) लक्ख (८४)

जाना—गच्छ (६) जा (३१) अइगच्छ (३४) आ (४२) वच्च (३६) अइया (५६) दूइज्ज (५६) ईर (६६) री (८३) वइवय (८७) वच्च, वग्ग (८८) हिंड (६१) संकम (६५) अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चड्ड, पच्छंद, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ, रम्भ, परिअल्ल, बोल, परिअल, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, हम्म (१०६)

जाप करना—जव (६)

जीतना—जिण (६)

जीतने की इच्छा करना—देव (५६)

जीमना—जेम (५१) देखो, खाना

जूरना—जूर (३०)

जोडना—जुंज (२७) पउंज (६८) लाय (८५) संकल (६६) जुप्प, जुज्ज (१०३)

जोतना—आअंछ (४२)

ज्ञान करना—बोध (६२)

झ

झडना (नीचे गिरना)—झड, पक्खोड (१०४)

झरना—खर (४८) पगल (६६) पण्हुअ (८०) खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ (१०६)

झाग निकलना—फेणाय (६१)

झाडना—आच्छोटन (४८) अक्खोड (८१) पक्खोड (८२)

झुरना—जूर (३०)

झूठा ठहरना—कूड (४७)

ट

टपकना—देखो झरना

टूटना—फट्ट (३७) तड (५३) फिट्ट (६१) पडिभंस (७६) णिव्वड (१०१)

ठ

ठगना—पतार (८) वंच (८७) वेहव वेलव, जूरव, उमच्छ (१०२)

ठहरना—ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प (१००)

ठीक करना—सार (२३, ६४)

ड

डरना—बीह (७) तस (३६) विह (६२) भा, डर, बोज्ज, वज्ज, तस (१०७)

डर से विह्वल होना—खउर (४७)

डसना—डस (२५)

डांटना—तज्ज (५३)

डूबना—कज्जलाव (४५) आउड्ड,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिउड्ड, बुड्ड, खुप्प, मज्ज
(१०३)

ढ

ढकना (ढांकना)—छाअ (१७)
पक्खोड (६८) पच्छअ (७१)
पडिपेहा (७५) आवर (६७)
ढीठाई करना—धरिस (६६)
ढीला करना—पयल्ल (१०१)
ढूंढना (खोजना) ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल,
गमेस, घत्त, गवेस (१०७)
ढोना—वह (८६)

त

तकलीफ देना—आयास (४३)
तडफडाना—तडप्फड (५३)
तपना—तव (७)
तपाना—ताव (१५) संताव (६६)
तर्क करना—तक्क (५३)
ताडना—ताल (२६) ताड
(३६,५३)
ताली बजाना—अप्फोड (१४)
तिरस्कार करना—थुक्कार (५६)
तीक्ष्ण करना (तेज करना)—ओसुक्क
(१०३)
तृप्त होना—थिप, थेप (५६) दिप्प
(५८)
तैरना—तर (३३) संतर (६५)
तोडना—भज्ज (२६) पिअरंज (४०)
दार (५७) भंज (६३) भिंद (६५)
तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड,
उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क,
उल्लूर, तुड (१०४)
तोलना—तोल (५३)
त्याग करना, त्यागना—पच्चक्ख (६६)
पजह (७२) पडियाइक्ख (७६)
हा (६१) देखो, छोडना
त्रास पाना—तस (३६)

थ

थक जाना (थकना)—थक्क (३५)
किलिस (४६)
थर-थर कांपना—थरथर (५४)
थूकना—थुक्क (५६)
थोडा ऊंचा होना—पच्चुण्णम (७०)

द

दग्ध करना—देखो, जलाना
दग्ध होना—दह, डह (३२)
दबाना—चंप (५१)
दमन करना—दम (५७)
दया करना—अणुकंप (३५)
दर्द होना (दुःख होना)—दुक्ख
(५८)
दांत से काटना—दंस (५६)
दान करना—आयाम (४३) देखो,
देना
दान करवाना—दाव (५७)
दान का बदला देना—पडिदा (७५)
दिखलाना (दिखाना)—उवदंस
(१३) दरिस (३६) दंसाव (५६)
पडिदंस (७५)
दिलाना—दलाव, दवाव
(५७)
दीक्षा देना—दिक्ख (५८)
दुःख कहना—णिव्वर (१००)
दुःख को छोडना—णिव्वल (१०२)
दुःख पाना—अवसीअ (१६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुःखित होना—दूम (५९)
दुःखी होना—परितप्प (३०)
दुहना—दुह (५९)
दूरवर्ती मालूम होना—दुराय (५९)
देखना—पास (६) दिक्ख (३९) विअक्ख (४९) दक्ख (५६) देह (५९) लोअ (८६) आलोअ (९७) णिज्झा (१००) णिअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयज्झ, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, पुलअ, निअ, अवआस (१०६)
देना—दा (८) तिप्प (३०) आयाम (४३) दय (५७) दियाव (५८)
दौडना—धाव (६) धा (६६)
द्वेष करना—दुस्स (५८) पदूस (६०)
द्रोह करना—दुह, दोह (५९)

ध

धमनी चलाना (जोर से)—उद्धुमा (१००)
धसना—धस (६६) ढंस, विवट्ट (१०४)
धारण करना—मल (१८), भर (६३) धर, धा (६६)
धिक्कारना—कुच्छ (४६)
धूसरित होना—गुंठ (४९)
धोना—धुव (६६)
ध्यान करना—धा (६६) पणिहा (८०) संझाअ (९६) झाअ (१००)
ध्यान पूर्वक देखना—आभोय (१८)

न

नकल करना—अणुकर (३४)
नमन करना—नव (४०) पणिवय (८०)
नमना (भार से)—णिसुढ, णव (१०५)
नमस्कार करना—णम, नम (३२)
नमाना—पणाम (८०)
नष्ट होना—खअ (४७) भंस (६३) धंस (६५)
नाचना—पणच्च (८०) लास (८५)
नाश करना—पणास (८०)
निकलना—पवह (११) नीहर (२३) निक्कस (३४)
निकालना—णीसारय (१९)
निगलना—गस (४९) घिस (१०७)
निग्रह करना—दम (३९)
निन्दा करना—कुच्छ (४६) खिस (४८)
निपजना—निवज्ज (१९)
निभाना—पडिजागर (७४)
निमंत्रण देना—निमंत (२९)
नियंत्रण करना—गुड (४९)
निरीक्षण करना—पच्चुवेक्ख (७१) पडिलेह (७७)
निर्णय करना—रोअ (८४)
निर्माण करना—रय (८३) सिर (९२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्वाह करना—पडिजागर (७४)
निवास करना—णिवस (१३
पडिवस (७७)
निवृत्त करना—पडिसंहर (७८)
पडिसाहर (७९)
निवृत्त होना—पडिक्कम (७४)
संजम (९६)
निवेदन करना—णिवेअ (१०)
निषिध वस्तु का सेवन करना—
पडिसेव (७९)
निषेध करना—हुक्क, निसेह
(१०४)
निष्पन्न होना (नीपजना)—निवज्ज
(१९) सिज्झ (९२) निव्वल
निप्पज्ज (१०४)
नींद लेना—ओहीर, उङ्घ, णिद्दा
(१००)
नीचे आना—पच्चुत्तर (७१)
नीचे उतरना—पच्चोरुह (७१)
ओहू, ओरस (१०२)
नीचे गिरना—भंस (६३) ल्हस,
डिम्भ (१०७)
नीचे जाना—धस (६५) थक्कर
(१०२)
नीचे नमना—ओणम (९)
नीसास लेना—झङ्ख, नीसस
(१०७)
नृत्य करना—पणच्च (८०)

प

पकडना—धर (१५)
पकाना—पय (६०) रंध (८२)
सोल्ल पउल, पच (१०२)
पडना (नीचे गिरना)—खल (४८)
पक्खल (६८)
पढना—वाय (९०) सिक्ख (९२)
पढाना—वाए (८९) वाय (९०)
पतला करना—देखो, छीलना
पतला होना—तणुअ (५३)
पत्थर पर शस्त्र आदि से अक्षर
लिखना—उक्किर (८२)
परिताप करना—परितप्प (३०)
परित्याग करना—परिच्चय (३२)
उम्मुंच (४०) पइहा (६७)
पच्चाचक्ख (७०)
परिभ्रमण करना—पडिचर (७५)
देखो, भ्रमण करना
परिवृत्त करना—परिआल (२३)
परोसना—वट्ट (१६)
पर्यटन करना—पडिभम (७६)
पर्यालोचन करना—संविभाव
(६४)
पवित्र होना—खच (४८)
पसरना—वअल (८७)
पसीजना—सिज्ज (५२)
पहचानना—अभिजाण (३१)
पच्चभिजाण (७०) लक्ख
(८४)
पहनना—परिहा (३६)
पहुंचना—पहुच्च (३४ पहुप्प (१०१)
पहुंचाना—णी, णे (२)
पान कराना—पज्ज (७२)
पालन करना—पाल (३७)
पावन करना—वेअड, खच (१०२)
पालिश करना—ओप्प (२७)
पास जाकर बताना—उवदंस (१३)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पास जाना—उवे (२६)
पिघलना—विरा, विलिज्ज (१०१)
पिलाना—देखो, पान कराना
पीछे लौटना—पडिइ (७३)
पीछे हटना—पच्चोसक्क (७०) पडिक्कम (७४)
पीटना—ताल (२६) पिट्ट (३०) ताड (५३)
पीडना—पील, पीड (२७) आवील (६४) आवीड (६८)
पीडा करना—बाह (३७) वह (८६)
पीना—पिव (६) घोट्ट (५१) आवा आविअ (६८)
पिज्ज, डल, पट्ट, पिअ (१००)
पीलना—देखा पीडना
पीसना—पीस (८) रुच (६०) (८३) णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज रोञ्च, चड्ड (१०६)
पुनर्जीवित होना—पडिउस्सस (७३)
पुष्ट होना—पोस (३७) बूंह (६२)
पूछना—पडिपुच्छ (७५) पुच्छ (१०३)
पूजना (पूजा करना)—अरिह (८) पूज, पूअ (२६) अंच, अच्च (३४)
पूरा करना—समाण, समाव (१०५) अग्घाड, अग्घव, उद्धुम, अङ्गुम अहिरेम, पूर (१०६)
पैदा करना—जा, जम्म (१०४)
पोंछना—लूह (१५) फुंस (६१)
पोतना—आलिप (४४) खरड (४८)
पोषण करना—बिंह (३६) भर (६३)
प्रकट करना—पागड (३७)
प्रकर्ष से जानना—पण्णा (८०)
प्रकाशित करना—पज्जोय (७३)
प्रक्षालन करना—पक्खाल (२३)
प्रगट होना—आविहव (६८) विअड (५०)
प्रगल्भता करना—धरिस (६६)
प्रज्ञापित करना—पन्नव (१५)
प्रणाम करना—पणम (१०) वंद (८७)
प्रतिघात करना—पडिहण (३८)
प्रतिज्ञा करना—पडिन्नव (७५) पडिसव (७८) पडिसुण (७६)
प्रतिध्वनि करना—पडिरू (७७)
प्रतिपादन करना—पडिवाअ (७५) पडिवाय (७६) वागर (८६)
प्रतीक्षा करना—पडिक्ख (७४) सामय, विहीर, विरमाल (१०७)
प्रतीति कराना—पच्चाय (७०)
प्रद्वेष करना—पओस (६७)
प्रपीडन करना—पवील (६४)
प्रमाद करना—पमाय (११)
प्रमुक्त होना—पमुच्च (२६)
प्रयत्न करना—पयय (३१) ववस (८६) मल, संघड (१०३)
प्रयत्न होना—पक्कम (६८)
प्रयाण करना—पया (६०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवास करना—पवस (२७)
प्रवेश करना—पविस (७) रिअ (१०७)
प्रवेश कराना—पइसार (६७)
प्रशंसा करना—अच्चीकर (३५) कत्थ (४५) लाह (८५) सिलाह (६२) सलह (१०२)
प्रस्थान करना—पट्ठव (२३) पत्था (६०)
प्रस्फोटन करना—पक्खोड (८२)
प्रहार करना—सार (१०२)
प्राप्त करना—लह (६) पाव (२८) पाउण (३३) पडिलंभ, पडिलभ (७७) लभ (७४) आवज्ज (६७) लंभ (८४)
प्राप्त करने की इच्छा करना—लिच्छ (८५)
प्रार्थना करना—विण्णव (२३) अभिपत्थ (३२) पत्थ (३५) पच्छ (७१)
प्रेरणा करना—पणोल्ल (८०)

फ

फटना—फुड (२४ फट्ट (३७) फुट (६१) विसट्ट, दल (१०६)
फडकना (फरकना) - फुर (३६) पप्फुर (६०) फुर (६१) चुलचुल, फंद (१०४)
फलना—फल (२८)
फाडना—कराल (४५) फाड (६१)
फिरफिर घिसना—पघंस (६६)
फिर से पान करना—पडिआइय (७३)
फिर से ग्रहण करना—पडिआइय (७३)
फिर से पूर्ण करना—पडिहर (७६)
फिर से सांधना—पडिसंध (७८)
फिसलना—फेल्लुस (३७)
फूटना—फट्ट (३७) फुट (६२)
फूंक मारना—फुम (६१)
फेंक देना (फेंकना)—अक्खिव (३५) किर (४६) विकिर (५४) पक्खिव (६७) पक्किर (६८) गलत्थ, अड्डुक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, परी, घत्त, खिव (१०५)
फैलना—वउल (८७) पयल्ल, उवेल्ल पसर (१०२)
फैलना (गंध का)—महमह (१०२)
फैलाना—तड, तड्ड, तड्डव विरल्ल, तण (१०५)
फोडना—फुड (२४)

ब

बंद होना—निमील (२४) ओमील (४०)
बकरे का बोलना—बुब्बुअ (६३)
बजाना—वायइ (७६) वज्जाव (८७) वाए (८६)
बढचढ कर बात करना—पगब्भ (२५)
बढना—वड्ढ (६) पक्खुब्भ (६८)
बतलाना—पन्नव (१५) दरिस (३६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बदला चुकाना—पडिअर (७३)
बधाई देना—वद्धाव (८८)
बनाना—रय (८३) सिर (६२) सुत्त (६३) उग्गह, अवह, विडविड्ड, रय, गढ, घड (१०३) उवहत्थ, सारव, समार, केलाय, समारय (१०३)
बहना—वह (३५)
बाञ्छना—कंख (४५)
बांधना—बंध (३६) (६२)
बातचीत करना—आलव (४४) संलाव (६४)
बाधा करना—वाह (५३)
बार बार चलना—चंकम (५१)
बार बार झाडना—पक्खोड (६८)
बाल उखाडना—लुंच (८६)
बाहर निकलना—पडिणिक्खम (७४) पडिणिग्गच्छ (७५) णीहर, नील, धाड, वरहाड, नीसर, (१०२)
बिखेरना—किर (४६) विकिर (५४)
बिछाना—अच्छुर (१४) पत्थर (३८)
बिछौना करना—संथर (६६)
बींधना—विंध (२५) विज्झ (५२) आविंध (६८)
बीमार की सेवा करना—पडिअर (७३)
बुझाना—णिव्वाव (८८)
बुनना—वा (६०) सुत्त (६३)
बुलाना—आयार (४३) आहव (६६) कोक्क, पोक्क, वाहर (१०२)
बुहारना—संमज्ज (१७)
बूम मारना—आरड, आरस (४३) देखो, चिल्लाना
बेचना—विक्क (२७) विक्किण (१०१)
बेचना (अच्छे मूल्य में)—अग्घ (१७)
बैठना—निवेस, निवज्ज (१६) अच्छ (३६) वेस (६२) आस (६८) णुमज्ज (१०४)
बोध पाना—पडिबुज्झ (७६)
बोना—वव (८६)
बोलना—जंप (७) अल्लव (१२) अक्खा (३०) बू (६२) पंजप (७१) रव (८३) वय (८८) वाहर (६०) देखो, कहना

भ

भक्षण करना—अणुगिल (३६)
भक्ति करना—आराह (४४) पज्जुवास (७२)
भर्त्सना करना—भंड (६३)
भांगना—भज्ज (२६) पिअरंज (४०) भंज (६३) पडिभंज (७६) वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरञ्ज करञ्ज, नीरञ्ज (१०३)
भांडना—भंड (६३)
भागना—पलाय (३८) णिरिणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवरेह, नस्स (१०६)
भाषण करना—भास (३०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिडना—भिड (६५)
भीख मांगना—भिक्ख (६५)
भूंकना—बुक्क (३६) भुक्क (६५)
भूख लगना—खुम्म (४८)
भूताविष्ट करना—आवेस (३८)
भूनना—भज्ज (६३)
भूल जाना (भूलना) विसमर (१६) वीसर (२८) पम्हुअ (३८) खल (४८) पम्हुस (६०) विम्हर (१०२)
भेजना—पेस (१७) पट्ठव (२३)
भेदना—भिद (६५)
भोजन आदि से तृप्त करना—पडितप्प (७५)
भोजन करना—भुंज (६५) जिम, जेम, कम्म, अण्ह, चमढ, समाण, चड्ड, कम्मव, उवहुज्ज (१०३)
भ्रमण करना—भम (६३) हिंड (९१) टिरिटिल्ल, ढुण्ढुल्ल, ढण्ढल्ल, चक्कम्म, भम्भड, भमड, भमाड, तलअण्ट, झण्ट, झम्प, भुम, गुम, फुम, फुस, ढुम ढुस, परी, पर (१०५)
भ्रष्ट करना—पडिभंस (८६)

म

मंत्रणा करना—मंत (६५)
मंथन करना—पमत्थ (३२) मह (८१) आलोड (९९) घुसल, विरोल (१०४)
मद्य करना—मज्ज (५२)
मधुर अव्यक्त ध्वनि करना—गुमगुम (५०)
ममता करना—ममा (८१)
मरना—मर (३३)
मर्दन करना—मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड (१०४)
मलिन करना—धंस (६७)
मांगना—याच (१२)
मानना—आढा (१५) मन्न (२७)
माप करना—मा (८१)
मार डालना (मारना)—घाय (७) हण (२७) ताड, ताल (२९) पिट्ट (३०) वावाअ (९०)
मार्जन करना—रोसाण (१७) सुप (९३)
मालिश करना—मद्द (६५)
मालूम होना—पडिभा (९) पडिभास (७६) पडिहा, पडिहास (७९)
मिलना—पघोल (६९) मिल (८१)
मिलाना—मेलव (१७) मिस्स (८१) मीस (८२)
मुग्ध होना—संमुज्झ (६४) गुम्म, गुम्मड, मुज्झ (१०७)
मुठभेड करना—भिड (६५)
मुद्रित होना—ओमिल (४०)
मुरझाना—पमिलाय (३८)
मूच्छित होना—मुच्छ (८२)
मूर्ति आदि की विधि पूर्वक स्थापना करना—पइट्ठव (६७)
मेंढक की तरह कूदना—उप्फिड (४७)
मोडना—वाल (९०)
मौज करना—लल (८४)
म्लान होना—मिला (८१) वा, पव्वाय (१००)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य

याचना करना—जाय (३०)
याद करना—गुण (४६)
याद दिलाना—सार (६४) झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह (१०२)
युक्त करना—पउंज (६७)
युद्ध करना—जुज्झ (६)
योग्य होना—अच्च (३५)

र

रंगना—रंग (८)
रक्षण करना (अच्छी तरह)—सारक्ख (६४)
रक्षा करना—रक्ख (२६)
रखना (स्थापन करना)—थक्कव (५४)
रगडना—घरस (१७) घस (५०)
रमना—रम (३२)
रहना—णिवस (१३) पज्जोसव (७१) आवास (६८)
रांधना—रंध (८२)
रीझना—रिज्झ (८३)
रुई धुनना—पिंज (३७)
रुकना—खल (४८) थम्भ (५४)
रूसना—आरूस (४४)
रेखा करना—विलिह (६१)
रोकना—संवर (६४) वाह (५२) पडिबंध (७६) रुंध (८३) वार (६०) उत्थङ्घ (१०४)
रोना—तिप्प (३०) रुव (३३) आरस (४३) आरड (४६) रुअ (८३)

ल

लगना—लग्ग (८४)
लगाना (मालूम होना)—पडिहा, पडिहास (७६)
लगाना (जोडना)—लाय (८५)
लघु करना—लहुअ (८५)
लज्जा करना—जीह, लज्ज (१०३)
लज्जित होना—हिरि (६१)
लटकना—आयल्ल (४२) पयल्ल (१०१)
लडाई करना—जुज्झ (६)
लपेटना—परिआल (३८) वेढ (४०) संवेल्ल (६४)
लांघना—लंघ (८४)
लाना—आहर (६६)
लिप्सा करना—लिच्छ (८५)
लीन होना—अल्लीअ (१०१)
लीपना—खरड (४८) लिंप (८५)
लुंचन करना—लुंच (८६)
लुढकना—लुढ (८६)
लूटना—लूड (८६)
ले जाना—णी, णे (६)
लेट जाना (लेटना) निवज्ज (१६) लोट्ट (८७)
लेना—देखो ग्रहण करना
लेप करना—लिप्प (२६) आलिंप (४४) लिंप (८५) देखो, लीपना
लोप करना—तिरोह (५८) लुंप (८६) लोव (८७)
लोभ करना—लुभ (८६) संभाव, लुब्भ (१०५)
लौटकर आ पडना—पच्चापड (७०)

व

वंदन करना—पणिवय (८०)
वमन करना—वम (८८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वरतना—वट्ट (८८)
वरसना—वरिस (३३)
वर्गकरना—वग्ग (८८)
वर्जन करना—वज्ज (३१)
वर्णन करना—वण्ण (८८)
वसना—वस (८६)
वहन करना—णिविस्स (१६)
पडिवह (७७) वाह (६०)
वाद विवाद करना—पवय (३०)
वापस आना—पडिइ (७३) पलोट्ट,
पच्चागच्छ (१०६)
वापस देना—पच्चप्पिण (७०)
वम्फ, वल (१०६)
वास करना—पज्जोसव (७२) वस
(८६) आवास (६८)
विकसना—पप्फुल (६०) फुट
(६१)
विकास करना—कोआस, वोसट्ट,
विअस (१०७)
विक्रय करना—विक्क (२७) देखो
बेचना
विचरना—विचर (२६)
विचलित करना—धरिस (५२)
विचार करना—पडिसंविक्ख (७८)
विदारना—दार (५७)
विद्यमान होना—विज्ज (५२)
विनती करना—विण्णव (२३)
विनाश करना—लुंप (८६)
विपरीत होना—पडिकूल (२६)
विमर्श करना—विअक्क (४६)
वियोग से दुःखित होना—जूर (३०)
विरत होना—पडिसम (७८)
विराजमान होना—विराअ (२६)
विराम लेना—विरम (११)
विरोध करना—वाह (६२)
विलाप करना—झंख, वडवड, विलव
(१०५)
विलास करना—लल (८४)
विलेखन करना—विलिह (६१)
विलोडन करना—मह (८१) लोल
(८७) देखो मंथन करना
विवरण करना—वक्खा (८७)
विवाह करना—विवह (१२)
विशेष जलना—पजल (७१)
विश्राम करना—णिव्वा, वीसम
(१०५)
विश्वास करना—पत्तिअ (६०)
विसंवाद करना—विअट्ट, विलोट्ट, फंस,
विसंवय (१०४)
विस्तार करना—तण (५३)
विस्तार से कहना—पबंध (६०)
विस्मरण करना—वीसर (२८)
विहार करना—विहर (२५)
वृद्ध होना—पक्खुब्भ (६८)
वेष्टन (वेष्टित) करना—वेढ (४०)
पडिबंध (७६)
व्यक्त करना—वंज (८७)
व्यवहार करना—पडिसंखा (७६)
व्याकुल होना—विर, णड, गुप्प
(१०५)
व्याख्यान करना—वक्खाण (२८)
व्यापार करना—ववहर (८६)
व्याप्त होना—ओअग्ग, वाव (१०५)

श

शब्द करना—कण (४०) कंथ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४६) पज्झंझ (७२) रा
(८३) रुञ्ज, रुण्ट, रव
(१०१)
शपथ खाना—साव (१८)
शरमाना—लज्ज (८४) देखो लज्जा करना
शांत होना—परिणव्वा (१८) पडिसा, परिसाम, सम (१०६)
शाप के बदले शाप देना—पडिसव (७८)
शाप देना—सव (५२) पडिकोस (७४)
शिक्षा देना—सिक्ख (१०)
शुद्ध करना—सोह (१७)
शुद्ध होना—सुज्झ (६३)
शुद्धि करना—आयाम (४३) सोह (६४)
शेखी मारना—पगब्भ (२५)
शोक करना—सोअ (६४)
शोभना—सोह (६४) भास (१०७)
शोभाना—सोभ (६४) सोह (६४)
शौच करना —आयाम (४३)
श्रद्धा करना—सद्दह (१००)
श्रम करना—वावंफ (१०१)
श्लाघा करना—कत्थ (४५) पकत्थ (६७)
श्लेष करना—रा (८३) लस (८५)

स

संकलना करना—संकल (२४)
संकुचित करना—संकोअ (६४)
संकुचित होना—कूण (४७)
संकेत करना—संकेअ (६५)
संकोच करना—संकुच (१०) संमिल्ल (६४)
संकोच पाना—देखो, संकुचित होना
संख्या करना—कल (४६)
संग करना—लग्ग (८४)
संगत करना—पघोल (६६) अब्भिड, संगच्छ (१०६)
संगत होना—संगच्छ (६५)
संग्रह करना—संचिण (६६)
संघर्ष करना—संघस (६५)
संतप्त होना—झंख, संतप्प (१०५)
संतुष्ट होना—तूस (५१) थेप्प (५६) थिप्प (१०५)
संदेश देना—अप्पाह, संदिस (१०६)
संन्यास लेना—अभिनिक्खम (३१)
संपत्ति युक्त करना—खउर (४७)
संपन्न होना—संपज्ज (२४)
संपूर्ण प्रयत्न करना—पडिअज्जम (७३)
संबद्ध करना—संजोअ (६६)
संभालना—रक्ख (२६) पडिअग्ग (७३)
संभावना करना—आसंघ (६८)
संभोग करना—रम (८२)
संयम करना—संजम (२६)
संयुक्त करना—जुंज (२७) संजोअ (६६)
संशय करना—विअप्प (५०) संक (६५)
संस्कार डालना—वास (६०)
संस्पर्श करना—संफुस (३६)
संहार करना—संहर (२८)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकना—सक्क (६) चय, तर, तीर, पार (१०२)
सगाई करना—वर (१२)
सजाना—पडिकप्प (७४) चिञ्च, चिञ्चअ, चिञ्चिल्ल, रीड, टिविडिक्क, मण्ड (१०४)
सजावट करना—पडिकप्प (७४)
सडना—गल (४८) कुह (५२)
सडाना—पडिसाड (७८)
सत्य-सत्य ज्ञान करना—पमा (३५)
सदा के लिए घर से निकल जाना—अभिनिक्खम (३१)
सन्नद्ध करना—पक्खर (६८)
समझना—बोध (६२)
समर्थ होना—संचाय (६५) पहुप्प, पभव (१०१)
समर्पण करना—अल्लव (१४)
समेटना (संवरण करना)—पडिसंखेव (७८) साहर, साहट्ट, संवर (१०२)
सम्मान करना—माण (८१)
सम्यक् प्रयत्न करना—संजय (६६)
सरकना—सर (३३)
सहन करना—सह (३२) मरिस (८१)
सहारा लेना—आलंब (४४) संदाण (१०१)
सांधना—सिव्व (६२)
साक्षात् करना—पच्चक्खीकर (६६)
साथ में रहना—संवस (६४)
साधु आदि को दान देना—पडिलाभ (७७)
सान्त्वना देना—धीरव (६६) आसास (६६)
साफ करना—पमज्ज (३५) अग्घुस, लुञ्छ, पुञ्छ, पुंस, फुस पुस, लुह, हुल, रोसाण, मज्ज (१०३)
सामने आना—उम्मत्थ, अब्भागच्छ (१०६)
सामने जाना—पच्चुवगच्छ (७१)
सिखाना—सेह (६४)
सींचना—आइंच (४२) उप्फुस (४७) तलहट्ट (५४) सिंच (६२) सिम्प, सेअ (१०३) उंज (८६)
सीखना—सिक्ख (६२)
सीझना—सिज्झ (६२)
सीना—सिव्व (१२)
सुख करना—भद (६३)
सुनना—सुण (६) आयण्ण (७२) सुअ (६३) हण (१०१)
सुनाना—साव (१८,६४)
सुलगाना—पज्जाल (७२)
सूंघना—जिंघ (८) सुंघ (६३) आइग्घ (१००)
सूखना—सुस्स (६३) ओरुम्म, वसुआ, उव्वा (१००)
सूचना करना—सूअ (२३)
सूर्य के ताप में शरीर को थोडा तपाना—आयाव (४३)
सेवा करना—सेव (६) सुस्सूस (२३) अणुचर (३६) भय (६३) पज्जुवास (७२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवा में उपस्थित रहना—उवचिट्ठ (२७)
सेवा शुश्रुषा करना—पडिआगर (७४)
सोधना—सोह (२७)
सोना—निवज्ज (१६) सुव, सुप्प (६३) से, सेअ, सोअ (६४), कमवस, लिस, लोट्ट, सुअ (१०५)
सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना—पच्चप्पिण (७०)
स्तब्ध करना—णिट्ठुह (१०१)
स्तुति करना—पत्थ (३६) थु (७८) थव, थुण, थुअ (५६)
स्थापना करना—थक्कव (५४) णिम, णुम (१०७)
स्पष्ट होना—णिव्वड (१०१)
स्थिर होना—थम्भ (५४)
स्नान करना—अंगोहल (१४) मज्ज (६५) सिणा (६२) अब्भुत्त, ण्हा (१००)
स्नेह करना—णिज्झ (५३) पणय (८०) सिणिज्झ (६२)
स्नेह पूर्वक पालन करना—लाल (८५)
स्पर्श करना—आमुस (६२) संघट्ट (६५) संफुस (३६) देखो छूना
स्फुट होना—फुट्ट (२५)
स्मरण करना—सुमर (८) सर (२६)
स्वाद लेना—चक्ख (५१) पच्चोगिल (७१) साइज्ज (६४) आसाअ (६८)
स्वीकार करना—मन्न (२७) अंगीकर (३४) पडिवज्ज (७७) पडिसंधा (७८) पडिसुण (७६) संगच्छ (६५)
स्वेद का आना—सिज्ज (५२)

ह

हंसी फूट पडना—मूर (१०३) गुंज, हस (१०७)
हजामत करना—कम्म (१०२)
हटना—पडिक्खल (७४)
हरण करना—हर (६१) आलुंप (६७)
हवा करना—वीअ (४४) वोज्ज (१०१)
हांकना—हक्क (६१)
हाथ आदि का काटना—विअंग (५०)
हाथी को कवच आदि से सजाना—गुड (४६)
हारना—पराजय (११)
हिंसा करना—अइवाअ (२५) हिंस (२६)
हिलना—आयंब (४२) फुर (६१) आहल्ल (६६) आयज्झ, वेव (१०५) देखो, कांपना
हिलाना—धुव्व (५१)
हिलोरना—आलोड (६७)
हीन होना—हस (६१)
हुकम करना—सास (१७)
हैरान करना—कयत्थ (४५) संताव (६६)
हैरान होना—किलेस (४७)
होना—अस (११) भव (६३) हव, हो (६१) हुव (१०१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट ७ वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा

वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा में समानता अधिक है। कुछेक समानता यहां प्रस्तुत है।

(१) वैदिक संस्कृत की धातुओं में किसी प्रकार का गणभेद नहीं है। प्राकृत भाषा में भी धातुओं में गणभेद नहीं है।

पाणिनीय धातु	वैदिक धातु	प्राकृत भाषा
हन्ति	हनति	हनति, हणति
शेते	शयते	सयते, सयए
भिनत्ति	भेदति	भेदति, भेदइ
म्रियते	मरते	मरते, मरए

(वैदिक प्रक्रिया सू० २।४।७३, ३।४।८५, २।४।७६, ३।४।११७, ऋग्वेद पृ० ४७४ महाराष्ट्र संशोधन मंडल)।

(२) वैदिक संस्कृत में आत्मनेपद तथा परस्मैपद का भेद नहीं है। प्राकृत भाषा में भी आत्मनेपद और परस्मैपद का भेद नहीं है।

पाणिनीय धातु	वैदिक संस्कृत	प्राकृत भाषा
इच्छति	इच्छति, इच्छते	इच्छति, इच्छते
युध्यते	युध्यति, युध्यते	जुज्झति, जुज्झते

(वैदिक प्रक्रिया ३।१।८५)

(३) वैदिक संस्कृत में प्रथम पुरुष के एकवचन के ए प्रत्यय के रूप में समानता है।

पाणिनी ए प्रत्यय	वैदिक	प्राकृत
शेते	शेये	सए
इष्टे	ईशे	ईसे, ईसए

(वैदिक प्रक्रिया सू० ७।१।१ ऋग्वेद पृ. ४६८)

(४) वर्तमान और भूतकाल आदि कालों में वैदिक संस्कृत में तथा प्राकृत में कोई नियमता नहीं है। वैदिक क्रियापद में वर्तमान के स्थान पर परोक्ष भी होता है। म्रियते के स्थान पर ममार प्रयोग हुआ है। (वैदिक प्रक्रिया ३।४।६)

प्राकृत भाषा में परोक्ष के स्थान पर वर्तमान का प्रयोग भी होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परोक्ष	प्राकृत वर्तमान
प्रेक्षांचक्रे	पेच्छइ
आबभाषे	आभासइ
वर्तमान	**भूत**
श्रृणोति	सोहीअ

(हेम० प्रा० व्या० ८।४।४४७)

(५) **विभक्तियों का व्यत्यय**—

(क) वेदों में और प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी विभक्ति का प्रयोग विहित है।
(देखें वैदिक प्रक्रिया सू० २।३।६२ तथा हेम०प्रा० व्या० ८।३।१३१)

(ख) तृतीया विभक्ति के स्थान में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।
(वैदिक प्रक्रिया २।३।६३ तथा हेम०प्रा०व्या० ८।३।१३१)

(६) **बहुलं का प्रयोग**—

वैदिक व्याकरण में सब प्रकार के विधानों में बहुलं का व्यवहार होता है। प्राकृत भाषा के व्याकरण में भी सर्वत्र बहुलं का व्यवहार होता है।
(देखें, बहुलं छंदसि २।४।३६,७३ हेम० प्रा० व्या० ८।१।२,३)

(७) **अन्तिम व्यंजन का लोप**—

वैदिक संस्कृत में अंतिम व्यंजन का लोप होता है। इसी प्रकार प्राकृत भाषा में अंतिम व्यंजन का लोप व्यापक है—

वैदिक रूप

पश्चात्—पश्चा	पश्चार्ध (वै. प्र. ५।३।३३)
उच्चात्—उच्चा	(तैत्ति० सं. २।३।१४)
नीचात्—नीचा	(तैत्ति० सं. १।२।१४)
विद्युत्—विद्यु	(अन्त्यलोप: छांदस: ऋग्वेद पृ. ४६६)
युष्मान्—युष्मा	(वाज० सं. १।१३।१, शत० ब्रा० १।२।६)
स्य:—स्य	(वै०प्र० ६।१।१३३)

प्राकृत रूप

तावत्—ताव। यावत्—जाव। तमस्—तम। चेतस्—चेत। यशस्—जस। नामन्—नाम।

(८) **स्प को प आदेश**—

वैदिक भाषा में स्प को प हो जाता है। प्राकृत में भी स्प को प

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आदेश हो जाता है।

वैदिक	प्राकृत
स्पृशन्य—पृशन्य (ऋग्वेद पृ. ४६६)	स्पृहा—पिहा। निस्पृह—निप्पह (हेम. प्रा. व्या. २।७७)

(९) र का लोप—

वैदिक	प्राकृत
अप्रगल्भ—अपगल्भ (तै. सं. ४।५।६।१)	क्रिया—किया, प्रज्ञा—पज्जा प्रिय—पिय (हेम. प्रा. व्या. २।७९)

(१०) य का लोप—

वैदिक	प्राकृत
त्र्युचः—तृचः (वै. प्र. ६।१।३४)	श्याम—साम। व्याध—वाह (प्रा. २।७८)

(११) ह को ध—

वैदिक		प्राकृत
सह—सध सहस्थ—सधस्थ	वै. प्र. ६।३।९६	इह—इध
गाह—गाध वहू—वधू	निरुक्त पृ. १०१	होह—होध
शृणुहि—शृणुधि (वै. प्र. ६।४।१०२)		परित्तायह—परित्तायध (हेम. प्रा. व्या. ४।२६८)

(१२) थ को ध तथा ध को थ—

वैदिक	प्राकृत
माधव—माथव (शतपथ ब्राह्मण १।३।३।१०) ११,१७	नाथ—नाध कथं—कधं राजपथ—राजपध (हेम. प्रा. व्या. ४।२६७)

(१३) द्य को ज—

वैदिक	प्राकृत
द्योतिस्—ज्योतिस् (अथर्व सं. ४।३७।१०)	द्युति—जुति, जुइ उद्योत—उज्जोत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्योतते—ज्योतते	(हे०प्रा०व्या० २।२४)
निरुक्त पृ. १७०,१६	
अवद्योतयति—अवज्योतयति (शत. ब्रा. १.२.३.१६)	

(१४) ह् की घ तथा भ—

वैदिक	प्राकृत
आहृणि—आघृणि	सीह—सिंघ (प्राकृत में ये दोनों
निरुक्त पृ. ३८२,३६	दाह—दाघ रूप प्रचलित हैं
विदेह्—विदेघ	(प्रा० १।२६४)
(शत. ब्रा. १।३।३)	
मेह्—मेघ	संहार—संघार
(निरुक्त पृ. १०१,१)	
गृहीत—गृभीत	विह्वल—बिब्भल (प्रा० २।५८)
गृहाण—गृभाण्य	जिह्वा—जिब्भा
जहार—जभार	(प्रा. २।५७)

(१५) ड को ल तथा ड को ळ—

वैदिक	प्राकृत
ईडे—ईळे	ईडे, ईले, ईळ
अहेडमानः—अहेळमानः	अहेळमानो
दृढ—दृळ्ह	दळ्ह
सोढा—साळ्हा	सोळ्हा
(वै. प्र० ६।३।११३)	(प्रा. १।२०२, ३।३०८)

(१६) अनादिस्थ य तथा व का लोप—

वैदिक	प्राकृत
प्रयुग—पउग	प्रयुग—पउग
(वा०सं० १५-६)	
सिव् धातु का—सीमहि	
(ऋग्वेद पृ० १३५,३)	लावण्य—लायण्ण। इस प्रयोग में
पृथुजवः—पृथुज्रयः	व का लोप, शेष अ को य श्रुति
निरुक्त पृ. ३८३, ४०	हुई है।
	(प्रा० १।१७७)

(१७) अभूतपूर्व र का आगम—

वैदिक	प्राकृत
अधिगु—अध्रिगु	अपभ्रंश प्राकृत में व्यास का व्रास

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

(निरुक्त पृ. ३८७,४३)
पृथुजवः—पृथुज्रयः
इन रूपों में अभूतपूर्व र का आगम हुआ है।

तथा चैत्य का चैत्र जैसे रूपों में र का आगम हुआ है।
(प्रा. ४।३९६)

(१८) क तथा च का लोप—

वैदिक	प्राकृत
याचामि—यामि	कचग्रह—कयग्गह
निरुक्त पृ. १००,२४१	शची—सई
अन्तिक—अन्ति	लोक—लोअ
ऋग्वेद पृ. ४९६	(प्रा. १।१७७)

(१९) आन्तर अक्षर का लोप—

वैदिक	प्राकृत	
शतक्रतवः—शतक्रत्व	राजकुल—राउल	(१।२६७)
पशवे—पश्वे	प्राकार—पार	(१।२६८)
(वै. प्र० ७।३।९७)	व्याकरण—वारण	
निविविशिरे—निविविश्रे	दुर्गादिबी—दुग्गावी	(१।२७०)
(ऋ. सं. ८।१०१।१८)	आगत—आय	(१।२६८)
आगतः—आताः	एवमेव—एमेव	(१।२७१)
(निरुक्त पृ. १४२)		

(२०) संयुक्त व्यंजनों के मध्य में स्वरों का आगम—

वैदिक	प्राकृत	
तन्वम्—तनुवम्	अर्हन्—अरुहंत	(२।१११)
(तै. आ. ७।२२।१)	लघ्वी—लघुवी	(२।११३)
स्वर्गः—सुवर्गः	तन्वी—तणुवी	,,
(तै. आ. ४।२।३)	पद्मं—पउमं	(२।११२)
विभ्वम्—विभुवम्	मुक्खो—मुरुक्खो	,,
सुध्यो—सुधियो	क्रिया—किरिया	(२।१०४)
रात्र्या—रात्रिया	ह्री—हिरी	,,
सहस्र्यः—सहस्रियः	गर्हा—गरिहा	,,
(यजुर्वेद)	श्री—सिरी	,,

(२१) ऋ को र तथा उ—

वैदिक	प्राकृत	
ऋजिष्ठम्—रजिष्ठम्	ऋद्धि—रिद्धि	(१।१४०)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वै. प्र. ६।४।१६२	ऋणं—रिणं	(१।१४१)
वृन्द—वुन्द	वृन्द—वुन्द	(१।१३१)
(निरुक्त पृ. ४३२ अं० १२८)	वृतान्त—वुत्तन्त	,,
तृ—ततुरिः	वृद्ध—वुड्ढ	,,
गृ—जगुरिः	ऋषभ—उसभ	,,
वै. प्र. ७।१।१०३	ऋतु—उतु	,,
	ऋजु—उज्जु	

(२२) द को ड—

वैदिक	प्राकृत	
दुर्दभ—दूडभ	दण्ड—डंड	(१।२१७)
(वा. सं. ३,३६)	दंभ—डंभ	,,
पुरोदाश—पुरोडाश	दर—डर	,,
(वै. प्र. ३।२।७१)	दंसण—डंसण	,,
	दोला—डोला	

(२३) अव को ओ तथा अय को ए—

वैदिक	प्राकृत	
श्रवणा—श्रोणा	अवयरइ—ओअरइ	(१।१७३)
तै. ब्रा० १,५-१,४; ५.२,६	अवयास—ओआस	,,
अन्तरयति—अन्तरेति	अवसरति—ओसरइ	,,
शत. ब्रा. १,२-३,१८;	कयल—केल	(१।१६७)
४,२०; ३.१.१६	अयस्कार—एक्कार	(१।१६६)

(२४) संयुक्त के पूर्व का ह्रस्व—

वैदिक	प्राकृत
रोदसीप्रा—रोदसिप्रा	आम्रं—अम्बं
(ऋग्वेद संस्कृत १०।८८।१०	मुनीन्द्र—मुणिन्द
अमात्र—अमत्र	आस्य—अस्स
ऋग्वेद संस्कृत २.३६.४	तीर्थ—तित्थ
	(प्रा. १।८४)

(२५) क्ष को छ—

वैदिक	प्राकृत	
अक्ष—अच्छ	अक्षि—अच्छि	(१।३३)
(अथ. सं. ३।४।३)	अक्ष—अच्छ	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	क्षीणं—छीणं (२।३)

(२६) अनुस्वार के पूर्व के दीर्घ का ह्रस्व—

वैदिक	प्राकृत
युवाम्—युवम्	मांस—मंस (प्रा- १।७०)
(ऋ. सं. १।१५-६)	पांसु—पंसू
	कांस्य—कंस
	मालाम्—मालं

(२७) विसर्ग का ओ—

वैदिक	प्राकृत
स: चित्—सो चित्	देव: अस्ति—देवो अत्थि
(ऋ. वे. पृ. ११११२)	सर्वत:—सव्वओ
संवत्सर: अजायत—संवत्सरो अजायत	पुरत:—पुरओ
	मागत:—मग्गओ
(ऋ. सं. १-१६१-१०-११)	(प्रा० १।३७)
आप: अस्मान्—आपो अस्मान्	पुन: एति—पुणो एति
(वै. प्र. ६।१।११७)	

(२८) ह्रस्व को दीर्घ तथा दीर्घ को ह्रस्व—

वैदिक	प्राकृत
एव—एवा	अहवा—अहवा (अथवा)
अच्छ—अच्छा	एव—एवा (एव)
(वै. प्र. ६।३।१३६)	जह—जहा (यथा)
ध—धा	तह—तहा (तथा)
मक्षु—मक्षू	(१।६७)
कु—कू	चतुरन्त—चाउरंत
अत्र—अत्रा	परकीय—पारक्क
यत्र—यत्रा	विश्वास—वीसास
पुरुष—पूरुष	मनुष्य—मणूस
दुर्दभ—दूदभ	मिश्र—मीस
दुर्लभ—दूलभ	पश्य—पास
(ऋ. संस्कृत ४।९।८)	(१।४३)

(२९) अक्षरों का व्यत्यय—

वैदिक	प्राकृत
निसृकर्त्य—निष्टकर्यं	आलान—आणाल (२।११७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(वै. प्र. ३।१।१२३) अचलपुरं—अलचपुरं (२।११८)
नमसा—मनसा वाराणसी—वाणारसी
ऋ. पृ. ४८६ (२।११६)
कर्तुः—तर्कुः महाराष्ट्र—मरहट्ठ (२।११६)
(निरुक्त पृ. १०१-१३)

(३०) हेत्वर्थ कृदन्त के प्रत्यय में समानता—

वैदिक	प्राकृत
कर्तुम्—कर्तवे (वैदिक प्रक्रिया ३।४।६) वैदिक प्रक्रिया सूत्र में 'से', 'सेन' और अ से प्रत्ययों का विधान तुम् के स्थान में किया गया है। इस नियम से इ धातु का 'एसे' (एतुम्) रूप होगा	कत्तवे, कातवे, कत्तिए गणेतुये, दक्खिताये नेतवे, निधातवे

(३१) क—क्रियापद के प्रत्ययों में समानता

वैदिक	प्राकृत
प्रथम पुरुष, बहुवचन दुह् + रे—दुह्रे (वैदिक प्रक्रिया ७।१।८)	प्रथम पुरुष के बहुवचन में रे और इरे प्रत्यय का भी व्यवहार होता है। गच्छ—गच्छरे, गच्छिरे (हे. प्रा. व्या. ३।१४२)

ख—आज्ञार्थक सूचक इ प्रत्यय—

वैदिक	प्राकृत
बोध् + इ—बोधि	बोध् + इ—बोधि, बोहि सुमर् + इ = सुमरि (हेम. प्रा. व्या. ४।३७)

(३२) संज्ञा शब्दों के रूपों में प्रत्ययों की समानता—

वैदिक	प्राकृत
देवेभिः (वै. प्र. ७।१।१०)	देवेभि—देवेहि
पतिना (वै. प्र. १।४।६)	पतिना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोनाम् (वै. प्र. ७।१।५७)	गोनं, गुन्नं
युष्मे } (वै. प्र. ७।१।३९)	तुम्हे
अस्मे	अम्हे
त्रीणाम् (वै. प्र. ७।१।५३)	तिन्नं, तिण्हं
नावया (वै. प्र. ७।१।३९)	नावाय, नावाए
इतरम् (वै. प्र. ७।१।२६)	इतरं
वाह + अन—वाहनः (कर्तासूचक अनप्रत्यय (वै. प्र. ३।२।६५,६६)	वाहणओ, वोल्लणआ इत्यादि

(३३) अनुस्वार लोप—

वैदिक	प्राकृत
मांस—मास (वैदिक ग्रामर कंडिका ८३-१)	मांस—मास, मंस (१।२८,२९)
	किं—कि, किं
	नूनं—नूण, नूणं

अनुस्वार का लोप विकल्प से हुआ है।

(३४) भूतकाल में आदि अ का अभाव—

वैदिक	प्राकृत
अमथ्नात्—मथीत्	मथीअ
अरुजन्—रुजन्	रुजीअ
अभूत्—भूत्	भवीअ
(ऋ. वे. पृ. ४६४,४६५)	

(३५) इकारान्त शब्द के प्रथमा विभक्ति का बहुवचन—

वैदिक	प्राकृत
अत्रिणः (तृजन्तस्य अत्तृ शब्दस्य (प्रथमा बहुवचन) जस- छान्दसः इनुड् आगमः (ऋ. वे. पृ. ११३-५ सूत्र मेक्स०)	हरिणो

(३६) कृ का तथा जि धातु का रूप—

वैदिक	प्राकृत
कृणोति	कुणति (हे. प्रा. व्या. ४।६५)
जेन्यः	जिणइ (हे. प्रा. व्या. ४।२४१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ऋग्वेद पृ. २२६, २२७ तथा
पृ. ४६५)

(३७) क—अकारान्त शब्द में लगने वाला प्रत्यय ईकारान्त में भी लगता है।

वैदिक	प्राकृत
नद्यैः	नदीहि (हे. प्रा. व्या. ३।१२४)
(वै. प्र. ७।१।१० पाणिनीय काशिका) इस रूप में अकारान्त में लगने वाला प्रत्यय ईकारान्त में भी लगा है।	प्राकृत में अकारान्त में लगने वाले प्रत्यय ईकारान्त में भी लगते हैं।

ख—द्विवचन का रूप बहुवचन के समान—

वैदिक	प्राकृत
देवा	प्राकृत भाषा में द्विवचन होता ही
उभा	नहीं है। द्विवचन के सब रूप बहुवचन
वेनन्ता	के समान होते हैं—द्विवचनस्य
(ऋग्वेद पृ. १३९-६)	बहुवचनम् (हेम. प्रा. व्या. ३।१३०)
मित्रावरुणा	हत्था
या	पाया
दिविस्पृशा	थणया
अश्विना	नयणा
(वै. प्र. ७।१।३९)	

(३८) विभक्ति रहित प्रयोग—

वैदिक		प्राकृत
आर्द्रे चर्मन् लोहिते चर्मन् परमे व्योमन्	सप्तमी का अप्रयोग	प्राकृत भाषा में भी अनेक प्रयोग विभक्ति रहित ही पाए जाते हैं। गय—षष्ठी का बहुवचन
वै. प्र. ७।५।३९		बहुशत—षष्ठी का बहुवचन
वीणळु दळहा अभिज्ञु	द्वितीया का अप्रयोग	इत्यादि
(ऋ. पृ. ४६४ तथा ४७२)		

(३९) समान अर्थयुक्त अव्यय—

वैदिक	प्राकृत
कुह (कुत्र)	कुह (कुत्र)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न (उपमासूचक) (ऋ. पृ. ७३३) निरुक्त पृ. २२०	णं (उपमासूचक)
दिवेदिवे	दिविदिवि (हे. प्रा. व्या. ४।३९९)

(४०) संधि का विकल्प—

वैदिक	**प्राकृत**
ईषा + अक्षो ज्या + इयम् पूषा + अविष्टु (वै. प्र. ६।१।१२६)	पदयो सन्धिर्वा (हे. प्रा. व्या. १।५)

(प्राकृत मार्गोपदेशिका से उद्धृत)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहायक ग्रन्थ सूचि

१. अथर्ववेद—

२. अपभ्रंश रचना सौरभ—डा० कमलचंद सौगाणी
(जैन विद्या संस्थान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी० राजस्थान)

३. अभिधान चिंतामणी कोश (कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य)
संपादक—विजयकस्तूरसूरि

४. ऋग्वेद (महाराष्ट्र संशोधन मंडल)

५. तैत्तिरीय ब्राह्मण

६. निरुक्त

७. पण्णवणासुत्तं—भगवान महावीर
(जैन विश्व भारती, लाडनूं प्रकाशन)

८. पाइअसद्दमहण्णवो—पं० हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ)
(प्राकृत ग्रन्थ परिषद वाराणसी)

९. प्राकृत प्रवेशिका—डा० कोमलचंद जैन
(तारा पब्लिकेशन, वाराणसी)

१०. प्राकृत प्रबोध—डा० नेमिचंद्र शास्त्री
(चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी १)

११. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण—डा० आर. पिशल
अनुवादक—डा० हेमचंद्र जोशी डी. लिट्
(बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना)

१२. प्राकृतमार्गोपदेशिका—पं. बेचरदास जीवराज दोशी
(मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)

१३. प्राकृत व्याकरण—श्री हेमचंद्राचार्य
संपादक—पी. एल. वैद्य
भांडारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूणा-१९८०

१४. प्राकृत व्याकरण—श्री हेमचंद्राचार्य
सं. मुनिवज्रसेन विजय
श्री जैन आत्मानंद सभा, खारगेइट, भावनगर)

१५. प्राकृत स्वयं शिक्षक—डा० प्रेमसुमन जैन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(अध्यक्ष जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर)

१६. बृहत् हिन्दी कोश—सं. कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव
ज्ञानमण्डल लिमिटेड वाराणसी

१७. भावप्रकाश निघंटु—श्रीभावा मिश्र
चौखंबा भारती अकादमी बनारस, सातवां संस्करण १९८६

१८. वाजसनेई संहिता

१९. वैदिक प्रक्रिया

२०. शतपथ ब्राह्मण

२१. शालिग्राम निघंटु भूषणम—शालीग्राम वैश्य
खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई सन् १९८१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि पत्र

पृ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	२५	गर	गर्
६	३	कर्तवाच्य	कर्तृवाच्य
७	१०	तुम	तुम्
१९	८	आशीषः	आशीष
२०	१६	सुंदरं	सुंदराणि
२१	१४	ओणम्	ओणम
२१	१६	घी	णी
२१	१८	मालुम	मालूम
२३	३२	छह	छ
२४	१३	आरोहण	आरोह
२८	१३	होत है	होती है
२९	१६	कोइ	कोई
३४	१६	विभक्त	विभक्ति
३५	१०	इसरो	ईसरो
३६	१२	विभक्त	विभक्ति
३८	२०	घड	घड
४७	३	ऊंखली	ओखली
४८	३१	सूप्प	सुप्प
४९	२९	योग करो प्र	प्रयोगकरो
५१	१३	णिय्यासो	णिज्जासो
५६	२५	विज्झो	विञ्झो
५८	२४	न्यायधीश	न्यायाधीश
६५	४	औ	ओ
७५	६	कक्कुवो	कक्कुबो (दे०)
८५	१२	धयपुरो	घयपुरो
८९	१७	उदोद्वाद्रे	उदोद्वार्द्रे
८९	२०	पङ्कतौ	पङ्क्तौ
९१	१०	बताआ	बताओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९३	३१	जहुट्टिलो	जहुट्ठिलो
९६	३	जैन पारिभाषिकर	जैन पारिभाषिक २
९८	५	भय	भयं
९९	६	कफग्धी	कफग्घी
१०३	२४	सणहं	सण्हं
१०४	१	ईर्वोद्व्यूढ	ईर्व्योद्व्यूढे
१०७	२६	मृदुत्वे	मृदुत्वे वा
१०९	२५	गंतत्वं	गंतव्वं
१११	४	हैमं	हेमं
१११	५	तेल	तेलं
११४	२	प्रार्थंना	प्रार्थना
११५	१६	अइ	अइइ
११७	६	वाणिज्यो	वाणिज्जो
११९	७	विभागाज्झक्खो	विभागज्झक्खो
११९	९	ण्हाओ	ण्हायओ
१२१	८	विभागाज्झक्खो	विभागज्झक्खो
१२४	७	कीले क :	कीलके क :
१२४	८	कील	कीलक
१२४	२७	तूवरे वा	तुवरे ट :
१२८	१६	अणुग्ग	अणुग्गह
१२८	१८	पौषण	पोषण
१३७	५	केउरं	केऊरं
१५४	७	वत्थुआ	बथुआ
१५५	९	अवस्कंदो (अवक्खरो)	अवस्कंदो (अवक्खंदो)
१६३	१०	पडिसायो	पडीसायो
१६५	३०	पडिसायो	पडीसायो
१६८	१९	ह्‌स्व	ह्रस्व
१६९	१०	उवराग्गी	उवरग्गी
१७५	१६	खअर ·· होना	खउर···करना
१७९	९	अनानास	अनन्नास
१८४	२३	पक्कं-पक्क	पक्कं-पक्व
१८५	१४	संज्जा	संजा
१९७	२५	पीठन्तर्दः	पीठेन्तर्दः
१९८	२९	महिना	महीना
२०१	९	नवफालिका	नवफलिका

Jain Education International .For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०१	१०	नवफालिका	नवफलिका
२०१	१३	नवफालिका	नवफलिका
२०६	१२	अचलपुरं	अलचपुरं
२२४	५	गौरीआ	गोरीआ
२२६	८	चीडिया	चिडिया
२२९	१२	बहु	बूह
२३५	२४	युष्मद	युष्मद्
२३६	२०	युष्मद	युष्मद्
२३८	१	अस्मद	अस्मद्
२३८	२०	मुणि	मुणी
२४१	३३	सब्वाणि	सव्वाणि
२४३	११	ढीठाइ	ढीठाई
२५३	१३	सोहिवा	सोर्हिर्वा
२५५	१५	लाग	लोग
२६०	१२	प्रतीति करना	प्रतीति कराना
२६२	२३	उत्तरज्ययणं	उत्तरज्झयणं
२६४	८	ऐडी	एडी
२६९	१	धातु क	धातु के
२८६	२९	थंमदारु	थंभदारु
२८७	२०	अन्वत्थं	अण्णत्थं
२९०	१६	पडिसंचिक्ख	पडिसंविक्ख
२९०	१७	साधना	सांधना
२९३	२	स्त्रीवर्ग ४	स्त्रीवर्ग ३
२९४	६	पीआंबरो	पीअंबरो
३०३	१५	करांगुलीए	करंगुलीए
३१३	५	गूंगो	गूंगा
३१९	५	अमेरीका	अमेरिका
३२१	३०	होते हैं	होती हैं
३२४	२	डमया वा	डमया
३२४	६	मनको	मनाको
३२४	१०	मिश्राड्डालिअं	मिश्राड्डालिअः
३२५	११	वक्ष	वृक्ष
३४४	१३	खुशी	खुश
३५१	२६	अवगुणों को	अवगुणों का
३६२	८	हंसता	हसंता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६३	३४	अग्निपोएण	अग्गिपोएण
३६४	११	पंडति	पडंति
३६७	११	उद्धाते	उद्वाते
३७७	१३	पुत्रवधूएं	पुत्रवधुएं
३८३	२२	प्रर्वक	पूर्वक
३८३	२६	प्रके	पका
३८५	११	अस्खलित	अक्खलित
३८०	३०	जलता	चलता
३९५	३	आभरणणाणि	आभरणाणि
३९८	२	छत्त	घत्त
४०५	७	विडस	विउस
४३०	१	सत्वहां	सव्वहां
४३०	५	अपम्रंश	अपभ्रंश
४३०	३२	जीव	जीवें
४३२	१	अपभ्रंश	अपभ्रंश
४३५	१	अपंशभ्र	अपभ्रंश
४५१	१९	गोवां	गोवं
४५४	२४	कत्तुसु, कत्तुसुं	कत्तूसु, कत्तूसुं
४५५	२	भत्तुहि, भत्तुहि, भत्तुहिं	भत्तूहि, भत्तूहिं, भत्तूहिँ
४५५	३४	रायाणो	+
४५६	३	राईहि	राईहिँ
४६०	२८	हे धेणुउ, हे धेणुओ हे धेणु	हे धेणूउ, हे धेणूओ हे धेणू
४६१	३	बहुहिन्लो	बहुहिन्तो
४६२	२०	गाविहिन्तो	गावीहिन्तो
४६४	२३	दामेहिं	दामेहि
४७०	२८	मीअ	इमीअ
४७३	५	अह्मे	अम्हो
४७३	२८	तुज्झेहिन्ता	तुज्झेहिन्तो
४७३	३४	उम्हाहिन	उम्हाहिन्तो
४७३	१९	गगे	एगे
४७५	१७	चउसुं	चऊसुं
४८९	१	कर्तरिवद्	कर्तृवद्
४८९	४	कर्तरिवद्	कर्तृवद्
४८९	५	कतृवद	कर्तृवद्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८९	११	कर्तरिवद्	कर्तृवद्
४९०	९	हसेज्ज	हसेज्जा
४९०	११	हसावे	हसाव
४९१	२३	सावे	हसावे
४९३	१०	हसाविहामो	हसावेहामो
४९३	१३	हमाविहिस्सा	हसाविहिस्सा
४९७	१६	अर्षरूपाणि	आर्षरूपाणि
५१७	२५	कहे, कहे	कहे
५१९	३३	आय, आय	आया, आय
५२५	४	पचण्ह	पचण्हं
५३०	११	क्रियात्तिपत्ति	क्रियातिपत्ति
५३२	३०	हसिजित्था	हसिज्जित्था
५४४	२०	णिय्यासो	णिज्जासो
५४५	७	साहुणी	+
५४५	८	समणो, वासिया	समणोवासिया
५४८	१२	पुत्तवधू	पुत्रवधू
५४९	२४	हत्थिनी	हथनी
५४९	२७	हैमं	हेमं
५५३	१२	गूंगो	गूंगा
५५५	२१	ण्हाओ	ण्हायओ
५५८	८	हिचक्की	हिचकी
५५९	९	वत्थुआ	बथुआ
५७०	२४	कान	कास
५७१	२९	पक्खुभ	पक्खुब्भ
५७७	२३	थक्कर	थक्क
५७८	१५	देखा पीडना	देखो पीडना
५८५	११	निकल नाना	निकल जाना
५८६	३	शुश्रुषा	शुश्रूषा
५८६	१६	का काटना	को काटना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org